कुतुबन

कृत

मिरगावती

लेखक की अन्य कृतियाँ

साहित्य

१. कर्णिका (कहानी सग्रह)
२. प्रसाद के नाटक (आलोचना)
३. बिसराम के बिरहे (लोक-साहित्य)
४ चन्दायन (सम्पादित ग्रन्थ)
५. बन्दी की कल्पना (गद्य-काव्य)

पुरातत्व

६. पुरातत्व परिचय
७. भारतीय वास्तुकला

मुद्रातत्व

८. हमारे देश के सिक्के
९. पंचमार्क्ड क्वायन्स इन आन्ध्रप्रदेश गवर्नमेण्ट म्यूजियम (अगरेजी)
१०. अमरावती होर्ड आव सिलवर पचमार्क्ड क्वायन्स (अंगरेजी)
११. अर्ली क्वायन्स ऑव केरल (अगरेजी)
१२. रोमन क्वायन्स फ्राम आन्ध्र प्रदेश (अगरेजी)

इतिहास

१३. अग्रवाल जाति का विकास
१४. आजाद हिन्द फौज और उसके तीन अफसरो का मुकदमा।

जीवन-वृत्त

१५. कार्ल मार्क्स
१६. शिवप्रसाद गुप्त
१७. जमनालाल बजाज

राजनीति

१८ भारतीय शासन परिचय

समाज-शास्त्र

१९. अपराध और दण्ड

यन्त्रस्थ

२०. द इम्पीरियल गुप्ताज (अगरेजी)
२१. गुप्तकालीन भारत
२२. यूरोप और अमेरिका मे हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थ
मुद्रा सम्बन्धी अगरेजी तथा हिन्दी में चार पुस्तकें

कुतुबन

कृत

मिरगावती

(मूल पाठ, पाठान्तर, टिप्पणी एवं शोध)

सम्पादक

परमेश्वरीलाल गुप्त

एम० ए०, पी-एच० डी०, एफ० आर० एन० एस०

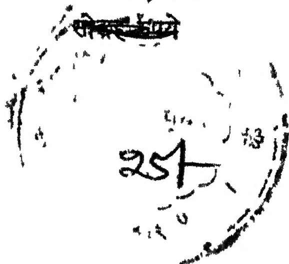
अध्यक्ष, पटना सग्रहालय

वितरक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

भैरवनाथ, वाराणसी–१

प्रथम सस्करण, १९६७
~~सोलह रुपये~~



आवरणचित्र : एकडला प्रतिसे
(सौजन्य, भारत कला-भवन, काशी)



डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
(१९०४-१९६६ ई०)

सरस्वतीके तपःपूत

दिवंगत डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल

के

श्रीचरणोंमें

जिनसे 'गुरुका आशीर्वाद' और 'भाई साहब कहनेका अधिकार'

प्राप्त था

अनुक्रम

वार्तिक

ग्रन्थका कार्य समाप्त होनेके पश्चात् और मुद्रण कालके बीच कुछ नये तथ्य सामने आये है, उन्हे यहाँ दिया जा रहा है। पाठकोंसे अनुरोध है कि इनका यथा स्थान समावेश कर ले।

कुतुबनकी कब्र

पृष्ठ २५-२६ पर हमने कुतुबनका सम्बन्ध बनारस (वाराणसी)से होनेकी बात कही और वहाँ उनकी कब्र होनेकी सम्भावना प्रकट की है। अभी हालमे काशी विश्वविद्यालयके भारती महाविद्यालयके अध्यापक श्री निसार अहमदसे ज्ञात हुआ कि बनारसमे बिसेसरगंजसे सिटी स्टेशनकी ओर जाने वाली सडक पर हरतीरथकी जो चौमुहानी है, उससे पूरब, लगभग एक फर्लांगकी दूरी पर **कुतुबन शहीद** नामका एक मुहल्ला है। वहाँ एक मजार है जो कुतुबनकी मजार कही जाती है। कुतुबन, जिनकी वह मजार है और जिनके नामपर वह मुहल्ला है, वे कौन थे और कब हुए, वे शहीद क्यो कहलाये, इस सम्बन्धकी कोई भी जानकारी उस मुहल्लेके बड़े-बूढ़ोसे प्राप्त न हो सकी। किन्तु असकरीके कथनको, जिसकी चर्चा हमने पृष्ठ २६ पर की है, ध्यानमे रखते हुए इस बातकी ही सम्भावना अधिक है कि इनका सम्बन्ध मिरगावतीके रचयिता कुतुबनसे ही होगा। कदाचित भविष्यमें इस पर कुछ अधिक प्रकाश पड़ सके।

बीकानेर प्रतिकी तिथि

पृष्ठ ८९-९० मे हमने बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकाके **सुसमती समाये अनम सर्वन बदीय अतीमुखी सोमावसरे** अशमे उस प्रतिके लिपिकालके होनेकी बात कही है और उसे कैथी लिपि-जनित भ्रष्टतासे पूर्ण बताते हुए **सुसंवते समये अनम श्रावण बदोय अतिमुखी सोमवासरे**के रूपमे स्पष्ट करनेकी चेष्टा की है और **अनम**को वर्षका द्योतक कहा है। किन्तु वह क्या है, यह बताने मे हम असमर्थ रहे है। अभी हालमे डाक्टर उदयनारायण तिवारीकी कृपासे धरणीदासके **शब्द प्रकाश**की एक प्रति देखनेको मिली जिसे तिवारीजीने किसी प्रतिसे स्वयं तैयार किया है। उसके अन्त मे जो पुष्पिका है उसका एक अंश इस प्रकार है—**संवत १८९९ समेनाम माह फागुन बदी पंचमी रोज सनीचर के तैयार भैल**। और तभी डाक्टर शिवगोपाल मिश्र सम्पादित **मधुमालती**का दूसरा संस्करण भी देखनेमे आया। उसमे उन्होने एकडला प्रतिकी जो पुष्पिका दी है उसका आवश्यक अश इस प्रकार है—**सम्बत् १७४४ समैनाम जेठ सुदी दूजी को तैयार भई बार बुधवार को**। एकडलासे ही प्राप्त डगवै कथाकी एक प्रतिकी पुष्पिकाका अश है—**सं० १७४४**

समेनाम वैसाख सुदी तीज ३, दंगे परगह पूरन भई। इसी प्रकार चक्रव्यूह कथाकी प्रतिकी पुष्पिका है—**आगे सम्वत १७४६ समैनाम पूस सुदी पंचमी कहूँ लिखा।** इनका उल्लेख मिश्रजीने अपने सम्पादित ग्रन्थ डंगवै कथा और चक्रव्यूह कथामे किया है। इन पुष्पिकाओके प्रकाशमें बीकानेर प्रतिकी पुष्पिका देखनेसे स्पष्ट हो जाता है कि वह पुष्पिका भी इसी परम्पराकी है और उसका **समये अनम** और कुछ नही, इन पुष्पिकाओंका **समेनाम** (समय नाम) है। इस प्रकार हमने जो **अनम** मे वर्ष के छिपे होने का अनुमान किया था वह निर्मूल सिद्ध हो जाता है।

वस्तुतः बीकानेर प्रतिकी पुष्पिकामे **सुसंवते** और **समय नाम**के बीच अंको मे वर्षका उल्लेख होना चाहिये था। किसी प्रमादसे लिपिक अपनी प्रति तैयार करने-का वर्ष भूल गया होगा, ऐसी कल्पना तनिक क्लिष्ट होगी। अतः धारणा यही होती है कि यह लिपिककी अपनी पुष्पिका न होकर उस प्रतिकी पुष्पिका है जिससे उसने यह प्रति तैयार की है। सम्भवतः उसमे वर्षवाला अंश नष्ट होगया रहा होगा इससे उसने उसे नही दिया। इस धारणाका समर्थन **सुसमती** और **समये अनम**के बीच दिये गये खड़ी लकीरसे होता है। अतः यह प्रति कब लिखी गयी, इसके जाननेका जो साधन था वह पुष्पिका होते हुए भी अप्राप्य है।

वर्ष बोधक संवत् और समय दोनो का एक साथ प्रयोग उपर्युक्त पुष्पिकाओं के अतिरिक्त बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना मे सुरक्षित हलधरदास कृत **सुदामाचरित**-की एक प्रतिमें भी देखने को मिला। वहाँ **सुभसंवत १८३७ साल समय**का प्रयोग हुआ है। इन सभी प्रतियोका सम्बन्ध उत्तर प्रदेशके पूर्ववर्ती भाग और बिहार-से है। इससे निष्कर्ष निकालना अनुचित न होगा कि बीकानेर प्रति जिस प्रतिसे तैयार की गयी थी, वह इसी प्रदेशकी थी और वह अठारहवीं और उन्नीसवी शती-में ही, जब इस ढगसे वर्ष लिखनेका प्रचार था, तैयार की गयी रही होगी। इस प्रकार वह प्रति किसी भी अवस्थामे अठारहवी शतीसे पूर्वकी नही हो सकती। उससे तैयारकी गयी बीकानेर प्रति तो और बादकी होगी। इस प्रकार यद्यपि हम बीकानेर प्रतिका समय निश्चित नहीं कह सकते पर इतना तो निसंदिग्ध रूपसे कह ही सकते है कि वह सौ डेढ़ सौ बरससे अधिक पुरानी नहीं है।

बैरागर

कडवक ६४ की पक्ति १ में **बैराकर हीरा**का उल्लेख हुआ है। डाक्टर मोती-चन्द्रने उपलब्ध सूत्रोके आधारपर उसके चाँदा (मध्य प्रदेश) जिलेमें वेनगंगा तट पर स्थित बैरागढ होनेका अनुमान किया है। उसे ही हमने अपने टिप्पणी मे ग्रहण किया है। अभी हमारा ध्यान पुहकर कृत **रसरतन**की ओर गया। उसकी रचना संवत् १६७२ (१६१५ ई०) मे हुई है। उसमे बैरागरका एक राजनगरके रूपमे उल्लेख है। कहा गया है—

सोमबंस सोमेसुर राजा । बैरागर अधिपति छिति छाजा ॥
दिसि पूरब प्रतिपालन करई । धर्म राज कलमष हरई ॥
उपजहिं जहाँ अमोलक हीरा । सुंडाहल उपजहिं बल बीरा ॥

इससे ज्ञात होता है कि बैरागर पूर्वमे स्थित था और वहाँ हीरा और हाथी दोनो पाये जाते थे। इस सूचनाके अनुसार वैरागरके चाँदा जिलेमे होनेका अनुमान ठीक नही जान पडता। किन्तु हम स्वय पूर्वमे ऐसा कोई स्थान ढूँढ पानेमे असमर्थ है जहाँ हीरा और हाथी दोनो मिलते हो। यदि इसकी पहचान कोई पाठक कर सके तो बतानेकी कृपा करें।

अँहुट बज्र

कडवक २८५ की पंक्ति ७ के प्रथम दो शब्दोको हमने **अबहुत बजर** पढा है। वस्तुत उसका उचित पाठ है **अँहुट बज्र,** जो एकडला प्रतिका पाठ है। **अँहुट वज्र** (साढे तीन बज्र) का आशय समझ न पानेके कारणही हमने यह सरल पाठ अपनाया था। अभी शिवगोपाल मिश्र सम्पादित डगवै कथा देखनेसे ज्ञात हुआ कि कुतबनने यहाँ डगवै कथाकी ओर सकेत किया है। इस कथाके अनुसार नारदने उर्वशीको दिनमे घोडी हो जानेका शाप दिया था। अँहुट (साढ़े तीन) बज्र एकत्र होनेपर ही उसका मोक्ष सम्भव था। अतः कथा प्रसंगमे भीम और कृष्णमें युद्ध होता है और उन दोनोंके वज्रायुध गदा और चक्र टकराते हैं। उस समय दोनोके बीच-बचाव करनेके निमित्त हनुमान अपना वज्रसम लगूर फैला देते है। इस प्रकार तीन वज्र एकत्र हो जाते है। भीमका शरीर आधे वज्रके समान कहा जाता है, इस प्रकार साढ़े तीन वज्रोका सयोग होता है और उर्वशी बन्धनसे मुक्ति पा जाती है। यहाँ कुतुबन उसीकी ओर सकेतकर कहते है—**अहुँट बज्र जो हों इक ठाँ, तो न यह बँदि छूट** (साढ़े तीन वज्र एकत्र हो जॉय तब भी यह बन्दी न छूट पायेगा)।

पाठ-दोष

पुस्तक मुद्रित हो जाने पर ज्ञात हुआ कि प्रेस कापी तैयार करनेमे असावधानी, मुद्राराक्षसोकी कृपा और प्रूफ देखनेमे चूक हो जानेके कारण काव्य-पाठमें अनेक दोष उत्पन्न हो गये है। यथासम्भव उन दोषोका परिमार्जन यहाँ किया जा रहा है—

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ	पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
८।१	बढ़न	बुढन	२२।६	मिरिग	मिरिगि
१५।४	व	न	२६।४	दुहुँ	दहुँ
१६।४	ऐको	एको	२९।२	कहहि	कहँहि
१७।६	कौन	कउन	४२।२	तेज	सेज
१९।१	बेग	बेगि	४८।५	घरहिं	धरहिं
१९।७	खेल	खेलि	५२।४	हा	हौं

पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ	पंक्ति	दूषित पाठ	शुद्ध पाठ
५७।४	मै	मै	३३६।३	बरसि	बरिस
७४।२	अछर	अछरि	३४३।१	मतमाता	मदमाता
८०।३	झिरकि	छिरकि	३४४।६	उदेक	उदेग
८०।७	नखन	नखत	३४४।७	की ह	कीन्ह
८६।१	मिरग	मिरिगि	३४९।३	करज	करेज
९०।४	आयुस	आयसु	३४९।६	क	के
९२।२	उधार	उघार	३४९।७	तोहे	तोही
९६।५	इह कह चाह	इह कँह	३५२।१	निस	निसि
९८।२	कुँवरहू	कुवँरहि	३५४।१	चपटी	चटपटी
९८।४	सोइ	सोई	३५५।१	जा	जो
१३३।१	गै	गिय	३५५।२	हा	हौं
१३८।४	समाना	ममानौ	३५५।३	हाई	होई
१४९।६	रमहा	रहसा	३५५।३	जा	जो
१६१।५	आयसु	आयम	३५५।३	साई	सोई
१८४।४	तौर	तोरे	३५६।६	लाग	लोग
२००।३	उपचारा	उपचरा	३६१।७	राजूकँवर	राजकुँवर
२००।४	मिरगावत	मिरगावति	३६२।२	ठावँ	ठाऊँ
२०३।१	आहा	अहा	३६२।७	पथहि	पंथिहि
२०७।७	वनि	धनि	३६३।२	हाडो	हाडो
२१४।३	आयसु	आयुम	३६७।५	के	कै
२१४।५	आयसु	आयुस	३७९।१	साँजैउ	साँजेऊ
२१६।६	आयसु	आयुम	३७९।२	दुनिया	दुतिया
२१७।६	आयसु	आयुस	३७९।२	रन	रेन
२५४।४	केवल	कँवल	३८१।३	मोहि	मोंही
२६२।३	देइ	देई	३८४।२	आई	आइ
२६४।५	बरिज	बरजि	३८७।१	कयउ	गयऊ
२९१।३	घुमकर	मधुकर	३८९।२	अहो	उहो
३०४।५	वई	वइ	३९०।२	तुम्हुहुँ	तुम्हहुँ
३०५।२	गँवावई	गंवावइ	३९१।३	बजाई	बजाइ
३१०।२	दसराइह	दरसाइह	३९२।७	कहै	कीन्ह
३१०।६	ददेरीं	दरेरीं	४००।३	नाउँ	नाऊँ
३२०।४	नाऊँ	नाँउ	४०२।७	मेले	मेलै
३२३।१	आधर	आँधर	४०६।६	गरूई	गरुई
३२९।७	परै	परे	४०८।१	यहु	यह
३३२।५	गिार	गिरि	४०९।४	कर	गर
३३५।३	ताहि	तोहि			

इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य पाठ दोष हो सकते हैं, जो दृष्टि-दोषसे छूट गये हों। पाठक ऐसे दोषोकी ओर इंगित करनेकी कृपा करें।

शब्द-सूची बनाते समय यह बात भी दृष्टिमे आयी कि एकही शब्द एकसे अधिक रूपोंमे लिखे गये है। यह वर्तनी-दोष फारसी लिपिके नुक्तोके कारण ही मुख्य है। उनकी उचित वर्तनी क्या होगी, इस ओर इस अवस्थामे ध्यान देना सम्भव न था। पाठक उसपर स्वयं विचार ले।

कड़वक १११ पंक्ति १ (पृ० १७७) मे प्रयुक्त **सीघ सिंदूर** सम्बन्धी टिप्पणी मे सिदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है, इसके प्रमाण मे **मधुमालती** की पक्ति १८१।२ उधृतकी गयी है, पर प्रमादवश मधुमालतीके स्थानपर मिरगावंती लिख गया है। पाठक इस भूलको सुधार ले। साथ ही इस टिप्पणी मे इतना और जोड़ ले कि हाथी और सिन्दूरकी भिन्नता पुहकर कृत **रस रतन**की इस पक्तिसे भी प्रकट होती है—**सिंह सिंदूर उरग बिग हाथी** (चम्पावती खण्ड, २४)।

कृतज्ञता-ज्ञापन

पटनाके प्रोफेसर सैयद हसन असकरी और भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोके विशेषज्ञ डॉ० जियाउद्दीन अहमद देसाईका मै आभार मानता हूँ जिन्होने मिरगावतीकी फारसी प्रति उपलब्ध कर इस कार्यके करनेकी प्रेरणा प्रदान की है। असकरी महोदयका इसलिए भी कृतज्ञ हूँ कि उनकी ही कृपा से चन्दायनकी वह प्रति प्राप्त हुई थी जिसके हाशियेपर मिरगावतीका एक पाठ अंकित है। इसके अतिरिक्त वे निरन्तर मेरे इस सम्पादन कार्यमे रुचि लेते रहे है। एकडलावाली प्रतिके उपयोग करने की अनुमति प्रदान कर भारत कला भवन के अध्यक्ष रायकृष्णदास ने तो अपना स्नेह ही व्यक्त किया है, उसके प्रति क्या कहूँ!

डाक्टर शिवगोपाल मिश्रने स्वसम्पादित संस्करणकी प्रति भेट न की होती तो मै कदाचित अनेक जानकारी प्राप्त करनेसे वञ्चित रह जाता और तब शायद पुस्तक मे इस रूपमे प्रस्तुत न कर पाता। बीकानेर प्रतिके पृष्ठका फोटोभी उन्हीकी कृपासे प्राप्त हुआ है। भाई कन्हैया सिहने अनेक स्थलो पर मेरे पाठ-दोषकी ओर सकेत कर मेरी सहायता की है। इन दोनो ही प्रियजनोका मै कृतज्ञ हूँ।

श्री जगन मेहताने एकडला प्रतिके फोटो तैयार किये जिनसे मुझे पाठके सम्पादनमे बडी सहायता मिली। उन्हे भी इस अवसरपर स्नेहपूर्वक स्मरण करता हूँ।

अन्तमे यह उल्लेख पर्याप्त होगा कि शब्द-सूची तैयार करनेमे मेरी पत्नी अन्नपूर्णा और बेटी उषाने हाथ बटाया है। यदि इस सूचीकी कुछ सार्थकता हो तो उसका श्रेय इन दोनोको होगा।

अनुशीलन

सतरहवी शतीके आरम्भमे **बनारसी दास** नामके एक जैन कवि हो गये हैं। उन्होने बडी सख्यामे जैन धर्म सम्बन्धी ग्रन्थोंकी रचना की है। इस कारण उनकी गणना जैन-साहित्यके अग्रणी लेखकोमे की जाती है। उन्होने **अर्ध-कथानक** नामसे अपनी एक पद्य-बद्ध आत्म-कथा भी लिखी है। यह सम्भवतः हिन्दीमे लिखी जानेवाली पहली आत्म-कथा है। अपनी इस आत्म-कथामे **बनारसी दासने** जन-जीवनकी चर्चा करते हुए एक स्थान पर कहा है—

> **तब घरमें बैठे रहें, जाहिं न हाट बजार।**
> **मधुमालति मिरगावति पोथी दोइ उदार॥**
> **ते बॉचहि रजनी समै, आवहिं नर दस बीस।**
> **गावैं अरु बातैं करैं, नित उठि देहिं असीस॥**

इससे उनके समयमे **मधुमालती** और **मिरगावती** नामक दो पोथियोके लोकप्रिय होनेकी सूचना मिलती है। इन काव्योकी क्या कथा है, इसको उन्होने कोई न तो चर्चा की है और न कोई सकेत ही प्रस्तुत किया है। अतः सामान्य धारणा हो सकती है कि जैन होने के कारण **बनारसी दासने** जैन समाजमे प्रचलित किन्ही कथाओकी ओर संकेत किया होगा।

काव्यके **मिरगावती** नामसे परिलक्षित होता है कि कथाका सम्बन्ध मृगावती नाम्नी किसी नारीसे होगा। जैन-साहित्यमे कौशाम्बी-नरेश शतानीककी पत्नी मृगावतीकी कथा अति प्रचलित है। वे वैशालीके हैहय-वंशी राजा चेटककी पुत्री और भगवान् महावीर की ममेरी बहन थीं। अतः अनुमान किया जा सकता है कि उन्होने इन्ही की कथाकी ओर सकेत किया होगा। उनकी कथा इस प्रकार है—

(एक दिन रानी मृगावतीको, जब वे गर्भवती थी, रक्तसे स्नान करनेका दोहद हुआ। उनकी इस इच्छाकी पूर्तिके निमित्त प्रधानमत्री युगन्धरने जल-कुण्डको रक्त-वर्णके जलसे भरवा दिया और उसे रक्त समझ कर रानी मृगावतीने अपनी इच्छापूर्ति की। जैसे ही वे स्नान करके कुण्डसे बाहर आयीं, उन्हे मॉस-पिण्ड समझ कर भारण्ड नामक पक्षी अपने पजेमे दबोच कर उड गया। राजा शतानीकने चौदह बरसों तक रानी मृगावतीकी खोज करायी, पर उनका कुछ पता न चला।

एक दिन अचानक एक वणिक एक वनवासीको लेकर उनके सम्मुख उपस्थित हुआ और उनके नामसे अकित ककण उपस्थित किया और बताया कि उसे वह वन-वासी उसके पास बेचनेके लिए लाया था। वह चोरीका माल जान पड़ता है अतः

उसे लेकर वह उनके पास आया है। ककण देखते ही राजाने पहचान लिया कि यह वही ककण है जिसे रानीने रक्त-स्नानके समय पहन रखा था।

राजाके पूछने पर वनवासीने बताया कि एक दिन जब वह सॉप मार रहा था, एक बालकने आकर सॉप मारनेसे रोका और सॉपको छोड देनेके बदले उसने उसे वह ककण दिया। उसे उसकी पत्नी विगत पॉच बरसोसे पहनती रही है। उसकी इच्छा अब ककणके बदले कुण्डल पहननेकी हुई, इसलिए वह उसे बेचने ले आया था।

यह सुनकर राजा उस वनवासीके साथ मलय पर्वत पर उस जगह गया, जहॉ उस वनवासी को वह ककण मिला था। वहॉ उसे खोई हुई रानी और पुत्र उदयन, जिसने वनवासीको ककण दिया था, दोनो मिले। पत्नी पुत्रको लेकर राजा घर आया।

कुछ दिनो पश्चात् राजा शतानीककी राज-सभामे कोई विदेशी आया। उसने राजाके यहॉ उत्कृष्ट चित्रोके अभाव पर खेद प्रकट किया। विदेशीकी भर्त्सना सुन कर राजाने एक सर्वगुण-सम्पन्न चित्रकारको बुलवाया और उसे उत्कृष्ट चित्र प्रस्तुत करनेका आदेश दिया। चित्रकारको किसी यक्षका वरदान प्राप्त था जिसके कारण वह किसी वस्तुके आशिक अशको देख कर ही उसका सर्वांगपूर्ण चित्र बना देता था। एक दिन उसने रानी मृगावतीके पैरका अँगूठा देख कर उनका सर्वांगपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया जिसमें उनके जॉघके तिलका भी अकन था। उसे देख कर राजाको चित्रकारके चरित्रके प्रति सन्देह हुआ और उसने उसका दाहिना हाथ कटवा कर राज्यसे निष्कासित कर दिया।

चित्रकारने बायें हाथसे रानी मृगावतीका दूसरा चित्र तैयार किया और उसे लेकर उज्जयिनी-नरेश प्रद्योतके पास पहुँचा। चित्र देखते ही प्रद्योत मृगावतीपर मुग्ध हो गया और शतानीकके पास दूत भेजकर मृगावतीकी याचना की। जब वह उसे प्राप्त करनेमे असफल रहा तो उसने कौशाम्बीपर चढाई कर दी। इस युद्धके बीच शतानीकको अतिसार हो गया और उसकी मृत्यु हो गयी। शतानीककी मृत्युके पश्चात् मृगावतीने प्रद्योतके पास कहला भेजा कि यदि बल-प्रयोग किया गया तो मैं जल मरूँगी अन्यथा पति-शोकसे मुक्त होनेपर आपके पास स्वयं आ जाऊँगी। प्रद्योत यह सुनकर लौट गया।

रानी मृगावती अपने पुत्र उदयनको युद्ध शिक्षा देती और प्रद्योतके बुलाओं-की उपेक्षा करती रही। निदान एक दिन फिर प्रद्योतने कौशाम्बीपर चढाई कर दिया। इसी बीच भगवान् महावीर कौशाम्बी पधारे और मृगावतीने उनसे प्रवज्या ले ली। और आर्या चन्दनबालाके पास साधना करती हुई चालीस समय उपवास कर मोक्ष प्राप्त किया।

यह कथा प्राचीनतम जैन-ग्रन्थ एकादश अंग सूत्रके पाँचवे अंग भगवतीसूत्रके बारहवे शतकके दूसरे उद्देशकमे पायी जाती है।[१] उसके आधारपर तेरहवी शतीमें देवप्रभ

१. बौद्ध साहित्यमे भी यह कथा सुधन-मनोहराकी कहानीके रूपमें पायी जाती है (द गिलगिट मैन्युस्क्रिप्ट, सम्पा० नलिनाक्ष दत्त)। कथा सरित्सागरमें भी यह कथा किंचित्परिवर्तनके साथ दूसरे लम्बकमें है।

सूरिने संस्कृतमे **मृगावती चरित** लिखा ।[१] इसी कथापर **मृगावती चौपाई** नामसे **विनय समुद्र**ने सवत् १६०२ में[२], **सकलचन्द**ने संवत् १६४३ से पूर्व[३] और **समयसुन्दर**ने संवत् १६६८ मे[४] रचना की । ये ग्रन्थ इस बातके द्योतक है कि सतरहवी शतीमे यह कथा काफी प्रचलित थी । अतः **बनारसी दास**ने इसी कथाकी ओर सकेत किया था, ऐसा समझना अनुचित न होगा ।

किन्तु द्रष्टव्य यह है कि **बनारसी दास**ने **मिरगावती**के साथ जिस दूसरे लोक-प्रिय काव्य—**मधुमालती**का उल्लेख किया है, उसकी चर्चा जैन-साहित्यमे कही नही मिलती । जैनेतर साहित्यमे **मधुमालती** नामक एक प्रेमाख्यानक काव्य उपलब्ध है जो **मंझन** कवि कृत सोलहवी शतीके मध्यकी रचना है । यह इस बातका सकेत है कि **बनारसी दास**ने **मिरगावती** नामसे उसी ढगके किसी जैनेतर प्रेम-कथाकी ओर सकेत किया है उपर्युक्त जैन-कथाका नही । उस समय मृगावती नामक राजकुमारीसे सम्बन्ध रखनेवाली एक प्रेम-कथा लोकमे प्रचलित थी, इसका प्रमाण दो अन्य प्रेमाख्यानक काव्योमे मिलता है ।

चितरावली नामक प्रेमाख्यानमे, जिसकी रचना १६१३ ई० मे **उसमान** नामक कविने की थी, लिखा मिलता है—

मिरगावती मुख रूप बसेरा ।
राजकुँवर भयउ प्रेम अहेरा ॥[५]

इससे एक वर्ष पूर्व १६१२ ई० की एक दूसरी रचना **रूपावती** है, जो अभी तक अप्रकाशित है । उसमें ये पक्तियॉ है—

लोरक चन्दा मैना प्रीतिह को तिरे ।
राजकुँवर मिरगावति लिखि लिखि ते धरे ॥[६]

इनसे ज्ञात होता है कि **बनारसीदास**के समय राजकुँवर और मृगावती नामक प्रेमी-प्रेमिकाकी कथा लोकमे काफी प्रचलित थी । इस कथाकी जानकारी लोगोको इससे भी पहले थी, यह **मलिक मुहम्मद जायसी**के **पद्मावत**से, जो ९२७ हिजरी (१५२७ ई० के आसपास) की रचना है,[७] प्रकट होता है । उसमे कहा गया है—

---

१. अगरचन्द नाहटा, सती मृगावती, कल्याण (गोरखपुर), नारी-अक, जनवरी १९४८, पृ० ७१०-७१२ ।

२ वही ।

३. वही ।

४. समयसुन्दर कृत कुसुमांजलि, सम्पा० अगरचन्द नाहटा, स० २०१३, पृ० ४६, भूमिका ।

५. चितरावली, कडवक ३० ।

६. चन्दायन, आगरा सस्करण, पृ० ६; विश्वनाथप्रसाद द्वारा उद्धृत ।

७. कुछ लोग इसकी रचनाका समय ९४७ हिजरी मानते है, किन्तु हमें यह अग्राह्य है । हमारे मतके लिए देखिए 'परिषद पत्रिका', पटना, वर्ष ३, पृ० ७२ ।

राजकुँवर कंचनपुर गयऊ ॥
मिरगावति कहँ जोगी भयऊ ॥[1]

इससे इस कथाके सम्बन्धमे इतना और ज्ञात होता है कि राजकुँवर मृगावतीके प्रममें जोगी बनकर कंचनपुर गया था।

मृगावतीके प्रेममे राजकुँवरके योगी बनकर कचनपुर जानेकी कथापर आधारित मधुमालतीके ढगके काव्यके अस्तित्वकी बात पहले पहल १९०० ई० मे प्रकाश मे आयी। उस वर्ष काशी नागरीप्रचारणी सभाकी ओर से हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थोंके खोजकी जो पहली रिपोर्ट प्रकाशित हुई, उसमे मृगावती नामक काव्यके एक खण्डित प्रति का परिचय दिया गया, जो कैथी-नागरी लिपिमे लिखी हुई थी और खोजियोंको काशीके चौखम्भा-स्थित भारतेन्दु पुस्तकालयमे मिली थी। रिपोर्टके अनुसार इस कथाका साराश इस प्रकार है—

चन्द्रगिरिके राजा गनपतदेवका पुत्र कंचननगरके राजा रूपमुरारकी पुत्री मृगावती पर मोहित हो गया। इस राजकुमारीको एक स्थानसे दूसरे स्थान पर चले जानेकी विद्या ज्ञात थी। राजकुमारने उसका पता लगया और उससे उसका विवाह हो गया। विवाहके पश्चात् एक दिन मृगावती राजकुमारको धोखा देकर उसकी अनुपस्थितिमें उड भागी। उसके विरहमे राजकुमार भी योगी-वेश धारणकर घरसे निकल पडा। पहले वह समुद्रसे घिरे एक पहाड़पर पहुँचा, जहाँ उसने रुकमिन नामकी एक स्त्री को राक्षससे बचाया। प्रत्युपकारमे रुकमिनके पिताने उसका विवाह उससे कर दिया। वहाँ से उस नगरमे पहुँचा, जहाँ मृगावती अपने पिताके मृत्युपरान्त राज्य कर रही थी। वहाँ वह बारह बरस रहा। इधर गनपतदेव अपने पुत्रकी बाट जोहते-जोहते घबड़ा उठा। अन्तमे उसने एक दूत उसे लौटा लानेके लिए भेजा। वह मार्गमे रुकमिनसे मिलता हुआ कंचननगर पहुँचा और राजकुमारसे पिताका सन्देश कह सुनाया। राजकुमार मृगावतीके साथ अपने देशकी ओर लौटा और मार्गमे रुकमिनको भी साथमे ले लिया। घर पर पहुँचने पर आनन्दोत्सव मनाया गया। बरसो तक राजकुमार अपनी रानियोके साथ आनन्द मनाता हुआ जीवन व्यतीत करता रहा। अन्तमे एक दिन मृगयामे हाथीसे गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी और उसकी दोनो ही रानियाँ उसके शवके साथ सती हो गयी।

खोज रिपोर्टमे इस काव्य ग्रन्थके रचयिताका नाम मियाँ कुतुबन और रचना काल ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) बताया गया है और यह भी कहा गया है कि मियाँ कुतुबन शेख बुरहान चिश्तीके शिष्य और सूरवशीय नरेश शेरशाहके पिता हुसेन शाहके आश्रित थे। उसमें उपलब्ध प्रतिके सम्बन्धमें कहा गया है कि उसने आरम्भ के चार पत्र नहीं थे। उपलब्ध पत्रोंसे आरम्भके चार और अन्तका एक कडवक उद्धृत भी किया गया है। ये कड़वक प्रस्तुत संस्करणके क्रमशः कड़वक ७, ८, ९, १३

---

१. पदमावत, सम्पा० वासुदेवशरण अग्रवाल, २३३।५।

और ४२८ है। इससे यह प्रकट होता है कि खोजियोको जो प्रति उपलब्ध थी वह आदि से ही नही, अन्तसे भी खण्डित थी।

खोज रिपोर्ट प्रकाशित होनेके उपरान्त शीघ्र ही किसी समय यह प्रति अपने उपलब्धि-स्थानसे गायब हो गयी और आजतक उसका पता नही है। इस कारण उक्त प्रति और उसकी सामग्री की जो भी जानकारी आज उपलब्ध है, वह इस **खोज रिपोर्ट**के माध्यमसे ही है। अतः पूर्ण सामग्रीके अभावमे दो महत्वपूर्ण जिज्ञासाएँ उभर-कर सामने आती है—

१—आरम्भ और अन्तसे प्रति खण्डित थी, ऐसी अवस्थामे स्पष्ट है कि खोजियोंको सिरनामा और पुष्पिका दोनो ही प्राप्त नही थे। फिर उन्होंने किस आधारपर ग्रन्थका नाम **मृगावती** बताया और लेखकको **मियाँ कुतुबन** कहा ? हो सकता है उपलब्ध पत्रोंके हाशिये पर ग्रन्थका नाम लिखा रहा हो, जैसा कि बहुधा ग्रन्थो मे मिलता है; किन्तु रचयिताको **मियाँ कुतुबन** बतानेका कोई आधार जान नहीं पडता। रचयिताने अपनी रचनाके बीच यत्र-तत्र अपने नामका उल्लेख किया है, ऐसा पीछे प्राप्त अन्य प्रतियोसे ज्ञात होता है। किन्तु सर्वत्र लेखकने अपनेको **कुतुबन** कहा है **मियाँ कुतुबन** नही। कुतुबनके लिए मियाँकी उपाधि खोजियो को कहाँ से ज्ञात हुई, यह रहस्य है।

२—खोज रिपोर्टमे उद्धृत कडवकके अनुसार कुतुबनके गुरुका नाम **शेख बुढन** था। फिर क्योकर खोज-रिपोर्टके लेखकोने उनको **शेख बुरहान चिश्ती** कहा ?

जो भी हो। **खोज रिपोर्ट**के प्रकाशनके पश्चात् **कुतुबन** और **मृगावती**के सम्बन्धमे कदाचित् बहुत दिनोंतक किसीने कुछ भी ध्यान नही दिया। जब **मिश्रबन्धु** ने **मिश्रबन्धु-विनोद**का पहला खण्ड प्रकाशित किया तो लिखा—**कुतुबन शेखने मृगावती ग्रन्थ संवत् १५६० में बनाया। ये महाशय शेख बुरहानके चेले थे और शेरशाह सूरके पिता हुसैनशाहके यहाँ रहते थे। इन्होने पद्मावतीको भाँति दोहा चौपाइयोंमें रचना की। इनकी गणना साधारण श्रेणीमें है।**[१] इस प्रकार **मिश्रबन्धु** ने **खोज-रिपोर्ट**के कथनको दुहरा भर दिया। नयी बात यह की कि **कुतुबन**को **मियाँ** से **शेख** बना और ज्ञात मात्र पाँच कडवकोके आधार पर उन्हे साधारण श्रणी का कवि घोषित कर दिया।

इसी प्रकार जब **रामचन्द्र शुक्लने** जायसी ग्रन्थावली प्रकाशित किया तो उन्होंने इस सम्बन्धमे लिखा—**पूरबमे बंगालके शासक हुसेन शाहके अनुरोधसे, जिसने सत्यपीरकी कथा चलायी थी, कुतुबन मियाँ एक ऐसी कहानी लेकर जनताके सामने आये जिसके द्वारा उन्होंने मुसलमान होते हुए भी अपने मनुष्य होनेका परिचय दिया।**[२] इस प्रकार सूर-वशके हुसेन शाहको **कुतुबन**का आश्रयदाता न मान कर

---

१. मिश्रबन्धु विनोद, प्रथम भाग, स० १९८३, पृ० २२९।

२. जायसी ग्रन्थवाली, सवत् २०१३, पृ० ३।

उन्होने बगाल-सुल्तान हुसेनशाह को उनका आश्रय दाता बताया। पर शीघ्र ही उनके इस मतमे परिवर्तन हुआ और उन्होने **हिन्दी साहित्य का इतिहासमे** बताया कि ये **(कुतुबन)** चिश्ती वशके **शेख बुरहानके** शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसेन शाहके आश्रित थे।[1]

तदनन्तर **सुकुमार सेनने इसलामी बंगला साहित्यमे रामचन्द्र शुक्लके** दोनो मतोंके समन्वय रूपमे अपना यह नया मत प्रकट किया कि—**कवि कुतबन जौनपुरके सुलतान हुसेन शाह का आश्रित था तथा उन्हींके साथ बंगाल चला गया और गौड़के हुसेन शाहके यहाँ उसने आश्रय लिया था। मृगावती काव्य ९०९ हिजरीमें गौड़ देशमें रचा गया।**[2]

लगभग पचास वर्ष तक **कुतुबन** और **मिरगावतीके** सम्बन्धकी कोई नयी सामग्री प्रकाशमें नही आयी। इस कालके बीच डाक्टरकी डिगरीके निमित्त विभिन्न विश्वविद्यालयोके सम्मुख हिन्दी सूफी प्रेमाख्यानक काव्यो पर अनेक शोध प्रबन्ध उपस्थित किये गये। उन सबमे **कुतुबन** और **मिरगावतीकी** चर्चाका आधार **खोज-रिपोर्ट** और उपर्युक्त विद्वानोंका कथन ही है। अनुसन्धित्सुओ पर **खोज-रिपोर्टका** कुछ ऐसा प्रभाव छाया रहा कि नयी जानकारी प्राप्त करने अथवा प्राप्त जानकारी पर ध्यान देने की उन्होंने या तो आवश्यकताका अनुभव नहीं किया या उनकी ओर उनका ध्यान ही नही गया।

१९४९ ई० के मार्चमें पहली बार **मिरगावती** सम्बन्धी नयी जानकारी सामने आयी। **दीनानाथ खत्रीने** शादूल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेरसे प्रकाशित होने वाली शोधपत्रिका **राजस्थान भारतीमे कुतुबन की मृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति** शीर्षक लेख प्रकाशित किया।[3] इस लेखमे उन्होने **मिरगावतीकी** तीन प्रतियोका संक्षिप्त परिचय दिया। इनमे एक तो चौखम्भा वाली वह प्रति है, जिसका विवरण **खोज रिपोर्टमे** उपलब्ध है और जिसकी जानकारी सबको रही है। प्रस्तुत परिचय भी उसी रिपोर्टके आधार पर ही दिया गया है। शेष जिन दो प्रतियोका उल्लेख इस लेखमे है वे पहले सर्वथा अज्ञात थी। इनमेसे एक प्रतिके नागरीप्रचारणी सभा, काशीमे होनेकी बात कही गयी है और बताया गया है कि उसमे केवल सात पत्र है।[4] दूसरी प्रतिके बीकानेरके अनूप राजकीय सस्कृत पुस्तकालयमे होनेकी सूचनाके साथ उसका सक्षिप्त विवरण दिया गया है।

दो वर्ष पश्चात् स० २००७ (१९५१ ई०) मे **परशुराम चतुर्वेदीने** सूफी प्रेम-काव्योके अवतरणोका एक सग्रह **सूफी-काव्य संग्रह** नामसे प्रस्तुत किया। इसमे पहली बार **मिरगावतीके** ऐसे अवतरण उपस्थित किये जो **खोज रिपोर्टमे** उद्धृत अवतरणोंसे

---

१. हिन्दी साहित्यका इतिहास, पन्द्रहवीं आवृति, २०२२ वि०, पृ० ९४।
२. इसलामी बगला साहित्य, १९५० ई०, पृ० ८।
३. राजस्थान भारती, भाग २ अक ३ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।
४ सम्भवत- लेखकका तात्पर्य भारत कला भवन, काशी वाली प्रतिसे है।

सर्वथा भिन्न थे। ये अवतरण उन्होने एक खण्डित प्रतिसे लिये थे, जो उन्हे भारत कला भवन, काशीमे देखनेको मिली थी।[१] **मिरगावती**की किसी प्रकारकी कोई प्रति भारत कला भवनमे है, उस समय तक किसी को पता न था।

अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर और भारत कला भवन, काशी की प्रतियोंके ज्ञात होनेके लगभग तीन वर्ष पश्चात् १९५३ ई० मे **कमल कुलश्रेष्ठ**का शोध-प्रबन्ध **हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य** प्रकाशित हुआ। उसमे इन दोनोमे से किसी भी प्रति की कोई चर्चा नही है। उसे देखनेसे ऐसा जान पडता है कि उन्होने इनके बारेमें कुछ सुना भी न था। उन्होने इस शोध प्रबन्धमे **खोज-रिपोर्ट** वाले अवतरण ही अविकल रूपसे उद्धृत किया और उसमे दिये हुए कथा-सारको ही अग्रेजीसे अनूदित करके रख दिया है।

१९५४–५५ ई० के आस-पास **मिरगावती**की तीन अन्य प्रतियाँ प्रकाशमें आयी। इनमेसे दो प्रतियोको प्रकाशमे लानेका श्रेय पटना कालेजके प्राध्यापक (अब काशी प्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनाके निदेशक) **सैयद हसन असकरी** को है। वे मध्यकालीन भारतीय इतिहासके विद्वान् तो है ही, उर्दू-हिन्दी साहित्यके प्रति भी उनकी रुचि है और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोकी खोज उनका व्यसन है। अपने इस व्यसनके परिणामस्वरूप उन्हे अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोको प्रकाशमे लानेका श्रेय प्राप्त है। १९५३–५४ ई० मे मनेर शरीफ (पटना) के खानकाहके सज्जादनशीन शाह इनायतउल्लाहके पुराने ग्रन्थों के बस्तोको टटोलते हुए उन्हे **मौलाना दाऊद** कृत **चन्दायन**की ६४ पृष्ठोकी एक खण्डित प्रति मिली। इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर **कुतुबन** कृत **मिरगावती**के भी एक-एक कड़वक अंकित है। इस प्रतिका परिचय देते हुए **असकरी** ने एक लेख प्रकाशित किया और **चन्दायन** और **मिरगावती** दोनोसे परिचित कराया।[२] यह प्रति फारसी लिपिमे है।

असकरीको जिस दूसरी प्रतिको प्रकाशमे लानेका श्रेय है, वह भी फारसी लिपि मे है और वह भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोके विशेषज्ञ **जियाउद्दीन अहमद देसाई**को १९५४ ई० के लगभग दिल्लीमे प्राप्त हुई थी। उन्होंने उसे अध्ययनके निमित्त **असकरी**को दिया और **असकरी**ने लेख द्वारा लोगोको उस प्रतिसे परिचित कराया।[३] यह प्रति लगभग पूर्ण है केवल आरम्भका एक पत्र नही है।

तीसरी प्रति कैथी लिपिमे है और अत्यन्त खण्डित है। यह प्रति मूलतः फतहपुर (उत्तर प्रदेश) जिलेके एकडला ग्राम निवासी ओम्प्रकाश सिह और राजेन्द्रपाल सिंहके परिवार मे थी। उन लोगोसे यह प्रति अगस्त १९५५ मे प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक **शिवगोपाल मिश्र**को प्राप्त हुई और अब वह भारत कला भवन, काशी मे

---

१. सम्भवतः दीनानाथ खत्रीने इसी प्रतिका परिचय दिया है। उनका विवरण इस प्रतिके विवरण से एक दम मिलता है।

२ करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १७–२४।

३. जर्नल ऑव बिहार रिसर्च सोसाइटी, भाग ४१ (१९५५ ई०), पृ० ४५३।

है। इस प्रति के प्रकाश मे आनेकी सूचना **कैलाश कल्पितने** प्रयागके हिन्दी दैनिक **अमृत पत्रिकाके** ३ सितम्बर १९५५ ई० के अक मे **मृगावती तथा मधुमालतीकी प्रतियाँ प्राप्त** शीर्षकसे प्रकाशित किया।

तदनन्तर इस एकडला वाली प्रतिको लेकर उपर्युक्त प्रतियोकी जानकारीके प्रकाशमे **मिरगावतीके** सम्बन्धमे **उदयशंकर शास्त्री**[1], **रामकुमार वर्मा**[2] और **शिवगोपाल मिश्र**[3] के कई विवादात्मक लेख प्रकाशित हुए। इन लेखोंके माध्यमसे **मिरगावतीकी** थोडी-सी चर्चा हुई, पर यह चर्चा केवल सतही ही थी।

इस प्रकार **मिरगावतीकी** अब तक छः प्रतियाॅ प्रकाशमे आयी है। इनमे चौखम्भा वाली प्रतिका, अनुपलब्ध होनेके कारण, काव्यके सम्पादन-प्रकाशनकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नही है। खोज-रिपोर्टमे उद्धृत पॉच कडवकोका उल्लेख मात्र किया जा सकता है। मनेर और काशी प्रतियाॅ भी काव्यके अश मात्र हैं। उनसे भी काव्यका कोई रूप सामने नही आता। उनका उपयोग केवल पाठान्तरोको देखने समझनेके लिए ही किया जा सकता है। केवल एकडला, बीकानेर और दिल्ली प्रतियाँ ही काव्य-सम्पादनकी दृष्टिसे उपयोगी कही जा सकती हैं। किन्तु एकडला और बीकानेर प्रतियाँ, दोनों इस प्रकार खण्डित हैं कि वे बहुलाश उपस्थित करते हुए भी, स्वतन्त्र रूपसे काव्यका रूप सामने रखनेमे असमर्थ हैं। दोनोको एक दूसरेका पूरक कह सकते हैं। दोनोंको मिलाकर काव्यका एक रूप खडा होता है, किन्तु उससे पूरा काव्य प्रस्तुत नहीं हो पाता। दिल्ली प्रति ही एक ऐसी है जो आरम्भके एक पत्रको छोडकर शेष रूपमें पूर्ण है। सभी प्रतियोंका आधार लेकर काव्यको निखरे रूपमे प्रस्तुत करनेकी सामग्री १९५५ ई० के अन्त तक लोगोंके सामने आ गयी थी। पर उनके उपयोगका प्रयत्न तबसे अबतक किन लोगोंने और किस प्रकार किया, यह जाननेका साधन उपलब्ध नही है।

सुना जाता है कि दिल्ली, मनेर, काशी और बीकानेर प्रतियोके आधार पर **मिरगावतीके** सम्पादनका का कार्य **उदयशंकर शास्त्रीने** अपने हार्थोमे लिया था। कदाचित उन्होने उसका सम्पादन समाप्त कर प्रेस कापी भी तैयार कर लिया था और

---

१. (क) मृगावतीका रचनाकाल १६ वीं शताब्दी, दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।
   (ख) मृगावतीकी प्रतियोंकी पूर्णता, दैनिक भारत, ९ सितम्बर १९५५।
   (ग) भ्रम फैल ही तो गया, दैनिक भारत, २० नवम्बर १९५५।
   (घ) कुतुबनकी मृगावती—एक परिचय, दैनिक नवनीत, ७ फरवरी १९५६, ब्रज भारतीय, वर्ष १३ अक ३ (स० २०१३), पृ० २३–२८।
   (च) मृगावतीका मर्म, दैनिक भारत, ७ फरवरी १९५६।

२ मृगावतीकी नवीन प्रति, दैनिक भारत, १० तथा १२ सितम्बर १९५५।

३. (क) मृगावतीके प्रतिके सम्बन्धमें, दैनिक भारत, १० सितम्बर १९५५।
   (ख) मृगावती, दैनिक नवजीवन, ३० अक्तूबर १९५५, हिन्दी प्रचारक, अक्तूबर १९५५।
   (ग) मृगावतीके सम्बन्धमें वितण्डावाद, दैनिक भारत, २० अप्रैल १९५६; नवजीवन ९ सितम्बर १९५६।

दिल्ली प्रति के दो पृष्ठ

चन्दायनकी मनेर प्रतिका पृष्ठ और दो हाशिये, जिन पर मिरगावती अंकित है ।

एकडला प्रति के दो पृष्ठ

बीकानेर प्रति का एक पृष्ठ

मुद्रणके निमित्त उसे प्रेसमे भेज भी दिया था, ऐसा भी कहा जाता है।[1] किन्तु अभी तक उनका यह कार्य प्रकाशमे नही आया है।

एकडला वाली प्रति मिलने पर **शिवगोपाल मिश्रने** उसके आधार पर **मिरगावती**का पाठ तैयार किया और १९५९ ई० के लगभग उसे प्रकाशनार्थ भेज भी दिया। पर एक साल बाद वह बिना प्रकाशित हुए ही उनके पास लौट आयी।[2] तब उन्होने बीकानेर, मनेर शरीफ और काशी प्रतियोका उपयोग कर नये सिरेसे एक दूसरा पाठ तैयार किया, जिसे गत वर्ष (शक स० १८८५) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागने प्रकाशित किया है। अब तक **मिरगावती**का एकमात्र मुद्रित संस्करण यही है।

मिरगावतीके सम्पादन-प्रकाशनका तीसरा प्रयास मेरा अपना है, जो आपके सम्मुख है। सम्मेलन-सस्करण के प्रकाशनसे बहुत पूर्व जब मै **चन्दायन**का सम्पादन कर रहा था, तभी **असकरी**के लेखके माध्यमसे **मिरगावती**के दिल्ली प्रति की ओर आकृष्ट हुआ था। उस समय तक **मिरगावती**के सम्पादनकी कोई चर्चा नहीं सुनाई पड़ रही थी। **चन्दायन**के माध्यमसे मनेर शरीफ प्रतिका फोटो मेरे पास पहलेसे ही था। अतः इच्छा हुई कि इन दोनो प्रतियोके आधार पर **मिरगावती** का भी सम्पादन करूँ। **मिरगावती**के अन्य प्रतियोके अस्तित्वकी बात तब तक मेरे कानों तक नही पहुँच पायी थी।

मेरी इस इच्छाके पीछे निहित मेरी यह धारणा रही है कि मुसलमान कवियो द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्पादनमे फारसी प्रतियो पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिये। वे नागरी-कैथी प्रतियोंकी अपेक्षा अधिक विकृति-मुक्त होती है और मूलसे उनका निकटका सम्बन्ध है। किन्तु अरबी-फारसी लिपिमे लिखे हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंको बिना किसी पूर्व अभ्यासके शुद्ध पढना अत्यन्त कठिन है। अतः उसका पाठोद्धार कार्य सुगम और सर्व-सुलभ नही है। हिन्दीके विद्वानोमे ऐसे लोग कम ही हैं जो इस कामको सफलतापूर्वक कर सके। **चन्दायन**के पाठोद्धारकी सफलतासे मुझे कुछ ऐसा लगा कि दूसरोकी अपेक्षा मेरे लिए **मिरगावती**का पाठोद्धार अधिक सुगम होगा और मैं उसका उचित पाठ उपस्थित कर सकूँगा। हो सकता है यह मेरा अहं हो। पर मैंने एक बार पुनः अपने क्षेत्र से हट कर पराये क्षेत्रमे उतरनेका दुस्साहस कर ही डाला।

चन्दायनके सम्पादनका कार्य चल ही रहा था, तभी मैंने **मिरगावती**के पाठोद्धारमें हाथ लगा दिया। **जियाउद्दीन अहमद देसाई**ने दिल्ली प्रतिके उपयोग करनेकी सहर्ष अनुमति प्रदान की और **असकरी**ने उस प्रतिको मेरे पास भेजनेकी उदारता दिखायी। नस्तालीक लिपिमे लिखी होनेके कारण इस प्रतिके पाठोद्धारमें विशेष कठि-

---

१. परशुराम चतुर्वेदी, हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान काव्य, १९६२ ई० पृ० ४८।

२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० ६५।

नाई नही हुई। १९६२ ई० के आरम्भ मे यूरोप जानेसे पूर्व इसका प्रथम वाचन समाप्त हो गया था। कदाचित उस समय यदि यूरोप जाना न हुआ होता तो इसका सम्पादन कार्य भी तभी समाप्त हो जाता और हो सकता है कि यह तभी प्रकाशित भी हो जाती। यूरोपसे लौटने पर अन्य कार्योंमे ऐसा व्यस्त हुआ कि इस कार्यको हाथमे लेनेका अवसर न प्राप्त हो सका। तभी १९६३ ई० के जूनमें मै पटना संग्रहालयका अध्यक्ष होकर चला आया। वह वर्ष उसकी व्यवस्था देखने-समझनेमे ही चला गया। गत वर्ष जब कुछ अवसर मिला तो फरवरीके महीनेमें पुन इस कार्यमें हाथ लगाया। दिल्ली प्रतिके वाचनको दुहराया और मनेर शरीफ प्रतिके साथ उसकी संगति बैठायी।

सम्मेलन सस्करण के प्रकाशनसे पूर्व बीकानेरके प्रति की मुझे किसी प्रकारकी जानकारी न थी। अतः उस समय उनके उपयोगका कोई प्रश्न मेरे सामने न था। चौखम्भा प्रतिके पॉच कडवकोका उपयोग मेरी दृष्टिमे कोई अर्थ नहीं रखता था। काशी वाली प्रतिका मूल भारत कला-भवनमें ढूँढनेपर भी न मिल सका। उसकी एक आधुनिक प्रतिलिपि देखनेमे आयी, पर उसे मैंने अपने कामका न माना। बच रही एकडला प्रति। उसका उपयोग मैं केवल पाठान्तरोंके निमित्त करना चाहता था।

एकडला प्रति के फोटो मेरे बम्बई रहते ही प्रिंस ऑव वेल्स संग्रहालयके फोटो-ग्राफर जगन मेहता काशी जाकर ले आये थे। भारत कलाभवनमे यह प्रति अलग-अलग पत्रों के रूप मे उपलब्ध है और उनका वहाँ जो क्रम है, उसका काव्यके कडवक क्रमसे कोई सम्बन्ध नहीं है। पता नहीं वे मूल रूपमे इसी प्रकार शिवगोपाल मिश्र को प्राप्त हुए थे या पीछे से बिखर गये। ऐसी स्थिति में उनका क्रम स्थिर किये बिना उसका उपयोग करना सम्भव न था। पत्रोपर दिए हुए सख्या-संकेत भी इस कार्यमे सहायक न थे। इस कारण यह कार्य काफी कठिन और श्रम अपेक्षित था। अतः जबतक मैने फारसी प्रतियोका पाठ तैयार नही कर लिया, इस प्रतिकी उपेक्षा की। तदनन्तर फारसी प्रतियोके कडवकोको आधार बनाकर एकडला प्रतिके पत्रोंको क्रम दिया और तब पाठान्तर तैयार करनेकी ओर बढा।

इस प्रकार एकडला प्रतिसे मै पाठान्तर तैयार कर ही रहा था तभी सम्मेलन संस्करण प्रकाशमे आया और अप्रैल या मईके महीनेमें शिवगोपाल मिश्रने उसकी एक प्रति भेजनेकी कृपा की। उसे देखनेपर मुझे लगा कि उससे मिरगावतीकी वास्तविक पूर्ति नही होती यद्यपि उसकी उपेक्षा नही की जा सकती। उससे मुझे बीकानेर प्रतिका परिचय मिला और यह उचित जान पडा कि पाठान्तर रूपमें उसके भी पाठ ग्रहण किये जायँ। इसके निमित्त उसके फोटोप्रिण्ट उपलब्ध कर देनेके लिए अगरचन्द नाहटा को लिखा किन्तु उन्होंने उसकी प्रति प्राप्तिमें अनेक कठिनाइयाँ बतायी। अतः मूल प्रतिसे पाठ ग्रहण करनेका विचार त्यागना पडा। यह मानकर कि मुद्रित प्रति उस प्रति-की सावधानीसे की गयी प्रतिलिपि होगी, मैंने उसे ही बीकानेर प्रतिके पाठका आधार बनाया। और जब मुद्रित प्रतिसे बीकानेर प्रतिके पाठ लिये तो चौखम्भा और काशी

प्रतियो के पाठ ग्रहण करनेमे मेरे लिए आपत्ति जैसी कोई बात नही रही। अत उसके भी पाठ पाठान्तरमे ग्रहण किये। इस प्रकार प्रस्तुत संस्करणमें मैंने अबतक ज्ञात सभी प्रतियोंका उपयोग किया है। फलतः काव्य अपने स्वरूपमे पूर्ण है, आरम्भके केवल तीन कड़वक नही है।

पाठ-सम्पादन करते समय मैने संशुद्ध-पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) प्रस्तुत करने जैसा कोई प्रयास नही किया है। दिल्ली प्रतिको पाठका मूल आधार मानकर मैने अन्य प्रतियोके पाठान्तर मात्र सकलित कर दिये हैं। ऐसी अवस्थामे यह कार्य कदाचित वैज्ञानिक नहीं कहा जायेगा। किन्तु मेरी निश्चित धारणा है कि मेरे इस कार्यका वैज्ञा-निक कथित ढगपर किये गये कार्यसे कदाचित ही किन्ही-किन्ही स्थलोंपर भिन्नता होगी। इस कहनेका तात्पर्य यह कदापि नही है कि मेरा कार्य सर्वथा निर्दोष है। मध्य-कालीन कवियों और काव्योसे मेरा परिचय अत्यल्प है। हिन्दी साहित्य मेरी जीविको-पार्जनका साधन नहीं, व्यसन (हाबी) मात्र है। व्यसन (हाबी) के रूपमे ही मैने इस कार्यको किया है। इस भावसे किया गया कार्य सर्वांगपूर्ण होगा, ऐसा समझना दम्भ होगा।

भाषाके सम्बन्धमे मेरी एक विवशता है। वह यह कि नगर-निवासी होते हुए भी मै ठेठ गॅवार हूँ। जब आठवी कक्षामे था तभी हिन्दी व्याकरणका साथ छूट गया; भाषा-विज्ञानकी किसी पुस्तकसे आजतक सम्पर्क स्थापित न कर सका। राज-नीतिक कार्यकर्ताके रूपमे अवधी-भोजपुरी बोलियोसे सम्पर्क रखनेवाले गॉवोमे १९३० और १९४३ के बीच महीनो नही, बरसो बीते है। अतः नागरक कृत्रिमतासे अछूते रहकर शब्द और व्याकरण जिस रूपमे गॉवोके स्त्री-पुरुषोके कण्ठ और जिह्वामे समाए हुए थे, वे रातदिन मेरे कानोंसे टकराते रहे है। भाषा-सम्बन्धी मेरा ज्ञान वहीसे सचित है। गॉवोके लोगोकी बोल-चाल ही भाषाके सम्बन्धमे मेरी पुस्तकें थी और गॉव-के लोग ही मेरे गुरु थे। लोक-जीवन और लोक-व्यवहार ही मेरा शब्द-कोष है। प्रस्तुत कार्यमें मै अपने इसी ज्ञानपर निर्भर रहा हूँ। हो सकता है प्रेमाख्यानक काव्योके सम्पादनमे निष्णात समझे जानेवाले विद्वानों और उनके चारो ओर मॅडरानेवाले शिष्यों-को, जो पदे-पदे ग्रियर्सनको वेद वाक्यकी तरह दुहराते रहते है, मेरा यह कार्य व्याक-रणकी अज्ञतासे भरा और भाषा-विज्ञानके सिद्धान्तोसे शून्य जान पडे, अतः यह बता देना आवश्यक जान पडा।

इन दिनों प्रेमाख्यान काव्योके सम्पादन-प्रकाशनमे पाठ-सम्पादनके साथ-साथ पाठका व्याख्यात्मक अर्थ देनेकी भी परिपाटी चल पडी है। किन्तु उस परिपाटीका निर्वाह इस ग्रन्थमे नहीं है। मेरी धारणा है कि इस काव्यमे कुछ ऐसा नही है जो पाठकोके समझके बाहर हो और किसी प्रकारकी व्याख्याकी अपेक्षा रखता हो। व्याख्या करना अनावश्यक श्रम ही नहीं अकारण ही ग्रन्थकी आकार-वृद्धिका प्रयास भी होता, जो मुझे अभीष्ट नहीं। यदि काव्यको किसी प्रकारकी व्याख्याकी आवश्यकता होती भी

तो कदाचित मैं उसका प्रयास न करता। मुझमें वह क्षमता और पाण्डित्य नहीं, जिसके बलपर निष्णात व्याख्याकारोकी तरह **उसकी साँग इस प्रकार हिलती है जैसे उदास मूस (चूहा) हिलता रहता है** जैसी उत्कृष्ट व्याख्या, टीका और अर्थ कर सकूँ। मुझ द्वारा सम्पादित चन्दायनकी चर्चा करते हुए एक निष्णात व्याख्याकार प्राध्यापकने मुझे जिस ढगकी चेतावनी दी है, उससे ध्वनित होता है कि काव्य-ग्रन्थोके अर्थ और व्याख्या करनेका एकमात्र अधिकार विश्वविद्यालयोके हिन्दीके प्राध्यापकोको ही है। किसी अन्यका ऐसा करना उसका दुस्साहस है। इस चेतावनीके बाद धर्म निरपेक्ष राज्यका नागरिक होनेके कारण इस प्राध्यापक-धर्ममे हस्तक्षेप करनेकी बात सोच भी नही पाता। अतः मैने उन शब्दोंके जो मुझे महत्त्वके लगे, अर्थ अथवा उनके सम्बन्धमे आवश्यक टिप्पणी देकर ही सन्तोष माना है।

इस ग्रन्थको मैने जिस रूपमे प्रस्तुत किया है, उसे पाठक किस प्रकार ग्रहण करेंगे, इसकी मै कल्पना करना नही चाहता। मेरे इस कार्यसे यदि किन्ही पाठकोको अणुमात्र भी लगे कि मैंने हिन्दी साहित्यकी कुछ सेवा की है तो वही मेरे लिए पर्याप्त आनन्दकी बात होगी।

पटना सग्रहालय,
पटना। **परमेश्वरीलाल गुप्त**
कार्तिक पूर्णिमा, २०२२ वि०।

कवि परिचय

नाम

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतियोमे सिरनामा या पुष्पिकाके रूपमे ऐसी कोई सामग्री उपलब्ध नही है जिससे उसके रचयिताके सम्बन्धमे कुछ जाना जा सके। हॉ, काव्यके भीतर पॉच स्थलोपर[1] **कुतुबन** नामका इस प्रकार प्रयोग हुआ है कि अनुमान किया जा सकता है कि काव्यके रचयिताका नाम अथवा कवि-नाम **कुतुबन** था। **खोज रिपोर्ट**मे इन्हे **मियाँ कुतुबन** कहा गया है और **मिश्र-बन्धु**ने अपने **मिश्र-बन्धु-विनोद**मे इनका उल्लेख **कुतुबन शेख**के नामसे किया है। इनके आधारपर परवर्ती लेखकोने जहॉ कही **मिरगावती**की चर्चा की है, लेखकका नाम **मियाँ कुतुबन** या **शेख कुतुबन** बताया है। उन्हे **मियाँ** कहनेका क्या आधार है, कहा नही जा सकता। हो सकता है मुसलमान होनेका अनुमान कर **खोज रिपोर्ट** के सम्पादकने आदरार्थ **मियाँ** शब्दका प्रयोग किया हो। उनके **शेख** होनेकी कल्पनाका आधार सम्भवतः उनके गुरुका **शेख** होना है।

कुतुबन अपने सम्बन्धमे इतने तटस्थ थे कि उन्होने **चन्दायन**से प्रारम्भ होनेवाली प्रेमाख्यानक काव्यकी परम्पराका अविकल अनुसरण करते हुए भी अपना किसी प्रकारका वैयक्तिक परिचय देना आवश्यक नही माना। हमारे पास यह जाननेका कोई भी साधन नही है कि वे कहॉके निवासी थे, कहॉ रहते थे।[2] उनके माता-पिताके सम्बन्धमे भी हम कुछ नही जान पाते। उनके सम्बन्धमे हम केवल यही जानते है कि (१) वे किसके शिष्य थे,(२) उन्होने **मिरगावती** की कब रचना की और (३) वे किसके आश्रित थे अथवा उनका शाहे-वक्त कौन था।

पीर

चौखम्भा प्रतिमे **कुतुबन**के पीर (गुरु) का नाम **शेख बुढ़न** बताया गया है। एकडला प्रतिमे भी यही नाम दिया हुआ है। पर **खोज रिपोर्ट**मे उनका नाम **शेख बुरहान** बताया गया है और कहा गया है कि उनका सम्बन्ध चिश्तिया सम्प्रदायसे था। **खोज रिपोर्ट**के इस कथनको **रामचन्द्र शुक्ल**ने अपने **हिन्दी साहित्य का इतिहास**

---

१ कडवक ८।२, ११५।६, १२१।६, १९६।६, २८०।६।

२ जिस ढगसे कुतुबनने रचना-कालकी तिथि गणना की है, उससे सन्देह होता है कि वे दाक्षिणात्य थे अथवा दक्षिणके साथ उनका निकटका सम्बन्ध था। देखिये आगे पृ० १७-१८।

मे दुहराया है और उन्हीके कथनको परवर्ती विद्वान् और अनुसन्धित्सु दुहराते चले आ रहे है।

शेख बुरहानकी खोज करते हुए लोगोका ध्यान जायसीकी इन पक्तियोंकी ओर गया है—

गुरु मोहदी खेवक मै सेवा।
चलै उताइल जिन्ह कर खेवा॥
अगुआ भयेउ शेख बुरहानू।
पंथ लाइ मोहि दीन्ह गियानू॥[1]

इस कथन के आधारपर लोगोने मोहदीके गुरु शेख बुरहानकेसाथ, जो काल्पी मे रहते थे, कुतुबनका सम्बन्ध जोडनेकी चेष्टा की है। शेख बुरहानके कुतुबनके पीर होनेकी कल्पना जिस समय की गयी थी, उस समय पाठ-भ्रष्टताके कारण लोगोके सामने यह तथ्य न आ सका था कि कुतुबनके गुरु सुहरवर्दी सम्प्रदाय के थे। नामकी भिन्नताके साथ शेख बुरहानका सुहरवर्दी न होना, अपने आपमे इस बातका द्योतक है कि वे कुतुबनके पीर नही हो सकते।

जिन लोगोने काव्यमे दिये नाम शेख बुढ़न (बुधन) पर ध्यान दिया उन लोगोंने शेख बोधन शुत्तारीको कुतुबनका गुरु बताया है। शेख बोधन शेख अब्दुल्ला शुत्तारीके वशज और सिकन्दर लोदीके समकालिक थे। उनकी चर्चा अखयार-उल-अखयारके लेखक मुहम्मद अब्दुल हकने की है। उनका कहना है कि उनके ताऊ (पिताके बडे भाई) शेख रिज्कउल्लाह, जिन्होने मुश्ताकी नामसे फारसीमे वाकयात-ऐ-मुश्ताकी और राजन उपनामसे हिन्दीमे प्रेम-बान-जोत निरंजन लिखा है, शेख बोधन-के पास गये थे और उनसे जिक्र (दीक्षा) प्राप्त किया था। अखयार-उल-अखयार और अखबार-उल असफिया, दोनोमे इन पीरका नाम स्पष्टतः बोधन (बे, वाव, दाल, हे, नून) दिया हुआ है; बुढ़न (या बुधन) (बे, दाल, हे, नून) नही। बोधन नाम और शुत्तारी सम्प्रदाय दोनों ही इस बातके स्पष्ट सकेत है कि वे कुतुबनके पीरसे सर्वथा भिन्न थे।

वस्तुतः कुतुबनके पीरका नाम शेख बढ़न था जैसा कि दिल्ली प्रतिमे स्पष्ट है। शेख बढ़न नामके कई सन्त हुए हैं। एक शेख बढन मनेरी थे, जिनकी कुछ रचनाऍ मनेर शरीफमे सुरक्षित बयाजमे प्राप्त है। यह किस सम्प्रदायके है यह अज्ञात है किन्तु इनके बेटे कुतुबमुवडित बल्खीके सम्बन्धमे निश्चित है कि वे फिरदौसी सम्प्रदायके थे। इस कारण इन्हें भी कुतुबनका पीर अनुमान नहीं किया जा सकता। एक दूसरे सन्त मखदूम शेख बढ़न है। ये सुविख्यात सूफी सन्त ईसा ताज जौनपुरीके शिष्य और उत्तराधिकारी थे। वे कस्बा अजौलीके रहने वाले थे और वही उनकी समाधि भी है। सतरहवी शतीमें लिखित मीरात-उल-असरारके लेखक अब्दुर्रहमान चिश्तीने, जो

---

१. पदमावत, सम्पा० रामचन्द्र शुक्ल, स्तुति खण्ड, कडवक २०।

अमेठीके रहने वाले थे, उनके अलौकिक गुणोकी चर्चा की है। सुप्रसिद्ध सूफी सन्त **अब्दुर कुद्दूस गंगोही**ने भी अपने एक पत्रमे, जिसे उन्होने हैबत खाँ सरवानीके नाम लिखा था, उनका उल्लेख 'शेखुलमशायख अल्लामतुलवरा कुदवतुननुकबा शेख बढ़न'के रूपमे किया है। यह **शेख बढन** किस सम्प्रदायके थे यह निश्चित रूपसे ज्ञात नही है। उनके गुरु **मुहम्मद ईसा ताज** मूलतः चिश्तिया सम्प्रदायके थे किन्तु उन्होने सुहरवर्दी आदि कई सिलसिलो (सम्प्रदायो) से भी इजाजत (दीक्षा) प्राप्त की थी। हो सकता है **शेख बढ़न**ने शिष्यके रूपमे उनसे सुहरवर्दी सम्प्रदायकी दीक्षा ली हो।। यदि यह अनुमान ठीक है तो ये ही **कुतुबन**के पीर रहे होगे।

मिरगावतीकी रचना

जायसी कृत **पदमावत**मे **मिरगावती**की कथाका सार प्राप्त है। उससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि **मिरगावती पदमावत**से पहलेकी रचना होगी। किन्तु इस प्रकारके किसी अनुमानकी आवश्यकता कभी किसीको नही हुई। चौखम्भा प्रतिमे, उसके खोजियोको एक ऐसा कड़वक उपलब्ध था जिसमे **नौ सै नव जब संवत अही** लिखा हुआ था। उससे उन लोगोने तभी जान लिया था कि **मिरगावती** की रचना ९०९ हिजरीमे की गयी थी। उस समयसे ही लोग इस बातको मानते चले आ रहे है। किन्तु ९०९ हिजरी को विक्रमीय संवत्मे परिवर्तन करनेमे लोगोने निरन्तर भूल की है। **रामचन्द्र शुक्ल, कमल कुलश्रेष्ठ** और **हजारीप्रसाद दिवेदी**ने उसे १५५८ वि० (१५०१ ई०) बताया है। **सत्यजीवन वर्मा**ने **नागरी प्रचारणी पत्रिका**मे प्रकाशित अपने एक लेखमे उसे १५६७ वि० (१५१० ई०) ठहराया है। वस्तुत. ९०९ हिजरी २६ जून १५०३ को आरम्भ होकर १४ जून १५०४ को समाप्त हुआ था। अतः चौखम्भा प्रतिसे ज्ञात ९०९ हिजरीके अनुसार **मिरगावती** १५०३–०४ ई० की रचना है।

बीकानेर प्रतिके प्रकाशमे आने पर उसमे चौखम्भा प्रतिसे सर्वथा भिन्न कडवक ज्ञात हुआ, जिसमे रचना-कालके सम्बन्धमे कहा गया है—

जहिया ोहते पन्द्र सै साठी।
तहिया ये रे चौपई गाँठी॥
× × ×
पहिले पाख भादो छठी आही।
सिह रासि सिंघ नीरावही॥

इन पक्तियोसे ऐसा जान पड़ता है कि रचयिताने रचना कालका उल्लेख विक्रमीय संवत्मे किया है। अतः रचनाकालके सम्बन्धमे लोगोके मनमे कुछ सन्देह और भ्रम उत्पन्न होने लगा। इस भ्रान्तिको दूर करनेका प्रयास करते हुए **उदयशंकर शास्त्री**ने अपना यह अनुमान उपस्थित किया कि भादो कृष्ण ६ ग्रन्थके समाप्त होनेकी तिथि है। चौखम्भा प्रतिके कडवकमे उल्लिखित इस बातकी ओर सकेत करते हुए कि

ग्रन्थकी रचना दो मास दस दिनमे हुई थी, उन्होने यह भी अनुमान लगाया कि काव्यकी रचनाका आरम्भ ज्येष्ठ शुक्ल ११, सवत् १५६० को हुआ होगा। साथ ही उन्होने इस बातको भी स्पष्ट किया कि विक्रमीय सवत् १५६० (१५०३ ई०) ९०९ हिजरीमे पडता है।[१] इसी बातको परशुराम चतुर्वेदीने इस प्रकार व्यक्त किया है— **कुतुबनने मृगावतीकी रचना-कालकी तिथि भी भादो बदी ६ दी है और कहा है कि मैंने दो महीने दस दिनमें पूरा किया। उन्होंने एक स्थान पर इस कालको हिजरी सन् ९०९ अर्थात् सन् १५०३ भी बताया है, जो संवत् १५६० में ही पड़ जाता है।**[२]

शिवगोपाल मिश्रके सम्मुख दिल्ली प्रतिके अतिरिक्त अन्य सभी प्रतियाँ थीं। पर वे यह निश्चय न कर पाये कि चौखम्भा और बीकानेर प्रतियोके कडवक किसी एक ही तथ्यको व्यक्त करते है या उनका तात्पर्य दो भिन्न तथ्योंसे है। उन्होने अपना मत इन शब्दोमे व्यक्त किया है—**चौखम्भा वाली प्रतिमें मुहर्रमकी तिथि भी दी हुई है। दूसरी ओर "पहले पाष भादो छठि"का उल्लख बीकानेर वाली प्रतिमें है। ऐसी स्थितिमें एक ओर जहाँ यह निश्चित प्रतीत होता है कि मृगावतीका रचनाकाल हिजरी ९०९ तदनुसार सम्वत् १५६० विक्रमी है, वहीं पर अभी यह तय करना शेष रह जाता है कि कुतुबनने इनमें से एक का अथवा दोनोंका उल्लेख किया।**[३]

दिल्ली प्रतिसे ज्ञात होता है कि कुतुबनने काव्यकी रचना-काल के सम्बन्धमे दो भिन्न स्थलोंपर चर्चा की है। एक तो आरम्भमे है। वहाँ खोज रिपोर्टके प्रस्तुत-कर्ताओंको प्राप्त कडवक है। दूसरा अन्तमे है जो चौखम्भा प्रतिके अन्तमें खण्डित होनेके कारण उन्हें न मिल सका था और लोगोंको अब बीकानेर प्रतिमें देखनेको मिला है। बीकानेर प्रति आरम्भसे खण्डित है, इसलिए उसमें चौखम्भा प्रति वाला कड़वक अनुपलब्ध है। सामान्यतः प्रेमाख्यानक काव्योंके मुसलमान रचयिताओंने अपनी रचनाके कालकी चर्चा केवल एक स्थलपर किया है और वह भी हिजरी सवत् मे। इस कारण मिरगावतीमे विक्रमीय सवत् के उल्लेखसे लोगोका असमंजसमे पड़ जाना स्वाभाविक था।

इन दोनो ही प्रतियो—चौखम्भा और बीकानेरमे उपलब्ध कड़वक पाठकी दृष्टिसे अशुद्ध है। इस कारण भी वास्तविक तथ्य जाननेमे लोगोको कठिनाई हुई। पहले कड़वक[४]के आवश्यक अंशका शुद्ध पाठ इस प्रकार है—

नौ सौ नौ जौ संवत अही॥
माह मुहर्रम चाँदहि चारी।
भई सपूरन कही निबारी॥
दोइ रे माँस दिन दस महँ, जोरत यह ओरानेउ जाइ।

१ दैनिक भारत, ७ सितम्बर १९५५।

२. सूफी काव्य सग्रह, पृ० ९७।

३. कुतुबन कृत मृगावती, सम्मेलन सस्करण, भूमिका, पृ० १०।

४. प्रस्तुत सस्करण, कडवक १३

इससे प्रकट होता है कि ९०९ हिजरीके मुहर्रम मासकी चौथी तिथि को इस काव्यकी रचना हुई और इसके पूरा करनेमे दो मास दस दिन लगे। ४ मुहर्रम ९०९ हिजरीको अग्रेज़ी तिथि २९ जून १५०३ ई० और भारतीय तिथि आषाढ शुक्ल ६, संवत् १५६० वि० थी। दो मास दस दिनमे पुस्तक समाप्त होनेकी बात कही गयी है। अतः उपर्युक्त आरम्भ होने की तिथिके अनुसार पुस्तक समाप्त होनेकी तिथि १४ रबीउस्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् भाद्रपद शुक्ल १५ सवत् १५६० वि० (६ सितम्बर १५०३ ई०) होगी।

दूसरे कडवकका आवश्यक अंश इस प्रकार है।

जहिया पन्द्रह सै हुत साठी।
तहिया इँह चौपाइँह गाँठी॥
बहुल पाख भादों जँह अही।
सिघ रासि संघ तँह निरबही॥[1]

इन पक्तियोसे ऐसा प्रतीत होता है कि वि० संवत् १५६० मे जिस दिन भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ हुआ और सूर्यने सिंह राशिमे जिस समय प्रवेश किया उस समय इन चौपाइयोकी रचना की गयी। ये चौपाइयॉ ग्रन्थके अन्तमे है, अतः यह अनुमान किया जाना स्वाभाविक है कि कवि इन पक्तियोमे काव्यके समाप्त होनेका समय बता रहा है।

पूर्व कडवकके अनुसार गणना कर काव्यके समाप्त होने की जो भारतीय तिथि ऊपर कही गयी है उससे इस दूसरे कड़वकमे दी गयी तिथिसे मेल नही बैठ रहा है। किन्तु भारतीय पचाग पद्धतियोपर ध्यान देनेपर इस असगतिका कारण समझमे आ जाता है। उत्तर भारतमे तिथि गणनामे पूर्णिमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्षकी गणनामे ११ पूरे और २ आधे मास होते है अर्थात् वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से होता है और अन्त चैत्र कृष्ण १५ को होता है। इस प्रकार आधा मास आरम्भमे और आधा अन्तमे गिना जाता है। दक्षिण भारतकी तिथि गणनामे आमान्त मासका प्रयोग होता है और वर्ष गणनामे पूरे १२ मास होते है। वहाँ भी वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ल १ से ही होता है और नियमित चलकर चैत्र कृष्ण १५ को समाप्त होता है। इस प्रकार पूर्णिमान्त और आमान्त गणना दोनोमे वर्ष का आरम्भ और अन्त समान रूपसे होता है केवल मासके गणनामे भेद होता है। मासोमे भी यह भेद शुक्ल पक्षमें परिलक्षित नही होता, केवल कृष्ण पक्षकी गणनामे अन्तर होता है और यह अन्तर पूरे एक मासका होता है। दूसरे कडवकमे दी गई तिथिको यदि हम आमान्त गणनाकी तिथि मान ले तो, वह पूर्णिमान्त गणनाके अनुसार आश्विन कृष्ण १ की तिथि होगी। इस तिथिमे और पहले कड़वकके आधारपर काव्यके समाप्त होनेकी जो तिथि—भाद्रपद शुक्ल

१ प्रस्तुत संस्करण, कडवक ४३१।

१५—कही गयी है, उसमे केवल एक दिनका अन्तर है। और यह अन्तर भी केवल गणना सम्बन्धी है। सवत् १५६० वि० मे आमान्त भाद्रपदके बहुल (कृष्ण) पक्षका आरम्भ ६ सितम्बरको ही, जो पूर्णिमान्त भाद्रपद शुक्ल १५ की अग्रेजी तिथि है, सायकाल ६ बजे हुआ था। स्पष्ट है कि कवि ने ग्रन्थ समाप्त होनेकी तिथि आमान्त गणनाके अनुसार दी है।

उत्तर भारतीय तिथि गणनामे आमान्त तिथियोंका प्रयोग प्रायः नही पाया जाता। कवि द्वारा तिथिका इस प्रकार उल्लेख इस बातका द्योतक है कि वह उत्तर भारतकी पूर्णिमान्त तिथि गणना पद्धतिकी अपेक्षा दक्षिण भारतकी आमान्त तिथि गणना पद्धतिसे परिचित था। इससे इस बातका भी सकेत मिलता है कि उसका किसी-न-किसी प्रकार दक्षिण भारतसे सम्बन्ध था।

कुतुबनने उपर्युक्त कड़वकमे ग्रन्थ समाप्तिके समय सूर्यके सिंह राशिमें होनेकी बात कही है। यह घटना पञ्चाङ्गके अनुसार उक्त दिन रात्रिमें ३ और ५ बजेके बीच घटी थी। इस प्रकार कविने अत्यन्त सूक्ष्म रूपसे बताया है कि काव्यकी समाप्ति उषा-कालमे हुई थी। निष्कर्ष यह कि काव्यका आरम्भ ४ मुहर्रम ९०९ हिजरी अर्थात् आषाढ़ शुक्ल ६ सवत् १५६० वि० (२९ जून १५०३ ई०) को और अन्त १५ रबी-उस्सानी ९०९ हिजरी अर्थात् आश्विन कृष्ण १ (आमान्त भाद्रपद कृष्ण १) सवत् १५६० वि० (७ सितम्बर १९०३ ई०) को हुआ।

शाहे-वक्त

कुतुबनने चन्दायनकी परम्पराका पालन करते हुए शाहे वक्तकी भी चर्चा की है। मौलाना दाऊदने इसके लिए केवल एक कड़वक का उपयोग किया है; कुतुबनने इसके लिए चार कड़वक व्यय किये हैं और दो स्थलोपर उनके नामका उल्लेख किया है और उनका नाम हुसेन शाह बताया है।[1] पर दो स्थलोमेसे किसी जगह भी दाऊद और जायसीकी तरह उन्होने यह नही बताया कि वे कहाँके शाह या सुल्तान थे। जिस ढंगसे उन्होने हुसेन शाहकी प्रशंसा की है, उससे ऐसा आभास होता है कि कुतुबनको हुसेन शाहकी विशेष कृपा प्राप्त थी। हो सकता है वे उनके आश्रित भी रहे हों।

राज्यका नामोल्लेख न होनेके कारण हुसेन शाह कौन थे, निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता; केवल अनुमान ही किया जा सकता है। खोज-रिपोर्टमे हुसेन शाह को सूरवशके शेरशाहका पिता बताया गया है। किन्तु शेरशाहके पिताका नाम हसन खाँ था हुसेन शाह नहीं और वे एक सरदार मात्र थे, शाह या सुल्तान नहीं। सलतनत तो उसके बेटे शेरशाहने अपने बल और पौरुषसे प्राप्त की थी, दाय रूपमें नहीं। अतः यह निश्चित है कि कुतुबनने जो कुछ कहा है, उसका सम्बन्ध इनसे तनिक भी नहीं है।

---

१. प्रस्तुत सस्करण, कडवक ९–१२।

रामचन्द्र शुक्लने पहले हुसेन शाहको बंगालका सुल्तान अनुमान किया था, पीछे उन्होंने उन्हे जौनपुरके शर्कीवंशका सुल्तान बताया। कुछ लोग कुतुबनको बगाल और जौनपुर दोनोके सुलतानोका आश्रित मानते है। उनके ऐसा कहनेका आधार यह है कि बगाल सुल्तान अलाउद्दीन हुसेन शाह और जौनपुरके शर्की सुल्तान हुसेन शाह दोनो परस्पर सम्बन्धी थे। शर्की हुसेन शाहके बेटे जलालुद्दीनका विवाह बगाल सुल्तान हुसेन शाहकी पौत्रीसे हुआ था। जब सिकन्दर लोदीने शर्की सुल्तानकी जौनपुरकी सलतनत छीन ली तो वे अपने सम्बन्धी अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमे कहलगॉव (जिला भागलपुर, बिहार)मे जाकर रहने लगे थे। किन्तु दोनोके आश्रित होनेकी बातका मेल नहीं बैठता। शर्की हुसेन शाहके कहलगॉव जाकर रहने मात्रसे मान लेना कि कुतुबनने शर्की हुसेन शाहका आश्रय छोडकर अलाउद्दीन हुसेन शाहका आश्रय ग्रहण कर लिया, अनुचित है। यदि वह सत्य भी हो तो भी यह तो मानना ही होगा कि कुतुबनने उस शाहकी प्रशसा की है जिसके आश्रयमे वे मिरगावती की रचनाके समय थे, दोनोकी नही। अतः हमे यही देखना चाहिए कि उन्होंने किस हुसेन शाहकी प्रशसा की है।

इन दोनो हुसेन शाहोमे से कुतुबनका तात्पर्य किससे था, इस पर विचार करनेके निमित्त उचित होगा कि प्रासगिक कडवकोको सामने रख लिया जाय। वे कडवक निम्नलिखित है—

शाह हुसेन आह बड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पै छाजा॥
पण्डित औ बुधवन्त सयाना। पोथा बाँच अरथ सब जाना॥
धरम दुधिस्टिल वँह कँह छाजा। हम सिर छाँह जियउ जुग राजा॥
दान देइ बहु गिनत न आवा। बलि औ करन न सरबरि पावा॥
राइ जहाँ लहि गँधरप अहई। सेवा करहिं बारि सब चहई॥

चतुर सुजान भाखा सब जानाँ, अइस न देखेंउ कोइ।
सभा सुनहु सब कान दइ, फुनि र बखानों सोइ॥ ९

अगिनित ठाट गिनत न आवा। खरदम खेह गगन सब छावा॥
अपुनहि सँझर आगे कर पावा। पाछे परै सो धूरि फकावा॥
मेघडम्बर छाया बहु ताने। सेवा करहिं राजु औ रानें॥
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी। आथि अम्बर भव पुहुमि जिह जानी॥
गज गवन जग सारों होई। बासुकि इन्द्र दुहौ बुधि खोई॥

जिय 'दान जो चाहे, दिन दस सेवा करो सौ बार।
जाकहँ भौंह होइ चख मैली, सो र होइ जरि छार॥ १०

डाँड इन्द्र बासुकि सेंउ लेई। अउर डाँड लंकेसर देई॥
ईंह बड न कोई गुनी सयाना। देवतहिं आयसु इँह कर माना॥
जासों हँसि कै बात एक कहिहैं। दुख दारिद औ पाप न रहिहैं॥

पिरिथि म अइस भयउ न कोई । सर तो दैंउ सुनेउ जो होई ॥
पाप पुन्न लेउ जरमहि काऊ । धरम करत कछु कहि जाऊ ॥

अधरम कियउ न जग मँह काऊ, धरम करहिं बहु भाँत ।
निसि बासर बिबि तैसहि चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥ ११

पढ़हि पुरान कठिन जो होई । अरथ कहहिं समुझावत सोई ॥
एक-एक बोल क दस-दस भावा । पंडितहिं अचकर बकति न आवा ॥
अउर बहुत उन्ह केरि बड़ाई । हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥
मुँह मँह जीभ सहस जो होई । तोर बड़ाई करै जो कोई ॥
जब लग अस्थिर रहे सुमेरू । हर भारजा बहै जमु नेरू ॥

सवन सुनहु चित लाइ कर, कहौं बात हौं एक ।
आउ बढ़ा हुसन साह कै, आह जगत कै टेक ॥ १२

यदि इन पंक्तियोकी तुलना जायसी और मंझन द्वारा शाहे-वक्तकी प्रशंसामे कही गयी पंक्तियोसे की जाय तो स्पष्ट जान पड़ता है कि कुतुबनने अपन शाहे-वक्तके शासन और सेना, दान और न्यायके सम्बन्धमे जो कुछ कहा है, उसमे कोई मौलिकता नही है। तीनों ही कवियोंका वर्णन प्रायः एक-सा है और सम्भवतः परिपाटीका अनुसरणमात्र है। किन्तु यदि यह वर्णन परिपाटीजनित होते हुए भी किसीका वास्तविक चित्रण है तो वह ऐसे प्रतापी शासकका चित्र है जिसका सम्राट्के समान व्यापक प्रभाव था। इस रूपमे यह प्रशसा शर्की हुसेन शाहपर ही लागू होती है, बगालके अलाउद्दीन हुसेन शाहपर नही।

बंगालका हुसेन शाह मूलतः मुजफ्फरशाहका प्रधान मन्त्री था और अपने शासकके विरुद्ध विद्रोह कर उसने शासनाधिकार प्राप्त किया था। उसका अधिकाश समय अपनी स्थिति संतुलित करनेमे ही बीता। १४९९ ई० तक अर्थात् कुतुबनके मिरगावतीकी रचना करने से चार बरस पूर्वतक, उसका राज्य बगाल के बाहर दक्षिण विहार मे मुँगेरतक ही सीमित था। इस अवधिमे उसे केवल एक बार १४९५ ई० (९०१ हिजरी)मे अपनी सेनाको सिकन्दर लोदीके मुकाबले भेजना पडा था। पर बिना किसी विशेष शक्ति-प्रदर्शनके ही दोनो पक्षोमे सन्धि हो गयी थी। १४९९ ई०मे पहली बार हुसेन शाह किसी सैनिक अभियानके लिए निकला और कामता-कामरूपको अपना लक्ष्य बनाया। उस क्षेत्रपर अधिकार करनेमें हुसेन शाहको लगभग चार बरस लगे; अर्थात् मिरगावतीकी रचनासे कुल एक बरस पहले वह १५०२ ई० में कामरूप विजय कर पाया। उसने दूसरा अभियान जाज-नगर उडीसाके विरुद्ध किया था और वह मिरगावती की रचनासे कई वर्ष पश्चात् १५०८-९ ई० मे। इस प्रकार कुतुबनने जो कुछ कहा है वह बगालके हुसेन शाहपर घटित नही होता।

दूसरी ओर शर्की सलतनतका इतिहास निरन्तर सैनिक अभियान और युद्धोका इतिहास है। जौनपुर सलतनतकी स्थापना करते ही शर्की सुलतान दिल्लीपर अधिकार

करनेका स्वप्न देखने लगे थे। दिल्ली सुल्तान भी शर्की सुलतानोको अपना प्रबल प्रतिद्वन्द्वी समझते रहे। बगालके सुलतान शर्की सलतनतके आरम्भिक दिनोंमे ही खिराजदार थे। जहाँतक हुसेन शाहका सम्बन्ध है, उसकी सेना और शासनका अत्यधिक विस्तार था। पूर्वमे तिरहुत और उडीसा उसके खिराजदार थे। इनके विरुद्ध उसने अपने शासनके आरम्भिक दिनोंमे ही अभियान किया था। ग्वालियर नरेशको उसने परास्त कर अपना अत्यन्त हितैषी मित्र बना रखा था। इटावा, कोल और बयाना के सूबेदार लोदियोंका साथ छोडकर हुसेन शाहसे आ मिले थे। बघेल-खण्ड के हिन्दू राजाओपर उसका प्रभुत्व था। इस प्रकार हुसेनशाहके शासनका विस्तार पूर्वमे बिहारसे लेकर पश्चिममें दिल्ली सलतनत की सीमातक था जो युद्ध-क्रमसे घटता-बढता रहता था और यह विस्तार दिल्ली सलतनतसे किसी प्रकार कम न था। दिल्ली सलतनतके साथ तो उसकी मुठभेड निरन्तर चलती रहती ही रही। परिस्थितियाँ ऐसी आयी जब दिल्ली सुलतान हुसेन शाहकी आधीनता स्वीकार करनेको तैयार हुआ; पर हुसेन शाहने अपनी शक्तिके अभिमानमे उसकी शर्तोंको ठुकरा दिया। हुसेन शाहकी सैनिक-शक्तिका अनुमान इस बातसे किया जा सकता है कि उसने बहलोल लोदीके विरुद्ध एक लाख घुडसवार और एक हजार गज-सेनाके साथ अभियान किया था। इन सब बातोको देखते हुए लगता है कि **कुतुबन** ने बिना किसी अत्युक्तिके शर्की हुसेन शाहका ही उल्लेख किया है।

उल्लेखनीय बात यह है कि **कुतुबन** हुसेन शाहकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करते हुए थकता नही। इस ढंगसे **जायसी** या **मंझनने** अपने शाहे-वक्तकी प्रशसा नही की है। इससे यह निसंदिग्ध जान पडता है कि **कुतुबनका** शाहे-वक्त वस्तुतः विद्वान् और कलाका प्रेमी था। बगालका हुसेन शाह किस कोटिका विद्वान् था, इसके सम्बन्धमे कोई जानकारी उपलब्ध नही है। केवल इतना ही ज्ञात है कि उससे बंगला साहित्यको प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था। उसने किसी अन्य भाषाके साहित्यको प्रोत्साहित किया हो, इसका प्रमाण किसी सूत्रसे नही मिलता। शर्की हुसेन शाहकी ख्याति कवि और संगीतज्ञके रूपमे सर्व विदित है। संगीतमे जौनपुर काँगड़ा (खयाल) उसीकी देन बतायी जाती है। विद्वानो और गुणीजनोका वह बड़ा आदर करता था। अतः **कुतुबनने** जिस रूपमे प्रशंसा की है, उसका पात्र शर्की हुसेन शाह ही हो सकता है। उसका उन्हे प्रश्रय सरलतासे प्राप्त रहा होगा। यदि **कुतुबनके** पीर **शेख बढन, मुहम्मद ईसा ताजके** शिष्य थे, तो निश्चय ही उनका सम्बन्ध जौनपुरके शर्की सुल्तानके साथ रहा होगा। उनके माध्यमसे **कुतुबनका** हुसेन शाहके सम्पर्कमे आना सहज हुआ होगा और उनको उनसे प्रोत्साहन अथवा आश्रय प्राप्त करनेमे कोई कठिनाई नही हुई होगी।

सर्वोपरि, एक बात, जिससे यह निश्चित हो जाता है कि **कुतुबनका** तात्पर्य बगालके हुसेन शाहसे नहीं था, वह यह है कि बगालके हुसेन शाहकी ख्याति इस बातके लिए विशेष है कि उसने सत्यपीर नामसे अपना एक स्वतन्त्र धार्मिक मत चलाया था। यदि **कुतुबनका** उद्देश्य इस हुसेन शाहकी प्रशसा करना रहा होता तो

उनका ध्यान उसकी इस धर्माचार्यताकी ओर अवश्य जाता और उसकी प्रशसा करते हुए इस तथ्यकी अवश्य चर्चा करते। किन्तु ऐसी कोई बात कुतुबनने संकेत रूपमे भी नही कही है।

सभी बातोपर विचार करनेपर यह निश्चित जान पडता है कि बंगालके हुसेन शाह कुतुबनके हुसेन शाह नही है। किन्तु इतिहासकारोंकी धारणा है कि शर्की हुसेन शाहकी मृत्यु ९०५ हिजरीमे ही हो गयी थी; और कुतुबनका कहना है कि **मिरगावती**की रचना उन्होने ९०९ हिजरीमे हुसेन शाहके जीवन-कालमे और उनके शासनारूढ रहते की थी।[१] उन्होने छत्रछायाके रूपमे उसके युग-युग तक जीनेकी[२] और दीर्घायु होनेकी भी कामना की है।[३] इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हुसेन शाह कमसे कम ९०९ हिजरी तक जीवित थे। यदि इतिहासकारोका कथन ठीक है तो उपर्युक्त सारी सम्भावनाओके बावजूद कुतुबनके हुसेन शाहको शर्की हुसेन शाह कदापि नहीं कहा जा सकता। अतः अन्तिम निश्चय करनेसे पूर्व इस सम्बन्धमे भी उहापोहकी आवश्यकता है।

शर्की हुसेन शाह कब मरा, इसकी चर्चा समसामयिक किसी भी इतिहासकारने नही की है। घटनाओ आदिको ध्यानमे रखकर ही आधुनिक इतिहासकारों ने उसके ९०५ हिजरीमे मरनेका अनुमान किया है। उसे प्रामाणिक नही माना जा सकता। इस तथ्यपर प्रकाश डालनेवाले सबसे प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण हुसेन शाहके अपने सिक्के हैं, जिनकी इसिहासकारोंने उपेक्षा की है। ये सिक्के हमे उसके शासनारुढ होनेके दिनसे ९१० हिजरी तक निर्बाध रूपसे, प्रत्येक वर्षके प्राप्त होते है। कलकत्ता सग्रहालयके मुद्रा सग्रहमे कथित मृत्यु-वर्ष ९०५ हिजरीके बादके सिक्कोमे ९०६, ९०७ और ९१० हिजरीके सिक्के है।[४] एच० एम० ह्विटेलने जौनपुर सुल्तानोंके सिक्कोंकी एक सूची प्रकाशित की है।[५] उसके अनुसार ९०५, ९०६ और ९०९ हिजरीके सिक्के ब्रिटिश सग्राहलय (लन्दन) मे है। ९०८ हिजरीका सिक्का ह्विटेलके अपने सग्रहमें था। ९११ हिजरीका सिक्का लाहौर संग्राहलयमे होनेकी बात भी उन्होने कही है। हमने स्वयं अभी हालमे लखनऊ सग्राहलयके शर्की सिक्कोका परीक्षण किया था। वहाँ हमे हुसेन शाहके उपर्युक्त प्रत्येक वर्षके सिक्के बड़ी मात्रामे मिले। वहाँ ८९१ से ९१० हिजरी तकके प्रत्येक वर्षके सिक्के एक ऐसे दफीनेसे प्राप्त है जिसका प्राप्ति स्थान, खेद है वहाँके रजिस्टरोमे अकित नही है। एक दूसरे दफीनेमे, जो जालौनसे प्राप्त हुआ था, ८९४ से ९१० हिजरी तकके सिक्के हैं। बाँदा जिलेसे प्राप्त एक अन्य दफीने में भी ९१० हिजरीके सिक्के प्राप्त हुए है।

---

१ उन्हके राज यह र हम कही। १३।१

२. हम फिर छाँह जियउ जुग राजा। ९।३

३. आउ बढो हुसेन शाहकै, आह जगतकै टेक। १२।७

४. कैटलाग ऑव द क्वायन्स इन दि इण्डियन म्यूजियम, कलकत्ता, खण्ड २, पृ० २१८–१९।

५. न्यूमिस्मेटिक सप्लीमेण्ट, सं० ३६, पृ० ३२–३४।

इतिहासकारोंकी यह धारणा रही है कि ये सिक्के हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त किसीने प्रचलित किये होंगे। किन्तु ऐसा कहना और सोचना अत्यन्त हास्यास्पद है। इस तथ्यको न भुला दिया जाना चाहिए कि भारतीय इतिहासमे किसी शासकके मृत्यूपरान्त उसके नामसे इस प्रकार सिक्के जारी करनेका एक भी उदाहरण प्राप्त नही है। मुसलमान शासकोमे सिक्के जारी करनेका विशेष महत्त्व था और वह उनका एक अत्यन्त सुरक्षित अधिकार था। वह राज्याधिकारका सबसे बडा प्रमाण समझा जाता था। कोई भी व्यक्ति, चाहे वह राजगद्दीका वैध उत्तराधिकारी रहा हो या दावेदार मात्र, अपना अधिकार प्रकट करनेके लिए सबसे पहले अपने नामका सिक्का ढलवाता और मसजिदमे खुतबा पढ़वाता था। ऐसी अवस्थामे कल्पना नहीं की जा सकती कि कोई हुसेन शाहकी मृत्युके पश्चात् अथवा उसके निर्वासन कालमे उसके नामसे सिक्के जारी करेगा। कहा जा सकता है कि मुगल शासनके ह्रास कालमे लोगोने मुगल शासकोके नामपर सिक्कोके ढाले थे, पर उन सिक्कोके साथ हुसेन शाहके सिक्कोकी तुलना नही की जा सकती। मुगल शासकोके नामसे सिक्के ढालनेवाले अपना चिह्न विशेष अकित कर दिया करते थे, जिनसे उन सिक्कोकी राजकीय तथा अन्य लोगोके सिक्कोसे भिन्नता स्पष्ट रूपसे प्रकट होती थी। हुसेन शाहके सिक्कोमे ऐसा कोई चिह्न प्राप्त नही होता जिससे उन्हे उसके शासन काल, निर्वासन काल अथवा मृत्यूपरान्तके सिक्के कह कर बिलगाव किया जा सके। उसके सारे सिक्के समान लिपिमे अकित और एक ही शैलीके है।

इस सम्बन्धमे विचारणीय यह भी है कि हुसेन शाहके मृत्यूपरान्त उसके नामके सिक्के ढालनेमे किसीका क्या स्वार्थ हो सकता था; विशेषतः ऐसी स्थितिमे जब कि वह निर्वासित रहा हो और उसके उत्तराधिकारियोमे अधिकारारूढ होनेकी क्षमता न रही हो। यह भी ध्यान देनेकी बात है कि लेन-देन लोक-व्यवहारमे शासकके नामके छापका, उन दिनो आज जैसा कोई महत्त्व न था। धातु और तौल ठीक होनेपर किसी शासककी छापका सिक्का कही भी ग्राह्य था। इस दृष्टिसे भी हुसेन शाहके नामकी सिक्कोपर कोई आवश्यकता न थी। अतः यह निर्भ्रान्त है कि हुसेन शाहने स्वय और अपने जीवन-कालमे ही ये सिक्के जारी किये होगे। वे इस बातके अकाट्य प्रमाण है कि हुसेन शाह ९१० हिजरी तक तो निसन्दिग्ध रूपसे जीवित था। सम्भावना उसके ९११ हिजरी तक जीवित रहने की भी है।

अतः कुतुबनके इस कथनमे तनिक भी सन्देह नही किया जा सकता कि उसने **मिरगावती**की रचना हुसेन शाहके जीवन-कालमे ९०९ हिजरीमे की थी और उसने उसके दीर्घजीवनकी कामना स्वाभाविक रूपसे की है। किन्तु उसके कथनकी यह ध्वनि कि उस समय हुसेन शाह सत्तारूढ भी था, ऐतिहासिक घटनाओके विश्लेषणकी अपेक्षा रखता है।

इस बातसे किसी प्रकार भी इनकार नही किया जा सकता कि बहलोल लोदीने ९०१ हिजरी (१४९५ ई०) मे हुसेन साहसे उसके सलतनतका इच-इंच छीनकर अपने

सल्तनतमें मिला लिया था और हुसेन शाहको बंगाल सुलतान अलाउद्दीन हुसेन शाहके राज्यमे जाकर शरण लेनी पडी थी। वह कहलगॉव (जिला भागलपुर, बिहार) में रहने लगा था। इससे आधुनिक इतिहासकारोकी कल्पना है कि वह बंगाल सुलतानका आश्रित हो गया था अर्थात् उसे बगाल सुलतानकी ओरसे नियमित निर्वाह व्यय मिलता था। वस्तुत हुसेन शाह कहलगॉव निराश्रितके रूपमें नहीं गया था। उसकी स्थिति बहुत कुछ निर्वासित राज्य (स्टेट इन एक्जाइल) की-सी थी। राज्य खोकर हुसेन शाह पगु होकर बैठ नही गया; वह अपना शासन प्राप्त करनेका निरन्तर प्रयत्न करता रहा।

रिज्कउल्लाहने अपने **वाकयात-ए-मुश्ताकी**मे लिखा है कि बिहार खोनेके कुछ ही दिन बाद हुसेनशाहने उसे पुनः प्राप्त करनेका प्रयत्न किया। उसने बिहारपर आक्रमण किया। दरिया खॉ (सिकन्दर लोदीका बिहार स्थित सूबेदार) ने किलेसे निकलकर उसका मुकाबिला किया। वह दो मास तक हुसेन शाहको रोके रखकर किलेकी रक्षा करता रहा। जब सिकन्दर लोदीकी सेना आ गयी तो हुसेन शाहको लौट जाना पडा। **मुहम्मद कबीर**ने भी अपने **अफसान-ए-बादशाहान**मे लिखा है कि जब हुसेन शाह गौड (बगाल) पहुँचा तो वहाँके शासकने उसे आश्वासन दिया और कहा कि अभी कुछ दिन सब्र करो और आक्रमणके लिए उपयुक्त अवसर आने दो। इस तरह अवसरकी प्रतीक्षा करते-करते जब कई बरस बीत गये और बगाल सुलतानने कुछ नहीं किया, तब हुसेन शाहने उसे पत्र लिखा। अलाउद्दीन हुसेन शाहने पुनः ठहरनेके लिए कहा। पर हुसेन शाह रुका नही। अकेले ही अपनी सेना लेकर उसने बिहारपर आक्रमण कर दिया और किलेको घेर लिया। उसके साथी रूही चौधरीने किलेकी खाईके पानीको निकाल बाहर करनेके लिए नहर खोद डाला। इस बीच अफगान सेना आ पहुँची और हुसेन शाहको किलेपर अधिकार किये बिना ही लौट आना पडा।

दोनो सूत्र हुसेन शाहके निर्वासनके पश्चात बिहार पर आक्रमणकी बात कहते हैं। वे एक आक्रमणकी या दो भिन्न आक्रमणोकी बात कहते हैं, यह निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता। **रिज्कउल्लाह**ने अपने उल्लेखमे 'कुछ ही दिनों बाद'का प्रयोग किया है और **मुहम्मद कबीर**ने 'कुछ वर्ष बीतने'की बात कही है। इससे ऐसा आभास होता है कि दोनो दो आक्रमणोकी चर्चा कर रहे है। वस्तुस्थिति जो भी हो, इनके कथनसे यह निश्चित है कि हुसेन शाह कहलगॉवमे कभी निष्क्रिय बैठा नहीं रहा; अपना राज्य वापस लेनेके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील था।

सिक्कोके प्रमाणसे यह भी निश्चित है कि हुसेन शाह सलतनत खोकर भी अपनेको सुलतान मानता और समझता रहा और उसी अधिकारसे अपने सिक्के ढालता रहा। इस कालके सिक्के बिहारमे उपलब्ध हैं या नही, इसकी खोज अभी तक नहीं की गयी है। किन्तु जो सिक्के मिले हैं वे सब उत्तर प्रदेशमे ही मिले हैं। अतः यह मानना गलत है कि वह अपना सारा निर्वासित जीवन कहलगॉवमे ही बिताता रहा।

इस सम्बन्धमे एक बात और द्रष्टव्य है। जौनपुरमे हुसेन शाहकी कब्र है, यह वहाँकी परम्परागत जनश्रुति है और इस सम्बन्धमे लोग एक कब्रकी ओर इगित भी करते है। यह जनश्रुति कोरी कल्पना नही कही जा सकती। यदि वस्तुतः जौनपुरमे हुसेन शाह की कब्र है तो यह स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि कहलगाँवमे रहने और मरने पर उसकी लाश क्यो और कैसे जौनपुर आयी। जौनपुरसे सम्पर्क बनाये रखनेका हुसेन शाहके पास न तो साधन था और न अवसर। सिकन्दर लोदी हुसेन शाहका इस सीमा तक कट्टर शत्रु बन गया था कि उसने जौनपुर पर अधिकार करनेके बाद तत्काल आदेश दिया कि हुसेन शाह निर्मित सारी इमारते ढाह दी जाँय। यहाँ तक कि अटाला मसजिद और राजी बीबीकी मसजिद भी उसके क्रोधके लपेटमे आ गये थे। यदि कुछ मुल्लाओने धर्मके नाम पर दुहाई न दी होती तो वे भी आज अस्तित्वमे न होते। ऐसी अवस्थामे कल्पना करना कठिन है कि सिकन्दर लोदी और उसके अनुचरोने हुसेन शाहकी लाशको जौनपुर लाकर दफनानेकी अनुमति दी होगी। यदि वस्तुतः वहाँ उसकी कब्र है तो इसका अर्थ यह है कि हुसेन शाह अपने अन्तिम दिनो मे जौनपुर पहुँचनेमे समर्थ हो गया था।

इन बातोको ध्यानमे रखने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि **कुतबन** एकनिष्ठ आश्रितकी तरह अपनेको हुसेनके राज और छत्र-छायामे ही सुरक्षित समझते रहे। हुसेन शाहका निर्वासन सम्भवतः उनकी दृष्टिमे सैनिक अभियानका अंग मात्र था। अतः बिना किसी अत्युक्ति या तोड-मरोडके उन्होने अपने आश्रयदाताके सम्बन्धमे अपने हृदयके भाव व्यक्त किये है। यह बात नही कि उन्हे हुसेन शाहके सल्तनत-विहीन होनेका ज्ञान न रहा हो। वे उसके प्रति सजग थे इसीलिए उन्होने **दाऊद** या **जायसी**की तरह उन्हे स्थान विशेषका शासक बतानेकी अपेक्षा मौन रहना उचित समझा।

प्रस्तुत विवेचनके पश्चात् हमे यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि **कुतबन**का सम्बन्ध हुसेन शाह शर्कीसे था। इतिहासकारोके लिए, जो अब तक हुसेन शाहके निर्वासित जीवनकी कल्पना करते रहे है, उचित होगा कि वे सिक्को और **कुतुबन**के कथनके प्रकाशमें तथ्योको जाँचे, परखे और हुसेन शाहके सम्बन्धमे उचित निष्कर्ष पर पहुँचे।

स्थान और कब्र

सूफी प्रेमाख्यानकोसे सम्बन्ध रखनेवाली किसी पुस्तकमे, जिसे मै इस समय स्मरण नही कर पा रहा हूँ, **सैयद हसन असकरी**का नाम लेकर कहा गया है कि उन्होने **कुतुबन**की कब्रका पता लगा लिया है। यह सूचना अपनेमे महत्त्व की है किन्तु **असकरीके कुतुबन** और **मिरगावती** सम्बन्धी लेखोमे इस प्रकारकी चर्चा मेरे देखनेमे नहीं आयी। अतः मैने स्वय **असकरी**से इस सम्बन्धमे जानकारी चाही। उन्होने बताया कि **कुतुबन**की कब्रकी न तो उनको जानकारी है और न इस ढंगकी कोई बात उन्होने

कही लिखा है या किसीसे कहा है। किन्तु यह अवश्य बताया कि बहुत दिन हुए जब वे जौनपुर सल्तनतके इतिहासके सम्बन्धमे काम कर रहे थे, **कुतुबन** नामके किसी व्यक्ति अथवा विद्वान्‌के बनारसमे रहने और सुल्तानको आशीर्वाद देनेकी बात उन्होने किसी ग्रन्थमें पढा था। किन्तु उस समय उसका कोई विवरण उन्होने नोट नही किया। इसलिए अब उनके लिए यह बता सकना सम्भव नहीं है कि किस ग्रन्थमें और किस प्रसगमे यह बात कही गयी है। उन्होने यह भी बताया कि यह बात उन्होंने **नर्मदेश्वर चतुर्वेदी**को बताया था। हो सकता है, किसी भ्रमसे उन्होने ही कब्र वाली बात कह दी हो।

जिस **कुतुबन**की बात **असकरी**ने पढी थी, वह यदि **मिरगावती**के रचयिता **कुतुबन** ही है तो उनके कथनसे यह तो निश्चित हो ही जाता है कि उनका सम्बन्ध बनारससे था। ग्रन्थका नाम और सन्दर्भ ज्ञात होने पर यह बात अधिक प्रामाणिकता-के साथ कही जा सकेगी। यदि कुतुबनका सम्बन्ध बनारससे था तो हो सकता है उनकी कब्र भी वही हो। काशीके साहित्य-प्रेमी अन्वेषी, यदि इस दिशामे प्रयत्न करे तो कदाचित कुछ पता चल सके।

काव्य-परिचय

नाम

भारतीय प्रबन्ध-काव्योके रचयिताओने प्रायः अपनी रचनाका नाम अपनी नायिकाके नामपर रखा है। सस्कृत साहित्यमे **सुबन्धुकी वासवदत्ता, श्रीहर्षकी रत्नावली, बाणकी कादम्बरी** इस ढगके कुछ उदाहरण है। इसी प्रकार प्राकृत काव्योमे **लीलावती कथा, मलयसुन्दरी कथा, सुरसुन्दरी चरित्रम्** आदिका नाम लिया जा सकता है। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योके सूफी रचयिताओने भी इसी परम्पराका अनुसरण किया है। **जायसीने** अपनी नायिका पद्मावतीके नामपर अपने काव्यका नाम **पदमावत** रखा है। नायिकाके नामपर ही **मंझनके** काव्यका नाम **मधुमालती** है। **मौलाना दाऊदने** भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यको **चन्दायन** नाम दिया है, यद्यपि उनकी नामकरण शैली परम्परासे कुछ हटकर है। अतः यह अनुमान करना स्वाभाविक है कि **कुतुबनने** भी अपनी नायिकाके नामपर ही अपने काव्यका नामकरण किया होगा।

अभी हालमे एक नवोदित विद्वानने **मौलाना दाऊदकी** रचनाके नाम **चन्दायन** को गलत सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हुए यह मत प्रतिपादित किया है कि सूफी प्रेमाख्यानोके नाम त-अन्त है। प्रमाणके लिए उन्होने **पदमावत, इन्द्रावत** आदिका नाम लिया है। यदि उनके इस मतको स्वीकार किया जाय तो कहना होगा कि **कुतबनने** अपनी रचनाका नाम **मिरगावत** रखा होगा। किन्तु इन प्रेमाख्यानक काव्योंकी सूचीपर दृष्टि डालनेसे त-अन्त नामोकी अनिवार्य परम्परा हो ही, ऐसी बात सामने नही आती। कोई कारण नही जान पडता कि कवियोने अपनी नायिकाके ईकारान्त नामोको अकारान्त करनेकी अनिवार्य आवश्यकताका अनुभव किया हो। **मधु मालतीका** नाम कही **मधु-मालत** देखनेमे नही आता। छन्दानुरोधके कारण कवियोने ईकारान्त नामोंका इकारान्त रूपमे प्रयोग किया है, इसलिए अधिक-से-अधिक कल्पना यही की जा सकती है कि कवियोने अपने काव्योका नाम इकारान्त रखा होगा, अकारान्त नहीं। इस धारणाके अनुसार **कुतुबनके** काव्यका नाम **मिरगावति** सम्भव है। **बनारसी दासने** अपने **अर्धकथानकमे** **मिरगावति** नाम दिया भी है।

खोज रिपोर्टमे खोजियोंने **कुतुबनके** काव्यका नाम **मृगावती** बताया है। उनके **मृगावती** नाम देनेका आधार क्या है, यह अज्ञात है। उसके आधारपर ही लोग इस ग्रन्थकी चर्चा करते हुए उसका उल्लेख **मृगावती** नामसे किया करते है। उपलब्ध प्रतियोंमें केवल बीकानेर प्रतिमे पुष्पिका उपलब्ध है। उसमे इसे **म्रिगावती कथा** कहा गया है। दिल्ली प्रतिके उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठके ऊपर बाये कोनेमे ग्रन्थकी लिपिमे

भिन्न लिपिमे किसीने ग्रन्थका नाम लिखा है; किन्तु उसके आरम्भके कुछ अक्षर अस्पष्ट हैं, पढे नहीं जा सकते। पठनीय केवल **म मिरगावती** (मीम, मीम रे, गाफ, अलिफ, वाव, ते, बडी ये) हैं। **जियाउद्दीन अहमद देसाईने** अनुमानसे इसे **किस्सा पेम मिरगावती** पढनेकी चेष्टा की है। पर उनका यह अनुमान सन्दिग्ध है। ऐसी स्थितिमें यह निश्चय करना कठिन है कि ग्रन्थका मूल नाम केवल **मिरगावती** है अथवा **मृगावती कथा** या **किस्सा पेम मिरगावती**।

ऐसी स्थितिमे हमने सीधे-सादे ढगपर इसका नाम **मिरगावती** स्वीकार किया है। जब तक कोई अन्य नाम निश्चित रूपसे ज्ञात न हो, यही नाम विवाद रहित प्रतीत होता है।

लिपि

मुसलमान कवियो द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्योंके सम्बन्धमे सामान्य कल्पनाके विरुद्ध हिन्दी साहित्यके विद्वानोके एक वर्गकी धारणा है कि उनकी मूल प्रति नागरी लिपिमे अकित की गयी रही होगी। इस मान्यताको अस्वीकार करते हुए हमने **चन्दायन**के परिचयमे निम्नलिखित तथ्योकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

(१) ये कवि न केवल स्वयं मुसलमान थे, वरन् उनके गुरु भी मुसलमान थे। उनके आश्रयदाता भी मुसलमान ही थे और उनके शिष्य भी मुसलमान थे। सूफी मतका हिन्दुओमे प्रचार हुआ हो, इसका भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः इनके ग्रन्थ मूलतः अरबी-फारसी लिपिके अतिरिक्त किसी अन्य लिपिमें कदापि न लिखे गये होंगे।

(२) नागरी लिपिको मुसलमानी शासन कालमे कभी प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ।[१] अभी पचास वर्ष पूर्वतक, अधिकाश कायस्थ परिवारोमें रामायण, भगवद्गीता आदिका

१. हमारे इस कथनके विरुद्ध माताप्रसाद गुप्तने हमारा ध्यान इस तथ्यकी ओर दिलानेकी कृपा की है कि मुसलमानी शासनके अनेक सिक्के मिले हैं, जिनपर नागरी लिपिका भी प्रयोग हुआ है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७)। वस्तुतः स्थिति यह है कि न तो किसी मुगल शासकने अपने किसी सिक्केपर नागरी लिपिका प्रयोग किया और न जौनपुर, गुजरात, बंगालके सुलतानोके किसी सिक्केपर नागरी है। दक्षिणके बहमनी, कुतुबशाही, आदिलशाही और निजामशाही सुलतानोंने भी नागरीका प्रयोग कभी नहीं किया। इन सबके सिक्कोंपर विशुद्ध नस्ख अथवा नस्तालीक लिपिमें लेख अकित किये गये हैं। रही बात दिल्ली सुलतानोंकी। उनके भी किसी सोने या चाँदीके सिक्केपर नागरी लेख नहीं है। केवल दरब (चाँदी-ताँबाका मिश्रण) और ताँबेके कुछ सिक्कोंपर नागरी लिपिमें बादशाहका नाम अंकित पाया जाता है। इसे नागरीके प्रश्रयका प्रमाण माताप्रसाद गुप्त जैसे विद्वान् ही कह सकते हैं, इतिहास और पुरातत्वका विद्वान् नहीं। जो लोग प्राचीन मुद्राओंकी परम्परासे परिचित हैं, उनकी दृष्टिमें वह परम्पराका निर्वाह मात्र है। यह वह परम्परा है जिसका अनुसरण करते हुए मुहम्मद गोरीको अपने सिक्कोंपर लक्ष्मीका अकन करना पडा था। यदि उसके इन सिक्कोंको प्रमाण माना जाय तो कहना होगा कि मुहम्मद गोरी मूर्तिपूजक था, उसे मूर्तिभंजक कहा जाता है, वह सर्वथा असत्य है। मुसलमानी शासनमें नागरीको प्रश्रय प्राप्त होनेकी बात हम तब स्वीकार करते जब

पाठ उर्दू-फारसीमे लिखी गयी कापियोसे होता था और लोग शुद्ध उच्चारणके साथ उनका पाठ किया करते थे। इगलैण्ड और फ्रासके पुस्तकालयोमे न केवल सूरसागर आदि धार्मिक ग्रन्थोंकी, वरन् हिन्दू कवियो द्वारा रचित अनेक शृंगार काव्यो, यथा—**केशवदासकी रसिक प्रिया, बिहारी सतसई** आदिकी भी फारसी लिपिमे लिखी प्राचीन प्रतियाँ सुरक्षित है। वे इस बातके द्योतक है कि जिस समय प्रेमाख्यानक काव्य रचे गये, देशमे अरबी-फारसी लिपिकी ही प्रधानता थी। ऐसी अवस्थामे कल्पना नही की जा सकती कि प्रेमाख्यानक काव्योके मुसलमान रचयिताओने अपने काव्यकी मूल प्रति नागराक्षरोमे लिखी होगी।[१]

(३) मुसलमान कवियो द्वारा रचित किसी काव्यकी अबतक कोई भी नागरी-कैथीमे लिखित प्रति ऐसी नही मिली है जिसे सतरहवी शतीसे पूवकी कहा जा सके। और इन काव्योकी नागरी-कैथीमे लिखी जो भी प्रतियाँ उपलब्ध है, उनमे कोई भी ऐसी नही है, जिसमे फारसी लिपि जनित विकृतियोंकी भरमार न हो। ये विकृतियाँ

हमें मुसलमान बादशाहो और उनके अधीनस्थ अधिकारियो और कर्मचारियों के नागरी लिपिमें लिखे राजकीय पत्र और फरमान प्राप्त होते।

१. हमारे इस कथनका यह अर्थ लगा कर कि कायस्थों तकका सम्बन्ध नागरी लिपिसे नाम मात्रका रह गया था, माताप्रसाद गुप्तने हमे यह जतानेकी कृपा की है कि 'हिन्दी ग्रन्थोकी नागरीमे जो प्रतिलिपियाँ मिलती है, उनमेसे एक बहुत बडी सख्या कायस्थ लिपिकों द्वारा लिखी हुई प्रतियोकी है। मध्य युगके हिन्दीके कवियोमे भी कायस्थोंकी सख्या नगण्य नही थी भले ही वे शीर्षस्थ नहीं थे'; और कहा है कि 'इस तर्कके आधारपर यह नही माना जा सकता कि इन मुसलमान कवियोंकी रचनाओंकी आदि लिपि, हो न हो, फारसी लिपि रही होगी।' (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अक ३, पृ॰ ८७)।

मध्ययुगमें कितने कायस्थ नागरीके लिपिक अथवा हिन्दीके कवि थे, यह प्रश्न प्रस्तुत प्रसंगसे तनिक भी सम्बन्ध नही रखता। प्रश्न यह है कि तत्कालीन पढी-लिखी हिन्दू जनताके बीच हिन्दी अथवा नागरी लिपिका किस सीमातक प्रचार था। आजकी तरह उस समय आकलनकी व्यवस्था नहीं थी। इस कारण कदाचित् माताप्रसाद गुप्तको इस प्रश्नका उत्तर देनेमे कठिनाई हो; अत॰ दूर अतीतके ऑकडोके उलझनमे उन्हे न डालकर उनसे दो निवेदन करना चाहूँगा—

एक तो यह कि जिन दिनो वे तीसरी-चौथी कक्षामें पढा करते थे, उन दिनोकी अपनी कक्षाओंपर दृष्टिपात करें और देखें कि उनके साथ पढनेवाले कितने विद्यार्थी हिन्दीके थे और कितने उर्दूके। उन्हें अपने आप याद आ जायेगा कि पैंतीस विद्यार्थियोंकी कक्षामें हिन्दी पढने-वालोंकी सख्या आठ-दससे अधिक नही थी और उनमे एक भी मुसलमान नही था। यह स्थिति उस समय थी जब अग्रेजी शासनकी छत्रछायामें कहा जाता था कि हिन्दी-उर्दूका स्थान समान है। इस तथ्यके प्रकाशमें कल्पना करें कि मुसलमानी शासन कालमें जब अरबी-फारसीका बोलबाला था, हिन्दी या नागरी जाननेवालों सख्या क्या रही होगी!

दूसरा निवेदन यह होगा कि वे आगरा विश्वविद्यालयके प्रांगणमे रहते है। समय निकाल कर वे उन सभी कायस्थ प्राध्यापकोंसे मिलनेका कष्ट करें जिनकी आयु इस समय पचास वर्षसे अधिक है। हर एकसे पूछें कि उनके पितामह किस लिपिसे परिचित थे। उन्हें स्वतः ज्ञात हो जायगा कि हमारे कथनमें कितना तथ्य और तर्कमे कितना बल है।

इस बातका स्पष्ट सकेत देती है कि उनकी पूर्वज प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमे थी। इसके विपरीत इन काव्योंकी जो प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमे उपलब्ध हैं, उनमेसे अनेक उपलब्ध नागरी-कैथी प्रतियोसे प्राचीन हैं और उनके पाठ अधिक संगत, स्पष्ट और प्रामाणिक जान पडते है। ये तथ्य अपने आपमे इस बातके प्रमाण है कि इन काव्योकी मूल प्रतियाँ अरबी-फारसी लिपिमे रही होगी, नागरी लिपिमे नही।

हमने अपनी समझमे उपर्युक्त बाते अत्यन्त गम्भीरताके साथ और तर्कपूर्ण ढगसे कही हैं। किन्तु हमारी ये बाते माताप्रसाद गुप्तको, जो मूल प्रतिके नागरी लिपिमे लिखे होनेकी बात माननेवालोमे अग्रणी और दृढ आग्रही है, आवश्यक प्रमाणसे रहित जान पडी है और उन्होने यह मान लिया है कि हमने दूसरोके प्रमाणपूर्ण बातोंकी हँसी उडायी है।[१] अतः मिरगावतीके प्रसगसे हमारे लिए आवश्यक हो गया है कि इस प्रश्न-पर फिरसे विस्तारके साथ विचार किया जाय।

मुसलमान कवियोके प्रेमाख्यानक काव्योकी आदि प्रति नागरी लिपिमें लिखी गयी थी, यह कहनेवाले विद्वानोने अपने पक्षमे जो तर्क दिये हैं, वे उन विकृतियोकी कल्पनापर आधारित है जो उनके मतानुसार नागरी लिपिके लेखन या पाठ प्रमादसे सम्भव हैं। माताप्रसाद गुप्तका कहना है—**कैथी में र ओर न, क और फ, व और ब के बहुत-कुछ मिलते-जुलते रूप होते थे जब कि फारसी-अरबी लिपिमें वे एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न थे। कल्पना कीजिये कि इन कवियोकी फारसी-अरबी लिपिमे लिखी गयी प्रतियोंमें अनेक स्थलोपर ऐसे पाठ मिलते हैं जिनमें र के स्थानपर न या न के स्थानपर र, क के स्थानपर फ या फ के स्थानपर क और व के स्थानपर ब अथवा ब के स्थान-पर व आता है, ऐसी दशामें क्या यह स्वतः प्रमाणित न माना जायगा कि इन प्रतियों-का कोई पूर्वज नागरी लिपिमें था? पुनः यदि इस प्रकारकी पाठ विकृतियाँ रचना-की प्रायः समस्त प्रतियोंमें मिलती हैं तो विरोधी प्रमाणोंके अभावमें यह क्यों न माना जायेगा कि इसकी आदि प्रति नागरी लिपिमें थी?**[२]

जहाँतक माताप्रसाद गुप्तके इस तर्कका सम्बन्ध है, सरसरी तौरपर देखनेसे अकाट्य लगता है। यदि वस्तुतः ऐसी बातें जिसकी कल्पना माताप्रसाद गुप्तने की हैं, फारसी प्रतियोमें पायी जाती है तो निसन्देह कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति यह माननेमे सकोच न करेगा कि इन फारसी प्रतियोकी मूल प्रति नागरी लिपिमे थी। किन्तु गम्भीर विश्लेषण करनेपर उनकी बातोका खोखलापन अपने आप प्रकट हो जाता है।

क का फ और व का ब अथवा उसका विपर्यय नागरी और कैथी दोनों लिपियोंमें लिखित पाठमें सम्भव है; किन्तु र का न और न का र पढ़े जानेकी सम्भावनाकी कल्पना केवल कैथी लिपिमे लिखित प्रतियोंमें ही की जा सकती है। इस

१ भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अक ३, पृ० ८७।
२ वही।

सम्भावनाके साथ **माताप्रसाद गुप्त**के कथनसे यह झलकता है कि वे यह मानते है कि इन ग्रन्थोकी मूल प्रति कैथी लिपिमे थी। उनकी मान्यताके प्रति इस अनुमानकी पुष्टि उनके इस कथनमे उपलब्ध है—**जिस युगमे दाऊद, कुतुबन और मंझन आदि की रचनाएँ प्रस्तुत हुई थीं, उसी युगमें नागरीका एक ऐसा रूप प्रचारमे आया जो कैथी कहा गया है।**[1] इस प्रकार **माताप्रसाद गुप्त** अपनी विचारधाराके विद्वानोंसे एक कदम आगे हैं।

यदि **माताप्रसाद गुप्त**की यह बात स्वीकार कर ली जाय तो इसका अर्थ यह होगा कि चौदहवी शताब्दीके उत्तरार्धमे, जब **मौलाना दाऊदने चन्दायन**की रचनाकी थी, कैथी लिपिका प्रचलन हो गया था। किन्तु इस सम्बन्धमे ध्यान देनेकी बात यह है कि कैथी लिपि एक सीमित क्षेत्रकी लिपि रही है और उस लिपिमे लिखे पत्र, दस्तावेज आदि केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहारके कुछ भागोमे ही मिलते है और उनमेसे कोई भी दो ढाई सौ बरससे पुराने नही हैं। कैथी लिपिमे लिखी पुस्तकोंकी प्रतियॉ भी इसी क्षेत्रमे लिखी गयी है और इसी क्षेत्रमे बड़ी सख्यामे उपलब्ध होती है। अन्यत्र-से इस लिपिमे लिखी पुस्तके इनी-गिनी ही मिलती है और वे इन्ही क्षेत्रोसे गयी प्रतीत होती है। कैथी लिपिमे लिखी किसी ग्रन्थकी कोई भी प्रति सतरहवी शतीके पूर्वकी नही है। ये तथ्य इस बातके अकाट्य प्रमाण है कि कैथी लिपीका प्रचलन सतरहवी शतीसे पूर्व न था। उसका विकास सतरहवी शतीमे किसी समय हुआ होगा। ऐसी अवस्थामे सोचना कि किसीने चौदहवी या पन्द्रहवी शतीमे कैथी लिपिमे कुछ लिखा होगा, नितान्त हास्यास्पद है।

माताप्रसाद गुप्तने जो कुछ कहा है, उसपर व्यावहारिक ढगसे भी देख लेना उचित होगा। व्यावहारिक ढगसे हमारा तात्पर्य यह है कि फारसी लिपिकी प्रतियोंमे कैथी-नागरी जनित जिन विकृतियोको देखा जाता है, उनको देखा जाय कि क्या वे सचमुच कैथी-नागरी लिपि जनित विकृतियॉ हैं। इस विश्लेषणके लिए **माताप्रसाद गुप्त** सम्पादित **पदमावत**का ही परीक्षण उपयुक्त होगा। यह **पदमावत**का अबतक सबसे प्रामाणिक सस्करण माना जाता है और **माताप्रसाद गुप्त**को इस बातके लिए ख्याति प्राप्त है कि उन्होने **पदमावत**की भाषा पर जमी काई हटानेमे सफलता पायी है।

पदमावतका यह प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करते हुए **माताप्रसाद गुप्त**ने अपनी भूमिकामे ऐसी पाठ विकृतियोकी एक तालिका उपस्थित की है जो उनकी दृष्टिमे फारसी प्रतियोंमे नागरी लिपि जनित हो सकती है।[2] उन्हे **पदमावत**के ९ पंक्तियोवाले ६५३ कडवकोमे केवल ६६ स्थलोपर ऐसी ही विकृतियॉ दिखायी पडी है; किन्तु इन ६६ विकृतियोंमें उन्होंने एक भी ऐसी विकृति नही बतायी है जो **क** के **फ** या **फ** के **क** तथा **र** के **न** या **न** के **र** पढने से उत्पन्न हुई हो। अतः स्पष्ट है कि इन अक्षरोंसे जनित

---

१. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अक ३, पृ० ८७।

२. पद्मावत, सम्पा० माताप्रसाद गुप्त, भूमिका, पृ० २४–२९।

विकृतियोकी कल्पना उनके मस्तिष्कतक ही सीमित है। र के न और न के र पढ़नेसे उत्पन्न विकृतियोंका अभाव इस बातका स्पष्ट प्रमाण है कि फारसी प्रतियोंकी आदि प्रति कदापि कैथी लिपिमे नहीं थी।

रही बात फारसी प्रतियोके मूलमे नागरी प्रति होनेकी। **माताप्रसाद गुप्तने पद्मावतमे** इस प्रकारकी जो विकृतियाँ बतायी है, वे निम्नलिखित हैं—

ब का व पाठ	५८ स्थल
व का ब पाठ	१ स्थल
म का भ पाठ	३ स्थल
ग का क पाठ	१ स्थल
इ का द पाठ	१ स्थल
छ का थ या ठ पाठ	१ स्थल

इन विकृतियोकी कल्पना करते समय जान पड़ता है **माताप्रसाद गुप्तके** ध्यानमे ऐसी हस्तलिखित प्रतियाँ रही हैं जो सतरहवीं-अठारहवी शतीमें तैयार की गयी थीं। फारसी प्रतियोंके मूलमे यदि कोई नागरी प्रति रही होगी तो निसदिग्ध रूपसे वह सोलहवीं शतीकी होगी; वह तभी जायसीके हाथकी कही जा सकती है। उस शताब्दीके और उससे पहलेके नागरी लिपिमें लिखे हिन्दी ग्रन्थोंकी प्रतियाँ नहीके बराबर उपलब्ध हैं; किन्तु चौदहवी, पन्द्रहवी और सोलहवी शतीकी नागरी लिपिमें लिखी सस्कृत और अपभ्रशके ग्रन्थोकी अनेक प्रतियाँ उपलब्ध है। उनके देखनेसे यह स्पष्ट अनुभव होगा कि तत्कालीन लिपिक लिपि सौन्दर्यका बड़ा ध्यान रखते थे। तत्कालीन एक भी प्रति शिरोरेखा विहीन न मिलेगी। उनके अक्षर सुडौल, गोलाई, लम्बाई आदि सबमें अनुपात युक्त होगे; और लिखावटमे आतुरता न होकर धैर्य और सावधानी होगी। अतः तत्कालीन लिखित किसी नागरी प्रतिसे फारसी लिपिमे लिखनेवाला कभी इस प्रकारके भ्रममे नहीं पड सकता। वह कभी भी **म** को **भ**, **ग** को **क**, **इ** को **द**, **छ** को **थ** या **त**, नही पढ़ेगा। अतः तत्कालीन लिपि-स्वरूपोको ध्यानमे रखते हुए कल्पना ही नही की जा सकती कि फारसी प्रतियोमे ये विकृतियाँ मूल नागरी प्रतिसे आयी होगी।

जहाँतक **व** के **ब** या **ब** के **व** पढ़नेकी बात है, प्राचीन कालमे ब और व के रूपोमे लिपिकारोने कभी कोई अन्तर नही माना। गुप्त-कालीन अनेक अभिलेखोंमे **ब** **व** रूपमे लिखा मिलेगा। गुप्त-कालके बादके अधिकाश अभिलेखों, ताम्रपत्रोमे **व** के रूपमें **ब** लिखा मिलेगा। इसलिए चौदहवी, पन्द्रहवी या सोलहवी शतीमे तैयार की गयी किसी भी ग्रन्थके नागरी प्रतियोंमे **ब** के लिए **व** का प्रयोग हुआ हो तो कोई आश्चर्य नही। किन्तु ऐसी स्थितिमे यह ध्यान रखना होगा कि **ब** को **व** के रूपमें लिखनेवाला लिपिक अपने अभ्यासगत स्वभावसे सर्वत्र **ब** को **व** ही लिखेगा। क्योंकि **ब** और **व** की यह एकरूपता हजार बरसोके व्यवहारके परिणामस्वरूप लोक-जीवनके लिए इतनी स्वाभाविक बन गयी थी कि पढते समय पाठकके लिए **व** और **ब**का भेद करनेमें कोई कठिनाई न होती रही होगी। इस स्वभावसे नागरीको फारसी लिपिमे लिखनेवाला

अनभिज्ञ रहा हो, ऐसा नही कहा जा सकता। यदि अनभिज्ञ होता तो वह **व** के रूपमे लिखे **ब** को सर्वत्र **व** ही पढ़ता; ५८७७ पक्तियोके **पदमावत**मे, केवल ५८ स्थलोपर **ब** को **व** न लिखता या एक स्थलपर **व** को **ब** लिखनेकी भूल न करता।

ये तथ्य अपने आपमे इस बातको स्पष्ट करनेमे सक्षम है कि इन विकृतियोके आधारपर किसी फारसीके प्रतिके मूलमे नागरी प्रतिके होनेकी कल्पना नही की जा सकती। फिर भी **माताप्रसाद गुप्त** द्वारा बतायी इन विकृतियोका अलगसे परीक्षण कर लेना उचित होगा।

माताप्रसाद गुप्तके कथनानुसार **ब** को **व** पढे जानेकी निम्नलिखित विकृतियाॅ **पदमावत**मे है—

(१) **पब्बे**के स्थानपर **पुवे** या **पवे**		४ स्थल
(२) **बानि**के स्थानपर **वानि**		१ स्थल
(३) **अनबन**के स्थानपर **अनवन**		४ स्थल
(४) **जब**के स्थानपर **जौ**		
तबके स्थानपर **तौ**		
कबके स्थानपर **कौ**		४९ स्थल
अबके स्थानपर **औ**		
सबके स्थानपर **सौ**		

(१) **माताप्रसाद गुप्त**ने जिन चार स्थलोपर **पब्बै**का **पुवे** या **पवै** पाठ देखा है वे सबके सब एक ही प्रति (प्रति तृ० ३) मे है, और यह प्रति फारसीकी नही नागरी-की है। **ब व** का भेद लिपि प्राचीन कालसे ही नही करते रहे है। अत यह कहना कि लिपिकने गलत लिखा है, उसके प्रति अन्याय होगा। **माताप्रसाद गुप्त**को इस विकृत-पाठका भ्रम स्वयं अपने पाठसे ही उत्पन्न हुआ है। यदि यह विकृत हो भी तो इसका सम्बन्ध किसी प्रकार भी फारसी प्रतियोसे नही जोडा जा सकता।

(२) **वानि** पाठ एक मात्र ऐसी प्रति (प्रति द्वि ४)मे मिलता है जो मुद्रित है और उसको मुद्रित हुए केवल ६० वर्ष हुए है। वह १३२३ हिजरीका प्रकाशन है। इस प्रतिको तीन सौ वर्ष पूर्वकी किसी प्रतिके मूलके निर्धारणके लिए किसी प्रकारका प्रमाण माननेको कदाचित् ही कोई तैयार होगा। इस अवधिके बीच उसमे न जाने कितने साधनोसे विकृतियाॅ आयी होगी। किन्तु यदि उसे प्रमाण माना भी जाय तो भी किसी प्रकार निश्चयपूर्वक यह नही कहा जा सकता कि वह **बानि**से विकृत होकर ही किसी प्रतिमे गया है। जिस प्रसगमे यह शब्द प्रयुक्त हुआ है (३१।२) उसके अनुसार **बानि** के मूलमे **वर्ण** शब्द जान पडता है। **वर्ण**से पहले **वानि** होगा तब पीछे **बानि** (स० **वर्ण**> प्रा० वण्ण> वान (वानि)> बान (बानि)। हो सकता है कविने मूलतः **वानि** शब्दका ही प्रयोग किया हो, पीछे लोगोने उसका **बानि**के रूपमे सरलीकरण कर लिया हो। इस शब्दके अनेक पाठान्तर विभिन्न प्रतियोमे मिलते है जो साधारणीकरण और सरलीकरणके निसंदिग्ध प्रयास है।

(३) जिस शब्दको **माताप्रसाद गुप्तने अनवनके** रूपमे ग्रहण किया है और **अनबनका** विकृत रूप माना है, वह अकेले **पदमावतमे** ही नही, वरन् **मिरगावती, चन्दायन** और **मधुमालती**मे भी अनेक स्थलोपर प्राप्त है और वह इन चारों काव्योंकी सभी फारसी प्रतियोमे अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमे लिखा मिलता है। यह बात तो सभी स्वीकार करेंगे कि ये चारों काव्य न तो एक समयमे लिखे गये और न उनकी प्रतियाँ एक लिपिक द्वारा तैयार की गयी है। ऐसी अवस्थामे यह सोचना नितान्त हास्यास्पद होगा कि सभी लिपिक समान रूपसे प्रमादी थे और सबने **अनबनको अनवन** पढ़ लिया। कोई तो किसी प्रतिमे उसका शुद्ध पाठ **अनबन** लिखता। अतः सभी काव्यों-मे और उनकी सभी प्रतियोमे एक समान अलिफ, नून, वाव, नूनका लिखा होना यह प्रमाणित करता है कि मूल पाठ अलिफ, नून, वाव, नूनसे ही बना हुआ कोई शब्द है जिसे कैथी-नागरी प्रतियोके लिपिकोने इन अक्षरोके ध्वनि रूपको ग्रहणकर **अनवन** पढा है और **माताप्रसाद गुप्तने** भी उसे अविकल रूपसे ग्रहणकर लिया है। इसे **ब** के **व** पढे जानेके प्रमाणमे उपस्थित नही किया जा सकता।

अनवनको अनबनका रूप कल्पित कर **माताप्रसाद गुप्तने** उसके मूलमे **अन्य वर्ण**को देखनेकी चेष्टा की है। यदि **अनवन** पाठ ठीक है और उसके मूलमें **अन्य वर्ण** है, तो भी उसे **अनबनका** विकृत रूप कहना कठिन है। **अन्य वर्ण**से पहले **अनवन** होगा और बादमे **अनबन**। कविके लिए **अनबन** लिखनेकी आवश्यकता नहीं होगी। किन्तु **अन्य वर्ण**के अर्थ या भावमे **अनबन** या **अनवन**, दोनों रूपोंमें से कोई भी, न तो अवधीमे और न किसी इतर लोक-भाषामे व्यवहृत पाया जाता है। **अनवन** पाठ ही काल्पनिक है। वस्तुतः अलिफ, नून, वाव, नूनके रूपमें लिखा गया शब्द सीधा-सादा **अनों** या **आनों** है जो नाना प्रकारके, भाँति-भाँतिके, **तरह-तरह**के अर्थमे नित्य भोजपुरी बोलनेवालोके बीच व्यवहारमें आता है।

(५) **जौ तौको माताप्रसाद गुप्तने जब तबका** विकृत रूप कहा है। **जब तब** ऐसे शब्द है जिन्हे लोग बात-बातमे प्रयोग करते हैं। लोगोकी जिह्वापर वे इस प्रकार चढ़े रहते है कि नागरी लिपिमे **जव तव**के रूपमे लिखे होनेपर भी कोई लिपिक उसे भूले भी फारसी लिपिमे जीम वावसे नहीं लिखेगा। **जौ** और **तौ** का प्रयोग **पदमावतकी** एक आध प्रतिमे नही, अधिकाशमे पाया जाता है। और उनका प्रयोग **पदमावततक** ही सीमित नहीं है। वे समान रूपसे अन्य प्रेमा-ख्यानोंमें भी पाये जाते है। यह तथ्य इस बातका द्योतक है कि **जौ तौ** का व्यवहार निरन्तर **जब तब**के अर्थमे होता रहा है, वह **जब तब**का विकृत रूप नही है। यदि हम लोक-भाषाओकी ओर ध्यान दें तो आज भी हमे **जौ** और **तौ** का प्रयोग भोजपुरी बोलनेवालोके मुखसे बराबर सुननेको मिलेगा। अतः **जौ** और **तौ** ही मूल प्रतियोंका प्रयोग है। सम्भवत **माताप्रसाद गुप्तको** भी यह बात समझमे आ गयी है। उन्होंने अपने **मधुमालती**के संस्करणमें इनका उल्लेख विकृतियोंके उदाहरणमें नहीं किया

है और अपनी शब्द सूचीमे उन्हे **यदा** (जौ <जऊ <यदा) तथा **तदा** (तौ <तऊ < तदा)का रूप कहकर उनका **जब** और **तब** अर्थ ग्रहण किया है।

इसी प्रकार **कबका कौ, सबका सौ** और **अबका औ** प्रयोग **जौ** और **तौ**के अनुकरणपर होते रहे होगे, यह उपर्युक्त प्रकाशमे हम आसानीसे समझ सकते हैं। असाधारण प्रयोग और क्लिष्ट-कल्पना होनेके कारण लोगोने **कब, सब, अब**के रूपमे उनका सरलीकरण कर लिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि **ब** के **व** पढ़े जानेका ऐसा कोई उदाहरण **पदमावत**मे उपलब्ध नही है जिसे फारसी प्रतियोंमे नागरी लिपि जनित विकृतका निसदिग्ध प्रमाण कहा जा सके।

व के **ब** पाठके उदाहरणमे **माताप्रसाद गुप्त**ने केवल एक उदाहरण कडवक ४५ की पंक्ति १ से **घूँबिय** शब्दका दिया है। यह शब्द इसी रूपमे सब प्रतियोमे मिलता है, यह उनका स्वयंका कथन है। किस आधारपर वे इस शब्दका मूल पाठ **घूँविय** होनेकी कल्पना करते है, यह उन्होने नही बताया है। **वासुदेवशरण अग्रवाल**ने अपने संस्करणमे **घूँबिय** पाठको स्वीकार किया है और उसका अर्थ किया है **घूमनेपर**।[1] **घूमने**के अर्थमे **घूँबि** भोजपुरीका बहु प्रचलित शब्द है। उसके **घूँवि** होनेका कोई कारण नही जान पडता। इस प्रकार **व** के **ब** पाठका भी कोई प्रामाणिक उदाहरण **पदमावत**मे नहीं है।

माताप्रसाद गुप्तने **म** के **भ** पाठके उदाहरणमे **कुरुँभ** शब्दको पेश किया है। जहाँतक शब्दका सम्बन्ध है इस बातसे किसीको इनकार न होगा कि **कुरुँभ**के मूलमे **कुरुम** (कूर्म) है। किन्तु पन्द्रहवी-सोलहवी शताब्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोसे परिचित व्यक्ति यह कभी स्वीकार न करेगा कि नागरीमे लिखे तत्कालीन **म** को कोई **भ** पढ़ेगा। इस प्रकारकी कल्पना आजकलके **म** और **भ** के रूपोको लेकर ही करना सम्भव है। **कुरुँभ** पाठ नागरी लिपि जनित विकृतिके कारण नही है, यह बात इस बातसे भी स्पष्ट है कि यह पाठ **पदमावत**के फारसी-नागरी सभी प्रतियोमे समान रूपसे प्राप्त है। फिर **म** के स्थानपर **भ** का यह अकेला प्रयोग नही है। स्वयं **माताप्रसाद गुप्त**को **कुसुम**के अर्थमे **कुसुँभ** पाठ **मधुमालती**मे मिला है।[2] **चन्दायन**मे भी कई स्थलोपर **कुसुँभ** और **कुसुँभी** पाठ है।[3] इस प्रकार **म** के स्थानपर **भ** का प्रयोग न केवल **पदमावत**मे है वरन् **मधुमालती** और **चन्दायन**मे भी है। अतः मानना होगा कि पूर्वाक्षरको अनुनासिक कर **म** के स्थानपर **भ** का प्रयोग उन दिनो मान्य था। आज भी **कुसुम**को गाँवोंमे **कुसुँभ** बोलते हुए सुना जाता है। अतः कुरुँभके प्रयोगको भी लिपि जनित विकृति नहीं कह सकते। **माताप्रसाद गुप्त** भी इस तथ्यको स्वीकार करते जान

---

१. पदमावत, द्वितीयावृत्ति, पृ० ५३।
२. २०४।३; ४१०।३।
३. १५६।७; ४३।२; ९४।४।

पडते है; उन्होने मधुमालतीमे फारसी लिपियोंमे नागरी लिपि जनित विकृतियोंकी सूचीमे इसका उल्लेख नही किया है।

ग के **क** पाठके उदाहरणमे **माताप्रसाद गुप्तने** कडवक १०५ की पंक्ति ५ — **पुहुप सुगन्ध करहि सब आसा। मकु हिरगाइ लेइ हम बासा** ।।—के **हिरगाइ** शब्दको दिया है। नागरी लिपिमे लिखित **ग** किस कल्पनासे **क** पढा जा सकता है, यह **माताप्रसाद गुप्त** ही बता सकते है। इन दोनों अक्षरोंके स्वरूपोंसे परिचित कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति कभी यह सोच भी नही सकता है कि **ग** कभी किसी तर्कसे **क** पढ़ा जा सकता है। **हिरकाइ** या **हिरिकाइ** पाठ लिपि विकृतिके परिणामस्वरूप नहीं है, यह तो समस्त प्रतियोंमे प्राप्त समान पाठसे ही स्पष्ट है। जो लोग भोजपुरीसे परिचित हैं उन्हे यह भलीज्ञात है कि **अत्यन्त निकट लानेके** अर्थमे **हिरकाना** शब्दका ही व्यवहार होता है **हिरगानाका** नही। अतः **हिरकाना** या **हिरिकाना** पाठ ही शुद्ध है। उसमे किसी प्रकारकी विकृतिकी कल्पना नही की जा सकती। यदि **हिरगाना** पाठको ही शुद्ध माने तो कहना होगा कि **हिरकाना** पाठ फारसी लिपि जनित है, नागरी लिपि जनित नही। यह बतानेकी आवश्यकता नही कि मध्यकालीन फारसी लिपिमे गाफके लिए अतिरिक्त मरकजका प्रयोग नही होता था। काफ ही गाफका भी काम देता था और प्रसगानुसार **क** या **ग** पढ़ा जाता था। अतः फारसी प्रतियोमे **हिरगाइ** सदैव **हिरकाइ**के रूपमे ही लिखा मिलेगा।

इ का **द** पाठ **माताप्रसाद गुप्तको** कडवक ३५१ की पक्ति २ मे दिखाई पडा है। वहॉ उन्हे एक प्रति (प्रति प्र० २)मे **रुई**के स्थान पर **रूद** पाठ मिला। इस सम्बन्धमें केवल इतना ही द्रष्टव्य है कि यह प्रति फारसीकी नही, नागरीकी है। उसमें आयी विकृतिका सम्बन्ध किस प्रकार फारसी प्रतियोंमे नागरी लिपि जनित विकृतियोंसे है, यह **माताप्रसाद गुप्त** बतानेकी कृपा करें, तभी उसपर कुछ विचार सम्भव है।

छ का **थ** या **ठ** पाठ **माताप्रसाद गुप्तने** कड़वक ३५२ की पक्ति ७ मे देखा है। पक्ति है—**लागो कन्त छार जेंऊँ तोरे**। उनके कथनानुसार एक प्रति (प्रति प्र०)मे **ठार** पाठ है, अन्य सभी प्रतियोमे पाठ **थार** है। **छार**के शुद्ध पाठ होनेमे **माताप्रसाद गुप्तको** स्वयं सन्देह है। उन्होने **छार**के आगे प्रश्नवाचक चिह्नका प्रयोग किया है। जबतक पाठका निश्चय न हो, किसी बहुमान्य पाठको विकृत कहना अनुचित है। दूसरी बात **छ** का साम्य न तो **थ** से है और न **ठ** से; ऐसी अवस्थामे कोई लिपिक क्योंकर **छ** को **थ** या **ठ** पढ़ लेगा, यह समझमे आनेवाली बात नही है। यदि अधिकाश प्रतियों में **थार** पाठ है तो यह स्वीकार करना होगा कि मूल पाठ **छार** कदापि न रहा होगा। **वासुदेवशरण अग्रवालने थार** पाठको समीचीन ठहराया है।[1] उनकी मान्यताके प्रकाशमें किसी प्रकारकी विकृतिकी बात उठती ही नहीं।

---

१. द्वितीय संस्करण, पृ० ४२७।

पदमावतके फारसी प्रतियोंमे **माताप्रसाद गुप्त**ने नागरी लिपि जनित विकृतियो-की जो कल्पनाकी है और उसके प्रमाणमे जितने भी उदाहरण उपस्थित किये है, उनमे एक भी परीक्षण करनेपर खरा नहीं उतरता। उनसे यह सिद्ध नही होता कि **पदमावत**-के उपलब्ध फारसी प्रतियो के मूलमे किसी भी अवस्थामे कोई नागरी लिपिकी प्रति थी जिससे कहा जा सके कि आदि प्रति नागरीमे थी।

जो लोग आदि प्रतिके नागरीमे होनेकी कल्पना करते है, उन्हे फारसी लिपि-की प्रतियोमे नागरी लिपि जनित विकृतियाॅ खोजनेके स्थानपर नागरी लिपिमे लिखी ऐसी प्रतियोका प्रमाण उपस्थित करना चाहिए जिसमे एक भी फारसी लिपि जनित विकृतियाॅ न हो। जबतक ऐसी कोई नागरी प्रति सामने नही आती, यह माननेका कोई आधार नही कि मुसलमान कवियों द्वारा लिखे काव्योकी आदि प्रति नागरीमे थी। **चन्दायन**मे हमने जो तर्क उपस्थित किये है और जिन्हे ऊपर उधृत भी किया है, उन्हे दृष्टिमे रखना ही होगा और मानना होगा कि इन काव्योकी मूल प्रतियाॅ फारसी लिपिमे लिखी गयी थी, और इस कारण फारसी प्रतियोको नागरी-कैथीकी प्रतियोकी अपेक्षा प्रामाणिक स्वीकार करना होगा।

भाषा

लिपिके समान ही मुसलमान कवियों द्वारा रचित प्रेमाख्यान काव्योकी भाषा के सम्बन्धमे **माताप्रसाद गुप्त** प्रभृत विद्वानोका आत्म-विश्वासके साथ कथन है कि वह अवधी है। उनके इस विश्वासके मूलमे **रामचन्द्र शुक्ल**का यह कथन है—**ये सब प्रेम कहानियाँ पूर्वी हिन्दी अर्थात् अवधी भाषामें एक नियत क्रमके साथ केवल चौपाई-दोहेमें लिखी गयी हैं।**[1] इस सम्बन्धमे हमने **चन्दायनके** परिचयमे इस तथ्य-की ओर ध्यान आकृष्ट किया था कि **अब्दुर्कादिर बदायूनी**ने स्पष्ट शब्दोमे कहा है कि—

> **चन्दायन** दिल्ली सल्तनतके प्रधान मन्त्री जौनाशाहके सम्मानमे रचा गया था और दिल्लीमे मखदूम शेख तकीउद्दीन रब्बानी जन-समाजके बीच उसका पाठ किया करते थे। यह कथन इस बातकी ओर सकेत करता है कि **चन्दायन**की भाषा वह भाषा है जिसे दिल्लीके प्रधान मन्त्री जौनाशाहसे लेकर दिल्लीकी सामान्य जनतातक पढ और समझ सकती थी। **अब्दुर्कादिर बदायूनी**ने इस भाषाके सम्बन्धमे हमे अपनी कल्पनाका कोई अवसर नही दिया है। उन्होने स्पष्ट शब्दोमे बता दिया है कि इस मसनवी (**चन्दायन**)की भाषा हिन्दवी है। यह हिन्दवी निश्चय ही वह **हिन्दवी** होगी, जिसका प्रयोग चिश्ती सन्त **शेख फरीदुद्दीन गंजशकर** और **ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया** अपने मुरीदोसे बातचीत करते समय किया करते थे। उसी **हिन्दवीको** जो दिल्लीके सूफी सम्प्रदायके सन्तो द्वारा व्यवहृत होती थी और राजसभासे लेकर जन-साधारणमे समझी जाती अथवा जा सकती थी, **दाऊदने** अपने काव्य **चन्दायन** के लिए अपनाया होगा और उसीमें उसकी रचना की होगी।

---

१. जायसी ग्रन्थावली, स० २०१७, भूमिका, पृ० ४।

अतः **चन्दायन**की भाषाको अवधके सीमित प्रदेशमे ही बोली और समझी जानेवाली भाषा **अवधी**का नाम नहीं दिया जा सकता। **चन्दायन**में प्रयुक्त भाषा निसन्देह ऐसी भाषाका स्वरूप है, जिसका देशमे काफी विस्तार और विकास रहा होगा।[१]

यही बाते **मिरगावती**की भाषाके सम्बन्धमे भी दुहरायी जा सकती है। किन्तु न जाने क्यों कर **माताप्रसाद गुप्त**ने कल्पना कर ली है कि हमने इन पंक्तियोंमे **चन्दायन**की भाषाको दिल्लीकी भाषा कहनेकी धृष्टताकी है।[२] ऐसा कहनेकी धृष्टता कदाचित् कोई मूर्ख ही करेगा। यदि **माताप्रसाद गुप्त**ने तनिक धैर्यके साथ उपर्युक्त अवतरणपर ध्यान दिया होता तो उन्हे न तो ऐसी कल्पनाकी आवश्यकता होती और न हमें यहाँ अपनी बातको विस्तारके साथ दुहरानेकी।

मध्यकालीन दिल्लीका निवासी दिल्लीकी अपनी ही बोली या भाषा समझता रहा होगा, अन्य भाषा उसके लिए कुरानकी भाषाके समान रही होगी, ऐसा **माताप्रसाद गुप्त** किस प्रमाण और तर्कसे मानते हैं, यह तो वही बता सकते हैं। जहाँतक सामान्य बुद्धिकी बात है, जन-साधारण किसी दूसरी भाषाको, यदि वह विस्तृत प्रदेशमे प्रचलित है तो, अपनी स्थानीय बोली या भाषाके होते हुए भी समझ तो लेती ही है, बोल भले ही न सके। इस बातको हम हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओंकी आजकी स्थितिको सामने रखकर आसानीसे समझ सकते है। ऐसी अवस्थामे हमारे कथनसे यह कहाँ ध्वनित होता है कि **चन्दायन**की भाषा दिल्लीकी भाषा है? हमारे कहनेका तात्पर्य इतना ही रहा है कि **चन्दायन**मे प्रयुक्त भाषा, ऐसी भाषाका स्वरूप है जिसका देशमे काफी विस्तार और विकास रहा होगा और वह दिल्लीकी राजसभासे लेकर जन-साधारणमे समझी जाती अथवा जा सकती थी। दूसरे शब्दोंमे वह ऐसी भाषा है जिसे भारतीय इतिहासपर सम्यक् दृष्टि रखनेवाला देश-भाषा ही कहेगा, किसी अकेले एक प्रदेशमें बोली जानेवाली भाषा नही। **अब्दुर्कादिर बदायूनी**ने **चन्दायन**की भाषाको हिन्दवी कहकर यही भाव व्यक्त किया है।

माताप्रसाद गुप्तने इस सम्बन्धमे जो कुछ कहा है उससे यह भी ध्वनित होता है कि तत्कालीन शासक और राजदरबारी फारसीके अतिरिक्त और कुछ जानते ही न थे। उन्हे कदाचित् यह याद दिलाना अनुचित न होगा कि मुगल सम्राटोमेसे अनेककी हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध है। वे स्वय इस बातके प्रमाण है कि फारसीके अतिरिक्त उन्हे अन्य भाषाका भी परिचय था। मुगल शासकोसे पूर्वके शासकोके राजदरबारमें ही नही हरमतक हिन्दी पहुँच चुकी थी, यह तत्कालीन इतिहासकारोके लेखोंमें एक नहीं अनेक स्थलोंमे लिखा मिलेगा। जिस प्रकारकी तद्भव प्रचुर हिन्दी में **मौलाना दाऊद** या तत्प्रभृत कवियोंने रचनाएँ की हैं, उस हिन्दीको मुसलमान शासक कदापि न समझते रहे होंगे, ऐसा **माताप्रसाद गुप्त**का विश्वास सा जान पड़ता है। इस सम्बन्धमें अपनी ओर से कुछ न कहकर जहाँगीरकालीन इतिहासकार **मुहम्मद कबीर**ने अपने **अफसाना-**

---

१ चन्दायन, पृ० ३२।

२. भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अंक ३, पृ० ८७-८८।

ए-बादशाहानमे **मधुमालती**के रचयिता **मंझन**के आश्रयदाता इसलाम शाहके सम्बन्धमे जो कुछ कहा है, उसे ही उधृत करना पर्याप्त होगा।

इसलाम शाहके चरित्रका उल्लेख करते हुए **मुहम्मद कबीर**ने लिखा है कि—

> उसके (इसलाम शाहके) साथ धर्माचार्य (उलमा), विद्वान् (फुजलः) और कवि (शुअरा) रहा करते थे। जिस जगह वह खुद रहते थे, उसके इर्दगिर्द ही उनके भी शामियाने (कोशख) खड़े किये जाते थे। और उन सबमें पान, सुगन्धि आदिकी व्यवस्था रहती थी। उनमे **मधुमालती**के रचयिता **मीर सैयद मंझन, शाह मुहम्मद फरमूली,** उनके छोटे भाई **मूसन** और **सूरदास** प्रभृति विद्वान् रहा करते थे। और उनमे अरबी, फारसी और **हिन्दवी**की कविताएँ पढ़ी जाती। इसलाम शाहने कह रखा था कि जब मै वहाँ आऊँ तो कोई मेरी अभ्यर्थना (ताजीम)के लिए न उठे। जो जैसे बैठा हो बैठा रहे, यदि लेटा हो तो लेटा रहे। इस प्रकार बेतकल्लुफीके साथ आनन्द उठाया जाय।[१]

उपर्युक्त अवतरणमे **मंझन, मूसन** और **सूरदास** तीन नाम ऐसे है जो निसन्देह हिन्दीके कवि थे। **मंझन**की **मधुमालती**से हिन्दी ससार परिचित ही है। **मूसन**की रचनाएँ भी अभी हालमे प्रकाशमे आयी है। वे कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी विद्यापीठ (आगरा विश्वविद्यालय)के **उदयशंकर शास्त्री**को प्राप्त हुई है।[२] **सूरदास** निश्चय ही **सूरसागर**के रचयिता न होकर कोई दूसरे **सूरदास** होगे। उनके सम्बन्धमे जानकारी अपेक्षित है फिर भी इतना तो अनुमान किया जा ही सकता है कि वे अरबी-फारसीके कवि न रहे होगे। ये कवि जिस **हिन्दवी**मे कविता-पाठ करते रहे होगे उसका अनुमान **मधुमालती**की भाषासे किया जा सकता है। यदि इसलाम शाह **मंझन**की भाषा समझ सकते थे तो कोई कारण नही कि जौनाशाह **मौलाना दाऊद**के **चन्दायन**की भाषा न समझते रहे हो। इस बातमे सन्देह करनेकी कोई गुजाइश ही नही है कि इन मुसलमान कवियोने जिस भाषाका प्रयोग किया है वह दिल्लीके शासको और उनके दरबारियोमे समझी जाती थी।

---

१. दर ऐश व जश्न नशतन्द। वह हम- वक्त उलमा व फुजल व शुअर हमराह मी बूदन्द। व दरजाए कि खुद मी बूदन्द गिर्द ब गिर्दआँ कोशख बरपा साख्त बूदन्द व दराँ कोशखः पान व गालिया हर किस्म निहादा बूदन्द। व आँजा बमिस्ल मीर सैयद मझन मुसन्निफ मधुमालती व शाह मुहम्मद फरमूली, व मूसन बिरादरे खुर्द शाह मुहम्मद व सूरदास वगैरह उलमा व फुजलः व शुअरः दराँ कोशख' मी बूदन्द। व शेरे अरबी व पारसी व हिन्दवी मी गुफ्तन्द। इसलाम शाह फरमूद कि चूँ मनइजा बेयायम कसे अज शुमायानताजिमे मन न खाहेद कर। अगर कसे निशस्त, बाशद उ हम चुना निशस्तः बाशद व अगर खुस्पीदा बाशद हम चुना बाशद। (ब्रिटिश सग्रहालयकी हस्तलिखित प्रति। इस प्रतिकी एक फोटो-स्टाट प्रति काशीप्रसाद जायसवाल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पटनामें उपलब्ध है।)।

२. सैयद हसन अकसरीसे यह बात ज्ञात हुई है।

उपर्युक्त अवतरणसे अयाचित् ढगसे हिन्दी जगतके सम्मुख यह बात भी पहली बार आ रही है कि मधुमालतीके रचयिताका नाम **मीर सैयद मंझन था**। अबतक हम उन्हे **शेख मंझन** समझते रहे वह गल्त है। नामके साथ मीरका प्रयोग इस बातका सकेत करता है कि वे कोरे कवि न थे, शासनमे एक अधिकारी, सम्भवतः न्यायाधीश भी थे। **अफसाना-ए-बादशाहानमे**, जिस ग्रन्थसे यह अवतरण उद्धृत है, अनेक प्रसगोंमे **मीर सैयद मंझन** राजगिर्राका उल्लेख हुआ है, जिससे अनुमान होता हैं कि **मंझन** राजगृहके निवासी थे। यदि यह अनुमान ठीक है तो कहना होगा कि जिस भाषामे **मधुमालती** लिखी गयी है, उसे न केवल दिल्लीके लोग समझते थे, वरन् उससे अवध-के बाहर बहुत दूर पूर्वके निवासी भी परिचित थे और निरायास उस भाषामे रचना कर सकते थे।[१]

ये तथ्य हमारे कथनका समर्थन ही नहीं करते, वरन् उसे पुष्ट भी करते हैं। हमने जो कुछ कहा है, बहुत कुछ वही बात, दबी जबानसे, भाषाको अवधी नाम देने-वाले कुछ लोग भी कहते हैं। मिरगावतीकी भूमिकामे शिवगोपाल मिश्रने कहा है—**अवधीके विकास कालमें जौनपुरसे दिल्लीतक (ईश्वरदासकी रचनामें बादशाह सिकन्दर शाहका वर्णन है) की भाषामें एकरूपता थी। अभीतक कुतबन अथवा ईश्वर-दासके निवास स्थानोंका ठीकसे पता नहीं चल पाया किन्तु जायसी तथा शेख निसार-के जन्मस्थान क्रमशः जायस तथा शेखपुर (फैजाबादके पास) सिद्ध हो चुके हैं। यदि इन सबकी भाषाओंका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो पता चलेगा कि सबोंने समान रूपसे एक ही भाषाका प्रयोग किया है जो अत्यन्त ठेठ शब्दोंको प्रश्रय देती है। इस प्रकार पूर्वमें गाजीपुर तथा जौनपुरसे पश्चिममें दिल्ली, उत्तरमें पूरा अवध प्रान्त तथा दक्षिणमें मध्य-प्रदेशतकमें अवधीका यही रूप बोला और समझा जाता था। यही अवधी उस कालकी जनताकी भाषा थी।**[२] इस प्रकार शिवगोपाल मिश्र भी स्वीकार करते हैं कि यह भाषा अवधकी सीमामे ही सीमित न थी और तत्का-लीन जनताकी भाषा थी।

हमारी बातोंका समर्थन विश्वनाथ प्रसादने स्वसम्पादित चन्दायनकी प्रस्ता-वनामे इन शब्दोमे किया है—**चन्दायनकी भाषा हिन्दीके विकासका वह प्रारम्भिक रूप है, जिसमें उसके किसी एक स्थानीय स्वरूपको लेकर और उसमें अन्यान्य कई बोलियोंके प्रचलित प्रयोगोंका मिश्रण करके उसे अधिक व्यापक बनानेकी प्रवृत्ति पायी जाती है। भाषाका एक सर्व जन-सुलभ और सुबोध रूप खड़ा करनेके लिए इसमें विभिन्न भाषा क्षेत्रोंमें प्रचलित रूपोंके मिश्रणका कुछ ऐसा ही आदर्श अपनाया**

---

१. कुतुबनने तिथि गणनाकी जो दाक्षिणात्य पद्धति अपनायी है, उसके आधारपर हमारी धारणा है कि वे दाक्षिणात्य थे अथवा दक्षिणसे उनका निकटका सम्बन्ध है। यदि हमारी धारणा ठीक है तो यह भी कहा जा सकता है कि सुदूर दक्षिणके लोगोंके लिए भी यह भाषा अपरिचित नहीं थी।

२. कुतुबन कृत मृगावती, भूमिका, पृ० ३५।

गया है, जैसा कि कबीर आदि सन्त कवियोंकी परम्परामें हमें मिलता है। क्योंकि उनका भी उद्देश्य अपने सिद्धान्तोंको अधिक-से-अधिक लोगोंको हृदयंगम कराना था।[1]

मिरगावतीकी भाषाके सम्बन्धमे **कुतुबनने** स्पष्ट शब्दोमे कहा है—

शास्त्री आखर बहु आये।
औ देसी चुनि चुनि सब लाये॥१३।४

खट भाका जो इंहहिं बाँचा।
पण्डित बिनु पूछत हो साँचा॥४३१।४

इस प्रकार **कुतुबनने** अपनी भाषाके सम्बन्धमे स्पष्ट कहा है कि तत्सम **शब्दों** (**शास्त्री आखर**—सस्कृत)के साथ-साथ देशी शब्दोका प्रयोग उन्होने किया है। इस प्रकार उनकी भाषा अनेक भाषाओका मिश्रण है। यदि **मिरगावतीको** भाषाके साथ **चन्दायन, पद्मावत** और **मधुमालतीकी** भाषाकी तुलना करके देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सबकी भाषा प्रायः एक-सी है, अर्थात् उनकी रचना **मिरगावतीको** भाषा (**कुतुबन** के शब्दोमे मिश्रित भाषा)में हुई है। भाषाओ या बोलियोके मिश्रणसे बनी भाषा किसी प्रदेश विशेषकी भाषा न हो सकती है और न कही जा सकती है। ऐसी भाषाका प्रयोग सदैव विस्तृत क्षेत्रमे बोलने अथवा समझनेके लिए ही किया जायगा। ऐसी भाषाको सर्वदेशीय या राष्ट्रीय भाषा कहना उचित होगा। इस तथ्यको आजकी हिन्दीको सामने रखकर सरलतासे समझा जा सकता है। हिन्दीके मूलमे भाषाविद् मेरठ प्रदेशमे बोली जानेवाली खडी बोलीको मानते है; किन्तु आजकी हिन्दी-को, जो सारे देशमे समझी या बोली जाती है अथवा जिसका प्रयोग लेखनमे होता है, कदापि मेरठ प्रदेशके लोक-जीवन मे सीमित बोली नही कह सकते। उसने अपने मूल स्वरूपको बहुत पीछे छोड दिया है।

इसी बातको अत्यन्त सीधे-सादे और सुलझे हुए रूपमे **अबदुर्कादिर बदायूनीने चन्दायनके** और **मुहम्मद कबीरने मंझन** और **मधुमालती** के प्रसगसे **हिन्दवी** शब्द द्वारा व्यक्त किया है। **कुतुबनकी** अपनी तथा पूर्ववर्ती इतिहासकारोकी जानी-समझी बातकी उपेक्षा कर मुसलमान कवियोके प्रेमाख्यानक काव्योकी भाषाको अवधीके रूपमे प्रादेशिक भाषा कहना निराधार दुराग्रहके अतिरिक्त कुछ नही कहा जा सकता। जो तथ्य उपलब्ध है उनके प्रकाशमे इन काव्योकी भाषाको हमे व्यापक क्षेत्रमें समझी जानेवाली भाषाके रूपमे देखना चाहिए। **हिन्दवी** नामको ध्यानमे रखते हुए उसे आरम्भिक हिन्दी, मध्यकालीन हिन्दी या उत्तर भारतीय हिन्दी जैसे किसी व्यापक नामसे पुकारना ही समीचीन होगा।

---

१. पृ० १४।

भाषाका स्वरूप

मिरगावती अथवा उसके समान मुसलमान कवियों द्वारा लिखे गये अन्य काव्योकी भाषाके सम्बन्धमें तर्क करनेकी अपेक्षा उनकी भाषाके स्वरूपका विश्लेषण करना अधिक व्यावहारिक होगा और वह उचित निर्णयपर पहुँचनेमे सहायक होगा। किन्तु यह कार्य अपनेमे काफी विशद है। उसको यहाँ उठाना हमारे लिए अपनी सीमाओको देखते हुए सम्भव नही है। यदि कोई तटस्थ भावसे इन ग्रन्थोंकी भाषाका परीक्षण और विश्लेषण करे तो उसे यह जाननेमे तनिक भी कठिनाई न होगी कि उनकी भाषापर अनेक बोलियो और भाषाओकी छाप है। उनमे उसे अपभ्रंशके शब्द मिलेगे; **विद्यापतिकी कीर्तिलता**मे प्रयुक्त विभक्तियो और परसर्गोंकी बहुत बडी सख्या दिखायी पड़ेगी; भोजपुरी प्रदेशकी शब्दावली, खडीबोलीके प्रयोग प्राप्त होंगे और ज्ञात होगा कि क्रिया-प्रयोग अकेले अवधीके नही हैं।

भाषा सम्बन्धी परीक्षणके निमित्त तटस्थ भाव बनाये रखनेके लिए यह बात ध्यानमें रखना आवश्यक है कि इन काव्योकी जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं, उनमे भाषा सम्बन्धी एकरूपता नहीं पायी जाती। उनके नागरी और कैथी प्रतियोंके लिपिकोंने भाषाके साथ अपनी पूरी मनमानी की है। उनके सामने फारसी लिपिके पाठको पढ़नेकी जो कठिनाई रही है उसके कारण अज्ञानसे उत्पन्न पाठ दोष तो है ही; जान-बूझकर उनका प्रयास ग्रन्थकी भाषाको अपनी भाषाकी ओर खींचने का भी रहा है। ऐसा कदाचित् उन लोगोंने काव्यकी भापाको अपनी बोलचालकी भाषाकी दृष्टिसे अटपटी या अजनबी पाकर ही किया है। लोगोंने उनके इस प्रयासको साधारणीकरण या सरलीकरणकी सज्ञा दी है। पाठ-स्वरूपोकी यह भिन्नता किस सीमातक है, यह **मिरगावती**के एकडला और बीकानेर प्रतियोंके पाठोमे आये शब्दोंकी तुलनासे जाना जा सकता है। उदाहरणके लिए इन दोनों प्रतियोसे कुछ शब्द दिये जा रहे हैं[1]—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
अगम	बहुत
भोरा	सूधा
मन्दिर	महल
साथ	सग
काह	कवन
अजगुत	अचम्भो
राउ	राजा
साजा	रचावा

---

१. ये उदाहरण शिवगोपाल मिश्रने अपनी भूमिकामें दिये हैं। हमने इन्हें वहींसे ग्रहण किया है। इसके लिए हम उनके ऋणी हैं।

इसी प्रकार दोनों प्रतियोंमे सर्वनामके प्रयोगोमे भी भिन्नता देखनेमे आती है। यथा—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
तोहार	तुम्हार
तोह	तै, तुम, तो

दोनों प्रतियोंके क्रिया रूपोंमे भी काफी भेद देखनेमे आता है। यथा—

एकडला प्रति	बीकानेर प्रति
लीतिन्ह	लिहिस
दीतिसि	दिहिस
कहेउ	कहउ
बसेउ	बसउ

ये उदाहरण इस बातके प्रमाण है कि दोनों प्रतियोके लिपिकोंने एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न शब्द रूपो अथवा भाषाको ग्रहण किया है। इनमे कौन-सा रूप लेखककी भाषाका रूप है, यह सुगमता या सरलतासे नही बताया जा सकता। अतः आजका सम्पादक अपने विवेकके अनुसार दो मे से किसी एक पाठको स्वीकारकर दूसरेको गलत मानकर अपना सम्पादन कार्य करता है। मूल भाषाका पूरी तरह समाधान प्रति-परम्पराओपर विचार करनेपर भी नही हो पाता।

भाषाके मूल रूपमे सुरक्षित होनेकी सम्भावना फारसी लिपिमे लिखी प्रतियोमे ही हो सकती है। इसके दो कारण है—(१) मूल प्रतियाँ इसी लिपिमे लिखी गयी थी और आज जो फारसी प्रतियाँ उपलब्ध होती है वे नागरी-कैथी प्रतियोसे अधिक पुरानी हैं। (२) फारसी लिपिमे लिपिकके लिए स्वेच्छा बरतनेकी कम गुंजाइश थी। प्रतिलिपिकारके रूपमे पाठकी कठिनाईका अनुभव करते हुए भी उसे अपनी कल्पना से नये शब्द गढनेका श्रम करनेकी आवश्यकता न थी, उसका काम बिना किसी प्रकारकी माथापच्ची किये ही, जैसा देखा वैसा ही मक्षिका स्थाने मक्षिका नकलकर देना भर था। इन ग्रन्थोके सम्पादक भी यह बात स्वीकार करते है कि फारसी प्रतियाँ नागरी-कैथी प्रतियोसे कही अधिक शुद्ध है। फारसी प्रतियोके आधारपर तैयार किये गये पाठका उपयोग करनेपर ही भाषा सम्बन्धी उहापोहके लिए अपेक्षित तटस्थता सम्भव है।

फारसी प्रतियोसे पाठ उपस्थित करते समय आवश्यक है कि सम्पादकके सम्मुख अपना किसी प्रकारका पूर्व आग्रह न हो। पूर्व आग्रह रहनेपर पाठका शुद्ध रूपान्तर कदापि सम्भव नही है। उसमे वैसी ही भ्रष्टता आ जायगी जैसी कि नागरी-कैथी प्रतियोमे पायी जाती है। यथा—**माता प्रसाद गुप्त**की दृढ धारणा है कि इन काव्योंकी भाषा ठेठ अवधी है। अपनी इस धारणाको लेकर ही उन्होने **पदमावत**का सम्पादन किया है। फलस्वरूप वे फारसी प्रतियोके पाठोंको तटस्थ भावसे नहीं देख सके है। पाठशोध

करते समय उन्होने उसे सर्वत्र अवधीकी दृष्टिसे देखने और अवधी रूप प्रयोग करनेका प्रयत्न किया है। इस कारण भाषा सम्बन्धी शोधके लिए तटस्थ अनुसन्धित्सु उनके संस्करणपर निर्भर नही कर सकता। ऐसी ही बात उनके **मधुमालतीके** सम्बन्धमें भी कही जा सकती है।

भाषापर विचार करनेकी दृष्टिसे प्रेमाख्यानोका कोई भी तटस्थ पाठ अभी सामने नही है। **चन्दायनका** हमारा पाठ फारसी प्रतियोंपर ही आधारित है; उसमे हमारा पूर्व-आग्रह भी नही है। वह सुगमतासे भाषा-शोधका साधन बनाया जा सकता है; पर हम उसे भी इसके लिए पर्याप्त नही समझते। **मिरगावतीका** प्रस्तुत संस्करण भी **चन्दायनकी** तरह ही फारसी प्रतियोपर आधारित है। इसके लिए जिन दो प्रतियोका उपयोग किया गया है, वे दोनो ही—दिल्ली और मनेरशरीफ प्रतियाँ—पाठकी दृष्टिसे प्रायः एक समान है। उनमे पाठका अन्तर नाम मात्र है। अतः उनके आधारपर जो पाठ प्रस्तुत किया गया है, वह मूलके अत्यन्त निकट है, यह हमारा विश्वास है। यह भाषा-शोधकी दृष्टिसे अधिक उपयोगी हो सकता है, ऐसी हम आशा करते हैं।

छन्द-योजना

मिरगावतीमे आदिसे अन्ततक एक ही छन्द-व्यवस्था है। उसमें सात-सात पंक्तियोंका काव्यांश है। प्रत्येक काव्याशमे दो प्रकारके छन्दोंका प्रयोग है। आरम्भकी पॉच पंक्तियॉ एक छन्दमे है और शेष दो दूसरे छन्दमे। यही छन्द-व्यवस्था पूर्ववर्ती काव्य **चन्दायनमे** भी है। परवर्ती काव्य **मधुमालतीमें मंझनने** भी इसी छन्द-व्यवस्था-को अपनाया है। **जायसीने** भी **पदमावतमे** इसी व्यवस्थाको स्वीकार किया है किन्तु उसके काव्याश नौ पंक्तियोंके है और पॉचके स्थानपर सात पक्तियाँ एक छन्दमें, शेष दो दूसरे छन्दमें हैं। छन्द-योजनाकी इस परम्पराको प्रेमाख्यानक काव्योंमे तो अपनाया ही गया है, **तुलसीदासने** भी **रामचरितमानसमे** ग्रहण किया है।

इन काव्योमे प्रयुक्त छन्दोके सम्बन्धमे लोगोंकी सामान्यतः धारणा है कि वे चौपाई और दोहे है। और इसी धारणाके आधार पर लोगोने उनके सम्बन्धमे अपने-अपने विचार प्रकट किये हैं। किन्तु किसीने भी यह बतानेकी आवश्यकता नही समझी कि चौपाई और दोहोसे युक्त काव्याशोकी यह परम्परा कब और कहॉसे आरम्भ हुई। उनकी बातोसे ऐसा झलकता है कि यह छन्द-योजना हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योका ही निजस्व है।

इस प्रकारकी छन्द-योजना अकस्मात् हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके साथ उद्भूत हुई हो, वस्तुतः ऐसी बात नहीं है। उसकी अपनी प्राचीन परम्परा है जो अपभ्रंश काव्योंमें सुगमताके साथ देखी जा सकती है। वहॉ ये काव्याश 'कडवक' नामसे पुकारे गये हैं और अपभ्रशके पिंगल ग्रन्थोंमे उनकी विस्तृत विवेचना है। हमने इसकी ओर **चन्दायनमे** ध्यान आकृष्ट करनेकी चेष्टा की है। उसकी ओर विद्वानोंका ध्यान अधि-काधिक जाना चाहिए। इस दृष्टिसे इस बातको यहॉ दुहराना अनुचित न होगा।

स्वयंभूके कथनानुसार प्रत्येक कडवकमें आठ यमक और अन्तमे एक घत्ता होता है, जिसे ध्रुवा, ध्रुवक अथवा छड़निका भी कहते है। प्रत्येक यमक मे १६–१६ मात्राओवाले दो पद होते है। किन्तु सोलह मात्राओ वाले पदोकी बात केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रशके कवियोने १६ मात्रा वाले पदोके अतिरिक्त पन्द्रह मात्राओवाले पदोका यमकमे प्रयोग प्रचुर मात्रामे किया है। अत कडवकोमे प्रयुक्त यमक साधारणतः तीन रूपोमे पाये जाते है—

१. पद्धडिका—सोलह मात्राओका पद। इसमे अन्तिम चार मात्राओका रूप लघु गुरु लघु (जगण) होता है।

२. वदनक—सोलह मात्राओका पद। इसमे अन्तिम चार मात्राएँ गुरु लघु लघु (भगण) होती है। कही-कही यह दो गुरु रूपम भी पाया जाता है।

३. पारणक—पन्द्रह मात्राओका पद। इसमे अन्तिम तीन मात्राएँ लघु होती है। कही-कही लघु गुरु रूप भी मिलता है।

आठ यमकोवाली बात भी केवल सिद्धान्त रूप है। अपभ्रशके जो काव्य आज उपलब्ध है, उनके कड़वकोमे ६ से लेकर २०–२५ तक यमक पाये जाते है। वे इस बातके द्योतक है कि आठ यमकोवाला नियम कभी भी कठोरताके साथ पालन नही किया गया।

घत्ताके द्विपदी, चतुष्पदी अथवा षट्पदी होनेका विधान है; पर अधिकाशतः घत्ता चतुष्पदी ही पाये जाते है। घत्ताके पद सात मात्राओसे लेकर सत्तरह मात्राओ-वाले बताये गये है। पदोकी व्यवस्थाके अनुसार घत्ताके तीन रूप कहे गये है :

१. सर्वसम—इस घत्तामें चारो पदोंकी मात्राएँ समान होती है। मात्राओकी संख्याके अनुसार सर्वसम घत्ताके नौ रूप होते है।

२. अर्धसम—इस प्रकारके घत्तामे प्रथम दो पदोकी मात्राएँ एक समान और अन्तिम दो पदोकी मात्राएँ पहले दो पदोसे भिन्न किन्तु परस्पर समान होती है। मात्राओकी गणनाके अनुसार अर्धसम घत्ताके ११० रूप कहे गये है।

३. अन्तरसम—इस प्रकारके घत्तामे प्रथम और तृतीय पदोकी और द्वितीय और चतुर्थ पदोकी मात्राएँ समान होती है और वह प्रसादबद्ध होता है। मात्राओके भेदसे इसके भी ११० भेद बताये गये है।

यदि उपर्युक्त तथ्यके प्रकाशमे हिन्दीके प्रेमाख्यानक काव्योको ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह बात प्रत्यक्ष सामने आती है कि इनके रचयिताओके सामने कभी भी १६ मात्राओंकी चौपाई और २३ मात्राओके दोहेका आदर्श नही रहा। जिन लोगोने चौपाई और दोहोको इन काव्योंका छन्द समझा है, उन्हे उनका समाधान करनेमें सदैव कठिनाई रही है। इन काव्योके छन्दोमे चौपाई और दोहोकी मात्राओसे न्यून या अधिक मात्राएँ निरन्तर पायी जाती है। ये इस बातके स्पष्ट संकेत हैं कि उनकी रचना अनिवार्य रूपसे चौपाई और दोहेमे नहीं हुई है। यदि कडवकके सम्बन्धमें कही गयी उपर्युक्त बातोपर ध्यान दिया जाय तो इसका अपने आप सन्तोष-

जनक समाधान हो जाता है। इन सब काव्योकी रचना अपभ्रश के कडवक पद्धतिपर हुई है और उनके रचयिताओने यमक और घत्ताके लिए विभिन्न मात्राओंवाले छन्दोका स्वतन्त्रताके साथ यथेच्छा उपयोग किया है। चन्दायनके परिचयमे हमने यथेष्ठ उदाहरण दिये है जिनसे प्रकट होता है कि उसके यमक चौपाईतक ही सीमित नही है और घत्तेके रूपमे दोहोकी सख्या इनी-गिनी ही है।

जहॉतक मिरगावतीकी बात है, कुतुबनने तो स्पष्ट शब्दोमे कह भी दिया है कि उन्होने चौपाई और दोहेके अतिरिक्त अन्य छन्दोका भी प्रयोग किया है। उनके शब्द हैं—

गाथा दोहा अरिला रचा।
सोरठा चौपाइन्ह कै सजा॥ १३।३

उन्होने यहॉ पॉच छन्दोके नाम लिये है। इनमे दो—चौपाई और अरिल्लका यमकके रूपमे और तीन—गाथा, दोहा और सोरठाका घत्ताके रूपमे ही प्रयोग सम्भव है।

चौपाई और अरिल्ल दोनो ही १६ मात्राओंवाले छन्द हैं। चौपाईके सम्बन्धमे विधान है कि उसके पदोकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होनी चाहिए। इस प्रकार यह अपभ्रंश पिगलका पद्धडिका छन्द है। इसमे तगण (गुरु, गुरु, लघु) का निषेध भी बताया गया है। अरिल्लमे अन्तिम मात्राओके यगण (लघु, गुरु, गुरु) होनेका विधान है। इस दृष्टिसे मिरगावतीके यमकोंका परीक्षण करनेपर ज्ञात होता है कि कुतुबनने चौपाइयोकी अपेक्षा अरिल्लका उपयोग अधिक किया है। किन्तु उनके सभी यमक १६ मात्राओवाले नही हैं। यत्र-तत्र १५ मात्राओंवाले यमक भी देखनेको मिलते है। यथा—

एक बात अब कहउँ रसाल।
रतन मोंति आनों भरि बाल॥ ५१।१
बेगर बेगर सउजहिं साथ।
सारि क बान फोंक ले हाथ॥ २१।१
हरियर बिरिख दीख एक महा।
मानसरोदक तिह तर बहा॥ २३।३
कुँवर संगति कुरंगिनी डरी।
मानसरोदक भीतर परी॥ २३।४
विखम भुअंगम वेनी भये।
मारग वहे सीस केर गहे॥ ६८।५

इनके अतिरिक्त मिरगावतीमे यत्र-तत्र ऐसे भी यमक है जिनमें दोनों पदोंकी मात्राऍ समान नही हैं, या उनमें १५ से कम या १६ से अधिक मात्राएँ हैं। ऐसी पक्तियोंको पाठ दोष कहकर टाला नहीं जा सकता क्योंकि उनमे किसी प्रकारकी कमी या आधिक्य परिलक्षित नहीं होता। इस प्रकारके कुछ उदाहरण है—

राजकुँवर फ़ान बेगर पड़ा। (१५ मात्राएँ)
निरखसि साउज जे र जिय घिरा ॥ (१६ मात्राएँ) २१।२

राउ अकेल मिरिगि है जहाँ। (१५ मात्राएँ)
तीसर अउर न अहै तहाँ ॥ (१४ मात्राएँ) २३।१

तेहि मँह मिरिगी छपानेउ आई। (१९ मात्राएँ)
बहुरि न निकसा गयउ हिराई ॥ (१६ मात्राएँ) २३।५

ढूँढ़े लाग न पायसु चाहा। (१६ मात्राएँ)
बिसरा सबै जो मन मँह आहा ॥ (१७ मात्राएँ) २४।२

सुधि बिसरी बुधि गई हेरानी। (१७ मात्राएँ)
चित मँह गड़ी सो पिरम कहानी ॥ (१७ मात्राएँ) २४।३

खिन खिन पेम अधिक चित चढ़ा। (१५ मात्राएँ)
दुइज चँदरमाँ जनु गहन सो कढा ॥ (१८ मात्राएँ) २४।५

खटरितु देखत अइस गयी। (१४ मात्राएँ)
बहु उपकार कथा बहु भयी ॥ (१५ मात्राएँ) ४५।३

कुतुबनने घत्ताके लिए तीन छन्दो--गाथा, दोहा और सोरठाका नाम लिया है। ये तीनों ही छन्द चतुष्पदी है। गाथा प्राकृत और अपभ्रशका छन्द है। इसके प्रथम चरणमे १२, दूसरेमे १८, तीसरेमे १३ और चौथेमे १५ मात्राएँ होती है। इस प्रकार यह विषम छन्द है। दोहा और सोरठा दोनो ही हिन्दीके बहु प्रचलित छन्द है। दोहेमे क्रमशः १३, ११। १३, ११ और सोरठामे ११, १३। ११, १३ मात्राएँ होती है। इस प्रकार ये अर्धसम घत्ताके छन्द है। दोहेमे दूसरे और चौथे पदोके तुक परस्पर मिलते है, सोरठेमे प्रथम और तृतीय पदो के। दोहेके अन्तमे लघु आवश्यक है।

मिरगावतीके घत्तोके परीक्षणसे ज्ञात होता है कि निम्नलिखित एक घत्तेको छोड़कर सभी घत्ते तुकान्त है—

पदम पत्र बिसाल अछै, गजकुम्भ पयोहरी।
हिरदे बसत मोतिह, साखा बिलोचन यथा ॥ २४०

इस घत्तेके पदोंकी मात्राएँ क्रमशः १३, ११; ११, १२ है; इसके किसी पदमे तुक नही है। इस प्रकार सोरठेके लक्षणोका इसमे सर्वथा अभाव है। इस प्रकार कुतुबनके कथनके बावजूद मिरगावतीमे एक भी सोरठा नही है। इसी प्रकार आरम्भिक १०० घत्तोंका परीक्षण करनेपर उनमे हमे एक भी घत्ता दोहेके लक्षणोसे युक्त नही मिला। हाँ, कुछ घत्ते ऐसे अवश्य है, जिनके प्रथम दो पदोमे १३ और ११ मात्राएँ है, पर उनके तीसरे चौथे पद दोहेके लक्षणकी पूर्ति नही करते। ऐसे घत्तोके कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं—

मात्राएँ	कड़वक
१३,११ । १५,११	४, १२
१३,११ । १६,११	२१, ५५
१३,११ । १७,११	४३
१३,११ । १६,१२	९६
१३,११ । १३,१२	९०
१३,११ । ११,१०	५४

गाथाके लक्षणोकी पूर्ति करनेवाले अर्थात् १२, १८, १३, १५ मात्राओंवाले घत्ता भी मिरगावतीमे एक भी नहीं मिले। हाँ, कुछ घत्तोंको छोड़कर प्राय. सभी घत्ते विषमपदीय है। वे निम्नलिखित रूपोमे मिलते है—

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
११,११ । १५,११	७५	११,१२ । ११,१३	९४
११,१३ । १६,११	९४	११,१६ । १६,११	१०
१२, ८ । १३,१३	६६	१२,११ । १२,१०	६१,७०
१२,११ । १४,११	६५	१२,११ । १६,११	२८,२९,४८
१२,११ । १७,११	५१	१२,१४ । १३,१४	७८
१२,१५ । १२,१२	६१	१२,१५ । १३,१५	४१
१२,१५ । १६,११	४९	१२,१६ । ९,१०	४६
१२,१६ । १४,१०	५४	१३,१० । १५,११	२५
१३,१२ । १२,११	८०	१३,१३ । १३,११	५९
१३,१५ । १२,१५	२३	१३,१५ । १३,१०	४२
१४, ८ । १४,१२	८५	१४,११ । १०,१०	६३
१४,१६ । १४,११	१३	१५,११ । ११,११	८८
१५,११ । १२,१२	५६	१५,११ । १६,११	१४,४४,९२
१५,११ । १७,११	३९	१५,१२ । १३,१२	५०
१५,१२ । १६,१२	२७	१६, ९ । १२,१४	९१
१६, ९ । १६,११	६७	१६,१० । १६,११	९९
१६,१६ । १६,१२	७१	१६,११ । १२,११	९८
१६,११ । १३,११	७३,९५	१६,११ । १३,१३	६
१६,११ । १४,११	११,५३	१६,११ । १४,१५	६२
१६,११ । १५,१०	५७	१६,११ । १५,११	१५,३२,३३ ६८,७६,७९
१६,११ । १६,१०	३१,९७		
१६,११ । १६,१२	५,४७	१६,११ । १७,११	१८,८७
१६,१२ । १२,१५	८६	१६,१२ । १३,१३	१००

मात्राएँ	कड़वक	मात्राएँ	कड़वक
१६,१२ । १६,११	२२,२६,३८	१६,१२ । १६,१३	८३
१६,१२ । १८,११	३६	१६,१३ । १६,११	५२
१७,११ । १३,१४	६०	१७,११ । १५,११	८
१७,११ । १६,११	१९,२०,३०,	१७,१२ । १३,११	९
	४५	१७,१२ । १५,११	७
१७,१२ । १७,१०	८४	१७,१४ । १३,१६	८२
१७,१५ । १८,१२	१६	१८,११ । १७,११	६४

घत्तोंके इसी प्रकारके कुछ अन्य रूप शेष कड़वकोके विश्लेषणसे मिले तो आश्चर्य नही। इन रूपो में कुछ पाठ-दोष जनित हो सकते है किन्तु सबको पाठ-दोष जनित कहकर टाला नहीं जा सकता। घत्ताके इन रूपोपर विचार करना ही होगा। **चन्दायनका** सम्पादन करते समय हमे उसमें भी ऐसे घत्ते मिले थे जिनके चारों पदोंकी मात्राओमे भिन्नता है। ऐसा एक घत्ता हमने उसके परिचयमे उधृत भी किया है। वहाँ इस ढंगके घत्ते अपवाद स्वरूप है; यहाँ उनका बाहुल्य है। हो सकता है **कुतुबनने** इन विषम मात्राओंवाले घत्तोके लिए ही गाथा शब्दका व्यवहार किया हो।

यदि उनकी बातोंसे हटकर घत्तोका विश्लेषण किया जाय तो यत्र-तत्र अर्ध-सम अथवा अन्तर-सम घत्ते देखनेको मिल जाते है। प्रथम सौ घत्तोमे केवल एक घत्ता अर्ध-सम है। उसकी मात्राएँ हैं—१४, १४ । ११, ११ (कड़वक ९३)। अन्तरसम घत्ताके दो रूप अबतक हम ढूँढ पाये हैं। वे हैं—

१२, ११। १२, ११	कड़वक ३५
१६, ११। १६, ११	कडवक २४, ४०, ७२, ७४, ७७, ८१, ८९।

छन्दोंके सम्बन्धमे इस प्रकारकी जो स्वच्छन्दता **मिरगावतीमें** देखनेमे आती है वह आश्चर्यजनक है। उन्हे देखकर यही लगता है कि **कुतुबनने** यद्यपि कतिपय छन्दोंके प्रयोगकी बात कही है, उन्हे छन्द-शास्त्रके नियमोंमे बँधकर चलना अभीष्ट न था।

काव्य-स्वरूप

मिरगावतीका आरम्भ ईश्वरकी स्तुतिसे होता है। ईश्वरकी स्तुतिके बाद क्रमशः पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोका उल्लेख, गुरुकी स्तुति, शाहे-वक्तकी प्रशंसा और रचनाका परिचय है। तदनन्तर कथाका आरम्भ होता है। **मौलाना दाऊद** रचित पूर्ववर्ती प्रेमाख्यानक काव्य **चन्दायनका** भी ठीक यही स्वरूप है। उसमे भी आरम्भमे ईश्वर स्तुति, पैगम्बरकी वन्दना, चार यारोंका उल्लेख, शाहे-वक्तकी प्रशंसा, गुरु-स्तुति, आश्रयदाताका परिचय और ग्रन्थ परिचय है। परवर्ती **मलिक मुहम्मद जायसी** रचित **पदमावत** और **मंझन** कृत **मधुमालतीके** भी आरम्भमे ये सभी बातें लगभग इसी क्रमसे पायी जाती हैं। यों कहना चाहिये कि मुसलमान कवियोके प्रेमाख्यानक

काव्योका जो यह स्वरूप चन्दायनसे आरम्भ हुआ वह अन्ततक कायम रहा। सभीने उसे आदर्श स्वरूप ग्रहण किया।

फ़ारसी मसनवियोमे भी आरम्भमे अल्लाह (ईश्वर) और रसूलकी वन्दना, मेराजका उल्लेख, समसामयिक शासक अथवा किसी अन्य महापुरुषकी प्रशसा पायी जाती है, तदनन्तर रचनाके उद्देश्यपर प्रकाश डालते हुए कवि मूल विषयपर आता है, हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यो और फ़ारसी मसनवियोके स्वरूपमें जो यह समानता दिखाई देती है, उसे देखकर रामचन्द्र शुक्लने अपना अभिमत प्रकट किया था कि—**इनकी (हिन्दी प्रेमाख्यानोकी) रचना भारतीय चरित काव्योंकी सर्गबद्ध शैलीपर न होकर फारसी मसनवियोके ढंगपर हुई है, जिसमें कथा सर्गों या अध्यायोंमें विस्तारके हिसाबसे विभक्त नहीं होतीं, बराबर चलती हैं, केवल स्थान-स्थानपर घटनाओं या प्रसंगोंका उल्लेख शीर्षक रूपमें रहता है**। उनके इस मतको बिना किसी उहापोहके सत्य और प्रमाण मान लिया गया है; और इन प्रेमाख्यानोंपर लिखनेवाले विद्वानों और अनुसन्धित्सुओ द्वारा ये वाक्य प्रायः ऑख मूँदकर दुहरा दिये जाते हैं।

वस्तुतः मसनवी फ़ारसी साहित्यके किसी काव्य-शैलीका नाम नहीं है, वह काव्य-रूप मात्र है। इसमें रमले-मुसम्मने-महधूम कहा जानेवाला छन्द प्रयुक्त होता है, जिसमें बैत (पद) फ़ायलातुनके वजनपर होता है। फ़ायलातुनको छ बार दुहराते हैं; प्रत्येक मिसरेके अन्तमें फ़ायलातका वजन होता है। दो मिसरोंके तुक परस्पर मिलते हैं।[१] इसमे केवल आख्यान या लम्बे क्रमबद्ध काव्य ही नही, अन्य प्रकारकी भी रचनाएँ हुई हैं। इस देशमे भी बाबर, हुमायूँ, अकबरके समयमे मसनवी छन्द विशेष ही माना-समझा जाता था। फरिश्ताने अपने इतिहासके प्रथम खण्डमे हुमायूँका एक पत्र उधृत किया है जो इसी छन्दमे है। उसे उसने अपनी कन्दहार विजयोपरान्त बैरम खाँको लिखा था और विजयके आनन्दका वर्णन किया है। अकबरके लिखे मसनवी छन्दोंके कुछ नमूने रामपुरके पुस्तकालयमे सुरक्षित है। उनमेसे दोको अब्दुल गनीने अपनी पुस्तकमे उद्धृत किया है। एकमे साकीकी प्रशसा है, दूसरेमे बसन्त ऋतुका वर्णन है।[२]

पुनः हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योके प्रसंगमे जिस ढंगसे मसनवीकी चर्चा की जाती है, उससे ऐसा भासित होता है कि वह प्रेम-काव्य है और उसमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे सूफी मतका प्रचार किया गया है। किन्तु यह धारणा नितान्त भ्रामक है। यदि अमीर खुसरोकी मसनवियोपर ध्यान दिया जाय तो इस भ्रान्तिका स्वतः निराकरण हो जाता है।

मसनवीकी जो लाक्षणिक परिभाषा है उसके अन्तर्गत हिन्दीके प्रेमाख्यान काव्य नहीं आते, यह उपर्युक्त कथनसे स्पष्ट हो जाता है। यदि उन समानताओंपर विचार किया जाय, जिन्हें देखकर हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके फ़ारसी मसनवियोंका

१ ब्राउन, लिटरेरी हिस्ट्री आव परशिया, खण्ड २, पृ० १८–२४।

२. अब्दुल गनी, अ हिस्ट्री आव परशियन लैंग्युएज एण्ड लिटरेचर ऐट द मुगल कोर्ट, पृ० २०७-२०८।

अनुकरण होनेका भ्रम होता है तो, जैसा कि हमने चन्दायनका परिचय देते हुए कहा है, स्पष्ट ज्ञात होगा कि ये विशेषताएँ अरबी-फारसी मसनवियोकी एकमात्र अपनी नही है। भारतीय काव्य-परम्परा इन बातोंसे बहुत दिनो पहलेसे परिचित रहा है। अरबी-फारसी मसनवियो और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योकी उपर्युक्त लगभग सभी बाते जैन अपभ्रश काव्योंमे पायी जाती है। प्रायः सभी जैन काव्योका आरम्भ जिनकी वन्दनासे होता है। किन्ही-किन्ही काव्योमे जिनकी वन्दनाके बाद सरस्वतीकी भी वन्दना होती है। तदनन्दर समकालिक शासकका उल्लेख, कविका आत्म-परिचय, आश्रयदाताकी चर्चा, रचनाका उद्देश्य आदि रहता है। उदाहरणस्वरूप **पुष्पदन्त** कृत **महापुराण**, **स्वयंभू** कृत **पउमचरित**, **श्रीधर** कृत **पासनाह चरिउ**, **लक्खन** कृत **जिणदत्त चरिउ** आदि महाकाव्योको देखा जा सकता है।

सस्कृत काव्योकी तरह सर्गबद्ध न होनेके कारण भी हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योके सम्बन्धमे धारणा बना ली गयी है कि वे फारसी मसनवियोके अनुकरणपर रचे गये है, जहाँ सर्ग जैसा कोई विभाजन नही है। ऐसी धारणा बनाते समय अपभ्रश काव्यों-को सर्वथा भुला दिया गया है। यदि उन्हे देखा जाय तो ज्ञात होगा कि उसमे सर्गहीन काव्य भरे पड़े है।

फारसी मसनवियोसे समता रखनेवाली हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योकी अन्य जिस विशेषताओकी ओर लोगोंका ध्यान गया है, वह है उनमे पायी जानेवाली प्रसंगोंकी सुर्खियाँ (शीर्षक)। खुसरो, जामी, फैजी आदिकी मसनवियोंके प्रसग शीर्षकोंकी तरह **चन्दायन**, **पदमावत** आदि प्रेमाख्यानक काव्योकी अनेक प्रतियोमे भी शीर्षक देखने-मे आते हैं। पर इस प्रकारके शीर्षक अपभ्रश काव्योमे भी पाये जाते है। जहाँतक **मिरगावती**का सम्बन्ध है, इसकी तीन प्रमुख प्रतियो—दिल्ली, मनेरशरीफ और बीकानेर—मे प्रसंग-शीर्षक जैसी कोई वस्तु है ही नहीं। सम्भवत· इस ढगके शीर्षक काशी और चौखम्भा प्रतिमे भी नही है। एकडला प्रतिमे कुछ कडवकोके ऊपर शीर्षक प्राप्त होते हैं। अकेले इसके आधारपर अनुमान करना कठिन है कि कविकी मूल प्रतिमे इस प्रकारके शीर्षक रहे होगे। यदि रहे भी हो तो उससे स्थितिमें अन्तर नहीं पडता।

फारसी मसनवियोके साथ हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योका किसी प्रकारका सम्बन्ध जोडनेसे पूर्व यह भी देखना उचित होगा कि अपने इन बाह्य उपकरणोके अतिरिक्त, जो उनके अपने निजस्व नही है और अपभ्रश काव्योमे भी समान रूपसे उपलब्ध हैं, आन्तरिक सामग्रीमे वे कितने अभारतीय है। जहाँतक छन्द योजनाका सम्बन्ध है, वह पूर्णतः भारतीय है, यह हम ऊपर देख चुके हैं। जहाँतक कथावस्तु और कथा सम्बन्धी अभिप्रायों और रूढियोका सम्बन्ध है, उनमे भी कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिन्हें अभारतीय कहा जा सके, यह हम आगे देखेगे।

अतः अन्त और बाह्य दोनो दृष्टियोंसे हिन्दी प्रेमाख्यानोंको फारसी मसनवियों-के साथ नही रखा जा सकता। वे सर्वांशमे भारतीय है। उनके सम्बन्धमे केवल इतना

ही कहा जा सकता है कि उनके रचयिता एक ऐसे धर्मको माननेवाले थे जिसका विकास भारतके बाहर हुआ था। किन्तु अभारतीय धर्मके माननेवाले होते हुए भी इन कवियोंकी भावनाएँ भारतीय चिन्तन-धारासे अनुप्राणित रही हैं, यह काव्यमें व्यक्त विचारोंसे स्पष्ट है।

कथा-वस्तु

मिरगावतीकी कथाका रूप इस प्रकार है—

१—एक अत्यन्त प्रतापी और धार्मिक राजा था। उसके पास पुत्रके अतिरिक्त सब कुछ था। ईश्वरसे उसने पुत्रकी याचना की और भण्डार खोलकर दान देने लगा। ईश्वरने उसकी प्रार्थना स्वीकार की, उसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ पण्डित और ज्योतिषी बुलाये गये। उनसे ग्रह-नक्षत्र देखकर नाम रखनेको कहा गया। तुला राशिकी गणना कर उन्होने उसका नाम राजकुँवर रखा और बताया कि वह बहुत बड़ा राजा होगा और उसके समान दूसरा कोई न होगा। किन्तु उसे "तिय वियोग कर कछु दुःख होई।" राजाने धाई बुलाकर उसके लालन-पालन करनेकी आज्ञा दी। राजकुँवर एक वर्षमें बोलने लगा। जब वह पाँच वर्षका हुआ तो राजाने पण्डितोंसे उसे सारी विद्याएँ सिखानेको कहा। दस वर्षमें ही वह पण्डित और हँगुरि खेलनेमें दक्ष हो गया। (कडवक १५–१९)

२—राजकुँवरको आखेट विशेष प्रिय था। एक दिन वह बहुतसे रावतोंको साथ लेकर जगलमे आखेट खेलने गया। आखेट खेलते-खेलते वह साथियोंसे अलग हो गया। वहाँ उसे एक सतरगी मृगी दिखायी पड़ी। वह आश्चर्य चकित रह गया। सोचा—यह आभूषण धारण करनेवाली जन्म-जात मृगी नहीं हो सकती। उसने उसे जीवित पकड़नेका निश्चय किया और उसके पीछे अपना घोडा छोड़ दिया। पीछा करते-करते वह सात योजनतक चला गया। तब उसे एक हरे वृक्षके नीचे मानसरोवर दिखायी पड़ा। राजकुँवरके डरसे मृगी उस सरोवरमे कूद पड़ी और अन्तर्धान हो गयी। राजकुँवर भी अपने कपड़े उतारकर सरोवरमे घुस गया और मृगीको ढूँढ़ने लगा। खोजते-खोजते जब वह थक गया और वह न मिली तब वह बाहर निकला और रोने लगा। उसे अपने तन-बदनकी सुधि जाती रही। वह घर-द्वार लोग कुटुम्ब सबको बिसार बैठा। (कड़वक २०–२५)

जब साथियोंको राजकुमार दिखायी न पडा तो वे उसे ढूँढ़ने लगे। जो मिलता उससे पूछते जाते। लोगोंने बताया कि वह एक मृगीके पीछे गया है। ढूँढते-ढूँढ़ते वे लोग भी वृक्षके नीचे मानसरोवरके पास पहुँचे। वहाँ उन्हें राजकुँवर बैठा दिखायी पड़ा। वे लोग घोड़ेसे उतरकर उसके निकट आये और उससे उसका हाल पूछने लगे। पर उसने उनके प्रश्नोंका कोई उत्तर नहीं दिया। जब उसके साथियोंने उसकी इच्छा-पूर्तिका वचन दिया तो उसने सतरगी मृगीकी बात कह सुनायी। साथियोंने कहा

ऐसी कोई मृगी नहीं हो सकती। वह इन्द्रकी अप्सरा रही होगी। तुम घर चलो। पर उसने जानेसे इनकार कर दिया। (कडवक २६–३०)

तब सब चिन्तित हुए और आपसमें परामर्श करने लगे। उन्होंने राजकुँवरको बहुत समझाया पर उसकी समझमें कुछ भी नही आया। उसने उनसे मृगीको ढूँढ़नेको कहा। उसके कहनेपर उन लोगोने सरोवरमें घुस-पैठकर देखा पर वहाँ कुछ भी न था। तब फिर समझाया। पर राजकुँवरकी समझमें कोई बात आयी ही नहीं। निदान उन लोगोंने पत्र लिखकर इसकी सूचना राजाको दी। राजाने सुना; वह बहुत दुःखी हुआ। नगरके सभी लोगोको लेकर राजकुँवरके पास आया। राजाने राजकुँवरसे जो कुछ उसने देखा था सब बतानेको कहा। राजकुँवर सब बता गया। उसकी बाते सुनकर राजाने कहा यह सब बाते मूर्खताकी है। पानीमे मृगी नही खोयी। तुमने स्वप्नको प्रत्यक्ष समझ लिया है। घर चलो नही तो मै भी तुम्हारे साथ मर जाऊँगा। राजाने राजकुँवरको हर तरफ़से मनाया। (कड़वक ३१-३५)

राजाकी बाते सुनकर राजकुँवरने उससे अनुरोध किया कि मुझे यही रहने दे। आपके साथ जानेमे मुझे दुःख ही होगा। मेरा हृदय विदीर्ण हो जायेगा और मैं मर जाऊँगा। मेरी आपसे एक ही प्रार्थना है कि यहाँ एक भवन बनवा दे। राजाने तत्काल भवन बनानेका आदेश दिया और सतखण्डा प्रासाद बनकर तैयार हो गया जिसमें चित्र भी उकेरे गये। उसमे राजकुँवर मृगीका स्मरण करते हुए एक वर्ष रहा। (कडवक ३६-४५)

एक दिन उसने बवण्डर उठते देखा। फिर उसे इन्द्रकी अप्सराएँ जैसी कोई चीज दिखाई पड़ी और वह देखते ही मूर्च्छित हो गया। फिर वह सँभलकर उठा तो देखा कि वे सब अप्सराएँ सरोवरमे क्रीडा कर रही है। वे सख्यामें सात थीं और एक ही पिताकी जन्मी-सी जान पडती थीं। उन सबका रंग एक-सा था। किन्तु उनमे भी एक अपूर्व थी। वह राजकुँवरके मनमें बस गयी। (कडवक ४६)

खेलते-खेलते सहेलियोकी दृष्टि-भवनपर गयी और उसे देखकर उन्हे आश्चर्य हुआ। वे सब आपसमे कहने लगी कि हम यहाँ वर्षमे एक बार आती हैं। पर अभी-तक हमें यहाँ किसी मनुष्यके होनेकी आहट नही मिली थी। सो यह क्या है? किसीने कोई प्रपच तो नहीं रचा है? हम सबको सचेत रहना चाहिए। सो चलो चले। कही कुछ हो गया तो क्या किया जायेगा? उन सबमे जो सबसे अधिक सुन्दरी थी, उसने कहा—भला मनुष्य हमे क्या पायेगा। हम जहाँ चाहे उड़ जायँ। फिर मनुष्य जैसा उत्तम कोई नही है। यह तो हमी लोग है जो जब जैसा चाहते हैं वेश बना लेते है। हमे भला कोई क्या पायेगा। इस तरह वे बाते करती सरोवरसे बाहर निकलीं और अपने कपड़े पहनने और माँग सँवारने लगी। राजकुँवर उनकी ओर लपका और चाहा कि उनके पावोपर गिर पड़े। पर उसको आते देख वे सातो उड चलीं। (कड़वक ४७–४९)

उनके उड जानेपर राजकुँवर मूर्च्छित हो गया। धाईने पास आकर देखा और अमृत छिडककर उसे होशमे ले आयी। राजकुँवरने उसे सातो अप्सराओंके आनेकी बात बतायी और उनमे जो सर्वसुन्दरी थी उसका रूप वर्णन किया। (यहाँ उसका आद्यन्त नख-शिख वर्णन है)। सुनकर धाईने कहा कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है। तुम तनिक भी चिन्ता न करो। जैसा मै कहती हूँ करो। एक बुधवन्त गुनीसे जो बात मैंने सुनी है वह तुमको बताती हूँ। वह मिरगावती रानी है जो यहाँ निर्जला एकादशी करने आयी थी। जिस जगह वह अन्तर्ध्यान हुई वहाँ वह हर पर्वको आती है। वह उसके हाथ आयेगी जो किसी प्रकार उसका चीर पा ले। (कड़वक ५०-७८)

धाईकी बात उसके मनमे बस गयी। उसने सरोवरके किनारे एक कूप बनवाया और निर्जला एकादशीके दिन उसमे जा छिपा। मिरगावतीने निर्जला एकादशीके दिन अपनी सखियोसे सरोवरमे स्नान करने चलनेको कहा। पर उन्हे यह नहीं बताया कि उसका मन राजकुँवरपर अनुरक्त है। निदान सब साथ हो लीं और सरोवरके किनारे आयी। अपने वस्त्राभूषण उतारकर वे सरोवरमे घुस गयीं और क्रीड़ा करने लगी। ईश्वरका स्मरणकर राजकुँवर बाहर निकला और जाकर मिरगावतीका चीर उठा लिया। जैसे ही उन्हे आहट मिली कि कोई चीर लेने आया है, वे सब अपना-अपना वस्त्र लेने भागीं। सबने तो अपना-अपना वस्त्र उठा लिया पर मिरगावतीको अपना वस्त्र नहीं मिला। यह देखकर सखियाँ बोली—हमने तो तुमसे उसी दिन कहा था पर तुमने कहा कि कोई नहीं है। इतना कहकर वे सब उड गयीं। (कडवक ७९-८२)

३—जब मिरगावतीको अपना चीर नहीं मिला तो वह फिर पानीमें घुस गयी। देखा तीरपर राजकुँवर खडा है। उसे देखकर बोली— तुमने यह अच्छा काम नहीं किया। मुझे अपनी सखियोसे बिछुड़ा दिया। कुँवरने उत्तर दिया—तुम्हारी चाहमें मेरा यह दूसरा वर्ष है। जिस दिन तुम मृगी बनकर आयी थी उसी दिनसे मैं तुम्हारे लिये पागल हो रहा हूँ। यहाँ रहते अब यह तीसरा वर्ष हो रहा है। और वह अपनी सारी कथा सुना गया। यह सुनकर मिरगावतीने बताया कि मैने भी तुम्हारे लिए ही मृगीका रूप धारण किया था। दुबारा भी तुम्हारे लिए ही आयी थी और सखियोको बातोंमे भुलावा दिया था। फिर एकादशीके बहाने यहाँ आयी। तुमने मेरा चीर छिपा कर सहेलियोका साथ छुड़ा दिया। मेरा चीर दे दो। जो तुम कहोगे, मै करूँगी।

राजकुँवरने कहा—धाईने मुझे सब बात बता दी है। सो तुम्हारा चीर तो नहीं दूँगा। हाँ, यदि दूसरा चीर चाहो तो एक क्या मैं सात सौ ला दूँ। यह सुनकर मिरगावती ऊपरसे तो बहुत बिगडी और धाईको गालियाँ देने लगी पर मन-ही-मन प्रसन्न हुई कि उसने उसे उचित उपाय बताया। अन्तमे हारकर बोली—अच्छा अपना ही चीर लाकर दो। उसे पहनकर वह बाहर आयी। फिर दोनों भवनमें आये और सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे। राजकुँवरने मिरगावतीके गलेमे हाथ डालकर उरकी ओर हाथ बढाया। तब मिरगावतीने कहा—जरा सँभालो। यदि मेरी मानो तो एक बात कहूँ। तुम राजपुत्र हो और मैं भी कुलवती हूँ। मैं तुम्हारी हूँ, इसमें सन्देह नहीं

पर सहेलियोको आने दो। विवाहके पश्चात् रस-बात करना। राजकुँवरने उसकी बात मान ली और दोनों परस्पर प्रतिज्ञाबद्ध हुए। राजकुँवरने पिताको अपनी आकांक्षा पूरी होनेकी सूचना दी। (कडवक ८३-९२)

पत्र पाकर राजा प्रसन्न हुआ और साज-बाजके साथ राजकुँवरसे मिलने आया और पुत्रवधूसे मिलकर बहुत कुछ न्योछावरमे बॉटा। पश्चात् दो-चार दिन रहकर अपने नगर लौट गया। (कडवक ९३-९६)

४—राजकुँवर और मिरगावती सारसके जोड़ेके समान एक जगह रह कर हँसते खेलते रहे। एक दिन मिरगावतीके मनमे आया कि किसी प्रकार चीर मिल जाय तो मैं यहाँसे उड़ जाऊँ। अगर राजकुँवरको मेरी चाह होगी तो वह ढूँढता हुआ मेरे नगर आयेगा।

इसी बीच एक दिन राजाको राजकुँवरकी याद आयी और उसने उसे बुलानेके लिए दूत भेजा। पिताका सन्देश पाते ही शकुन-अपशकुनका विचार न कर राजकुँवर चल पडा। इधर मिरगावतीने धाईको मीठी बातोमे फुसला लिया और कामके बहाने अन्यत्र भेज दिया। जब तक धाई लौटे-लौटे, उसने अपना चीर ढूँढ़ निकाला और पहन कर उड गयी। धाई लौट कर आयी तो उसे मिरगावती नही दिखाई पडी। वह उसे इधर-उधर ढूँढने लगी। बाहर आकर भवनके ऊपर देखा तो वह वहाँ बैठी हुई थी। धाई उससे लौट आनेके लिए अनुनय-विनय करने लगी। मिरगावतीने कहा—राजकुँवर आये तो कह देना कि निसंदिग्ध रूपसे मेरा मन उनमे अनुरक्त है किन्तु जो वस्तु मुफ्त प्राप्त होती है, लोग उसका मूल्य नही ऑकते। इसलिए मै उड कर जा रही हूँ। कुँवरसे कहना कि वह तत्काल मेरे पास आये। कंचननगर मेरा स्थान है और मेरे पिताका नाम रूपमुरारि है। इतना कह कर मिरगावती उड गयी। (कड़वक ९७–१०१)

५—उधर हँसते हुए राजकुँवरके हृदयमे अचानक खलबली मची और वह पितासे बिदा लेकर अपने भवन लौटा। कुँवरको आया देख धाई रोने चिल्लाने लगी और मिरगावतीके उड़ जानेका हाल कह सुनाया। सुनते ही राजकुँवर पछाड खाकर गिर पडा और आत्यहत्याकी चेष्टा करने लगा। लोगोने उसे समझानेकी चेष्टा की और किसी-किसी तरह उसे आत्महत्या करनेसे रोका। वह रोता विलाप करता रहा। उसकी स्थिति पागलोकी-सी हो गयी। अन्ततोगत्वा वह योगीका साज मँगा कर मिरगावतीकी खोजमे निकल पडा। बिना किसी डर भयके रोता बिसूरता किंगरी बजाता चलता गया और जाकर एक नगरमे पहुँचा। वहाँ रुक कर उसने मिरगावतीकी टोह लेनेकी चेष्टाकी। वह न कही जाता और न आता, रोता और प्रेमकी किंगरी बजाता रहता। लोगोने जाकर राजासे कहा कि योगीके वेशमे एक राजकुमार आया हुआ है। राजाको उसे देखनेकी उत्सुकता हुई। आकर उसे देखा, बाते की। राजकुँवरने अपनी प्रेम-गाथा कह सुनायी। उसकी बाते सुनकर राजाको दया आयी। उसने उसे समझानेकी चेष्टा की, पद्मिनी देनेकी बात कही किन्तु उसने कुछ भी सुनने-लेनेसे इनकार किया

और बोला——किसी ऐसे आदमीको ढूँढ़ कर बुला दीजिये जा कचनपुरका रास्ता जानता हो। इतनी ही दया काफी है। पता लगा कि उस नगरमें एक जंगम है जो देश-विदेश बहुत घूमा हुआ है। वह बुलाया गया। आकर उसने कंचनपुरके मार्गकी दुर्गमताकी बात कही। पर उससे राजकुमार तनिक भी विचलित नहीं हुआ। निदान जंगम उसे मार्ग बताने चला और सागर-तट पर आकर कहा कि कंचनपुरको यही मार्ग जाता है। वहाँ एक नाव थी। उसी पर सवार होकर राजकुँवर चल पड़ा। (कड़वक १०२-१२०)

६——एक मास तक समुद्रके लहरोंके बीच रहनेके बाद उसे किनारा दिखाई पडा। किनारे गिरि-पर्वत पर उसे दो आदमी दिखाई पड़े। उन्होंने बताया कि जिस मार्गसे तुम आये, उसी मार्गसे हम भी आये हैं। पर्वत देखकर हमने समझा कि हम किनारे पहुँच गये हैं पर यहाँ तो लोगोके उतरनेका कोई घाट ही नहीं है। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे साथ अनेक नावें थीं पर सभी डूब गयीं। खोजा पर उनका कहीं पता नहीं लगा। एक आश्चर्य यह भी देखा कि एक असाधारण साँप यहाँ है जो नित्य एक आदमी खाता है। हमारे नावमे बहुतसे आदमी थे। उन सबको वह खा गया। अब हम केवल दो ही व्यक्ति बच रहे हैं।

उनकी बात समाप्त हो भी न पायी थी कि सर्प आ पहुँचा और उनमेंसे एकको पकड ले गया। दुबारा आकर सर्प दूसरे आदमीको भी ले गया। यह देखकर राजकुँवर रोने और ईश्वरसे प्रार्थना करने लगा। इतनेमे फिर सर्प आया और राजकुँवर अपने जीवनके प्रति निराश होने लगा। तभी एक दूसरा सर्प दिखाई पड़ा। दोनों सर्प आपसमें लडने लगे और लहरके साथ बह गये। नहरके साथ नाव भी किनारे आ लगी और कुँवरके जानमे जान आयी। (कड़वक १२१–१२६)

७——नावसे उतर कर राजकुँवर चला। मार्गमें उसे एक आम्राराम दिखाई पड़ा। उसके भीतर जाकर वह बैठ गया। फिर घूम फिर कर उसे देखने लगा। उसे एक भवन दिखाई पड़ा। उत्सुकतावश वह उसके भीतर घुसा। वहाँ उसे पलंग पर बैठी हुई एक राजकुमारी दिखाई पडी। वह रो रही थी। राजकुँवरने उससे रोनेका कारण पूछा तो उसने बताया——उस नगरका नाम सुबुद्धया है। वहाँके राजा अयोध्या के सुप्रसिद्ध राघव वंशके हैं। उनका नाम देवराय है। मै उसकी कन्या हूँ। मेरा नाम रूपमनि (रूपमणि) (बीकानेर और चौखम्भा प्रतिके अनुसार——रुकमिनि) है। यहाँ एक राक्षस रहता है जो वर्षमें एक आदमी लेता है। इस वर्ष मेरी बारी आयी है। इसलिए उन्होंने मुझे दिया है।[1] आप यहाँसे चले जाइये।

---

१. शिवगोपाल मिश्रने सम्मेलन संस्करणमें कथा-सार देते हुए रूपमनिके एक वर्ष पूर्व राक्षस द्वारा हर लानेकी बात कही है। एकडला प्रतिमें उन्हें वह कड़वक उपलब्ध था जिसमें स्पष्ट कहा गया है——राकस एक रहत है पंथा, बरिस देवस एक लेइ। यहि र बरिस ओसरी हम आई, तो उन्ह हम कँह देइ॥ (कडवक ९, पृष्ठ ९६)। फिर क्यों और किस आधार पर उन्होंने ऐसा कहा है, कहना कठिन है।

यह सुनकर राजकुँवरने कहा कि मै तुम्हे छोडकर नही जा सकता। आज मै उस राक्षसको किसी-न-किसी उपायसे अवश्य मार डालूँगा। तब उस राजकुमारीने कहा—यदि नही जाते हो तो मेरे पास आकर बैठो। राजकुँवरने कहा—मै वचनबद्ध हूँ, इस कारण किसी स्त्रीके पास नहीं बैठता। जीवित रहते इस प्रतिज्ञाका पूर्णतः पालन करूँगा।[१]

यह बाते हो ही रही थी कि राक्षस आ पहुँचा। उसके सात सीस और चौदह भूदण्ड थे। उसे देख कर रूपमणि घबराई पर राजकुँवर ने उसे आश्वस्त किया और अपने चक्रसे राक्षसको मार डाला। यह देखकर राजकुमारी मूर्छित हो गयी। राजकुँवर उसे होशमे ले आया। राजकुमारी उसकी वीरता पर मोहित हो गयी और उससे अपने निकट बैठनेका अनुरोध करने लगी। राजकुमार भी, यह सोच कर कि मन शुद्ध हो तो निकट बैठनेमे कोई हर्ज नही, जाकर उसके सेज पर बैठ गया।

तब राजकुमारीने कहा—तुम योगी नही जान पडते। शपथ देकर वह उसका नाम-धाम पूछने लगी। राजकुँवरने बताया—मै सूर्यवशी प्रतापी राजा गनपतदेवका पुत्र हूँ, चन्द्रागिरि उनका विशाल गढ है। कचनपुर निवासिनी मिरगावती रानीको देख कर अपनेको भूल बैठा हूँ। तब राजकुमारीने पूछा—तुमने उसे कहाँ देखा? उत्तरमे राजकुँवर आखेटके समय मृगी देखनेसे लेकर चीर-हरणके पश्चात पाँच मास साथ रहकर मिरगावतीके उड़ जाने तककी सारी घटना सुना गया। (कडवक १२७–१३८)

८—प्रातःकाल होने पर लोग रूपमणिकी खोजमे निकले। उसकी हड्डियोको एकत्र कर चिता पर जलानेके निमित्त रोता हुआ राजा आया। यहाँ आकर उसने रूपमणिको जीवित पाया और उसके पास एक अन्य व्यक्तिको बैठा देखा। राजाको देख कर रूपमणि घबराई और तत्काल सेजसे उठ खड़ी हुई। राजाने उसे गलेसे लगाया और पूछा कि वह किस प्रकार बच निकली। तब राजकुमारीने राजकुँवरको दिखा कर सारी बात कह सुनाई और कहा कि यह कुलमें हमसे उच्च है। इनके पिता सूर्यवंशी चन्द्रागिरिपति हैं।

यह सुनकर देवरायने सोचा कि इसे यहाँसे जाने न दूँगा। मेरे कोई पुत्र नही है अतः बेटीके बदले उसे प्राप्त करूँगा। यह सोच कर वह राजकुँवरसे बोला—योगी वेशका परित्याग करो। मै तुम्हे अपना आधा राज-पाट देकर अपनी बेटी ब्याह दूँगा। राजकुँवरने उत्तर दिया—मैं योगी हूँ। राज-पाटसे मुझे क्या प्रयोजन! राजाने उसे फुसलानेकी बहुत चेष्टा की।, जब वह किसी प्रकार न माना तो उसे बन्दीगृहमे डाल देनेकी धमकी दी। धमकीके बाद राजकुँवर कुछ सोच-समझ कर राजाकी बात मानने-

---

१. इस स्थल पर शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि रूपमनिके गिडगिडाने पर राजकुँवर उसकी सेज पर बैठ गया (सम्मेलन सस्करण, पृ० १९)। किन्तु यह गलत है, ऐसी बात राक्षस-वधके पश्चात हुई, पूर्व नहीं।

को तैयार हो गया। योगीका वेश उतार कर उसने श्वेतवस्त्र धारण किया। तब राजाने उसे हाथी पर सवार कराया।

नगरके लोग उसे देखने आये और उस पर फूल बरसाये। घर पर सब लोगोंने रूपमणिके पुनर्जीवन पर प्रसन्नता प्रकट किया और न्योछावर बाँटा। (कडवक १३९–१४६)

९—राजा प्रसन्न हुआ, पर राजकुँवर ऊपरसे तो हँसता पर मनमे दुःखी रहने लगा। राजाने उसके गुणोंकी परीक्षा लेनेका निश्चय किया। फलतः उसने दिखाया कि वह सभी तरहका जुआ खेलनेमे दक्ष है; उसे हेगुरि और आखेट खेलना भली प्रकार आता है; वह सब विद्याओंसे भी परिचित है। इस प्रकार उसके सब प्रकारसे कुलवन्त होनेके प्रति आश्वस्त होकर राजाने विवाहका निश्चय किया। उधर राजकुँवर भागनेका उपाय सोचने लगा। वह अपने मनकी बात किसीसे न कहता और योगी-जगमकी टोह लेता रहता। (कडवक १४७-१५२)

विवाहका आयोजन हुआ, लोगोंने ज्योनार किया और कुल-रीतिके अनुसार विवाह-कार्य सम्पन्न हुआ। विवाहके पश्चात् जब राजकुँवर रूपमणिके साथ सेजपर बैठा तो उसे उसकी याद आयी जिसे वह खो बैठा था। उसने सोचा—भोग-विलासमें रत होना उचित नहीं है। अतः रूपमणिको बातोंमें ही भुलाये रखना ठीक होगा। वह उसे बातोंमें बहलाये मन ही-मन मिरगावतीका चिन्तन करता रहा। (कडवक १५२-१५६)

प्रातःकाल जब राजकुँवर राजसभामे गया तो उसने एक धर्मशाला बनवानेका प्रस्ताव रखा। धर्मशाला बना। धर्मशालामे जो भी जोगी, जंगम, पंथी आता, उसे भोजन दिया जाता। राजकुँवर उनके पास बैठता, उनसे देश-लोककी बात पूछता और कचनपुरके सम्बन्धमें जिज्ञासा करता। रूपमणिने ताड लिया कि राजकुँवर मुझमें अनुरक्त नहीं है। वह रूठकर खट्वाट् लेकर पड रही। राजकुँवर जब सभासे लौटा तो उसने यह अवस्था देखी और यह विश्वास दिलानेकी चेष्टा की मै तुम्हींसे प्रेम करता हूँ, अन्य किसीसे नही। राजकुमारी बोली—मै तुम्हारी सब धूर्ताचार समझती हूँ। तुम्हारा शरीर तो यहाँ पर मन कहीं और है। राजकुँवरने उसे बहुत तरहसे समझा बुझाकर मनाया और हृदयसे लगाया।

राजकुमारीको मनाकर जब राजकुँवर बाहर निकला तो एक योगीको बैठा पाया। उससे हाल-चाल पूछा। उसने कचनपुरके सम्बन्धमे जानकारी दी। जानकारी प्राप्त कर राजकुँवरने उस योगीसे उसका कन्था ले लिया और आखेटके बहाने घरसे निकल पडा। आखेट खेलते-खेलते जब वह अकेला हो गया तब वे अपने कपड़े उतार कर योगी वेश धारण किया और घोड़ेको वहीं छोडकर सागर तटपर पहुँचा, जहाँ घाटपर नाव चलती थी। केवटको पैसे देकर वह उस पार जा पहुँचा। (कड़वक १५७-१६४)

जो लोग कुँवरके साथ थे, वे ढूँढते हुए वहाँ आये जहाँ राजकुँवर अपना घोडा छोड गया था। उन लोगोने कुँवरको ढूँढ़ा पर जब वह न मिला तो उन लोगोने सोच लिया कि उसे बाघ खा गया है। वे लोग दुःखी होते हुए घर लौटे। जब यह समाचार रूपमणिको मिला तो वह एकदम कुम्हला गयी और अपने भाग्यपर पश्चाताप करने लगी। (कडवक १६५-१६७)

१०—उस पार पहुँचकर राजकुँवर बनमे घूमता फिरा। तीस दिन चलनेके पश्चात् बनका अन्त हुआ। बनसे बाहर आनेपर उसे कुछ बकरियाँ चरती दिखाई पड़ी और एक चरवाहा गडेरिया मिला। राजकुँवरको देखते ही गडरिया उसके पास आया और अतिथि कहकर उसका स्वागत किया तथा घर चलनेका अनुरोध किया। राजकुँवरने प्रसन्नतापूर्वक उसका आतिथ्य स्वीकार कर लिया और उसके साथ चल पड़ा। गड़ेरिया उसे लेकर एक खोहमे घुसा और उसे भीतर कर आप द्वार बन्दकर बाहर बैठ गया। यह देख राजकुँवर आश्चर्यचकित रह गया। उसने उलटकर देखा तो वहाँ उसे अनेक व्यक्ति असाधारण रूपसे मोटे दिखाई पडे। उसने उनसे उनके सम्बन्धमे पूछा और उनकी असाधारण मुटाईका कारण जानना चाहा। उन लोगोने बताया कि गडेरिया उन लोगोको भुलावा देकर ले आया है और उन्हे कोई ऐसी औषधिमूल खिला दिया है जिसके कारण वे लोग चलने-फिरनेमे असमर्थ हो गये है।

यह सुनते ही राजकुँवरकी जान सूख गयी। अच्छा आतिथ्य करने आया! खाना खिलानेको कौन कहे, यह स्वयं मुझे खाना चाहता है। इसने मुझे जैसा रास्ता दिखाया है वैसा ही मै भी कुछ करूँ जिससे यह आकाश चला जाय। और वह उससे छुटकारा पानेका उपाय सोचने और मन-ही-मन दुःखी होने लगा। जब उसकी समझमे कोई भी उपाय नही आया तो जो लोग भीतर थे, उन लोगोने उसे उपाय सुझाया। जबतक वह तुम्हे औषधिमूल नही खिलाता, उस बीच जो हम कहते है करो। वह अभी आकर हममेसे एकको भूनकर खायेगा और फिर पडकर सो रहेगा। जब वह सोता रहे तभी सॅडसी दग्धकर उसकी ऑखमे घुसेड दो। राजकुँवरकी समझमे यह उपाय आ गया और उसने वैसा ही किया और गडेरियाकी ऑखे फोड़ दीं।

गडरिया क्रुद्ध होकर उठा और राजकुँवरको पकडना चाहा पर वह भाग गया। गडेरिया उसको चारो कोने टटोलने लगा पर वह हाथ न आया। तब वह द्वारपर जा बैठा और द्वारको इस प्रकार बन्द कर दिया कि कोई बाहर निकल न सके। यह देख राजकुँवर पुनः चिन्तित हुआ। तीन दिन तक ऐसी ही स्थिति रही। फिर गड़ेरियाके मनमे आया कि बकरियोको निकाल दूँ, वे चर आये। वह एक-एक बकरी निकालने लगा। इसे निकलनेका अच्छा अवसर देखकर राजकुँवरने एक बकरीको मार डाला। और उसका चमड़ा निकालकर ओढ़ लिया और बकरियोके साथ निकलने लगा। निकलते समय जब गड़ेरियेने उसे टटोला तो उसे लगा कि वह बकरी नही है। लेकिन जब तक उसे पकडनेकी कोशिश करे, राजकुँवर बाहर निकल गया। (कडवक १६८-१८६)

११—वहाँसे राजकुँवर आगे बढा। चलते-चलते उसे एक भवन दिखाई पडा। तब तक शाम हो गयी। उसने वहीं रात बितानेका निश्चय किया। जब वह भवनके निकट पहुँचा तो उसे एकदम निर्जन पाया। उसे आश्चर्य हुआ और लगा कि वह कोई कौतुकपूर्ण जगह है। वहाँ वह छिपकर बैठ गया। इतनेमें चार अपूर्व कबूतर आये और आकर उन्होंने नारी रूप धारण किया। फिर उन्होंने मन्त्र पढ़ा; बिछी हुई सेज आ गयी। पुनः मन्त्र पढा तो चार मोर आये और आकर वे चार पुरुष बन गये। और तब सब सेजपर बैठकर केलि करने लगे। इस प्रकार हँसते खेलते रात बीत गयी। जब सुबह हुई तो दूतने आकर उन्हे सूचना दी कि किसीने गड़रियेको अन्धा कर दिया है। इतना सुनते ही वे सब उड गये। यह देखकर राजकुँवर डरा और वहाँ-से भागा। जब बहुत दूर भाग आया और धूपसे परेशान हो गया तो एक पेड़के नीचे जा बैठा। (कडवक १८७-१९१)

१२—उधर मिरगावती जब राजकुँवरके महलसे उड़कर आयी तो सहेलियाँ उससे चीर-हरण की बात पूछने लगी। कहने लगीं कि कोई बिना किसी सम्बन्धके किसीका चीर नहीं लिया करता। तब मिरगावतीने उन्हें बताया कि जिस दिन मैं तुम्हारे साथ स्नान करने गयी थी और तुम लोग मुझे छोड कर चली आयी थी, उस दिन रास्तेमें मैंने एक राजकुमारको देखा। उसे देखते ही सुधि-बुधि खो बैठी और मृगीका रूप धारण कर उसे निहारने लगी। उसे अपनी ओर आकृष्ट कर मैं भागी। उसने मेरा पीछा किया पर मैं उसकी पकडमें नहीं आयी और जिस सरोवरमे तुम नहाने गयी थीं, उसमे विलीन हो गयी। फिर दुबारा जब जी नहीं माना तो बहाना करके तुम्हें साथ ले गयी। तुमने सरोवरके निकट जो मन्दिर देखा, वह उसी राजकुमार-ने बनवाया है। वहाँ वह बैठकर मेरी प्रतीक्षा करता रहा। पुनः जब हम तीसरी बार गयीं तो उसने धाईकी सीखपर मेरा चीर ले लिया और अपना चीर लाकर दिया। उसने मेरा चीर ऐसी जगह छिपा दिया कि वह मिल न सके। उसने जब मुझसे रस-रग की बात कही तो मैंने कहा कि सहेलियोको आने दो। उनसे माँग कर मेरे साथ सेज-रमण करना। वह मेरी बात मान गया। फिर एक दिन जब मुझे अवसर मिला तो मैंने धाईको भुलावा देकर अन्यत्र भेज दिया और चीर पहनकर भाग निकली। आते समय अपना पता दे आयी और कह आयी कि यदि वह मुझपर अनुरक्त है तो कंचनपुर आये। कहकर तो चली आयी पर यहाँ मन नही लग रहा है। तब सहेलियाँ उससे प्रेमकी बाते करने लगीं। (कड़वक १९२–२००)

१३—मिरगावतीके पिता स्वर्गवासी हुए, राजकर्मचारियोंने पुत्रके अभावमें मिरगावतीको राजगद्दीपर बैठाया। वह धार्मिक ढंगसे शासन करने लगी। उसने एक धर्मशाला बनवाया और आदेश दिया कि जो भी योगी-जंगम आये उसे भोजन-पानी दिया जाय। जो भी यात्री आये वह मुझसे बिना मिले न जाय। इस प्रकार जो भी योगी-यती आता, उसे वह अपने पास बुलाती और इधर-उधरकी बातोंके बाद चन्द्रा-गिरिकी बात पूछती। (कडवक २०१-२०२)

१४—राजकुँवर वृक्षके नीचे आकर बैठा। उसकी दृष्टि ऊपर गयी। वहाँ दो पक्षी बैठे परस्पर प्रेम-कथा कह रहे थे। वह ध्यान देकर उनकी बातें सुनने लगा। वे कह रहे थे कि एक राजकुमार मिरगावतीके प्रेममे अनुरक्त है। उसने अबतक बहुत कष्ट सहे है पर अब उसके दुःखके दिन थोड़े ही रहे, वह शीघ्र ही सुख प्राप्त करेगा। यह कहकर वे दोनो उड़ चले। कुँवरने जो यह बात सुनी तो जिस ओर वे गये थे, उसी ओर वह भागता चला। जाते-जाते एक मार्ग मिला। आगे जानेपर उसे एक लक्षाराम मिला। उसे लगा कदाचित् यही कंचनपुर है। वह लक्षाराममे घुस गया और उसे देखता हुआ आगे बढ़ा और कुएँके निकट आया। वहाँ उसे पनिहारिने दिखाई पड़ी। उनसे पूछनेपर ज्ञात हुआ कि वही कंचनपुर है और वहाँ मिरगावतीका राज है। जो योगी-यती वहाँ आते है, उनका वहाँ बड़ा मान होता है। (कड़वक २०३-२१४)

राजकुँवरने नगरमे प्रवेश किया। राजद्वारतक पहुँचा। आगे प्रवेश करना सहज न पाकर वह किंगरीपर वियोग बजाने लगा। उसके वियोगकी बात नगरमे फैल गयी। मिरगावतीने सुना आर उसे बुला भेजा। सात द्वार पार कर जब राजकुँवर भीतर पहुँचा तो उसने मिरगावतीको सुवर्ण-सिंहासनपर बैठे पाया। उसे देखते ही वह मूर्छित हो गया। (कड़वक–२१५)

उसे मूर्छित होते ही वह भाँप गयी कि यह जोगी नही, राजकुँवर है। उसने सहेलियों से उसे होशमे लानेको कहा। वे उसे होशमे ले आयी और उससे मूर्च्छित होनेका कारण पूछने लगी। फिर उन्होने अनुमान लगाया कि कदाचित् यह वही है जिसकी बात मिरगावती कहा करती है। जब मिरगावतीको भी निश्चय हो गया कि वह वही राजकुँवर है तो उसे निकट बुलाया और अपनी सहेलियोको यह बात बतायी, तब सहेलियोंने मिरगावतीसे राजकुँवरकी परीक्षा लेनेको कहा। परीक्षामे राजकुँवर खरा उतरा। तब मिरगावतीने दासियोको उसे स्नान करानेका आदेश दिया। (कड़वक २१६–२२१)

१५—मिरगावतीने शृङ्गार किया और सेज सँवरवाया और उसपर जा बैठी। बैठकर राजकुँवरको बुलवाया। राजकुँवरके आते ही सेजसे उतरकर उसने उसका स्वागत किया। फिर दोनो सेजपर जा बैठे। मिरगावतीने बताया कि क्रोधमे यहाँ आनेको तो आ गयी पर आनेपर पश्चाताप हुआ। मै दिन-रात तुमको याद करती रही। राजकुँवरने भी अपना सारा दुःख कह सुनाया—किस प्रकार उसने योग-पथ धारण किया, बनमे खोया, समुद्रमे गया, सर्प-भक्षणसे बचा, राजकुमारीके भक्षणके लिए आये राक्षसको मारा, राजकुमारीसे विवाह किया, वहाँसे भागा, गडेरियाके चगुलमे पड़ा, उसका आँख फोड़ा, यह सब उसने सविस्तार सुनाया। यह सुनकर मिरगावती व्याकुल हुई और उसे कण्ठसे लगा लिया। पश्चात् दोनो आलिंगन-परिरम्भणमे रत हो गये। (कड़वक २३२–२४४)

१६—प्रातःकाल राजकर्मचारियोने सुना और वे मिरगावतीके पतिको जुहार करने आये। राजकुँवरने उन्हे धन्य-धान्यसे सम्मानित किया। फिर राज-सभामें

बैठा। वहाँ नृत्य-सगीत हुआ। राजकुँवरके सभामे जाने पर मिरगावतीने सखियोंको बुलवाया। वे सब आकर रातकी बात पूछने लगी। मिरगावती पहले तो चुप रही पीछे उसने राजकुँवरकी प्रशंसा की। सखियाँ अपने घरसे निछावर लायीं। मिरगावतीने उसे ग्रहण किया और उन्हे वस्त्राभूषण भेंटमे दिये। (कडवक २४५–२६१)

१७—एक दिन किसी सखीके यहाँ कुछ मगलाचार था। वह मिरगावतीको बुलाने आयी। मिरगावती राजकुँवरसे पूछ कर उसके घर गयी और जाते समय राजकुँवरको मना करती गयी कि घरमे जो ओबरी है, उसे मत खोलना। उसके चले जाने पर राजकुँवरको जाननेकी जिज्ञासा हुई कि ओबरीमे क्या है। उसने जाकर ओबरी खोला। वहाँ उसने कटघरेमे एक आदमीको बन्द देखा। राजकुँवरको देखते ही वह आदमी गुहार करने लगा। राजकुँवरके पूछने पर उसने बताया कि मैं मिरगावतीके पिताका एक कर्मचारी हूँ। मैं उनका विश्वासपात्र था। अर्थ-भण्डार सब कुछ मेरे हाथमें था। स्वामीका प्रियपात्र होनेके कारण अनेक लोग मेरे शत्रु थे। रूपमुरारिके मरते ही लोगोंने मुझे बन्दी कर दिया है। उसने राजकुँवरसे तरह-तरहकी बातें की। उन्हे दया आ गयी और उसने कटघरा खोल दिया।

कटघरा खुलते ही उसमेंसे एक विशालकाय दैत्य निकल पडा और निकलते ही वह कुँवरको कन्धे पर रख कर आकाशमें उड गया। कुँवरको अपने किये पर पछतावा होने लगा। दैत्य उसे उडाकर सौ योजन दूर ले गया और वहाँ कुँवरसे बोला—मेरी प्रियतमाके साथ तुम सुख भोग कर रहे हो और मुझे सताते हो। मैं मिरगावतीका प्रेमी हूँ और वह तुम पर अनुरक्त हो गयी है। एक वर्ष तक मैं उसकी प्रतीक्षा करता रहा पर वह हाथ न आयी। उसे तुम मुफ्तमें ही पा गये अब मैं तुम्हें पृथ्वी पर पटकूँगा। सो कहो तुम्हे पर्वत पर गिराऊँ या समुद्रमें। कुँवरने मनमें सोचा कि इससे उलटी ही बात कहनी चाहिये और उसने उससे पर्वत पर गिरानेको कहा। दैत्यने कहा—नही, तुझे पानीमें गिराऊँगा और उसे समुद्रमे डाल दिया। ईश्वरकी कृपासे वह उथले पानीमें गिरा।

इधर राजकुँवरके सिर यह विपत्ति आयी, उधर मिरगावतीके हृदयमें खलबली मची और उसे शका होने लगी कि पुरुष जाति मना की गयी बातको नहीं मानती। कहीं उन्होंने ओबरी तो नहीं खोल दिया! वह सखीसे घर जानेके लिए अनुमति माँग ही रही थी कि दासी रोती चिल्लाती आयी। और दैत्य द्वारा राजकुँवरके उड़ा ले जाये जानेका समाचार दिया। यह सुनते ही मिरगावती अवाक् रह गयी। एक घड़ीके पश्चात् जब उसे कुछ चेतना आयी तो वह विलाप करने लगी। सहेलियाँ उसे समझाने लगी। नगरमें समाचारसे खलबली मच गयी।

सखियोंके समझाने बुझाने पर उसने सेवकोंको राजकुँवरको ढूँढनेका आदेश दिया। स्वयं भी राजकुँवरको ढूंढनेका तरह-तरहसे यत्न करने लगी। तब एक आदमी ने आकर राक्षसके गिरफ्तार किये जानेका समाचार दिया। तत्काल उसे सामने लाये जानेका आदेश हुआ। उससे राजकुँवरके सम्बन्धमे पूछा जाने लगा पर वह मौन

रहा। उसे तरह-तरहके त्रास दिये गये पर उसने कुछ नही बताया। अन्तमे उसे कोठरीमे बन्द कर दिया गया। (कड़वक २६२–२८९)

मिरगावतीकी समझमे कुछ नही आ रहा था कि राजकुँवरका पता पानेके लिए क्या किया जाय। इतनेमे असाढ़ आ पहुँचा। पवनके द्वारा उसने सन्देश भेजा। पवनने जाकर राजकुँवरसे मिरगावतीकी अवस्था कही। राजकुँवरने भी उससे अपनी अवस्था मिरगावतीसे जाकर कहनेको कहा। पवनने आकर मिरगावतीको राजकुँवरका समाचार दिया। समाचार पाते ही मिरगावती पवनके साथ राजकुँवरके पास पहुँची और उसे ले आयी। नगरमे प्रसन्नताकी लहर छा गयी। तदन्तर दोनों आनन्दपूर्वक रहने लगे। (कड़वक २९०–३०४)

१८—इधर ये लोग रस-भोगमे लीन थे उधर रूपमणिके दिन दुःखमे बीत रहे थे। वह सूखकर पीली हो गयी। दिन-रात पन्थ जोहती रहती। एक दिन भवन-पर चढकर वह मार्ग जोह रही थी कि एक बनजारा आता दिखाई दिया। वह आकर सरोवरके किनारे रुका। रूपमणिने यह जाननेके लिए कि वह कहाँसे आ रहा है, आदमी भेजा। आदमीके पूछनेपर बनजारेने बताया कि वह चन्द्रागिरिसे आ रहा है और कचनपुर जायगा। वह गनपतदेवका ब्राह्मण पुरोहित है और उनका सन्देश लेकर जा रहा है। कचनपुरका नाम सुनते ही धावनने उससे रूपमणिके पास चलनेको कहा कि वह भी अपना कुछ सन्देश भेजना चाहती है। वह रूपमणिके पास आया और बताया कि मेरा नाम दूँलभ है। जिस देशमे राजकुँवर लुभाया हुआ है, वही जा रहा हूँ। यह सुनकर रूपमणि रोने लगी और रो-रो कर अपना सारा दुःख कह सुनाया (कविने यहाँ बारहमासाका उपयोग किया है)। (कड़वक ३०५–३३६)

१९—दूँलभ रूपमणिकी दुःख-कहानी सुनकर उसका सन्देश लेकर चला। रास्तेमे उसे अन्धा गड़ेरिया मिला। उससे वह कचनपुरका रास्ता पूछकर आगे बढ़ा और कचनपुर पहुँचा। कचनपुरमे व्यापारियोने बनजारेके आनेकी बात सुनी तो उसके पास वणिज खरीदने आये। उसने कहा कि यह वणिज तुम्हारे लिए नही है। राजा खरीदने आयेगा तो उसके हाथ बेचूँगा। यह बात फैलते-फैलते राजातक पहुँची। राजा (राजकुँवर) को भी उत्सुकता हुई कि उसके पास क्या ऐसी वस्तु है जो केवल हमारे ही हाथ बेचना चाहता है। राजाने उसे बुला भेजा।

ब्राह्मणने आकर राजा (राजकुँवर) को जब आशीष दिया तब उसने उसे पहचान लिया कि यह तो हमारे घरका पुरोहित है। निश्चय करनेके लिए नाम-धाम पूछा। ब्राह्मणने अपना नाम-धाम बताया और पिता-माता तथा रूपमणिका सन्देश कहा—और कहा कि जो उचित हो कीजिए। राजकुँवरने कहा—यहाँकी व्यवस्था कर लूँ तबतक अगस्त उग आयेगा और पानी भी घट जायेगा। तब चला जाय।

ब्राह्मणके सन्देशसे राजकुँवर व्याकुल हुआ, उसे पिताकी स्मृति आयी, रूप-मणिका प्रेम जागा। उसने मिरगावतीसे जाकर कहा कि आज पिताके घरसे आदमी आया है। वे अब अत्यन्त वृद्ध हो गये हैं। उन्होने बुलाया है। तुम जैसा कहो किया

जाय। मिरगावतीने कहा--आप जो कहेंगे वह शिरोधार्य है। आप रायभानको राज सौंप दें और राजकर्मचारियोंसे कहे कि जबतक रायभान अबोध है, वे लोग समुचित ढगसे राजका काम सँभालें। (कडवक ३३७–३५५)

२०—राजकुँवरने कचनपुरमें सुखसे चार वर्ष व्यतीत किये। मिरगावतीने दो पुत्रोंको जन्म दिया। बड़ेका नाम रायभान और छोटेका नाम करनराय था। रायभानको राजतिलक दिया गया। अगस्त उगा, पानी घटा तो राज्कुँवरने चलने की तैयारी की और सुदिन पूछकर चल पड़ा।

चलते-चलते एक नदी मिली। उसके किनारे एक दिन रुक कर आगे बढा और वहाँ जाकर ठहरा जहाँ उसने गडेरियेका आतिथ्य किया था। वहाँ वह गड़ेरियेको देखने गया और लोगोंको उसके छलकी बात बतायी। फिर प्रातःकाल वहाँसे रवाना हुआ। जब सुबुद्ध्या नगर तीस कोस रह गया तो उसने सूचना देनेके लिए दूँलभको आगे भेजा।

उधर रूपमणिने स्वप्न देखा और सखियोसे उसका अर्थ पूछा। उन्होंने बताया कि तुम्हारा प्रियतम सौत लेकर आ रहा है। यह बातें हो ही रही थीं कि ब्राह्मण आ पहुँचा और प्रतिहारसे अपने आनेकी सूचना देनेको कहा। उधर राजकुमारीने काग उड़ाया। कागका उडना था कि समाचार लेकर प्रतिहारी आ गया। समाचार सुनते ही वह उछाहसे भर गयी। उसने दूलँभसे जाकर पिताको सन्देश सुनानेको कहा। दूँलभने राजाको राजकुँवरके आनेकी सूचना दी। राजा तत्काल उसके स्वागतके लिए चल पडा। उधर राजकुँवरने मिरगावतीको रूपमणिके सम्बन्धमें सारी बात बता दी और कहा कि ब्याही हुई स्त्री छोडी नहीं जा सकती। मिरगावतीने उसकी बात मान ली। (कड़वक ३५६–३७५)

राजा स्वागत कर राजकुँवरको घर ले आया। रूपमणिकी आकाक्षा पूरी हुई। राजकुँवर और रूपमणि मिले और परस्पर केलि क्रीड़ा करने लगे। यह देखकर द्वन्द्व, उद्वेग, उचाट और वियोगको बडा दुःख हुआ और उन्होने मिरगावतीके पास जानेका निश्चय किया। वहाँ आकर उन्होंने सुख और आनन्दको मार भगाया। इन लोगोंने राजकुँवरके पास जाकर गुहार लगायी। रूपमणिके साथ रात बिताकर जब प्रातःकाल राजकुँवर मिरगावतीके पास गया तो वह पीठ देकर बैठ रही। तब राजकुँवरने उसे समझाया और प्रेमकी बातें की। उसने अपनी दोनों पत्नियोंको इस तरह रखा कि दोनोने अनुभव किया कि मुझसे ही प्रेम करते हैं। (कड़वक ३७६–३८९)

२१—एक दिन राजकुँवरने दूँलभको बुलाकर राजाके पास भेजा और कहलाया कि कि आज्ञा दें तो पिताके पास जाऊँ। उसने जाकर राजासे निवेदन किया और रूपमणि को बिदा कराकर राजकुँवरके पास ले आया। और वे लोग वहाँसे रवाना हुए। जब चन्द्रागिरि निकट आया तो राजकुँवरने दूँलभको अपने पिताके पास भेजा। उसका पिता प्रतीक्षा कर ही रहा था। दूलँभने जाकर बताया कि राजकुँवर दस योजन

पर आ गया है और एक गाँवमे ठहरा हुआ है। मुझे उन्होने आपके पास भेजा है। फिर उसने राजकुँवरका सारा हाल कह सुनाया—किस प्रकार देवरायने उसके साथ अपनी बेटी ब्याही, कैसे उसका मिरगावतीसे मिलन हुआ। सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और ठाट-बाटके साथ उसे जाकर लिवा लाया। सब लोग दुःख भूल कर आनन्दसे रहने लगे। (कडवक ३९०–३९८)

एक दिन जब राजकुँवर आखेटको गया हुआ था, मिरगावतीकी ननद उसके पास आयी और रूपमणिकी चुगली की। बोली—रूपमणि कह रही थी कि विवाहिता तो मैं हूँ मिरगावती तो उढरी (अपहृता) है, फिर भी वह मुझे कुछ नही समझती। यह सुनकर मिरगावती बहुत क्रुद्ध हुई। रूपमणिकी दासी यह सब बात सुन रही थी। थी। उसने जाकर रूपमणिसे कहा। रूपमणि गाली-गलौज करने लगी। मिरगावतीने जब यह बात सुना तो वह भी बोलने लगी। दोनो अपनी बड़ाई और दूसरेकी निन्दा करने लगी। झगड़ेकी बात जब सासके कानमे पड़ी तो वह गरजती हुई आयी। उसे देखकर दोनो चुप हो गयी। सासन आकर इस तरह लडने-झगड़नक लिए उनकी भर्त्सना की। दोनो कुपित होकर अपने-अपने घरमे पडी रही।

जब राजकुँवर आखेटसे लौटा ता देखा कि दोनो रानियाँ खट्वाट् लेकर पडी है। वह ताड गया कि दोनोने परस्पर लड़ाई की है। वह तत्काल माँक पास पहुँचा और कहा कि चलकर दोनोको मनाओ। सास ननद सब मिल कर पहले मिरगावतीके पास आयी और उसे समझाया। उसे समझा बुझाकर वे रूपमणिके पास आयी और उसके क्रोधको भी शान्त किया। (कडवक ३९९-४०९)

२२—राजकुँवरको आखेट बहुत प्रिय था। बिना आखेट खेले उसे नीद न आती थी। वह स्वप्नमे भी आखेट खेलता रहता। एक दिन प्रातःकाल एक शिकारी-ने आकर सूचना दी कि वनमे एक ऐसा सिह आया है जिससे सभी पशु त्रस्त है। कल मै शिकार खेलने गया था तो देखा कि वहाँ असख्य मैमन्त गज मरे पडे है। पास आकर देखा तो पाया कि उनके मस्तक मे तनिक भी गूदा नही है। किन्तु उनके शरीर पर एक भी नख नही लगा है। जगलके अन्य जितने जानवर है, वे भी मरे पड़े है। लगता है कि वे उसके डर मात्रसे मर गये है। यह देख डर के मारे मै वहाँ से भाग आया।

यह सुन कर राजकुँवर हँसा और तत्काल सिहको मार डालनेका निश्चय किया। और सारी तैयारी कर उस पारधीको लेकर वनमे पहुँचा। वनमे पहुँच कर उसने पारधीसे पेड पर चढ कर सिहको देखनेको कहा और स्वय वनमे घुस गया। वनके भीतर जाकर देखा कि सिह निःशक सो रहा है। उसे देख कर उसने सोचा कि सोते मारना पुरुषार्थ नही है। उसे जगा कर मारना ही उचित होगा। इतनेमे घोडेकी आवाज सुनकर सिह जाग पडा। दोनोकी आँखे चार हुई। सिह पूँछ पटक कर गरजा और तडप कर घोड़ेके सिर पर धावा किया। तब तक राजकुँवरने खाँडा निकाल कर उस पर वार कर दिया। उसका सर धडसे अलग हो गया, धडसे पाँव टूट गये। साथ

ही साथका बाण तडक कर राजकुँवरके हृदयमे आ लगा।' उसी समय हाथियोंका समूह आया और उसे पकड़ना चाहा। राजकुँवरने उन पर बाण छोडा। वह हाथीके मस्तकमे आ लगा और चिंघाडता हुआ भागा।

दोनो ही सिंह जमसे भी विकराल थे। दोनोको कालने कालसे ही मारा। सिंह और राजकुँवर दोनों ही मर गये। कुँवरके गिरते ही पारधी पेडसे उतरा। देखा कि वह निर्जीव पड़ा है।

किसीने जाकर राजाको इसकी सूचना दी। सुनते ही राजा जो उठ कर भागा तो ठोकर खाकर गिर पडा और वही उसकी साँस निकल गयी। करनराय तत्काल जगलमे पहुँचा। पारधीको जब उसके आनेकी आहट मिली तो वह भूमि पर लोट कर रोने लगा। करनरायने भी आत्महत्या करनी चाही। लोगोने उसकी कटार थाम ली और समझा बुझा कर अन्त्येष्टि-क्रिया करनेके लिये तैयार किया। लोग राजकुँवरके शवको लेकर नगरमें आये। गगा-तट पर चिता रची गयी। शवके साथ मिरगावती और रूपमणि सती हो गयीं। उनके साथ राजकुँवरके कर्मचारी और नगरके बहुतसे लोग भी जल मरे। (कड़वक ४१०-४२९)

पश्चात् राजकर्मचारियोंने करनरायको घर लाकर राजगद्दी पर बैठाया। (कड़वक ४३०)

कथाका मूल-स्रोत

मिरगावतीकी यह कथा कुतुबनकी अपनी मौलिक कल्पना नहीं है, यह उन्होंने स्पष्ट रूपसे स्वीकार किया है। उनका कहना है—

पहिलैं हिन्दुई कथा अही।
फुनि र काँहि तुरकी लै कही॥
फुनि हम खोलि अरथ सब कहा।
जोग सिंगार बीर रस अहा॥ ४३१।१-२

उनके इस कथनसे जान पड़ता है कि मूलतः यह कोई भारतीय कथा थी जिसे किसीने अरबी या फारसी (तुर्की) मे रूपान्तरित किया था। उस रूपान्तरित कथाको लेकर उन्होने योग, शृंगार और वीर रससे युक्त यह कथा कही है।

मध्यकालमे भारतीय कथाओंमे बहुतोंके अनुवाद अरबी-फारसीमें हुए थे और उन्होंने लोक-ख्याति प्राप्त की है। अतः प्रस्तुत कथाके मूलतः भारतीय भाषामें प्रचलित रहने और उसके अरबी-फारसी अनुवाद होनेकी बातमें कोई असाधारणता नहीं है। किन्तु हमें किसी भारतीय साहित्य अथवा लोकमें प्रचलित ऐसी कथाका ज्ञान नही

१. खोज रिपोर्टमें राजकुँवरके हाथीसे गिरकर मरने की बात कही गयी है। रामचन्द्र शुक्लने भी इसी बातको दुहराया है। शिवगोपाल मिश्रने लिखा है कि जगनेपर सिंह बिजलीकी भाँति राजकुँवरपर टूट पड़ा और उसे मार डाला। (सम्मेलन सस्करण, पृ० २३)

१. पशु-पक्षीका रूप धारण करनेका अभिप्राय तो भारतीय साहित्यमे अत्यन्त प्राचीन है। उसका उल्लेख रामायण महाभारतमे भी उपलब्ध है। जैन कथा-साहित्य तो उससे भरा पड़ा है। मिरगावतीका मृगी रूप धारण कर राजकुँवरको अपनी ओर आकृष्ट करनेका प्रयास बरबस रामायणकी ओर ध्यान आकृष्ट करता है और मारीचके सुवर्ण मृग बनकर सीताका ध्यान आकृष्ट करनेकी घटनाकी याद दिलाता है। उपवन-मे कबूतरो और मोरोका मानव रूप धारण कर केलि-क्रीडा करना, महाभारतको उस कथाका याद दिलाता है जिसमे कमन्द ऋषि और उनकी पत्नीके मृग रूप धारण कर केलि करनेका उल्लेख है।[१]

२. मानसरोदकमे मिरगावती और उनकी सखियोकी जलक्रीडा तथा राज-कुँवर द्वारा मिरगावतका चीरहरण, भागवत वर्णित कृष्ण द्वारा गोपियोंके चीरहरणकी याद दिलाता है।

३. राक्षसके भोजनके निमित्त पारी बाँधनेकी बात भी कथा-साहित्यका एक अत्यन्त जाना-पहिचाना अभिप्राय है। पंचतन्त्रकी एक कथामे जगलके पशुओं द्वारा सिंहराजके भाजनके लिए आपसमे पारी बाँधकर एक पशु नियमित रूपसे भेजने का उल्लेख है। महाभारतमे भी इसी प्रकारकी एक कथा है। राक्षसके भोजनके निमित्त एक ब्राह्मणकी पारी थी। दैवयोगसे उस दिन उसके घर भीम अतिथि रूपमे पहुँचे गये थे। वे उस ब्राह्मणके स्थान पर राक्षसके पास गये और राक्षसको मार डाला। इस ढगकी एक पौराणिक कथा भी है। इस कथाके अनुसार सर्पराज वासुकि और गरुड़के बीच एक समझौता हुआ था। जिस दिन शखचूड नामक सर्पकी बारी थी, उस दिन जीमूतवाहन उसके स्थान पर गया।[२]

४. पक्षियोंके परस्पर वार्तालाप द्वारा सूचना पानेका अभिप्राय भी कथा-साहित्यमे बहुत प्रसिद्ध है। नेमिचन्दकी लीलावती कथामे चूतप्रिय और बसन्तदोहला नामक शुक-दम्पतीकी चर्चा है जो वृक्ष पर बैठे परस्पर कुसुमपुरीकी राजकुमारी वासव-दत्ताकी चर्चा कर रहे थे। उनकी बातोसे कन्दर्पको वासवदत्ताका परिचय उसी प्रकार मिला जिस प्रकार प्रस्तुत कथामे राजकुँवरको कचनपुरके निकट होनेकी सूचना वृक्ष पर बैठे पक्षियोकी बातचीतसे मिलती है। कथासरित्सागरमे भी इस ढगका अभिप्राय है। वहाँ शक्तिदेव नामक व्यक्तिको पक्षियोकी बातचीतसे कनकपुरीका पता लगनेकी बात कही गयी है।[२]

इसी प्रकार मिरगावतीके अन्य अभिप्रायों और रूढ़ियोंको भारतीय कथा-साहित्यमें ढूँढा और पहचाना जा सकता है। गुप्तोत्तरकालमें समुद्रयात्रा कर भारतीय सार्थवाह दूरस्थ द्वीप-द्वीपान्तरों तक जाने लगे थे। लौट कर उनका मार्गकी कठिनाइयो, समुद्री तूफानों, तूफानसे नावोके फट जानेकी घटनाओं, समुद्री जीवोंके आक्रमणो, वह

१ इस कथाका उल्लेख कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी है।

२. यह कथा कथासरित्सागरके चौथे लम्बकमें भी प्राप्त है।

कर अज्ञात किनारों पर पहुँच जाने और दस्युओं तथा नर-भक्षियो आदिके हाथ पड़ जानेकी घटनाओंका अतिरजित वर्णन करना स्वाभाविक था। सार्थवाहोकी इन सच्ची तथा मनगढन्त कहानियोने तत्कालीन कथा-साहित्यमे स्थान प्राप्त कर लिया था। उन्होंने कथाकारोको मौलिक कल्पनाएँ करनेकी सामग्री प्रस्तुत कर दी थी। दूसरी ओर अरब और फारसके सम्बन्धसे सहस्ररजनी (अलिफ लैला) जैसी कथाओसे भी भारतीय परिचित होने लगे थे। अतः इन सबसे प्राप्त सूत्रोसे कथा-साहित्यमे साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताके वर्णन समाविष्ट हो गये थे। फलतः **मिरगावती**मे जिस ढंगकी साहसिकता और मार्गकी दुर्गमताकी बात कही गयी है, उस ढंगकी कथा-रूढियाँ खोज करने पर भारतीय कथाओमे अनेक मिल जायेगी।

वर्णन-विधान पर पूर्ववर्ती प्रभाव

कथा-अभिप्रायो और रूढियोके साथ-साथ मिरगावतीकी वर्णन शैली पर भी पूर्ववर्ती कथा-साहित्यका पूर्ण और स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। पूर्ववर्ती संस्कृत या अपभ्रंश साहित्यसे **कुतुबन**ने कितना ग्रहण किया है, यह अपने-आपमे अनुसन्धानका विषय है। अतः इस सम्बन्धमे यहाँ सागोपाग रूपसे तो कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, कुछ बातोंकी ओर इगित किया जा सकता है। यथा—

राजकुँवरके विरह वर्णनमे ऋतु-वर्णन और रूपमणिके विरह-वर्णनमे जिस प्रकार मास-वर्णन किया गया है, वह भारतीय साहित्यके लिए जाना पहचाना है। आरम्भसे ही ऋतु-वर्णन कवियोका प्रिय विषय रहा है। वे उसका वर्णन प्रसगानुसार अथवा केवल वर्णनके लिए ही करते रहे है। इस दृष्टिसे **कालिदास**का **ऋतुसंहार** तो प्रसिद्ध है ही। पीछे चल कर नायिकाओके विरह वर्णनके लिए कवियोने ऋतुओ और महीनोको माध्यम बनाया, बारहमासे लिखे। **अद्दहमाण** (अब्दुल रहमान)ने **सन्देश रासक**मे विरहणीके भावोको व्यक्त करनेके लिए ऋतु-वर्णनका सहारा लिया है। जैन साहित्यमे बारहमासेका प्रयोग तेरहवी शताब्दीसे ही हो गया था। **विनयचन्द्र सूरि** कृत **नेमिनाथ चतुष्पदिका**मे राजमति (राजुल)के विरहकी अभिव्यक्ति बारहमासेके रूपमे किया गया है। राजमतिका विवाह नेमिनाथ (बाइसवे तीर्थंकर) से होनेकी बात थी। इसी बीच बलि-पशुओको देखकर नेमिनाथको वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे तपस्याके निमित्त गिरिनार पर्वत चले गये और विवाह न हो सका। राजमति (राजुल)ने विरहका अनुभव किया। उसका वर्णन कविने बारह मासेके रूपमे किया है जो श्रावणसे आरम्भ होकर आषाढ़ पर समाप्त होता है। प्रतिमास राजमति अपनी विरहावस्था व्यक्त करती है और सखियाँ उसे सात्वना देती है। हिन्दी काव्योमे **बीसलदेव रासो, चन्दायन** और **मैना-सत**मे भी बारहमासेका इसी रूपमे प्रयोग हुआ है।

सौन्दर्य वर्णनके लिए नख-शिख वर्णन भी अपभ्रश साहित्यमे प्रचुर परिभाषामे उपलब्ध है। उनके अनुकरणपर **मौलाना दाऊद**ने **चन्दायन**मे चाँदका रूप-सौन्दर्य वर्णन किया है। उसी ढगपर मिरगावतीका रूप वर्णन **मिरगावती**मे किया गया है।

अपभ्रंश काव्योमे वृक्षों, फूलों, फलो और वस्तुओंके नाम गिनानेकी प्रवृत्ति काफी देखनेमे आती है। तत्कालीन कवि मौके-बेमौके वृक्षों और फूलों आदिका उल्लेख करते रहे है। अद्दहमाण (अब्दुल रहमान) ने सन्देश रासकमे इसी तरह फूलोंके नाम गिनाये है। चन्दायनमे दाऊदने गोबर नगरके वर्णनमे, भोजके उल्लेखमे, युद्धकी तैयारी-मे विविध वस्तुओंकी लम्बी सूचियाँ प्रस्तुत की हैं। कुतुबनने भी उनका अनुकरण किया है किन्तु वे इस प्रकारकी सूची प्रस्तुत करनेमें सयत रहे हैं। उन्होंने एक स्थलपर कुछ घोडोंके नाम गिनाये है (कडवक ९३) और दूसरे स्थलपर फूलोंके (कड़वक २०६-२०७)।[१]

नैसर्गिक वस्तुओंको विरहणियोंका सन्देशवाहक बनाकर भेजना संस्कृत काव्यका एक अत्यन्त प्रसिद्ध विषय है। कालिदासका मेघदूत इसका एक अनुपम उदाहरण है। कुतुबनने भी मिरगावतीमें पवन-दूतकी कल्पना की है जो मिरगावतीके कहनेपर दैत्य द्वारा अपहृत राजकुँवरको ढूंढ़ने जाता है और लौटकर मिरगावतीको उसका पता बताता है।

इन बहुप्रचलित काव्य विधानोंके अतिरिक्त, मिरगावतीके रचना-विधानमे ऐसे बहुतसे तत्त्व हैं जो चन्दायनसे अपनाये गये जान पड़ते हैं। यथा—

१—राजकुँवरके जन्मपर ज्योतिषियोंका आना और भविष्य कहना, चाँदके जन्मपर ज्योतिषियोंके आने और भविष्य कहनेके साथ समानता रखता है।

२—राजकुँवर जिस प्रकार मिरगावतीका नख-शिख वर्णन धाईसे करता है, उसी प्रकार बाजिरने चाँदका रूप-वर्णन राजासे किया है।

३—जिस प्रकार चन्दायनमें चाँदके धौराहरमे चित्रकारीका वर्णन है। उसी प्रकार मिरगावतीमें राजकुँवरके धौराहरके चित्रकारीका वर्णन है।

४—जिस प्रकार चन्दायनमे चाँद लोरकपर मुग्ध होकर अचेत होती है और बृहस्पति उसे होशमे लाती है, उसी प्रकार मिरगावतीके रूपपर मुग्ध होकर राजकुँवर अचेत होता है और धाई उसे होशमे लाती है।

५—जिस प्रकार चन्दायनमे नागरिक बाजिरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछते है, लगभग उसी प्रकार मिरगावतीमे वनवाले भवनमे धाई और मिरगावतीके राजप्रासादमे मिरगावतीकी सहेलियाँ राजकुँवरसे उसके अचेत होनेका कारण पूछती है।

६—जिस ढगसे चन्दायनमे चाँदके साँप डँसनेपर लोरकको विलाप करते-पाते हैं, उसी ढंगसे मिरगावतीमे राजकुँवर मिरगावतीके उड़ जानेपर विलाप करता है।

७—जिस ढंगसे चन्दायनमे पूजाके निमित्त जाती चाँदकी सखियोंका वर्णन किया गया है, उसी तरहका वर्णन मिरगावतीमे मिरगावतीके सखियोंका वर्णन है (कड़वक ८०)।

८—घोड़ोंकी सूची, गोरखपन्थी योगीका वेश-वर्णन चन्दायन और मिरगावतीमे प्रायः एक समान है।

---

१. बीकानेर प्रतिमें इस प्रकारके अनेक स्थल हैं पर हमने उन्हें प्रक्षिप्त माना है।

९—जिस ढंगसे **चन्दायनमे** लोरकने न्याय सभा मे अपना परिचय दिया था उसी ढगपर **मिरगावतीमे** राजकुँवर राजाके यहाँ अपना परिचय देता है।

१०—**चन्दायनमे** युद्ध-विजयके पश्चात् लोरक हाथीपर बैठाया गया और राज-नारियाँ उसे देखने आयी। उसी तरह **मिरगावतीमे** राक्षस-वधके पश्चात् राजकुँवर हाथीपर बैठाया गया और नागरिक उसे देखने आये।

११—**चन्दायनमे** जिस तरह चाँद-बावनके विवाह और उससे सम्बद्ध ज्योनार-की चर्चा है, उसी तरहका वर्णन **मिरगावतीमे** राजकुँवर-रूपमणिके विवाह और ज्योनारका है।

१२—कंचननगर पहुँचनेपर राजप्रासादमे मिरगावती राजकुँवरको पहचानते हुए भी न पहचाननेका बहाना करके अनजान ढंगसे प्रश्न करती है, धमकाती है और राजकुँवर उसका जिस ढगसे उत्तर देता है वह **चन्दायन** वर्णित चाँदके धौराहरपर लोरकके पहुँचनेपर चाँदके व्यवहारके समान ही है।

१३—मिरगावतीके अन्तःपुरमे सुगन्धियोंका वर्णन और मिरगावती-राजकुँवर तथा रूपमणि-राजकुँवरका केलि-वर्णन **चन्दायनके** चाँदके धौराहरके सुगन्धि-वर्णन और चाँद-लोरकके रति वर्णनके समान है।

१४—जिस प्रकार चाँदके सुसरालसे वापस आनेपर उसकी सहेलियोने उससे रति-सुखके सम्बन्धमे जिज्ञासा की थी, उसी प्रकारकी जिज्ञासा **मिरगावतीमे** हम मिर-गावती राजकुँवर-समागमके पश्चात् मिरगावतीकी सहेलियोको करते पाते हैं।

१५—**चन्दायनके** मैंनाके समान ही **मिरगावतीमे** रूपमणि अपने पतिके वियोगमें बिसूरती है और टाँडके आने पर उसके माध्यमसे सन्देश भेजती है और बारहमासेमे अपनी विरह-वेदना व्यक्त करती है।

१६—**मौलाना दाऊदने** मैंनाके विरहका टाँड लाद कर चलने पर, उसके झारसे मार्गके वस्तुओके जलने और काले होनेकी जो कल्पनाकी है, उसी कल्पनाको **कुतुबनने** भी रूपमणिके विरहके टाँडके प्रसंगमे अपनाया है।

१७—दोनो ही काव्योमे विरहणियोंके सन्देश-वाहक ब्राह्मणके रूपमे उपस्थित होते है और दोनोके वेशका एक-सा ही वर्णन है। दोनों ही समान ढंगसे सन्देश प्रस्तुत करते है।

१८—**चन्दायनमे** जिस तरह लोरकके दल-बल सहित वापस लौटने पर गोबरमे खलबली मचती है, वैसी ही खलबली मचने की बात **कुतुबन** ने राजकुँवरके सुबुद्धया लौटने पर कही है।

१९—जिस तरह **चन्दायनमे** लोरकके गोबर पहुँचनेके एक दिन पूर्व मैनाका मन उल्लसित हुआ और उसने रातको स्वप्न देखा और उसकी सासने उसका फल विचारा, उसी तरह हम **मिरगावतीमे** रूपमणिको राजकुँवरके आनेसे पूर्व उल्लसित होते और स्वप्न देखते पाते हैं और सखी स्वप्नका विचार करती है।

२०—मिरगावतीमे रूपमणि और मिरगावतीकी कहा-सुनीका रूप बहुत कुछ वैसा ही है जैसा कि चन्दायनमे चाँद और मैनाके बीच मन्दिरमे हुई कहा-सुनीका है।

२१—जिस तरह चन्दायनमे लोरक और मैनाके बीच कहासुनी होने पर ग्वोलिन आकर दोनोंको शान्त करती है और मैनाको समझाती है, उसी तरह मिरगावतीमे हम सासको दोनों बहुओंकी कहा-सुनीको शान्त करते और समझाते पाते हैं।

इस प्रकार मिरगावतीकी कथा चन्दायनकी कथासे सर्वथा भिन्न होते हुए भी चन्दायनके उपादानोसे अत्यधिक प्रभावित ज्ञात होता है। चन्दायनका प्रभाव मिरगावती पर यहीं तक सीमित नही है। अनेक स्थलो पर चन्दायन के भाव और कहीं कहीं तो वाक्य और शब्दावली भी मिरगावतीमे अविकल रूपमे प्राप्त होते है। ऐसे कुछ उदाहरण यहाँ दिये जा रहे है जो अनायास दृष्टिमे आ गये है—

मिरगावती[1]	चन्दायन[2]
राजा पूत मँदिर औतरा। १७।१	सहदेव मँदिर चाँद औतरी। ३३।१
सरवर तीर बरिस दिन रहा।	एक बरिस लोरक मढ़ि सेवा।
चाह कुरंगिनि मगको गहा॥ ४५।१	चाँद सनेह मनायसि देवा। १७५।१
संगि न साथी मीत न आहा। ५१।१	संगि न साथी मीत न धाई। १८२।२
माई मोर तुम धाइ न होहु। ५२।१	माइ मोर तुम सास न होहु। २२८।१
सास न होहु माइ तुम्ह मोरी। ४०८।१	
चगत सवन माँझ तिल भया। ५९।१	नैन सवन बिच तिल एक परा। ८५।१
बिध सर कमल भुजंग निरमया। ५९।१	पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू। ८५।२
सो तिल मुखका भयउ सिंगारू। ५९।४	मुख क सोहाग भयउ तिल संगू। ८५।२
तिलक फूल जस ऊपम दीजै। ६२।२	तिलक फूल जस फूल सुहावा। ८०।४
देव सराइहिं तैसो गोरी। ६२।३	देव सराहहिं तैसो गोरी। ८६।३
जीभ जानु मुँह कँवल अमोला।	बानि जैसि मुख जीभ अमोला।
फूल झरहिं जो हँसि हँसि बोला। ६५।५	फूल झरहिं जो हँसि हँसि बोला। ८३।५
देखत रूप विमोहहि देवा। ६९।५	देखत रूप विमोहे देवा। ९४।७
पूरी जानु गुनवार पकाये। ७२।३	जानु सुहारी घिरत पकाये। ८९।३
काहे बरजा मोर सँघाती। १०६।१	काहे देखी तैं मोर सँघाती। ३४९।२
धन सो जननि जैं यह जाना। १४५।४	धन सो जननि अइस जैं जना। १४५।४
छींपर नेत पटोर बिछाई। १५२।४	छीपर नेत पटोर बिछाई। ४३।२
मारग नेत पटोर बिछाये। ३७६।१	
सिखर ऊँच बड़ तरुवर, औ फल लाग अकास। २२१।६	बिरिख ऊँच फल लाग अकासा। ६८।२

१ प्रस्तुत सस्करण।
२ बम्बई संस्करण।

मिरगावती	चन्दायन
डंडाकारन बीछ बनाहाँ। २८३।३	डंडाकारन बीजु बनाहाँ।[१] १९६।२
दूसर समो आइ अब लागा। ३२१।५	दूसर समो आइ अब लागा। ४०१।५
मै तुम्ह आगे सब दुख टेरा। ३३४।१	मैं सब दुख तुम्ह आगे रोवा। ४१२।१
दन्द उदेग उचाट लदावा। ३३५।१	दन्द उदेग उचाट बिसाहा। ४१७।२
बिरह वियोग संताप जो लीन्हा। ३३५।२	सोक संताप बिरह दुख लीन्हा। ४१७
खरभर सुन सासु गंगा,	सुन खरभर खोलिन तस धाई।
आई उन्ह ठॉ धाइ। ४०३।६	जस भगिरथ यह लागिन आई। २४५।१
एक एक बोल मोति जस पिरवा,	एक एक बोल मोति जस पिरवा,
बकता चित मन लाइ। १३।७	कहउ जो हीरा तोर[२]। ३०६।७

इस प्रकारके भाव और शब्दावलीकी समानता खोज करनेपर बडी सख्यामे मिल सकती है। इन सबको मात्र आकस्मिक, सस्कारजन्य अथवा अविछिन्न विचार परम्पराका परिणाम नही कहा जा सकता। यह स्वीकार करना ही होगा कि कुतुबनके सामने चन्दायन रहा है और उससे उन्होने बहुत कुछ ग्रहण किया है।

अन्तर्कथाएँ

कुतुबनने कथा-वस्तु और रचना विधानमे पूर्वानुकरणके साथ-साथ लोक-प्रचलित अनेक कथाओका उपयोग अपने काव्यके सॅवारनेमे किया है। इन कथाओका उपयोग उन्होने मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा या रूपकके रूपमे किया है और सर्वत्र उनका सकेत मात्र दिया है। उनका कथाओका इस रूपमे प्रयोग, इस बातका द्योतक है कि ये कथाएँ लोक-जीवनमे उस समय इस प्रकार व्याप्त थी कि उनका सकेत मात्र उनके जानने समझनेके लिए पर्याप्त था।

इन कथाओमे कुतुबनने सबसे अधिक उल्लेख रामायणकी घटनाओका किया है। इनसे पूर्व मौलाना दाऊदने भी चन्दायनमे रामायणकी घटनाओकी चर्चा की है। इन दोनोने रामायणकी घटनाओको जिस प्रकार ग्रहण किया है, उससे ऐसा ज्ञात होता है कि तुलसीदास द्वारा रामचरित मानसकी रचना किये जानेसे बहुत पूर्व भारतीय लोक-जीवनमे राम-कथा व्याप्त हो चुकी थी। यही नही, उनके समयमे लोग राम-कथा पर आधारित रामायण नामक किसी ग्रन्थसे भी परिचित थे। चन्दायनके अनुसार तो लोग उसका पाठ भी किया करते थे (परवा राम रमायन कहहीं[३])। कुतुबनने भी राम रमायनका उल्लेख किया है (भारत राम रमायन चीता)।[४]

---

१. यह पंक्ति पद्मावतमें भी है। वहाँ वासुदेवशरण अग्रवालका पाठ है—डंडक आरन बींझ बनाहाँ। (१३७।४)।

२. मनेर प्रतिमे उपलब्ध पाठ। इसकी ओर हसन अमकरीने अपने लेखमे ध्यान आकृष्ट किया है।

३. चन्दायन, बम्बई संस्करण, २९।२।

४. प्रस्तुत संस्करण, २९।४।

मिरगावतीमे रामायणके निम्नलिखित व्यक्तियों और घटनाओंका उल्लेख है :—

१. राम	आन भई जस राम कली का । ३५६।४
	रावो बंस राम औतारा ॥ ३५६।५
२. राम-लक्ष्मण	राम लखन जस सीता ठाऊँ । १७६।४
३. सीता	कहाँ सो तिरिया सीता सती । ४१९।२
४. हनुमान	वे हनिवन्त छुड़ाये कर पर । १७६।७
	जस हनिवन्त सामि के काजा । २६६।५
	पिय बियोग भो सकती बान, जो लागेउ मुहि र अपूर ।
	को आने हनिवन्त जिउ, सजन सजीवन मूर ॥ २८१।६-७
	कोर र राम मिरवइ सिय आनी । २८२।१
	हनिवन्त जैस करो उपकारा । २९०।३
	हनिवन्त मूर सकती कहँ आनी । ३००।५
५. दशरथ सुत-वियोग	सुत वियोग दसरथ जस कीन्हा । ११०।१
६. सीता-हरण	रावन हरी राम घर सीता । ३९।४
	रावन सिय हरी जो आयी । १०२।५
	सिय रावन जो लंका हरी । १७६।५
७. राम-वियोग	राम बियोग भयउ जिहि कारन । १०२।७
८. सीता-वियोग	जस र सिय कहँ दिन दस दुआपर,
	राम क भयउ बियोग । २७९।६
९. बाली-वध	यहै राम जैं मारेउ बारी (बाली) । १४५।९
१०. लका-दहन	हनिवन्त सिय लगि जारस लंका । १०५।३
	यहिया हनिवन्त लक गढ़ दहा । २१८।४
११. सेतु-बन्धन	रामा सेत बाँधेउ सिय लागी । १०५।२
१२. लंका मे अंगद	अंगद जाँध लंका मँह रोपी । ३९।५
१३. रावण-वध	को राम जें रावण मारा, सिय लाग हन जिय । १४०
	रावन मार सिय लै आवा । १४५।१
	इहे राम जै रावण मारा । १४५।३

रामायणकी तरह ही महाभारतकी कथासे भी जनमानसका परिचय था, ऐसा कुतुबनके भारत राम रमायन चीता (३९।४) कथनसे भासित होता है । उन्होंने महाभारतके कुछ पात्रों और घटनाओंका भी उल्लेख किया है :

१. युधिष्ठिर	धरम दुधिस्टिल उह कहँ छाजा । ९।३
	चेरी कहा दुदिस्टिल हरा ।
	कबिरा दानों कर अपकारा । २७८।४

२. अर्जुन	अरजुन राहु वेध जस कीता ।
	कौरो मार दुरपदी जीता ॥ ४०।३
	करन अरजुन भै जस खेता । ५७।४
	जस अरजुन अहिबर्न के मारे । ११०।३
	जो पण्डो कौंरो दर जीता ।
	यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥ २१८।१
	कित अरजुन बाना उर सन्धी । ४१९।१
३. भीम	भीम उरेह कीचक मार ।
	लिहा दुसासन भुएँ उपार ॥ ४०।१
	इहै भीम कर कीचक मारी ।
	इहै दुसासन भुजा उपारी ॥ १४५।४
	कौरा दानौ पण्डो हरी ।
	उनकहँ जाइ भींउ उपकरी ॥ १७७।५
४. सहदेव	पण्डित सहदेव लिहा सयाना । ४०।४
५. द्रौपदी	कहाँ दुरपती पाँचों रती । ४१९।२
६. कर्ण	भारत जीत करन सर भेजी । ५७।३
	बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४
७. जनमेजय	जस र जलमदेव बरज न कीन्हा । २६९।२
	जस र जलमदेव साँप बिपारी ।
	सवै आन हुतासन जारी ॥ २८६।३

कृष्ण-कथाका प्रचार कुतुबनके समय हो चला था, ऐसा मिरगावतीसे प्रकट होता है। उसमे तीन स्थलोपर कृष्णसे सम्बन्धी घटनाओका उल्लेख है—

कान्ह सहित सोलह सौ गोपी । ३९।५
इहै कन्ह जैं नाथसि कारी । १४५।२
इहै कन्ह जैं कंस बितारा । १४५।३

पौराणिक कथाओकी ओर भी कुतुबनका ध्यान गया है और उन्होने उनका उल्लेख मिरगावतीमे किया है।

१. सागरमथन	कहाँ सो बल जिंह सायर मथा । ४१८।५
२. नृसिह	इहै सिंह हरनाकुस हना । १४५।५
३. वामन	जस बलि बावन बाँध अडारा । २८६।१
४. बलि	बलि औ करन न सरभरि पावा । ९।४
५. हरिश्चन्द्र	हरिचन्द परहि भुलाई । ४१९।६
६. श्रवण	जस अन्धा अन्धी बिनु सरवन, फेकरि मुए चिल्लाय । ११०।६

७. परशुराम	पारुधि परसुराम कलजुग मँह। ५६।६
	सोइ जावस परसुराम कर, सोइ पारुध सोइ बान। २१८।६
८. धुन्धमाल	कहाँ सो धुन्धमाल कै कथा। ४१८।५

कुतुबनका ध्यान ऐसी ऐतिहासिक घटनाओंकी ओर भी गया है जो उस समय-तक कथा-साहित्यमें प्रवेश पा चुकी थीं।

१. विक्रम-बैताल	जइसे सेंउ विक्रम कै, जिय सेंउ किय बैताल। २६६।६
२. विक्रम-भोज	जस भोज विक्रम पछिताना।
	जस भैरोनन्द हुत सयाना॥ २६९।४
३. विक्रम	जस विक्रम राउ उबारा। २७५।२
	कहाँ सूर विक्रम सकबन्धी। ४१९।१
	सुवा मारि राजा पछताना। २६९।३
४. भोज	चौदह विद्या भोज निदाना।
	वररुचि एक अधिक ग्रह जानाँ।
	राज हार धरैं कहँ दीन्हा।
	लैं र छुपायसि दइ न चीन्हा॥ २८९।१-२
	कहाँ भोज दस चारि निदाना।
	परकाया परवेस जो जाना॥
	संकर बचा सिध जो करता।
	कर पसारि जिंह के सिर धरता॥ ४१९।३-४
५. जलन्धर	जस र जलन्धर कुएँ अडारा। २७५।३
६. दंगवै-भीम	जस दंगवै भीम परगाही। १३३।५

कुतुबन प्रेम-काव्यकी रचना कर रहे थे। उनका ध्यान प्रेम-कथाओंकी ओर स्वाभाविक रूपसे जाना चाहिए था। पर आश्चर्यकी बात है कि उन्होने अपने समूचे काव्यमें केवल तीन ही प्रेम-कथाओका उल्लेख किया है—

१. नल-दमयन्ती	नल जानौं भेंटी दमावती। २११।२
	हंस दमावति सेंउ मिरवहि। २४०।७
	को नल आनि दमावति पास। २८२।२
२. भर्तृहरि-पिगला	लिहा भरथरी औ पिंगला। ४०।२
	जस भरथरी भयउ पंथ जोगी, रस पिंगला बियोग। १०५।७
	सुनतहि जइस रे पिंगलहि कीन्हा। २७८।३
३. माधवानल-कामकन्दला	कामाँ जनु माधोनल आई। २११।१
	माधोनल तों रावसि कामा। २७१।२

मिरगावतीमे उन प्रेम-कथाओंमे से एकका भी उल्लेख नही है, जो परवर्ती काव्योंके विषय है।

भौगोलिक परिचय

कथा-साहित्यमे उपलब्ध सामग्रीको सँजोकर कुतुबनने **मिरगावती**की जो कथा उपस्थित की है, उसमे कोई तत्त्व ऐसा नही है जिससे किसी प्रकार भी कल्पना की जा सके कि **पदमावत**की तरह इस कथाकी कोई ऐतिहासिक अथवा अर्ध-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही होगी। किन्तु प्रायः कथाकाराने अपनी कहानियोमे भौगोलिक तत्त्व निरोपित करनेकी चेष्टा की है और अपने समयके प्रसिद्ध स्थानोके साथ अपने कथाके पात्रोका सम्बन्ध जोडा है। इस प्रकारकी सम्भावनाकी कल्पना **मिरगावती**मे भी की जा सकती है।

इस दृष्टिसे देखनेमे ज्ञात होता है कि मिरगावतीकी घटनाएँ केवल तीन स्थानोतक सीमित है—

१—राजकुँवरकी पितृभूमि—चन्द्रागिरि

२—रूपमणिकी पितृमिभू –सुबुद्ध्या

३—मिरगावतीकी पितृभूमि—कचननगर, जिसे कचनपुर या कनकनगर भी कहा गया है।

ये नाम तत्कालीन किन्ही स्थानोके है या काल्पनिक, कहना कठिन है। इन नामोसे प्रसिद्ध किसी स्थानका उल्लेख, जहाँतक हमारी जानकारी है, अन्यत्र कहीं प्राप्त नही है। कुतुबनने इन नगरोकी दूरी दिशा आदिका कोई सकेत नही किया है जिनसे इनकी वास्तविक या काल्पनिक स्थिति ढूँढी जा सके। केवल इतना ही कहा जा सकता है कि चन्द्रागिरि एक ओर था और सुबुद्धया तथा कंचनपुर दूसरी ओर। इनके बीच समुद्र था। वहाँतक पहुँचनेके लिए अगम बन और पर्वत भी पार करने पडते थे। ऐसा जान पडता है कि नौकानयन करनेवाले तत्कालीन साहसिक सार्थवाहोकी कहानियोसे प्रेरणा लेकर इन स्थानोकी कल्पनी की गयी है। कवि कल्पनामे या तो सुदूरपूर्वके वे द्वीप रहे है जो गुप्तोत्तर कालमे भारतीय सम्पर्कमे थे या फिर अरब आदि देश, जिनके साथ मध्य-युगमे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध था।

मानसरोदक और कदलीवन दो अन्य भौगोलिक नाम है जिनका उल्लेख कुतुबनने किया है। ये नाम अन्य काव्योमे भी पाये जाते है। मानसरोवर हिमालय स्थित सुप्रसिद्ध झीलका नाम है और **महाभारत**मे ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतकके वन-प्रदेशको कदलीवन कहा गया है।[१] किन्तु इन भौगोलिक नामोका प्रयोग इन प्रेमाख्यानक काव्योंमे वास्तविक भौगोलिक स्थानोके रूपमे हुआ नही जान पडता। मानसरोदकका उल्लेख इन काव्योमे सर्वत्र स्वच्छ और सुन्दर तालाबोके लिए ही पाया जाता है। **मिरगावती**मे उल्लिखित मानसरोदक चन्द्रागिरिसे केवल सात योजन दूर था। **पदमावत**मे जिस मानसरोदककी चर्चा है वह सिंहल द्वीपमे स्थित था। इसी प्रकार कदलीवन भी किसी वन्य प्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नही जान पडता। सम्भ-

१ वनपर्व, १४६।७५-७९।

वतः ऐसे वनोके लिए, जिनमे सघनताके कारण प्रकाश कठिनतासे या बिलकुल नही पहुँच पाता था, कवियोने कदलीवन या कजरीवनका नाम दिया है। मिरगावती वर्णित कदलीवन समुद्र पार कंचनपुरके मार्गमे कही था।

इस काव्यमे प्रासगिक रूपसे तीन अन्य भौगोलिक नाम आये है।

१. नगर बहुत देखेहु बहु गाऊँ।
राजस्थान औ आनौं ठाऊँ॥ ११७।३
२. राघो बंस जो आहे अयोध्या। १३५।४
३. पुरुखनाथ गुरु आह हमारेउ, गोरखपुर सँउ खेल। १६१।७

राघव वशकी राजधानीके रूपमे अयोध्याकी ख्याति सर्व विदित है। नाथपंथियोंके पीठके रूपमे गोरखपुरको प्रसिद्धि है ही। अतः इन दोनोंका प्रसंगानुसार उल्लेख स्वाभाविक ही है। उनके सम्बन्धमे कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं।

राजस्थान शब्दका प्रयोग कुतुबनने राजधानी सदृश बड़े नगरोंके लिए किया है या उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेषसे रहा है यह बहुत स्पष्ट नहीं है। दोनों ही सम्भावनाएँ अनुमान की जा सकती हैं। यदि उनका तात्पर्य किसी प्रदेश विशेष और उस प्रदेशसे था जिसे हमने स्वतन्त्रता उपरान्त राजस्थान नाम दिया है, तो यह उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्वका है। इस नामका इतना प्राचीन उल्लेख सम्भवतः अन्यत्र नही है।

जीवन-चित्रण

कहानी और कथाओंके आवरणमें कथाकार जो चित्र उपस्थित करता है, उसमेंसे यदि अलौकिकता और असाधारणताके तत्त्वोंको अलग और वर्णनकी अतिशयोक्तियोंकी उपेक्षा कर दी जाय तो कथाका जो स्वरूप बच रहता है, उसे बहुत कुछ रचनाकारके सम-सामयिक समाजका चित्र समझा जा सकता है; क्योंकि कथाकार अपनी कथाको अपने चारो ओरके जीवनसे ही सजाता सँवारता है। कुतुबनको राजाश्रित होनेके कारण तत्कालीन सामन्तवादी जीवनको अत्यन्त निकटसे देखने-सुननेका अवसर मिला होगा और उन्होंने उन्हींको अपनी कथाका उपादान बनाया होगा। इस दृष्टिसे मिरगावतीको देखा जाय तो उसमें आरम्भिक सोलहवी शतीके सामन्तवादी जीवनकी झलक देखनेको मिलती है।

पुत्राकांक्षा भारतीय जीवनमें अति प्राचीन कालसे रहा है। भारतीय समाजमें मोक्ष प्राप्तिके लिए सन्तानका होना आवश्यक समझा जाता था। इस कारण राजारक सभी सन्तानके लिए लालायित रहते थे। कोई भी निःसन्तान नहीं रहना चाहता था और वह पुत्र प्राप्तिके लिए नाना प्रकारके उपाय करता था। प्रस्तुत कथामे पुत्र-प्राप्तिके निमित्त उदारतापूर्वक दान दिये जानेकी चर्चा है। इससे ऐसा अनुमान सहज है कि उन दिनों दानका महत्व अत्यधिक माना जाता था।

बच्चोके जन्मपर ज्योतिषी आवश्यक रूपसे बुलाये जाते थे, यह भी इस कथासे प्रकट होता है। वे राशि-नक्षत्र आदिकी गणना कर नवजात शिशुका भविष्य कथन करते और नक्षत्र-राशिके आधारपर ही शिशुका नामकरण किया करते थे। सम्भवतः यह सब शिशुके जन्मके तत्काल बाद होता था।

बच्चोके लालन-पालनके लिए धाईका रखना आज भी उच्चवगीय समाजमे आवश्यक समझा जाता है। तत्कालीन सामन्तवादी युगमे तो यह और भी अनिवार्य रहा होगा। अतः कुतुबनने धाईकी चर्चा स्वाभाविक रूपसे ही राजकुँवरके लालन-पालनके निमित्त किया है। बच्चेका एक वर्षमे बोलना नैसर्गिक है। पाँच वर्षकी आयुमे शिक्षारम्भ इस देशकी अति प्राचीन परिपाटी है। प्राचीन कालमे पच्चीस वर्ष-की अवस्थातक ब्रह्मचर्य काल माना जाता था और वह शिक्षाका काल होता था। किन्तु कुतुबनने केवल दस वर्ष अर्थात् पन्द्रह वर्षकी अवस्थामे ही शिक्षा समाप्त हो जाने-की बात कही है। सम्भवतः इस कालमे शिक्षाके लिए दस वर्षकी अवधि पर्याप्त समझी जाने लगी थी।

मिरगावतीके अनुसार सामन्तवादी जीवनमे राजकुमारोके लिए धनुर्विद्या (युद्ध-शास्त्र)के अतिरिक्त काव्य, काव्यशास्त्र, सगीत, शालहोत्र, ज्योतिष, धर्म-ग्रन्थ और काम-विज्ञानका अध्ययन आवश्यक था। आखेट, हेगुरि और जुआ तत्कालीन उच्चवर्गके आमोदके साधन थे।

सम्भवतः तत्कालीन समाजमे युवक-युवतियोका स्वच्छन्द मिलन बुरा नही माना जाता था। कदाचित् अविवाहितोके बीच आलिगन-चुम्बनकी भी छूट थी। हम रूपमणिको निःसकोच राजकुँवरको अपने सेजपर बैठनेके लिए आमन्त्रित करते पाते है। मिरगावती भी सुरतिके अतिरिक्त सब कुछ करनेकी छूट राजकुँवरको देती है (**अउर भाउ सब मानहु मोसों, एक भाउ न होइ**। ९१।६)। फिर भी विवाहका उत्तर-दायित्व पितापर था। इसके निमित्त कन्याके पिता अपनेसे उत्तम कुलकी बात सोचते थे और वरके गुण शिक्षा आदिके सम्बन्धमे उहापोह किया करते थे।

उन दिनो विवाहसे पूर्व सार्वजनिक भोज देनेकी प्रथा थी, ऐसा जान पड़ता है। भोजके पश्चात् ब्राह्मण मण्डपमे आते थे और कुल-रीति आरम्भ होता था। वर मुकुट पहनकर बैठता था और कन्या उसके गलेमे जयमाला पहनाती थी। पश्चात् ब्राह्मण लोग जन्मपत्री देखकर भविष्य विचार करते थे; फिर विवाह होता था। वर-वधू गाँठ जोडकर भॉवर देते थे। तदनन्तर कुलके अन्य रीति-आचार होते थे। विवाह आदि हर्षके अवसरोपर नेग देने और धन लुटाने (न्योछवर करने) की प्रथा काफी प्रचलित थी। कन्या पक्ष द्वारा विवाहमे दहेज देनेका भी प्रचलन उस समय था और लोग उत्साहपूर्वक दहेज दिया करते थे।

पारिवारिक जीवनमे एकसे अधिक पत्नी रखना बुरा नहीं माना जाता था। किन्तु सौतोके बीच परस्पर कलह होता रहता था। पति और परिवारके लोग कलह शान्त रखनेकी चेष्टा करते रहते थे।

पतिकी मृत्युके पश्चात् पत्नियोके चितापर जलकर सती हो जानेकी प्रथा प्रचलित थी। यह प्रथा इस देशमे गुप्त कालसे ही देखनेमे आती है। किन्तु इस सम्बन्धमे कुतुबनने अत्यन्त आश्चर्यजनक बात यह कही है कि राजकुँवरके साथ, उसकी पत्नियोके अतिरिक्त उसके निजी सेवक-सेविकाएँ तथा कुछ अन्य नागरिक भी जल मरे। सेवक-सेविकाओ और प्रजाके इस प्रकार स्वामीके शवके साथ जल मरनेकी प्रथा इस देशमे अन्यत्र अज्ञात है। इसकी चर्चा कुतुबनने किस आधारपर किया है, यह इतिहास और समाजशास्त्र की दृष्टिसे शोधकी अपेक्षा रखता है।

सामाजिक और नागरिक जीवनके चित्रणमे सामान्य जनताका चित्र अत्यल्प है। जोगी, यती आदिकी चर्चा और उनकी वेश-भूषाका उल्लेखमात्र किया गया है। गोरखपन्थका सम्भवतः उन दिनो अधिक प्रचार था। शाही शान-शौकतका यत्र-तत्र चित्रण हुआ है। छत्रपति राजा, राजा-रावोका सघटन, युद्धकी तैयारी, जगलमे शिकार, हाथियोका जलूस, राज-सभामे नृत्य-सगीत, अल्प समयमे प्रासादका निर्माण, दूतो द्वारा सन्देश प्रेषण आदि सामन्ती जीवनकी रूपरेखा उपस्थित करते है।

नियतिवाद और ईश्वरमे अटूट विश्वास इस देशमें अनन्त कालसे चला आ रहा है। कुतुबनने भी सर्वत्र ईश्वरेच्छाको सर्वोपरि बताते हुए मनुष्यको उसके सहारेपर चलनेवाला चित्रित किया है। उन्होने विश्वास प्रकट किया है कि काल बलवान है। उससे कोई बच नही सकता। ईश्वरके प्रति उन्होने अटूट श्रद्धा प्रकट की है और अपने पात्रोको लक्ष्य-पूर्तिके लिए उसकी शरणमे जाते दिखाया है। फल प्राप्तिके पश्चात् उसकी भूरि-भूरि प्रशसा की है।

इस प्रकार मध्यकालीन सास्कृति और जीवनके अध्ययनके लिए मिरगावतीमे प्रचुर सामग्री है।

रचनाका उद्देश्य

मिरगावतीकी रचनाके पीछे कुतुबनका क्या उद्देश्य था, यह उन्होने कही स्पष्ट नही कहा है। इस सम्बन्धमे शिवगोपाल मिश्रने निम्नलिखित पंक्तियोंकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है—

मैं रस बात कही रस तोसों, जो रस कीजइ बात।
सो रस रहे दुहूँ जग ताकर, जो रस सौं रँगरात॥ ८९।६-७

और कहा कि उपर्युक्त पक्तियोंसे यह ध्वनित होता है कि कुतुबनका उद्देश्य रसबात या प्रेमकी कथा कहना मात्र था। किन्तु जिस स्थलसे यह उद्धृत किया गया है, वह प्रेम-रससे सम्बन्ध अवश्य रखता है पर ऐसा स्थल नहीं है जो कुतुबनका प्रयोजन व्यक्त करता हो। कुतुबनसे अपेक्षा थी कि वह अपना उद्देश्य या तो आरम्भमे कहेगे या फिर अन्तमे। आरम्भमें उन्होंने केवल इतना ही कहा है—

एक बात अब कहउँ रसाल।
रतन मोति आनउँ भर थाल ॥ १५।१
पढत सुहावन दे जै कानू।
यहि कै सुनत न भावइ आनू ॥ १३।५

अन्तमे कहा है—

बहुत अरथ हहिं इहँ महँ, जो सुधि से काहू बूझ।
कहेउ जहाँ लग पारेउ, जो कछु बहै हियैं मै सूझ ॥ ४३१।६-७

इससे इतना ही जान पडता है कि उन्होने अपने काव्यमे रसभरी बात कही है जो पढने-सुननेमे भली है। इस काव्यमे बहुतसे अर्थ भरे है। उनका समझना-बूझना उन्होने पाठकोपर छोड दिया है। उनके कहनेसे इतना अवश्य जान पडता है कि उन्होने अपनी कथाके माध्यमसे कुछ रहस्य भरी बाते कही हैं।

यह रहस्य भरी और गूढ बाते क्या है, इसका हमे अनुमान करना होगा। सामान्य ढगसे पढनेपर **मिरगावती** प्रेम कहानीसे अधिक कुछ नही है। किन्तु **कुतुबन**-का सम्बन्ध सूफी सम्प्रदायके साधकोसे था। सूफी साधक प्रेमके माध्यमसे परमात्माका नैकट्य प्राप्त करते है। उनका प्रेम निराकार ईश्वरके प्रति होता है, इस कारण उनके लिए उनका वर्णन प्रतीक द्वारा ही सम्भव हो पाता है। वे अपने इस प्रेमका वर्णन लौकिक प्रेम-प्रदर्शनके प्रतीको द्वारा किया करते है। वे अपने इस आदर्श प्रेमके वर्णनमे ईश्वरको नारी रूपमे स्वीकार करते है और लौकिक प्रेमके वर्णनमे वे अलौकिक प्रेमकी झलक देखते है। सम्भवतः **कुतुबनने** अपने उपर्युक्त शब्दोमे इसी दिशाकी ओर इगित किया है और यह कहना चाहा है कि उन्होने अपने इस प्रेमाख्यानके रूपमे सूफियोकी प्रेममूलक साधनाका स्वरूप उपस्थित किया है। दूसरे शब्दोमे लौकिक प्रेमके आवरणमे उन्होने अलौकिक प्रेमको व्यक्त करनेकी चेष्टा की है।

इस दृष्टिसे **मिरगावतीको** देखा जा सकता है। **मिरगावतीको** ब्रह्मका, राजकुँवर-को भक्तात्माका और दूतको गुरुका प्रतीक कहकर सूफी प्रेम-साधनाकी व्याख्या की जा सकती है। किन्तु राजकुँवरका द्विपत्नीत्व इस कल्पनाको खण्डित कर देता है।

कचनपुर पहुँचनेके बाद मिरगावतीके निकट पहुँचनेके मार्गमे राजकुँवरको सात प्रतोलियोको पार करनेकी बात **कुतुबनने** कही है—

सातो पँवरि नाँधि जो आवा।
बेगर बेगर सातउ भावा। २१५।२

रामपूजन तिवारीने इस पक्तिमे सूफी-मार्गके सात मजिलो (लबूदिय्यत, इश्क, जुहूद, मारिफत, वज्द, हकीकत और वस्ल) को देखनेकी चेष्टा की है।[1] पर हमे इसमे वैसा कुछ नही जान पडता।

१. हिन्दी सूफी काव्यकी भूमिका पृ० १७२।

जो भी हो। कुतुबनने मानवकी शृंगार और वियोगकी अनुभूतियोंका सहज और स्वाभाविक चित्रण किया है। उसीमे कविकी सफलता निहित है। कदाचित् उनका अभिप्राय भी यही था—

जोग सिंगार वीर रस अहा। ४३१।२

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

कुतुबनकी मिरगावतीका परवर्ती साहित्यपर क्या और किस प्रकार प्रभाव पडा, कहना कठिन है। परवर्ती मुसलमान कवियोमे **मंझनने** अपनी **मधुमालतीमे मिरगावतीके** पॉच यमक और एक घत्तावाला कड़वक अपनाया है। किन्तु यह **मिरगावतीका** अपना निजस्व नही है। वह इसे **चन्दायनसे** प्राप्त हुआ है। परवर्ती काव्योके आरम्भमे ईश्वर, पैगम्बर, चार यार, गुरु, शाहेवक्त आदिकी जो प्रशसा की परिपाटी पायी जाती है, वह भी **मिरगावतीमे चन्दायनसे** ही आया था। इसी प्रकार नायक अथवा नायिकाके जन्मके पश्चात् ज्योतिषियोका आना, भविष्य बताना, नायकोका नायिकाके विरहमे योगी वेश धारण करना, उनके मार्गमे कठिनाइयोका आना आदि भी ऐसी घटनाएँ है जो **चन्दायनमे** उपलब्ध है, वहाँसे **मिरगावतीमे** आयी हैं। नख-शिख वर्णन और विरह-विदग्ध बारहमासा भी **चन्दायनमे** प्राप्त है। इन्हे परवर्ती कवियोने **मिरगावतीसे** ग्रहण किया होगा, ऐसा मानना क्लिष्ट कल्पना होगी। **जायसीने पद्मावतकी** रचनाका आरम्भ **मिरगावतीकी** रचनाके केवल १८ वर्ष पश्चात् (९२७ हिजरीमे) किया था; **मंझनकी मधुमालतीकी** रचना भी **मिरगावतीसे** केवल ४४ वर्ष पश्चात् (९५२ हिजरीमे) हुई थी। इस अल्प अवधिमे **मिरगावती** इतनी ख्याति प्राप्त कर सकी होगी कि लोग उसे अपना आदर्श बनायें, मानना तनिक कठिन है। किन्तु इनकी कहानियोका जो स्वरूप है वह **चन्दायनकी** कहानीकी अपेक्षा **मिरगावतीके** अधिक निकट है, यह स्वीकार करना होगा।

जहाँतक **मिरगावतीकी** कथाका सम्बन्ध है, उससे मिलती-जुलती कथासे युक्त कुछ परवर्ती काव्य देखनेमे आते हैं। सवत् १७२३ (१६५५ ई०)मे **मेघराज** कविने ओडछा नरेश सुजान सिंहके आदेशसे **मिरगावती कथा** नामक काव्यकी रचना की थी। इस रचनामे **मेघराजने कुतुबनके मिरगावतीका** आश्रय लिया है ऐसा स्पष्ट झलकता है। दोनोकी घटनाओमे अत्यधिक साम्य है। इस काव्यकी कथा इस प्रकार है—

कर्णाटक देशके राजाका पुत्र जब वयस्क हुआ तो राजाने अपने मन्त्रीसे कहा कि राजकुमार पूर्व दिशाके अतिरिक्त किसी भी दिशामें आखेट खेलने जा सकता है। जब राजकुमारको यह बात ज्ञात हुई तो उसने पूर्व दिशामे जानेसे वर्जित किये जानेका रहस्य जाननेका निश्चय किया और लोगोंके मना करनेपर भी वह पूर्व दिशाकी ओर चल पड़ा। कुछ दूर जानेपर एक सुवर्ण मृगी दिखाई पड़ी। उसे राजकुमार और उसके

साथियोने पकडनेकी चेष्टा की तो वह पासके एक सरोवरमें कूद कर अन्तर्ध्यान हो गयी। बहुत ढूँढनेपर भी जब वह न मिली तो राजकुमारने निश्चय किया कि या तो वह उस मृगीको प्राप्त करेगा या फिर वह न मिलनेपर प्राण त्याग देगा। इस निश्चयके साथ वह वही रह गया। उसके साथी उसको इस निश्चयसे न डिगा सके, निदान हारकर लौट आये।

राजाको जब इसकी सूचना मिली तो पण्डितको बुलाकर इसका रहस्य पूछा। पण्डितने बताया कि यह मृगी इन्द्रसभाकी अप्सरा है। एक समय वह उक्त सरोवरमे स्नान करने आयी थी। वहाँ वह मृगोकी क्रीडा देखनेमे इतनी मग्न हो गयी कि उसे समयसे इन्द्रसभामे पहुँचनेका ध्यान ही न रहा। देरसे पहुँचनेके कारण इन्द्रने उसे मृगी हो जानेका शाप दे दिया जिससे वह मृगी हो गयी। अब वह प्रत्येक एकादशीको नारी रूप धारणकर उस सरोवरमे स्नान करने आती है। यदि उस समय उसके वस्त्र चुरा लिये जायॅ तो वह वशमे आ सकती है।

यह सुनकर राजाने उसी सरोवरके किनारे राजकुमारके लिए एक महल बनवा दिया। राजकुमार वही रहने लगा और एक दिन पिताकी बतायी हुई विधिसे उसने उस अप्सराको प्राप्त भी कर लिया। उसे लेकर वह कर्णाटक लौटा। राज्य भरमे आनन्द मनाया गया।

उसी समय एक शिकारीने आकर सूचना दी कि जिस सरोवरके किनारे राजकुमार रहता था, वहाँ एक विशाल वराह सो रहा है। यह सूचना पाते ही राजकुमार अप्सराको रसोई बनानेवाली ब्राह्मणीकी देख-रेखमे छोडकर आखेटके लिए चल पडा। जब ब्राह्मणी रसोईमे व्यस्त थी, मृगावतीने अपना वस्त्र ढूँढ निकाला और पहनकर लुप्त हो गयी। उसके लुप्त हो जानेपर ब्राह्मणी बिलखने लगी। लौटकर राजकुमारने जब उसे बिलखते देखा तो समझ गया कि मिरगावती गायब हो गयी। तत्काल वह राजकुमार योगी बनकर मृगावतीकी खोज मे निकल पडा।

मार्गमे उसे एक युवती मिली। वह नाना प्रकारके व्यजन लेकर राक्षसके आनेकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह स्वय भी राक्षसकी भक्ष होने वाली थी। योगी राजकुमारने उस राक्षसका वधकर युवतीको मृत्युके मुखसे बचा लिया। कृतज्ञतायापन स्वरूप उस युवतीके पिताने उस युवतीके साथ राजकुमारका विवाह कर दिया। कुछ दिनोतक वहाँ रहकर राजकुमार कचनपुरकी ओर चल पडा। रास्तेमे समुद्र मिला जिसे उसने एक सेमलके वृक्षके सहारे पार किया। कचनपुरके निकट उसका एक दैत्यसे सामना हुआ। उसने पहले तो योगी राजकुमारका स्वागत् किया फिर उसे ले जाकर एक गुफामे बन्द कर दिया। युक्तिपूर्वक राजकुमारने दैत्यकी ऑखोमे लोहेकी गरम सलाख घुसेड़ दी जिससे वह अन्धा हो गया। उसे अन्धाकर वह निकल भागा और कचनपुर पहुँचा। वहाँ उसे एक दासीने देखा और मृगावतीको सूचना दी। मृगावतीने उस योगीको बुलवाया और उसके साथ विवाह कर लिया। दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

एक दिन राजकुमारने उस कोठरीको खोल दिया जिसे मृगावतीने खोलनेसे मना किया था। उसमे बन्द दैत्य निकल पडा और राजकुमारके प्राण सकटमे पड गये। किसी-किसी प्रकार उसकी जान बची। तदनन्तर वह मृगावतीको लेकर अपने देशको चल पड़ा। मार्गमे अपनी दूसरी पत्नीको लिया। पुत्र और वधुओको देख कर माता-पिता अत्यन्त प्रसन्न हुए।

सतरहवी शतीके अन्तिम चरणमे द्विज पशुपति नामक बगला कविने भी मिरगावतीकी कथाको किचित परिवर्तनके साथ चन्द्रावली नामसे प्रस्तुत किया है।[1] इसकी कथा इस प्रकार है—

रत्नपुरके राजा चन्द्रसेनके पॉच कन्याऍ थी जो इन्द्रकी सभामे नृत्य किया करती थी। उनमे सबसे छोटीका नाम चन्द्रावली था। वह इन्द्रसे प्रेम करने लगी। फल स्वरूप इन्द्रने उसे शाप दे दिया कि वह बारह वर्षतक हिरणी बनकर रहे। तदनन्तर वनके बीच काम सरोवरमे डूबनेसे उसकी मुक्ति होगी।

पश्चिममे स्थित कनकापुरके राजा सत्यकेतुकी पत्नी सुलक्षणीसे विश्वकेतु नामक पुत्र हुआ। उसने सभी विद्याऍ सीखकर बयालीस सुरों वाला गीत सीखा। एक दिन आखेटके लिए बनमे गया तो उसे एक हिरणी दिखाई दी। उसने उसका पीछा किया। वह भागती-भागती काम सरोवरमे जाकर डूब गयी और अपने पूर्व रूप-को प्राप्त हो गयी। पश्चात् राजकुमारको अपना परिचय देकर अन्तर्धान हो गयी। राजकुमार उसके लिए उसी सरोवरके किनारे बैठा रहा और किसी प्रकार भी घर आनेको तैयार नही हुआ। तब राजाने उसके निवासके लिए वही महल बनवा दिया और सुमति नामक धाईको नियुक्त कर दिया। सुमतिकी देख-रेखमे राजकुमार वहाँ रहने लगा।

चन्द्रावली अप्सरा रूपमे एकादशीके दिन काम सरोवरमे स्नानार्थ आयी तो विश्वकेतुने उसके कपड़े चुरा लिये। फलतः वह उसके हाथ आ गयी और वह उसे लेकर राजधानी लौट आया और उससे विवाह कर लिया। किन्तु एक दिन चन्द्रावली-ने अपने कपड़े प्राप्त कर लिये और उड गयी। जाते समय वह सुमतिसे कहती गयी कि यदि राजकुमार मुझे प्राप्त करना चाहे तो रत्नपुर आये। तदनुसार विश्वकेतु कालिकाकी पूजा कर योगी बनकर निकल पडा। मार्गमे उसे एक वृक्षके नीचे एक व्यक्ति मिला जिसके अनुरोधपर उसने कपूरनगरके वसुदत्तसे युद्ध किया और उसे मार डाला। कुछ दिनों वहाँ रहकर वह आगे बढा।

एक वनमे राजकुमारकी भेंट चित्रमाला नामक युवतीसे हुई जिसे एक राक्षसने बन्दी कर रखा था। राजकुमारने समस्यापूर्ति द्वारा राक्षसको पराजित किया फिर उसे अन्धा बनाकर मार डाला। इससे प्रसन्न होकर युवतीके पिता उदयचन्द्रने उस युवती-का विवाह राजकुमारसे कर दिया।

---

१. इसलामी बगला साहित्य, पृ० ३४-४०।

आगे बढनेपर उसकी भेट एक गडरियेसे हुई जो अपनेको मेषाम्बर कहा करता था। उसने अनेक राजकुमारोको बन्दी कर रखा था। विश्वकेतुने उसका आतिथ्य स्वीकार किया फिर उसे अन्धा बनाकर आगे चला और कचननगर पहुँचा। वहाँ रुद्रभर्ता नामक योगीसे उसने दीक्षा ली फिर अनेक कष्टोपर विजय प्राप्त करता हुआ मणि प्राप्त कर चन्द्रावलीके पास पहुँचा। दासियोने उसके आनेकी सूचना दी। उसने पहले उसकी परीक्षा ली फिर उसका स्वागत् किया कुछ दिनो पश्चात् वह चन्द्रावली और रूपमालाको लेकर अपने देश लौट आया।

असमी कवि **द्विजरामने** भी कामरूपकी बोलीमे इस कथाकी रचना **मृगावती चरित** नामसे की है।[१] उसकी कथा भी **कुतुबनकी मिरगावतीसे** मिलती-जुलती है।

मृगावती नामसे एक अन्य रचना बगलामे प्राप्त है, जिसकी रचना उन्नीसवीं शतीके मध्यमे **मुहम्मद खातिर** नामक कविने की है। नाम साम्यके कारण लोगोका अनुमान है कि इसकी कथा भी **कुतुबनके मिरगावतीके** अनुसरणपर लिखी गयी होगी। किन्तु यह कथा हमे उपलब्ध नही हो सकी। अत नही कहा जा सकता कि इसकी कथा भी वही है अथवा उससे सर्वथा भिन्न है।

---

१ हेमचन्द्र गोस्वामी, असमीय पुथीर विवरण, १९३० ई०, पृ० १५२–१५३।

सामग्री और सम्पादन

उपलब्ध प्रतियाँ

मिरगावतीकी अबतक निम्नलिखित छः प्रतियाँ प्रकाशमे आयी है और ये सभी किसी-न-किसी रूपमे खण्डित है :—

दिल्ली प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीमे देशी कागजपर लिखी हुई है। इसमे ९० पत्र थे जिसमेसे आरम्भका एक पत्र अनुपलब्ध है। इस प्रकार ज्ञात प्रतियोमे यह सबसे कम खण्डित है। इसके प्रत्येक पृष्ठपर १६ से १९ पक्तियाँ है। इस प्रतिमे ४३० कडवक रहे होगे जिनमेसे ४२६ उपलब्ध है। इस प्रतिके हाशियेपर यत्र-तत्र मूल लिखावटसे भिन्न लिखावटमे पाठान्तर अकित हैं। कही शब्द मात्र है, कही पक्तियाँ हैं और एक-आध स्थल पर पूरे कडवक भी हैं। अनुमान होता है कि प्रति तैयार होनेके बाद किसी समय किसी व्यक्तिने किसी अन्य प्रतिसे इसका पाठ मिलाया है और जो अन्तर उसकी दृष्टिमे आये, उन्हे उसने अकित कर दिया। इस प्रकार यह प्रति दो प्रतियोका पाठ प्रस्तुत करती है। हाशियेवाले पाठ इस सस्करणमे जहाँ भी ग्रहण किये गये है, वहाँ उनका उल्लेख दिल्ली मार्जिनके रूपमे किया गया है।

इस प्रतिमे आरम्भिक पत्र न होनेसे सिरनामा अज्ञात है। अन्तमे भी लिपिकारने कोई पुष्पिका नही दी है। इससे ग्रन्थका नाम, लिपिकाल, लिपिक आदिका कुछ भी परिचय नही मिलता। हाँ, अन्तिम पत्रके पीठवाले पृष्ठपर यह महत्त्वपूर्ण सूचना फारसी लिपिमे अकित है कि 'यह प्रति अकबराबाद (आगरा) निवासी मोमिन सह्हाफ (जिल्दबन्द)से आठ आनेमे क्रय की गयी। क्रय अधिकारसे इसके स्वामी सन् ११२१ हिजरी (१७०९–१० ई०)मे काजी मुहम्मद आरिफके पुत्र अजीजुल्लाह है।'[1] इसी आशयकी पंक्ति उपलब्ध आरम्भके पृष्ठके ऊपरी कोनेपर भी लिखी हुई है किन्तु उसका कुछ अश खण्डित है।[2] इन वाक्योसे इतना तो निश्चित रूपसे

---

१. मूल लेख है—खरीद· शुद ब दस्त आनः अज मोमिन सहाफ अकबराबादी मालिकः बा लबीअ अजीजुद्दीन बिन काजी मुहम्मद आरिफ दर सन· ११२१ हिजरी। इसमें जो तिथि दी है उसके अन्तिम दो अकोंके कुछ अश नष्ट हो गये हैं। सैयद हसन अस्करीने उसे ११११ पढ़ा है (जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५३) किन्तु अन्यत्र यह तिथि स्पष्ट ११२१ है।

२. उपलब्ध अश है—" 'किताब यक खरीदः शुद अज मोमिन शहाफ अकबराबादी" ,, दर सन· ११२१।

ज्ञात हो ही जाता है कि यह प्रति अठारहवी शताब्दीके प्रथम दशकसे बहुत पहले की है। लेखन शैलीके आधारपर **सैयद हसन असकरी**का अनुमान है कि यह प्रति सोलहवी शतीके प्रारम्भमे तैयार की गयी होगी।[१] यदि उनका यह अनुमान ठीक है तो यह प्रति काव्य रचनाके दस-बीस वर्षके भीतर ही तैयारकी गयी होगी। इतनी प्राचीनता न स्वीकार करते हुए भी कागजकी बदरंग स्थिति और लिपि दोनोको दृष्टिमे रखकर हमारी धारणा है कि यह प्रति सोलहवी शतीके अन्त अथवा सतरवी शतीके प्रारम्भकी है।

यह प्रति भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोके विशेषज्ञ **जिआउद्दीन अहमद देसाई**के पास है। उन्हे यह प्रति १९५४ ई० मे दिल्लीके किताब-घर नामक पुस्तक सस्थानके रहमत कुतुबीसे प्राप्त हुई थी। ऐसा कहा जाता है कि उनके पास आनेसे पहले यह प्रति दिल्लीके सुप्रसिद्ध राजनीतिक नेता हकीम अजमल खाँके निजी पुस्तकालयमे थी। इस प्रतिको प्रकाशमे लानेका श्रेय पटना कालेजके इतिहासके भूतपूर्व प्राध्यापक (अब काशीप्रसाद जायसवाल शोध सस्थानके निदेशक) **सैयद हसन असकरी**को है। उन्होने इसके आधारपर एक लेख **जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी**मे प्रकाशित किया है।[२]

मनेरशरीफ प्रति—यह प्रति फारसी लिपिकी नस्तालीक शैलीकी ओर झुकती हुई नस्ख शैलीमे लिखी हुई है। लिपि शैलीसे अनुमान होता है कि यह प्रति सोलहवी शतीमे किसी समय तैयार की गयी होगी। इस प्रतिके कुल ३२ पत्र (६४ पृष्ठ) उपलब्ध है। यह मूलतः **मौलाना दाऊद** कृत **चन्दायन**की प्रति है। उसके प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर **मिरगावती**के कडवक लिखे गये है। ये कडवक भी उसी हस्तलिपिमे है जिसमे **चन्दायन**की प्रति तैयार की गयी है। उपलब्ध पृष्ठोंमेसे एक पृष्ठका हाशिया रिक्त है जिसके कारण इसमे केवल ६३ कडवक प्राप्त है। उपलब्ध पत्रोमेसे कुछके बाये हाशियेके ऊपर पत्र सख्या अंकित है। ये पत्र संख्या १४८, १४९, १५२-१५७, १५९-१६१ है, शेषपर कोई संख्या नही है। इन रिक्त पत्रो पर **असकरी**ने अपने अनुमानके आधार-पर कहीं अँगरेजी और कही फारसी अकोंमे पत्र सख्या अकित कर दिये है; किन्तु उनके अनुमानित ये पत्राक भ्रामक है। अन्य सूत्रोके साक्ष्यसे ज्ञात होता है कि उपलब्ध पत्रोकी वास्तविक सख्या १४४-१४९, १५२-१५७, १५९-१६४, १६८-१७४, १७६-१८१ है।

यह प्रति मनेरशरीफ (जिला पटना)के खानकाहके सज्जादनशीन शाह इनायतउल्लाहके सग्रहमे है। उनके भाई मौलवी मुरादुल्लाहकी कृपासे वह **सैयद हसन असकरी**को प्राप्त हुई थी और उसके आधार पर उन्होने **चन्दायन** और **मिरगावती**के सम्बन्धमे एक लेख प्रकाशित किया था।[३]

---

१. जर्नल आफ बिहार रिसर्च सोसाइटी, खण्ड ४१, पृ० ४५४।

२ वही, पृ० ४५२–४८७।

३. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १६–२३।

एकडला प्रति—यह प्रति सचित्र ओर कैथी लिपिमे लिखी हुई है। इसके प्रत्येक पत्र पर एक ओर **मिरगावतीका** एक कडवक अर्थात् सात पंक्तियाँ है; दूसरी ओर उसी कडवकके आधार पर अपभ्रश शैलीमे अकित चित्र है। इन चित्रोकी शैलीके आधारपर अनुमान किया जाता है कि यह प्रति सतरहवी शतीके आरम्भमे किसी समय तैयार की गयी होगी। किन्तु इस प्रतिका जो पाठ आज उपलब्ध है, वह इतना प्राचीन नही है। वह उन्नीसवी शताब्दीके पूर्वार्द्धका है। एकडला (जिला फतहपुर, उत्तर-प्रदेश)के मनसबदार हनुमानदीनने, जिनके वशधरोसे यह प्रति प्राप्त हुई है, सवत् १८९० (१८२८ ई०)के आस पास अपने सग्रहके हस्तलिखित ग्रन्थोका पुनर्निरीक्षण कराया था। उस समयतक कदाचित् यह प्रति जीर्ण हो चुकी थी। अतः चित्रोकी रक्षाके निमित्त उन्हे उस समय मोटे खुरदुरे कागजपर चिपका दिया गया। फलस्वरूप उसपर लिखा पाठ छिप गया। तो उन्होने इस नयी पीठपर नये सिरेसे **मिरगावती**-का पाठ अंकित कराया। पूर्ववर्ती पाठके सम्बन्धमे इस कारण अधिक जानकारी नही प्राप्त की जा सकती। उत्तरवर्ती प्रति पूर्ववर्ती प्रतिसे ही तैयार की गयी है या किसी अन्य प्रतिसे इसके जाननेका भी कोई साधन नही है। उत्तरवर्ती प्रति दो व्यक्तियों द्वारा तैयार की गयी जान पडती है। ये लिपिक सम्भवतः अधिक पढ़े लिखे और सतर्क नहीं थे। इस कारण इस प्रतिमे पाठ-दोष तो अधिक है ही, अनेक स्थलोपर पक्तियाँ रिक्त हैं, जो इस बातकी द्योतक हैं कि वे या तो अपने आदर्श प्रतिको पढ न सके या फिर आदर्श प्रति ही उसी रूपमे खण्डित अथवा भ्रष्ट थी।

यह प्रति १९५४ ई०के अगस्तमे प्रयाग विश्वविद्यालयके प्राध्यापक **शिवगोपाल मिश्रको** मूल स्वामीके वशधर ओमप्रकाश सिंह और राजेन्द्रपाल सिंहसे प्राप्त हुई थी और अब यह काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमे है। मूल रूपमे इस प्रतिके २५३ पत्र **शिवगोपाल मिश्रको** मिले थे। भारत कला भवनमे केवल २५० पत्र हैं।[1] कहा जाता है कि **शिवगोपाल मिश्रने** शेष तीन पत्र अपने किसी कलाप्रेमी मित्रको दे दिये। भारत कला भवनमे उपलब्ध पत्रोमे तीनमे केवल चित्र है और उनके पृष्ठ भाग रिक्त हैं।[2] शेषमेसे एकपर केवल एक अस्पष्ट पक्ति अकित है।[3] इसके अतिरिक्त एक ही कडवक (कडवक १८७) दो पत्रोंपर अकित है।[4] इस प्रकार भारत कला भवनमे उपलब्ध पत्रोंसे इस प्रतिके २४५ कडवक ज्ञात होते है। अनुपलब्ध तीनो पृष्ठ सम्भवतः लेखाकित थे। इस प्रकार इस प्रतिसे उपलब्ध कडवकोकी सख्या २४८ है।[5]

---

१. भारत कला भवनकी आगत पजिका सख्या ७७४२–७९९१।

२. वही, सख्या ७८६५, ७८६८, ७८७४।

३. वही, सख्या ७९५६।

४. वही, सख्या ७८४६, ७९३६।

५. सम्मेलन संस्करणमें शिवगोपाल मिश्रने जो पाठ प्रस्तुत किया है, उससे ऐसा जान पड़ता है कि उन्होंने इस प्रतिसे २५१ कड़वक दिये हैं। वस्तुतः उसमें एकडला प्रति कथित तीन कड़वक (सम्मेलन सस्करण, कड़वक ७२, ८५ और ११०) बीकानेर प्रतिके हैं; और एक कड़वक (वही,

इस प्रतिके ज्ञात होनेकी सर्व प्रथम सूचना **कैलाश कल्पितने** प्रयागसे प्रकाशित दैनिक **अमृत पत्रिका** (३ सितम्बर १९५५) मे दी थी । तदनन्तर **शिवगोपाल मिश्रने** इस प्रतिके आधारपर कई लेख प्रकाशित किये ।

बीकानेर प्रति—यह प्रति मटमैले रगके कागजपर कैथी लिपिमे लिखी गयी है । इसके लिखनेमे काली और लाल दोनो प्रकारकी स्याहियोका प्रयोग किया गया है । आरम्भके एक और बीचके तीन-चार पत्रोको छोडकर सर्वत्र घत्ता लिखनेके लिए लाल स्याहीका प्रयोग हुआ है । इस प्रतिमे मूलत ८६ पत्र है, किन्तु **मिरगावती** ७७ पत्रोमे समाप्त हो जाती है । तदनन्तर **गंग** कृत **बारहमासा** प्रारम्भ होता है जिससे हमे कोई प्रयोजन नही है । इस प्रतिके प्रत्येक पृष्ठपर २१ पक्तियॉ अर्थात् तीन कडवक है । अन्तिम पृष्ठ पर केवल एक कडवक है । इस प्रकार इस प्रतिके अनुसार **मिरगावती**मे ४५७ कडवक हैं । किन्तु इस प्रतिके केवल ५९ पत्र उपलब्ध है । पत्र १-५, १६, १८, २०, २४-२७, ५६[1], ५७ तथा ६२ नही है । इस कारण इस प्रतिके केवल ३१३ कडवक अर्थात् कडवक ३१-३६, ९७-१२२, १०९-११४, १२१-१३८, १६३-३१२, ३१९-३३६, ३४३-३६६ और ३७३-४५७ उपलब्ध है ।

शिवगोपाल मिश्रकी धारणा है कि यह प्रति प्राचीन है । उनका यह भी कहना है कि प्रति अन्तसे पूर्ण है फिर भी उसमे लेखक (सम्भवतः उनका तात्पर्य लिपिकसे है)का नाम एव लेखन काल नही पाया जाता ।[2] किन्तु वस्तुतः ऐसी बात नहीं है । अन्तमे पुष्पिका उपलब्ध है, जिसे **शिवगोपाल मिश्रने** स्वय दो स्थलोपर उधृत किया है ।[3] भूमिकामे उधृत पाठके अनुसार पुष्पिका इस प्रकार है—**एती मृगावती कथा समए समांपती सुभ असुभ सी गुरु प्रसाद म सुसमती । समयेअ नम सर्वन बदीय ।**

कडवक ९०), जिसे उन्होने बीकानेर प्रतिका बताया है, एकडला प्रतिका है । इस प्रकार उक्त सस्करणमें एकडला प्रतिके २४९ कडवक ज्ञात होते है । सम्मेलन सस्करणमें एकडला प्रतिके कहे गये कडवकोंकी भारत कला भवनमे उपलब्ध सामग्रीसे तुलना करनेपर ज्ञात होता है कि भारत कला भवनकी सामग्रीके अतिरिक्त सस्करणमे चार कडवक (प्रस्तुत सस्करणके कडवक ७, ८, ९ और ६४) ऐसे हैं जो भारत कला भवनमे उपलब्ध नही है । इनमेंसे तीन कडवक तो उन पत्रोंके हो सकते है जिन्हे शिवगोपाल मिश्रने अपने मित्रको दे दिये हैं । शेष एक कडवक उन्हें कहॉसे मिला या उन्हे एकडला प्रतिका कहनेका क्या कारण है, यह उन्होंने कही नही बताया है । हो सकता है उन्हे इस प्रतिके २५४ पत्र मिले हों और किसी भूलके कारण वे २५३ होनेकी बात कहते हों । अपने मित्रको तीनके स्थानपर चार पत्र दिये हों । इस प्रकार एकडला प्रतिसे उपलब्ध कडवकोंकी सख्या २४९ है ।

१ शिवगोपाल मिश्र और दीनानाथ खत्री, दोनोने पृष्ठ ५३ के लुप्त होनेकी बात कही है । किन्तु वस्तुत. पत्र ५६ लुप्त है । प्रतिमें जो पत्र, पत्र ५६ के स्थानपर उपलब्ध है वह वस्तुत पत्र ५३ है और किसीके प्रमादसे पत्र ५६ के स्थानपर रख गया है । यह काव्य प्रवाह और दिल्ली प्रतिके देखनेसे प्रकट होता है ।

२. कुतुबन कृत मृगावती, पृ० २ ।

३. वही, पृ० ३ तथा २०४ ।

अती मुखी सोमावसरे।[1] अन्तमे उन्होने इससे तनिक भिन्न पाठ दिया है—**ऐती म्रिगावती कथा समऐ समापतिः सुभ असुभ सी गुरु प्रसादम सुसमती । समांऐअनम सर्वन बदीय । अतीमुखी सोमावसरे**।[2] दीनानाथ खत्रीने भी इस पुष्पिकाको अपने लेखमे उध्दृत किया है। वहाँ इन दोनोसे कुछ भिन्न पाठ है—**एती मृगावती कथ समए संमापती सुभ असुसी गुरु प्रमादम स्सभती । समाये अनम सर्वन बदीय ।। अतीमुखी सोमावसरे**।।[3] हमे मूल प्रति देखनेको न मिल सकी, इसलिए हम कहनेमे असमर्थ हैं कि वस्तुत· पाठ क्या है। किन्तु इन पाठोपर तनिक ध्यान देनेपर स्पष्ट हो जाता है कि वे अत्यन्त भ्रष्ट हैं। यह भ्रष्टता कैथीलिपि जनित और लिपिक-जनित दोनो ही हो सकती है। इन पक्तियोमे वस्तुतः क्या लिखा है, इसे जानने समझनेकी किसीने भी चेष्टा नही की। इन पंक्तियोमे तीन बाते कही गयी हैं—

(१) अति मृगावती (म्रिगावती) कथ (कथा) समए समापतिः (समापती, संमापती) अर्थात् इति मृगावती (म्रिगावती) कथा समय समाप्तिः।

(२) सुभअसुसी (असुभसी) गुरुप्रसादम (गुरु प्रसादम) अर्थात् शुभ आशीशे गुरु प्रसादम् (गुरुके प्रसादरूपी शुभ आशीशसे)

(३) सुसमती (सुसमती) समाये (समाए) अनम सर्वन बदीय अतिमुखी सोमावसरे।

यही अन्तिम पंक्ति सबसे महत्त्वकी है और इसमे लिपि-काल अकित है। किन्तु इसका पाठ समुचित रूपसे स्पष्ट नही है। पहला शब्द **सुसंवते** जान पडता है। दूसरा शब्द सम्भवतः **समये** है जिसका अर्थ होता है **वर्ष**। तीसरे शब्द **अनम**का पाठ शुद्ध है अथवा वह किसी शब्दका विकृत रूप है, कहना कठिन है; किन्तु इतना तो निसदिग्ध है कि वह वर्षका द्योतक है। हो सकता है यहाँ अक रहा हो जो न पढ़ा जा सका हो; यह भी सम्भव है कि अक्षर सकेतसे वर्षका बोध कराया गया हो। तीसरी सम्भावना यह भी है कि गौरव (बार्हस्पत्य) वर्षके नामोमेसे कोई नाम हो। किन्तु तीनो ही दृष्टिसे हम किसी वर्षका अनुमान कर पानेमे असमर्थ रहे है। आगे **सर्वन** स्पष्टतः **श्रावण** है, **बदीय**के सम्बन्धमे कुछ कहना ही नही, वह **कृष्णपक्ष**का पर्याय है। **अतिमुखी** शब्दका प्रयोग **तृतीया**के लिए हुआ जान पडता है। तदनन्तर **सोमवासरे** स्पष्ट है। इस प्रकार इस पुष्पिकाके अनुसार **अनमं** (?) वर्षके **श्रावण कृष्ण तृतीया**को यह प्रति लिपिबद्ध हुई थी। अनम वर्ष क्या है यह अधिक उहापोहकी अपेक्षा रखता है। **शिवगोपाल मिश्र** इस प्रतिको जितना प्राचीन समझते है, यह नही है। हमारी धारणा है कि यह किसी भी अवस्थामें अठारहवी शतीसे पूर्वकी प्रति नहीं है।

यह प्रति बीकानेरके अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालयके हिन्दी विभागमें है। वहाँ यह हस्तलिखित प्रति संख्या ११२ के रूपमें अंकित है। इसकी ओर ध्यान आकृष्ट

---

१. वही, पृ० ३।

२. वही, पृ० २०४।

३. राजस्थान भारती, वर्ष २, अक २ (१९४९) पृ० ४४।

करनेका श्रेय **दीनानाथ खत्रीको** है। उन्होने **कुतुबनकी मृगावतीकी एक महत्त्वपूर्ण प्रति** शीर्षकसे इसका परिचय १९४९ ई० मे **राजस्थान भारतीमे** प्रकाशित किया था।[1]

काशी प्रति—यह प्रति कैथी लिपिमे काली स्याहीसे ४½" × ६" आकारके कागजपर केवल एक ओर लिखी गयी बतायी जाती है। इसके केवल ७ पत्र उपलब्ध कहे जाते है जिनपर पत्राक १४६ से १५२ तक अंकित है। इनमे २५ कडवक (प्रस्तुत सस्करणके कडवक २११ से २३५ तक उपलब्ध है। यह प्रति भारत कला भवन, काशीमे सुरक्षित कही जाती है किन्तु चेष्टा करनेपर भी हमे वह देखनेको प्राप्त न हो सकी। इस प्रतिको **परशुराम चतुर्वेदीने** देखा था। सम्भवतः **शिवगोपाल मिश्रने** भी इस प्रतिको देखा है। उनका कहना है कि यह प्रति अत्यन्त असावधानीसे तैयार की गयी है और उसमे अनेक पक्तियाँ छूटी हुई है।

इसकी दो आधुनिक प्रतिलिपियाँ उपलब्ध है। एक प्रति तो भारत कला भवनमे ही है। सम्भवतः यह प्रतिलिपि पहले नागरी प्रचारणी सभाके पास थी। दूसरी प्रति अनूप राजकीय संस्कृत पुस्तकालय बीकानेरमे है।

इस प्रतिसे दस कडवक **परशुराम चतुर्वेदीने** अपने **सूफी काव्य संग्रहमे** उधृत किये है।[2] उन्हे इस प्रतिकी जानकारी देनेके साथ-साथ **मिरगावतीके** अश प्रकाशमे लानेका भी श्रेय प्राप्त है।

चौखम्भा प्रति—यह प्रति एकडला प्रतिकी तरह ही सचित्र और कैथी लिपिमे लिखी हुई थी। यह प्रति १९०० ई० के आस-पास चौखम्भा (काशी) स्थित **भारतेन्दु हरिश्चन्द्रके** निजी पुस्तकालयमे थी। वही उस समय नागरी प्रचारणी सभाकी ओरसे हस्तलिखित ग्रन्थकी खोज करनेवाले लोगोने देखा था और उसका विवरण तैयार किया था जो उस वर्षके **खोज रिपोर्टमे** प्रकाशित है। इस रिपोर्टके प्रकाशनके पश्चात् वहाँसे यह प्रति किसी समय गायब हो गयी और अब उसके अस्तित्वका कोई पता नही है। आज इसकी जानकारीका साधन एकमात्र **खोज रिपोर्टमे** दिया गया विवरण ही है।

इस विवरणके अनुसार इसमे ८" × ६" के ३५० पत्र थे और प्रत्येक पत्र पर १८ पक्तियाँ थी। उसमे चित्र और काव्यका अकन किस ढगसे हुआ था इसका कोई उल्लेख नही है। **रिपोर्टमे** आदि-अन्तसे ५ कडवक (प्रस्तुत सस्करणके कड़वक ७, ८, ९, १३ और ४२८) उधृत किये गये है। उसके देखनेसे अनुमान होता है कि (प्रस्तुत सस्करणके अनुसार) आरम्भके ६ और अन्तके ४ कडवक नही थे।

ग्रन्थका स्वरूप

बीकानेर प्रतिमे काव्य ७७ पत्रोमे समाप्त हुआ है। प्रत्येक पत्रपर समान रूपसे छः कडवक लिखे गये है। अन्तिम पत्रपर केवल एक कडवक है। इस प्रकार इस

१. वर्ष ३, अक २ (मार्च १९४९), पृ० ३९-४४।

२. सूफी काव्य सग्रह, सवत् २००७, पृ० ११०-११७।

प्रतिके अनुसार काव्यमे ४५७ (७६ × ६ + १) कडवक थे। मनेर प्रतिका उपलब्ध अंश १४४ पत्रसे आरम्भ होता है। प्रत्येक पत्रपर दोनों ओर एक एक कडवक लिखा गया है। इसके अनुसार १४४वे पत्रके पृष्ठपर कडवक २८७ होना चाहिये। और वस्तुतः हम पाते हैं कि बीकानेर प्रतिका २८७वॉ कडवक और मनेर प्रतिके पृष्ठ १४४अ का कडवक एक ही है। इस समताको देखते हुए अनुमान किया जा सकता है कि मनेर प्रतिमे भी बीकानेर प्रतिके समान ही ४५७ कडवक रहे होंगे। किन्तु मनेर प्रति-की उपलब्ध सामग्रीमे एक पृष्ठ रिक्त है और एक कडवक ऐसा है जो बीकानेर प्रतिमे नही है। इस तथ्यके प्रकाशमे अनुमान करनेकी गुंजाइश है इस तरहके अन्तर मनेर प्रतिमे आगे पीछे भी रहे होगे। अतः निश्चित रूपसे नही कहा जा सकता कि मनेर प्रतिमे बीकानेर प्रतिके समान ही कडवक रहे होगे।

दिल्ली प्रतिमे क्रमबद्ध पाठके रूपमे ४२६ कडवक है; आरम्भका अश खण्डित है। बीकानेर प्रतिमे आरम्भिक पत्रोमे पत्र ६ उपलब्ध है। पत्र ६ का पहला कडवक उक्त प्रतिकी गणनाके अनुसार ३१वॉ कडवक है। इस आधारपर बीकानेर प्रतिके ३१वें कडवकके साथ दिल्ली प्रतिके समान कडवक को सन्तुलित करनेसे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिका उपलब्ध आरम्भिक पृष्ठ बीकानेर प्रतिके अनुसार चौथे कड़वककी अन्तिम दो पक्तियोके साथ आरम्भ होता है। इससे ज्ञात होता है कि दिल्ली प्रतिमे आरम्भके चार कडवक नही हैं और दिल्ली प्रतिके अनुसार काव्यमें केवल ४३० कडवक थे।

इस प्रकार बीकानेर और दिल्ली प्रतियोमे काव्यके आकारमे २७ कडवकोका अन्तर है। अतः विचारणीय हो जाता है कि दिल्ली प्रतिमे इन कडवकोंकी छूट है या बीकानेर प्रतिके अधिक कडवक अतिरिक्त और प्रक्षिप्त है।

प्रथम तीस कडवक बीकानेर प्रतिमे नही है और इस अशके २६ कडवक दिल्ली प्रतिमें उपलब्ध है। आरम्भका एक पत्र अप्राप्य है। इस अप्राप्य पत्रमे बीकानेर प्रतिके अनुसार चार कडवक रहे होगे यह हमने ऊपर मान लिया है। इस प्रकार यहॉ-तक दोनों प्रतियॉ समान है। आगे यह समानता ३४वे कडवकतक चलती है। दिल्ली प्रतिका ३५वॉ कडवक बीकानेर प्रतिमे दो कडवको (कडवक ३५-३६)[१] मे विभक्त मिलता है। कडवक ३५ मे आरम्भकी चार और कडवक ३६ मे अन्तिम तीन पक्तियॉ हैं। विषय और कथा प्रवाहको देखते हुए जान पडता है कि इस स्थलपर मूलतः बीकानेर प्रतिके ही दोनों कडवक रहे होगे। अनुमान होता है कि दिल्ली प्रतिकी आदर्श कोई ऐसी प्रति थी जिसके प्रत्येक पृष्ठपर एक ही कडवक था। इस कारण लिपिककी दृष्टि एक पृष्ठसे दूसरे पृष्ठपर फिसल गयी और उसने केवल पक्तियोंका ध्यान कर अगले कडवकको तीन पक्तियाँ पहले कडवककी लिख चुकी चार पंक्तियोंके नीचे लिख दिया। इस प्रकार वह एक कडवक चूक गया। अतः हमारी धारणा है कि इस स्थलपर बीकानेर प्रतिके दोनों कडवक ग्रहण किये जाने चाहिये।

---

१ सम्मेलन सस्करण, कडवक २१-२२।

आगे बीकानेर प्रतिके कडवक ३७ से ९६ तक अनुपलब्ध है। इस अशके रूपमे दिल्ली प्रतिमे केवल कडवक ३६-८४ है। यहाँ यह बात सामने आती है कि बीकानेर प्रतिमे अनुपलब्ध ११ कडवक दिल्ली प्रतिमे भी नही है। ये अनुपलब्ध कड़-वक, कडवक ३७ और ९६ के बीच किन स्थलोके थे और वे दिल्ली प्रतिमे छूट गये हैं या बीकानेर प्रतिमे अतिरिक्त और प्रक्षिप्त थे, कहा नही जा सकता। जहाँतक पाठ प्रवाहका सम्बन्ध है दिल्ली प्रतिमे किसी प्रकारका कोई अभाव लक्षित नही होता। ऐसी अवस्थामे यही अनुमान होता है कि बीकानेर प्रतिके ये अनुपलब्ध कडवक अति-रिक्त और प्रक्षिप्त रहे होगे।

पुनः दिल्ली प्रतिके कडवक ८५-१०९ बीकानेर प्रतिके कडवक ९७-१२२[1] के समानान्तर चलते है और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कड़वकोकी पूर्ति बिना किसी प्रकारकी कमी-बेशीके करते है। किन्तु बीकानेर प्रतिका कड़वक १०९[2] दिल्ली प्रतिमे नियमित क्रममे न होकर मार्जिनमे प्रथम पक्ति विहीन अकित है। सूक्ष्म परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रतिका कड़वक ९७ बीकानेर प्रतिमे दो कड़वको (कड़वक १०९-११०)[3] मे विभक्त है। कड़वक १०९ मे दिल्ली प्रतिकी पक्ति १ के साथ ६ नयी पक्तियाँ है और कड़वक ११० मे पहली पक्ति नयी है और शेष दिल्ली प्रतिकी पक्तियाँ २-७ है। अतः स्पष्ट है कि दिल्ली प्रतिके माजिनमे कडवक ९७ के पाठान्तर स्वरूप बीकानेर प्रतिके कड़वक १०९ की पक्ति २-७ है। दिल्ली प्रतिके कडवक ९७ की पक्तियाँ जिस रूपमे दो कड़वकोमे विभक्त है, उनसे लक्षित होता है कि विस्तारके निमित्त उन्हे यह रूप दिया गया है। बीकानेर प्रतिके कडवक ११० मे दिल्ली प्रतिके कड़वक ९७ के प्रथम पक्तिके स्थानपर जो पक्ति जोडी गयी है, वह इस बातको स्पष्ट रूपसे व्यक्त करती है। दिल्ली प्रतिका कडवक ९७ अपने आपमे पूर्ण है और बीकानेर प्रतिकी पक्तियोके अभावमे काव्यप्रवाहमे कोई कमी नही आती। अतः हमारी धारणा है कि बीकानेर प्रतिका यह अश प्रक्षिप्त है और मूल पाठमे अग्राह्य है।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक १२३-१२९[4] के बीचके कडवकोमे केवल दो कडवक (कडवक १२४ और १२७)[5] दिल्ली प्रतिमे कडवक ११० और १११ के रूप-मे उपलब्ध है। बीकानेर प्रतिके कडवक १२३, १२५, १२६[6] दिल्ली प्रतिमे है ही नही। कडवक १२८[7] की प्रथम दो पक्तियो और कडवक १२९[8] की पक्ति १,४ ५,६ और ७

१. सम्मेलन सस्करण, कडवक ४४-६९।
२. वही, कडवक ५६।
३. सम्मेलन सस्करण कडवक ५६-५७।
४. वही, कडवक ७०-७६।
५. वही, कडवक ७१-७४।
६. वही, कडवक ७०,७२,७३।
७. वही, कडवक ७५।
८. वही कडवक ७६।

को मिलाकर एक पूर्ण कड़वक दिल्ली प्रतिके मार्जिनपर अकित है समूचे अशके परीक्षणसे प्रकट होता है कि बीकानेर प्रतिके कडवक १२३, १२५ और १२६ प्रसगानुरूप अनावश्यक है। दिल्ली प्रतिके मार्जिनमे जो कडवक अकित है वह अपने आपमे पूर्ण है, उसे बीकानेर प्रतिमे दो कडवकोमे बॉटकर अनावश्यक विस्तार किया गया है। अतः कडवक १२३, १२५, १२६ और कडवक १२८ की पक्ति ३-७ और कडवक १२९ की पंक्ति २-३ हमारी सम्मतिमे प्रक्षिप्त है और मूल पाठमे अग्राह्य हैं। दिल्ली प्रतिके मार्जिनवाला कडवक दिल्ली प्रतिमे छूट है। उसे कड़वक १११ के बाद मूल पाठमे ग्रहण किया गया है।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कडवक १३०-२११[1] दिल्ली प्रतिके कडवक ११२-१९३ के साथ समान रूपसे चलते है और बीकानेर प्रतिमे अनुपलब्ध कडवकोंकी पूर्ति बिना किसी कमी-बेशीके करते है। इनके आगे दिल्ली प्रतिमे तीन कड़वक (कडवक १९४-१९६) ऐसे है जो बीकानेर प्रतिमे नही हैं। ये कडवक काव्य प्रवाहकी दृष्टिसे मूल काव्यके अग जान पडते हैं। सम्भवतः वे लिपिकके प्रमादसे बीकानेर प्रतिमे छूट गये हैं। अतः वे प्रस्तुत सस्करणमे मूल पाठके रूपमे स्वीकार किये गये हैं। पुनः बीकानेर प्रतिके कडवक २१२-२१८[2] दिल्ली प्रतिके कडवक १९७-२०३ के साथ समान रूपसे चलते हैं। आगे दिल्ली प्रतिके कडवक २०४ की प्रथम दो पक्ति तथा पाँच नयी पक्तियोंके योगसे बना बीकानेर प्रतिका कडवक २१९[3] है। और उसके बादका कडवक २२०[4] दिल्ली प्रतिमे नही है। किन्तु उसके मार्जिनमे बीकानेर प्रतिके कडवक २१९ की पक्ति ३-७ और कडवक २२० अकित है। ऐसा जान पडता है कि ये किसी अन्य प्रतिसे दिल्ली प्रतिके मार्जिन पाठान्तरके रूपमे लिखे गये है। ध्यानसे देखनेपर प्रकट होता है कि बीकानेर प्रति और दिल्ली प्रतिके मार्जिनमे अकित ये अश विस्तारके निमित्त जोडे गये है। वे प्रक्षिप्त है और मूल पाठमे अग्राह्य है।

आगे बीकानेर प्रतिके कडवक २२१-२५९[5] दिल्ली प्रतिके कडवक २०५-२४३ के साथ समान रूपसे चलते है। फिर दिल्ली प्रतिका कड़वक २४४ बीकानेर प्रतिके दो कड़वकों (२६०-२६१)के रूप मे बॅटा है। कडवक २६० मे दिल्ली प्रतिके कड़वक २४४ की प्रथम दो पक्तियोके साथ पॉच नयी पक्तियॉ है, और कड़वक २६१ में दिल्ली प्रतिके कडवककी पक्तियॉ ३-५ हैं उसके बाद दो पक्ति रिक्त है और अन्तमे पक्ति ६-७ है।[6] बीकानेर प्रतिके कडवक २६० की नयी पंक्तियोंका अन्य पक्तियोंके

---

१. सम्मेलन सस्करण, कडवक ७७-८५; १०९-१५७।

२. वही, कड़वक १५८-१६४।

३ वही, कडवक १६५।

४. वही, कडवक १६६।

५. वही, कडवक १६७-२०५।

साथ कोई सगति नही बैठती। इसी कारण शिवगोपाल मिश्रने उन्हे मूलमे न ग्रहण कर पादमे दिया है। यह अश स्पष्टतः प्रक्षिप्त और अग्राह्य है।

इसके बाद बीकानेर प्रतिका कडवक २६२[१] दिल्ली प्रतिके कड़वक २४५ के समान है। आगे दिल्ली प्रतिका कडवक २४६ बीकानेर प्रतिमे दो कडवको (२६३-२६४) मे बँटा है। कडवक २६३ मे दिल्ली प्रतिके कडवककी पंक्ति १-३ के बाद चार नयी पक्तियाँ है और अन्तमे पुनः पक्ति ६-७ हैं।[२] इन पक्तियोमे अनावश्यक रूपसे पानके गुण गिनाये गये है जो काव्यको बोझिल बनाते है। पाठकी असगति देखकर शिवगोपाल मिश्रने बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त पाठको पादमे दिया है। एकडला प्रतिके पाठको देखनेसे भी यह अश प्रक्षिप्त और अग्राह्य जान पडता है। उसमे दिल्ली प्रतिवाला पाठ है।

पुनः बीकानेर प्रतिके कडवक २६५-२६६[३] दिल्ली प्रतिके कडवक २४७-२४८ के समान है। आगे बीकानेर प्रतिका कड़वक २६७[४] दिल्ली प्रतिमे नही है परीक्षणसे प्रकट होता है कि विस्तारके निमित्त वह पीछेसे जोड़ा गया है। इसलिए वह मूल पाठमे अग्राह्य है। तदनन्तर बीकानेरके प्रतिके कडवक २६८-२७४[५] दिल्ली प्रतिके कडवक २४९-२५५ के समान है। आगे दिल्ली प्रतिका कडवक २५६ बीकानेर प्रतिमे कडवक २७५-२७७ मे विभक्त है। कड़वक २७५ मे दिल्ली प्रतिकी प्रथम चार पक्तियोके बाद तीन नयी पक्तियाँ और कड़वक २७६ के रूपमे एक नया कडवक, तदनन्तर कडवक २७७ मे दिल्ली प्रतिकी पक्ति ५ को पक्ति २ के रूपमे दिया गया है। उसकी पक्ति १, ३-५ नयी है। अन्तमें पक्ति ६-७ दिल्ली प्रतिके कडवककी है।[६] सखियोके उल्लेखके बीच इन पक्तियो द्वारा नायिका भेदका वर्णन अनावश्यक रूपसे ठूसा गया है। शिवगोपाल मिश्रने भी इन्हे पादमे दिया है। ये अश मूल पाठमे अग्राह्य हैं।

आगे बीकानेर प्रतिके कड़वक २७८-३९८[७] दिल्ली प्रतिके कडवक २५७-३७६ के साथ समान रूपसे चलते है और बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध कडवकोकी पूर्ति बिना किसी कमी-बेशीके करते है। तदनन्तर बीकानेर प्रतिका कडवक ३९९[८] दिल्ली प्रतिमे नही है। परीक्षणसे ज्ञात होता है कि यह कडवक विस्तारके लिए पीछेसे जोडा गया है और अनावश्यक है। अतः मूल पाठमे अग्राह्य है।

---

१. सम्मेलन सस्करण कडवक २७७।

२ वही, पृ० १३८, पाद-टिप्पणी।

३ वही, कडवक २०९ २१०।

४. वही, कडवक २११।

५ वही, कडवक २१२-२१८।

६ वही, पृ० १४२, पादटिप्पणी।

७. वही, २२०-३३१।

८. वही, कड़वक ३३२।

तदनन्तर बीकानेर प्रतिके कडवक ४००-४१२[1] दिल्ली प्रतिके कडवक ३७७-३८९ के साथ समान रूपसे चलते है। आगे बीकानेर प्रतिके कडवक ४१३-४१७[2] के स्थानपर दिल्ली प्रतिमे केवल एक कडवक (कडवक ३९०) है। उसकी प्रथम पक्तिके साथ ६ नयी पक्तियाँ कडवक ४१३ मे हैं। उसके आगे कडवक ४१४ सर्वथा नवीन है। तब कडवक ४१५ के आरम्भमें दिल्ली प्रतिके कडवककी पंक्ति २-३ हैं तदनन्तर कड़वककी शेष पक्तियाँ सर्वथा नवीन है। फिर कडवक ४१६ एकदम नया है। अन्तमे कड़वक ४१७ के आरम्भमे दिल्ली कडवककी पक्ति ४-५ हैं, शेष पक्तियाँ नयी है। दिल्ली प्रतिके कडवककी पक्ति ६-७ एक दम छोड दी गयी है। पक्तियोका विभिन्न कड़वकोमे इस प्रकार विभाजन स्वतः इस बातका द्योतक है कि इन कड़वकोका सयोजन विस्तारके निमित्त ही किया गया है। अतः बीकानेर प्रतिके ये सभी कडवक मूल पाठके रूपमे अग्राह्य है।

अन्तमे बीकानेर प्रतिके कडवक ४१८-४५७[3] दिल्ली प्रतिके कडवक ३९१-४३० के समान हैं।

इस प्रकार दिल्ली और बीकानेर प्रतियोके तुलनात्मक परीक्षणसे प्रकट होता है कि दिल्ली प्रति मूलके निकट है और बीकानेर प्रतिमे काफी अश प्रक्षिप्त हैं। बीकानेर प्रतिके उपलब्ध ३१३[4] कड़वकोंमेंसे केवल २८८ दिल्ली प्रतिसे समता रखते हैं। बीका-नेर प्रतिमे आठ कडवक (१२३, १२५, १२६, २६७, २७६, ४१४, ४१६) एकदम नये हैं। एक कडवक (२२०) पाठान्तरके रूपमे दिल्ली प्रतिके मार्जिनमे है। एक कड़वक (२१९) दिल्ली प्रतिमे आशिक भिन्नताके साथ उपलब्ध है। दिल्ली प्रतिके पाँच कड़वकों (३५, ९७, २४४, २४६, २५६) को बीकानेर प्रतिमे दो-दो कड़वकोंमे (३५-३६ : १०९-११० : २६०-२६१ : २६३-२६४ : २७५-२७७) और एक (३९० कडवकों) को तीन कडवको (४१३, ४१५, ४१७) मे बाँट दिया गया है। इनके अतिरिक्त बीकानेर प्रतिके कडवक १२८-१२९ भी दिल्ली प्रतिके मूल पाठके अन्तर्गत नही हैं। वे पाठान्तरके रूपमे मार्जिनमे हैं। इन अतिरिक्त कडवकोमे दिल्ली प्रतिके कड़वक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके कड़वक ३५-३६ मूल पाठके जान पड़ते है, जैसा कि ऊपर कहा गया है। शेष सब अनावश्यक विस्तारके लिए बादमे जोड़े गये है और प्रक्षिप्त है। दूसरी ओर दिल्ली प्रतिमें तीन कडवक (१९४-१९६) ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें लिपिकके प्रमादसे छूट गये है।

---

१. सम्मेलन सस्करण, कड़वक ३३३-३४५।

२ वही, कड़वक ३४६-३५०।

३. वही, कडवक ३५१-३९०।

४. सम्मेलन सस्करणकी भूमिकामें बीकानेर प्रतिसे केवल ३०७ कड़वक प्राप्त होनेका उल्लेख है (पृ० ६१)। उक्त संस्करणमें मुद्रित कडवक ७२, ८५ और ११० को एकडला प्रतिका बताया गया है। वस्तुत. वे बीकानेर प्रतिके हैं। इस प्रकार तीन कडवकोंकी भूल तो स्पष्ट है। शेष तीन कड़वकोंकी भूलका कोई कारण नहीं जान पड़ता क्योंकि उक्त सस्करणमें ही सभी ३१३ कडवक उपलब्ध हैं।

शेष प्रतियोंमेसे एकडला प्रतिमे एक कडवक[1] के अतिरिक्त सभी कडवक दिल्ली प्रतिमे उपलब्ध है। उसमे एक भी कडवक ऐसा नही है जो दिल्ली प्रतिमे न हो और बीकानेर प्रतिमे हो। खण्डित होते हुए भी एकडला प्रतिकी दिल्ली प्रतिके साथ यह समानता बीकानेर प्रतिके अतिरिक्त कडवकोके प्रक्षिप्त होनेकी बातको पुष्ट करती है। एकडला प्रतिमे एक कडवक ऐसा है जो किसी अन्य प्रतिमे उपलब्ध नही है, वह काव्यके आरम्भका है और दिल्ली प्रतिमे अनुपलब्ध चार कडवकोमेसे एक है। इसलिए उससे एक कडवकके अभावकी पूर्ति होती है।

मनेर शरीफके ६३[2] कडवकोमेसे ६२ दिल्ली प्रतिमे प्राप्त हैं। दिल्ली प्रतिकी अनुपस्थितिमे उनमेसे सात (१६८अ-१७१अ) बीकानेर प्रतिके अनुपलब्ध अंशकी किंचित पूर्तिमे सहायक होते है। शेष एक कडवक (१६०अ) न तो दिल्ली प्रतिमे है और न बीकानेर प्रतिमे। जिस स्थानपर वह है, उस स्थानपर उसकी सगति समझ पानेमे हम असमर्थ रहे। अतः हमने उसे मूल पाठमे स्थान नहीं दिया है। अन्य दो प्रतियोमे ऐसी कोई सामग्री नही है जो उपर्युक्त प्रतियोमे न हो।

इस प्रकार प्रस्तुत सस्करणमे दिल्ली प्रतिके ४२६ कडवकोमेसे एक (कडवक ३५) को छोडकर सब स्वीकार किये गये है। दिल्ली प्रतिके कडवक ३५ के स्थानपर बीकानेर प्रतिके दो कडवक (३५-३६) ग्रहण किये गये है। इसके अतिरिक्त दिल्ली प्रतिके कडवक १११ के बाद, उसके मार्जिनमे अकित कडवकको मूल पाठमे सम्मिलित किया गया है। एकडला प्रतिके एक कडवकसे आरम्भके अनुपलब्ध अशकी पूर्ति होती है। इस प्रकार इस सस्करणमे मूलपाठके रूपमे कुल ४२९ कडवक दिये जा रहे है। तीन कड़वक अनुपलब्ध रह जाते है। इस प्रकार सम्पूर्ण काव्यमे ४३२ कडवक होनेका अनुमान है।

बीकानेर और मनेर प्रतिके जो अश मूल पाठमे ग्रहण नही किये गये है, उन्हे प्रक्षिप्त कह कर अलग परिशिष्ट १ मे सकलित कर दिया गया है।

विभिन्न प्रतियो मे उपलब्ध कडवकोकी समताको स्पष्ट करनेके लिए उनकी भी एक तालिका परिशिष्ट २ के रूपमे दी जा रही है।

प्रति परम्परा

मिरगावतीकी उपलब्ध प्रतियोमे दो परम्पराओके होनेकी बात अनायास सामने आती है। कुछ प्रतियोमे सुबुद्धयाकी राजकुमारीका नाम **रुपमनि** (रूपमणि) और कुछ प्रतियोमे **रुकमिन** (रुक्मिणी) मिलता है। निसन्देह इन दो नामोमेसे एक नाम मूल परम्पराका नाम होगा और दूसरा नाम बादमे किसी प्रकार काव्यमे प्रविष्ट हो गया होगा। इस दृष्टिसे दिल्ली, मनेरशरीफ और एकडला प्रतियाँ एक परम्पराकी है। इनमे सर्वत्र **रुपमनि** नाम मिलता है। दूसरी परम्पराकी प्रतियाँ बीकानेर और चौखम्भा प्रतियाँ हैं। उनमें **रुकमिन** नाम मिलता है। काशी प्रतिमे जो अंश उपलब्ध है उनमें

१. सम्मेलन सस्करण, कडवक ८।

२. इस प्रतिमें ६४ पृष्ठ उपलब्ध हैं जिनमें एक पृष्ठ रिक्त है।

राजकुमारीका नाम कही नही आया है, इसलिए वह दो परम्पराओमेसे किस परम्परा-की है, कहा नही जा सकता ।

दिल्ली प्रतिमे मार्जिनमे जो पाठान्तर दिये गये है, उनमे जो कडवक या उसके अंशके रूपमे पाठान्तर है, वे बीकानेर प्रतिसे मिलते हुए है । अतः वे बीकानेर प्रतिकी परम्पराकी एक अज्ञात प्रतिका सकेत उपस्थित करते है । किन्तु दिल्ली प्रतिके मार्जिनमे उपलब्ध सामग्रीमे कही भी **रुपमनिके** स्थानपर **रुकमिन** पाठान्तरके रूपमे उपस्थित नही किया गया है । यह इस बातका द्योतक है कि उस अज्ञात प्रतिमे भी राजकुमारी-का नाम रुपमिन ही रहा होगा । इससे यह भी प्रकट होता है कि इस अज्ञात प्रतिकी परम्परामे ही आगे चलकर **रुकमिन** पाठ हो गया और इस नयी परम्पराकी किसी प्रतिसे बीकानेर और चौखम्भा प्रतियाँ तैयार की गयी ।

एकडला प्रतिसे दो प्रतियोका अनुमान होता है । एक जो मूल रूपमे सचित्र की गयी थी और दूसरी वह जो चित्रोकी मरम्मतके बाद तैयार की गयी । इस प्रतिका परवर्ती पाठ पूर्ववर्ती पाठकी प्रतिलिपि है या किसी अन्य प्रतिसे प्रतिलिपि की गयी, कहना कठिन है । हो सकता है कि मरम्मत कर पृष्ठको ढकनेसे पहले पाठकी प्रतिलिपि कर ली गयी हो ।

इस प्रकार जो तथ्य हमारे सम्मुख है, उनको दृष्टिमे रखते हुए इन प्रतियोंकी परम्पराका अकन इस प्रकार किया जा सकता है ।

मूल प्रति
(रुपमनि परम्परा)

फारसी प्रति | नागरी प्रति

दिल्ली प्रति | मनेर शरीफ प्रति | ? ? | एकडला (पूर्ववर्ती प्रति) | ? ? ? ? ?

दिल्ली (मार्जिनवाली प्रति) | एकडला (उत्तरवर्ती प्रति) | काशी प्रति

? ?

नागरी प्रति
(रुकमिन परम्परा)

बीकानेर प्रति | चौखम्भा प्रति

पाठ-सम्पादन

पाठ सम्पादन करते समय हमने किसी प्रकारका सशुद्ध-पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) उपस्थित करनेका प्रयास नही किया है। दिल्ली प्रति हमे मूलके अति निकट जान पडती है। अतः हमने उसके पाठको मूल पाठके रूपमे अविकल रूपसे ग्रहण किया है और अन्य प्रतियोमे पायी जानेवाली पाठ-भिन्नताको हमने पाठान्तरके रूपमे स्वतन्त्र उपस्थित किया है। कही-कही, जहाँ दिल्ली प्रतिका पाठ अस्पष्ट या विकृत लगा, वहाँ विवेकके सहारे दूसरी प्रतियोका पाठ लिया है। पर ऐसे स्थल अत्यल्प है। जहाँ ऐसा किया गया है, वहाँ इस बातका सकेत कर दिया गया है।

पाठोद्धार

यह कहनेकी आवश्यकता नही कि किसी भाषाको अरबी-फारसी लिपिमे लिखना उतना कठिन नही है जितना कि उस लिपिमें लिखी भाषाका शुद्ध पाठ। इस लिपिमे व्यजन मुख्यतः नुक्तोपर आधारित हैं। अतः जबतक कोई लेख साव-धानीसे न लिखा गया हो, उसे ठीकसे और शुद्ध पढना सहज नही होता। यही नही, अनेक ध्वनियोंको इस लिपिमे एक ही अक्षरसे व्यक्त करते है। यथा **त** और **ट** के लिए एक ही अक्षर है जिसे हम आज ते कहते है। **क** और **ग** का काम अकेले **काफ** करता है। इसी प्रकार स्वर व्यक्त करनेके लिए इस लिपिमे केवल तीन अक्षर **अलिफ, ये** और **वाव** है। **अलिफ** को अ और आ दोनो पढा जा सकता है। कहीं-कही शुद्ध आ पढ़नेके लिए तशदीदका चिह्न दे दिया करते है। कही-कही **अलिफ** से **इ** का भी काम लिया जाता है। **ये** के दो रूप है जो **छोटी ये** और **बडी ये** कहकर पुकारे जाते है। साधारणतः **छोटी ये इ** और **ई** के लिए और **बड़ी ये, ए** और **ऐ** के काम आता है। अन्तर व्यक्त करनेके लिए जेर, जबरके चिह्न लगा लेते है। इसी प्रकार **वाव** का प्रयोग **उ, ऊ** और **ओ** के लिए होता है। **उ** युक्त व्यजनमे **वाव** का प्रयोग न कर ऊपर पेशका चिह्न लगा देते है। किन्तु यह सब सिद्धान्तकी बाते हैं। व्यवहारमे लिखते समय **जेर, जबर, पेश** आदि चिह्न लोग कम ही लगाते है और **ये** के रूपोमे अन्तर कम ही मानते है। इस कारण फारसी लिपिका पाठ दुरूह है। इस दुरूहताको ध्यानमे रखते हुए हमने दिल्ली प्रतिके पाठोद्धारमे निम्नलिखित सिद्धान्त अपनाये है :

ई, ए और **ऐ** की मात्राओका उपयोग वही किया गया है जहाँ **ये** (छोटी या बडी) पढा जा सका है।

मात्रा-चिह्नोके अभावमे **इ** और **उ** की मात्राओको शब्द-रूप और प्रयोग के अनुसार अपनाया गया है।

वाव को प्रसगानुसार ऊ, ओ और औ की मात्राके रूपमे ग्रहण किया है।

नुक्तोंके अभावमे जहाँ किसी शब्दके एकसे अधिक पाठ सम्भव हैं, वहाँ तर्क-संगत अथवा अर्थ-सगत पाठ ग्रहण किया गया है।

शब्दके आरम्भमे आये वाव को सर्वत्र व और अन्तमे आये वाव को प्रायः उ के रूपमे लिया गया है।

शब्दके आरम्भमे आये अलिफको अ, आ, इ और उ के रूपमे और ये को य के रूपमे लिया गया है।

शब्दके आरम्भमे अलिफ और वाव के सयुक्त प्रयोगको ऊ, ओ, औ अथवा अउ पढा गया है। शब्दके अन्तमे उसे आउ माना गया है।

सज्ञा आदि शब्दोके अन्तमे वाव और ये के सयुक्त प्रयोगको प्रसगानुसार वे अथवा वै पढा गया है, किन्तु क्रियाओमे हमे वै की अपेक्षा वइ पाठ अधिक संयत और उचित जान पडा है।

सम्पादन-विधि

प्रस्तुत सम्पादन कार्यमे प्रत्येक कडवकको अंक-बद्ध कर पाठ-क्रम निर्धारित किया गया है; और प्रत्येक कडवक संख्याके नीचे प्रति अथवा प्रतियोका नाम दिया गया है जिनमे वह उपलब्ध है। दिल्ली प्रतिसे पाठ लिया गया है, इसलिए उसका नाम पहले रखा गया है तदनन्तर अन्य प्रतियोका। उसके नीचे कडवकका पाठ है और उसकी प्रत्येक पक्तिको अक-बद्ध कर दिया गया है जिससे निर्देशमे सुविधा हो।

यदि गृहीत पाठमे कोई छूट या अभाव है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है। इस प्रकार दूसरी प्रतिसे लिये पाठको बडे कोष्ठक [ ] मे दिया गया है। यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बड़े कोष्ठक [ ] मे रखकर तारा-कित कर दिया गया है। यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका तो वहाँ बड़े कोष्ठकके भीतर मात्राओका अनुमान कर डैश रख दिया गया है।

यदि कही लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो उस शब्दको तारांकित कर दिया गया है। यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो उस शब्दको पाठसे निकाल दिया गया है और अलग उसका निर्देश कर दिया गया है। इसी प्रकार दिल्ली प्रतिका यदि कोई शब्द स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पड़ा है तो वहाँ दूसरी प्रतिके पाठको स्वीकार किया गया है और दिल्ली प्रतिके पाठको पाठान्तरके रूपमे दिया गया है। यदि दूसरी प्रतिमे पाठ नही है तो अनुमानित पाठ ग्रहण कर मूल पाठको अलग दे दिया गया है। दोनों ही अवस्थाओंमें इस प्रकार गृहीत शब्दोको छोटे कोष्ठक ( ) में रख दिया गया है।

ऐसे शब्दोंको जिनका समुचित पाठोद्धार करनेमें हम असमर्थ रहे अथवा जिनके सम्बन्धमे हमें किसी प्रकारका सन्देह है, पाठके अन्तर्गत भिन्न टाइप में दे दिया है।

मिरगावती

(पाठान्तर सहित मूल पाठ तथा टिप्पणी)

कड़वक सूची

[उपलब्ध प्रतियोमेसे किसीमे न तो कथाका विषयानुसार कोई विभाजन है और न अन्य प्रेमाख्यानक काव्योकी तरह कडवकोके शीर्षक उपलब्ध है। अतः पाठकोकी सुविधाके निमित्त यहॉ प्रत्येक कड़वकोका सक्षिप्त आशय देकर उनका विषयानुसार विभाजन कर दिया गया है। इससे अपेक्षित कड़वक ढूॅढ़नेमे सरलता होगी।]

स्तुति—

१-५–ईश्वर स्तुति (केवल दो कडवक उपलब्ध); ६–मुहम्मद स्तुति, ७–चार मीतोका वर्णन, ८–पीरकी प्रशसा, ९-१२–शाहेवक्त हुसेन शाहकी प्रशसा; १३-१४ ग्रन्थ परिचय।

राजकुँवरका जन्म और शिक्षा—

१५–राजाकी सतति आकाक्षा; १६–दान-वितरण, १७–पुत्र-जन्म, १८–भाग्य गणना, १९–पालन-पोषण और शिक्षा।

मिरगावती दर्शन—

२०–आखेट, २१–सतरगी मृगी; २२–मृगी पकडनेका प्रयत्न; २३–मृगीका मानरोदक-प्रवेश, २४–मृगीकी खोज, २५–मृगी-वियोग।

राजकुँवरकी खोज—

२६–राजकुॅवरकी खोज, २७–मानसरोदक वर्णन, २८–राजकुॅवरका मिलना, २९–राजकुॅवरकी अवस्था, ३०–मिरगावतीका रूप, ३१–साथियोकी चिन्ता; ३२–राजाको सूचना।

राजाका आगमन और भवन-निर्माण—

३३–राजाका आगमन, ३४–राजकुॅवरकी अवस्था; ३५–राजाका समझाना; ३६–राजकुॅवरका अनुरोध; ३७–मन्दिर बनानेका आदेश, ३८–स्थपितोका आगमन; ३९–भवन-निर्माण, ४०–चित्राकन, ४१–धाईका समझाना, ४२–वर्षा ऋतुकी अवस्था; ४३–जाड़ेकी अवस्था, ४४–गरमीकी अवस्था।

मिरगावतीका पुनरागमन—

४५–तीन वर्ष पश्चात् रूपवतियोका आगमन; ४६–उन्हे देखनेपर राजकुॅवरकी अवस्था; ४७–सहेलियोका सशक होना, ४८–मिरगावतीका समाधान; ४९–राज-

कुँवर द्वारा रूपसियोको पकडनेकी चेष्टा, उनका पलायन, ५०—राजकुँवरका मूर्च्छित होना; ५१—धाईका मूर्च्छाका कारण जानना।

मिरगावतीका रूप वर्णन—

५१—राजकुँवर द्वारा मिरगावतीका रूप वर्णन; ५३—माँग; ५४—केश, ५५—ललाट, ५६—भौंह; ५७—बरौनी; ५८—नेत्र; ५९—तिल; ६०—कान; ६१—कपोल; ६२—नाक; ६३—अधर; ६४—दाँत; ६५—जीभ; ६६—ग्रीवा; ६७—ऊर; ६८—पीठ; ६९—कमर; ७०—कुच, ७१—रोमावली, ७२—पेट, ७३—जाँघ; ७४—वर्ण; ७५—आकार; ७६—बारह अभरण; ७७—गीत आदि।

मिरगावतीका चीर-हरण—

७८—धाईका मिरगावतीके पानेका उपाय बताना, ७९—मिरगावतीका सहेलियोको बुलाना; ८०—सहेलियोके साथ मिरगावतीका सरोवरमें स्नान; ८१—जल-क्रीडा। ८२—राजकुँवरका चीर-हरण; सहेलियोका उड़ जाना; ८३—मिरगावतीका साड़ी न पाना और राजकुँवरको देखना, ८४-८५—राजकुँवरका अपनी कष्ट कथा कहना; ८६—मिरगावतीका चीरकी याचना करना; ८७—राजकुँवरका दूसरी साड़ी देना।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

८८—राजकुँवर-मिरगावतीका भवनमें आना, ८९—मिरगावतीका राजकुँवरसे कहना, ९०—राजकुँवरका उसकी बात मानना; ९१—मिरगावतीका राजकुँवरको पत्नी होनेका वचन देना; ९२—राजकुँवरका पिताको सूचना; ९३—राजाका राजकुमार-के पास जानेकी तैयारी करना; ९४—अश्ववर्णन; ९५—पिता-पुत्र मिलन।

मिरगावतीका पलायन—

९६—मिरगावतीके मनमें राजकुँवरकी प्रेम-परीक्षाका विचार आना, ९७—राजाका राजकुमारको बुलावा; ९८—राजकुँवरका राजाके पास जाना, ९९—धाईको भुलावा देकर मिरगावतीका उड जाना; १००—धाईका मिरगावतीको ढूँढना और छतपर बैठा देखना; १०१—मिरगावतीका राजकुँवरको सन्देश; १०२—राजकुँवरका वापस आना और धाईका मिरगावतीके उड जानेकी बात कहना; १०३—सुनते ही राजकुँवरका बेहोश होना, १०४-१०७—राजकुँवरका विलाप।

राजकुँवरका जोगी होना—

१०८—राजकुँवरका जोगी होनेका निश्चय; १०९—जोगी वेश धारण; ११०—राजाका पुत्रके लिए विलाप; १११—राजकुँवरका मिरगावतीके खोजमें चलते जाना, ११२—एक नगरमें पहुँचना; राजाको सूचना; ११३—बतीसो राजलक्षण होनेकी बात; ११४—राजाका आकर जोगी होनेका कारण पूछना; ११५—राजकुँवरका अपनी

प्रेम कहानी बताना; ११६–राजाका जगमको बुलवाना, ११७–जगमका कञ्चनपुरके मार्गकी दुर्गमता कहना; ११८–राजकुँवरका दुर्गमताकी बातसे भय न खाना; ११९–राजाका समझाना और राजकुँवरका कुछ न सुनना, १२०–जगमका मार्ग बताना और राजकुँवरका नावपर सवार होना।

समुद्रमें राजकुँवर—

१२१–समुद्रके लहरमें नावकी अवस्था, १२२–एक मास बाद किनारे लगना, दो आदमियोका मिलना, १२३–उनका मनुष्य-भक्षी सर्पकी बात बताना; १२४–मनुष्य-भक्षी सर्पको देखकर राजकुँवरका परेशान होना १२५–ईश्वर स्मरण, १२६–सर्पका राजकुँवरको खानेकी चेष्टा, दूसरे सर्पका आना और परस्पर लड मरना।

राक्षस-वध—

१२७–राजकुँवरका आमके बगीचेमें प्रवेश, १२८–भवनके भीतर एक राज-कुमारीको बैठकर रोते देखना, १२९–राजकुँवरका रोनेका कारण पूछना; १३०–कुमारी-का राक्षस द्वारा अपने खाये जानेकी बात बताना, १३१–राजकुँवरका राक्षसको मारनेका निश्चय, १३२–राक्षसका वध, १३३–राजकुमारीका दृश्य देखकर मूर्च्छित होना; १३४–राजकुमारीका आत्म-समर्पण; १३५–राजकुमारीका राजकुँवरसे परिचय पूछना, १३६–राजकुँवरका आत्म परिचय देना, १३७–मिरगावतीको देखने और चीर-हरणकी बात बताना; १३८–बातो बातमें सूर्योदय होना, १३९–रूपमणि (राजकुमारी)की खोजमें राजाका आना और उसका एक अन्य व्यक्तिके साथ जीवित देखना; १४०–राजाका राजकुमारीका कण्ठसे लगाना और जीवित रहनेकी बात पूछना; १४१–राजकुमारीका राजकुँवरका परिचय देना, १४२–राजाका राजकुँवरको जोगी वेश त्यागनेको कहना। १४३–राजाका बात न माननेपर बन्दी बनानेका भय दिखाना; १४३–राजकुँवरका सोच-विचारकर राजाकी बात मानना १४४–राजकुँवरका जोग उतारना और हाथीपर सवार होना, १४५–लोगोका राजकुमारी और राजकुँवरको देखने आना, १४६–परिवारके लोगोका निछावर बाँटना।

राजकुँवर-रूपमणि विवाह—

१४७–राजकुँवरका चिन्तित होना, १४८–राजाका राजकुँवरकी गुणोकी परीक्षा करना, १४९–राजकुँवरका हेगुरि और आखेट खेलना, १५०–राजकुँवरकी विद्वत्ता; १५१–राजाका राजकुँवरसे रूपमणिके विवाहका निश्चय, १५२–ज्योनार; १५३-१५४–विवाह; १५५–राजकुँवरका रमणके प्रति विरक्ति, १५६–रूपमणिको भुलावा देनेका प्रयत्न, १५७–राजकुँवरका धर्मशाला बनवानेका निश्चय, १५८–धर्मशालामें आनेवाले जोगी जातियोसे कनकनगरके समाचार पूछना, १५९–रूपमणि-का भाँप लेना कि राजकुमार अनुरक्त नहीं है। १६०–राजकुँवरका रूपमणिको

मनाना; १६१–मनाकर बाहर आनेपर एक साधूको बैठा देखना; १६२–उससे कचनपुरका मार्ग जानना।

रूपमणिका परित्याग—

१६३–आखेटके बहाने घरसे निकलना और योगी वेश धारण करना; १६४–नदी पार होना; १६५–साथियोका राजकुँवरको न पाना और मान लेना कि हिंस्रजन्तुने खा लिया; १६६-१६७ रूपमणिका समाचार सुनकर दुखी होना और पश्चाताप करना।

मनुष्य-भक्षी गड़ेरिया—

१६८–राजकुँवरके चलते-चलते शाम होना, १६९–वनमे भ्रमित होना; १७०–वनमे तीस दिनतक चलते रहना; १७१–वनका अन्त और गड़ेरियासे भेट; १७२–गड़ेरियाका अतिथिके रूपमे निमत्रित करना; १७३–राजकुँवरको ले जाकर गड़ेरिया-का खोहमे बन्द करना; १७४–यह देखकर राजकुँवरका जी सूखना और गड़ेरियाको मारनेकी सोचना; १७५-१७८ राजकुँवरका अपनी स्थितिसे परेशान हाना; १७९–भीतर बन्द मनुष्योंका गडेरियासे छुटकारा पानेका उपाय बताना; १८०–गडेरियाका आना और एक आदमीको खाकर सो रहना; १८१–राजकुँवरका संडसी दग्धकर गड़ेरिया-का आँख फोड़ देना; १८२–गड़ेरियाका राजकुँवरको पकड न पाना, १८३–उसका द्वार अवरुद्ध कर बैठना, १८४–राजकुँवरका पुनः चिन्तित होना, १८५–चौथे दिन गड़ेरियाका बकरियोको बाहर निकाल्ना, १८६–बकरियोके साथ कुँवरका बाहर निकल जाना।

निर्जन भवनमें अद्भुत दृश्य—

१८७–राजकुँवरका आगे जाना; १८८–भवन दिखाई पडना और शाम होना; १८९–चार कबूतरोका आना और स्त्रीरूप धारण करना; १९०–चार मोरोका आना और पुरुष वेश धारण करना, और परस्पर केलि करना; १९१–प्रातः होते ही उनका उड़ जाना और राजकुँवरका डरकर भागना, भागकर एक वृक्षके नीचे आराम करना।

सहेलियोके बीच मिरगावती—

१९२–मिरगावतीके आनेपर सहेलियोका हाल-चाल पूछना और उसका बताना। १९३–राजकुँवरपर मोहित होनेकी बात कहना; १९४–चीर-हरणकी बात बताना; १९५–प्रणयसे रोकनेकी बात कहना; १९६–अवसर पाकर भाग निकलनेकी बात कहना; १९७-१९९–एक सहेलीका प्रेमकी कठिनता बताना; २००–सहेलियोका मिरगावतीसे धैर्य रखनेको कहना; २०१–मिरगावतीके पिताका स्वर्गवास और मिर-गावतीका सिंहासनारोहण; २०२–मिरगावती द्वारा धर्मशालाका निर्माण; और यात्रियोंसे चद्रागिरि (राजकुँवरके नगर)की बात पूछना।

पक्षी-संवाद—

२०३–पेड़पर बैठे दो पक्षियोका राजकुँवर और मिरगावतीके प्रेमकी चर्चा करना और राजकुँवरके दुखके अन्त होनेकी बात कहना। २०४–राजकुँवरका यह सब सुनना और उनके पीछे दौडना।

कंचननगर-प्रवेश—

२०५–राजकुँवरका मार्ग पाना और एक बगीचेमे पहुँचना; २०६-२०८–बगीचेका वर्णन, २०९–नगर जाननेकी जिज्ञासा, २१०–पनिहारियोसे कचनपुर होनेका ज्ञान, २११–नगरमे प्रवेश; २१२–राजद्वार; २१३–भीतर प्रवेशकी चिन्ता और वियोगालाप, २१४–मिरगावतीको योगीके आनेकी सूचना और उसको बुलानेका आदेश।

राजदरबार—

२१५–राजदरबारमे प्रवेश और मिरगावतीको देखकर मूर्च्छा, २१६–मिरगावतीका सशक होना और दासियोसे उसकी मूर्च्छा दूर करनेको कहना, २१७–दासियोका मूर्च्छाका कारण पूछना, २१८–राजकुँवरका उत्तर, २१९–दासियोका राजकुमारकी भर्त्सना, २२०–राजकुँवरका उत्तर, २२१–दासियोका परस्पर विचार विमर्श; २२२–मिरगावतीको राजकुँवरके होनेका निश्चय और पास बुलाकर पूछना, २२३–राजकुँवरका उत्तर; २२४–मिरगावतीका सहेलियोको राजकुँवर होनेकी बात बताना; २२५–मिरगावती द्वारा राजकुँवरकी परीक्षाके निमित्त प्रश्न, २२६–राजकुँवरका उत्तर; २२७–मिरगावतीका क्रोध दिखाना, २२८–मिरगावतीको दया आना; २२९–राजकुँवरका उत्तर, २३०–मिरगावतीका ढिठाई देखकर जानेको कहना और राजकुँवरका उत्तर; २३१–दासियोको बुलाकर राजकुँवर को नहलानेका आदेश।

राजकुँवर-मिरगावती मिलन—

२३२–मिरगावतीका शृंगार, २३३–शृगारकर राजकुँवरको बुलानेका आदेश, २२४–राजकुँवरका स्वागत, २३५–मिरगावतीका उसकी अवस्था पूछना; २३६–राजकुँवरका अपनी विरह अवस्था बताना; २३७–सर्पवाली घटना बताना; २३८–राक्षस मारनेकी घटना सुनाना; २३९–चरवाहेवाली घटना कहना; २४०–आँख फोडकर निकल भागनेकी बात बताना, २४१–मिरगावतीका यह सब सुनकर घबराना और गले लगाना, २४२–२४४ रति वर्णन।

राजकुँवरका दरबार—

२४५-प्रातःकाल लोगोका राजकुँवरको भेट, २४६–मिरगावतीका सभा आयोजन करनेको कहना, २४७–राजकुँवरका लोगोको भेट देना, २४८–राजकुँवरका पान भेट करना; २४९–सभाका वर्णन; २५०–नृत्य-सगीतका आयोजन; २५१–२५४–संगीत वर्णन; २५५–२५६–नृत्य वर्णन; २५७ नर्तकीको भेट।

सहेलियोके बीच मिरगावती—

२५८—सहेलियोका आगमन; २५९—सहेलियोका पूछना और मिरगावतीका बताना; २६०—मिरगावतीका राजकुँवरकी प्रशसा; २६१—सखियोका न्योछावर लाना।

राजकुँवरका अपहरण—

२६२—मिरगावतीको सखीका निमन्त्रण; २६३—मिरगावतीको राजकुँवरकी अनुमति प्राप्ति, २६४—मिरगावतीका राजकुँवरसे ओबरी खोलनेका निषेध; २६५—मिरगावतीका सखीके घर जाना, २६६—जिज्ञासावश राजकुँवरका ओबरी खोलना और कटघरेमे बन्द व्यक्तिकी गुहार; २६७—राजकुँवरका उससे बन्दी होनेका कारण पूछना और उसका बताना; २६८—कुँवरका कटघरा खोल देना और उसमेसे राक्षसका निकलकर कुँवरको कधेपर रख आकाशमे उड जाना; २६९—कुँवरका पश्चाताप; २७०—ईश्वरसे प्रार्थना; २७१—राक्षसका अपहरणका कारण बताना; २७२—कुँवरका राक्षससे कहना, २७३—राक्षसका कुँवरसे पूछना किस ढगसे तुम्हे मारूँ; २७४—राक्षसका राजकुँवरको समुद्रमे फेकना; २७५—राजकुँवरका थोड़े पानीवाले स्थानमें गिरना; २७६—राजकुँवरका भयभीत होना।

राजकुँवरकी खोज—

२७७—सखीके घरपर मिरगावतिके मनमे शका उठना, २७८—चेरीका आकर राजकुँवरके अपहरणका सूचना देना, २७९—२८०—मिरगावतीका विलाप; २८१—राजकुँवरके अपहरणके समाचारसे नगरमे खलबली; २८२—सखीका मिरगावतीको समझाना; २८३—रानीका राजकुँवरके ढूँढनेका यत्न करना; २८४—एक व्यक्तिका आकर राक्षसके पकड़े जानेकी सूचना देना, २८५ २८९—राक्षसको यातना देकर राजकुँवरका पता पूछना, २९०—मिरगावतीका विलाप।

पवन-सन्देश—

२९१—मिरगावतीका पवन द्वारा सन्देश भेजना; २९२—पवनका सन्देश लेकर जाना; २९३—राजकुँवरको ढूँढकर सन्देश कहना; २९४—सन्देश सुनकर राजकुँवरका अपनी अवस्था कहना; २९५—पवनका लौटकर मिरगावतीको सूचित करना; २९६—पवनका मिरगावतीको साथ लेकर जाना; २९७—दोनोका घर लौटना; २९८—नगरमे आनन्द।

मान-भाव—

२९९—मिरगावतीका कथन; ३००—राजकुँवरका उत्तर, ३०१—मिरगावतीका प्रत्युत्तर; ३०२—राजकुँवरका रुष्ट होना, मिरगावतीका मनाना; ३०३ मिरगावतीका प्रसन्न होना; ३०४—प्रेमके गाढेपनका वर्णन।

रूपमणिकी अवस्था—

३०५—रूपमणिका राजकुँवरकी प्रतीक्षामें समय बिताना, ३०६-३१०—सखियोंसे अपनी विरहावस्था कहना, ३११—नित्य बाट जोहना; ३१२-३१६ वियोगका दुःख; ३१७—ऊँचे भवनपर चढकर मार्ग देखना—३१८—चाँदको देखना, ३१९—बनजारेका आगमन। ३२०—बनजारेका रूपमणिके पास आना।

रूपमणिका विरह-विलाप—

३२१—रूपमणिका रुदन और बनजारेसे अपनी अवस्था कहना; ३२२—सावन मासकी अवस्था, ३२३—भादो मासकी अवस्था; ३२४—आश्विन मासकी अवस्था; ३२५—कार्तिक मासकी अवस्था; ३२६—अगहन मासकी अवस्था, ३२७—पूस मासकी अवस्था, ३२८—माघ मासकी अवस्था, ३२९—फागुन मासकी अवस्था; ३३०—चैत मासकी अवस्था; ३३१—बैसाख मासकी अवस्था, ३३२—जेठ मासकी अवस्था; ३३३—असाढ मासकी अवस्था, ३३४—अपनी अवस्थाकी तुलना बिना खेवकके नावसे करना, ३३५—मिरगावतीको सन्देश; ३३६—अपनी अवस्था दुहराना।

बनजारेका राजकुँवरसे भेट—

३३७—बनजारेका प्रस्थान; ३३८—विरहाग्निसे मार्गकी वस्तुओंका जलना; ३३९—गड़ेरियाका अपनी आँख फोड़नेकी बात बताना; ३४०—बनजारेका कचनपुर पहुँचना, ३४१—कचनपुर पहुँचकर आश्वस्त होना, ३४२—वणिकोंका माल खरीदने आना और बनजारेका केवल राजाके हाथ माल बेचनेकी बात कहना, ३४३—बनजारे की बात फैलते-फैलते राजकुँवरतक पहुँचना, ३४४—राजकुँवरका नायकको बुलवाना; ३४५—राजकुँवरका ब्राह्मणको पहचानना; ३४६—उससे पारिवारिक कुशल पूछना; ३४७-३४८—ब्राह्मणका पिताका सन्देश कहना; ३४९ माताका सन्देश और रूपमणिकी अवस्था कहना, ३५०-३५३—रूपमणिकी अवस्था बताना; ३५४—ब्राह्मणकी बात सुनकर राजकुँवरका घबराना और मिरगावतीसे कहना; ३५५—मिरगावतीका रायभानको राज देनेकी बात कहना।

प्रस्थान—

३५६—रायभानका राजतिलक, ३५७—सुदिन देखकर प्रस्थानकी तैयारी; ३५८—मिरगावतीका सखियोंसे बिदा लेना; ३५९—प्रस्थान, ३६०-३६०—कर्मचारियोंको समझाना, ३६१—मार्गकी व्यवस्था, ३६२—गड़ेरियाके घरके पास पडाव, ३६३—कुँवरका लोगोंको गड़ेरियाका दुर्गुण बताना, ३६४—कुँवरका जाकर खोह देखना; ३६५—वहाँसे प्रस्थान।

सुबुध्यामें राजकुँवरका आगमन—

३६६—राजकुँवरको आते देख सुबुध्यामे खलबली; ३६७—रूपमणिके मनमे हुलास; ३६८-३६९—रातमे स्वप्न; ३७०—स्वप्न-विचार; ३७१—ब्राह्मणका द्वारपर आना,

३७२–रूपमणिका काग उडाना, ३७३–दूलभका आकर रूपमणिको सन्देश कहना, ३७४–दूलभका राजाको सन्देश, ३७५–स्वागतके लिए राजाका जाना, ३७६–राजकुँवरका आगमन।

रूपमणि-राजकुँवर—

३७७–रूपमणिका कुँवरके पास आना और मान करना; ३७८–कुँवरका रूपमणिको सेजपर बैठाना, ३७९–३८१–परस्पर मान-भाव, ३८२–सभोग; ३८३–इच्छाकी पूर्ति; ३८४–बीती बात भुलाना।

राजकुँवर-मिरगावती—

३८५–द्वन्द, उद्वेग और उचाटका मिरगावतीके पास जाना, ३८६–सुख आनन्दकी राजकुँवरसे गुहार; ३८७–राजकुँवरको देखकर मिरगावतीका पीठ फेर लेना; ३८८–राजकुँवरका समझाना।

सुबुध्यासे प्रस्थान—

३८९–राजकुँवरका दूलभको राजासे बिदा माँगनेके लिए भेजना; ३९०–दूलभका आकर रायसे कहना, ३९१–रूपमनिकी माँका दूलभसे अनुरोध, ३९२–बिदाई।

चन्द्रागिरि-आगमन—

३९३–चन्द्रागिरि निकट आनेपर दूलभको पहले भेजना; ३९४–राजाको सूचना; ३९५–राजकुँवरके भाग्योदयका वर्णन; ३९६–पिताका आगमन सुनकर राजकुँवर अपने आदमियोंको आदेश; ३९७–पिता-पुत्रका मिलना; ३९८–दोनो रानियोका राजमहलमें प्रवेश।

मिरगावती-रूपमणि कलह—

३९९–राजकुँवरकी अनुपस्थितिमे ननदका आकार मिरगावतीसे रूपमणिकी चुगली; ४००–रूपमणिकी चेरीका बात सुनकर जाकर कहना, ४०१–मिरगावतीका रूपमणिकी निन्दा करना; ४०२–रूपमणिका उत्तर; ४०३–लडाई सुनकर सासका आना; ४०४–सासका दोनोंकी भर्त्सना करना, ४०५–दोनोका रूठना और राजकुँवरका परिवारके साथ आकर मनाना; ४०६–मिरगावतीको समझाना; ४०७–मिरगावतीकी सफाई; ४०८–सासका रूपमणिको समझाना; ४०९–दोनोंमें मेल-मिलाप कराना।

राजकुँवरकी मृत्यु—

४१०–पारधीका बनमे सिंहके आनेकी सूचना देना; ४११–सिह द्वारा गजमस्तक खानेकी बात कहना; ४१२–राजकुँवरका उसे मारनेका निश्चय करना; ४१३–पारधीके साथ राजकुँवरका बनमें जाना; ४१४–सिंहको सोते देखना; ४१५–सिंहका

जागना और गरजना, ४१६–सिंहका खण्ड-खण्ड होना और बाणका कुँवरके हृदयमे लगना; ४१७–हाथीका राजाको पकड़नेकी चेष्टा और बाण खाकर भागना; ४१८–सिंह और राजकुँवरकी मृत्यु, ४१९–मृत्युकी निश्चिततापर कविकी उक्ति; ४२०–पारधीका पेड़से उतरना, ४२१–जाकर राजाको सूचना देना; ४२२–राजाकी मृत्यु; ४२३–पारधीका करनरायसे गुहार, ४२४–करनरायकी आत्महत्याकी चेष्टा, ४२५–लोगोका करनरायको समझाना, ४२६–लोगोका रोते-पीटते जाना, ४२७–मिरगावतीको राजकुँवरके मृत्युकी सूचना, ४२८–मिरगावती और रूपमणिका शवके साथ सती होना; ४२९–सेवकोका साथमे जल मरना।

राज्यभिषेक—

४३०–करनरायको राजतिलक।

उपसंहार—

४३१–रचनाके सम्बन्धमे कवि-वचन, ४३२–ईश्वरोपासनाकी प्रेरणा।

१–३

(एकडला)

[-------] अलख करतारू। रमि कै रहेउ[1] सबै (सयँसारू)[2] ॥१
[अलख*] निरंजन लखै न (काई[3])। जोति सरूप जो लखत भुलाई ॥२
[-----] मन्द सिध परमेसा। ना उहि तिरी न (पुरुख[4]) क भेसा ॥३
माता पिता बन्धु नहिं कोई। एक अकेल न (दूसर[5]) होई ॥४
[दोइ*] कहै सो नरकहि जाई। एक एक बिहंगम चिल्लाई ॥५
एक अकेल सो रे वह करता, (दूसर[6]) करै न कोय।६
गनि गुन देखा पण्डितहि, वह सो (आन[7]) न होय ॥७

मूल पाठ—१–रहेव। २–ससारू। ३–कोई। ४–पुरुष। ५–दोसर। ६–दोसर। ७–चैन।

४

(दिल्ली)

[-----------------] । [-----------------] ॥१
[-----------------] । [-----------------] ॥२
[-----------------] । [-----------------] ॥३
[-----------------] । [-----------------] ॥४
[-----------------] । [-----] मो लछ देइ सब ठाँई ॥५
कहू बिध करै सयानाँ, पंछी बिनहि परान ॥६
मन चंचल अस्थिर जनु इहै, निस्चल कै अस जान ॥७

५

(दिल्ली)

[जो यह*] रचि के चरित पसारा। सो घट महिं जो [---] सँहारा ॥१
[चित्र*] देखि के खोज चितेरा। खोज करहु तो मिलै सो नेरा ॥२
[अपनी*] दिस्टि जाइ जिह केरी। सोइ ठैं वह जोत सौतेरी ॥३
[परम*] तत्त सेउ लागै तारी। सहज रहै मन पिरत सँभारी ॥४
[-----] म जब लग दिन धावा। रैन भयें पाछैं पछतावा ॥५

काँम कोह तिस्ना मन माया, पंच बियापहि कत ॥६
पावक पवन धूर औ पानी, जबलग हम्ह सँग सत्थ ॥७

टिप्पणी—(२) नेरा-निकट।

६

(दिल्ली; एकडला[१])

पहिलैं नूर मुहम्मद[१] कीन्हाँ[२]। पाछे तेहि क (जात)[३] सब (चीन्हा)[४] ॥१
[औ तेहि] लग आपुहि परगटा[५]। सिव सकति[६] कीनसि[७] दोइ[८] घटा ॥२
[जेहि] रसनाँ वहि[९] नाँउँ न आवा। पावक जरैं मोंख नहिं पावा ॥३
[वहै] नाँउ कै[१०] बकति सुनावहु। मुकति होइ इँदरासन[११] पावहु ॥४
[भ]रम छाड़ि के होहु सयाने। नाँउँ भरम कस फिरहु भुलाने ॥५
जिह लग सब सयँसार रचाया[१२], बहुत भावना भाउ।६
पंछी पन्थ पुरान लै, सो राना सो राउ[१३] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।
१–मोहमद। २–कीन्ही। ३–जत, (दि०) चिन्ता। ४–चीन्ही; (दि०) लीन्हा।
५–परगटी। ६–सकती। ७–कीतिसि। ८–दुइ। ९–उवहि। १०–हियै नाव लै।
११–इन्द्रासन। १२–ही लगि ऐ···र रचाया। १३–पूरी पक्ति रिक्त।

टिप्पणी—(१) नूर-ज्योति। हदीसके अनुसार ईश्वरने सर्वप्रथम नूर अर्थात् ज्योतिको उत्पन्न किया था। वही ज्योति मुहम्मद साहबके रूपमे प्रकट हुई। जात-जाति, वर्ण, रूप। चीन्हा-अकित किया; चित्रित किया।
(२) सिव सकति-शिव और शक्ति।
(३) बकति-उक्ति, बोल, कथन। इँदरासन-स्वर्ग।

७

(दिल्ली, एकडला,[२] चौखम्भा)

चार मीत कर[१] सुनहु बखाना। [अबा बकर सों सुध कै[२] जाना] ॥१
उमर उन्ह सेउँ दूसरे[३] ठाँऊँ। जिहकै[४] अदल क आहै नाऊँ ॥२
उसमन बचन[५] दई[६] कै लिखे। जे[७] रे मुहम्मद अरहे[८] सिखे ॥३
अली सिंध बुधि आपुन गहा[९]। दूलम गढ़ इन्ह सेउ न [रहा][१०] ॥४
अस्टधातु कै पँवर उपारे[११]। कर सेउ[१२] उलटि पुहुमि धर[१३] मारे[१४] ॥५
चारेउ[१५] मीत आह बड़ पण्डित[१६], औ चारेउ[१७] समतूल।६
जिह पन्थ दिखराय दीन्हीं[१८], तिह कँह[१९] जरम न भूल[२०] ॥७

१. इस प्रतिमें पक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।
२. यह पृष्ट भारत कला भवनमें प्राप्त नहीं है। सम्मेलन संस्करणपर आश्रित।

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ।

१–(ए०)·· जोत कै। २–(चौ०) बकर सुधि कै। ३–(ए०) उनसौ दूसर, (चौ०) उहि सौ दूसरि। ४–(ए०) जेहिके। ५–(चौ०) राजचर्न। ६–(ए०) दैइय; (चौ०) दीन। ७–(ए०) जो। ८–(ए०) मोहमद अधरहु; (चौ०) महमद अढये। ९–(ए०) अली सिह बिधि आपन कीन्हा; (चौ०) अली सेर बिधि आपन कहा। १०–(ए०) दुगम गढ़ उन्ह सौं नहि दीन्हा; (चौ०) अगमगढ़ उन सौ कर रहा। ११–(ए०) असट धातुकी पौरि उपारी; (चौ०) असत धातुकी पवर उपारे। १२–(ए०) करसौ, (चौ०) गढ सौ। १३–(ए०) पुहुमी धर; (चौ०) पोहमी दै। १४–(ए०, चौ०) मारी। १५–(ए०) ×। १६–(चौ०) चार मीत बड़ पण्डित चारौ है। १७–(ए०) चारौ १८–(ए०) हाथ देखाये दीन है। १९-(ए०) ताकहँ। २०–(चौ०) मानसरोदक अमल, भरे कवॅल कर फूल।

टिप्पणी—(१) **चार मीत**–मुहम्मद साहबके पश्चात् होनेवाले चार उत्तराधिकारी खलीफा–अबूबक्र (६३२–६३४ ई०), उमर (६३४–६४४ ई०), उसमान (६४४–६५६ ई०), अली (५५६–६६ ई०)। **अबा बकर**–अबूबक्र। **सुध**–शुद्ध (अबूबक्र सिद्दीक कहे जाते है और उनकी ख्याति सत्यवादीके रूपमे है। उसीकी अभिव्यक्ति इस शब्द मे है)। **कै**–कौन।

(२) **उमर**–उमर फारूख कहे जाते है; सत्-असत्का विवेक उनका गुण था। निष्पक्ष न्यायके लिए इनकी ख्याति है। **अदल**–न्याय।

(३) **उसमन**–उसमान। इन्होने कुरानको अन्तिम रूपसे लिखित रूप दिया था। **अरहे**–(क्रि०–अढवना) किसी कामको समझाकर उत्तरदायित्वके साथ किसीको सौंपना।

(४) **अली**–ये असद अर्थात् सिंह कहे जाते है। **दूखम गढ़**–दुर्गम गढ़; यहाँ शाम (सीरिया)के निकट खैबर नामक यहूदी राज्यके कामूस नामक किलेसे तात्पर्य है।

(५) **अस्टधातुका पँवर**–कामूसके किलेका प्रवेश द्वार। (अलीने शाम (सीरिया)के सीमाके निकट यहूदियोके राज्य खैबरपर विजय प्राप्त की थी और उसके दुर्ग कामूसके प्रवेश द्वारको ढाह दिया था)।

८

(दिल्ली; एकडला[१], चौखम्भा)

सेख बढ़न[१] जग साँचा पीर[२]। नाउँ[३] लेत सुध होइ [सरीर][४] ॥१
कुतुबन नाउँ[५] लै र[६] पा धरे। सुहरवर्दी[७] दुँहु जग निरमरे ॥२

---

१. यह पृष्ट भारत कला भवनमें नहीं है। सम्मेलन सस्करणपर आश्रित।

पछिले[८] पाप धोइ सब गये। जो र पुराने औं[९] सब नये ॥३
नौ के आज भयउ[१०] अउतारा[११]। सब सेंउ[१२] बड़ा जं[१३] पीर हमारा ॥४
जिह कहु[१४] बाट देखाये[१५] होई। एक निमिख मँह पहुँचै सोई[१६] ॥५
जो यह[१७] पन्थ दिखाइ[१८] दीन्हि[१९] है, जो चलि जानै कोइ ।६
एक निमिख महँ पहुँचै[२०] तिह ठाँ[२१], जो सत भावइ सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ।

१-(ए०, चौ०) बुढन। २-(ए०) पीरू। ३-(ए०) नॉव; (चौ०) नाम। ४-(ए०) सरीरू। ५-(ए०) नॉव; (चौ०) नाम। ६-(ए०) रे, (चौ०) लेइ। ७-(ए०) सरबरदी, (चौ०) सहरबरद। ८-(चौ०) पछले। ९-(ए०) झरहि पुरान और; (चौ०) झरहि पुराने और। १०-(ए०) भये। ११-(चौ०) नै कै भया आज औतारा। १२-(ए०) सौ; (चौ०) सो। १३-(चौ०) सो। १४-(ए०) जा कहँ; (चौ०) जिह को। १५-(ए०) देखाई; (चौ०) दिखाई। १६-(चौ०) पोहचे एक निमक मह सोई। १७-(ए०) गुरू, (चौ०) जो उन्ह। १८-(ए०, चौ०) देखाय। १९-(चौ०) दीन। २०-(चौ०) निमिक एक मह पोहचे। २१-(ए०, चौ०) ×। २२-(ए०) जो सत भाव सै होय; (चौ०) जो सत भाव सो होय।

टिप्पणी—(१) **शेख बढन**—कवि-परिचय (पृ० १४) मे हमने अजोली निवासी मखदूम शेख बढनके, जो ईसा ताज जोनपुरीके शिष्य थे, कुतुबनके गुरू होने की सम्भावना प्रकट की है; किन्तु किसी सूत्रसे उनके सुहरवर्दी सम्प्रदायसे सम्बद्ध होने की बात ज्ञात न होनेके कारण, उसके सम्बन्धमे कोरे अनुमानका सहारा लिया है। उक्त अंशके छप जानेके पश्चात् हमे ज्ञात हुआ कि सुहरवर्दी सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखनेवाले वस्तुतः शेख बुढन नामक एक सन्त हुए हैं जो जौनपुरसे लगे हुए कस्बे जफराबादके निवासी थे। विगत शताब्दीके आरम्भमे वहीके निवासी नूरुद्दीन जैदीने फारसीमे तजल्लिये-नूर नामसे तीन भागोमे जौनपुरका विस्तृत इतिहास लिखा था। उनके हाथ की लिखी इस ग्रन्थ की सम्पूर्ण मूल प्रति जौनपुरके खानकाहमे सुरक्षित है। इस ग्रन्थमे उन्होने उक्त शेख बुढनका उल्लेख किया है। उसके अनुसार शेख बुढ़नका वास्तविक नाम शम्सुद्दीन था, वे रुक्नुद्दीनके पुत्र और सदरुद्दीन चिरागे-हिन्दके पौत्र थे। उसी सूत्रसे यह भी ज्ञात होता है कि बिहारके मुक्ती (शासक) मलिक इब्राहीम बयाँ उनकी दादीके पिता थे; और उनकी दादी उनके पितामह की दूसरी पत्नी थीं। सदरुद्दीनके सम्बन्धमे यह भी बताया गया है कि ७९५ हिजरीमें उनकी मृत्यु हुई। ऐतिहासिक सूत्रोसे मलिक बयाँ की निधन तिथि ७५३ हिजरी ज्ञात होती है। उनके पुत्र मलिक मुबारिक ७८१ हिजरीमे दलमऊके मीर थे; यह मौलाना दाऊद कृत चन्दायनसे ज्ञात

होता है। इन तिथियोके प्रकाशमे कहा जा सकता है कि शेख बुढनकी दादीका जन्म ७५३ हिजरीसे पूर्व और विवाह ७९५ हिजरीसे पूर्व किसी समय हुआ होगा और वे निसन्देह मलिक मुबारिकसे छोटी रही होगी। इस प्रकार यदि अनुमान करे कि शेख बुढन की दादी का जन्म अपने पिता की मृत्युसे दो तीन वर्ष पूर्व ७५० हिजरीके आस-पास हुआ तो उनके पिताके सम्बन्धमे कह जा सकता है कि उनका जन्म ७७० हिजरी या उसके बाद, ७९५ हिजरीसे पूर्व, किसी समय हुआ; और इसी प्रकार शेख बुढन का जन्म ७९० हिजरीके बाद ही किसी समय होनेकी बात कही जा सकती है। इन सम्भावनाओके प्रकाशमे सुगमताके साथ यह भी अनुमान किया जा सकता है कि यही शेख बुढन कुतुबनके पीर रहे होगे। उनसे कुतबनने अपनी युवावस्थामे ८५०–६० हिजरीके आस-पास किसी समय दीक्षा ली होगी। अतः अब मखदूम शेख बढनके कुतुबनके गुरू होनेकी क्लिष्ट कल्पना करनेकी आवश्यकता नही रह जाती। इस नये तथ्यकी जानकारीके प्रकाशमे बढनके स्थानपर बुढन पाठ को ही, जो बीकानेर और चौखम्भा प्रतियोका पाठ है, स्वीकार करना उचित होगा। उसे हमने दिल्ली प्रतिमे उकारात्मक चिह्नके अभावमे बढनके रूपमे स्वीकार किया था। **पीर**–गुरू।

(२) **सुहरवर्दी**–एक सूफी सम्प्रदाय जिसे शेख जुनेदके शिष्य शेख शिहाबुद्दीन सुहरवर्दीने तेरहवी शताब्दीमे आरम्भ किया था। इन्होंने मक्कामे अवारि-कुल-मारूफ (ईश्वरीय-ज्ञानका प्रसाद) नामक पुस्तक लिखी जो सूफी सम्प्रदायमे प्रमाण-ग्रन्थ माना जाता है। शिहाबुद्दीनके शिष्योने बगदादसे आकर भारतमे इस सम्प्रदायका प्रचार किया।

(३) **निमिख**–निमिप, क्षण, पल।

(४) **तिह**–उस। **ठाँ**–स्थान।

९

(दिल्ली; एकडला;[१] चौखम्भा)

साह हुसैन आह बड़ राजा। छात सिंघासन उन्ह पैं[१] छा[जा] ॥१
पण्डित औ बुधवन्त सयानाँ। पोथा बाँच[२] अरथ सब जानाँ ॥२
धरम दुधिस्टिल उँह कहँ[३] छाजा। हम सिर छाँह जियउ[४] जुग राजा ॥३
दान देइ[५] बहु गिनति[६] न आवा[७]। बलि औ करन न सरबरि पावा[८] ॥४
राइ[९] जहाँ लहि[१०] गँधरप अहई[११]। सेवा करहिं बारि[१२] सब चहई[१३] ॥५

१. यह पृष्ट भारत कला भवनमे नही है। सम्मेलन सस्करणपर आश्रित।

चतुर सुज्ञान[१४] भाखा[१५] सब जानाँ[१६], अइस न देखेंउ[१७] कोइ ।६
सभा[१८] सुनउ[१९] सब कान दइ[२०], फुनि र बखानों[२१] सोइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और चौखम्भा प्रतियाँ ।

१–(ए०) छत पत सब उनही पै; (चौ०) छत्र सिहासन उनको । २–(चौ०) पढ़ै पुरान । ३–(चौ०) उनको । ४–(ए०) जीउ; (चौ०) जियो । ५–(ए०) देय । ६–(ए०) गनत । ७–(ए०) आवै । ८–(ए०) पावै । ९–(ए०) राय । १०–(चौ०) लौं । ११–(ए०) गध्रप अहही । १२–(ए०, चौ०) बार । १३–(ए०) चहही; (चौ०) रहही । १४–(चौ०) महाज्ञन । १५–(ए०) भाषा । १६–(ए०) जानै । १७–(ए०) ऐस न देखै; (चौ०) ऐस न देखूँ । १८–(चौ०) सबा । १९–(ए०) सुनहु । २०–(ए०) दै । २१–(ए०) रे बखानै; (चौ०) रे दिखावहु ।

टिप्पणी—(१) **शाह हुसैन**—देखिये परिचय पृ० १८-२५ । **छात**—छत्र । **छाजा**—(प्रा० धात्वादेश छज्ज) सुशोभित होना ।

(२) **पोथा**—ग्रन्थ ।

(३) **दुधिस्टिल**—युधिष्ठिर ।

(४) **बलि**—सुप्रसिद्ध पौराणिक दानी जिससे वामन रूप धारणकर विष्णुने तीन पग भूमिकी याचनाकर सारा विश्व नाप लिया था । **करन**—कर्ण, महाभारतका प्रसिद्ध वीर, कुन्तीका पुत्र, जो अपने दानके लिए प्रख्यात है । रणभूमिमे आहत पड़े रहनेपर भी छद्मवेशधारी कृष्ण और अर्जुनको उसने अपना दाँत तोडकर उसमे लगे सुवर्णका दान दिया था । **सरबरि**—सरभरि, बराबरी ।

(५) **राइ**—राजा । **गँधरप**—गन्धर्व । **अहई**—है । **बारि**—अवसर । **चहई**—चाहते है ।

१०

(दिल्ली; एकडला)

अगिनित[१] ठाट गिनत[२] न आवा । खरदम खेह गगन सब छावा[३] ॥१
अपुनहि सँझर आगें कर पावा[४] । पाछे परै सो धूरि (फकावा)[५] ॥२
मेघडम्बर छाता बहु[६] तानै । सेवा करहि राउ[७] औ रानैं ॥३
तुरिय टाप अस खेह उड़ानी । आथि अम्बर भव पुहुमि जिह जानी[८] ॥४
गज गवन[९] जग साँसो होई । बासुकि इन्द्र दुहौ[१०] बुधि खोई ॥५
जिय[११] दान जो चाहै, दिन दस[१२] सेवा करो[१३] सौ[१४] बार ।६
जाकहँ भौंह होइ चख[१५] मैली, सो र होइ[१६] जरि छार ॥७

मूल पाठ—(२) पकावा ।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–अंगत । २–बहु गनत । ३–अमिय सुझर आगे कर पावा । ४–पाछे परै जो बंक बुकावै । ५–घोर महि गगन खेह सब छावै । ६–सब । ७–राव । ८–ऑधि-

यसर मै पुहुमी छपानी। ९–राजा गौने १०–दुहूँ। ११–जीउ। १२–×।१३–करै। १४–सो। १५–होय चुख। १६–रे होय।

टिप्पणी—(१) ठाट–सेना। **खरदम**–(स० कर्दम), कीचड, कॉदो। **खेह**–धूल।
(२) **अपुनहि**–स्वयं।
(३) **मेघडम्बर छाता**–काला रेशमी छत्र।
(४) **तुरिय**–घोडा।

११

(दिल्ली)

डाँड़ इन्द्र बासुकि सेंउ लेई। अउर डाँड़ लंकेसर देई ॥१
इँह बड़ न कोई गुनी सयानाँ। देवतहिं आयसु इँह कर मानाँ ॥२
जासों हँसि कै बात एक कहिहैं। दुख दारिद औ पाप न रहिहैं ॥३
पिरिथ म अइस भयउ न कोई। सर तो देउँ सुनेउ जो होई ॥४
पाप पुन्न लेउँ जरमहिं काऊ। धरम करत कछु कहि जाऊ ॥५
अधरम कियउ न जग महँ काउ, धरम करहि बहु भाँत ।६
निस बासर बिबि तैसहिं चितहिं, बुधि परसहिं तो साँत ॥७

टिप्पणी—(१) डाँड–दण्ड, कर।
(२) **आयसु**–आदेश।
(३) **जासो**–जिससे।
(४) **अइस**–ऐसा
(७) **निस बासर**–दिन-रात। **बिबि**–द्वय, दोनो।

१२

(दिल्ली, एकडला)

पढ़ँहि[१] पुरान कठिन जो होई। अरथ [कहहिं] समुझावइ [सोई] ॥१
एक एक[२] बोल क दस दस भावा। पंडितहिं अचकर[३] बकति[४] न आवा ॥२
अउर[५] बहुत उन्ह केरि बड़ाई। हमरें कहे कहाँ कहि जाई ॥३
मुँह महँ[६] जीभ सहस जो होई। तोर[७] बड़ाई करै जो कोई ॥४
जब[८] लगि अस्थिर[९] रहे सुमेरू। हरि-भारजा बहै जमु नेरू[१०] ॥५
सवन[११] सुनहु चित लाइ कर[१२], कहौं बात हौं[१३] एक ।६
आउ बढ़ौ हुसेनसाह कै[१४], आह जगत कै टेक ॥७

पाठन्तर—एकडला प्रति।
१–कथा। २–पण्डित क। ३–अजगुति। ४–बकत। ५–सीर। ६–×। ७–तौरे। ८–×। ९–असथिर। १०–जम नीरू। ११–स्रवन। १२–लाय कै। १३–मै। १४–जाउ बढ़ो जस मै कही।

टिप्पणी—(१) पुरान—धर्मग्रन्थ

(२) अचकर—चकित। वकति—(उक्ति) बोल, वचन।

(३) उन्ह केरि—उनकी। हमरें—मेरे।

(४) तोर—तुम्हारा।

(५) अस्थिर—स्थिर, दृढ। सुमेरु—सुमेरु पर्वत। हर-भारजा—गंगा। जमु—यमुना। नेरू—निकट।

(६) सवन—श्रवण। हौं—मैं।

(७) आउ—आयु।

१३

(दिल्ली, चौखम्भा)

उन्ह के राज यह र हम कही[1]। नौ सै नौ[2] जौ[3] संबत अही ॥१
माह मुहर्रम चाँदहि चारी[4]। भई सपूरन कही निबारी[5] ॥२
गाथा[6] दोहा अरिला रचा[7]। सोरठा चौपाइन्ह[8] कै सजा[9] ॥३
साखी आखर बहु आये[10]। औ देसी चुनिचुनि सब[11] लाये ॥४
पढ़त सुहावन दे जै[12] कानूँ। यहि[13] कै सुनत न भावइ[14] आनू ॥५
दोइ[15] रे माँस दिन दस मँह[16], जोरत यह ओरानेउ जाइ[17] ।६
एक बोल मोति[18] जस पिरवा,[19] बकता चित मन लाइ[20] ॥७

पाठान्तर—चोखम्भा प्रति।

१—पूरी पंक्ति अनुपलब्ध। २—नव। ३—जब ४—रे अ मोहर्रम चॉद उजियारी। ५—यह कवि कही पूरी सँवारी। ६—गाहा। ७—अरैल अरज। ८—चौपाई। ९—सरज १०—सास्तर अगिर बहुतै आये। ११—कछु। १२—दीजै। १३—इह। १४—भावै। १५—दोय। १६—माही। १७—यह रे दौराये आये। १८—मोती। १९—पुरवा। २०—इकठा मन चित लाये।

टिप्पणी—(१) जौ—जब। अही—थी।

(२) माह—मास, महीना। मुहर्रम—इस्लामी गणनाके अनुसार पहला महीना। चारी—चतुर्थी, चौथ। सपूरन—सपूर्ण।

(३) गाथा—प्राकृत और अपभ्रंश साहित्यमे प्रयुक्त विषम छन्द जिसके प्रथम चरणमें १२, दूसरेमे १८, तीसरेमे १२ और चौथेमे १५ मात्राएँ होती हैं। दोहा—२४ मात्राओका छन्द जिसमे १३ और ११ पर विराम होता है। यह तुकान्त होता है। अरिला—अरिल्ल, १६ मात्राओंका छन्द जिसके अन्तमे यगण(लघु, गुरु, गुरु) होता है। सोरठा—२४ मात्राओका छन्द जो दोहेका ठीक उल्टा है अर्थात् ११,१३ मात्राओं पर बिराम होता है और इसमे पहले

और तीसरे पदके तुक मिलते है। **चौपाइन्ह**–चौपाई। १६ मात्राओंका छन्द जिसकी अन्तिम मात्राएँ जगण (लघु, गुरु, लघु) होती है।

(४) **सास्त्री**–शास्त्रीय, यहाँ तात्पर्य संस्कृतसे है। **आखर**–अक्षर।

(५) **जै**–जो। **भावइ**–भाता है, सुहाता है। **आनू**–अन्य, दूसरा कुछ।

(६) **दोइ**–दो। **जोरत**–जोडते हुए। **ओरानेउ**–समाप्त हुआ।

(७) **बकता**–वचन।

१४

(दिल्ली)

तौ हम एक कथा यह कही। जो हमरे सेउ सवनी आही ॥१
बात नरिन्द कही अनुसारी। सुनहु कान दै कहौं सँवारी ॥२
औ सब कथा न आहहि पहिले। कुछ र पहिलैं कुछ जैसन चले ॥३
रस क लंक निरमर बड़ आही। दूसर ओर दिखावहु ताही ॥४
यह कर विलग न मानै कोई। लेहु सँवार को टूटत होई ॥५
जे करतार बड़कर सरजी, ते र छिपाव न दोख ।६
जो न कहा पुरखहँ कर मानै, तिहँ कँह आह न मोख ॥७

टिप्पणी—(१) **हमरे सेंउ**–मुझसे। **सवनीं**–सुनी। **आही**–थी।

(२) **आहहिं**– थे। **जैसन**–जिस प्रकार।

(७) **पुरखहँ**–पूर्वज (बहुवचन)। **आह**–है। **मोख**–मोक्ष।

१५

(दिल्ली, एकडला)

एक बात अब कहउँ रसाल[१]। रतन मोंति[२] आनउँ भरि थाल[३] ॥१
राजा एक सँवन[४] हम सुना। अति र दानि[५] लोना बहु गुना ॥२
बहुत कटक अगनित असवारा। धरम पन्थ वह दई[६] सँवारा ॥३
एकौ राउ व वहि सौं[७] पारइ[८]। जो र[९] जूझ सो ततखन[१०] हारइ[११] ॥४
जो कछु चाहे[१२] सो सब आहा[१३]। एक न पूत नाँउ जिंह[१४] रहा ॥५
अरथ दरब हाथी बहु[१५] घोरा, गिनत न आउ भँडार[१६] ।६
माँगै पूत दुउ[१७] कर जोरी[१८], बेगि देहु[१९] करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–कहौ रिसाला। २–मोती। ३–थाला। ४–सौन। ५–दानी। ६–उन्ह दैअ। ७–सौ। ८–पारहिं। ९–रे। १०–ततिखन। ११–हारहि। १२–कुछु चाहिअ। १३–अही। १४–नाव जेहि। १५–औ। १६–भँडारा। १७–दुहुँ। १८–जोरे। १९–देहि।

टिप्पणी—(१) आनउँ–लाऊँ।

(२) सँवन–श्रवण, कान। लोना–(लवणयुक्त) रूपवान।

(३) कटक–सेना। दई–ईश्वर। असवारा–सवार।

(४) वहि सो–उससे। पारई–जीत सकते है। जूझ–जूझते है। ततखन–तत्क्षण; तत्काल।

(६) अरथ–अर्थ, धन। दरब–द्रव्य। घोरा– घोडा।

(७) दुउ–दोनो।

१६

(दिल्ली, एकडला)

खोलि भँडार देइ[1] सब लागा। जिन्ह[2] पावा तिंह[3] दारिद भागा ॥१
भूखहि[4] भुगुति पियासहि[5] पानी। नाँगहि कापर दीन्ही[6] आनी ॥२
मन कामना जो पुरवइ[7] आसा। मरम जानि नहिं करै निरासा ॥३
जो बिधि सों मन ईछा माँगी[8]। पाइ सबै न एको खाँगी ॥४
अस माँगा[9] बिधि हम कौं देहू। अरथ दरब धन पूत सनेहू ॥५
जो माँगेसि सो पायसि बिधि[10] सौं[11], आसा[12] रही न एको खाँग ।६
एक न पूत तिंह[13] आहा घर वहि[14] कैं, सो बिधि सों लइ[15] माँग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–देय। २–जे। ३–तेहि। ४–भूखेंहि। ५–पियासे। ६–दीतिन्हि। ७–पुरवै। ८–माँगा। ९–आसा मा। १०–१२ ×। १३–×। १४–उहि। १५–लीहु।

टिप्पणी—(१) दारिद—दरिद्रता।

(२) भुगुति–(भुक्ति) भोजन। नाँगहि–नगों को। कापर–कपड़ा। आनी–लाकर।

(३) पुरवइ–पूरा करै। मरम–(मर्म) मन की बात।

(४) ईछा–इच्छा, मनोकामना। खाँगी–खण्डित, अधूरी; व्यर्थ गयी।

(६) खाँग–खण्डित।

१७

(दिल्ली, एकडला)

राजा[1] पूत मँदिर औतारा। अति सरूप धनि [सिरजनहारा] ॥१
ससिहर जनौं[2] पूनिउँ कर[3] आहा। भरि उँजियार जगत महँ रहा ॥२
राजैं पूत दिस्टि भरि देखा। भा आनन्द अस आउ[4] न लेखा ॥३
करम जोति मनि दिपै लिलारा। लखन बतीसों राजकुवाँरा[5] ॥४
पण्डित औ बुधवन्त हँकारे। रासि गुनहु[6] औ नखत उन्हारे ॥५
गुनि गुनि पतरा देखु[7], कौन गरह दहिनो[8] सुद्ध[9] ।६
नाउ[10] धरहु निरमल उत्तिम[11] कै, लखन देखि सब बुद्ध[12] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–जामा दिन पूत औतारा। २–जनि। ३–कै। ४– आव। ५–राजकुमार। ६–गनहु। ७–गनि गुनि देखहु पडितहु। ८–दहु। ९–सुध। १०–नाव। ११–×। १२–औ बुध।

टिप्पणी—(१) **सिरजनहारा**–सृष्टिकर्ता, ईश्वर।

(२) **ससिहर** (शशधर) चन्द्रमा। **पूनिउँ**–पूर्णिमा। **कर**–का।

(३) **दिस्टि**–दृष्टि।

(४) **मनि**–मणि। **दिपै**–दीप्तिमान हो।

(५) **हँकारे**–बुला भेजा। **उन्हारे**–उच्च।

(६) **पतरा**–पत्र, ज्योतिष ग्रन्थ। **गरह**–ग्रह।

(७) **नाँउ**–नाम। **धरहु**–रक्खो। **लखन**–लक्षण।

१८

(दिल्ली, एकडला)

बाँभन बैठि गुनै[1] सब लागे। रासि गुनहिं[2] (उन्ह)[3] करम सुभागे[4] ॥१
गुनी[5] रासि बड़ राजा[6] होई। यहि[7] सरि अउर[8] न पूजै कोई ॥२
तुला[9] रासि गुनि[10] नाउ[11] सो राखा। राजकुँवर सब पँडितहि सुभागा[12] ॥३
बहुत गरह उन्ह उत्तिम गुने[13]। कछु रे गरह आहहिं [सामने] ॥४
तिहि[14] गुनि गुनि पडितँहि कहि[15] सोई। तिय बियोग[16] कर[17] कछु दुख[18] होई ॥५
दइ र[19] असीस जोतिखी[20] बहुरे, पायँहि बहुत बिसाउ[21] ।६
धन परिवार कुटुँब सेउँ समेंत[22], जुग जुग जीवउ[23] राउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–गनै। २–गनहि। ३–(दि०) दुहुँउँ। ४–सभागे। ५–सनि। ६–राज जो। ७–एहि। ८–और। ९–मुला। १०–गनि। ११–नाव। १२–पण्डितन्ह भाखा। १३–गने। १४–×। १५–कहा पुनि। १६–बिऊग। १७–आगे। १८–×। १९–×। २०–जोतिषी। २१–पसाउ। २२–कुटुँब सौ। २३–जीऔ।

टिप्पणी—(१) **बांभन**–ब्राह्मण।

(२) **सरि**–समान।

(६) **जोतिखी**–ज्योतिषी। **बहुरे**–लौटे, वापस गये। **बिसाउ**–सामग्री।

१९

(दिल्ली, एकडला[1])

राजैं धाइँहि आयसु दीन्हा[1]। पालहु बेग जो हमकहँ चीन्हाँ[3] ॥१
धाइहिं अस कै खीर पियावा। बरिस देवस मँह बचन सुनावा ॥२

---

१ इस प्रति मे पक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है।

[बरिस] पाँच मँह भयउ[3] सवाई। राजैं पँडितहिं कहा बुलाई[4] ॥३
तुम्ह[5] सब यह[6] कँह गुन सिखरावहु। पढ़ ओगइ तो बान बुझावहु[7] ॥४
पंडित आइ[8] पढ़ावइ लागे। जो कछु गुन तेहि[9] चित मँह जागे ॥५
दस रे बरिस महँ पण्डित[10] अस भा, पोथा बाँच पुरान।६
हेंगुरि खेल बेझ भल मारै, नागर चतुर सुजान।७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—दीन्ही। २—हमकहु चीन्ही। ३—भयेव। ४—बोलाई। ५—एह। ६—उन्ह। ७—भेजावहु। ८—उन्हहि। ९—थे। १०—×।

टिप्पणी—(१) आयसु—आदेश। हमकहँ—हमको, मुझको। चीन्हाँ—पहचाने।

(२) खीर—(क्षीर) दूध।

(३) ओराइ—समाप्त कर चुके। बान—बाण। बुझावहु—शिक्षा दो।

(७) हेंगुरि—चौगान, आधुनिक पोलो से मिलता-जुलता खेल है जिसमे अनेक घुडसवार खिलाडी मैदान मे गेद डालकर मुडी हुई छडी से खेलते हैं। वासुदेवशरण अग्रवाल का अनुमान है कि इस शब्द की व्युत्पत्ति हय + अर्गल (घोड़े पर चढ़कर खेलने का डण्डा) से होगी। बेझ—(स० वेध्य) निशाना, लक्ष्य। नागर—नगरनिवासी, सभ्य।

२०

(दिल्ली; एकडला)

अति बुधवन्त अथा[1] भल नाऊँ। सब देखहिं[2] आवहिं वहि[3] ठाऊँ ॥१
करै अहेरा[4] साउज मार। रात देवस वहि यहै[5] धमार ॥२
एक दे[व]स जो अहेरैं[6] जाई। जन राउत संग लिहसि तुलाई[7] ॥३
सब कहँ बेरहन दीनिहि[8] आनी। पीठ घालि पाखर सुनवानी[9] ॥४
चढ़[10] असवार साथ सब चले। राजपूत रुपवन्त[11] जो भले ॥५
रहसत चले जो साथ कुँवर के, खेलै लाग अहेर।६
साउज बहुत अहे तिंह[12] बन महँ, होइ लाग भट भेर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—उठा। २—देखै। ३—उहि। ४—अहेर। ५—उहाँ ओहि। ६—अहेर। ७—लीन्हि बोलाई। ८—दीतन्हि। ९—सोनवानी। १०—भै। ११—रूपवन्त। १२—सावज उठै बहुत तेहि।

टिप्पणी—(१) ठाँऊ—स्थान।

(२) अहेरा—आखेट, मृगया, शिकार। साउज—(स० श्वापद>साउज्ज> साउज) जगली जानवर।

(३) राउत–(स० राजपुत्र>राअउत्त>राउत)—सामन्त, सरदार। बुलाई–निकट बुलाया।

(४) बेरहन (?) सवारी। घालि–रखकर। पाखर–पक्खर, अश्व कवच; जीन। सुनवानी–(स्वर्णवर्णी) सुनहला।

(६) रहसत–हर्षित होकर।

(७) अहे–थे।

२१

(दिल्ली)

बेगर बेगर सउजँहि साथ। सारि क बान फोंक लै हाथ ॥१
राजकुँवर फुनि बेगर परा। निरखसि साउज जे र जिय घिरा ॥२
बरन सात एक मिरगी देखी। अपनै जरम न कहियउ पेखी ॥३
कहसि कुरंगिन जरम न होई। [चूरा नेउर पहिरी सोई*] ॥४
जो सब अभरन पहिरे सामाँ। [रँगत चली*] जानौ भल रामाँ ॥५
देख अचम्भो राउ रहि, फुनि र चलानसि घोर ।६
कहसि बान हौं का यह मारो, उतर धरो हथजोर ॥७

टिप्पणी—(१) बेगर बेगर–अलग-अलग। फोक–नुकीला।

(२) फुनि–पुनः। बेगर–अकेला। निरखसि- देखा।

(३) बरन–वर्ण, रग। जरम–जन्म। कहियउ–कभी। पेखी–देखा।

(४) कुरंगिन–हिरणी। जरम–जन्म। चूरा–चूडा, पैर का आभूषण। नेउर–पायजेब।

(५) चलानसि–चलाया। घोर–घोडा।

(७) बान–बाण। हो–मै। का–क्या। धरो–पकड़ूँ।

२२

(दिल्ली)

छाड़सि घोड़ धरै वहि चहा। देखत रूप पेम चित गहा ॥१
मन महँ कहिसि नियर होइ धरौं। हाथ न आउ तोहि पै मरौं ॥२
कहि धरौ नियर अब आई। तरक कुरंगिनि चली पराई ॥३
हाथ मलै औ जिय पछताई। चली कुरंगिनि चित एक लाई ॥४
चढ़ा तुरंग साथ वह लागा। केसर रूप मिरिगि फुनि भागा ॥५
जोजन सात मिरिग के पछयें, परा जाई जो अकेल ।६
बेगर परा साथ सेउँ कुँवर, लोग जान सब खेल ॥७

टिप्पणी—(१) धरै–पकडना। वहि–उसको। पेम–प्रेम। गहा–धारण किया।
(२) महँ–मे। नियर–निकट। धरौं–पकड़ूँ।
(३) तरक–तडक, छिटककर। पराई–भाग।
(४) तुरंग–घोडा।
(५) जोजन–योजन। पछयें–पीछे।

२३

(दिल्ली, एकडला)

राउ[1] अकेल मिरिगि[2] है जहाँ। तीसर अउर[3] न अहै[4] तहाँ ॥१
लुबुधा पेम कुरंगिनि केरा[5]। बुधि बिसरी सुधि गई सवेरा[6] ॥२
हरियर[7] बिरिख दीख[8] एक महा। मानसरोदक तिंहि तर बहा[9] ॥३
कुँवर संगति[10] कुरंगिनि डरी। मानसरोदक भीतर परी ॥४
तेहि मँह मिरिगी छपानेउ[11] आई। बहुरि न निकसा गयउ हिराई[12] ॥५
तुरिय बाँधि तरुवरि सेंउ[13], ततखन[14] कापर धरसि[15] उतारि ।६
बेगि पइठ[16] सरवर महँ, डुबि डुबि[17] ढूँढ़े लागि निहारि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।
१–राव। २–मिरिग। ३–तेसर और। ४–कोई। ५–केरी। ६–सबेरी। ७–हरिनी। ८–देख। ९–तेहितर मानसरोदक ब[हा]। १०–सचीत ११–छपानेव। १२–निकसी गई हेराई। १३–सौं। १४–X। १५–धरिसि। १६–पैस। १७–X।

टिप्पणी—(१) अउर–और। अहै–था। तहाँ–उस जगह।
(२) लुबुधा–लोभी। केरा–का।
(३) हरियर–हरा। बिरिख–वृक्ष। मानसरोदक–मानसरोवर।
(५) छपानेउ–छिपी। बहुरि–लौटकर; फिर। निकसा–निकला। हिराई–खो।
(७) पइठ–घुसकर। निहारि–(क्रि० निहारना) देखकर।

२४

(दिल्ली; एकडला)

ढूँढै[1] लागि न पायसु चाहा। बिसरा सबै जो मन महँ आहा ॥१
जब लगि हौं न कुरंगिनि पावँउँ[2]। मरौं न जीवन कहँ जिउ ला[वउँ][3] ॥२
सुधि बिसरी बुधि गई हेरानी। चित महँ गड़ी सो[4] पिरम कहा[नी] ॥३
बिसरि न जाइ[5] चित्र चित लहई[6]। पाथर माँझ कीर जनु गहई[7] ॥४
खिन खिन[8] पेम अधिक चित चढ़ा। दुइज चन्द्रमाँ जनु गहन सों कढ़ा[9] ॥५
चाहिसि बहुत न पाइसि वह[10] कहँ,[11] निकसि ठाढ़ भा तीर ।६
रोवइ[12] बहुत आँसु पर आँसू, कुछउ[13] न सँमुझ सरीर ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—आपु । २—पावौ । ३—मरौ इहा पै चित न डोलावौ । ४—जो । ५—जाऐ । ६—चित र चित लीही । ७—जनि कीसी । ८—खन खन । ९—दूज चन्द्र मान सो गढा । १०-११—× । १२—रोवै । १३—कुछौ ।

टिप्पणी—(३) हेरानी—खो ।

(४) माझ—मध्य, बीच । कीर—कील । गहई—गडी हो ।

(५) गहन—ग्रहण । कढ़ा—निकला ।

(६) भा—हुआ ।

२५

(दिल्ली; एकडला)

पेम चखाइ[1] गई तिह जोवइ[2] । लंक टेकि कर ठाढ़ बहु रोवइ[3] ॥१
जस[4] भादों बरिसै अतिवानी । सब जग भरा नैन कै पानी ॥२
सलिला सबै सरग कै बहई[5] । लघु दीरघ जहवाँ लह अहई[6] ॥३
जस पावस बरिसै गरलाई[7] । खिनखिन[8] अधिक न उघरहिं[9] जाई ॥४
कहै पंखि बिधि देइ उड़ावों[10] । सवन सुनो हौं तिह ठाँ जावों[11] ॥५
झुरवइ बैठि ठाढ़ [होय, कछु न आउ बिचार] ।६
लोग कुटुँब घरबार तिह[12] लग, बिसरा [सब सँयसार] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—सिखाइ । २—तेहि जोवो । ३—ठाढ़े रोवै । ४—अस । ५—सरिल गै भई । ६—लघु दीरिघ जग मह भरि गई । ७—घहराई । ८—खन खन । ९—उघरै । १०—देहि उड़ाऊँ । ११—सॉन सुनौ जाव तेहि ठाऊँ । १२—तोह ।

टिप्पणी—(१) जोवइ—प्रतीक्षा करता है । लंक—कमर । ढाढ—खडा ।

(२) आतिवानी—अत्यधिक ।

(३) सलिला—सरिता, नदी । सबै—सभी । जहवाँ—जहॉ । लह—तक ।

(४) झुरवइ—(सं० स्मृधातुका प्रा० धात्वादेश झूरई) याद करना, चिन्तन करना । ठाढ—खडा ।

२६

(दिल्ली; एकडला)

खेलत सबै[1] अहेरा जहाँ । राजकुँवर न देखहिं[2] तहाँ ॥१
एक एक कहँ पूछइ[3] बात । काहूँ देखा[4] जोजन सात ॥२
कहिसि मिरिगि कैं पाछे जाई । तुम तिह चलहु[5] जनि परै भुलाई ॥३
ढूँढत चला साथ[6] सब कोई । राजकुँवर दुहुँ किह[7] ठाँ होई ॥४
दीखि[8] एक बिरिख अति हरा । मानसरोदक तिंहि तर[9] भरा ॥५

परस घाट सब बाँधे[१०] रचि रचि,[११] ईंगुर बहुत क रसाइ[१२] ।६
कौसीसा रावटि फुनि लागा,[१३] देखि[१४] पाप झरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–कुवरा सबौ । २–नहि देख । ३–पूछहि । ४–देखी । ५–तोहहु जाहु । ६–साथ चला । ७–केहि । ८–देखिन्हि बिरिख एक । ९–तिहि तर मानसरोदक । १०–कनक घाट सब बिधि । ११–×। १२–जरी रतन बहुलाय । १३–सरवर बिरिख बखानौ । १४–सुनत ।

टिप्पणी—(२) कहँ–से । काहूँ–कोई । जोजन–योजन ।

(४) दहुँ–न जाने; कदाचित् ।

(५) तर–नीचे ।

(६) परस–पारस पत्थर । ईंगुर–सिन्दूर से बना लाल रंग ।

(७) कौसीसा–(कपि-शीर्ष) कँगूरा । रावटि–छोटा मण्डप, लाजवर्द पत्थर ।

२७

(दिल्ली; एकडला)

सुझर पानि दीखत[१] अति चोखा । पियत जो[२] रहै न[३] एको दोखा ॥१
बेना बास पियत अति मीठा । अँबरित अइस न जग महँ दीठा[४] ॥२
सीतल सेत अम्भु[५] कर रूपा[६] । पंक[७] कपूर सुनहु सो अनूपा[८] ॥३
फूले बहुत[९] कँवल तिह आहा[१०] । लुबुधा भँवर पेम कर गहा[११] ॥४
फूली कुमुदिनी[१२] सघन सोहाई । ससि पुरइन जासों गर[१३] लाई ॥५
चकई चकवा हँस केलि कर, देखत अति रे सुहाउ[१४] ।६
बिरिख अपूरब कहा[१५] सराहौं, कै भगवन्त सो लाउ[१६] ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१–पानी देखत । २–×। ३–नहि । ४–अम्रित अैस तै चमकै दीठा । ५–अम्बु । ६–रूप । ७–ऐक । ८–जो सुनहु अनूप । ९–पुहुप । १०–तहँ अही । ११–गही । १२–मोदिनी । १३–ससि पिरीति जासो गहि । १४–सुहाव । १५–काह । १६–लाव ।

टिप्पणी—(१) सुझर (शुद्ध > सुज्झ > सुझ > सुझर) निर्मल । चोखा–उत्तम, श्रेष्ठ, खरा । दोखा–(दूखा) कष्ट, रोग ।

(२) बेना–(सं० वीरण) खस । अँबरित–अमृत । दीठा–देखा ।

(३) सेत–(श्वेत) सफेद । अम्भु–जल, पानी । पंक–कीचड़ ।

(४) कँवल–कमल ।

(५) पुरइन–(सं० पुटकिनी) कमलकी बेल । जासों–जिससे । गर लाई–गले लगाया ।

२८

(दिल्ली; एकडला)

कदलि[१] पेड़ डारैं छतनारी[२]। अँबरित सींचि[३] कै र[३] सवारी ॥१
हरे पात सब कोंपल नयें। अति चिकनें आरसी सों भयें ॥२
जनु[४] राजा पर डम्बर तानाँ। तिंह[५] तर बैठि देखि[६] उन्ह रानाँ ॥३
उतरि[७] सबै नियर चलि आये। कै जुहार[८] सिर भुइँ लै लाये ॥४
आइ बैठि सब पूछहिं बाता। साँवर बरन भयउ किंह[९] राता ॥५
कँवल भाँति दिन बिगसत, जस निसि उवइ[१०] मयंक ।६
रोवइ चेत न चीतै तन[११] सुधि,[१२] दब्ब गयें[१३] जिमि रंक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—केदली। २—डारि छतनारी। ३—अँब्रित सीचे के रे। ४—जनि। ५—तेहि। ६—बैठ देख। ७—उतरे। ८—जोहारि। ९—भयेव कहा। १०—उवै। ११-१२—×। १३—द्रब गये।

टिप्पणी—(१) कदलि—कदली, केला। डारैं—डाले। छतनारी—फैली हुई। अँबरित—अमृत। सवाँरी—सजायी।

(२) आरसी—दर्पण।

(३) डम्बर—छत्र। उन्ह—उन्होने।

(४) नियर—निकट। जुहार—अभिवादन, प्रणाम। भुँइ—भूमि।

(५) साँवर—श्यामल। बरन—वर्ण, रग। राता—(रक्त) अनुरक्त।

(६) बिगसत—विकसित होता है। उवइ—उगता है। मयंव—चन्द्रमा।

(७) चेत—स्मृति। चीतै—धारण करे। दब्ब—(द्रव्य) धन। रक—निर्धन।

२९

(दिल्ली, एकडला)

उतर[१] न देइ[२] पेम गढ़[३] लीता। स्रवन[४] न सुनैं नेह पर चीता ॥१
फुनि र कहहि हम आयसु[५] होई। जो मनसा चित पुरवहिं सोई ॥२
कहिसि मिरिगि[६] हम आगैं आवा। बरन सात इक भाइ[७] देखावा ॥३
सींग जरी का[८] कहौं सवाँगा। गले हार गजमोतिंह माँगा ॥४
[निउर पाउँ*] घुँघरू आहे[९]। नैन सरूप जाँहि नहि कहे ॥५
चंचल चपल चलत खिन, [जानहु चलै उड़ाइ[१०]] ।६
देखत (बिनु वह)[११] कहै न आवै, इँह[१२] महँ गई बिलाइ[१३] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—कुँवर। २-देअ। ३—गहि। ४—सौ। ५—आएेस। ६—मिरग। ७—मिरिग। ८—मिरिग जरे का। ९—चुरचुरा घुँघरू अहे। १०—उडाय। ११—पैवन (दिल्ली

प्रति में भी 'पैबन' पाठ हे; किन्तु वहाँ 'पै' काट दिया गया है और 'बन' के बाद 'वह' लिखा गया है। साथ ही मार्जिन मे एक इतर पाठ भी है जो 'पर वै' पढा जा सकता है। १२—अेहि। १३—हेराय।

टिप्पणी—(२) मनसा—मनोकामना। पुरवहिं—पूरा करेगे। सोई—उसे।

(४) सवाँग—सर्वांग। माँगा—माँग; केश के बीच विभाजक पतली रेखा जिसमे स्त्रियाँ सिन्दूर भरती हैं। इस स्थान पर स्त्रियाँ मोतियो का बना आभूषण-विशेष भी पहनती रही हैं।

(५) जाँहि—जाय।

(७) बिलाइ—लुप्त।

३०

(दिल्ली)

किहिस सिंगार सपूरन गही। बहुतै छवि रूप बहु लही ॥१
बारह अभरन पहिर सँवारी। अति सरूप भर जोबन वारी ॥२
सो हम देखत यहि कहँ गयी। अइस न जाने वँह का भयी ॥३
यह अस बात जाइ न कही। वह अपछरा इन्द्र कै अही ॥४
उठहु चलहु घर खेलत जाही। पिता पाछु तुम्ह जीयहिं नाही ॥५
कहा तुम्हार न बारौं मन्तैं, जो घट महँ जिउ होय।६
जिउ ले गई कया पै देखी, नैन रहे पँथ जोय ॥७

टिप्पणी—(१) अभरन—आभरण, जेवर, गहना, आभूषण।

(३) अइस—ऐसा। का—क्या। भयी—हुई।

(४) अपछरा—अप्सरा।

(५) पाछु—परोक्ष।

(६) बारौं—वर्जित करूँ, टालूँ। मन्तैं—मन्त्रणा देनेवाले लोग; मित्र।

(७) जोय—जोह, प्रतीक्षा।

३१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात उन्ह सों[1] अस कही। सकलहिं[2] कै जियँ चिन्ता गही ॥१
सब आपुन[3] मँह मँता कराहीं। कुँवरहिं[4] छाड़ि कहाँ हम जाहीं ॥२
कुँवरहि बहुरि लागि[5] समुझावइ[6]। पेम[7] गहा वहिं[8] चित न डुलावइ[9] ॥३
कहसि चाउ[10] जो तुम्ह हिय[11] मोरीं। पैंठहु[12] ढूँढइ[13] कापर[14] छोरी ॥४
ढूँढइ पइठ[15] कुँवर जो कहा। निकस[16] बइठ[17] कुछउ[18] न[19] अहा ॥५
बहुरि लागि समुझावइ[20], सब मिलि[21] बैठि कुँवर के पास।६
कउनउ[22] भाँति न समुझइ[23] दुबुधा[24], लै[25] ऊपर[26] कै साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) सै। २–(ए०) सगलेन्ह; (बी०) सगलेहु। ३–(ए०) आपन। ४–(ए०) कुँअरहि। ५–(ए०) लाग; (बी०) लाग बहुरि। (६) (ए०) समुझावै। ७–(बी०) पैम। ८–(ए०) उवह; (बी०) पै। ९–(ए०) डोलावै; (बी०) डुलावै। १०–(ए०) चाँडि; (बी०) चाँड। ११–(ए०) तोहि है, (बी०) तोहि आहे। १२–(बी०) पैसहु। १३–(ए०) ढूँढै, (बी०) ढूँढहु एहि महि। १४–(ए०) कपरा। १५–(ए०) ढूँढै पैठि; (बी०) ढूँढै पैसि। १६–(बी०) निसे। १७–(ए०, बी०) ढूँढि। १८–(ए०) कुछु, (बी०) किछु। १९–(ए०) नही। २०–(ए०, बी०) लगे समुझावै। २१–(ए०) ×। २२–(ए०) कौनउ; (बी०) कौनहु। २३–(ए०, बी०) समुझै। २४–(ए०) ×। २५–(ए०) लेय, (बी०) लेइ। २६–ऊभि।

टिप्पणी—(१) सकलहिं–सब लोगोको।

(२) आपुन–अपनेमे। मँता–सलाह, परामर्श। छडि–छोडकर। जाहीं–जायँ।

(३) बहुरि–पुनः।

(३) चाउ–चाव, स्नेह। हिय–हृदय। पैठहु–घुसो। कापर–कपडा। छोरी–छोड़कर, उतार कर।

(७) कउनउ–किसी भी।

३२

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

कहा तिहार आह अनभला।[१] [बिनु] जिउ[२] कहहु जाइ[३] केउँ[४] चला॥१
रोवइ बहुत सरिल[५] सब लोहू। जो र[६] देखहि तिह[७] उठै मरोहू[८]॥२
जब लगि चाह न वहि कै पावउँ[९]। मरौं इँहाँ पै चित न डुलावउँ[१०]॥३
कहहि[११] काह कम[१२] कीजइ[१३] तासू[१४]। धावन पठये[१५] राजा पासू[१६]॥४
कागल लिहि[१७] दई[१८] बातो[१९] औ[२०] कही। जो सब बात इँहा कै[२१] अही॥५
चला[२२] बेगि[२३] तिह जाइ[२४] तुलाना, कहि[२५] राजा सों[२६] बात।६
कहहु[२७] कहाँ अहै[२८] किह[२९] ठाँई[३०], उँह हुत[३१] जोजन सात॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहतु तुम्हारा न अहै भला, (बी०) कहा तोहार तो अहै भला। २–(बी०) जिव। ३–(ए०) जो जाय। ४–(ए०) केव, (बी) किमि। ५–(ए०) सलिल। ६–(बी) जो रे, (ए०) जो। ७–(ए०) देखै तोहि। ८–(ए०)मोरोहू। ९–(ए०) उहि की पावो; (बी०) वोही की पाऊँ। १०–(ए०) डुलावौं; (बी०) डुलाऊँ। ११–(ए०) कहिसि; (बी०) कहिन्हि। १२–(बी०) ×। १३–(ए०, बी०) कीजै। १४–(बी०) तासौ। १४–(ए०) पठइय। १६–(बी०) पासा। १७–(बी०) लिखि। १८–(ए०) दै; (बी०) दुइ। १९–(ए०)

बातै; (बी०) बात जु। २०–(ए० बी०) × । २१– (ए०) की। २२–(बी०) चलेउ। २३–(ए०) बेगी; (बी०) × । २४–(ए०) तहँ जाय। २५–(ए०) कह, (बी०) कही। २६–(ए०) सो; (बी०) सउँ। २७–(बी०) कहिन्हि। २८–(ए०) × ; (बी०) है। २९–(ए०, बी०) केहि। ३०–(बी०) ठाउँ। ३१–(ए०) हुतै, (बी०) हतै।

टिप्पणी—(१) तिहार–तुम्हारा। अनभला–अहितकर।
(२) सरिल–सलिल, जल। मरोहू–करुणा; दुःखी के प्रति आत्मीय सहानुभूति।
(४) धावन–सन्देशवाहक। पठये–भेजे।
(५) कागल–कागज। लिहि–लिखकर,।
(६) तुलाना–निकट पहुँचना।
(७) हुत–से।

३३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनी बात दुख भा सुख[1] भागा। राजै तुरिय[2] बेगि कै माँगा ॥१
नगर जहाँ लहि[3] मानुस[4] आहा[5]। चला[6] सबै एको नहिं रहा ॥२
भये असवार राउ[7] औ राना। पहर एक माँह आइ[8] तुलाना ॥३
राजा देखि अचम्भो रहा। बदन चाँद जनुँ[9] गहन जो[10] गहा ॥४
मूरत भरम[11] छया[12] पै रही। कया अनल[13] बिरहानल[14] दही[15] ॥५
कहहिं[16] काह कस देखु[17] अपूरब[18], जो चित रहा न जाइ[19]। ६
रोवइ[20] बहुत बात न आवइ[21], सँवरि सँवरि पछताइ[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) सख। २–(बी०) त्रिया। ३–(बी०) लहु। ४–(बी०) मानस। ५–(ए०, बी०) अहा। ६–(बी०) चलेउ। ७–(ए०) राव; (बी०) राइ। ८–(ए०) जाय। ९–(बी०) जनौ। १०–(ए०) गहनै। ११–(ए०) मरत भुवन; (बी०) मूरति भरम। १२–(ए०) छाय; (बी०) छाया। १३–(बी०) अनिल। १४–(ए०) बिरहे तन। १५–(ए०, बी०) डही। १६–(ए०) कहिसि; (बी०) कहहु। १७–(ए०) देखे। १८–ए० × । १९–(ए०) जाय। २०–(ए०) रोवै। २१–(ए०) नहि आवै। २२–(ए०) सौरि सौरि। २३–(ए०) पछताय।

टिप्पणी—(७) सँवरि सँवरि–स्मरण कर करके।

३४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

[राजा पू]छहि[1] कहहु[2] हम[3] बाता। देखहु[4] काह काहु[5] जिउ[6] राता ॥१
देखेउ सोइ जाइ न[7] कही। उहै[8] बात गहि[9] चित मँह[10] रही ॥२

देखउँ एक कुरंगिनि म[ही][11] । [सवन न सुनउ[12] कहौं दहुँ कही]॥३
जो जिउ[13] लेगई कथा भुलानी । अन[14] न रूच[15] भावइ[16] नहिं पानी ॥४
दिस्टि रही तिंह[17] मारग लागी । जिंह[18] मारग वह[19] गयी सुभागी[20] ॥५
पन्थ निहारत तिहि[21] कर, लोयन[22] खीने[23] जोति ।६
जेउँ[24] जल चाहै स्वाँति को[25], सायर[26] सीपिंह[27] मोंति ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) पूछ, (बी०) पूछै । २–(ए०) कहउ । ३-४–(बी०) न । (ए०) देखेहु, (बी०) देखिहु । ५–(बी०) काहि । ६–(ए०; बी०) चित । ७–(ए०) नहिं । ८–(बी०) येहइ । ९–(ए०) गडि । १०–(बी०) चित महँ गडि । ११–(बी०) माह । १२–(ए०) सौनन सुनेव; (बी०) सर्वनन सुनौ । १३– (बी०) जो जी । १४–(ए०) अन्न । १५–(ए०) रुच, (बी०) रुचै । १६–(ए०) भावै । १७–(ए०) तेहि । १८–(ए०) जहि । १९–(ए०) उवह । २०–(ए०) सभागी । २१–(ए०) तह, (बी०) ताहि । २२–(ए०) लेयेन; (बी०) लोइन । २३–(ए०) खीन भै; (बी०) खीनी । २४–(ए०) जेव, (बी०) ज्यो । २५–(ए०) स्वातिक । (बी०) स्वाती । २६–(ए०) सायेर; (बी०) साइर । २७–(ए०) सीपन्ह, (बी०) सीपन्हि ।

टिप्पणी—(६) **निहारत**—देखते-देखते ।

(७) **सायर**—सागर ।

३५

(बीकानेर; दिल्ली[1])

राजै कहा[1] बात सुनु मोरी । यहि र[2] बात अहै बुधि थोरी ॥१
मिरिग[3] न पानी माँझ[4] हेराई । सपन क सौतुक देखिह[5] आई ॥२
उठि घर चलहु[6] साथ होइ मोरे[7] । नाहुत[8] हमहुँ मरब संग तोरें[9] ॥३
कहा तुम्हार कहु[10] सो मानउँ । जो कछु[11] कहहु सो सब परवानउँ ॥४
[दिस कोस औ (बिरथ*)[12] भँडारा । सब बिसरौ घर भा अँधियारा ॥५
(स्रवन*)[13] नहि सुनै कहा नहिं मानै, धरसि तासौं चित लाइ ।६
पाइ लागि कै राजा, कुँवरहिं रहा मनाइ] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–राजा कहै । २–यह रे । ३–म्रिगा । ४–मॉहि । ५–सपनै कै सौतुख देखेहु । ६–उठहु चलहु घर । ७–मोरे । ८–नहि तो । ९–तोरे । १०–कहौ । ११–जो किछु कहौ । १२–बर्थ । १३–सर्वन ।

---

१. दिल्ली प्रति में पक्ति ५, ६, ७ के स्थान पर कडवक ३६ की पक्ति ५, ६, ७ है ।

टिप्पणी—(२) माँझ—मध्य, बीच। क–का। सौतुक–साक्षात घटना, प्रत्यक्ष।
(३) मोरे–मेरे। नाहुत–नही तो। हमहुँ–मै भी। मरब–मरूँगा।
(४) परवानौं–प्रमाणित करूँ, पूरा करूँ।
(५) देस–देश, राज्य। कोस–कोष। बिरथ–व्यर्थ।

३६

(बीकानेर; दिल्ली[1])

[(चरन)[1] लागि (माँगउँ)[2] कर जोरी। सुनहु पिता यह बिनती मोरी ॥१
बिनु(जिउ)[3] कहहु कया (किह)[4]जाई। जिउ तेहि पहँ गयउ(जु गई लुकाई)[5]॥२
साथ गये तुम्हरे दुख पइहौं। (हिउ)[6] फाटी ततखन मरि जइहौं ॥३
छाड़ि देहु हौ रहौं (उहि)[7] आसा। घट महँ जीउ रहै(उहि)[8] आसा] ॥४
हम बिनु खाँग न राज तुम्हारें[9]। जुग राजा सिर छाँह हमारें[10] ॥५
अति बुधवन्त सभै गुन जानहु, तुम्ह अस पिता न आन।६
सो उपकार कहौं हौं तुमहिं सेंउ[11], जिह[12] घट रहे परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।
१–चर्न। २–मॉगौ। ३–जिव। ४–कहँ। ५–गयो गई लखाई। ६–हिव। ७–वोहि। ८–वोहि। ९–हम बिनु राज न खँगे तुम्हारा। १०–हमारा। ११–कहौं तुम सेती। १२–जिहि।

टिप्पणी—(२) लुकाई-छिप।
(३) हिउ–हृदय। फाटी–फट जायेगा। ततखन–तत्क्षण।
(४) खाँग–खण्डित।

३७

(दिल्ली; एकडला)

माँगौं यहै[1] बात सुनि लेहू। मंदिर उचाइ मान पर देहू ॥१
कहहुँ भाँति अस मंदिर उचावइ[2]। मानसरोदक जिह[3] मँह आवइ ॥२
राजा[4] नेगिन्हि कहा बुलाई[5]। भवन[6] अपूरब देहु [उचाई] ॥३
यहै[7] रजायसु[8] कुँवरहि केरा। जो र कहँहु तिह लागि[9] न बेरा ॥४
जिह[9] लग हम आयसु[10] परवानौं। पाती लिखी देस भुइ जानौं[11] ॥५
बार बूढ़ सब आयसु[12] लीन्हैं, रहि न कोई जाइ[13]।६
राजा चला नगर कहँ बहुरि[14] कै[15], नेगिन्हि चिन्ता लाइ ॥७

---

१. दिल्ली प्रति में केवल पक्ति ५,६,७ है, जो कड़वक ३५ के प्रथम चार पंक्तियों के साथ है।

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–यह रे । २–उचावै । ३–जेहि । ४–राजैं । ५–बोलाई । ६–मौन । ७–किही रजाऐस । ८–तेहि लाग । ९–जह । १०–आयसु हम । ११–देस होई आना । १२–× । १३–रहे न कोई सब जाइ । १४–१५ × ।

टिप्पणी—(१) **उचाइ**–उठाकर, निर्माण कराकर ।

(२) **नेगिन्ह**–दास, कर्मचारी ।

(४) **केरा**–का । **बेरा**–देर ।

(५) **जिंह लग**–जहाँ तक । **आयसु**–आदेश । **परवाना**–प्रमाण । **पाती**–पत्र । **भुइ**–भूमि ।

(६) **बार**–युवक ।

(७) **बहुरि**–लौटकर ।

३८

(दिल्ली; एकडला)

देस[१] लोग कहँ पठये[२] पाती । बेगि आउ[३] कोउ रहै न राती ॥१
बार बूढ़ जेहवाँ लहि आहा । बेगि आउ[४] घर कोउ[५] न रहा ॥२
थवई बढ़ई अउर[६] लोहारू[७] । आइ[८] पथेरिया[९] औ चुनहारू[१०] ॥३
आये सुनार जो ढारइ[११] पानी । चतुर चितेरा अति र बिनानी[१२] ॥४
करवतिया बहु आये कुँदेरा । मँदिर उचावत लाग न बेरा ॥५
सतयें पवन खाल दिखराई[१३], मंदिर उठये[१४] बहु भाँत ।६
आपुन आपुन[१५] काज सँवारहि, बइठ[१६] पाँतहि पाँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–सी । २–पठई । ३–आव । ४–आव । ५–कोइ । ६–और । ७–लोहारा । ८–आव । ९–पथरिया । १०–चुनहारा । ११–ढारहि । १२–रे । १३–सोनन्हि नेउ देखाए दै । १४–उठे । १५–आपन आपन । १६–बैसे ।

टिप्पणी—(१) **पठये**–भेजा ।

(२) **जेहवाँ**–जहाँ । **लहि**–तक ।

(३) **थवई**–(स० स्थपित), भवन बनानेवाला कारीगर ।

(४) **पथेरिया**–पत्थर का काम करनेवाले । **चुनहारू**–चूना तैयार करने वाले ।

(५) **ढारइ**–ढालते है । **चितेरा**–चित्रकार । **बिनानी**–(विज्ञानी) कुशल ।

(६) **करवतिया**–(करपात्र = आरा) लकडी चीरनेवाले ।

(७) **कुँदेरा**–कुन्दकार; खरादनेवाला ।

(८)–**बेरा**–विलम्ब, देर ।

३९

(दिल्ली; एकडला)

खँड[1] ऊपर खँड सात उचाई। धरे झरोखा अति र सोहाई ॥१
चार पँवरि[2] चतुरंग सँवारी। जानु[3] चहूँ दिसि सजीं अटारीं ॥२
तिहि[4] ऊपर चौखण्डी सँवारी। कनक पानि औ ईंगुर ढारी[5] ॥३
भारत[6] राम रमायन चीता। रावन हरी राम घर सीता ॥४
कन्ह[7] (सहित) सोलह सों[8] गोपी। अंगद जाँघ लंका महँ रोपी ॥५
कथा ईंह[9] सब झा[रि उरेही[10]], एक एक आनों[11] [भाँत] ।६
सिघ म्रिग कस्तूरी उरेहे, साउज पातहिं पाँत[12] ॥७

मूल पाठ—५-(दोनों प्रतियो में) सहस।

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–मड। २–कोठरी पौरी। ३–मान। ४–गढि। ५–कनक पानि तेहि ऊपर डारी। ६–अरथ। ७–लीहिन्हि। ८–से। ९–नेह। १०–उरेहिन्हि। ११–अनबन भाँति। १२–भातिन्ह भाँति।

टिप्पणी—(१) खँड–खण्ड; मंजिल। झरोखा–गवाक्ष; खिडकी।

(२) पँवरि–प्रवेश द्वार। अटारी–अट्टालिका।

(३) चौखण्डी–चार खण्ड की बुर्जी। कनकपानि–सोने के पानी की स्याही। हस्तलिखित सुवर्णाक्षरी जैन ग्रन्थोंके देखनेसे पता लगता है कि इसका प्रचलन पन्द्रहवी शतीमे हो गया था।

(४) भारत–महाभारत। चीता–चित्रित किया।

(५) कन्ह–कृष्ण।

(६) आनों–अनेक, अन्यान्य। भाँत–भाँति, प्रकार।

(७) सिंघ–सिंह।

४०

(दिल्ली; एकडला)

भीउ[1] उरेहा कीचक मार[2]। लिहा दुसासन भुएँ उपार[3] ॥१
लिहा भरथरी औ पिंगला। जिह्न बियोग जोगी संग चला ॥२
अरजुन राहु बेध जस कीता। कौरों मारि दुरपदी[4] जीता ॥३
रिग जुग साम अथरवन आना। पण्डित सहदेव लिहा सयाना ॥४
जिह[5] लहि नाँच पेखना अही[6]। बिनु देखें मुँहि जाँहि[7] न कही ॥५
उहै कुरंगिनि चित्र उरेही, जैं[8] अति किय अपकार[9] ।६
देखि देखि तिह रोवइ संभरे, जीवन उहै अहार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–भीम । २–मारा । ३–भुजा उपारा । ४–दुरपती । ५-कह । ६–आही । ७–मोहि जाए । ८–जेहि एत किअ । ९–उपकार ।

टिप्पणी—(१) **भीउ**–भीम, पच-पाण्डवमेसे एक । **उरेहा**–(स० उल्लेखन) चित्र बनाया । **लिहा**–लिखा । **भुएँ**–भुजाएँ । **उपार**–उखाडा ।

(२) **भरथरी**–भर्तृहरि । उज्जैननरेश जो अपनी रानी के कारण बैरागी हो गये थे । **पिगला**–भर्तृहरि की पत्नी ।

(३) **अर्जुन**–पंच-पाण्डवमेसे एक जो अपने अचूक बाणके लिए प्रसिद्ध थे । **राहु**–रोहू मछली । **बेध**–निशाना । **कीता**–किया । (यहाँ द्रौपदीके स्वयवरमे मत्स्य-वेधकी ओर सकेत है ।

(४) **कौरौं**–कौरव । **दुरपदी**–द्रौपदी ।

(५) **रिग**–ऋगवेद । **जुग**–यजुर्वेद । **साम**–सामवेद । **अथरवन**–अथर्ववेद । **सहदेव**–पच-पाण्डवमेसे एक जो अपने पाण्डित्यके लिए विख्यात थे ।

(५) **पेखना**–(सं० प्रेक्षण) तमाशा, नाटक । **मुँहि**–मुझे । **जाहिं**–जाय ।

४१

(दिल्ली; एकडला)

सँवरै[1] ताहि जो देखसि[2] अहा । रोउ बहुत संग कोउ[3] न रहा ॥१
धाइ[4] एक आछी तिह[5] ठाँई । खीर मोह कछु कहै बुझाइ ॥२
खिन[6] एक धाइ बात चुप[7] लावइ । फुनि जिउ जाइ जहाँ वहि पावइ[8] ॥३
सूनी कया न जीउ घट तहाँ[9] । पौन कुरंगिनि देखसि[10] जहाँ ॥४
काम बान बेधाँ न सँभारे । जयै कुरंगिनि खिन[11] [न बिसारे] ॥५
निसि बासर बिब तैसहिं[12], खिन एक[13] दूसर चित न कराइ ।६
चतुर (महावत[14]) गयन्द जिउँ[15], कैसेहु उतरि न जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडल प्रति ।

१–सारे । २–देखिसि । ३–कोइ । ४–धाए । ५–आछे तेहि । ६–खन । ७–चित लावै । ८–पूनि जिउ जाही उही पावै । ९–यहाँ । १०–देखिसि । ११–खिनु । १२–तैसे । १३–× । १४–चित महुत (दि०) महत । १५–जेंव ।

टिप्पणी—(१) **आछी**–थी । **खीर**–(स० क्षीर) दूध । **बुझाई**–समझकर ।

(६) **बिब**–दो, दोनो ।

(७) **महाउत**–महावत । **गयन्द**–हाथी । **जेंउँ**–जिस प्रकार ।

४२

(दिल्ली, एकडला[1])

भादों[1] मेघा नैन बरिसाई। बिनु[2] जलहर भरि पूर[3] रहाई ॥१
निसि अँधियारी तेहि बिनु लागै। तेज न भाउ[4] रैनि सब जागै ॥२
दामिनि छया रैन तर आवइ[5]। धरै चाह धौं कहु कित पावइ[6] ॥३
मँदिर सून संगि साथि[7] न कोई। दादुर सब्द ररहूँ[8] पै सोई ॥४
चातक[9] पिउ पिउ चलहि पुकारी[10]। वह[11] बियोग बिधा[12] न सभाँरी[13] ॥५
लाइ[14] नैन दोइ[15] बरखा, अखरहि[16] बरिसै गहर[17] गँभीर।६
नैन सलिल मन डुबोवइ[18], दई लावइ तीर[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–भौदो। २–बन। ३–पूरि। ४–भावै। ५–आवै। ६–धोखे कत पावै। ७–संग साथ। ८–सघन रै। ९–चातिक। १०–जलहि पुकारै। ११–तेहि। १२–विउग वेधा। १३–सँभारे। १४–लाए। १५–दुइ। १६–×। १७-गहिल। १८–नेह सलिल मस डुबो। १९– दैअ लाव पै तीर।

टिप्पणी—(१) जलहर–जलाशय।
(२) दामिनि–बिजली। छया–कौंधा। धरै–पकडना। धौं–किन्तु।
(४) दादुर–मेढक।

४३

(दिल्ली; एकडला[1])

माँह तुसार[1] न लागै देहा। बिरह आगि जर भयउ[2] सो खेहा ॥१
निसि नरिन्द सब ठाढि पुकारै। लोयन लाउ[3] न रसना हारै ॥२
काम आगि उपजै[4] तन सेती। कहँ तुसार किह चूकत[5] पती ॥३
कोस बीस[6] एक तहि सों भागै। रहै त जरै भसम होइ लागै[7] ॥४
बिरह आग ऐसी परजरै[8]। सीउ[9] परान पुहुमि सब हरै[10] ॥५
रावन लंका जरि बुझी, यह कैसँहि[11] न बुझाइ।६
जिह[12] कारन यह लागी सीसीबा[13], तिहि[14] भेटैं तो जाइ ॥७

---

१. सम्मेलन संस्करण में इस कड़वकका उल्लेख कड़वक ३२३ (स० स० २७९) के पाठान्तरके रूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है।

१ सम्मेलन सस्करणमें इस कड़वकका उल्लेख कड़वक ३२८ (सं० स० २८४) के पाठान्तरके रूपमे पाद टिप्पणीमें हुआ है।

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१—तोसार। २—भएेव। ३—लवै। ४—उपजी। ५—तोसार केहि जोगत। ६—कस तीस। ७—भागै। ८—ऐसो ही परजरी। ९—सेत। १०—हरी। ११—अहे कैसोहू। १२—जेहि। १३—×। १४—तेहि।

टिप्पणी—(१) **माँह**—माघ। **तुसार**—(तुषार) शीत। **खेहा**—राख।

(२) **ठाढि**—खडा। **लोयन**—लोचन। **रसना**-जीभ।

(५) **परजरे**—(स० प्रज्वल> प्रा० पज्जल> पर्जल> पर्जर>परजरना) जलती है। **सीउ**—शीत। **परान**—भागा। **पुहुमि**—पृथिवी। (७) **भेटै**—भेट हो; मिलै।

४४

(दिल्ली)

[तन*] तपै जनु बरसि अंगारा। चन्दन देह न लाउ न सँभारा ॥१
कै खँडवानि न काउ पिया। दई जानि कैसहिं कै जिया ॥२
लोयन लौटहि बहु कामिनि बानी। नैन लाइ बहु ठाँउँ हिरानी ॥३
जाड़ धूप तिह लागै देहा। जाकर होइ सरीर एहाँ ॥४
सिसिर उखम तो लागै कोई। जो सरीर भीतर जिउ होई ॥५
जिउ लै गई गहि कै आगें, कया न आह परान।६
खटरितु बारह मास बरस दिन, यहो आइ ओरान ॥७

टिप्पणी—(२) **खँडवानि**—खाँडका पानी, शरबत।

(४) **जाकर**—जिसका। **एहाँ**—यहाँ।

(५) **उखम**—(ऊष्म) गर्मी।

(६) **परान**—प्राण।

(७) **खटरितु**—षट् ऋतु। **यहो**—यह भी। **ओरान**—समाप्त हुआ।

४५

(दिल्ली)

सरवर तीर बरस दिन रहा। चाह कुरंगिन मग को गहा ॥१
सिसिर हेंव औ सरद बसन्ता। ग्रिहम उखम न जानै मन्ता ॥२
खटरितु देखत अइस गई। बहु अपकार कथा बहु भई ॥३
दिन एक मारग जुवत अहा। उठा बवँडरा देखत रहा ॥४
फुनि आँखिँह तर अस कछु आवा। आइ इन्द्र अपछरहि दिखरावा ॥५
देखत परा मुरझि कै उन्ह कहँ, फुनि उठि पन्थ सँभार।६
कोड़ करहिं रहसहिं सरवर महँ, खेलइ सबै धमार ॥७

टिप्पणी—(२) सिसिर-शिशिर; माघ और फाल्गुन का महीना। हेंव-हेमन्त; अगहन और पौषका महीना। सरद-शरद, आश्विन और कार्तिकका महीना। बसन्ता-बसन्त; चैत्र और वैशाखका महीना। ग्रिहम-ग्रीष्म, ज्येष्ठ और असाढका महीना। उखम (ऊष्म) गर्मी।

(३) अइस-इस प्रकार।

(४) जुवत-(जोवत) प्रतीक्षा करते। बवँडरा-बगूला, अन्धड।

(५) तर-नीचे, सामने। अस-ऐसा। कछु-कुछ।

(७) कोइ-कौतुक; खेल। रहसहि-आनन्दित होती है। धमार-धमाचौकडी।

४६

(दिल्ली)

सात जनीं सातो अति लोनी। चाँद चौदस आइ सपूनी ॥१
सातौं एक पिता कैं जरमी। रंग एक सेउ [लावहिं मरमीं*] ॥२
उन्ह महँ एक अपूरब अही। कहा बरन कों जाइ [न कही*] ॥३
जानु अकास चाँद परगसा। वे सब नखत चहूँ दिसि [रसा*] ॥४
राजकुँवर मन अस होइ लागा। कण्ठन लाग सेत रंग भागा ॥५
मन उनिया निसि सौतुख सर लागेउ, कहब वह सुहाइ ॥६
जो सौंकहि कढ़ै, कैसहि कढ़ि न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) जनीं-व्यक्ति (स्त्री भावमें)। लोनीं-लावण्यमयी। सपूनी-सम्पूर्ण हुई।

(२) जरमीं-जन्मीं।

४७

(दिल्ली)

सबै सहेली खेलत आहीं। देखतहिं मँदिर अचम्भो रही ॥१
उन महँ एक सयानी अही। मन सँकाइ वैं बात जो कही ॥२
बरिस देवस एक बार हम आवहिं। कबहूँ चाह न मनुसैं पावहिं ॥३
अबलहि अइस न सो यह काही। हमलग चरित कीन्ह कछु आही ॥४
सजग होहु छाड़हु बौराई। जो कछु होइ घात रुक जाई ॥५
कै गियान मन बूझहु सँभलहु, उठहु चलहु संग साथ ।६
जो कछु होइ कहा तो कीजइ, कुछहु न लागै हाथ ॥७

टिप्पणी—(१) आहीं-थीं।

(२) सयानी-चतुर। सँकाइ-शकित होकर।

(४) अबलहि-अब तक। अइस-ऐसा। सो-वह।

(५) बौराई-पागलपन।

४८

(दिल्ली; एकडला)

तारहिं[1] माँझ चाँद जो आही। तैं एक बात आपु सों कही ॥१
मानुस हमहिं पाउ[2] दहुँ कहाँ। जाहहिं उड़ि चाहिं[3] चित जहाँ ॥२
मनुसै सेउँ[4] अस होइ[5] न काऊ। उत्तिम जाति जग[6] आह सुभाऊ ॥३
ये[7] सब चरित हमहिं पै आवहिं। खिन[8] बिलाइ खिन उड़हिं[9] दिखावहिं[10] ॥४
औ फुनि भेस धरहिं जस भावइ[11]। चाह त हमहिं कहाँ कोइ पावइ[12] ॥५
अस बर आहै आपुन,[13], चाह त[14] जाहिं बिलाइ[15] ।६
लाग बिवान सरग धरि[16] आईं,[17] चाह त[18] जाहिं उड़ाइ[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–तारेन्हि। २–पाव। ३–चाहहि उड़हि जाहि। ४–सौं। ५–आह। ६–कुल। ७–ए। ८–खन। ९–खन। १०–देखावहि। ११–भावे। १२–चाह तौ हमहि कही कोइ पावै। १३–हम कहँ अस बर आहै। १४–तौ। १५–बिलाए। १६–धर। १७–×। १८–तो। १९–उड़ाए।

टिप्पणी—(१) माँझ–मध्य। आही–थी।
(४) बिलाइ–लुप्त।
(५) फुनि–पुनः। भावइ–अच्छा लगे।
(६) अस–ऐसा।
(७) बिवान–विमान। धरि–धरती।

४९

(दिल्ली; एकडला)

कहत[1] बात सब बाहर भईं। चीर सँवारि[2] पहिरिं[3] लईं ॥१
राजकुँवर वहिं देखत [खाँगा[4]]। पहिरहिं चीर सँवारहिं माँगा ॥२
कँवल बदन अब अही सोनारी। रूप सरूप सोहाग सँवारी ॥३
अमिय सिराइ[5] बदन जो अही। राइ[6] देखि चित चेत न रही ॥४
जिहके[7] नेह लागि[8] अति कया। देखसि वहै चाह तिह लिया[9] ॥५
चला धाइ तिह ठाँईं[10], मन महँ[11] कहिसि परौं लै पाइ[12] ।६
राजकुँवर कहँ आवत देखत[13], सातों चलीं उड़ाइ[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–कहहि। २–सँवारि सो। ३–पहिरन (?) ४–राजकुँवर उठि देखै लागा। ५–अमिअ सरा। ६–राए। ७–जेहिके। ८–लाग। ९–देखसि सोए ताहि चित

लिया। १०–चला पाए तजइ। ११–X। १२–पाए। १३–देखिन्ह। १४–उडाए।

टिप्पणी—(३) कँवल–कमल।

५०

(दिल्ली)

तब लग वैं देखी अपछरा। [- -] नत परान मुरझि कै परा॥१
भौं धनुक गुन बान बिसारीं। चतुर सयानी हनाँ कटारी॥२
[परि*]हरन्हि औ परगट घाऊ। हियैं साल सुधि गये अगाऊ॥३
डसत बान न चूकै जानी। जस र वरस पारधी बिनानी॥४
चखत बान चूक न आहा। हियैं लाग निकसि न चाहा॥५
जस मेघा उठै कहँ दीजइ, औ हनैं खर जिउ जात।६
छाड़ चलैं धरा दहन्त, पारुधि हनै सो घात॥७

टिप्पणी—(२) भौं–भौंह। धनुक–धनुष। गुन–रस्सी; तन्तु। बिसारी–विषयुक्त। हनॉ–हनन किया।

(५) चखत-नयन।

५१

(दिल्ली, एकडला)

संगि[1] न साथी मीत न आहा। को र[2] संदेस पिता सेंउ[3] कहा॥१
तिह ठाइ न[4] आह सयाँना[5]। को र सीच को पानि जो आना॥२
को उचाइ[6] रस बचन सुनावइ[7]। पेम कथा कहि को र जगावइ[8]॥३
धाइ आइ[9] जो देखी[10] पासा। मुख फेंफर[11] तन आह न साँसा॥४
अमिय[12] सींच बैठार[13] सँभारी। काह देखि [14]तूँ गा बिसभारी॥५
कै सपना कै सैतुख,[15] कै झँरका तूँ[16] आहि।६
रोगिया बेदन कहै बैद सो, औखद लावइ[17] ताहि॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–संग। २–रे। ३–सौ। ४–नही। ५–सेआना। ६–उचाए। ७–सुनावै। ८–रे जगावै। ९–धाए आए। १०–देखै। ११–भेभंर। १२–अमिअ। १३–बैठाल। १४–तै। १५–सैतुख। १६–कै तै छेरगा। १७–लावइ।

टिप्पणी (२) आनाँ–लाये।

(३) उचाइ–उठाकर।

(४) फेंफर–सूखा हुआ।

(५) बिंसभारी–बदहोश।

(६) सौतुख–प्रत्यक्ष। झँरका–भूत–प्रेतसे अभिभूत।

(७) बेदन–वेदना।

५२

(दिल्ली; एकडला)

माई मोरि तुम्ह धाइ[१] न होहू। तुम्ह छाड़ें किह उठे मरोहू[२] ॥१
देखौं सोइ जाइ न[३] कही। चित चिन्ता[४] मन[५] भीतर रही ॥२
सात जनी[६] आईं अपछरा। तिह[७] महँ एक सहस दस कराँ ॥३
ताकर रूप कहौं हौं[८] तोही। बैठो[९] समुझ टेक दइ[१०] मोही ॥४
भानु उदय उदयागिरि कीन्हा[११]। झार लागि सिर पाउ न चीन्हा[१२] ॥५
बीजु चमक बड़[१३] चमकी चौदी,[१४] तेही हौं गा बिसँभार[१५]।६
माँग पयोहर गर[१६] पा[१७] कर[१८] नख,[१९] एक एक कहउँ[२०] सिगार ॥७

पठान्तर—एकडला प्रति।

१–तोहि धाए। २–तोहि छाडि एहि उठे मोरोहू।३–सोए जाए नहि। ४–चित। ५–X। ६–खनी। ७–तिन्हि। ८–मैं। ९–बैठ। १०–देहु। ११–भानु उदै उदयाकर कीन्ह। १२–चोन्ह। १३–चमकी पर। १४–X। १५–बेसभॉर। १६–कर। १७–पाए। १८–X। १९–X। २०–कहौ।

टिप्पणी–(१) माई–मॉ, माता। धाई–दूध पिलाकर शिशुका लालन पालन करने-वाली। किन्ह–किसको। मरोहू–छोह, आत्मिक स्नेह।

(३) सहस दस करॉ–दसहजार किरण अथवा कलाऍ।

(४) ताकर–उसका। तोही–तुझसे। टेक–सहारा।

(५) उदयागिरि–पुराणोके अनुसार पूर्व दिशाका एक पर्वत जहॉसे सूर्य उदय होते है। झार–अग्निकी लपट।

(६) गा–गया।

(७) पयोहर–पयोधर। गर–गला। पा–पैर।

५३

(दिल्ली; एकडला)

कर सौं कुटिल सवारसि[१] बारा। देखेउ माँग बहुत जिय[२] मारा ॥१
माँग सेत चन्दन जस भरे[३]। कै र[४] पॉति मोतिह कै धरे[५] ॥२
[बग क][६] पाँति जस आह सुहाई। बादर घन कारे महँ आई ॥३
माँग जोति अस भौ अजियारा[७]। निसि अँधियार टूटि जस[८] तारा ॥४
खरगधार भर[९] माँग सराहे। लागहि[१०] दुइ र[११] टूक होइ[१२] चाहे ॥५
हम सिर लाग भयउ[१३] दस खाँडा[१४], कर बेगर सर पाउ[१५]। ६
हौं जिय डर भय कर सेऊँ,[१६] कहउँ पावक सुभाउ[१७] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सँवारिसि। २–देखै माँग पुहुप जस। ३–धस भरी। ४–रे। ५–धरी। ६–बगै। ७–अस आह अपारा। ८–जनि। ९–जस। १०–लागै। ११–रे। १२–होए। १३–भएव। १४–जीठी। १५–पाव। १६–(दि० मार्जिन) अम्रित सीचि उचायहु धाई। १७–अम्रित सीचि जिआए, तोहि हौं कहो सो भाव।

टिप्पणी—(१) कुरिल–कुटिल, घुँघराले। बारा–बाल, केश।

(२) सेत–श्वेत।

(३) बग–बक; बगुला। बादर–बादल। कारे–काले।

५४

(दिल्ली)

भँवर बरन अति जिह र सुहाई। चन्दन बास कै नाक रिसाई ॥१
जोर छोर मुकरावइ सोई। [वैसहि छबि न पायेउँ कोई*] ॥२
लट जो लटक गाल पर परै। जस र पदम नागिन बस निकरै ॥३
जो र देख बिस लागै ताही। औखद मूर न कारा आही ॥४
सर बालहि आइ घुँघरारे। लहर न लहरै भुअंगम कारे ॥५
सो बिस हमको चढ़ि गा, सरलहि परेउ लहर मुरझाइ।६
परन बोल तुम नहि बूछा, कौन निरत लिखाइ ॥७

५५

(दिल्ली; एकडला)

दीख[१] ललाट[२] दुइज[३] ससि रेखा। उयेउ[४] मयंक मैं न जग देखा ॥१
देखत नैनहिं दिस्टि घटाई[५]। भानु सरग[६] जनु उदिनल आई ॥२
बदन पसीज बूंद जनु[७] तारा। चाँद नखत लै उयेउ[८] अँगारा[९] ॥३
मनु[१०] दामिनि कोंधा लौकाई। चलेउ[११] धाइ हौं परेउ[१२] भुलाई ॥४
जोति लिलार भयउ[१३] उजियारा। चौंधि परेउँ हौं कछु[१४] न सँभारा ॥५
देखि लिलार बिमोहेउ[१५], कछु न समझेउ[१६] धाइ।६
टूटि करेज लोहु भा पानी[१७], औखद कहु कछु पाइ[१८] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–बिंबु। २–लिलार। ३–दूज। ४–उयेव। ५–खुटाई। ६–सरग भानु। ७–जनि। ८–उएव। ९–अकारा। १०–मन। ११–चलेव। १२–परेव। १३–भएव। १४–परेव मैं। १५–विमोहेवो। १६–समझेव। १७–×। १८–कह कुछु माऐ।

टिप्पणी—(१) मयंक–चन्द्रमा।

(२) उदिनल–उदित।

५६

(दिल्ली; एकडला)

भौंह धनुक जनु[1] अरजुन केरा। बान मार जासों फिरि हेरा ॥१
काल कस्ट गुन देंउ[2] बिसेखा। पंचबान[3] लागत खर देखा ॥२
करन बान इहँ कहिं[4] सों पाये। बिसहिं बुझाये सान खर[5] लाये ॥३
भौंह फिराइ[6] मार सर जाही। तन्त न मन्त न औखद आही ॥४
हौं रे मिरिग[7] वह पारुधि[8] भई। बान बिसार मारि हन गयी ॥५
पारुधि[9] परसुराम[10] कलिजुग महँ,[11] कामिनि भौंह गुनीज[12] ॥६
रुहिर न ऊपर पेखी[13], हिये साल जो कीज[14] ॥७

पाठान्तर–एकडला प्रति।

१–जस। २–काल कुष्ट कडौ। ३–पनच नाहि। ४–अें केहि। ५–(दि०) खर सान। ६–बिसार। ७–मिरगा। ८–उबह पारुध। ९–पारुध। १०–परसराम। ११–×। १२–गनीज। १३–रुधिर न आव घाव नहिं पेखी। १४–गनीज।

टिप्पणी—(१) पंचबान–कामदेव।

(२) करन–कर्ण; महाभारत का एक वीर। खर–तेज।

(५) पारुधि–शिकारी। बिसार–विषैला। हन–मार।

(७) रुहिर–रुधिर। पेखी–देखी।

५७

(दिल्ली)

बरुनि बात कहों सुनु भई। देखत तन छहर कै गई ॥१
रोंम रोंम बेधा न सँभारों। इह कहौं औ कही न पारों ॥२
बरुनि सघन न पारों [सेजी*]। भारत जीत करन सर भेजी ॥३
करन अरजुन मैं जस खेता। हौं वह करन वह रोवहु बैठा ॥४
सहज बरुनि जनु काजर दिया। यहै सिंगार पिउ आरस किया ॥५
चौदह भुवन प्रिथमी आहै, सात दीप नौ खण्ड ॥६
सरग पतार बरुनि सर बेधा, जियउ पाहन गण्ड ॥७

टिप्पणी—(१) बरुनि–भौंह।

(३) भारत–महाभारत। करन–कर्ण; महाभारतका एक वीर।

(५) खेता–युद्ध।

५८

(दिल्ली)

लोयन सेत बरन रतनारी। कँवलपत्र पर भँवर सँवारी ॥१
चपल बलोल ते थिर न रहाहीं। जनौं गजमोती थाल भराहीं ॥२

बाँती बरहि अइस मैं देखी । उलटि रहे तिह सँमुद बिसेखी ॥३
मदन-दीप पदुमनि चख बारी । कहो मँह सहज पवन अधारी ॥४
गये संग बहिर कुरंगिन परी । भूले पन्थ न हारी घरी ॥५
आइ तखै मै दप्प घन, चंचल चपल बिसाल ।६
धाइ त चुकत अतुल बल, भये हम तन काल ॥७

टिप्पणी—(१) लोयन–लोचन, नेत्र । सेत–श्वेत । बरन–वर्ण । रतनारी–लाल ।
(२) बाँती–बत्ती; दीपक ।

५९
(दिल्ली)

चुगत सवन माँझ तिल भया । बिध सर कमल भुजंग निरमया ॥१
बास लुबुध तिंह उड़त न देखा । पेम गहा का करहि सरेखा ॥२
जस मोइ बिरह टूटि तिल परा । जग मोहै कारन जस धरा ॥३
सो तिल मुँह क भयउ सिंगारू । मुँह नखोर न खेलो सँयसारू ॥४
तिह तिल साथ लागि जिउ गया । देखहु धाइ सवन हिय किया ॥५
तिल र सुहाउ न कहि सकों, राखों अपूरन छाइ ।६
कनक सपन जम हिय खरग, सो महिं कही न जाइ ॥७

६०
(दिल्ली)

स्रवन सोमेल छोट न लाँबी । सीप सँवार कंचन जस आँपी ॥१
झरकहिं दुहु दिसि दामिनि लवई । कै र अगिनमुख कुन्दन तवई ॥२
ओ तर तपा खूँही सुहानी । दुइ उगसत ससि साथ जो आनी ॥३
एक उगसत जो सरग उआई । दूसर इँहाँ कहा सों आई ॥४
एकहिं कहतैं आवैं चुक बानी । इहै र समुँद सूख पलानी ॥५
बरजत दिस्टि परी हों सो कहौ, रकत न रहा सरीर ।६
दिनयर दहा कँवल जेउँ, बिनीत न पल न घटै नीर ॥७

टिप्पणी—(१) स्रवन–(श्रवण) कान । सोमेल–सन्तुलित ।
(२) लवई–कौंधती है । कुन्दन–विशुद्ध सोना । तवई–तपै ।
(३) खूँहीं–(खूँटी) कानमे पहननेका एक आभूषण । उगसत–उगता हुआ ।
(४) उआई–उगती है ।
(५) बरजत–मना करते हुए ।

६१

(दिल्ली)

गाल सुभर पातर न मोटी। जानु कपोल कनक दइ घोटी ॥१
जनु गौरा पावसि चिकनाई। कै र काज गालहिं लै आई ॥२
कै घट पड़ पाहन बैसावा। धाई रूप सुन बकति न आवा ॥३
हौं कपोल धर रहेऊँ तवाई। घूम परेउ ताँवर न जाई ॥४
बिरह कपोल पर धरब कपोला। सुर नर नाग सेस फुनि डोला ॥५
जोगी जंगम तपसी, जती सन्यासी सब।६
देखि कपोल नारि कै, एकहु रहा न कब ॥७

टिप्पणी—(१) पातर–पतली।

६२

(दिल्ली)

नाँक सोमेल सुनहु यह बानी। इसवर कर कहँ धरेउ बिनानी ॥१
कै पथ और दुहों धर रहा। सपूती सपनैं महँ कहा ॥२
कहैं न ऊँच भौ बहु मुँह जोरी। देव सराहहिं तैंसो गोरी ॥३
कों कह अँमरित सान सँवारी। तिह न सराहहिं जिनैं औतारी ॥४
तिलक फूल जस ऊपम दीजै। और क जग मँह शोभइ कीजइ ॥५
पुहुप सभै परिमल कै लेई, बास परसि सब खान।६
परिमल लीन्ह हमारेउ, दीखत बिन परिमल कै जान[१] ॥७

पाठान्तर—मार्जिन मे—

१–परिमल बास लेइ वह जाई, खटरस बन्द गुनार।
करहि चन्दन सोंहागी मत सो, दै दीजै जो सॅवार ॥

६३

(दिल्ली)

अधर सुरंगी पान जनु खाई। कै र घोर इंगुर कै लाई ॥१
हाट चीर निहसत सों कीन्हा। अमिय आन तिह ऊपर दीन्हा ॥२
कुहकन लीकैं अधर सुहाई। चाँट जानु अमिय रस आई ॥३
यह रंग अधर न देखेउ धाई। सँरग पँवार आन धर लाई ॥४
रकत हमार अधर सेंउ पिया। जासेंउ बकत सो कइसइ जिया ॥५
असकै जो हँस अधर सेंउ, पियर भयउ जस आँब।६
झॅकि बिरह पौन मिस, रस हमारे लॅाब ॥७

टिप्पणी—(१) घोर–घोल ।

(३) चाँट–चीटा ।

(६) आँब–आम ।

६४

(दिल्ली; एकडला[1])

चौक जोत[1] बैरागर हीरा । दामिनि चमके रैन गँभीरा ॥१
अन्त न देख रहे चख भामिनि[2] । जनु[3] काजर चख[4] देउ[5] सो[6] कामिनि ॥२
कंचन गौर[7] भँवर भर[8] राखै[9] । दारिंउ[10] दन्त काहु[11] नहि चाखै[12] ॥३
दसन मकोइ तँबोलहिं[13] पाके । हँसत सहेलिह सेउ[14] हम ताके ॥४
ऊँच न नीच बराबर[15] पाँती । देखत दसन होइ[16] मन साँती ॥५
चौक चंचल बरु चमकत देखेउ[17], चुगत भुलाएउ जोति[18] ।६
कह वियोग, धाई सेउ आपन,[19] नैन बरसि गजमोंति ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दॉत क जोत । २–अति रेख देख रही चखु भामिनी । ३–जनि । ४–चखु । ५-६–X । ७–कोर । ८–भर । ९–राखो । १०–दारिब । ११–काहू । १२–चाखो । १३–मकोउ बोलह । १४–सौं । १५–बराबरि । १६–होय । १७–चंचल पर चमकत देखौ । १८–चखु भुलाने जोति । १९–कहै बियोग धाइसौं ।

टिप्पणी—(१) **चौक**–दॉतोकी पक्ति । **वैरागर**–मध्यकालीन हीरेकी प्रसिद्ध खान । हीरेके खान के रूपमें इसका उल्लेल सोमेस्वर देव (बारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) ने मानसोल्लासके रत्न-प्रकरणमे किया है । इस नामके मूलमे संस्कृत वज्राकर (हीरेकी खान) शब्द जान पड़ता है । प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यमें उल्लिखित हीरेकी खानोंकी पहचान कर सकना आज सुगम नही है, क्योकि बहुत ही कम ऐसे प्राचीन खान बच रहे है जहॉसे हीरे निकाले जाते हो । फिर भी मोतीचन्द्र-का अनुमान है कि चॉदा (मध्य-प्रदेश) जिलेमे बेनगगाके तटपर स्थित ब्रैरागढ़का ही प्राचीन नाम बैरागर है । वहॉ आज भी हीरे प्राप्त होते है । उनके इस अनुमानके मूलमे नाम साम्यके अतिरिक्त यह तथ्य भी है कि हीरेकी खानो-की सूचीमे बुद्धभट्टने वैण्यातट, वराह-मिहिरने वेणातट और अगस्तिमतने वेणु-का उल्लेख किया है और वेण अथवा वेणु आधुनिक बेनगगाका प्राचीन नाम है । **दामिनि**–बिजली ।

(२) **भामिनि**–नारी ।

(३) **मकोइ**–एक फल, खुशबरी ।

---

१. यह पृष्ट भारत कला भवन में नहीं है । सम्मेलन सस्करण पर आश्रित ।

६५

(दिल्ली)

अति रसाल रसना मुख ताही। बोलत बोल लाग चित जाही ॥१
बोल सुहाउ सो कोकिल बानी। काकल माँझ लख सौं आनी ॥२
कुरला रितु बोलै भिनुसारी। पेम खटारस कहै सँभारी ॥३
अमिय बचन बासुकि सन पाई। सीतल चन्दन साल सुहाई ॥४
जीभ जानु मुख कँवल अमोला। फूल झँरहि जो हँस हँस बोला ॥५
वह र हँसत हम देखी, हौं रोवइ तिह लाग।६
अस धनि जाइ हाथ मिलाइ, इह लिलार नहिं भाग ॥७

टिप्पणी—(३) कुरला–एक पक्षी; कुररी, टिटिहरी।
(७) लिलार–ललाट।

६६

(दिल्ली)

गिंय अनूप कहौं सुनु धाई। जानु कुँदेरैं कुन्द भवाई ॥१
गिंय मजूरि कै घिरत परेवा। कहिसैं कै आह सहज वह मेवा ॥२
गिंय न लाँब न पातर छोट। गढी बनाई अधिक न मोट ॥३
देखत भूल रहेउँ मुरझाई। टग लाडू महँ दिहसि लखाई ॥४
तीन रेख जाँह कँठमाला। वह अभरन मौं किहसि जिय लाला ॥५
फाँस भई वहि रेखैं, परी हम आइ।६
सरभहि खाल तिह गोरी, जीउ ले गई सो धाइ ॥७

टिप्पणी—(१) गिंय–गला। कुँदेरैं–कुन्दीगर, खरादनेवाला। कुन्द–खराद। भवाई–घुमाया।
(२) मजूरि–मयूर, मोर। परेवा–कबूतर।
(५) जिय लाला–जीनेमे कठिनाई।

६७

(दिल्ली)

भूपर आन मरताल सँवारी। सुभर पेड़ पालो टटकारी ॥१
अइस न देखेउ काहु कलाईं। बिरियाँ चरचर चरहिं सुहाईं ॥२
तो वह जान रकत का आही। कै मँहदी र सुहागिन लाई ॥३
करपालो जनु मूँग क छही। नखँ जोत सत अधिक न कही ॥४
छीता निहसत लोग सराहा। करबारी नख और न बराहा ॥५
हमैं लाग वह निहसत चूकै, भल होइ न घाव।६
हरक घाव जस उपजै सरभहि, दन्द न होइ पियाव ॥७

टिप्पणी—
(१) मरताल—मृणाल, कमलनाल।
(४) करपालो—कर-पल्लव, हथेली। मूँग—मूँगा। छही—छवि, छाया।

६८
(दिल्ली)

साँख घोटि कै पीठ सँवारी। कै र मैन साँचे मँह ढारी ॥१
साँचहि अइसी ढार न जाई। विध अपनै उर चित उपनाई ॥२
पीठ दीपै जानु झरकै दहा। देखेउ पीठ जहाँ लय रहा ॥३
बासुकि पूर गाँठि तर देखा। कै बोलिन गुन सरग बिसेखा ॥४
बिखम भुअंगम बेनी भये। मारग वहै सीस केर गहै ॥५
चतुर सुजान का कहउँ सोई, जै पीठ रची सँयसार[1]।६
नख सिख बनै निपट निरासी, सिरजन हार मुरारि ॥७

पाठान्तर—मार्जिन मे—
१—जैं य रची सवाॅर।

टिप्पणी—(१) साँख—सख।
(५) भुअंगम—सर्प।

६९
(दिल्ली)

लंक चहैं किह लाओं जोरी। जनु केहरि सेउ किहिसि उ चोरी ॥१
चलत डोल जनु बेगर अहा। लागत पवन टूट न रहा ॥२
कर कर बारक मूठ समाई। बिसा लंक किहिस बौराई ॥३
भरम चीर मँह बार बिसेखी। अमर ऊपनह सुॅरग न देखी ॥४
देखत लंक बिमोहहि देवा। गन गन्धरप औ नर महदेवा ॥५
उतर न देइ न लहकॅह, किहँ पँह हों बैरागू आह।६
लंक टेक कर रोवइ, यह दुख बकतेंउ काह ॥७

टिप्पणी—(१) केहरि—केसरी; सिंह। किहिसि—किया। उ—वह; उसने।

७०
(दिल्ली)

गहन कठोर पयोहर नारी। जनु कुँभस्थल सरल सुहारी ॥१
कँवल वरन कुच उठै अमोला। तिंह पर बइठ भँवर एक भूला ॥२
तरल तीख उर लागहिं जाके। छाती फूट पीठ मँह ताकें ॥३
तिंह डर नियर न आवइ कोई। देखत मरै बेर न होई ॥४
भूल परै चख जाइ समानीं। सर धुन मरौं न आवै तानी ॥५

कनक कलस उर कामिनि, रस भर धरे अनन्त ।६
देखै छुवै न पाइँह, कुँभस्तल मैमन्त ॥७

टिप्पणी—(१) पयोहर–पयोधर, स्तन। कुँभस्थल–हाथीका गण्डस्थल। (कवियो-ने प्रायः स्तनोकी उपमा कुँभस्थल से दी है)।

(४) बेर–देर।

(७) मैमन्त–मदमस्त हाथी।

७१

(दिल्ली)

स्याही काली रोमावली। कै कालिन्दी बिरहैं जली ॥१
कनक सिखर दुँह बीच बहाई। नाभी माँग चलि कहँ आई ॥२
तिह ठाँ तीरथ भयउ पयागू। बेनी झार जिय कर लागू ॥३
मन कामना जो कन्त को कीन्हा। औ बहुतहि करवत सर दीन्हा ॥४
ऊ कहँ करसि अगिन जो खाई। कया काटि के तुरत बिलाई ॥५
मन कामनाँ न पूजै काहु क, बहुतै किय निरास ।६
करवत देत सरहिं मैं अपनै, धाई सुनहु वह आस ॥७

टिप्पणी—(१) कालिन्दी–यमुना।

(३) पयागू–प्रयाग। बेनी–त्रिवेणी।

(४) करवत–(करपात्र) आरा।

७२

(दिल्ली)

नैंनूँ मथि कै पेट कमावा। कै जनु पाट पछिउँ सेंउ आवा ॥१
आँत काढ़ि कै जान पियावइ। सेतहि चार कै जीउ बहावइ ॥२
पातर पेट कहौं बिछराई। पूरी जानु गुनवार पकाई ॥३
नाभी देखत जाइ न छाड़ी। कनक कोंह जनु आँगुरि काढ़ी ॥४
कै र भँवर जस नीर बहिराई। जो र परै उठि निकसि न जाई ॥५
डूबि रहा जिउ नाभी कुण्ड, र गयेउ निकसि न धाइ ।६
जाकर नाभि देख जिउ दीने, और बात कहि जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) नैंनू–मक्खन।

७३

(दिल्ली)

कदलि खम्भ दोइ जगत सुहाई। दखिन क चीर आन पहिराई ॥१
देखेउ जंघ पार न पावा। कनक हीर सेंदुर जनु लावा ॥२
कै मलयागिर केर सँवारी। सुहर पेड़ पालो सतकारी ॥३

चलत अन्त तरुवह कै पावा। जानहु घोर महावर लावा ॥४
मन मँह अस भा सर भुइँ लागेउ। पाउ धरे सिह रंग चाखों ॥५
कहो सिंगार सहज कै सोलह, रहौं न कितहुँ भुलाइ ॥६
सरसेउ लखन सपूरन दरद देखा वहि पाइ ॥७

टिप्पणी—(३) केर–का। सुहर–सुघर। पेड़-पालो–पल्लवयुक्त वृक्ष। भोजपुरी मे पेड-पालो मुहावरे के रूप मे पेड़-पौधो के अर्थ मे प्रयुक्त होता है।

(४) तरुवह–तालुओका।

७४

(दिल्ली)

वरन सुनहु औ कहउँ गुनाई। कुंदन कै जनु देय झरकाई ॥१
कोंख बरन चिनिया कै कली। अछर आउ इँदरासन चली ॥२
काँचे कँवल कंकर रस पिया। अइस बरन बिध वहि कहँ दिया ॥३
पुहुप जहाँ लह अँग गँधाई। कँवल कहाँ मुख सपूरन चाहीं ॥४
वड़ हन लोन बरन कों काहा। अति सरूप तिहु भुवनों आहा ॥५
ससहर जस र सरद रितु नरमै, सोरह कराँ मयंक ।६
वहि क करन अमिय न पियइ कहूँ, हों चकोर जस रंक ॥७

७५

(दिल्ली)

सकलेउ गात लाँब न छोटी। पातर तन न अधिक न मोटी ॥१
मेल सोमेल बरन को काहा। जस जिय चाहै तस तिह आहा ॥२
नौ व सात जो कहिंउ सिंगारा। ते वहिकँह दीन्हेउ करतारा ॥३
सेत चार कीसन चारी। खीन चार औ चार जो भारी ॥४
सेत माँग चख चौक जो नखा। कुच औ दसन केस औ चखा ॥५
नाँक अधर कटि कहौं, करपल्लो सब खीन ।६
गाल कलाई भौं कुच, कदलि पेड़ नहिं छीन ॥७

टिप्पणी—(३) नौ व सात—सोलह

(४) सेत—श्वेत। कीसन—कृष्ण, काला। खीन—क्षीण। सोलह शृंगारके रूपमे कुतुबनने शरीरके अवयवोका वर्गीकरण चार श्वेत, चार कृष्ण, चार पृथुल और चार क्षीणके रूपमे किया है। जायसीने भी पदमावत-में इसी प्रकारका वर्गीकरण किया है किन्तु उन्होने श्वेत और कृष्णके स्थानपर लघु और दीर्घका उल्लेख किया है।

(५) श्वेतके रूपमे यहाँ माँग, चख (नेत्र), चौक (दाँत) और नखका और कृष्णके रूपमें कुच, दसन (दाँत), केश और चख (नेत्र) का उल्लेख है।

इसमे दाँत और नेत्रको दोनो वर्गोंमे गिनाया गया है। जायसीने दीर्घ के रूपमे केश, अँगुली, नयन और ग्रीवा तथा लघुके रूपमे दशन, कुच, ललाट और नाभिको बताया है।

(६) क्षीणके रूपमे नाक, अधर, कटि और करपल्लव (हथेली) का उल्लेख यहाँ है। जायसीने इस वर्गमे करपल्लवके स्थानपर पेटको रखा है।

(७) पृथुलके रूपमे गाल, कलाई, भौ और कुचका यहाँ उल्लेख है। गाल और कलाईका उल्लेख जायसीने भी किया है। उनके अनुसार अन्य दो नितम्ब और जाँघ है।

७६

(दिल्ली)

बारह अभरन जग मँह कहे। एक एक कहउँ सँभ जे आहे ॥१
पहिरसि दखिन क चीर सँवारी। तरुनी जनमी अपछारी ॥२
कै माँजन सर सेंदुर दीन्हा। मुख तँबोल चख काजर कीन्हा ॥३
कुसुँभ पहिर के चन्दन घोला। रितु बसन्त बिदराई बोला ॥४
जो डर नाँ कहै कर सोई। बिम्ब बराबर और न होई ॥५
सीस कण्ठ कर लंका, जोपै बाँच सुनहु अइ धाइ ।६
सात पाँच ई अभरन बारह, एक एक कहिउ बुझाइ ॥७

टिप्पणी—(१) माँजन–मजन।

७७

(दिल्ली)

दइ सिंगार ईंह अभरन राती। एक हनुवन्त औ पौन संघाती ॥१
कली बीरा अतै सुहाई। बीरी पान खाँड कै खाई ॥२
पान खाइ जो घोंटसि पीका। गिय आगैं अरु देखेउ लीका ॥३
गवन करै जनु समुँद हिलोरे। गज मराल सेंउ लिहिसि अजोरै ॥४
अति सुबुधि गुन गरब कै माँती। मिरगि सुरंगिन पाँतहि पाँती ॥५
पाँव परै कहँ धायेउँ वहिकै, देखत चली उड़ाइ ।६
भा झनकार चमक कै गवनै, तिह परेउ मुरझाइ ॥७

७८

(दिल्ली एकडला)

धाइँ कहा यह कार न बहूता[१]। समुझ कुँवर सुनु[२] [राजै[३] कै पूता]॥१
यह र[४] बात कै चिन्ता[५] न कीजइ[६]। हौं बुधि कहौं स्र[वन[७] सुनि लीजइ][८]॥२
अहा[९] एक बुधवन्त जो गुनी। यह र बात हम वहि सों सुनी[१०] ॥३

तो हम बात सीख कै लिही[११]। हौं बुधि कहौं जाइ[१२] जो कही ॥४
मिरगावति रानी है भावा। करै एकादसि निरजल आवा ॥५
वह लुकाई[१३] तिह ठाईं, जिह[१४] ठाँ[१५] फुनि[१६] परब कहँ आउ[१७] ।६
तिह कहँ[१८] हाथ आउ वह,[१९] कैसँहि[२०] चीर लै[२१] जो पाउ[२२] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–यहि कारन भूता। २–सुन। ३–रान। ४–एहि रे। ५–चिन्त। ६- कीजै। ७–सौ। ८–लीजै। ९–आह। १०–हमरे बात उहि सो अस सुनी। ११–तो हम सौन सीखि कै दिही। १२–जाय। १३–लुकाए। १४-१५–×। १६–फुनि रे। १७–आए। १८–तेहि के। १९–वह आवै। २०–×, (दि० मार्जिन) तोरे। २१–लिए। २२–पाए।

टिप्पणी—(१) कार–कार्य। बहूता–बहुत बडा। पूता–पुत्र।
(३) वहि सो–उससे।
(४) लिही–लिया।
(६) लुकाई–छिपी। ठाईं–स्थान। ठॉ–स्थान। फुनि–पुनः। परब–पर्व।
(७) आउ–आयेगी। कैसहिं–किसी प्रकार। पाउ–पावे।

७२

(दिल्ली; एकडला)

धाइ क मन्त्र स्रवन[१] चित छावा। सरवर तीरहिं कूप रिसावा[२] ॥१
जो निरजला एकादसि[३] आई। तिह[४] ठाँ छुपि[५] के रहा लुकाई ॥२
मिरगावति[६] सब सखी बुलाई[७]। अहीं सहेली तै सब आई ॥३
आपुन[८] बात सखिन्ह[९] सौं कहा। अउर[१०] बात जहवाँ[११] लहि अहा ॥४
यह[१२] पै एक न बकती[१३] बाता। जो जिउ राजकुँवर सौं राता ॥५
सेज गवेंझ[१४] चटपटी लागी,[१५] कहि[१६] न काहु[१७] सौं बात ।६
यही बात पै माँगहि बिधि सौं,[१८] जो र[१९] कुँवर चित रात ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सौन। २–गोफा सरवर तीर रसावा। ३–एकादसी। ४–तेहि। ५. छपि। ६–मिरगावती। ७-बोलाई। ८–अपनी। ९–सखिन्हि। १०–और। ११–जहमा। १२–एह। १३–बकतै। १४–कबेछ। १५–×। १६–कह। १७–काफू। १८–एहरे बात न कहै काह सौ। १९–रे।

टिप्पणी—(१) रिसावा–खुदवाया।
(३) अहीं–थीं।
(४) आपुन–अपनी। अउर–और। जहवाँ लहि–जहाँतक।
(५) पै–किन्तु। बकती–कहा।

८०

(दिल्ली; एकडला)

जिय कै बात न आपुन कहा[1]। जानु[2] गूँग खाइ[3] मिठाई रहा[4] ॥१
कहिसि बिहान चलै नहाई। करै एकादसि[5] निरजला आई ॥२
सब सिंगार कै गोहन भई। चन्दन झिरकि फूल बहु लई[6] ॥३
रूप सरूप सुभाग सँवारी[7]। झमकि चली सब जोबन बारीं ॥४
कोड[8] करहि वैं[9] सबद सोहाई। सरवर तीर निमिख महँ आई ॥५
अभरन चीर उतारि धरि,[10] पैठी सबै अन्हाइ[11] ।६
ससि र[12] नखन लै तारे,[13] सरवर खेलै आइ[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–अपनी कही। २–जनि। ३–खाए। ४–रही। ५–कहै एकादसी। ६–फूल सब गई। ७–सोहाग सोनारी। ८–गवन। ९–उवै। १०–उतारि जो रखिन्ह। ११–नहाए। १२–रे। १३–तारा। १४–जाए, (दि० मार्जिन) चाँद नखत ले तारा, सरवर आइ नहाइ।

टिप्पणी—(१) जानु–मानो। गूँग–गूँगा।

(२) बिहान–प्रातःकाल।

(३) गोहन–साथ।

(४) कोड़–क्रीड़ा। निमिख–क्षणभर।

(६) अभरन–आभरण, आभूषण। धरि–रखकर। पैठी–पानी मे घुसी। अन्हाइ–स्नानके निमित्त।

८१

(दिल्ली, एकडला)

चंचल चपल सुजान सुनारी[1]। मिलि सहेलिन्हि खेलि धमारी[2] ॥१
कोड़ करहिं कुमुदिनि सब तोरहि। बिहँसहि हँसहि कँवलघट तोरहिं[3] ॥२
राजकुँवर जिह हतो[4] लुकानाँ। देखिसि कँवल भाँति बिगसाना ॥३
जेंउ[5] ससि देखि कुमुद बिगसाई। पावस चन्द चकोर मिलाई ॥४
जिह लग ईत किहौं अपकारा[6]। सो अब आइ मिलेउ[7] करतारा ॥५
जिय धुकचुकी आउ[8] मन भीतर, कहिसि[9] चीर अब लेउँ[10] ।६
चीर न आउ[11] हाथ जो मोरें, तो इहँ ठाँउ मरेउँ[12] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सोजान सोनारी। २–मिली सहेली खेल धमारी। ३–कौल गहि मोरहि, (दि० मार्जिन) कवँल मुख मोरहि। ४–जहँ हुता। ५–जेव। ६–जेहि लगि एत किएव उपकारा। ७–आए मेरवो। ८–जिअ धुकुचुकी और। ९–कहै। १०–लेव। ११–आव। १२–तो एहि ठाँव जिउ देव।

टिप्पणी—(२) कँवलघट—कमलगट्टेका छत्ता ।

(३) हतो—था । लुकाना—छिपा । बिगसाना—विकसित हुआ ।

(५) ईत—इतना । किहौं—किया ।

(६) धुकचुकी—धड़कन ।

(७) ठाँउ—जगह ।

८२

(दिल्ली, एकडला[१])

दई[१] सँभरि कै निकसा धाई । चीर ताहि कर लीनसि[२] जाई ॥१
सँवरसि[३] सो बुधि धाईं जो कही । चीर लिहसि[४] मिरगावत र[५] गही[६] ॥२
उन्ह आरो मनुसहिं कर[७] पावा । चीर लये कों मकु कोउ[८] आवा ॥३
सब आपुन आपुन को[९] धाईं । चीर लये कों[१०] बाहर आईं ॥४
आपुन आपुन लीन्ही[११] चीरू । मिरगावत कर कहुँ रहहिं न खीरू[१२] ॥५
हम जो कहा तुम्ह सेंउ[१३] तिह[१४] दिन,[१५] तुम्ह[१६] जो कहा कोउ[१७] नाहिं ।६
ईत बोलि कह उन्ह सों,[१८] तुर[१९] गईं[२०] उड़ र पवन[२१] पर जाहिं ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१—दैय । २—लीतिसि । ३—सौरिसि । ४—लिहिसि । ५—× । ६—रही । ७—उन्ह मनुसे कर आरो । ८—चीर लेय कहँ मकु कोइ । ९—आपन आपन कहँ । १०—लेय कहँ । ११—आपन आपन लीनिन्हि । १२—मिरगावती कै गहेव उन्ह खीरू । १३—तोह सेती । १४-१५—× । १६—तोह । १७—कोई । १८—एता बोल का कहि उहि सो । १९-२०—× । २१—रे पौन ।

टिप्पणी—(१) दई—ईश्वर । सँभरि—स्मरण करके । धाई—दौडकर । लीनसि—लिया ।

(२) गही—पकड़ ।

(३) उन्ह—उन लोगोने । आरो—आहट । लये कों-लेनेके लिए । मकु—कदाचित् । कोउ—कोई ।

(५) कहुँ—कही ।

(७) ईत—इतना । तुर—तत्काल ।

८३

(दिल्ली; एकडला)

मिरगावति[१] नहिं सारी पाई । धाइ[२] बहुरि पानी मँह आई ॥१
देखिसि कुँवर तीर है ठाढ़ा । मिरगावतीं बचन[३] मुँह काढ़ा ॥२
कहिसि[४] कुँवर तुम्ह[५] नीक न कीन्हा । हमहिं बिछोह सखीं सों दीन्हा ॥३
कुँवर कहा सुन बातिक मोरी । दूसरि[६] बरिस चाह मुहि[७] तोरी ॥४
इहि[८] दिन सँचरि[९] मिरिगि[१०] होइ[११] आई । चित हमार लीन्हि[१२] बउराई ॥५

* इस कडवकके पृष्ठका फोटो हमें उपलब्ध न हो सका । सम्मेलन—सस्करणपर आश्रित ।

वह[13] दिन हुतै[14] भई[15] जिउ[16] मोरा, चित मन लागेउ[17] तोहि ।६
दूसर[18] बरिस समो यह तीसर[19], येहि ठाँ भयउ[20] जो मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–मिरगावती । २–धाए । ३–बकत । ४–कहेसि । ५–तुह । ६–दोसर । ७–मोहि । ८–उवह । ९–सौर । १०–मिरिग । ११–मै । १२–लीन्हेव । १३–तेहि । १४–उते । १५–भएव । १६–जिअ । १७–लागा । १८–दोसर । १९–एह तेसर । २०–भएव ।

टिप्पणी—(१) सारी–साड़ी । धाइ–दौडकर । बहुरि–लौटकर ।
(२) ठाढ़ा–खडा । काढा–निकाला ।
(३) नीक–अच्छा । कीन्हा–किया । दीन्हा–दिया ।
(४) बातिक–बात इक । मोरी–मेरी ।
(५) मिरिगि–मृगी । हमार–मेरा । बउराई–पागल ।
(६) हुतै–से । तोहि–तुमको; तुममे ।
(७) समो-समाप्त हुआ ।

८४

(दिल्ली, एकडला)

अउर[1] बहुत दुख तो लगि देखउँ[2] । कही[3] न जाइ[4] अधिक अति लेखेउँ[5] ॥१
जो तुम्ह सुनहु[6] तो सब दुख कहउँ । हियें पीर कैसें कै रहउँ[7] ॥२
जिंह[8] दिन मिरिगि छया दिखराई[9] । पेंम फाँद पाछैं[10] संग आई ॥३
तूँ तो यहि मँह[11] गइसि बिलाई । हों यहि ठाउँ परेउँ[12] मुरुझाई ॥४
हाथ पाँउ मैं[13] सिर न सँभारा । अउर[14] बहुत दुख गहेउ[15] अपारा ॥५
पितैं आइ समुझायेउ[16] बहु बिध,[17] गयेउ न तिह लग[18] साथ ।६
मँदिर उचाइ रहेउँ यहि[19] ठाँई, कैसहिं आउ[20] हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति ।

१–और । २–तोहि लगि देखौ । ३–गनै । ४–जाए । ५–पेखौ । ६–जो रे उनउ । ७–सहेउ । ८–जेहि । ९–देखराई । १०–आर्द वाछे । ११–तोहि तौ उन्ह सग । १२–एहि ठावो परेव । १३–पान हम । १४–और । १५–कहौ । १६–आए समोझाएव । १७–× । १८–गएव न तेहि के । १९–उचाए रहे व एहि । २०–कैसे आवहु ।

टिप्पणी–(३) छया–छाया; रूप । पेंम–प्रेम । फाँद–फन्दा । पाछैं–पीछे ।
(४) गइसि–गयी । बिलाई–लुप्त । हौं–मैं ।
(५) गहेउ–ग्रहण किया ।
(७) मँदिर–भवन । उचाइ–उठाकर; निर्माण कराकर । आउ–आओ ।

८५

(दिल्ली)

पुनि तैं दुसर दीन्हि दिखाई। सखिह साथ लै सरवर आई ॥१
देखेंउ तोहि दौरि कै आयउँ। जिय सेंउ पाउ परै कहँ धायउ ॥२
हम देखत तूँ गई बिलाई। हो खसि परेउँ भुइँ मुरझाई ॥३
धाई अँबरित सींचि जियायउँ। जियउ पाछु जिय बिसरायउँ ॥४
परिमल फूल तँबोल बिसारा। माता-पिता कुटुँब सँयसारा ॥५
अन न खायेउ तिह दिन सेउ, (पियेउ न जल)[१] पानि ।६
अउर बहुत दुख आहहि महिं, बहुतै कहे सो जानि ॥७

मूलपाठ—६–परेउ जस ।

टिप्पणी—(१) **दुसरैं**–दूसरी बार; दुबारा ।

(२) **दौरि**–दौड़कर । **पाउ**–पैर । **परै**–पड़ना । **कहँ**–के लिए । **धायउ**–दौडा ।

(३) **बिलाई**–लुप्त । **खसि**–गिर । **भुइँ**–भूमि ।

(४) **धाई**–सेविका, दूध पिलानेवाली । **अँबरित**–अमृत । **पाछु**–पीछे । **बिसरायउँ**–भुलाया ।

(५) **परिमल**–सुगन्धि । **तँबोल**–पान ।

(६) **अन**–अन्न ।

८६

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावती कहा सुनु राया[१]। तुम्ह लग[२] मिरग धरी [हम] छाया ॥१
दुसरैं[३] ताहि लागि हौं आयउँ[४]। सखी सहेलिंह बात लगायेउँ[५] ॥२
पुनि मिस किहेउ[६] एकादसि[७] केरा। आयउ[८] बेगि न लायउँ[९] बेरा ॥३
किह[१०] कारन कहु चीर लुकायहु[११]। सखी सहेली[१२] साथ छुड़ायहु[१३] ॥४
चीर हमार देहु तुम्ह[१४] आनीं। जिंह आयसु तिह को तूँ सामी[१५] ॥१५
तोर चीर हौं देइ न पारौं, कही धाई हम बात ।६
तन मन जीउ हमारेउ,[१६] अरु पै देंउ चीर[१७] सै सात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राजा । २–तुम लगि । ३–हौं पुनि । ४–आई । ५–सखी सहेलि हौ साथ लगाई । ६–[···] स धरउँ । ७–एकादसी । ८–आवउँ । ९–लावउँ । १०–× । ११–लुकावहु । १२–सहेलिहु । १३–छुड़ावहु । १४–तुम । १५–जहँ आइस तहँ गव न मानी । १६–हमारा । १७–और चीर देउँ ।

टिप्पणी—(१) **राया**–राजा । **लग**–लिए । **छाया**–छद्मरूप ।

(३) **मिस**–बहाना । **बेरा**–विलम्ब; देर ।

(४) लुकायहु–छिपाया ।
(५) हमार–मेरा । आनी–लाकर । आयसु–आदेश ।
(६) तोर–तुम्हारा । हौं–मै ।

८७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चीर हमार देहु[१] कस नाही । अउर[२] चीर हम पहिरि न चाही[३] ॥१
तोर चीर सों[४] उत्तम[५] चीरू[६] । आनि देउँ तिह आपन खीरू[७] ॥२
मरो सोइ जें तिह[८] सिखरावा[९] । इह[१०] गियान तैं[११] जिह सों[१२] पावा ॥३
कहसि देइ आपुन अब[१३] आनीं । मन महँ कहसि[१४] भलै बुधि[१५] जानी ॥४
कुँवर चीर भल[१६] दीन्हे[१७] ऊन्हीं[१८] । निकसी पहिरि चौदस[१९] जोन्ही[२०] ॥५
निकसत यहि र[२१] कुमुँद जस बिगसा, ससिबदनी[२२] मुख देखि[२३] ।६
दिनयर उदो[२४] कीन्हि परभातहिं, कँवल बिगस उहि[२५] देखि[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए) देउ । २–(ए०, बी०) और । ३–(ए०) पहिरि न जाही, (बी०) पहिरहि नाही । ४–(बी०) से । ५–(ए०) उतिम । ६–(बी०) चीरा । ७–(ए०) आपन आनि देव एक खीरू, (बी०) अनि देहुँ अब आपन खीरा । ८–(ए०) सोए जे तोहि, (बी०) जिहि तोहि । ९–(बी०) सीखाव । १०–(ए०) एह गेआन, (बी०) यह गेआन । ११–(ए०) तोह । १२–(ए०) जासौ, (बी०) जेहि से । १३–(ए०, बी०) कहिसि देहु अब आपन । १४–(ए०) कहेसि, (बी०) कहिसि । १५–(ए०, बी०) भली । १६–(ए०) एक । १७–(ए०) दीन्हेव । १८–(बी०) उन्हई । १९-(ए०) चौदसि । २०–(बी०) जोन्हाई । २१–(ए०) अहरे, (बी०) एहरे । २२–(बी०) बॅदन । २३–(बी०) पेखि । २४–(ए०) उदै । २५–(ए०) वै, (बी०) तेहि । २६–(ए०) पेखि ।

टिप्पणी—(१) **कस**–कैसे ।
(३) **सिखरावा**–सीख दिया; सिखाया । **गियान**–ज्ञान । **सों**–से ।
(५) **चौदस**–चतुर्दशीका चन्द्रमा । चतुर्दशीतक चौदह कलाओसे चन्द्रमाका स्वरूप बनता है । इस्लामकी धारणाके अनुसार चौदसको चॉद अपनी समग्र पूर्णताको प्राप्त होता है । अतः उनके यहॉ चौदसके चॉदकी ही उपमा दी जाती है । **जोन्ही**–प्रकाशमान हुई ।
(६) **निकसत**–निकलते ही । **बिगसा**–विकसित हुआ ।
(७) **दिनयर**–दिनकर; सूर्य । **उदो**–उदय । **परभातहिं**–प्रभातके समय । **कँवल**–कमल ।

८५

(दिल्ली)

पुनि तैं दुसर दीन्हि दिखाई। सखिह साथ लै सरवर आई ॥१
देखेंउ तोहि दौरि कै आयउँ। जिय सेंउ पाउ परै कहँ धायउ ॥२
हम देखत तूँ गई बिलाई। हो खसि परेउँ भुइँ मुरझाई ॥३
धाई अँबरित सींचि जियायउँ। जियउ पाछु जिय बिसरायउँ ॥४
परिमल फूल तँबोल बिसारा। माता-पिता कुटुँब सँयसारा ॥५
अन न खायेउ तिह दिन सेउ, (पियेउ न जल)[१] पानि ।६
अउर बहुत दुख आहहि महिं, बहुतै कहे सो जानि ॥७

मूलपाठ—६–परेउ जस।

टिप्पणी—(१) दुसरैं–दूसरी बार; दुबारा।

(२) दौरि–दौड़कर। पाउ–पैर। परै–पडना। कहँ–के लिए। धायउ–दौड़ा।

(३) बिलाई–लुप्त। खसि–गिर। भुइँ–भूमि।

(४) धाई–सेविका; दूध पिलानेवाली। अँबरित–अमृत। पाछु–पीछे। बिसरायउँ–भुलाया।

(५) परिमल–सुगन्धि। तँबोल–पान।

(६) अन–अन्न।

८६

(दिल्ली; बीकानेर)

मिरगावती कहा सुनु राया[१]। तुम्ह लग[२] मिरग धरी [हम] छाया ॥१
दुसरैं[३] ताहि लागि हौं आयउँ[४]। सखी सहेलिह बात लगायेउँ[५] ॥२
पुनि मिस किहेउ[६] एकादसि[७] केरा। आयउ[८] बेगि न लायउँ[९] बेरा ॥३
किह[१०] कारन कहु चीर लुकायहु[११]। सखी सहेली[१२] साथ छुड़ायहु[१३] ॥४
चीर हमार देहु तुम्ह[१४] आनीं। जिंह आयसु तिह को तूँ सामी[१५] ॥५
तोर चीर हौं देइ न पारौं, कही धाई हम बात ।६
तन मन जीउ हमारेउ,[१६] अरु पै देंउ चीर[१७] सै सात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राजा। २–तुम लगि। ३–हौं पुनि। ४–आई। ५–सखी सहेलि हौ साथ लगाई। ६–[···] स धरउँ। ७–एकादसी। ८–आवउँ। ९–लावउँ। १०–×। ११–लुकावहु। १२–सहेलिहु। १३–छुड़ावहु। १४–तुम। १५–जहँ आइस तहँ गव न मानी। १६–हमारा। १७–और चीर देउँ।

टिप्पणी—(१) राया–राजा। लग–लिए। छाया–छद्मरूप।

(३) मिस–बहाना। बेरा–विलम्ब; देर।

(४) **लुकायहु**–छिपाया।

(५) **हमार**–मेरा। **आनी**–लाकर। **आयसु**–आदेश।

(६) **तोर**–तुम्हारा। **हौ**–मै।

८७

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

चीर हमार देहु[१] कस नाही। अउर[२] चीर हम पहिरि न चाही[३] ॥१
तोर चीर सों[४] उत्तम[५] चीरू[६]। आनि देउँ तिह आपन खीरू[७] ॥२
मरो सोइ जें तिह[८] सिखरावा[९]। इह[१०] गियान तें[११] जिह सों[१२] पावा ॥३
कहसि देइ आपुन अब[१३] आनों। मन महँ कहसि[१४] भलै बुधि[१५] जानी ॥४
कुँवर चीर भल[१६] दीन्हे[१७] ऊन्हीं[१८]। निकसी पहिरि चौदस[१९] जोन्ही[२०] ॥५
निकसत यहि र[२१] कुमुँद जस बिगसा, ससिबदनी[२२] मुख देखि[२३]।६
दिनयर उदो[२४] कीन्हि परभातहिं, कँवल बिगस उहि[२५] देखि[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए) देउ। २–(ए०, बी०) और। ३–(ए०) पहिरि न जाही, (बी०) पहिरहि नाही। ४–(बी०) से। ५–(ए०) उतिम। ६–(बी०) चीरा। ७–(ए०) आपन आनि देव एक खीरू; (बी०) अनि देहुँ अब आपन खीरा। ८–(ए०) सोए जे तोहि, (बी०) जिहि तोहि। ९–(बी०) सीखाव। १०–(ए०) एह गेआन; (बी०) यह गेआन। ११–(ए०) तोह। १२–(ए०) जासौ, (बी०) जेहि से। १३–(ए०, बी०) कहिसि देहु अब आपन। १४–(ए०) कहेसि, (बी०) कहिसि। १५–(ए०, बी०) भली। १६–(ए०) एक। १७–(ए०) दीन्हेव। १८–(बी०) उन्हई। १९-(ए०) चौदसि। २०–(बी०) जोन्हाई। २१–(ए०) अहरे; (बी०) एहरे। २२–(बी०) बॅदन। २३–(बी०) पेखि। २४–(ए०) उदै। २५–(ए०) वै, (बी०) तेहि। २६–(ए०) पेखि।

टिप्पणी—(१) **कस**–कैसे।

(३) **सिखरावा**–सीख दिया; सिखाया। **गियान**–ज्ञान। **सों**–से।

(५) **चौदस**–चतुर्दशीका चन्द्रमा। चतुर्दशीतक चौदह कलाओसे चन्द्रमाका स्वरूप बनता है। इस्लामकी धारणाके अनुसार चौदसको चॉद, अपनी समग्र पूर्णताको प्राप्त होता है। अतः उनके यहॉ चौदसके चॉदकी ही उपमा दी जाती है। **जोन्ही**–प्रकाशमान हुई।

(६) **निकसत**–निकलते ही। **बिगसा**–विकसित हुआ।

(७) **दिनयर**–दिनकर, सूर्य। **उदो**–उदय। **परभातहिं**–प्रभातके समय। **कँवल**–कमल।

८८

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

आगें कुँवर चली उहि[1] पाछैं। गजमैंमत आवइ जनु[2] काछैं ॥१
हँस रँग परसत जग मेखा[3]। कै सुकुवार मेघ जनु पेंखा[4] ॥२
तुला[5] रासि ससि जनम जो आवइ[6]। बहु परकार[7] कहि ताप बहावइ[8] ॥३
रहसत कुँवर मँदिर मँह पैठा। सोन सिघासन ऊपर[9] बैठा ॥४
धाइहि कहसि[10] देखु इह ओही[11]। जिहि[12] क पेम[13] चित छायउ[14] मोही ॥५
बैठि सिघासन ऊपर[15] दोउ[16], जनु[17] सारद[18] संग साथ।६
मिरगावति गिंय हार,[19] कुँवर मेलि उर[20] हाथ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) उवह; (बी०) है। २–(ए०) जनि, (बी०) बन। ३–(ए०) बरिसत जल मेघा; (बी०) रेगै जस बरिसत मेघा। ४–(ए०) पेंच जनु पेघा; (बी०) कैसु कुवँर पीघ जनौ पीघा। ५–(ए०) तोला। ६–(ए०) आवै, (बी०) आवा। ७–(बी०) परिकर। ८–(ए०) जीअ बहु भावै, (बी०) जीवन्न बहु भावा। ९–(बी०) परगै। १०–(ए०) कहिसि, (बी०) कहा। ११–(ए०) उही; (बी०) वोही। १२–(ए०, बी०) जेहि १३–(बी०) के। १४–(ए०) छायेव; (बी०) छायेउ। १५–(बी०) पर। १६–(ए०) दुइ जन। १७–(ए०) जनि, (बी०) जनौ। १८–(बी०) सार। १९–(ए०, बी०) के हार महँ (महि)। २०–(ए०) मेल उर; (बी०) उर मेलेउ ।

टिप्पणी—(१) पाछे–पीछे। गजमैंमत–मदमत्त हाथी।
(५) ओही–वही।
(७) गिंय–गला, कण्ठ। मेलि–डाला। उर–छाती।

८९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[1] कहि[2] कुँवर सँभारहु। कहौं बात[3] एक जो पतिपारहु[4] ॥१
तूँ र[5] पूत राजा का[6] आही। हौं[7] कुलवन्ति[8] आहि[9] तिह[10] चाही ॥२
हौं तुम्ह[11] कहौं सोंन[12] सुनि लेहू। आवइ[13] हमरी[14] सहेलिंह[15] देहू ॥३
बर न होइ[16] रस सेंउँ[17] रस[18] कीजइ[19]। तौ र[20] चहूँ[21] जग पिरत[22] कीजइ[23] ॥४
रस कै[24] बात बिरसौं[25] न[26] होई। रस जो आह रस सेउ भल सोई[27] ॥५
मैं रस बात कही रस तोसों,[28] जो रस कीजइ बात।६
सो रस रहै दुहूँ जग[29] ताकर,[30] जो रस सौ[31] रँगरात[32] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) मिरगावती; (बी०) म्रिगावती। २–(ए०) कह। ३–(बी०) बोल। ४–(बी०) प्रतिपारहु। ५–(ए०) तोहरे; (बी०) तुम्हरे। ६–(ए०) कर; (बी०) के।

७–(बी०) हौं रे। ८–(ए०) कलवन्ती, (बी०) कुलवन्ती। ९–(बी०) अही। १०–(ए०, बी०) तोहि। ११–(ए०) तोहि; (बी०) तुम। १२–(बी०) स्रवन। १३–(ए०, बी०) आवै। १४–(बी०) हमरि। १५–(बी०) सहेलिहु। १६–(ए०) होए। १७–(ए०) सौ, (बी०) मेड। १८-१९–(ए०, बी०) नहि होई। २०–(ए०) ×। २१–(बी०) दुहूँ। २२-२३–(बी०) रहै रस लीजै; (ए०) रस रह रस लीजै। २४–(ए०) क। २५–(ए०) बरसौ, (बी०) बर मेड। २६–नहि। २७–(ए०, बी०) रस सो रस होई। २८–(बी०) तोही। २९-३०–(बी०) जगत कर। ३०–(ए०) ×। ३१–(बी०) सै। ३२–(बी०) रस रात।

टिप्पणी—(१) पति पारहु–विश्वास करो।
(२) हौं–मै। कुलवन्ति–कुलवती।
(३) सौंन–श्रवण। हमरीं–मेरी।
(६) तोसों–तुमसे।
(७) ताकर–उसका।

९०

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

कुँवर कहा[1] कस तोर न मानों। तोह जीउ हौं आपुन[2] जानौं[3] ॥१
तूँ[4] जिय मोर[5] कया हौं आही। जो जिउ[6] कहै कया कै[7] जाही[8] ॥२
जिउ[9] प्रभुता[10] कया है नेगी[11]। ठाकुर अढ़उँ[12] करै वह[13] बेगी[14] ॥३
नेगिन्ह[15] आयुस[16] मनतैं[17] पारा[18]। कहि[19] प्रभुता सो[20] धाइ[21] सँवारा[22] ॥४
बैद क कहा[23] न मानै रोगी। गोरखपन्थ रेंग वहि[24] जोगी ॥५
तूँ[25] र[26] बैद हौं रोगिया,[27] तूँ[28] गोरख हौं चेल[29] ॥६
सो रोगिया दुख[30] पावइ,[31] बैद क कहा[32] जो[33] बेल[34] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुँअरि कही; (बी०) कुँवर कहा कह। २–(ए०, बी०) तोर जीअ आपन कै। ३–(ए०) मानो। ४–(ए०) तोह। ५–(ए०) मोरी। ६–(ए०) जीअ; (बी०) जिय। ७–(ए०) कर; (बी०) करै। ८–(बी०) जाही। ९–(ए०) जिअ; (बी०) जी। १०–(ए०) परमता; (बी०) परभुता। ११–(ए०) बेगी। १२–(ए०) अढौ; (बी०) अढवै। १३–(ए०) उवह। १४–(ए०) नेगी। १५–(ए०) नेगिन। १६–(ए०) आएस। १७–(ए०) मेटै। १८–(ए०) बारा, (बी०) पारे। १९–(ए०, बी०) कह। २०–(ए०) तौ। २१–(ए०) धाए। २२–(बी०) सँवारे। २३–(ए०) कही। २४–(ए०) रेंगसि; (बी०) रेंग वह। २५–(ए०) तोह। २६–(ए०, बी०) रे। २७–(बी०) रोगिअ असधि। २८–(ए०) तोह। २९–(ए० बी०) चेला। ३०–(बी०) दुखु। ३१–(ए०, बी०) पावै। ३२–(ए०) कहीअ। ३३–(ए०) ×। ३४–(ए०)–बेला, (बी०) ठेला।

टिप्पणी—(१) कस–कैसे ।

(३) जिउ–जीव । प्रभुता–स्वामी । कया–काया, शरीर । नेगी–सेवक । ठाकुर–स्वामी । अढउ–काम करने का आदेश । बेगी–शीघ्रता से ।

(४) पारा–(पार) सकना, करने मे समर्थ होना ।

९१

(दिल्ली; बीकानेर)

जो तैं बात सुनैं यह मोरी[१] । सेवा करउँ दासि होइ तोरी[२] ॥१
[जो] न सुनउँ सुनतहि[३] हम कहा । जीभ दसन सेंउ खाँडेउ[४] अहा ॥२
तुम्ह र[५] बात जो सुनी[६] हमारी । तूँ र[७] पुरुख हौं नारि तुम्हारी ॥३
ब्रह्मा रुद्र औ सिउ कै[८] बाचा । मोर जिउ[९] आहै तिह पै[१०] राचा ॥४
तौलहि[११] तुम्ह[१२] रे सभारहु[१३] नाहाँ । अइहहिं[१४] सखी अलप दिन माँहाँ ॥५
अउर[१५] भाउ[१६] सब मानहु मोसों,[१७] एक भाउ न[१८] होइ ।६
आवइ[१९] देहु सहेलिंहि,[२०] जो जिउ मानो करहु[२१] सोइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–सुनसि हमारी । २–करौं भै दासि तुम्हारी । ३–जौ न सुवन सुन तेहु । ४–से खंडित । ५–तुम्हरे । ६–सुनिसि । ७–रे । ८–की । ९–जीय । १०–तुम । ११–तौ लगि । १२–तुह । १३–सँहारहु । १४–आइहि । १५–अवर । १६–भाव । १७–मोहि सै । १८–एक सुरति नहि । १९–आवै । २०–सेहेल्हिु । २१–जो मन कीरहहु ।

टिप्पणी—(४) वाचा–वचन ।

(५) तौलहि–तबतक । नाहाँ–नाथ; स्वामी; पति । अइहहि–आयेगे । अलप–अल्प; थोड़ा । माँहा–मे ।

(६) भाउ–भाव । मोसों–मुझसे ।

(७) मानों–स्वीकार करे ।

९२

(दिल्ली; एकडला)

बाचा आवधि[१] दुहूँ सेउँ[२] भई । पाती लिखी पिता कहँ गई[३] ॥१
राजा[४] देखि[५] कुँवर कै[६] पाती । बाँचे लाग उधार जो[७] छाती ॥२
पाती बाँच[८] सभा सेंउँ[९] कहा । पाती माँझ लिखा अस अहा ॥३
पिता मोर तुम[१०] जुग जुग राजा । धरम दुदिस्टिल तुम्ह[११] कहँ छाजा ॥४
बरिस सँहस दस तुम[१२] कहँ आऊ । सेवा बहुत लिखी बहु भाऊ ॥५
धरम लाग मैं तुमरैं पूतँ,[१३] पायउँ चाहिउँ[१४] जाहि ।६
मन मनसा चित पूजी मोरी,[१५] पुन तुम्हारे[१६] आहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–औधि। २–सौ। ३–दई। ४–राजै। ५–देखिसि। ६–की। ७–×। ८–बाचैं लाग। ९–सौ। १०–तोह। ११–तोह। १२–तोह। १३–धरम तोहारे राजा। १४–पाऐव चाहेव। १५–×। १६–तोहरे।

टिप्पणी—(१) **बाचा**–वचन; प्रतिज्ञा। **आवधि**–आबद्ध। **दुहूँ**–दोनो। **सेउँ**–से। **भई**–हुई। **पाती**–पत्र।

(२) **बाँचै**–पढ़ने। **लाग**–लगा। **उघार**–खोलकर।

(३) **माँझ**–मध्य; मे। **अस**–ऐसा।

(४) **मोर**–मेरा। **दुदिस्टिल**–युधिष्ठिर।

(५) **आऊ**–आयु।

(७) **पुन**–पुण्य।

९३

(दिल्ली; एकडला)

पाती सबकहँ[१] बाँचि सुनाई। रहसा राउ[२] न अंग अमाई॥१
कुँवरहिं कहा[३] होहु असवारू[४]। राउत पाइक[५] सब परिवारू[६]॥२
पाँयड छूट[७] तुरंगम आये। देखत हरे सुबर्न[८] सुहाये॥३
हँसला[९] कार कयाह[१०] पलाने। साँवरकरन औ महोजू[११] आने॥४
आये गर्रया औ सरवाहा[१२]। पँचकल्यान सराहौं काहा[१३]॥५
उन्दिर[१४] बुलाह[१५] ककाह[१६] सँमुद, भल भल आए तुखार।६
बरन कही तुरिंह कै,[१७] अब इह[१८] सुनहु बिचार॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१–सब क। २–राव। ३–कुवरन कहै। ४–असवारा। ५–पायेक। ६–परिवारा। ७–पाऐउ छोरि। ८–तेवरान। ९–हंसा। १०–केआहु; (दि० मार्जिन) हंसकया कुमेत। ११–सावकरन ते अच्छे १२–गररिया और सराही; (दि० मार्जिन) और सराहा। १३–कहे। १४–इन्द्र। १५–बलाह। १६–गोगह। १७–कहे तुरियनके जानत। १८–(ए०, दि० मार्जिन) गुन।

टिप्पणी—(१) **रहसा**–हर्षित हुआ। **अमाई**–समायी।

(२) **होहु**–हो। **असवारू**–सवार। **राउत**–(स० राजपुत्र>राअउत्त>राउत्त>राउत) यहाँ तात्पर्य सामन्तोसे है। **पाइक**–(स० पदातिक) पैदल सैनिक।

(३) **पाँयड**–घोड़े के पिछले पैरमे बाँधनेकी रस्सी, पिछाडी। **तुरंगम**–घोडे। **हरे**–हरे रगका घोड़ा; सब्जा। **सुबर्न**–सुवर्ण, सुनहले रंगका घोड़ा; इसे जर्दा, समन्द और शुतुरी भी कहते है।

(४) **हँसला**–ऐसा घोड़ा जिसका शरीर मेंहदीके रंगका और चारों पैर कुछ कालापन लिये हो; कुम्मैत हिनाई। **कार**–काले रगका घोड़ा। **कयाह**–पके

ताड़के फलके रगका घोडा (पक्वतालनिभो वाजी कयाह परिकीर्तितः—जयदत्त कृत अश्ववैद्यक)। **पलाने**–जीन कसे हुए। **साँवरकरन**–श्यामकर्ण। **महोजू**–अश्वोकी सूचीमे यह नाम हमे नही मिला। हो सकता है यह वही हो जिसे जायसीने महुअ लिखा है (पदमावत ४६।३)। वासुदेव शरण अग्रवालने महुअ को महुए के रगका हलका पीला घोडा बताया है।

(५) **गरँया**–(गर्र, गर्रा) श्वेत और लाल रगकी खिचडी बालोवाला घोड़ा। **सरवाहा**–अश्वोकी सूचीमे यह नाम हमे नही मिला। एकडला प्रतिमे सराही पाठ है जो सेराह के अत्यन्त निकट है। हेमचन्द्रने पीयूष या दूधके रंगके घोड़ेको सेराह कहा है (अभिधान चिन्तामणि ४।३०४)। सोमेश्वर ने काँचनाभ रगके घोड़ेको सेराह कहा है (केशैस्तनुरुहैर्बालैः काचनाभैस्तुरंगमः। सेराह इति विख्यातः वैश्यजाति समुद्भवः—मानसोल्लास ४।६८७)। यह नाम फारसकी खाडीके सेराफ बन्दरके नामपर पड़ा है। **पंचकल्यान**–वह घोडा जिसके घुटनोतक चारो पैरोपर और मुखपर सफेदी हो, शरीरका रग चाहे जो भी हो (येन केनापि वर्णेन मुखे पादेषु पाण्डरः। पचकल्याण नामाय भाषितः सोमभूभुजा—मानसोल्लास ४।६९५)। **सराहौं**–सराहना करूँ। **काहा**–क्या।

(६) **उन्दिर**–(उन्दीर) जगली चूहे और लोमडीके रगसे मिलता हुआ घोडा (उन्दुरेण समच्छायः सतिरुन्दीर उच्यते—मानसोल्लास ४।६९२)। इसे सजाब भी कहते है। **बुलाह**–(बोल्लाह) वह घोडा जिसके गर्दन और पूँछ के बाल पीले रगके होते है। इस नामका प्रयोग फारसकी खाडीमे तिग्रा नदीके मुहानेपर स्थित उबुल्लाह नामक बन्दगाहसे आनेवाले घोड़ोके लिए किया जाता था। **ककाह**–(कोकाह) सफेद रंगका घोड़ा (श्वेतः कोकाह इत्युक्तः—जयदित्य कृत अश्ववैद्यक)। सम्भवतः इसे शीराजी भी कहते थे। **सँमुद**–(समन्द) बादामी रंगका घोड़ा; वह घोड़ा जिसका रंग सोनेके रगके समान हो (फरहग इस्तहालात पृ० २३), इसे शुतुरी भी कहते है। **तुखार**–(सं० तुषार) मध्येशियामे शकोके एक कबीले और उनके मूल निवास स्थानकी संज्ञा थी। कुषाण और गुप्त काल (२री-६ठी ई०) मे आनेवाले घोडे तुषार कहलाते थे।

(७) **बरन**–वर्ण; जात। **तुरिंह**–घोडोके।

९४

(दिल्ली; एकडला)

चंचल चपल मिरघ[1] सँह सीखे। बहु भोजन देखत अति तीखे ॥१
लेत साँस औ ससथ[2] ते कानाँ। दहा ताड़ जग जित हो रानाँ[3] ॥२
पौन पाइ[4] सों आहि[5] पिरीती। ताजन देखि उड़हि वह[6] रीती ॥३

भाँजत[७] पूँछ चँवर जनु[८] आही। चँवरधार जनु धारहिं[९] ताही ॥४
कान ककनिया अहहिं[१०] सुहानीं। जानु[११] कतरनी कतरि बिनानी[१२] ॥५
चाकर खुर अरु मोंट, तज ताजी कुँडवानी[१३]।
आनि ठाढ़ि कै[१४] घालि, पीठि पाखर सुनवानी[१५] ॥६

पाठान्तर—प्रति—

१–सरो। २–उ ससही। ३–ठाढा हुजग जनेव कर जाना। ४–पाव। ५–आह। ६–उन्ह। ७–भॉजहि। ८–चौर जनि। ९–चौरकार जनि ढारहि। १०–कान क गोपी कियाह सोहाये। ११–जानि। १२–जो लाये। १३–पूरी पक्ति का अभाव। १४–ठाढ किय। १५–बाखर सोनवानी।

टिप्पणी—(१) **मिरघ**–मृग। **सँह**–समान

(३) **पाइ**–पॉव, पैर। **आहि**–है। **पिरीती**–प्रीति। **ताजन**–(फा० ताजियानः) चाबुक, कोड़ा।

(४) **भाँजत**–हिलाते है। **चँवर**–चामर। **जनु**–मानो। **चँवरधार**–चमर डुलाने-वाले सेवक।

(५) **कतरनी**–कैंची। **बिनानी**–विज्ञानी, कारीगर।

(६) **चाकर**–चौड़ा। **मोंट**–मोटा। **ताजी**–अरबदेशका प्राचीन कालमे प्रचलित नाम ताजिक था। इस कारण अरबी घोड़ोको ताजी कहते थे। शाहनामे (दसवी शती) मे ताजी अस्प (अश्व) का अनेक स्थलोपर उल्लेख है। ग्यारहवी शतीमे रचित भोजकृत युक्तिकल्पतरुमे भी ताजिक घोड़ोका उल्लेख है।

(७) **आनि**–लाकर। **ठाढ़ि**–खड़ा। **कै**–कर। **घालि**–डालकर। **पीठि**–पीठ। **पाखर**–(स० पक्खर) जीन; अश्व-कवच। **सुनवानी**–(स० स्वर्णवर्णी) सोने-के वर्णवाला, सुनहला।

९५

(दिल्ली; एकडला[१])

राजा बीरहि पाती[१] देई। आपुन आपुन[२] सब कोउ[३] लेई ॥१
भये[४] असवार राउ[५] औ राने। छाता मेघडम्बर बहु ताने ॥२
बाजन अहे जहाँ लहि तूरा। बाजत चले[६] सबद सब पूरा ॥३
दरब कोरि[७] एक साथ लिवावा[८]। करै पतोहु[९] निछावरि आवा ॥४
राजा आवत कुँवर जो सुनाँ। भा असवार आइ अगुमना ॥५
उतरा कुँवर जुहारी राजा, राइ उतरि गिय लाइ[१०]।६
भये[११] अँसवार दोउ[१२] जन, हसत मँदिर महँ आइ[१३] ॥७

---

१. सम्मेलन संस्करणमें इस कडवकका उल्लेख कडवक ३९६ (स० स० ३५४) के पाठान्तरके-रूपमें पादटिप्पणीमें हुआ है।

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–बेरहन वारे। २–आपन आपन। ३–कोइ। ४–भै। ५–राऐ। ६–चला। ७–कोटि। ८–लेवावा। ९–पुतोह। १०–उतरा कुँवर तोरै सै, राजा कुँवरहि गिंय लाए। ११–भै। १२–दुऔ। १३–आए।

टिप्पणी—(३) बाजन–बाजा। अहे–थे। लहि–तक। तूरा–तूर, मुँहसे फूँककर बजाये जानेवाले वाद्य।

(४) दरब–(द्रव्य) सिक्का, धन। कोरि–कोटि, करोड। पतोहु–पुत्र-वधू। निछावर–न्योछावर।

(५) असवार–सवार। अगुमना–स्वागत के निमित्त आगे पहुँचा।

९६

(दिल्ली; एकडला)

राजैं अधिक निछावर किही[1]। बहू बधाइ भेंट कै लिही[2] ॥१
दिन दोइ[3] चारि रहेउ[4] इहँ आई। नगर कै अग्या कै घर[5] जाई ॥२
राजकुँवर मिरगावति रानी। सारस जोरी दयी जो आनी[6] ॥३
खेलतहिं हँसत[7] रहहिं एक ठाईं। दिन दिन अवधि आउ नियराईं ॥४
मिरगावति मन महँ अस कहा[9]। इह कँह चाह मोर चाह जो अहा[10] ॥५
जौं रे मोइ यहि[11] चाहा, आई हमरहिं गाँउ[12] ।६
कहसि चीर कैसहु[13] कै पाओं, उड़ि रे इहाँ हुत जाउँ[14] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–नेवछावरि दीही। २–बहू बधाई बहुत कै कीही। ३–दुइ। ४–भए; (दि० मार्जिन) भयेउ। ५–अगआ के के। ६–दिन दिन औधी आए निरानी। ७–खेलहिं हँसहि। ८–सारस जोरी देअ मिलाई। ९–मिरगावती चित अपने कहा। १०–ऐहि कह चाडि मोरि जौ अहा। ११–जो रे मोरी होइ एहि। १२–आइह हमरे गाँव। १३–कैसेहु। १४–इहँ सौ जावँ।

टिप्पणी—(१) किही–किया। लिही–लिया।

(२) कै–को। अग्या–आज्ञा। कै–करके।

(४) आउ–आया। नियराईं–निकट।

(५) अस–ऐसा। मोर–मेरा।

(६) मोइ–मुझे। आई–आवेगा। हमरहिं–मेरे। गाँउ–गाँव।

(७) कैसहु–किस प्रकार।

९७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक राइ[1] मोह मन आवा। मानुस कुँवर के ठाँउ[2] पठावा ॥१
कुँवर राइ तों राइ हँकारेउ[3]। कहँहि मोह तुम्ह[4] नाँहि हमारेउ[5] ॥२

बहु दिन भये न भेटइ[9] आवा । तुम्ह[7] जिउ मिरगावति कहँ[8] लावा ॥३
इहइ[9] बोल कुँवर जो सुनाँ । तुरिय पलान[10] माँग बहु गुना ॥४
कहसि जोहारि पिता कै जाऊँ । धाइ[11] रहहु मिरगावति ठाँऊँ ॥५
स्रवन[12] लागि क[13] धाइहि हरवैं,[14] रहहु सजग[15] भलि भाँति[16] ।६
चीर लुकाइ[17] धरहु तिह[18] ठाईं, जिह[19] न पावइ रात[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–राऐ । २–पास । ३–राऐ तोह बेगि हकॉरेव । ४–तोहि । ५–हमारेव । ६–भेटै । ७–तो हौं जीउ । ८–× । ९–एहइ । १०–तुरीअ पलानि । ११–धाए । १२–सौन । १३–कह । १४–× । १५–सुजग । १६–भॉति । १७–लुकाए । १८–तेहि । १९–जहॉ । २०–पावै राति ।

टिप्पणी—(१) राइ–राज ।
(२) हँकारे–पुकारा है, बुलाया है । मोह–ममता । हमारेउ–हमारा, मेरा ।
(३) भेटइ–मिलने । आवा–आया ।
(४) इहइ–यही । बोल–बात । तुरिय–घोडा । पलान–जीन कसा हुआ ।
(५) जोहारि–अभ्यर्थना ।
(६) हरवै–चेतावनी देता है ।
(७) लुकाइ–छिपाकर ।

९८

(दिल्ली; बीकानेर)

ईत बोलि कह तुरिय चलावा । भा अपमंगल सगुन न पावा[1] ॥१
लोगहि[2] कहा कुँवरहूँ न जाई[3] । बैठि कहौं एक दिनहिं गँवाई[4] ॥२
कहिसि पिता कर मानुस आवा । कइसैं[5] रहौं जाइ जो पावा ॥३
जो बिधि लिखा होइ पै सोइ । असगुन सगुन काह कर होई[6] ॥४
चला बेगि तिंह जाइ[7] तुलाई । राजैं[8] देखि कुँवर गा आई ॥५
रहसि उठा बहु राजा देखत,[9] बैठि दुवउ इक[10] ठाइँ ।६
राजकुँवर धर इहँवा,[11] जिउ मिरगावत ठाइँ[12] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–म्रिगा नॉधि पुनि पंथ फिराई । दहिनै तै बाई दिसि जाई । २–लोगहु । ३–कुँअर नहिं जइयै । ४–बहुरियै दिना दुइ फिरि अइयै । ५–कैसे । ६–का करै कोई । ७–तहँ आइ । ८–राजा । ९–× । १०–दुवौ एक । ११–धरा इहँ माटी । १२–जीउ म्रिगावती ठाऊँ ।

टिप्पणी—(१) ईत–इतना । बोलिकै–कहकर । अपमंगल–अशुभ ।
(२) कहौं–कही पर ।
(३) कइसैं–कैसे । रहौं–रहूँ ।
(७) धर–धड, शरीर । इहँवा–यहाँ ।

९९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[१] घर बैठी आही[२] । धाइ सेंउ[३] रस बात जो कही ॥१
धाइहिं[४] रस[५] बातहिं[६] बोरायसि[७] । काज करै को[८] अनत पठायसि[९] ॥२
जौलहि[१०] धाइ काज कै आई । सारी ढूँढ़ि लइ जिह र लुकाई[११] ॥३
चीर पहिरि कै वह रे उड़ानी[१२] । धाइहि अचकर[१३] कित गइ[१४] रानी ॥४
कहिसि[१५] काह मैं मुख[१६] देखराउब । खिन[१७] एक माँझ[१८] कुँवर अब[१९] आउब॥५
रोवइ[२०] धाइ चहूँ दिसि ढूँढै, कतहु वह न पाउ[२१] ।६
काह कहौं किंह[२२] आगे यह दुख,[२३] कुछउ[२४] न बकतै आउ[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) मिरगावती । २–(ए०, बी०) अही । ३–(ए०) सौ, (बी०) सैं । ४–(ए०) धाई कहँ । ५–(ए०) × । ६–(ए०) बातन, (बी०) बातन्ह । ७–(ए०, बी०) बोराइसि । ८–(ए०, बी०) कहँ । ९–(बी०) पइसि । १०–(ए०) जौलै । ११–(ए०) सारी ढूँढ़लै जहाँ छपाई; (बी०) सारी ढूँढ़ लिही जहाँ छपाई । १२–(बी०) चीर लेइकै पहिरि उड़ानी । १३–(ए०) अजगुत; (बी०) अचभौ । १४–(ए०) कतगै । १५–(ए०) कहै । १६–(बी०) मह । १७–(ए०) खन । १८–(ए०) माँह । १९–(बी) जो । २०–(ए०) रोवै । २१–(ए०) कतहू न वहि कहँ पाव; (बी०) कतहू न वहि कहँ पावै । २२–(बी०) केहि । २३–(बी०, ए०) काह कहौ कहिये तो । २४–(ए०) कुछौ, (बी०) × । २५–(ए०) आव; (बी०) बकत न आवै ।

टिप्पणी—(१) आही–थी ।

(२) बोरायसि–भुलावा दिया । काज–काम । करै को–करनेके लिए । अनत–अन्यत्र । पठायसि–भेजा ।

(३) जौलहि–जब तक । काज–कार्य । कै–करके ।

(४) अचकर–चकित । कित–किधर, कहाँ ।

(५) काह–क्या । देखराउ–दिखाऊँगी । खिन–क्षण । माँझ–मे । आउब–आवेगा ।

(६) कतहु–कहीं भी ।

(७) बकतै–बचन ।

१००

(दिल्ली; बीकानेर[१])

मँदिर ढूँढि जो बाहर आई । धाइ क[१] दिस्टि भवन[२] पर जाई ॥१
देखिसि बैठि[३] मँदिर पर आहा[४] । मिरगावति[५] यह कीनहु काहा[६] ॥२
हम सेंउ कछू[७] मँदाई जानहु । तोर पलक[८] अपनैं जियँ मानहु[९] ॥३

१. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

हम सेंउ कछु न आह मँदाई[10] । किह[11] कारन तुम्ह चलहु[12] कुहाई[13] ॥४
का उतर हम कुँवरहि देबा[14] । सुनतहि मरिह काह तू लेबा[15] ॥५
आवहु उतर सुहागिन[16] तै पत[17], होइ हमरैं[18] मन साँत ।६
तोह[19] न मोह मन आवइ,[20] जियत[21] कुँवर जिय[22] किंह[23] भाँत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–×। २–मॅदिर। ३–बैठी। ४–अहा। ५–म्रिगावती। ६–कीने कहा। ७–से किछु। ८–तो रे विलग। ९–×। १०–हम सै किछु मॅदाइन अहई। ११–किहि। १२–तुम चली। १३–×। १४–×। १५–सुनते हि मरब कह तो लावा। १६–सोहागिनि। १७–पियवती। १८–हो मो। १९–तुम्ह। २०–आवै। २१–जिय बिनु। २२–जिये। २३–केहि।

टिप्पणी—(१) दिस्टि–दृष्टि।
(२) कीनहु–किया। काहा–क्या।
(४) कुहाई–रुठकर।
(५) का–क्या। देबा–दूँगी। लेबा–लोगी, पावोगी।

१०१

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

धाई न दोखँ[1] आहै[2] तोरा। कहहु जोहार[3] कुँवर सेंउ[4] मोरा ॥१
औ अस कहहु[5] कुँवर सों[6] बाता। मोर जीउ[7] आहे[8] तिह[9] राता ॥२
सेंती[10] जो पावइ[11] सो न कहैं[12] मोला। ताकर मोल[13] न जानै भोला ॥३
इह[14] कारन हो जाउँ उड़ाई। कहहु[15] कुँवर सों[16] आवइ धाई[17] ॥४
कंचननगर हमारो[18] ठाऊँ। रूपमुरारि पिता कर[19] नाँऊँ ॥५
यह र[20] बात कह धाई[21] आपुन, फुन[22] वह [23]चली उड़ाइ[24] ।६
धाई रोइ पुकारा,[25] वह[26] रे इहाँहुत[27] जाइ[28] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) दोखन। २–(ए०) अहै, (बी०) अहै किछु। ३–(ए०, बी०) कहेहु। ४–(ए०) जोहारि; (बी०) जहार। ५–(ए०) सै, (बी०) से। ६–(ए०, बी०) कहेहु। ७–(ए०) सै; (बी०) से। ८–(बी०) जीव। ९–(बी०) है। १०–(ए०, बी०) तोहि। ११–(बी०) बस्त। १२–(ए०) पावै; (बी०) पाईऐ। १३–(ए०) सौंघे। १४–(बी०) मर्म। १५–(ए०, बी०) एहि। १६–(बी०) कहेउ। १७–(बी०) सेउ। १८–(ए०) आवै धाई; (बी०) जब आवै ठाई। १९–(ए०) हमारेव; (बी०) हमारा। २०–(बी०) का। २१–(ए०) एह रे, (बी०) येहि रे। २२–(ए०) कहि धाइहि; (बी०) कहि धाइ सेउँ। २३–(ए०)×। २४–(ए०, बी०)×। २५–उडाए। २६–(ए०) रोव पुकारे; (बी०) पुकारि कै। २७–(बी०) यह। २८–(बी०) हुतै। २९–(ए०) कर मलि मलि पछिताइ।

टिप्पणी—(३) सेंतीं–बिना मूल्य; मुफ्त। मोला–मूल्य। ताकर–उसका।
(७) इहाँहुत–यहाँसे।

१०२

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

हँसत कुँवर कँह भयउ[1] अगाहू[2]। खरभरि परेउ[3] हिये उर दाहू[4] ॥१
कहसि पिता सेंउ[5] हौं घर जाऊँ। धाइ अकेलि आह[6] वहि[7] ठाऊँ ॥२
राजैं[8] बान[9] दीन्हि[10] पहिराईं[11]। पितहिं[12] जुहारि[13] मँदिर कहँ आई[14] ॥३
धाई देखि[15] कुँवर जो आवा। हाक[16] डफार रोउ[17] गुहरावा[18] ॥४
कुँवर कहा कछु[19] आह[20] मँदाई। रावन सिय[21] हरी (जनु)[22] आई ॥५
कहसि[23] काह किहि[24] कारन रोवहु[25], सों कहु[26] हम बात ।६
राम बियोग[27] भयउ[28] जिहि[29] कारन, सो हमकों सैंसात[30] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) भव। २–(बी०) अगाहा। ३–(बी०) परी, (ए०) परेव। ४–(ए०) डाहू; (बी०) डाहा। ५–(ए०) सौ। ६–(बी०) अहै। ७–(ए०) उहि। ८–(बी०) राजा। ९–(ए०, बी०) पान। १०–(ए०) दीन्ह; (बी०) दीन्हे। ११–(ए०) बरहे; (बी०) बहुराई। १२–(ए०, बी) पिता। १३–(ए०, बी०) जोहारि। १४–(ए०) आए, (बी०) जाई। १५–(ए०) देख; (बी०) देखा। १६–(ए०, बी०) घालि। १७–(ए०) रोव, (बी०) रोइ। १८–(ए०) गोहरावा। १९–(ए०) कुछु, (बी०) किछु। २०–(बी०) आहि। २१–(ए०) सीअ; (बी०) सीय। २२–(ए०) जनि; (बी०) जनौ; (दि०) जो; (दि० मार्जिन) जनु। २३–(ए०, बी०) कहिसि। २४–(ए०) केहि। २५–(ए०)×। २६–(ए०, बी०) सो न कहहु। २७–(बी०) बियोग, (ए०) बिऊग। २८–(ए०) भये; (बी०) भयेउ। २९–(ए०) जेहि। ३०–(ए०) सो तोह क सीअ सात; (बी०) सो तुम कहु सै सात।

टिप्पणी—(१) अगाहू–(अगाह, फा० आगाह) चेतावनी; यहाँ तात्पर्य अचानक मनमे उठनेवाली आशंकासे है। खरभरि–हल-चल। दाहू–(दाह) जलन।
(३) बान–वस्त्र।
(४) हाक–जोर-जोरसे पुकारका। डफार–(क्रि० डफारना) दहाड़ मारना; चीख मारना। गुहरावा–पुकार लगायी।

१०३

(दिल्ली; एकडला)

सुवन[1] बोल इँह परेउ[2] जो धाई। कुँवर पछार तुरियँ सेंउ[3] खाई ॥१
पाग मार भुइँ कापर फारा। उर मारै कहँ लिहिसि[4] कटारा ॥२

लोगहि[५] करहुत लीन्हि अजोरी । मरै देहु गइ[६] सारस जोरी ॥३
कहै देहु बिस खाँवँ अघाई । मरउँ बेगि मोहि जिय[७] न जाई ॥४
जिय बिनु जिय[८] न जाइ[९] अकेलैं । जीउ जम लेउ कया[१०] पर हेलैं ॥५
मरै देहु मोहि लोगहि[११] बिस भखि, जींउ[१२] न केउनहि[१३] भाँत ।६
जिउ[१४] बिन कया काह ले कीजै, तिह[१५] बिनु होइ न साँत ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–सौन । २–उन परेव । ३–सौ । ४–लीन । ५–लोगन्ह । ६–कै । ७–जिऐ । ८–जैए । ९–जहे । १०–जीउत जि गऐव कये (?) । ११–× । १२–जिअन । १३–कौनौ । १४–जिअ । १५–तेहि ।

टिप्पणी—(१) सुवन–श्रवण, कान । पछार–पछाड । तुरियाँ–घोडा ।

(२) पाग–पगडी, यह तात्पर्य सिरसे है । भुइँ–पृथ्वी । कापर–कपड़ा । फारा–फाडा । उर–छाती । कटारा–कटार ।

(३) करहु–हाथसे । देहु–दो । सारस जोरी–सारसकी जोड़ेके सम्बन्धमे प्रवाद है कि एकके अभावमे दूसरा जीवित नही रहता ।

(४) बिस–विष । अघाई–तृप्त होकर । मोहि–मुझे ।

(५) जम–यमराज । हेलै–ठेलना; डालना ।

(६) भखि–खाकर । केउनहिं–किसी भी ।

(७) काह–क्या । साँत–शान्त ।

१०४

(दिल्ली; एकडला)

सान्ति गई मन परेउ[१] खभारू । दंद उदेग उचाट अधारू[२] ॥१
दई[३] काह मैं अउगुन कीन्हा । जिन्ह र[४] सँताप बिरह फुनि[५] दीन्हा ॥२
पेम घाइ दुख कै सिर हाई[६] । फुनि[७] बिस बान हियें महँ खाई ॥३
अब न मोर अ(ो)खद[८] कै आसा । अति र[९] कठिन घट जो रहे[१०] साँसा ॥४
जे जन जिये बियोग कै मारी[११] । ते तन काल पाँच सर पारी[१२] ॥५
सँवर सँवर[१३] मन झुरवइ,[१४] रोइ रोइ मिलै धाहि ।६
सो उपकार करौं अपनैं जिय, जिह पायउँ[१५] वहि चाहि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–सती गे हम परेव । २–अहारू । ३–दैअ । ४–जेहि रे । ५–दुख । ६–आई । ७–सुनी । ८–वोखदि । ९–अब रे । १०–घट रहै न । ११–मारे । १२–कला पंच बस मरे, (दि० मार्जिन) मारी । १३–सौरि सौरि । १४–झुरव । १५–जे पावौ ।

टिप्पणी—(१) सान्ति–शान्ति । खभारू–खलबली । दन्द–द्वन्द । उदेग–उद्वेग । उचाट–खिन्नता । अधारू–आधार ।

(२) काह–क्या। अउगुन–अवगुण; बुरा कार्य। सँताप–सन्ताप।

(३) घाइ–घाव। हाई–आई। बिस बान–विष बाण। हियें–हृदय। महँ–मे।

१०५

(दिल्ली; एकडला[1])

जो कोइ चाह कहै धस लेऊँ। जो जिउ माँग[1] काढ़ि कै देऊँ ॥१
राम सेतु बाँधेउ[2] सिय[3] लागी। हौं वहि[4] लागि परौं मँझ आगी ॥२
हनिवँत सिय[5] लगि जारसि[6] लंका। हौं र[7] बिधाँसौं जाइ[8] पलंका ॥३
सात सरग चढ़ धाँवौं जाऊँ। जहाँ सुनौं हौं[9] मिरगावति नाऊँ ॥४
निसिरह[10] सिय लगि मारि बिधाँसा। हौं वहि[11] लगि जारौं कबिलासा ॥५
जस भरथरी[12] भयउ[13] पँथ जोगी, रस पिंगला बियोग।६
रोइ[14] लंक दुहूँ कर टेकै, कहै हौं[15] पँथ जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–चाह। २–बधौ। ३–सीअ। ४–उहि। ५–सीअ। ६–जाए। ७–रे। ८–जाए। ९–×। १०–निसिअर। ११–उहि। १२–भरथहरी। १३–भये। १४–रोवै। १५–होउँ।

टिप्पणी—(१) धस–घुसकर। काढि–निकालकर।

(२) सेतु–पुल। सिय–सीता। लागी–निमित्त। मँझ–मध्य। आगी–अग्नि।

(३) हँनिवँत–हनुमान। जारसि–जलाया। बिधाँसो–विध्वस करूँ। पलंका–(सं० पाताल लंका>पायाल लंका>पाया लंका>पालका>पलंका) इस नामसे ऐसा ध्वनित होता है कि लका की तरह यह कोई अति दूरवर्ती द्वीप था। हो सकता है द्वीपान्तर (हिन्द-एशियाके द्वीप समूहो)के किसी द्वीपको पलका कहते रहे हो। मलय स्थिति पेनागका भी नाम पलंका हो सकता है। मौलाना दाऊदने चन्दायनमे (३५१।५) और जायसीने पद्मावतमे (२०६।३; ३५५।३) मे 'लका छाड़ि पलंका' जानेकी बात कही है। यह प्रयोग मुहावरे जैसा है। इससे जान पडता है कि लंका जाना तो सुगम था ही नही; पलका कोई ऐसी जगह थी जहाँ पहुँचना सामान्यतः असम्भव समझा जाता था। जायसीने पलकामे शिवका निवास बताया है (पदमावत २०६।३-४)। सम्भव है शिवके निवास स्थान कैलासको पलका कहते रहे हो। इस सम्बन्धमे द्रष्टव्य है कि एलोराके कैलास मंदिरके दोनो ओर जो गुफा मण्डप है, उनमे से एकको लंका और दूसरेको पलंका कहते है।

(४) धावों–दौड़ूँ।

---

[1] इस प्रतिमें पक्ति ४-५ क्रमशः ५ और ४ है।

(५) **निसिरह**—निशाचर, राक्षस । **विधाँसा**—विध्वंस किया । **कविलासा**—(कैलास > कइलास > कविलास > (वकारका प्रश्लेष > कविलास) स्वर्ग ।

(६) **भरथरी**—भर्तृहरि, उज्जैन नरेश ।

१०६

(दिल्ली; एकडला)

रोवइ[1] सँभरे कहै विधाता । काहे बरजा[2] मोर संघाता ॥१
मै तो वहि[3] लगि बहु दुख देखा । औ [अ]पनै जिय कुछउ[4] न लेखा ॥२
धाइहि पूछि[5] बिरह दुख माँता । चलत[6] कहसि तुम्हसेंउ[7] कछु बाता ॥३
धा[इ] कहा तुम्ह कहसि[8] जुहारू । भेंटघाँट कहँ बहुत[9] अपारू ॥४
और नगर कर लीहिसि[10] नाऊँ । कंचननगर हमारेउ[11] ठाऊँ ॥५
कहिसि सँदेस कहु जो कुँवर सो,[12] बिलम्ब न लावइ आउ[13] ।६
बहुत देखि दुख आवै मारग[14], तो हमकहँ वह[15] पाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–रोवै । २–बिरुजा । ३–उहि । ४–कुछौ । ५–पूछ । ६–जात । ७–तोह सै । ८–तोह कहै जोहारू । ९–आव । १०–लीन्हिसि । ११–हमारेव । १२–कहेसि सँदेसा कुँवर सो । १३–आव । १४–× । १५–सो ।

टिप्पणी—(१) **सँभरे**–सँभले । **विधाता**–ईश्वर । **बरजा**–वर्जित किया । **संघाता**–साथी ।

(२) **लेखा**–लिखा, समझा ।

(३) **माँता**–ग्रस्त ।

(४) **भेंट-घाँट**–मिलना-जुलना । भोजपुरी मे यह सामान्य रूपसे प्रयोगमे आता है ।

(७) **हमकँह**–मुझको ।

१०७

(दिल्ली; एकडला)

सुनि सँदेस सिर भुँइ धर[1] मारा । धरा न रहे तोरै[2] कर बारा ॥१
लोग धाइ सब कोउ समुझावइ[3] । कुँवर समुँझि पुनि देइ मरावइ[4] ॥२
जो अँजुरी पानी बिन मराई । मुए सो गागरि सो का[5] कराई ॥३
कोउ[6] पिसुन मिस होइ कर[7] आवा । कै सुरजन[8] रिपु होइ बउरावा[9] ॥४
को र दूत[10] मिस बैठउ आई । पवन पैठि[11] बादर बहिराई ॥५
कै सुरजन[12] कै दुरजन[13], कै[14] हम दियउ बियोग ।६
को अरि भयउ हमारेउ[15], जिह बरजेउ हम[16] जोग ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दै। २–तोर। ३–कोइ समुआवै। ४–फुनि दैव मेरावइ। ५–× । ६–कोरे। ७–हो कै। ८–दुरजन। ९–हौ बौरावा। १०–को रे रावन। ११–पथ। १२–सुरजनि। १३–दुरजनि। १४–को। १५–भएउ हमारो। १६–जो उपजो एह।

टिप्पणी—(१) धरा–पकडने पर। तोरै–तोडे। कर–हाथ। बारा–बाल, केश।

(३) अँजुरी–अँजलि। मराई–मरे। गागरि–घडा।

(४) पिसुन (पिशुन)–छिपे छिपे दो व्यक्तियो मे विरोध उत्पन्न करनेवाला व्यक्ति। मिसि–बहाना; व्याज। सुरजन–देवता। बउराना–पागल बनाना।

(७) अरि–शत्रु। बरजेउ–वर्जित किया। जोग–योग; मिलन।

१०८

(दिल्ली; एकडला)

लोगहिं[१] बैठि कुँवर समुझावा। मन समुझा लोगहि बउरावा[२] ॥१
बिरह[३] लागि भरथरी[४] बियोगी। हौं वहि लागि होउँ[५] अब जोगी ॥२
चिन्ता[६] जोग तन्त कैं[७] लागा। सुनि कै भोग जो आगैं भागा[८] ॥३
माता पिता कोउ न[९] जानाँ। जोगी [के]र साज सब आनाँ ॥४
छाड़सि लोग कुटुब घर बारू। छाड़सि पिता मोह सँयसारू[१०] ॥५
मिरगावति[११] कैं पेम रस बिंधा[१२] कैंसहि उतरि[१३] न जाइ ।६
चित गयन्दँहि पंक जेंउ, खिन खिन अधिक समाय[१४] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–लोगन। २–लोगन बौरावा। ३–जुध। ४–भरथहरी। ५–होउ। ६–चितु। ७–के। ८–सुनि के जोग भूख जनि भागा। ९–कोई नहिं। १०–संसारू। ११–मिरगावती। १२–बँधा। १३–कैसेउ निकसि। १४–सोहाइ।

टिप्पणी—(३) तन्त–तन्त्र।

(४) साज–वेश-भूषा। आनाँ–ले आया।

(५) छाड़सि–छोड़ा। घरबारू–घर-द्वार। सँयसारू–ससार।

(७) गयन्दँहि–हाथी। पंक–कीचड़। जेंउ–जिस प्रकार।

१०९

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर[१])

केस उदिआनी[१] गोरखपन्था। पाँय[२] पाँवरी मेखलि[३] कंथा ॥१
जटा चक्र मुद्रा[४] जपमाला। डण्डा खपर केसरि[५] छाला ॥२
जोगौटा[६] रुदराख[७] अधारी। भसम लेउ[८] तिरसूल सँवारी ॥३

---

१. इस प्रति में पक्ति ४-५ क्रमशः ५-४ है।

सिंगी पूरै पन्थ[9] सँभारा[10]। जपै सुरंगिनि[11] भई अधारा[12] ॥४
कर किंगरी धँढोर[13] मन मेला। तार[14] बजावइ[15] रैनि अकेला ॥५
जोग जुगुति होइ[16] खेलेउ[17] मारग[18] सिध[19] होइ कह जाइ ।६
भुगुति मोर[20] मिरगावति[21] जीउ[22], भीख देइ को[23] राइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कसि उडियानी, (बी०) कसि उडानी। २–(ए०) पाये; (बी०) पाँव। ३–(ए०) मेखरी; (बी०) मेखली। ४–(बी०) ×। ५–(ए०) केसरी, (बी०) केहरी। ६–(बी०) जोगटा। ७–(ए०) रुद्राख, (बी०) रुद्राक्ष औ। ८–(ए०) किएव, (बी०) किहेसि। ९–(ए०, बी०) नेह। १०–(बी०) सभारै। ११–(बी०) कुरंगिनि। १२–(ए०) खन न बिसारा; (बी०) खिन न बिसारै। १३–(ए०) ठिठोर; (बी०) धँधरी। १४–(ए०, बी०) बार। १५–(ए०) बजावै। १६–(ए०) भै। १७–(ए०) खेलेसि, (बी०) खेलौ। १८–(ए०) ×। १९–(बी०) सिधि। २०–(ए०) मूर। २१–(ए०) मिरगावती। २२–(ए०) ×, (बी०) जाँचो। २३–(ए०) कोइ। २४–(बी०) आय।

टिप्पणी—(१) **उदियानी**–बिखराये। **पाँय**–पाँव, पैर। **पाँवरी**–(स० पादपट्ट> पा० पाय वह> पावड> पावड़ा> पावडा> पाँवरि) खडाऊँ। **मेखलि**–मेखला। **कंथा**–कथरी, गुदडी, फटे पुराने कपडोसे बनाया गया वस्त्र।

(२) **चक्र**–सम्भवतः छोटी गोल अँगूठी जिसे पवित्री कहते है (वासुदेव शरण अग्रवाल)। **मुद्रा**–कानमे पहननेका कुण्डल। **जपमाला**–जाप करनेकी माला। **खपर**–खप्पर, भिक्षा पात्र। **केसरि छाला**–बाघम्बर।

(३) **जोगौटा**–(स० योगपट्ट) वह वस्त्र जिसे जोगी ध्यान करते समय सिरसे पैरोतक डाल लेते है। अन्य अवस्थामे यह कन्धेपर रहता है। **रुदराख**–रुद्राक्षकी माला। **अधारी**–वासुदेव शरण अग्रवालने पदमावत (१२६।४) मे लकड़ीका बना सहारा बताया है जिसको टेककर योगी बैठते और सोते है। किन्तु इस ग्रन्थ (१६४।१) के अन्यत्र उल्लेखसे ज्ञात होता है कि उनका यह अनुमान ठीक नही है। इसका तात्पर्य झोलीसे है। **भसम**–भस्म; भभूत। **तिरसूल**–त्रिशूल।

(४) **सिंगी**–सीघका बना मुँहसे फूँककर बजानेका बाजा। **पूरै**–बजाये। **सुरंगिनि**–सुन्दर रगवाली।

(५) **किंगरी**–छोटा चिकारा या सारंगी, जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते है। **धँढोर**–धँधारी; गोरखाधन्धा, तारके छल्लोका बना उलझन जिसे जोगी लोग सुलझाते है। **मेला**–लगाया।

(६) **जुगुति**–युक्ति। **सिध**–सिद्धि।

(७) **भुगुति**–भोजन। **राइ**–राजा।

११०

(दिल्ली, बीकानेर)

निकसि कुँवर जोगी मिस चला। राजैं सुनाँ आगि उर जरा[1] ॥१
सुत वियोग[2] दसरथ[3] अस कीन्हा। राइ[4] चाहि ततखन जिउ दीन्हा ॥२
जस[5] अरजुन[6] अहिबर्न कै मारे। तस राजा बहु[7] रोउ[8] पुकारे ॥३
सिर धुन धुन[9] कै कारुन करई[10]। आउ घटै[11] बिनु जाइ[12] न मरई[13] ॥४
पाछो कोइ न देखै आगे। मरै न जाइ जियब[14] किंह[15] लागे ॥५
जस अन्धा अन्धी बिनु सरवन[16], फेकरि[17] मुए चिल्लाइ[18]।६
मुयहु सरग[19] पछिताव न जहिये[20], जो न[21] जियत मिलाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–जला। २–वियोग। ३–जसरथ। ४–येहउ। ५–जसरे। ६–अर्जुन। ७–बहु-राजा। ८–रोवै। ९–धुनि-धुनि। १०–कर मलई। ११–आव घटई। १२–कोउ। १३–×। १४–जिए। १५–केहि। १६–जस अन्धी अन्धा सर्वन बिनु। १७–फिकरि। १८–चितलाइ। १९–मुयेहु पाछु। २०–जाइहि। २१–जौ नहिं।

टिप्पणी—(१) मिस–बहाना, रूपमे।
(२) ततखन–तत्क्षण।
(३) अहिबर्न-अभिमन्यु। तस–तैसा।
(४) कारुन–करुणा। आउ–आयु।
(५) पाछो–पीछे। जियब–जीऊँगा। किंह लागे–किसके लिए।
(६) सरवन–श्रवण। फेंकरि–दहाड मारकर रोना।

१११

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

चला कुँवर मिरगावति जहाँ। सींघ सँदूर[1] अगम बन तहाँ ॥१
डर भौ एको[2] आह न करई[3]। किंगरी पेम बजावइ झुरई[4] ॥२
मग अमग[5] न जाने भोला। बिरह भाक[6] पै अउर[7] न बोला ॥३
तब[8] लग मग अमग[9] गुनीजइ[10]। जब[11] लग मोह मया मन[12] कीजइ[13] ॥४
ताम लगन कुल मेल रहे जे[14]। बन क पंखी पर न परिचै[15] ॥५
ताम सेयॉप[16] ताम गुन,[17] जप तप संजम ताग[18]।६
बक घटै लोयना,[19] पर न पूजै जाम[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) सीह सेदुर; (बी०) सिह सेंदूर। २–(बी०) एक। ३–(ए०) तेही, (बी०) न लागै तेही। ४–(ए०) बस भौ नेही; (बी०) बजावै नेही। ५–(बी०) मगु औ अमगु। ६–(ए०, बी०) माख। ७–(बी०) और। ८–(बी०) तव। ९–(बी०,

ए०) मगु अमगु । १०–(बी०) न गनीजे । ११–(बी०) तब । १२–(बी०) नहि । १३–(बी०, ए०) कीजै । १४–(बी०) तब लगि कुल सील रहीजे; (ए०) उत्तम लगे कुल सील रहीजे। १५–(ए०) बक कह खे पीर न परीजे; (बी०) बाके कटाखे पीर न परिजे। १६–(ए०) सेआनप । १७–(बी०) ताम समनपता गुन । १८–(बी०) जपत सपत जम ताम। २९–(ए०) बक कटखे लोऐना (बी०) बाके कटखे लोयन्ह । २०–(ए०) परीजे जाम; (बी०) पीर न परीजे जाम ।

टिप्पणी—(१) **सींघ सिंदूर**—इस शब्द-युग्म का प्रयोग मौलाना दाऊद ने चन्दायन मे तीन स्थलो (१२८।५,१९६।३,२९५।६) पर किया है। जायसी के पदमावतमे यह दो बार आया है (१४४।६;६३६।९)। वहाॅ माताप्रसाद गुप्तका पाठ है—सिघ सदूरा और सिह सदूरहि। वासुदेव शरण अग्रवालने भी यह पाठ स्वीकार किया है। मधुमालती मे भी यह शब्द-युग्म आया है। वहाॅ माताप्रसाद गुप्तने सीह सेदूर (१००।२; १८१।२) पाठ दिया है। वासुदेव शरण अग्रवाल ने इसका अर्थ सिह और शार्दूल किया है। यही अर्थ माताप्रसाद गुप्तने भी मधुमालतीमे स्वीकार किया है। सदूर पाठ से शार्दूल (सदूर <सादूर <सारदूल <शार्दूल) की कल्पना की जा सकती है। किन्तु चन्दायनके फारसी प्रतिमे यह शब्द सर्वत्र सीन, नून, दाल, वाव, रे बहुत स्पष्ट रूपसे लिखा है। अतः इसका पाठ सन्दूर, सॅदूर, सिन्दूर ही हो सकता है। मिरगावतीके फारसी प्रतिमे सीनके बाद ये है और वहाॅ पाठ सेदूर या सीदूर होगा। इसके प्रकाशमे सदूर अपपाठ जान पडता है। इस कारण चन्दायनमे हमने इसका वास्तविक पाठ सिदूर अथवा सेदुर माना था और उसके मूलमे सिन्धुर शब्द स्वीकार किया था जिसका अर्थ हाथी होता है। मध्यकालीन कलामे सिह-हस्ति एक प्रसिद्ध अभिप्रायः रहा भी है। किन्तु पदमावत के कडवक ६३६ की पक्ति ९ को उसी कडवककी पक्ति २ के प्रकाशमे देखनेसे इस शब्दके मूलमे शार्दूल ही होनेका भान होता है। और मिरगावतीकी पक्ति—सीह सेदूर चिघरहि हाथी–से स्पष्ट है कि सेदूरका तात्पर्य हाथीसे भिन्न है। ऐसी अवस्थामे सेदूरसे शार्दूल अर्थात् बाघका ही तात्पर्य ग्रहण करना उचित होगा। शेर-बाघका युग्म बोलचालमे प्रचलित भी है। **अगम**—(सं० अगम्य) दुर्गम, जहाॅ प्रवेश सुगम न हो।

(२) **भौ**–भय। **एकौ**–एक भी।

(३) **भोला**–अज्ञान, सरल। **भाक**–भाषा, बोली। **पै**–पर; किन्तु। **अउर**–और।

(४) **लग**–तक। **गुनीजइ**–तर्क-वितर्कके भाव उठते है। **मया**–ममता। **कीजइ**–करे।

(५) **पंखी**–पक्षी। **परिचै**–नैकट्य अथवा आत्मीयता प्राप्त करता है।

११२

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

एक बन छाड़ि आन बन जाई। आगे चाह नगर कै[१] पाई॥१

नगर सुहावन उत्तम[2] ठाँऊ। धरमसाल[3] बहु धरम कै[4] नाँऊँ ॥२
कहिसि आजु यहि नगर गवाँवउँ[5]। मकुहिं[6] चाह मिरगावति पावउँ[7]॥३
भिखा[8] माँगै जाइ[9] न आवइ[10]। रोवइ किंगरी नेंह[11] बजावइ[12] ॥४
लोगहिं राजहिं जाइ जनावा। कुँवर एक जोगी जस आवा ॥५
अति रुपवन्त सुलाखन,[13] मुखहिं बतीसी भीन।६
करम जोति मनि माँथें चमकै,[14] एको लखन न खीन ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) की। २– (बी०) उतिम। ३– (ए०) धरमसार। ४–(बी०) क। ५–(ए०, बी०) गॅवावौं। ६–(बी०) मकहुँ। ७–(ए०, बी०) पावो। ८–(ए०) भिखेया; (बी०) भिछूया। ९–(ए०, बी०) जाय। १०–(ए०, बी०) आवै। ११–(ए०) पेम। १२–(ए०) बजावै; (बी०) रोइ रोइ किंगरी बियोग बजावै। १३–(ए०) सुलखन; (बी०) सुलच्छिन। १४–(ए०) ×।

टिप्पणी—(१) छाड़ि–छोडकर। आन–अन्य, दूसरा। चाह–आहट।
(२) धरमसाल–धर्मशाला। यात्रियोके ठहरनेका स्थान।
(३) गवाँवउँ–बिताऊँ। मकुहिं–कदाचित्।
(५) जनावा–सूचित किया।
(६) सुलाखन–सुलक्षण।
(७) करम–भाग्य। जोति–ज्योति। मनि–मणि। माँथें–सिरपर। लखन–लक्षण। खीन–क्षीण।

११३

(दिल्ली; बीकानेर[1])

लखन बतीसो आहै भोगी। जानि न जाइ कवन गुन जोगी ॥१
सीस ललाट[1] उर चाकर ताही[2]। राजबंसी बिनु अउर[3] न आही ॥२
अउर[4] लिलार तीनि हँहि[5] रेखा। अस भगवन्त जोगी न[6] देखा ॥३
औ[7] तिरसूल आहै[8] रुदरेखा। तुरिय नहीं पा चलि कवन बिसेखा[9] ॥४
राजा देखु आन[10] बुलाई। कलजुग आउ ते उलटी[11] रीति चलाई ॥५
देखि सुबुद्ध्येहि[12] अइस मन दरसा[13], संग समोइ[14] मिलाउ।६
जिह जिह[15] मारग पग धरै[16], तिंह तिंह[17] सीस धराउ ॥७

पाठान्तर : बीकानेर प्रति—

१–लिलाट। २–चक्र जाही। ३–और। ४–औ। ५–है। ६–नहि। ७–कर ८–अहै,–तुरियन अहि पॉ चल किहे बिसेखा। १०–देखिये आनन। ११–कल-

१. इस प्रतिमें यह दो कडवकोंमें बँटा है। प्रथम दो पक्तियाँ ५ अन्य पक्तियोंके साथ एक कड़वकमें और शेष पक्तियाँ २ अन्य पक्तियोंके साथ दूसरे कड़वकमें हैं। वे पक्तियाँ हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं अतः परिशिष्ट १ में दी गयी है।

जुग उलटी। १२–सुबुद्ध्या। १३–दरस। १४–मुँह। १५–जेहि जेहि। १६–धरा। १७–तेहि तेहि।

टिप्पणी—(१) **लखन**–लक्षण। **भोगी**–भोग करनेवाला; ऐश्वर्यवान। **जानि**–जाना। **कवन**–किस। **गुन**–गुण; कारण।

(२) **चाकर**–चौड़ा। **ताही**–उसका।

(३) **लिलार**–ललाट। **हँहि**–है।

(४) **रुदरेखा**–रुद्राक्षकी माला। **पा**–पाव; पैदल।

(५) **आन**–लाकर। **कलजुग**–कलियुग। **ते**–इस कारण।

११४

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर)

राजैं[1] कहा चलहु[2] हौं जाँऊँ। पूछउँ जाइ[3] मरम[4] वहि[5] ठाँऊँ ॥१
राजा आइ[6] जो देखी[7] ताही। अति रुपवन्त सुलाखन[8] आही ॥२
पूँछी[9] जोग[10] कौन गुन बाढ़ा[11]। उतर न[12] देइ[13] पेम[14] दुख डाढ़ा[15] ॥३
कहहु न किह[16] कारन तुम्ह[17] जोगी[18]। किह[19] र[20] लागि तू[21] भयसि[22] बियोगी[23] ॥४
तिह[24] कह जोग न आहै सोभा। कउन[25] कुँवरि जिउ[26] किह सेंउ[27] लोभा ॥५
यह अस[28] बात न जाइ[29] कहि[30], (जनि)[31] पूछहु हम राइ[32] ।६
यह दुख कहौं न काहु सेंउ[33], कहत सुनत जरि जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) राजा। २–(बी०) चला। ३–(ए०, बी०) पूछौ जाय। ४–(बी०) मर्म। ५–(ए०) उहि; (बी०) वोहि। ६–(ए०) आये; (बी०) आय। ७–(ए०, बी०) देखै। ८–(बी०) सुलखन। ९–(ए०) पूछै; (बी०) पूछिसि। १०–(बी०) जोगु। ११–(ए०, बी०) साधा। १२–(ए०) ×। १३–(ए०) देये; (बी०) देय। १४–(ए०) जेम। १५–(ए०, बी०) दाधा। १६–(बी०) वोहि। १७–(बी०) तैं। १८–(ए०) केहि कारन तोह भयेसि जो जोगी। १९–(ए०, बी०) केहि। २०–(बी०) ×। २१–(ए०) तोह; (बी०) तै। २२–(ए०) भयेहु; (बी०) भयेसि। २३–(ए०) बीऊगी; (बी०) बिवोगी। २४–(ए०) तोहि; (बी०) तुम्ह। २५–(ए०, बी०) कौन। २६–(बी०) जिय। २७–(ए०) जहि सौं; (बी०) केहि सैं। २८–(बी०) असि। २९–(ए०) न जाये; (बी०) जाइ नहिं। ३०–(बी०) कही। ३१ (दि०) जै। ३२–(ए०) राये; (बी०) राय। ३३–(ए०) सौं।

टिप्पणी—(१) **मरम**–मर्म, भेद।

(२) **ताही**–उसको।

(३) **बाढ़ा**–बढ़ा, उत्पन्न हुआ। **डाढ़ा**–जला हुआ।

(७) **जरि**–जल।

---

१. इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

११५

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

बिरह बियोग[1] पेम दुख कहई। जो र[2] सुनैं तिह[3] चेत न रहई ॥१
बकती[4] पेम रसाल कहानी। सुनत राउ[5] चित चेत भुलानी[6] ॥२
कहत बिरह जैं सुना सो रोवा। नैन सलिल (मुख)[7] मलि मलि धोवा ॥३
दन्द उदेग उचाट बिरोधा[8]। जैं र सुनाँ सो सुनत लुबोधा[10] ॥४
अउर[11] कथा वहि कहै न जानाँ। मिरगावति[12] कर[13] पेम बखाना ॥५
कुतुबन सात समुँद दधि[14], अउर[15] सलिल को जान ।६
धार सिवाती[16] मन[17] बसे[18], चातक[19] चीत[20] नदान[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०) बिऊग; (बी०) बिवोग। २-(ए०, बी०) रे। ३-(ए०, बी०) तेहि। ४-(ए०, बी०) बक्तै। ५-(ए०) राये; (बी०) राय। ६-(ए०) गवाँनी। ७-(बी०, दि०) कर। ८- (ए०, बी०) बिरूधा। ९-(ए०) जैं रे; (बी०) जो रे। १०-(ए०, बी०) लुबुधा। ११-(ए०, बी०) और। १२-(ए०, बी०) मिरगावती। १३-(बी०) का। १४-(ए०, बी०) हहिं। १५-(ए०, बी०) उदधि। १६-(ए०, बी०) सेवाती। १७-(बी०) जो मन। १८-(बी०) बसी। १९-(ए०) चातिक; (बी०) चातिग। २०-(ए०, बी०) चित। २१-(ए०) न आन, (बी०) निदान।

टिप्पणी—(१) चेत–होश, स्मृति।
(२) बकती–कहा। रसाल–सरस।
(७) सिवाती–स्वाती। चीत-चित्त। नदान–मूर्ख।

११६

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

सुना राइ[1] बहु[2] उठा मरोहू[3]। रोवइ[4] लाग भयउ[5] मन छोहू ॥१
कहिसि देउँ[6] पदुमिनी अमोला। बहु परसाद राइ[7] मुँह[8] बोला ॥२
कहिसि राइ[9] हम अउर[10] न काजा। माँगिउँ इहै भीखि[11] तुम्ह[12] राजा ॥३
कंचनपुर कै बाट जो[13] जानै[14]। नगर ढुँढाइ कहहु तिह[15] आनै[16] ॥४
जंगम एक आह[17] हम गाऊँ। देखिसि[18] बहुत फिरा बहु ठाँऊँ[19] ॥५
राजैं[20] जन दौराए ततखन[21], जंगम आनहु धाइ[22] ।६
कंचननगर कहाँ है कहु[23] तहाँ[24], जानत कहु किंह जाइ[25] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१-(ए०) राए। २-(ए०) एंह। ३-(ए०) मुरोहू। ४-(ए०, बी०) रोवै। ५-(ए०) भएव; (बी०) भवा। ६-(ए०) देवों; (बी०) देंउ तोहि। ७-(ए०) राए। ८-(बी०) मोंह। ९-(ए०) राए; (बी०) राउ। १०-(ए०) आव; (बी०) आवै।

११–(ए०) अहै, (बी०) यहइ। १२–(ए०) तोह। १३–(ए०) कोइ। १४–(बी०) जाना। १५–(ए०) ताहि कह, (बी०) देहु तुम। १६–(बी०) आना। १७–(बी०) अहै। १८–(बी०) देखत। १९–(ए०) गॉऊ। २०–(बी०) राजा। २१–(ए०) ततखन जन दौराए। २२–(ए०) आनिन्हि राअें; (बी०) आन हॅकराइ। २३–(बी०) केहि ठाऊँ। २४–(ए०) ×। २५–(ए०) बाट देखावहु जाए; (बी०) चाह कहसि यह जाइ; (दि० मार्जिन) चाह ओहर कह जाय।

टिप्पणी—(१) **मरोहू**–मरोह; करुणा; दुःख जनित ममता। **लाग**–लगा। **छोहू**–स्नेह, आत्मीयता।

(२) **पदुमिनी**–पद्मिनी जातिकी नारी। **अमोला**–अमूल्य। **परसाद**–(स० प्रसाद) अनुग्रह; प्रसन्नतापूर्वक दी गयी वस्तु।

(३) **काजा**–कार्य।

(४) **बाट**–मार्ग।

(५) **जंगम**–वसव द्वारा स्थापित लिंगायत शैव-सम्प्रदाय। यहाँ उसके माननेवाले-से तात्पर्य है।

(६) **दौराए**–दौडाये। **ततखन**–तत्क्षण। **आनहु**–लाओ। **धाइ**–दौडकर।

११७

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

धाइ[1] जन जंगम लइ[2] आये। कुँवर नैन जंगम मुख[3] लाये ॥१
पूछै लाग कहहु हम चाहा। कंचनपुर तुम्ह[4] देखी[5] आहा ॥२
नगर बहुत देखेहु[6] बहु[7] गाऊँ[8]। राजस्थान[9] औ आनौं[10] ठाऊँ ॥३
कंचननगर उहो[11] हम देखा। मारग कठिन न ओकै[12] लेखा ॥४
परबत[13] समुन्द अगम[14] बन भूता। मानुस भेस[15] जो राकस दूता[16] ॥५
भूत परेत[17] भुअंगम, मारग पैंग[18] जै तर[19] जाइ ।६
अति[20] दुख बहुत[21] पन्थ मँह दूगम[22], तो रे[23] कंचनपुर जाइ[24] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१–(ए०, बी०) धाये। २–(ए०, बी०) लै। ३–(ए०) मुहँ। ४–(ए०) तोह। ५–(ए०,बी०) देखेहु। ६–(ए०) देखौ। ७–(बी०) बहु देखेउँ। ८–(बी०) ठॉऊँ। ९–(ए०,बी०) राजअस्थान। १०–(ए०) अनवन; (बी०) अनिवनि। ११–(ए०) वहै; (बी०) वह। १२–(ए०) आव, (बी०) ऑव। १३–(बी०) सायर। १४–(बी०) अम। १५–(बी०, ए०) भखहि। १६–(ए०) धूता। १७–(बी०) परीत। १८–(बी०, ए०) पैग। १९–(ए०) न हीठै; (बी०) न हेटै। २०–(ए०) एत। २१–(ए०) अगम। २२–(ए०,बी) ×। २३–(ए०) तेहि; (बी०) तौ। २४–(ए०) राइ।

टिप्पणी—(३) **आनौं**–अन्यान्य।

(४) **उहो**–वह भी। **ओकै**–उसका। **लेखा**–गणना, गिनती।

(५) परबत–पर्वत। समुन्द–समुद्र।
(६) भुअंगम–भुजगम; सर्प।
(७) दूगम–दुर्गम।

११८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत[१] भुअंगम हौं न डरावौं[२]। कया होइ[३] जिउ तो भरमावौं[४] ॥१
राकस भूत जो र मँहि[५] खाही। तो मारग सिध नीक[६] लगाही ॥२
बस्ती[७] बन प्रीतम बिनु लागे[८]। भाव पन्थ बन रहे तिह आगे[९] ॥३
प्रीतम लाग[१०] बहुत[११] दुख सहई[१२]। दुख के मिले तो र[१३] सुख रहई[१४] ॥४
दस नख कुँवर दसन[१५] मँह[१६] मेला। उहै[१७] पन्थ दिखराउ[१८] दुहेला ॥५
वह[१९] लग[२०] जीउ सँकलपेउँ आपन[२१], जो भावइ सो होइ[२२]।६
जो जिउ दुख ना दीजइ काहू[२३], ताकर[२४] कौन मरोह[२५] ॥७

पाठान्तर–एकडला और बीकानेर प्रतियाँ–

१–(ए०) धूत, (बी०) भूत। २–(ए०, बी०) डरॉऊँ। ३–(बी०) होय। ४–(ए०) भरमॉऊ। ५–(ए० बी०) रे मोहिं। ६–(ए०) सुध नेग; (बी०) सिर नेग। ७–(ए०) बासतं; (बी०) बसतै। ८–(ए०) लागी। ९–(ए०) भाव पंथ बिन रहै न मागी; (बी०) भव पंथ रहै नाव न लागे। १०–(ए०) लागि। ११–(ए०, बी०) जोरि। १२–(बी०) प्रीतम पंथ सहा होई। १३–(ए०) रे; (बी०)×। १४–(ए०) लहई; (बी०) होई। १५–(बी०) दसौ। १६–(ए०) मुँह, (बी०) मुख। १७–(ए०) वोहै; (बी०) वहइ। १८–(ए०) देखराउ; (बी०) दिखावहु। १९–(ए०) तेहिं; (बी०) वोहि। २०–(ए०,बी०) लगि। २१–(ए०)×। २२–(ए०,बी०) जो भावै सो होउ। २३–(ए०) जो जिउ दीजा दखि न; (बी०) पोजि दखिना दै पै कहूँ। २४–(बी०) कह ताकर। २५–(ए०,बी०) मुरोउ।

टिप्पणी—(१) भरमाओं–भ्रमित होऊँ।

(२) मँहि–मुझको। खाही–खायेगा। मारक सिध–सिद्धि-मार्ग। नीक–अच्छा, भला।

(३) बस्ती–नगर।

(५) उहै–वही। दिखराउ–दिखलाओ। दुहेला–कठिनकार्य, कष्ट साध्य; दुखपूर्ण। वासुदेव शरण अग्रवालने इसकी तुलना सुखकेलि> सुहेल्लि (देशीनाम माला ८।३६; पाइसद्द महार्णव ११।६५) से करके इसके मूल मे दुःखकेलि- (दुःख केलि > दुहेल्लि) अनुमान किया है और अर्थ कठिन खेल, कठिन क्रीड़ा बताया है।

(६) सँकलपेउँ–संकल्प कर दिया। आपन–अपना। भावइ–अच्छा लगे।

११९

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

राजा यहि[1] रे चलै न[2] देई। बहु समुझाउ[3] कान न सेई[4] ॥१
राइ[5] न घट मँह आहे जीऊ। बिनु[6] जिउ[7] डर भौ कित कर[8] सीऊ ॥२
जीउ मिरगावति हरि लै गयी। बिनु जीउ कया रकत बिनु[9] भयी ॥३
बिसमौ लाज हरख नहिं रहा। पेम आइ[10] चित चिन्ता[11] दहा[12] ॥४
दौरि जो[13] जंगम पाँयहि[14] लागा। हम कहिं[15] पंथ दिखाउ[16] सुभागा[17] ॥५
पेम सुरा जिन्ह अँचयेउ[18], तिहाँ[19] कुछौ न[20] सुधि।६
चित चिन्ता लज्या न भौ[21], बिसमौ हरख न बुधि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) एहि, (बी०) वोहि। २–(ए०) नहि; (बी०) ना। ३–(ए०) समुझावो; (बी०) समुझात्र। ४–(ए०) मान नहि सेई; (बी०) न मानै सेई। ५–(ए०) राए; (बी०) राय। ६–(बी०) ×। ७–(ए०) जिअ। ८–(बी०) काकर। ९–(ए०) सूनि हम। १०–(ए०) आए; (बी०) आय। ११–(बी०) चंपित। १२–(ए०, बी०) गहा। १३–(ए०, बी०) ×। १४–(बी०) पाँइ। १५–(बी०) बहई। १६–(ए०, बी०) देखाव। १७–(बी०) सभागा, (ए०) सभाखा। १८–(बी०) जिन अँचइय। १९–(बी०) तिन्है। २०–(बी०) ना। २१–(बी०) ना चित चिन्त न लाज भौ।

टिप्पणी—(१) सेई–वह।
(२) बिसमौ–विस्मय।
(३) दौरि–दौड़कर।
(५) अँचयेउ–आचमन किया; पिया। तिहाँ–उसको। कुछौ–कुछ भी।
(७) भौ–भय।

१२०

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

जंगम मोह मया मन आई। मगु देखावइ[1] कँह लेजाई ॥१
जंगम साथ लिहा यह[2] लाई[3]। सायर नियर[4] ठाढ़ भा[5] जाई ॥२
कंचननगर कैं[6] इहवैं[7] बाटा। यहि र[8] समुन्द कैं[9] इहवैं[10] घाटा ॥३
दई[11] बिधाता सँवरत[12] जाहू। तो सिध पावहु जो न डराहू[13] ॥४
सायर तीर अहा एक डेंगा[14]। वहि चढ़ा आपुन[15] घर रेंगा ॥५
कहिया प्रीतम पेखिहौं, दुहु लोयन बिहसन्त[16]।६
कंज सरोवर नीर जिमि[17], सर पंकहि[18] पसरन्त[19] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) देखावै, (बी०) दिखावै। २–(ए०) लिहा ओहि; (बी०) लीन्हिसि। ३–(बी०) लाइ। ४–(ए०, बी०) तीर। ५–(बी०) भवा। ६–(ए०) क; (बी०) कर। ७–(ए०) एहइ, (बी०) यह है। ८–(ए०, बी०) रे। ९–(बी०) कर। १०–(ए०) एहवै; (बी०) यहवै। ११–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १२–(ए०, बी०) सौरत। १३–(ए०, बी०) डराहू। १४–(बी०) डोगा। १५–(ए०) एह रे चढाए आपन; (बी०) वोहि चढाय आपु। १६–(बी०) बिहसन्ति। १७–(ए०) कच सरेवा तीर जेव, (बी०) कच सरवर निरज्यौ। १८–(ए०) सर बगह; (बी०) सरब आगे। १९–(बी०) पसरन्ति।

टिप्पणी—(१) मगु–मार्ग।

(२) लिहा–लिया। सायर–सागर। नियर–निकट। ठाढ–खडा। भा–हुआ।

(३) इहवै–यही। बाटा–बाट, मार्ग। समुन्द–समुद्र। घाटा–घाट।

(४) सँवरत–स्मरण करते हुए।

(५) डेंगा–नाव। रेंगा (क्रि० रेगना) गया।

(६) कहिया–कब। पेखिहौं–देखूँगा।

(७) कंज–कमल। पंकहि–कीचडमे। पसरन्त–फैलता है।

१२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोहित बहा चला वह जाई[1]। परा जाइ[2] जिंह[3] लहर[4] उठाई ॥१
लहर आइ यह[5] देखत भूला। जानु[6] हिलोरे[7] पर[8] सेंउ[9] झूला ॥२
तर उपर आवइ[10] औ जाई[11]। बोहित[12] चारेउ[13] दिसि बउराई[14] ॥३
कबहूँ पुरुब पछिउँ[15] कँह आवइ[16]। कबहूँ उतर दखिन कहँ धावइ[17] ॥४
हौं अपने[18] जियँ डर न[19] डेराऊँ। जो र[20] मरौं तो वहि न[21] मिलाऊँ ॥५
कुतुबन प्रीतम अगम भुइँ, तिह वै[22] बसहि निचिंत।६
हम बीलोचन[23] डार जिमि, हियँ खुरकहि[24] नित ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) बोहितो बहुरि चाह वह पाई। २–(ए०) जाए, (बी०) जाय। ३–(ए०) जह; (बी०) जहाँ। ४–(ए०, बी०) लहरि। ५–(ए०) लहरि आये अस, (बी०) लहरि अडावहि। ६–(बी०) जानौ। ७–(ए०, बी०) हिहोलैं। ८–(बी०) बन। ९–(ए०, बी०) सौ। १०–(ए०, बी०) धावै। ११–(बी०) औमाई। १२–बोहिथ। १३–(ए०) चारौ; (बी०) चारिहुँ। १४–(ए०, बी०) बौराई। १५–(ए०) पछूँ; (बी०) पछिम। १६–(बी०) कहुँ धावै। १७–(बी०) फिरि आवै। १८–(ए०) जिअ; (बी०) जिव कै। १९–(ए०) अव। २०–(ए०, बी०)

२। २१–(ए०) उहि, (बी०) वोहि। २२–(ए०) उए उहँ, (बी०) वै उहँ।
२३–(ए०) बैलोचन; (बी०) बए लोचन। २४–(ए०) खुरुकहिं; (बी०) खरकहि।

टिप्पणी—(१) **बोहित**–नाव।

(३) **तर**–नीचे।

(४) **पछिउँ**–पच्छिम।

(६) **निचिंत**–निश्चिन्त।

(७) **बीलोचन**–वैरोचन, नन्द नामक राजाका अमात्य। **खुरकहिं**–खटकता है। यह पंक्ति जैन साहित्यमे वर्णित इस कथाकी ओर संकेत करती है—नन्द नामक राजा वैरोचन नामक एक अमात्य था। वैरोचनकी पत्नी पद्मिनी जातिकी थी जिसके कारण उसके वस्त्र पद्म गन्धसे सुवासित रहते थे। एक दिन राजा नगर-भ्रमणके लिए निकला तो एक जगह सूखते हुए धुले कपड़ो-से उसे पद्मकी गन्ध मिली। धोबीसे पूछने पर ज्ञात हुआ कि वे वस्त्र वैरोचन-की पत्नीके है। राजा उससे मिलनेको उत्सुक हो उठा। उसने किसी बहाने वैरोचनको बाहर भेज दिया और स्वय वैरोचनके घर पहुँचकर उसकी पत्नीसे काम-प्रस्ताव किया। स्त्रीने राजाको समझाया कि वह उसके पिताके समान है अतः इस प्रकारके भाव उचित नही है। राजाकी बुद्धिमे बात आ गयी और वह लौट गया। जल्दीमे वह अपने जूते वैरोचनके घर ही छोड़ आया।

जब वैरोचन लौटकर आया तो द्वार पर उसे राजाके जूते दिखाई पड़े। वह बात ताड गया और राजाके वध करनेका निश्चय किया। एक दिन वह राजाको आखेटके बहाने नगरसे दूर ले गया और जब वह थककर पेडके नीचे सो गया तो उसका वध कर डाला। और नगर लौटकर प्रसिद्ध कर दिया कि जगलमे राजाको जन्तुओने खा डाला।

जिस समय वैरोचन राजाकी हत्या कर रहा था उसी समय पासके पेडकी डालसे कुछ खटका हुआ। वैरोचनको सन्देह हो गया कि किसीने उसे कुकृत्य करते हुए देख लिया है। और यह बात उसे सदैव खटकती रही। वस्तुतः उस समय राजकीय उपवनका माली वहाँ काम कर रहा था। उसने अमात्यकी कुचेष्टाएँ भाँप ली और छिपकर एक पेडपर जा बैठा। उसके पेडकी डाली खटक उठी। इससे माली भयभीत हुआ और नगर छोड़कर भाग गया। कुछ दिनो बाद जब वह घर लौटकर आया तो उसकी पत्नीने उससे गायब रहनेका कारण पूछा। एकान्तमे मालीने उसे सारी बात बता दी। राजाके गुप्तचरोने यह बात सुन ली और नये राजाको इसकी सूचना दे दी। राजाने वैरोचनको बुला भेजा। जब उसे ज्ञात हो गया कि अब उसके प्राण नही बचेगे तो उसने अपने पुत्र द्वारा अपनी हत्या करा ली। (हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १०, अक २ मे माताप्रसाद गुप्त लिखित नंद-बतीसी शीर्षक लेख)

१२२

(दिल्ली; बीकानेर)

एक माँस लहरहिं[१] मँह रहा। भँवइ लागि दइ[२] सेंउ कहा ॥१
बिबि कर बन्दों[३] तोसेंउ[४] माँगों। मोंख देहु हों लहरहिं[५] खाँगों ॥२
लहरैं नरिन्दैं रहीं[६] गँभीरा। दइय मया करि[७] पायसु[८] तीरा ॥३
गिरि परबत एक[९] देखिसि[१०] तहाँ। दोइ[११] जन आइ[१२] जुहारे[१३] जहाँ ॥४
पूछसि[१४] कवन रहहु तुम्ह[१५] कहाँ। यह ठाँ और न कोई जहाँ[१६] ॥५
जिंह[१७] र बाट तुम[१८] आयउ भूली[१९], हम[२०] आये तिंह[२१] बाट।६
परबत देख तीर हम जाना, इहाँ न आहे घाट ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–लहरि। २–बिनवै लाग दइय। ३–जोर। ४–दइय सै। ५–लहरिहु। ६–लहरि नरिंद उठी। ७–पाव किहि। ८–पाइसि। ९–×। १०–दुइ। ११–आये। १२–जोहारे। १३–कहाँ। १४–पूछी। १५–तुम। १६–तेहि ठाँऊँ रहै न मानुस जहाँ। १७–जेहि रे। १८–तुम। १९–आयेहु भूले। २०–हमहु। २१–तेहि।

टिपप्णी—(१) भँवइ–चक्कर लगाते।
(२) बिबि–दोनों। मोंख–मोक्ष।
(३) मया–दया।

१२३

(दिल्ली, एकडला)

बोहित बहुत हमरि संग आवा[१]। बूड़े सबै खोज न पावा[२] ॥१
अउर[३] एक जो अचम्भो देखा। इहाँ भुअँगम बिपिरित पेखा ॥२
एक एक मानुस दिन दिन लेई। लेतै[४] खाइ न हाड़ो देई ॥३
माँनुस बहुतै बोहित आहे[५]। लइ[६] कै खायसि हम दोइ[७] रहे ॥४
अबँहि क घरी हमहि लै जायसि[८]। लइके[९] फारि तोरि कै खायसि[१०] ॥५
निघटै बात न पाइ उन्हकै[११], ततखन बिसँहर आइ[१२]।६
इँह[१३] मँह एक[१४] लेतसि[१५] धरिके[१६], लै अपना कहँ जाइ[१७] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१– हमरे सग आये। २–नहि पाये। ३–और। ४–लैइ कै। ५–बोहित म अहे। ६–लैइ। ७–दुइ। ८–अबही घरी हमे ले जाइह। ९–लै के फारि। १०–खाइह। ११–उनकी। १२–आए। १३–दुहुँ। १४–एकै। १५–लीतिसि। १६–×। १७–लै इहवाँ हुते जाए।

टिप्पणी—(२) भुअंगम–सर्प। बिपरित–विपरीत, असाधारण (३) लेई–लेता है। हाड़ो–हाड़ भी; हड्डी भी। देई–देता है: छोडता है।

(५) अबहिं–इस । घरी–घडी । फारि–फाड । तोरि–तोड ।

(६) निघटै–समास । बिसँहर–विषधर; सर्प ।

(७) धरिकै–पकडकर । कहँ–के पास ।

१२४

(दिल्ली; एकडला)

पुनि[१] जो उहै भुअंगम आवा । दुसरहि लइगा[२] खोज न पावा ॥१
देखि कुँवर यहि रोवइ[३] लागा । करम हमार बाउ[४] हम भागा ॥२
संगी साथ न कोऊ[५] कीन्हेउँ[६] । बनखँड सायर मँह धँस लीन्हेउँ[७] ॥३
हम डर अपनै जिय क न आही । को सुधि कहइ हमरेउ[८] ताही ॥४
जो रे भुअंगम हम कहँ खाई । मिरगावति सेउँ[९] को कहि[१०] जाई ॥५
यह चिन्ता चित सालै मोरे[११], वह न जान[१२] हम सुख ।६
को र[१३] सुनै किह पठवउँ[१४] यह[१५], को र[१६] कहै हम दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–फुनि । २–दोसरेहि लैगा । ३–अेह रोवै । ४–बॉव । ५–कोई । ६–कीन्हेव । ७–दीन्हेव । ८–कहै हमारी । ९–मिरगावती सो । १०–कह । ११–मोरेउ । १२–उह जानै । १३–रे । १४- केहि पठवौ । १५–× । १६–रे ।

टिप्पणी—(२) करम–कर्म, भाग्य । हमार–मेरा । बाउ–बाम । भागा–भाग्य ।

(३) धँस–घुस पैठ ।

(६) सालै–(क्रि० सालना) कॉटेकी तरह चुभना ।

१२५

(दिल्ली, एकडला)

दई[१] बिधाता तूँ पै आही । तोहि छाड़ि कै बिनवो काही ॥१
तोहि छाड़ि जो औरहि धावइ[२] । करमहीन मग[३] जनम न पावइ[४] ॥२
फुन र[५] भुअंगम आयउ ओही[६] । घन गज घटा उठे लग तोही[७] ॥३
आयउ[८] मीचु जाइ नहिं फेरी । कुँवर आस छाड़ी जिय केरी ॥४
जो पै आउ घटी हुत मोरी । जो घर मरतेउँ[९] लागत खोरी ॥५
यहि[१०] अनन्द जिय[११] मोरैं बारे[१२], मुयेउ पेम उहि लागि ।६
जो पै काल घट न हुत मोरा, ना र उबरतेउ[१३] भागि ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दैअ । २–मगु धावै । ३–मगु । ४–पावै । ५–बहुरि । ६–आए उही । ७–मोही । ८–आई । ९–मरतेव । १०–ओहि । ११–जिअ । १२–नाहि उबरतेव ।

टिप्पणी—(१) बिनवो–विनय करूँ ।

(४) मीचु–मृत्यु। फेरी–लौटाई। आस–आशा। छाड़ी–छोडी। केरी–का।
(५) आउ–आयु।
(६) बारे–लेकिन। मुयेउ–मरा। उहि–उसके। लागि–के लिए।
(७) काल–मृत्यु। घट–घटा, कम हुआ। ना–नही। उबरतेउ–उद्धार पाता।

१२६

(दिल्ली, एकडला)

फुनि जो सरप नियर वहि[1] आवा। राजकुँवर कँह चाहसि[2] खावा ॥१
दई[3] क मया कुँवर कँह आई। दूसर[4] भुअंगम दीन्हि दिखाई ॥२
दूनो[5] आपुन[6] मँह अस लरे। भा अकूत[7] सायर मँह परे ॥३
दोऊ लहर परे पराई[8]। लहर[9] साथ बोहित[10] बहिराई[11] ॥४
बोहित[12] आइ तीर होइ[13] परा। कुसल भई[14] कुँवर उबरा ॥५
रहसा पायउ[15] तीर देखि कै, घट मँह आई साँस।६
जो उबरेंउ[16] यह काल जम सेउँ[17], अहै[18] मिले कै[19] आस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–मैं। २–चाहै। ३–दैअ। ४–दोसर। ५–दोनो। ६–आपु। ७–मै अकूति। ८–दुहुँ क परत लहरि बडि आई। ९–लहरि। १०–बोहिथ। ११–विहराई। १२–बोहिथ। १३–होए। १४–भएेव। १५–पाइसि। १६–उबरेव। १७–सौं। १८–आहि। १९–की।

टिप्पणी—(१) सरप–सर्प। चाहसि–चाहा।

(३) दूनों–दोनो। अस–ऐसा। लरे–लड़े। अकूत–पाठ अकूट है या अकूत यह स्वतः निश्चय करना कठिन है। किन्तु पदमावत-(बाजन बाजहिं होइ अकूता। दुओ कन्त लै चाहहिं सूता ॥ ४९५।५) और चितरावली (गेरुआ वस्त्र चढ़ाइ विभूता। शिव शिव बोलहि उठै अकूता ॥ २७०।३)से निश्चित हो जाता है कि शब्द अकूत है। वासुदेव शरण अग्रवालने इसका अर्थ दिया है दिव्य ध्वनि। किन्तु यह अनुमान मात्र और कल्पना जनित है। इसका अर्थ है—शोरगुल, हल्ला, असाधारण ध्वनि।
(४) पराई–भाग। बहिराई–बाहर हुई। उबरा–उद्धार हुआ।
(६) रहसा–हर्षित हुआ। घट–शरीर।
(७) जम–यम। अहै–है। मिलै कै–मिलनेका। आस–आशा।

१२७

(दिल्ली; एकडला)

बोहित[1] छाड़ि चला[2] जो[3] जाई। देखिसि[4] एक अँबराउँ सुहाई[5] ॥१
कहसि पैठि देखउँ[6] अँबराई। बइठों जहाँ[7] निमिख एक जाई[8] ॥२
आइ बैठि[9] जो देखी काहा[10]। बहु फुलवारि अमिय फर आहा[11] ॥३

जानहु यह कबिलास कै[१२] बारी। कै र[१३] इन्द्र आपु लागि[१४] सँवारी ॥४
फिरि कै नगर क पूछउँ[१५] नाऊँ। कउन नाउँ[१६] आहै यह[१७] गाँऊँ ॥५
फुनि जो देखसि फिरि कै चलि कै[१८], भवन[१९] अपूरब[२०] एक।६
कहिसि जाइ यहि[२१] भीतर देखउँ[२२], दहुँ का आहै नेक ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–बोहिथ। २–चल। ३–×। ४–देखै। ५–अवरॉव सोहाई। ६–देखौ। ६–बैठो जाए। ८–छाई। ९–आए बैठ। १०–देखै अँबराई। ११–आही। १२–क। १३–रे। १४–लगि। १५–पूछौ। १६–कौन नाव। १७–एहि। १८–×। १९–भौन। २०–अपुरुब। २१–जाए एहि। २२–देखो।

टिप्पणी—(१) अँबराउँ–(सं० आम्राराम) आमका बगीचा।

(२) अँबराइ–(स० आम्राराम) आमका बगीचा। बइठो–बैठो।

(३) कहा–क्या। अमिय–अमृत। फर–फल।

(४) कबिलास–कैलास, स्वर्ग। बारी–बाटिका, बगीचा। लागि–के लिए; निमित्त।

(५) फिरिकै–घूमकर।

(७) नेक–अच्छा।

१२८

(दिल्ली; एकडला)

पँवरि नाँघि जो भीतर आवा। कछु आरो मनुसै कै पावा ॥१
आगैं आइ[१] जो देखी भोला। कुँवरि सेज एक बैठि अमोला ॥२
फुनि[२] जो[३] अचम्भो देखी काहा। बदन चाँद जनु[४] उदिनल आहा ॥३
एकसर चाँद कवन[५] गुन आही। नखत न आवइ[६] बारँहि ताही ॥४
कँवल अमोलक इकसर काहा। भँवर आइ कै कीन्ह न चाहा[७] ॥५
अमिय सरै अध कँवल गहि, जिमि पावस धन मेह।६
अबला सरल[८] जो सलिल भई[९], किमि कारन किह एह[१०] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–जाइ। २–पेखै। ३–बहुरि। ३–×। ४-जनि। ५–कौन। ६–उऐ न। ७–भौंर न आये काह नहि चाहा। ८–सलिल। ९–भै। १०–कह एह।

टिप्पणी—पँवरि–ड्योढ़ी, प्रवेश द्वार। नाँघि–लाँघकर; पार करके। आरो–आहट।

(३) अचम्भो–आश्चर्य। बदन–मुख। उदिनल–उदित।

(४) एकसर–अकेला। कवन–किस। गुन–गुण; कारण। नखत–नक्षत्र; तारे। बारहिं–निकट।

(५) अमोलक–अमूल्य।

(७) किमि–किस। किह–क्यो। एह–यहाँ।

१२९

(दिल्ली)

सूर पूछ ससि किह गुन रोवा। गहन लाग कै र कछु खोवा ॥१
खोयउँ कछु न हौं जिय खोई। लागहि [गहन कहसि मैं सोई ॥२
गहन लाग फुनि छाड़ी जानाँ। यह राकस कैसहिं न मानाँ ॥३
हमकहँ दई लिखा सो होई। तौं र चाह फुनि आयहु सोई ॥४
राकस कँह हौ दुख ना दीन्ही। माटी तैं मोह न कीन्हीं ॥५
तौं र जाहु यहि ठाँउ जरी सेंउ, मोहि आवइ तुर मोह ।६
केदा देख रूप तरुनापा, हम आवइ जिय मोह ॥७

टिप्पणी—(१) सूर–सूर्य। गहन–ग्रहण।
(२) राकस–राक्षस।
(५) माटीं–मिट्टी; शरीर।
(६) जरी–जल्दी। मोहि–मुझे। तुर–(तोर) तुम्हारा।
(७) तरुनापा–तरुणाई।

१३०

(दिल्ली, एकडला)

तूँ र तिरि आछहि[१] यहि[२] ठाऊँ। छाड़ों तोहि भागि कँह[३] जाऊँ ॥१
यह र[४] बात पूछउँ[५] कहु[६] मोही। राकस कहुँ[७] कस दीठि न[८] तोही ॥२
तोरहि पितहि नाँउ[९] है काहा। नगर कवन तहाँ पति आहा[१०] ॥३
देवराइ पति नगर सुबुद्ध्या[११]। राघोबंस जो आहै अजोध्या[१२] ॥४
पिता हमार हौं र तिह[१३] धिया। नाँव हमार रुपमनि उन्ह[१४] किया ॥५
राकस एक रहत है पंथा[१५], बरिस देवस एक लेइ[१६] ।६
यहि र[१७] बरिस ओसरी[१८] हम आई, तो उन्ह हम कँह देइ[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—
१–आछसि। २–एहि। ३–के। ४–रे। ५–पूछौ। ६–×। ७–कइ। ८–दीन्हि नहि। ९–नाव। १०–नगर कौन अेहको पति आहा। ११–सुबुधेया। १२–आह अजोधेया। १३–रे उन्ह। १४–नॉव मोर उन्ह रुपिमनि। १५–रहत यहि ठाईं। १६–लेए। १७–एहि रे। १८–उसरी। १९–देए।

टिप्पणी—(१) तिरि–(त्रिया) स्त्री। आछहि–हो। छाड़ों–छोड़ूँ।
(४) देवराइ–देवराय। पति नगर–नगर पति। राघोबंस–राघव वंश।
(५) धिया–पुत्री। नाँव–नाम।
(७) ओसरी–बारी

१३१

(दिल्ली; एकडला)

जो तिह[1] बाट सो मोरिउ आई। तोहि छाड़ि मोहि जाइ न जाई ॥१
तोहि छाड़ि कै जो हौं जाओं[2]। बरिस लाख दस[3] हौं न जियाओं[4] ॥२
मारौं आजु बिधाँसों सोई। राकस छाड़ि[5] जो भोकस होई ॥३
कुँवर बात निरभौ अनुसारी। खतरी[6] कुँवर[7] कहा मन नारी ॥४
कुँवरि कहा जो जातसि[8] नाहीं। बैठु आइ[9] मोरी परछाहीं ॥५
कहसि[10] औंधि अहै मोहि[11] जब[12] सेउँ[13], बैठउँ[14] तिरी न पास ।६
औंधि बचा पतिपारौं, जब लगि है तन साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–तोरी। २–जाऊॅं। ३–एक। ४–जिअउँ। ५–छोडि। ६–खतिरि। ७–कोइ। ८–जातेसि। ९–आए। १०–कहिसि। ११–हम आहे। १२–१३–×। १४–बैठों।

टिप्पणी—(१) तिह–तुम्हारी। मोरिउ–मेरी भी।

(३) बिधाँ सों–विधिसे, तरकीबसे; अथवा बिधाँसों–विध्वस करूँ। सोई–उसे। भोकस–(सं० पुल्कस>पुक्कस>पोकस>भोकस) भूत।

(४) निरभौ–निर्भय होकर। अनुसारी–कही। खतरी–क्षत्रिय।

(५) जातसि–जाते हो। परछाहीं–छाया; यह निकट से तात्पर्य है।

(६) औंधि–प्रतिज्ञा। तिरी–स्त्री।

(७) बचा–वचन। पतिपारौं–(स० प्रतिपालन) रक्षण; पालन।

१३२

(दिल्ली; एकडला)

बात कहत हा[1] सो न घटानी[2]। वह[3] आयउ जाकहि[4] यह आनी ॥१
सात सीस चउदह[5] भूदण्डा। जनु[6] रावन आयउ[7] बरिवण्डा ॥२
रुपमनि[8] कहि यह राकस सोई। लेइ आउ घबरि[9] कै रोई ॥३
कुँवर कहा सरन गहु[10] मोरी। हौं मारौं यहि मस्तक तोरी ॥४
कुँवर फिराइ चक्र सेउँ[11] मारा। सीस टूटि एक[12] बहुरि सँभारा ॥५
सात सीस सों आयउ विपरित[13], उन्हें र[14] हनेउ सत बार ।६
जनु सुमेरु गिरि फाटेउ[15] पिरथी[16], खरभर परेउ अकार[17] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–ए। २–खुरानी। ३–उवह। ४–जेहि कह। ५–चौदह। ६–जनि। ७–अहेउ। ८–रुपिमिनि। ९–लए आवा गहबरिके रोई; (दि० मार्जिन)–ले उसास हिए भर रोई। १०–कहा तू सरनहि। ११–सो। १२–फुनि। १३–×। १४–एरे। १५–फूटेव। १६–×। १७–(दि० मार्जिन) हकार।

टिप्पणी—(१) **घटानी**–समाप्त हुई।

(२) **चउदह**–चौदह। **भूदण्डा**-भूदण्ड, हाथ। **रावन**–रावण। **बखिण्डा**–(अप० बलिवण्ड, स० वलिवृन्द) बलवान।

(३) **घबरि**–घबडा।

(४) **सरन**–शरण। **गहु**–पकडो।

(५) **फिराइ**–घुमाकर। **बहुरि**–पुनः।

(६) **हनेउ**–हनन किया, मारा। **सत**–सात।

(७) **फाटेउ**–फाडा। **पिरथीं**–पृथ्वी। **खरभर**–हल चल। **परेउ**–पडा। **अकार**–आकाश।

१३३

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि देखि बह गइ बिसँभारा[१]। जानहु फूल मुरझि[२] गै[३] मारा ॥१
कुँवर सींचि कै पानि जियाई[४]। कहिसि देखु[५] मारेउँ सकताई[६] ॥२
चाँद गहत मारेउँ (भल[७]) जानाँ। नखत मोंति उर तिय कँह[८] आनाँ ॥३
बहुतै मोंति निछावरि कीनसि[९]। राकस मारि हम र जिउ[१०] दीनसि[११] ॥४
जस दंगवै भीम परगाही[१२]। वै[१३] साहस तै[१४] अउर[१५] निबाही ॥५
तू हम बीर मोह जो पायसु[१६], अब मानों गुन सोइ[१७]।६
हौं बलि बलि बल[१८] तिंहकै[१९], जिंह[२०] पीर पराई होइ[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–बेसँभारा। २–मुरुझ। ३–गिय। ४–जगाई। ५–कहेसि देखु। ६–सुकुताई। ७–फुर। ८–नेकँह। ९–कीतिसि। १०–हमहि। ११–दीतिसि। १२–परिगाही; (दि० मार्जिन) जैस भीम कीचक परगाही। १३–तस। १४–×। १५–एंउर। १६–जस पाएस। १७–सोए। १८–×। १९–तोहि कह। २०–जेहि। २१–होए।

टिप्पणी–(१) **विसँभारा**–बेहोश, बदहवास। **गै**–गया।

(२) **सकताई**–शक्तिवाला; बलवान।

(४) **दीनसि**–दिया।

(५) **दंगवै**–पुरपट्टन (सम्भवतः अणहिलपट्टन) का राजा। **भीम**–पाँच पाण्डवोमे-से एक। **परगाही**–(धा० परिगाहना) परिग्रह बनाना; अपना कुटुम्बी बना लेना; सहायता करना। इस पंक्तिका संकेत उस लोक कथाकी ओर है, जो इस प्रकार है—एक समय दुर्वासा ऋषि इन्द्रलोक पहुँचे। उनके सम्मानमे इन्द्रने तिलोत्तमा नामक अप्सराके नृत्यका आयोजन किया। नृत्य करते समय तिलोत्तमाको ऋषि नृत्य-संगीतके प्रति अरसिक जान पड़े। अतः उसने नृत्य बन्द कर दिया और इन्द्रसे बिदा माँगने लगी। यह देखकर दुर्वासा ऋषि अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उन्होने शाप दिया कि पृथ्वीपर अवतरित हो

कर दिनमे घोडी और रातमे नारीका रूप धारण करे। शाप सुनकर तिलोत्तमा अनुनय विनय करने लगी। तब ऋषिने शाप मोचनकी व्यवस्था दी।

शापवश तिलोत्तमा पृथ्वीपर घोडीके रूपमे अवतरित हुई और उसे पुरपत्तनके राजा दगवैने अपने पास रख लिया। नारदको अपनी विचरण-यात्रामे इस बिचित्र घोडीकी बात मालूम हुई और उन्होने जाकर यह बात द्वारिका नरेश कृष्णसे कही। कृष्णने तत्काल दगवैसे उस घोडीकी माँग की। दगवैने जब देनेसे इनकार किया तो कृष्णने उसपर आक्रमण कर दिया। दंगवैने जाकर सुभद्रासे फरियाद की। सुभद्राने उसे भीमके पास भेज दिया। वे ही न्यायका पक्ष लेकर कृष्णका सामना करनेमे समर्थ थे।

दंगवै भीमकी शरणमे गया। भीमने उसे अभयदान दिया। फल स्वरूप कृष्ण और भीममे घोर युद्ध हुआ। युद्ध हो ही रहा था कि दुर्वासा ऋषिकी व्यवस्थाके अनुसार अप्सरा शापमुक्त होकर इन्द्रलोकको चली गयी।

वासुदेव शरण अग्रवालकी धारणा है कि इस लोककथाके मूलमे ऐतिहासिक घटना है। उनका अनुमान है कि इस लोककथाके भीम गुजरात नरेश चालुक्य भीम द्वितीय है। उनकी ख्याति भोलो भीमके नामसे है। दगवैसे तात्पर्य चित्तौर नरेशसे है जिसकी सहायता भीमने की थी। भीमकी राजधानी अणहिलपट्टनको दगवैकी उक्त कथाका लीलास्थल बनाना इस बातका सकेत करता है कि इस लोककथाके मूलमे ऐतिहासिक तथ्य है। उस ऐतिहासिक तथ्यको भीम और कृष्णके साथ जोड़ दिया गया है।

दंगवै भीमकी इस कथाके आधारपर दगवै पुराण और डंगवपर्व नामक काव्य लिखे गये हैं। और पदमावतमे जायसीमे इसकी चर्चा कई स्थलोंपर की है। (३६११२, ५०८।९; ५२६।८, ६२९।६)। कुतुबनके उल्लेखसे ऐसा जान पड़ता है कि इन रचनाओसे भी पहले यह कथा लोक-प्रचलित थी।
निबाही–निर्वाह किया, पालन किया।

(७) बलि बलि–निछावर। पीर–दर्द। पराई–दूसरोका।

१३४

(दिल्ली; एकडला)

जो गुन काहु कै[1] मानैं नाहीं। सो कुलवन्त होय जग काही ॥१
चाँद कहा अब सूरज आवउ[2]। एकँहि रासि बैठि नित धावउ[3] ॥२
सूर न आवइ चाँद कैं[4] रासी। चाँद गवन तो सूरज[5] पासी ॥३
दिन दोइ आउ दुहु रहहिं इक[6] ठाँई। तुम र[7] बिरिख[8] हौं र[9] तुम्ह[10] छाही ॥४
रुपमनि[11] बहु बिनती जो कही[12]। उनके[13] मोह कुँवर चित भई ॥५

यहिक दोख कछु नाही आहै[१४], जो ई होय मन[१५] सुद्‌ध ।६
कुँवर बात यह गुनि कै जिय मँह[१६], सेज बैठि वह मद्‌ध ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–काहे क । २–सुरुज आवहु । ३–धावहु । ४–चाँद न आवइ सूर क । ५–सुरुज । ६–दिन दुइ आए रहहु एक । ७–तोहरे । ८–पुरुख । ९–× । १०–तोहरी । ११–रुपमिनि । १२–कई । १३–उन्ह कै । १४–× । १५–जो पै मन है । १६–× । १७–मुध ।

टिप्पणी—(६) यहिक–इसका । दोख–दोष । ई–यदि । होय–हो ।

(७) गुनिकै–विचार कर । मद्‌ध–मध्य ।

१३५

(दिल्ली; एकडला)

कुँवरि कहा तूँ जोगि न होही । पूछौं बात सपत दइ[१] तोही ॥१
कवन नाँउ[२] घर कहाँ तुम्हारा । किह[३] कारन तुम्ह[४] जोग सँवारा ॥२
हौं जोगी जरमाँसों केरा । सिध होइ[५] कँह फिरि फिरि हेरा ॥३
मनछया बोलहु[६] कहहु[६] न साँचा । सपत[७] ताहि कै[८] जिह कँह[९] राँचा ॥४
जरम न कहतो[१०] जोग क[११] बाता । तिह कह[१२]सपत दीह[१३] जिह जिउ[१४] राता ॥५
अब फुर कहौं न बोलौं मनछया[१५], जो र[१६] सपत तुम्ह दीन्ह[१७] ।६
जिउ लागेउ एक ठाँई[१८], तेहि लग जोगि कया हम कीन्ह[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दै । २–कौन ठावँ । ३–केहि । ४–तोह । ५–होय । ६–मीथ बोल । ७–सपति । ८–× । ९–जासो चित । १०–कहतेउ । ११–की । १२–तेहिकी । १३–दियेहु । १४–× । १५ मीथ । १६–रे । १७–तोह दीन । १८–जिउ लगाए काढेइ । १९–कीन ।

टिप्पणी—(१) कुँवरि–कुमारी; राजकुमारी । पूछौं–पूछती हूँ । सपत–शपथ । दइ–देकर । तोही–तुमको ।

(३) जरमाँसों–जन्मजात । केरा–का ।

(४) मनछया–कपट । राँचा–अनुरक्त ।

(५) जरम–जन्म । कहतों–कहता ।

(६) फुर–शीघ्र ।

१३६

(दिल्ली; एकडला)

जो वह[१] सपत न देतसि मोही । मरम न जरमहि कहतेउ[२] तोही ॥१
अब सुनु[३] जो पूछइ[४] है बाता । कहौं मरम जा सेउँ[५] चित राता ॥२

पिता मोर राजा बड़वारू । गढ़ चन्द्रगिरि उतंग अपारू ॥३
गनपति देव पिता कर[१] नाऊँ । सुरुजबंस सिध हम ठाऊँ ॥४
कंचनपुर मिरगावति रानी । सो हम देखत[२] दिस्टि भुलानी ॥५
पूछहु कहुँ कइसैं तुम्ह[८] देखी, नियर न तुम सौं[९] आहि ।६
सपनैं देखि न राचै कोई[१०], सो त किह देखहु ताहि[११] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–एह । २–जरमहु मरम न कहतेव । ३–सुन । ४–पूछै । ५–सो । ६–के । ७–देखी । ८–हौ पूछो कैसे तोहि । ९–तोह सै । १०–× । ११–सोतुख देखे चाहि ।

टिप्पणी—(३) बडवारू–बहुत बड़े । उतंग–ऊँचा ।
(५) दिष्टि–दृष्टि ।
(६) नियर–निकट ।
(७) राचै–अनुरक्त होता है । सो त–अतः ।

१३७

(दिल्ली; एकडला)

दिन एक खेलइ गयउँ[१] अहेरा । हिरनी होइ[२] हम दिहसि[३] अभेरा ॥१
बरन सात होइ दिहसि दिखाई[४] । भूलेउ चित लागेउ तिह धाई[५] ॥२
धायउँ[६] धरे न पायउँ[७] ओही । पैठेउँ[८] सरवर जिउ लै मोही ॥३
सरवर तीर बरिस दिन सेवा । रिखि गन गन्ध्रप परसेउ[९] देवा ॥४
परसन देउ भये तो[१०] आई । आइ सखिन सेउ लागि अन्हाई[११] ॥५
चली नहाइ[१२] परेउँ[१३] खसि तिह ठाँ[१४], आइ उचायो[१५] धाइ ।६
दूसरि[१६] बार आइ[१७] फुनि[१८] सरवर[१९], चीर लियों[२०] तो जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–खेलै गउ । २–भै । ३–दीसि । ४–भै दीसि देखाई । ५–तहँ जाई । ६–धायेंव । ७–पायेउ । ८–पैठेव । ९–रेसेव । १०–भये देव तब । ११–सौं लगी नहाई । १२–नहाय । १३–परों । १४–× । १५–आए उठाए । १६–दुसरे । १७–जो आई । १८-१९–× । २०–लेयेव ।

टिप्पणी—(१) अभेरा–मुठभेड़, आमने सामने होना ।
(३) धरै–पकड़नेके लिए । ओही–उसे ।
(४) रिखि–ऋषि । परसेउ–(स० स्पर्श) स्पर्श किया; छुआ ।
(५) परसन–प्रसन्न । भये–हुए । अन्हाई–स्नान ।

१३८

(दिल्ली)

चीर लिहों तो आई हाथा। माँस पाँच आहे एक साथा ॥१
औधि किहिसि हुत रही न बाचा। गयी उड़ाइ देखि चित राचा ॥२
वहि कारन हम जोग सँचारा। जीवन भोजन उहै अधारा ॥३
रुपमनि मन यह बात समान.। सुनि जो सुख कै परम कहानी ॥४
अस कुलबन्त न आहै केऊ। नेह लाग जियँ कै परखेऊ ॥५
माँता पिता लोग जन छाड़सि, चढ़ धँस लिहसि अँगार ।६
चार पहर निसि बातिह गवईंह, फुन र भयउ भिनुसार ॥७

टिप्पणी—(५) केऊ–कोई। नेह–प्रेम।
(७) भिनुसार–प्रातःकाल ।

१३९

(दिल्ली; एकडला)

उदिनल भानु भयउ[1] उजियारा। रुपमनि[2] खोज चलेउ सँयसारा[3] ॥१
रोवत राजा भा असवारा। चन्दन काठ संग लिहसि[4] अपारा ॥२
कहति जाइ वहि[5] हाड़ो लेऊँ। जारो लइ क[6] मोंख वहि[7] देऊँ ॥३
भा निरास आवत हुत राजा। दई क कोउ न जानैं[8] काजा ॥४
निमिख एक मँह जियतहिं मारे। चाह त माटी लै रू(प)[10] सँवारे ॥५
आवत अहा निरास भा राजा[11], पायसु[12] जियत क[13] चाह ।६
कुँवरि जियत कहि लोगहिं[14], औ दूसर कोउ[15] आह ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–
१–भएव। २–रुपिमिनि। ३–चला संसारा। ४–लीन्ह। ५–कहिसि जाए अब।
६–लै रे। ७–उहि। ८–दैअ क गरुव न जानी। ९–तौ। १०–रे। ११–×।
१२–पाइसि। १३–कै। १४–कह लोगन्ह। १५–दोसर कोइ।

टिप्पणी—(२) काठ–लकड़ी।
(३) जारों–जलाऊँ। लइ क–ले करके। मोख–मोक्ष।
(५) माटी–मिट्टी।
(६) पायसु–पाया।

१४०

(दिल्ली; एकडला)

राजैं सुनाँ धाइ[1] कै आवा। राकस हना देखी कै भावा ॥१
फुनि आगैं जो देखी[3] सोई। दूसर[4] फुरहिं बइठ[5] है कोई ॥२

राजहि देखि कुँवरि घभरी[६]। ततखन[७] कुँवरि सेज परिहरी ॥३
राजैं कुँवरि गिंय लै लाये। जानु[८] आजु जननि यहि जाये ॥४
जानहु नौ कै भा औतारा। फिरै[१०] काज सोइ दई[११] सँवारा ॥५
फुनि र[१२] पूछि रुपमनि[१३] कँह राजा[१४], कइसे उबरहु[१५] धिय।६
को र[१६] राम जैं रावन मारा, सिय लाग[१७] हन जिय ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–धाय। २–उबह। ३–देखै। ४–दोसर। ५–बैठा। ६–गहबरी। ७–तेतिखन। ८–जानहु। ९–जाई। १०–बिहरा। ११–जो दैअ। १२–रे। १३–रुपिमिनि। १४–×। १५–कैसे उबरी। १६–रे। १७–सीय लागि।

टिप्पणी—(१) धाइ–दौड़कर। हना–मारा।
(२) फुरहीं–निकट। बइठ–बैठा।
(३) घभरी–(घबडी) घबडायी। ततखन–तत्क्षण। परिहरी–छोडा; त्यागा।
(४) गिंय–कण्ठ। लै लाये–लगाया। जननि–माता। जाये–जन्म दिया।
(५) नौ–नया। फिरै–बिगडा हुआ। काज–कार्य।
(६) उबरहु–उद्धार हुआ।
(७) जैं–जिसने।

१४१

(दिल्ली; एकडला)

कहसि राम यह देखहु आही। मारिसि दइत बिंधाँससि[१] ताही ॥१
राजैं गिंय लाइ दइ पाना। देखसि खतरी सूर[३] कराँना ॥२
राजा कुँवरिहि पूछइ[४] चाहा। जानहु कुँवरि[५] कउन यह[६] (आहा) ॥३
कुँवरि कहा हम सेंउ[७] बड़वारू। सूरजबंस[८] परस[९] सँयसारू[१०] ॥४
यहि[११] कर पिता राउ[११] बड़ आही। चन्द्रागिरिपति बोलहिं ताही ॥५
देवराइ[१२] मन अस कहा अपुनैं[१३], अब यहि जाइ[१४] न देंउ।६
पूत नाही घर मोरैं सन्तति[१५], (धिय)[१६] पलटि कै लेंउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–दवित विधाँसिसि। २–लाय दै। ३–देखिसि खत्री। ४–पूछे। ५–कोरे। ६–कउन एह। ७–सौ। ८–सुरुजबंस। ९–ससारु। १०–एहि। ११–राव। १२–देवराए। १३–×। १४–जाए। १५–×। १६–(दि०) जिउ।

टिप्पणी—(१) विधाँससि–विध्वस किया। पाना–पान। सूर–वीर।
(७) पूत–पुत्र।

१४२

(दिल्ली; एकडला)

कहसि[१] कुँवर तुम्ह[२] जोग उतारहु। जोग तन्त बैसन्दर जारहु ॥१
आधा राजपाट तोहिं[३] देऊँ। जगत जोति पलटि कै लेऊँ ॥२

तूँ राजा राजन्हि बड़ आही। हौं जोगी मोंकह का चाही[४] ॥३
जोगी राजपाट का करई। कढ़े भोग भोग[५] मन धरही ॥४
जोगी जबलगि सिध न होई। आसन मारि ना बइठै[६] सोई ॥५
गोरखपन्थ न पावों जब लगि, जोग न मोको[७] काउ।६
जोगी जंगम बापुरा, ना हम लाउ नसाउ[८] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–कहिसि। २–तोह। ३–तोह। ४–हाही। ५–गाढ़े होए जोग। ६–बैस नहि। ७–मुकौ। ८–लाव नसाव।

टिप्पणी—(१) जोग तन्त–योग साधना। बैसन्दर–(स० वैश्वानर> प्रा० वइस्साणर, बइसाणर> वैसाँदर) अग्नि, आग। जारहु–जलाओ।
(७) बापुरा–दीन, असहाय।

१४३

(दिल्ली; एकडला)

राजैं जोगी बहु फुसलावा[१]। कैसहिं[२] मान न वह बउरावा[३] ॥१
तो राजहि रिस[४] मन मँह लागी। बाहौं भकसी[५] जाहु न भागी ॥२
अस कै तिह[६] रखवारी लाऊँ[७]। जाहि न निकस[८] जहाँ व[९] ठाऊँ ॥३
कुँवर कहा यह भई[१०] मँदाई। जो अस करै काह[११] कै जाई ॥४
अब सो मन्त्र करों जिय अपनैं। तिह रिस जानौं[१२] न देखी[१३] सपनैं ॥५
अब तो हाथ परा पाथर तर, कर कर काढ़े जाइ[१४] ।६
मन्त्र इहै[१५] अब मोरैं जिय[१६], मानों कहै जो यह[१७] राइ[१८] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१–उसलावा। २–कैसेहु। ३–बौरावा। ४–रिसि। ५–भसकी। ६–तोह। ७–रखवारे लावो। ८–चाहन सुनसि। ९–उहि। १०–एह भएव। ११–कहा। १२–तेहि रस जाव। १३–देखिअ। १४–काढीअ जाए। १५–यहै। १६–× । १७–× । १८–राए।

टिप्पणी (१) फुसलावा–बहकाया।
(२) रिस–गुस्सा, क्रोध। बाहौं–जकड दूँ। भकसी–कारागार, जेल।
(३) मदाँई–बुरी बात। काह–क्या। कै–किया। जाई–जायेगा।
(६) पाथर–पत्थर। तर–नीचे।

१४४

(दिल्ली; एकडला)

अब जो यहि कर[१] कहा न मानों। मूरख कहइओं[२] मन्त्र न जानों ॥१
दिन दस रहउ[३] चाह फिरि लेऊँ। लइ[४] कै चाह बाट पगु[५] देऊँ ॥२

कहिसि राई तुम आयसु[६] जोई । जो मानसा चित पुरवहु सोई[७] ॥३
मुहि[८] का जो गति[९] मेटै पावौं । कहैं तुम्हार[१०] जोग उतारौं ॥४
जोग क साज आहा[११] सो उतारा । जोग तन्त बैसन्दर जारा ॥५
कापर सेत आन पहिरायहि[१२], निकसेउ[१३] रूप अपार ।६
[बाहि के][१४] हाथी अँबारी, कुँवर कीन्ह असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति—

१—एकर । २—कहिओ । ३—रहौ । ४—लै । ५—जगु । ६—कहिसि राए तोह आएस । ७—जो आयेस हौ मानौं सोई । ८—मोहि । ९—गत । १०—तोहारे । ११—अहा । १२—पहिरावा । १३—निकसा । १४—हाथी वाही ।

टिप्पणी—(१) कहइओं—कहलाऊँगा ।

(३) मनसा—इच्छा; विचार । पुरवहु—पूर्ण करो ।

(६) कापर—कपडा । सेत—श्वेत ।

(७) अँबारी—हौदा, हाथीपर बैठनेकी व्यवस्था, असवार—सवार ।

१४५

(दिल्ली)

लोग नगर सब देखै धावा । रावन मार सिय लै आवा ॥१
यहै राम जें मारेउ बारी । इहै कन्ह जै नाँथसि कारी ॥२
इहै राम जैं रावन मारा । इहै कन्ह जैं कंस बितारा ॥३
इहै भीम कर कीचक मारी । इहै दुसासन भुजा उपारी ॥४
इहै सिंह हरनाकुस हनाँ । धन सो जननी जैं यह जनाँ ॥५
लोग फूल भू पर ऊपर पूजैं कुँवर कै, अखत फूल तँबोल ।६
धन धन जननी रात सपूरन, जिंह यह भयउ अमोल ॥७

टिप्पणी—(२) बारी—बाली, सुग्रीवका भाई । कन्ह—कृष्ण । नाँथसि—नाथा, रस्सी लगाकर बाँधा । कारी—कालिया नाग ।

(३) बितारा—फाडा ।

(४) दुसासन—दुःशासन, जिसने द्रौपदीका चीर खींचनेका प्रयत्न किया था ।

(५) सिंह—नृसिंह । हरनाकुस—हिरण्यकश्यप । जनाँ—जन्म दिया ।

(६) अखत—अक्षत ।

१४६

(दिल्ली; एकडला)

चाँद अमावसु के घर बसा । सुरुज साथ आइ[१] परगासा ॥१
लोग कुटुँब सब आगैं आये । देखहिं[२] चाँद अंकौं ले[३] लाये ॥२
लोग[४] कुटुँब गा मँदिर[५] भरी । रुपमनि[६] जानु आजु औतारी ॥३

बहुत बधाई दसगुन कीही। बहुत निछावर[7] दुहुँ लग दीहीं[8] ॥४
घोर[9] पटोर सोन बहु रूपा। दाम दीन्हि अगिनित[10] भरि कूपा ॥५
जस निरास आवत हा[11] राजा, अस न हो[12] जग कोउ।६
जइस[13] आस उन्ह[14] पूजी जियकै[15] अस[16] जो होउ[17] तो होउ ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति–

१–आए। २–देखी। ३–ऑकौ गिय। ४–लोगन्ह। ५–मॅदिर गा। ६–रुपिमिनी ७–निछावरि। ८–(दि०) कीही, (दि० मार्जिन) दीही। ९–राज। १०–अगत। ११–हुत। १२–होए। १३–जैस। १४–उहि। १५–×। १६–अैस। १७–होए।

टिप्पणी—(२) अंकौं–अकमे।

(५) **घोर**–घोडा। **पटोर**–पटोल अथवा पाटोला नामक वस्त्र; यहाँ सामान्य रूपमे वस्त्रके अर्थमे प्रयुक्त हुआ है। **सोन**–सोना। **रूपा**–चाँदी। **दाम**–ताँबेका सिक्का। सिक्केके इस नामके सम्बन्धमे सामान्य धारणा रही है कि उसे पहले पहल अकबरने प्रचलित किया था। इस कारण अमीर खुसरोके खालिक बारीमे 'दाम' के उल्लेखके प्रमाणसे विद्वानोने उसे अकबर काल अथवा उसके पश्चात्की रचना सिद्धि करनेकी चेष्टा की है। किन्तु यह नाम अकबरसे पूर्व भी प्रचलित था यह इस उल्लेखसे तो स्पष्ट है ही। इसके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिलजीके टकसालके टकसाली ठक्कुर फेरूने अपके द्रव्य परीक्षामे और मौलाना दाउदने अपने चन्दायनमे इसका उल्लेख किया है। द्रव्य परीक्षाके अनुसार चाँदीका एक टक ६० दामके बराबर होता था। अकबरके समयमे रुपयेका मूल्य ४० दाम था। आइने-अकबरीसे ज्ञात होता है कि उस समय चाँदी-सोनेके सिक्कोके बावजूद राज्यका सारा हिसाब-किताब दामोमे ही रखा जाता था। चन्दायन तथा प्रस्तुत उल्लेखसे यह झलकता है कि दिल्ली सुल्तानोके समयमे भी लेन-देन और व्यवहारमें दामका ही अधिक प्रचलन था। **कूपा**–कुप्पा; चमड़ेका बना पात्र।

१४७

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

राजैं[1] कैं जिय अनन्द बधाई। कुँवर कै जिय[2] वह[3] चिन्त[4] न जाई ॥१
मनमहँ डरै हँसै औ[5] बोला। हियें आगि जनु[6] परिह[7] भँभूला[8] ॥२
आगि क[9] औखद[10] सबको[11] जाना। यह न मूर औखद कछु माना[12] ॥३
अउर[13] आगि जल सीचि बुझाई। यह न बुझाइ समुँद[14] लै जाई ॥४
सँमुदौ[15] जरै[16] गगन सब जरा। औ बासुकि[17] जरत ऊबरा[18] ॥५
भावता[19] नहि मेंटी[20], उठी[21] जो नख नख[22] आग।६
बसुधा जरै[23] न उबरै, आगि बिरह कै[24] लाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) राजा। २–(बी०) चित। ३–(ए०) उवह; (बी०) × । ४–(ए०) चीत; (बी) चिंता। ५–(ए०) मोहि तो डर हँसि; (बी०) मुँह तो डरहि हँसे और। ६–(ए०) जनि; (बी०) जरि। ७–(ए०, बी०) परहि। ८–(ए०, बी०) भभोला। ९–(ए०) कै। १०–(ए०) औखध; (बी०) ओषद। ११–(ए०, बी०) कोइ। १२–(ए०) एह न को रे औखध कै माना, (बी०) यह रे मूरि ओषद न माना। १३–(ए०, बी०) और। १४–(बी०) जौ समद। १५–समंद। १६–(ए०) जरी; (बी०) जरा। १७–(बी०) बासुक। १८–(ए०, बी०) उबारा। १९–(ए०, बी०) भावन्ता। २०–(ए०, बी०) मेटिए। २१–(बी०) उठइ। २२–(ए०, बी०)* २३–(बी०) वासुक सिख। जरा। २४–(ए०) की, (बी०) जो।

टिप्पणी—(१) चिन्त–चिन्ता।

(२) परिह–पडा। भभूला–राख।

(३) औखद–औषधि। मूर–जडी।

(५) वासुकि–सर्प। ऊबरा–निकला, बचा।

(६) भावता–भवितव्य, भावी।

१४८

(दिल्ली, बीकानेर)

राजा कहि[1] यह[2] गुन परिताऊँ[3]। गुन परिताइ[4] मरम तो[5] पाऊँ ॥१
राजपूत जो साँचहि होई। लखन बतीसों[6] होइहिं सोई ॥२
बड़ निहोराँ र सतुर उदारी। तेवरी खेलैं बहुत जुवारी ॥३
चौपर दाम तेवर[8] भल खेला। नकट्टा[9] सोरही बूझइ[10] मेला ॥४
बुधि सागर[11] खेले चौपखी[12]। औ[13] खेल[14] जानै दोपखी[15] ॥५
खेलसि खेल सपूरन कुँवरहि[16], देखी[17] सबै खेलाइ[18] ॥६
राजैं कहा और गुन बूझउँ[19], तो हम जिउ पतियाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कहा २–अब। ३–परताऊँ। ४–परताइ। ५–सब। ६–गुन संपूरन। ७–तिवरी आनि दूसरी डारी। ८–चौपरि राखि तिवरी। ९–सुकठा। १०–बूझै। ११–सगर। १२–चौबधी। १३–और। १४–खैलै। १५–दुबधी। १६–×। १७–देखसि। १८–खिलाइ। १९–पूछौं।

टिप्पणी—(१) गुन–गुण। परिताऊँ–परीक्षा लूँ जाँच करूँ। परिताइ–जाँचकर। मरम–मर्म; भेद।

(३) बड़–बहुत। निहोराँ–उपकार, एहसान। सतुर–शत्रु। उदारी–फाड डाला। तेवरी–जुआ।

(४) **चौपड़**—चोसर, पाँसोसे खेला जानेवाला जुआ। **दाम**—सम्भवतः जुएका कोई रूप। **तेवर**—जुआ। **नकटा**—जुएका सम्भवतः कोई भेद। यह नाम हमारे सुननेमे नही आया है। **सोरही**—सोलह कौडियोसे खेला जानेवाला प्रसिद्ध जुआ।

(५) **चौपखी**—चौपड़ खेलनेका एक ढग।[1] **दोपखी**—चौपड खेलनेका एक ढग।[1]

(७) **पतियाइ**—विश्वास आये।

१४९

(दिल्ली; बीकानेर)

हँगुरि[1] खेलै भये[2] असवारा। हाल गहसि[3] गोटा[4] भल मारा ॥१
रोपहिं[5] बेंझ अँबिलि कर पानाँ। मारसि[7] पहिलहिं चूक न[9] जाना ॥२
राजा कहा[10] अहेरैं जाई। साउज[11] मारि खेल फुर[12] आई ॥३
साउज उठे लोग सब धावा। कुँवरहि बहुत कर पावा[13] ॥४
पुनि केसरि एक उठेउ अहेरैं। मारसि बान राख मूँठ बहुतेरे[14] ॥५
राजा मनहि मन रसहा अपने, दई दीन्ह हम[15] पूत।६
जस चाहेउँ[16] तस पायेउँ बारक[17], यह उत्तिम जम जूत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—हेगुरी। २—भा। ३—किहेसि। ४—गोई। ५—रोप। ६—ऑबिली। ७—मारिसि। ८—पहलै। ९—चूकि नहिं। १०—कहा अब। ११—सावज। १२—घर। १३—जाइ अहेरे खेलै कहा। कुँवर बान गुन पारधी अहा॥ १४—पुनि केहरि उठेउ तेहि बन ही। मारिसि बान राखि मूड मॉही। १५—दइव दिहा मोहि। १६—जसरे चहेउँ। १७—बर। १८ काह और।

टिप्पणी—(१) **हँगुरि**—चौगान। **हाल**—चौगानके मैदानके अन्तमे बने हुए गुमटीनुमा दो खम्भे जिनके बीचसे गेद निकाली जाती है। खेलोके आधुनिक शब्दावलीमे गोल। **गोटा**—गोला, गेद।

(२) **बेंझ**—(सं० वेध्य) लक्ष्य। **आँबिली**—इमली। **पानॉ**—पत्ती।

(५) **केसरि**—(केसरी) सिह।

(७) **बारक**—बालक।

१५०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पूछसि[1] पढ़ै गुनै कछु[2] जाना। खट भाखा जो सपूरन माना[3] ॥१
सहस पढ़ा औ अरथ पचास क[4]। सूर सरन माकर चौरास क[5] ॥२
भारथ पिंगल[6] अमरू[7] जानाँ[8]। अरथ कहै[9] संगीत बखाना[10] ॥३
सालहुत्र[11] औ कोक पढ़ाई। पाठक पढ़ै[12] न एकौ जाई ॥४
घरी धरै फल[13] सगुन बिचारा। कहि[14] कथा[15] आरचा अपारा ॥५

---

[1] श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त सूचनाके अनुसार।

तिरिया चरित बेद(ा)गम[16] जाने, औ अति सरबग **जान[17]** ।६
गुन गन्ध्रप जानै बहु[18] विद्या, दस और चारि निदान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए० बी०) पूछिसि । २–(बी०) तुम । ३–(बी०) आना । ४–(ए०) सहस पढ़ा औ आइ बजासक, (बी०) सहस परकीरती आठ पॉच्र सक । ५–(ए०) सुरसर नाम कली चौरासक; (बी०) सुरसर नीर मॉधक चौर संक । ६–(बी०) खागल । ७–(ए०) अमरौ, (बी०) अमरौती । ८–(ए०) जाने । ९–(बी०) कहै अरथ औ । १०–(ए०) बखाने । ११–(ए०) साघोतर, (बी०) सालहोत्र । १२–(बी०) पढ़इ । १३–(ए०, बी०) भल । १४–(बी०) कहै । १५–(ए०) कासथा । १६–(बी०) बैद गुन । १७–(बी०) औ संगीत सर्वगुन जान । १८–(ए०) सब । १९–(बी०) विधि ।

टिप्पणी—(१) **खट भाखा**–षट् भाषा । भिखारीदासने षट्भाषाका उल्लेख इस प्रकार किया है—ब्रज मागधी मिलै अमर नाग, यवन भाखानि । सहज पारसीहू मिले षठ विधि कहत बखानि ॥ इसके अनुसार (१) ब्रज (२) मागधी (३) अमर (४) नागर (५) यवन और (६) पारसी की गणना षट्भाषा मे होती थी । यहाँ अमर से सम्भवतः संस्कृत का, नागर से अपभ्रंश का और यवन से अरबी का तात्पर्य है ।

(३) **भारत**–महाभारत । **पिंगल**–छन्दशास्त्र । **अमरू**–अमरूशतक; सस्कृतका एक प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ ।

(४) **सालहुत्र**–(शालहोत्र) अश्वशास्त्र । **कोक**–कोकशास्त्र, कामशास्त्र ।

१५१

(दिल्ली, बीकानेर)

राजैं[1] बूझि देखि मन मँतरी[2] । एक कुल सुद्ध[3] रुपवन्त जो खतरी ॥१
साचहिं[4] राजबंस[5] है कोई । बिन सुवंस कुलवन्त[6] न होई ॥२
राजा कहहिं[7] अब करों बियाहू[8] । जाति न पूछहु कहो कछु[9] काहू ॥३
राजा चींत[10] बियाह क[11] लागा । कुँवर ढूँढ़ि पँथ चाहै[12] भागा ॥४
मनकै[13] बात न काहू कहई । जोगी जंगम पूछत रहई ॥५
अहिनिसि झुरवइ साँस लइ[14], दई[15] सनाँ[16] अस माँग ।६
क्रितघ्न कोउ न जिह कहै[17] बाचा मोर न[18] खाँग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–राजा । २–मत्रा । ३–एक सुबेध । ४–सॉचेहु । ५–राजबसी । ६–बिनु सुवास गुन बात । ७–कहै । ८–बियाहा । ९–पूछौ है दहु । १०–चित । ११–कै । १२–ढूँढै । १३–चहै । १४–मन की । १५–लेर । १६–दइव । १७–से । १८–क्रितघन कोई कहई । १९–न मोरि ।

टिप्पणी—(१) **मँतरी**–विचार किया ।

(३) बियाहू–विवाह ।

(४) चींत–चिन्ता । लागा–लगा ।

(६) अहिनिसि–(अहर्निशि) रातदिन । सनाँ–से ।

१५२

(दिल्ली, बीकानेर)

पसरा काज[1] बियाह कों आवा[2] । नेउता लोग देस सब आवा[3] ॥१
जाचक जन मँगता बहु आये । भाट कपरिया सुन के धाये[4] ॥२
होइ लाग जेउनार अपारा । जेवन कहँ सब लोग हँकारा[5] ॥३
छींपर नेत पटोर बिछाई[6] । पातिंह पाँति जोरि[7] बैठाई[8] ॥४
जेवन जींह[9] भई जेवनारा[10] । करु खट पँचाबिरित अहारा[11] ॥५
फीका मीठा लोन कर खट्टा, अहा कसैला ईंत[12] ॥६
खीर दहिउँ घिउ माँस और अन्न, आए पाँचों अँब्रीत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–काजु । २–गनावै । ३–देसकर आवै । ४–होई लगी ज्योनार अपारा । बिजन चारि छतीसौ परकारा ॥ ५–बावन पूरि हाँडी चौरासी । बहु संधान पकवान गरासी ॥ ६–ओबरी लीपि पटोर बिछाये । ७–लोग । ८–बैसाये । ९–जेवहि । १०–ज्योनारा । ११–खटरस पचम अब्रित परकारा, (दि० मार्जिन) खटरस अब्रित भये अहारा । १२–मीठा, फीका लोना, खटा, कसैला, तीत । १३–खीर दही पसमसौर, औ सब पच अंब्रीत ।

टिप्पणी—(१) **पसरा**–फैला । **नेउता**–निमन्त्रण ।

(२) **जाचक**–याचक; याचना करनेवाले । **मँगता**–भीख माँगनेवाले ।

(३) **जेउनार**–ज्योनार; दावत । **जेंवन**–भोजन ।

(४) **छींपर**–छपा हुआ । **नेत**–(स० नेत्र) बटे हुए सूतका बना वस्त्र । क्षीरस्वामी के कथनानुसार यह जटांशुक है । महीन रेशमी वस्त्र भी नेत्र कहा जाता था पर यहाँ उससे तात्पर्य नही है । **पटोर**–एक प्रकारका वस्त्र; पटोल अथवा पटोला ।

(५) **करु**–कटु । **खट**–खट्टा । **पँचाबिरित**–पंचामृत ।

(६) **लोन**–नमक ।

(७) **दहिऊँ**–दही । **घीउ**–घी । **अँब्रीत**–अमृत ।

१५३

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

जेइ भौंजि के[1] खरीका लेई[2] । हाथ पखारि पान फुनि देई[3] ॥१
लोग बहोरा[4] बाँभन आये । लइके[5] मँड़ये तर बैठाये ॥२
जो कछु[6] राजन्हि[7] कै चलि आई । लागि करै सब जनै बधाई[8] ॥३

सोन सिंघासन छात[९] सँवारा । मुकट[१०] बाँधि[११] कुँवर बैठारा ॥४
रुपमनि[१३] कर[१४] जैंमारा[१५] गही[१६] । आनि कुँअर सिर ऊपर दिही ॥५
बाँभन बेद भनहि जो[१७] कुँवर कँह[१८], बारी[१९] रुपमनि[२०] लाइ[२१] ।६
पत्री[२२] जनम देखि गुन[२३] बोलहिं[२४], सौति साथ जम जाइ[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) कर। २–(ए०) किए, (बी०) लिये। ३–(बी०) दिये, (ए०) पानि पियावा। ४–(बी०) बहोहे। ५–(ए०. बी०) लैके। ६–जे किछु। ७–राजहु। ८–(ए०) लागे करै सब जेत बड़ाई, (बी०) लगे करै सब रीति बड़ाई। ९–(बी०) छत्र। १०–(ए०) मटुक। ११–(बी०) बाँधि कै। १२–(ए०, बी०) बैसारा। १३–(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि। १४–(ए०) के। १५–(बी०) जे माला, (ए०) जपमाला। १६–(ए०) किही। १७–(ए) ×। १८–(ए०) कुवँरहि। १९–(ए०) बारहिं; (बी०) बरी। २०–(ए०) रुपिमिनि, (बी०) रुकमिनि। २१–(ए०) लाए; (बी०) लाय। २२–(ए०) पतरी। २३–(ए०) गनि। २४–(ए०) × २५–(ए०) जाए।

टिप्पणी—(१) जेइ भोजि–खापीकर। खरिका–दाँत साफ करनेका तिनका। पखारि–धोकर।

(२) बहोरा–गये। बाँभन–ब्राह्मण। लइके–लाकर। मँड़ये–मण्डप। तर–नीचे।

(५) जैंमारा–जयमाल। आनि–लाकर।

१५४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कोई[१] अस कहा कुँवर हा राँधा। गाँठि बोल बाँभन कर[२] बाँधा ॥१
भाखा काम कुराल[३] कै[४] लीजै। जामघर कूचा जो कीजै[५] ॥२
यह तो पण्डित आह सयानाँ। पोथा अरथ बाँच सब[५] जानाँ[६] ॥३
मकु साखा[७] पुरवइ[८] करतारा। कथा[९] पेम[१०] रहै सँयसारा[११] ॥४
गाँठि[१२] जोरि कै भँवरी[१३] दीही। रीत-चार कुल अही[१४] सो[१५] कीही ॥५
दाइज अस कै दीन्ह[१३], जग[१७] अइस[१८] न दीनहि[१९] काहु ।६
आधा राजपाट भँडारो[२०], बरिस सहस दस खाहु[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) एअ; (बी०) येइ। २–(ए०) कै। ३–(बी०) करील। ४–(ए०) क; (बी०) की। ५–(ए०) जानो घर कुजा जो कीजै; (बी०) जयुक ओखर कुच जो गनीजै। ६–(ए०) पोथी माझ देख तौ जाना, (बी०) पोथी बाँच देख भल जाना। ७–(ए०) मकु साका, (बी०) जाकहु अस। ८–(ए०,बी०) पुरवै। ९–एक कथा। १०–(बी०) नेह। ११–(ए०) संसारा, (बी०) सैंसारा। १२–(ए०,बी०) गाठी। १३–(ए०) अवरी, (बी०) भाँवर। १४–(बी०) आहि। १५–(बी०) सु। १६–

(ए०) दीन्ही; (बी०) दीतसि। १७–ए० ×; (बी०) जग मँह। १८–(ए०) ऐस; (बी०) अस। १९–(ए०) दीन्हेव। २०–(ए०,बी०) भंडार। २१–(ए०) खाहि।

टिप्पणी—(५) भँवरी–भँवरी,फेरा।

(६) दाइज–दहेज।

१५५

(दिल्ली; एकडला[१], बीकानेर[१])

मँदिर सँवारि[१] सेज बिछाई[२]। दूनो जनैं[३] बइठे (तिहँ)[४] जाई[५] ॥१
कुँवर न रावइ[६] मनमँह रोवसि[७]। सँवरै[८] तिह[९] जो[१०] हाथसैं[११] खोयसि[१२]॥२
कुँवर कहा यह बुधि कछु[१३] नाही। बातिह भुरउ जिह[१४] पतियाही[१५] ॥३
बात जो कर कर कीजइ[१६] सोई। बरु सेउँ[१७] कीजइ[१८] नेह न होई ॥४
हौं तो बरिसिक[१९] बातहि[२०] राखौं। तिरिया चरित[२१] सखिन[२२] सेउँ[२३] भाखौं ॥५
असकै यह बातँहिं[२४] बोरावौं, यह जानै मोहि[२५] चाह।६
कँवल जान रस बिंधा[२६] भँवरा[२७], भँवर चलै[२८] उड़ि ताह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) सँवारि जो; (बी०) सँवरिके। २–(बी०) ×। ३–(ए०) जन। ४–(ए०) तहँ। ५–(बी०) दुवौ सेज पर बैसे जाई। ६–(ए०) रावै, (बी०) ×। ७–(ए०,बी०) रोइसि। ८–(ए०) सौरि, (बी०) सोरिसि। ९–(ए०,बी०) तेहि। १०–(ए० बी०) जेहि। ११–(बी०) सौ। १२–(ए०,बी०) खोइसि। १३–(ए०) कुछु, (बी०) किछु। १४–(ए०) बातन्ह भोरवो जे; (बी०) बातन भोरँऊ जेहि। १५–पतियाई। १६–(ए०) कीजै। (बी०) करियै। १७–(ए०,बी०) बर सौं। १८–(ए०) कीजै, (बी०) किये जो। १९–(ए०,बी०) बरिस एक। २०–(ए०) बातन्ह, (बी०) बातन। २१–(बी०) चत्र। २२–(ए०) कहहु; (बी०) सिखै। २३–(ए०) सो; (बी०) से। २४–(ए०) बातन्ह; (बी०) बातन। २५–(बी०) हम। २६–(ए०; बी०) बेधा। २७–(ए०बी०) ×। २८–(ए०) भौर जाय; (बी०) जाय भौर।

टिप्पणी—(१) दूनों–दोनो। जनैं–व्यक्ति।

(३) भुरउँ–भुलवा दूँ।

(५) बरिसिक–(बरिस इक) एक वर्ष।

१५६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर रसारस बात सँचारी[१]। कहसि[२] सुनहु तुम[३] प्रानअधारी ॥१
वहि[४] सों मैं[५] तों[६] दसगुन[७] पाई। अब चितमन लागेउ तिह[८] धाई ॥२

एकडला और बीकानेर प्रतिमें पंक्ति ४,५ क्रमशः ५ और ४ है।

अँबली ढूँढ़त हो [इन्ह] आवा[9]। पायउँ आँब जइस[10] मन भावा ॥३
चाहत भर[11] अहारैं[12] पायउँ। भाग हमार जो ईहाँ[13] आयउँ ॥४
तिह[14] अस तिरी[15] न देखेउ काऊ। जिउ[16] आपु[17] लागि करौं बहु चाऊ।
बातहिं[18] अस बोरायसि[19] भोरयसि[20] कुँवरि जानु कहि[21] साच।६
मन कपठी मुँह भीतर भोरा[22], चित र[23] तहाँ जिह राच ॥७

पाठान्तर—एकडला, और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) समोरा। २–(ए०,बी०) कहिसि। ३–(ए०) तोह। ४–(ए०) उहि। ५–(बी०)× । ६–(ए०) तुह, (बी०) तुमै। ७–दस गुनी। ८–(ए०) तोहि लागेव; (बी०) लागेव तोहि। ९–(बी०) ऑबिली ढूढ़ँत मै इह ठॉ आयेउँ। १०–(ए०; बी०) जैस। ११–(ए०) फुर रे; (बी०) फर। १२–(ए०, बी०) सोहारी। १३–(ए०,बी०) एहि ठॉ। १४–(ए०,बी०) तोहि। (बी०) त्रिया। १६–(बी०) जी। १७–(ए० बी०) अब। १८–(बी०) बातन; (ए०) बातन्ह। १९–(ए०, बी०) बोराइसि। २०–(ए०,बी०)×। २१–(ए०) जान कह; (बी०) जान कहत है। २२–(बी०) सूधा। २३–(ए०,बी०) रे।

टिप्पणी—(३) अँबली–इमली। आँब–आम।
(६) बोरायसि–बहकाया। भोरयसि–भुलावा दिया।

१५७

(दिल्ली; बीकानेर)

खेलि गई निसि भा भिनुसारा[1]। कुँवर करै असनान सिधारा ॥१
कइ असना[न] पहिराइँह[2] बागा। पान हाथ लै चला (सुभागा[3]) ॥२
सभा जाइ कै बइठ सुजानाँ। जस[4] उजिआर चाँद[5] जग मानाँ[6] ॥३
कुँवर गैं बैठे सभा सँवारी। राजपूत भल रूप मुरारी[8] ॥४
धरमसाल[9] एक कहसि[10] उचावहु। पन्थी आवत[11] पानि पियावहु ॥५
जोगी जंगम तपसी जती[12] सन्यासी [जो] आउ[13]।६
जो र आउ इँह ठाँईं[14], भोजन सब कोउ पाउ[15] ॥७

पाठान्तर—बीकनेर प्रति—

१–भुनिसारा। २–फिराइसि। ३–सभागा। ४–जस रे। ५–चर्द ६–माना। ७–के। ८–मुरारी। ९–धर्मसाल। १०–कहिसि। ११–आवन्हि तिन्ह। १२–जोगी जगी तपसी जंगम। १३–आव। १४–जो रे आवै इहि ठावँ। १५–केउ पाव।

टिप्पणी—(१) असनान–स्नान।
(२) बागा–वस्त्र।
(४) गैं–जाकर।

१५८

(दिल्ली, बीकानेर)

धरमसार[1] एक नीक उचावा। जोगी जंगम पन्थी[2] आवा ॥१
पुन्न धरमसारे कर लेई। बहु भोजन[4] सब कहँ वह[5] देई ॥२
जोगी जती सन्यासी[6] आवा। देस देस कर[7] पूछै भावा ॥३
गोंठ करै उँह बैठा ठाँऊँ[8]। कनकनगर कै पूछै[9] नाऊँ ॥४
निहचौं[10] चाहि[11] न कोई[12] कहई। पीर हियें कहँ चित मँह रहई[13] ॥५
धरम मानते रुपमनि कै ठाँई, मँहि उहँ कहि बोराउ[14] ।६
चित मुरकाइ[15] पौन सँग देतेसि, चाँद लीन्ह उड़ाउ ॥७

पठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–धर्मसाल। २–पन्थी जो। ३–सब। ४–भोजन पाव। ५–×। ६–सन्यासी जो। ७–के। ८–गोस्टी कै बैठे उहि ठॉऊ। ९–कर पूछै। १०–निस्चै। ११–चाह। १२–कोऊ। १३–पीर हिये गहि कैसे रहई। १४–धर मॉटी रुकुमिनिके ठॉऊ, मुँह बातनि बोराइ। १५–मुकरावै। १६–×। १७– दिस्टि चन्द पथ जाइ।

टिप्पणी—(१) नीक–अच्छा।
(२) पुन्न–पुण्य।
(४) गोंठ–गोष्ठी। कनकनगर–कचनपुर।
(५) निहचो–निश्चय। चाहि–जानकारी।

१५९

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कै गियान[1] रुपमनि[2] चित गुना[3]। कुँवर क[4] मन नाहीं[5] हम सना ॥१
मुँह बातहिं[6] हमकहँ बोरावइ[7]। चित अनतैं[8] अधरन[9] फुसलावइ[10] ॥२
लइ खटवाटि परी वहि[11] रानी। कुँवर सुनाँ वहि जिय[12] सुखानी ॥३
सभा बटोरि[13] मंदिर[14] मँह आवा। देखत फिरकै[15] अनो चलावा ॥४
औ खटवाटि पाटि[16] लै परी। कुँवर देखि चिर मँह रिस चढ़ी ॥५
तपसप सै[17] रुपमनि[18] रोई[19], घबर[20] कुँवर[21] गहा जो[22] चीर।६
उर फाटै कँह[23] चाहै, खिनक न बाँधे धीर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) गेआन। २–(ए०) रूपिमिनि, (बी०) रुकमिनि। ३–(बी०) अपना। ४–(बी०) कर। ५–(बी०) नहिं। ६–(बी०) बातन; (ए०) बातन्ह। ७–बौरावै। ८–(बी०) अनत। ९–(ए०) धर इह; (बी०) धर हम। १०–(बी०) फुसिलावै; (ए०) फुसलावै। ११–(ए०) उवह; (बी०) वह। १२–(ए०, बी०) मुँह जीभ। १३–(ए० बी०) बहौरि। १४–(बी०) महल। १५–(बी०) कुँवर कहँ। १६–

(ए०, बी०) पाटी। १७–(ए०, बी०) निससै। १८–(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि। १९–(ए०, बी०) रोवै। २०–(ए०,बी०) × । २१–(ए०) कुँवर क। २२–(बी०) जो खोचा। २३–(बी०) चहे बरि।

टिप्पणी—(१) **गियान**–ज्ञान। **नहिं**–नही। **सना**–अनुरक्त।

(२) **अनतैं**–अन्यत्र।

(३) **खटवाटि**–(सं० खट्वपट्टिका > खटपट्टिआ > खटपाटी > खटवाटी) मान करके बिना कुछ खाये-पीये खाटकी पट्टी पकड़कर पड़े रहना।

(४) **बटोरि**–विस्तृत करके।

(५) **रिस**–क्रोध।

१६०

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

कुँवर कहा कस रोवहु नारी[1]। तुम्ह हौ मोरी[2] प्रान अधारी ॥१
मैं अपनैं जिउ तुम्ह कँह लावा[3]। तुम्ह छाड़ैं[4] मुहि[5] और न भावा ॥२
तुम्ह[6] लाग[7] मैं जिउ[8] बरछेवा[9]। भंवर मरै पै छाड़ि न केवा[10] ॥३
हौं परदेसी आह[11] भिखारी। तुम्ह[12] न करहु मुहि[13] पर जिउभारी॥४
कहिसि कुँवरि हम सेंउ[14] चतुराई। जो र चरायहु[15] तै[16] हम काई[17] ॥५
धूतचार हौं बूझौं[18], औ कछु कछु[19] चतुराइ।६
घर[20] तुम्हार[21] यहि ठाँई आहै[22], चित मन अन्त[23] उड़ाइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) बारी। २–(दि०) मोपत, (ए०) तोह हुत मोरी; (दि० मार्जिन) तुम हो। ३–(ए०) मै अब चितमन तोह कह लावा; (बी०) अब चित मन मै तोहि मिलावा। ४–(ए०, बी०) तोहि छाड़ि। ५–(ए०, बी०) मोहि। ६–(ए०) तोहही; (बी०) तोहि। ७–(ए०, बी०) लागि। ८–(बी०) जी। ९–(ए०, बी०) परछेवा। १०–(ए०, बी०) दैअ दीही सिध्र मारेव देवा; (दि० मर्जिन) दीन दई सिध मारो देवा। ११–(बी०) अहौ। १२–(ए०) तोहि। १३–(ए०) मोह, (बी०) मोहि। १४–(ए०, बी०) सौं। १५–(ए०) चराएहु, (बी०) परायेहु। १६–(बी०) सो। १७–(ए०, बी०) खाई। १८–(बी०) दूत चरित हौ जानौं। १९–(ए०) कुछु कुछु, (बी०) किछु किछु। २०–(बी०) धरा। २१–(ए०) तोहार। २२–(ए०, बी०) ×। २३–(ए०) अनतै; (बी०) अनतेहि। २४–(बी०) जाइ।

टिप्पणी—(३) **बरछेवा**-अर्पण कर दिया। **केवा**–कमल।

(५) **चरायहु**–बहकाया। **काई**–को।

(६) **धूतचार**–धूर्ताचार।

१६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहहु[1] तो दीप[2] हाथ कर[3] लेऊँ। कै र[4] जगाइ साँप उर[5] देऊँ[6] ॥१
कहहु तो डॉप[7] कुँवाँ मँह[8] मेलौं[9]। तयेंउ[10] जरत पर पाँवहि[11] बेलौं[12] ॥२
रुपमनि[13] मन बहु[14] भाँति मनावा। खर उचारि[15] कै पान खियावा ॥३
पान खियाइ[16] लै र[17] उर लाई। मैं वहि सेउँ[18] दसगुन तो[19] पाई ॥४
आप थाप[20] कर बाहर आवा। आयसु[21] बार बैठि[22] इक[23] पावा ॥५
पूछसि कवन देस सों आयहु[24], को[25] गोरख को[26] चेल[27] ।६
पुरुखनाथ[28] गुरु आह हमारेउ[29]; गोरखपुर सेउँ[30] खेल[31] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहौ। २–(बी०) दीवा। ३–(बी०) कै। ४–(ए०, बी०) रे। ५–(बी०, ए०) कर। ६–(बी०) लेऊँ। ७–(ए०, बी०) डभ। ८–(ए०) कुआँ म; (बी०) कुँवर महिं। ९–(ए०) मैलौउ। १०–(ए०) तपो; (बी०) चीड ११–(ए०) पाँवन; (बी०) बावन पर। १२–(ए०) मेलोउ, (बी०) पेलो। १३–(ए०) रूपमिनि; (बी०) रुकमिनि। १४–(बी०) एहि। १५–(ए०) धरी चारि; (बी०) धरा चारि। १६–(ए०) खवाइ; (बी०) खियाय। १७–(ए०, बी०) रे। १८–(ए०, बी०) सै। १९–(ए०) तूँ; (बी०) तू दसगुनी। २०–(ए०, बी०) कै। २१–(ए०) आऐस, (बी०) आयस। २२–(ए०) बैठै कै। २३–(ए०) आऐहु; (बी०) से आवा। २४–(बी०) केहि। २५–(बी०) का। २६–(बी०) चेला। २७–(बी०) ब्रिख-नाथ। २८–(ए०, बी०) हमारे। २९–(ए०, बी०) सो। ३०–(बी०) खेला।

टिप्पणी—(२) मेलौं–डालूँ। तयेंउ–तवा। जरत–जलता हुआ। बेलो–रक्खूँ।
(३) खर–खरिका, पानमे खोसा गया तिनका। उचारि–(क्रि० उचारना) हटाकर।
(५) आप थाप कर–तुष्ट कर। आयसु–आगन्तुक। बार–द्वार।
(७) खेल–चले।

१६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एह संगाढ़[1] जोगिह[2] कै आई। छाला उठै[3] गुदावरि[4] जाई[5] ॥१
हौं जानौं[6] गोरख सँग लागा। को[7] बिधि[8] होइ[9] काह कँह[10] भागा ॥२
कुँवर गोस्टि[11] कै पूछी[12] बाता। कंचनपुर जोजन सै साता ॥३
यह[13] ठाँ[14] हुतै अलप[15] कछु होई। अन्तर सँमुद एक[16] आहै[17] कोई ॥४
तिह सेउ[18] कजली बन एक[20] आही। अन्धकूप औ[21] पन्थ न[22] ताही ॥५

चलत चलत पन्थ पैहसि[२३], जोहत[२४] जो सत सैं जाव[२५] ।६
सत सेउँ[२६] सतै[२७] सँघाती होइह[२८], बाघ सिंघ नहिं खाब ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) [ब]हु सगधी । २–(ए०, बी०) जोगिन्ह । ३–(ए०) बैठ; (बी०) उठाइ; (दि० मार्जिन) उत्तम । ४–(ए०) गोदावरी; (बी०) गोदावरिन्हि । ५–(दि० मार्जिन) छाई । ६–(ए०) × । ७–(बी०) केहि । ८–(बी०, ए०) सुधि । ९–(ए०) होए; (बी०) होय । १०–(ए०) कह किह; (बी०) कहे को । ११–(ए०, बी०) गोस्टी । १२–(ए०, बी०) पूछै । १३–(ए०) ×; (बी०) एहु । १४–(ए०) ठाहुँ; (बी०) ठॉव । १५–(ए०) ते अधिक; (बी०) से अधिक । १६–(बी०) एक सँमुद । १७–(ए०, बी०) है । १८–(बी०) सोई । १९–(ए०) [-]हि से; (बी०) केहि ठॉव से । २०–(बी०) × । २१–(बी०) और । २२–(बी०) नहिं । २३-(बी०) पायेसि । २३–(ए०, बी०) × । २४–(ए०) जो तै सत सौं लाव, (बी०) जो ते सत सौ जाब । २५–(ए०, बी०) सौ । २६–(बी०) सत । २७–(ए०) ×, (बी०) होइहि ।

टिप्पणी–(१) **एह**–यहाँ । **संगाढ**–सघटन, समूह । **गुदावरि**–गोदावरी ।

(२) **गोस्टि**–गोष्ठि; वार्तालाप । **कै**–करके ।

(४) **ठाँ**–स्थान । **हुतै**–से । **अलप**–अल्प; थोडा । **अन्तर**–बीचमे ।

(५) **कजली बन**–वासुदेवशरण अग्रवालका कहना है कि कदलीवनका ही लोकमे कजरीवन हो गया है । महाभारतमे ऋषिकेशसे बद्रिकाश्रमतक का वन प्रदेश कदलीवन कहा गया है (वनपर्व १४६।७५-७९) । किन्तु यहाँ यह किसी वन्यप्रदेश विशेषके लिए प्रयुक्त नही जान पडता । इसका तात्पर्य ऐसे सघन बनसे है जिसमे प्रकाश कठिनतासे पहुँच पाता है या बिल्कुल नही पहुँच पाता । **अन्धकूप**–घोर अन्धकार ।

(६) **पैहसि**–पाओगे । **जोहत**–टटोलते हुए । **जाब**–जाओगे ।

(७) **सतै**–सत ही । **सँघाती**–साथी । **होइह**–होयेगा । **सिंघ**–सिंह । **खाब**–खायेगा ।

१६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा हम कन्था देहू । जो कछु[१] चाहहु[२] हम सेंउ[३] लेहू ॥१
कुँवर आन बहु भिखा देही[४] । जोगी सनाँ[५] साज सब लेही[६] ॥२
कै मिस घर सैं चला अहेरैं । खेलै जाइ[७] आन बन[८] मेरैं ॥३
खेलत सब सेउँ[९] बेगर होई । सँग मँह मानुस[१०] रहा न कोई ॥४
तुरिय[११] छाड़ि कै कापर[१२] काढ़िसि । जोगी भयउ[१३] भोग फुनि[१४] छाढ़िसी ॥५

आगैं[१६] जाइ[१७] पाछु[१८] फिरि देखै, जनि[१९] कोउ मानुस[२०] आउ ।६
पहुँचा जाइ तीर सायर के, घाट चलै इक[२१] नाउ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुछ; (बी०) किछु। २–(बी०) चही। ३–(ए०, बी०) सै। ४–(ए०, बी०) भिखेआ दीही। ५–(ए०) सन, (बी०) सैन। ६–(ए०) लीही; (बी०) लिही। ७–(ए०) जास; (बी०) जाय। ८–(ए०) सौ; (बी०) से। ९–(बी०) मानस। १०–(ए०) तुरी। ११–(बी०) कपरा। १२–(ए०) भएेव; (बी०) भवा। १४–(ए०) मन; (बी०) पुनि। १५–(ए०, बी०) छाँडिसि। १६–(बी०) आगू। १७–(ए०, बी) चलै। १८–(बी०) पाछे। १९–(ए०, बी०) जनु। २०–(ए०) मानुस कोइ; (बी०) पाछे कोइ। २१–(ए०) एक।

टिप्पणी—(१) कन्था–चीथडोसे बना वस्त्र।

(२) भिखा–भिक्षा। सनाँ–से।

(३) मिस–बहाना।

१६४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[१])

साँठ अधारी[१] सेंउँ[२] कछु[३] काढ़सि[४]। दइ[५] खेवट कहँ फाँड़[६] जो[७] बाँधसि[८] ॥१
कहिसि[९] मोख भल पायउँ[१०] जाई[११]। अरुझ[१२] बाँध[१३] हुत[१४] दई[१५] छुड़ाई ॥२
पैले पार नाव गै लागी। मन मँह कहि[१६] भल आयउँ[१७] भागी ॥३
चलत चलत रबि अस्त जो[१८] होई। घन[१९] कै निसि भादों छठ होई ॥४
पंखि जो[२०] लघु दीरघ जग[२१] आहे[२२]। लइकै[२३] कोर[२४] बइठ[२५] घर रहे ॥५
यहि[२६] न कोर[२७] न बैठक[२८], नहि तिल एक जियँ[२९] सुक्ख ॥६
बिरह सँताप आगि जरि[३०], नख सिख गहेउ पेम[३१] कै दुक्ख ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) धारी। २–(ए०, बी०) सौ। ३–(ए०, बी०) कुछु। ४–(ए०, बी०) काढिसि। ५–(ए०, बी०) दे। ६–(ए०) फीड़ा; (बी०) फेडए। ७–(बी०) ×। ८–(ए०, बी०) बाँधिसि। ९–(बी०) कहेसि। १०–(ए०) पाएव; (बी०) भाव। ११–(बी०) गुसाई। १२–(बी०) अरुझा। १३–(ए०) छाड़; (बी०) फाँद। १४–(ए०) हुती; (बी०) हुतै। १५–(ए०) दैअ; (बी०) दैव। १६–(ए०) कह, (बी०) कहिसि। १७–(ए०) आएव; बी० आयेव। १८–(बी०) थल। १९–(ए०) कहँकै; (बी०) खन खन। २०–(ए०) पक जो; (बी०) जो पक। २१–(बी०) ×। २२–(बी०) रहे। २३–(ए०, बी०) लैके। २४–(बी०) कूर। २५–(ए०) बैठि। २६–(ए०, बी०) ओहि। २७–(ए०) कोरि। २८–(ए०) नहि बैसे। २९–(बी०) जिउ। ३०–(ए०) जरी, (बी०) परा। ३१–(बी०) खन खन।

१–इस प्रतिमें पक्ति ४-५ क्रमशः ५-४ है।

टिप्पणी—(१) **साँठ**—सुरक्षित धन। **अधारी**—झोली। **काढ़सि**—निकाला। **खेवट**—केवट, मल्लाह, नाविक। **फाँड़**—कमरमे बँधे वस्त्रका वह भाग जिसमें लोग रुपया-पैसा रखते है।

(२) **मोख**—(मोक्ष) छुटकारा। **अरुझ**—उलझा हुआ। **बाँध**—बन्धन।

(३) **पैले**—परले, दूसरे। **गै**—गई।

(५) **कोर**—(क्रोड) गोद। यहाँ तात्पर्य घोसलेसे जान पडता है।

१६५

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

लोग कुँवर के साथ[1] जो आहे। कहहिं कुँवर साउज[2] संग रहे ॥१
पूछत चलहु हम[3] तिह[4] जाहीं। कुवरहिं बिलम्ब लागि दहुँ काहीं ॥२
ढूँढ़त आए तुरिय[5] पै पावा। कहहिं कुँवर बाघ[6] [लै[7]] खावा ॥३
बाघ सिंघ जो खायेउ होई। चीन्ह न[8] जाइ पाउ[9] ये[10] कोई ॥४
ढूँढ़त[11] चहु दिसि फिरि के आये। लाग[12] तँवाये कुँवर नहि पाये ॥५
झुरवत चले सबै[13] जन, कहहि काह कै लेब[14] ।६
देउराइ[15] जो पूछै[16] हमकों[17], कवन[18] उतर हम[19] देब ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(बी०) संग। २—(ए०) सावज। ३—(ए०) हमहिं; (बी०) हमहुँ। ४—(ए०) तोह; (बी०) तँह। ५—(ए०) तुरी। ६—(ए०) सिंह। ७—(दि०) पाठ स्पष्ट नही है, (बी०) नहीं। ८—(बी०) नहि। ९—(ए०, बी०) पाव। १०—(ए०, बी०) पै। ११—(ए०, बी०) ढूँढि। १२—(बी०) लोग। १३—(बी०) सब। १४—(ए०) काह गै; (बी०) कहाँ गै। १५—(ए०) देवराए; (बी०) देवराय। १६—(ए०) पूछिह; (बी०) पूछहिं। १७—(ए०) ×; (बी०) हम कहँ। १८—(ए०) काह। १९—(ए०) तो।

टिप्पणी—(४) **चीन्ह**—पहचान।

(५) **लाग**—लगे। **तँवाये**—चिन्तित होने।

१६६

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

लोगहिं[1] बात आइ[2] अस कही। रानी[3] सुनाँ रुपमनि[4] तिह[5] अही ।१
राजहिं अजगुत[6] बकति न आवा। गा सुख[7] वह[8] जो परा हुत पावा[9] ॥२
रुपमनि[10] सुनि तुसार जनु[11] मारी। जस[12] पुरइन हेंवँत रितु[13] जारी ॥३
के जनु[14] घाम फूल कँह[15] लागा। सूखि कुइँ[16] परिमल सब[17] भागा ॥४
जस[18] पानी बिनु कँवल सुखाई। सुनतहि[19] रुपमनि[20] गै[21] कुँबलाई[22] ॥५

मालति[२३] परिहरि[२४] भँवरा[२५], गयउ[२६] बेलि[२७] अवराँह[२८] ।६
दोखन आह न लागेउ[२९], काहे तजहु[३०] हमाँह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) लोगन्ह, (बी०) लोगन । २-(ए०, बी०) आय बात । ३-(ए०) राउ; (बी०) राजा । ४-(ए०) रुपमिनि; (बी०) रुकमिनि । ५-(ए०, बी०) तँह । ६-(बी०) अचभो । ७-(ए०) सो । ८-(ए०) उवह । ९-(बी०) गा सुख जो होत परावा । १०-(ए०) रुपिमिनि, (बी०) रुकमिनि । ११-(ए०) जनि; (बी०) जनौ । १२-(बी०) जनौ । १३-(ए०) हेमत रवि; (बी०) हेत रवि । १४-(ए०) कै रे; (बी०) जानौ । १५-(बी०) कहुँ । १६-(ए०) गई, (बी०) गएेउ । १७-(बी०) × । १८-(ए०) × ; (बी०) जनि । १९-(ए०, बी०) सुनितेहि । २०-(ए०) रुपिमिनि; (बी०) रुकमिनि । २१-(बी०) गई । २२-(बी०) कुँभिलाई । २३-(ए०) कही; (बी०) माल्ती । २४-(ए०) परिहरी । २५-(ए०, बी०) भौरा । २६-(बी०) जाइ; (ए०) केहि गुन । २७-(ए०) बेइल । २८-(ए०, बी०) औराह । २९-(ए०) रुपमिनि कहि लागेव; (बी०) दोखन आहि न लागेउ परगट । ३०-(ए०, बी०) तजिसि ।

टिप्पणी—(२) **अजगुत**-(स० अयुक्त) अनहोनी । **परा**-पडा ।

(३) **तुसार**-तुषार; शीत, पाला । **पुरइन**-पुटिकिनी, कमल-बेल । **हेवँत**-हेमन्त । **रितु**-ऋतु ।

(४) **घाम**-धूप । **कुईं**-कुमुदिनी । **परिमल**-सुगन्धि ।

(५) **कँवल**-कमल । **कुँबलाई**-कुँभलाई ।

(६) **परिहरि**-त्यागकर । **भँवरा**-भ्रमर । **अवराँह**-अन्यत्र; दूसरेके पास ।

(७) **काहे**-क्यों । **हमाँह**-हमको, मुझको ।

१६७

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[२])

जोगी भँवरा थिर न रहाई । यह[१] सेंउ जरम न करहु[२] मिताई ॥१
भँवर फिरि[३] परिमल कँह रहई । जोगी जोग तन्त मँह[५] अहई[६] ॥२
ई र[७] क्रितघ्न जग मँह गुने[८] । इँह न मोह काह कर भनें[९] ॥३
कहै कौन मत[१०] पितैं जो कीन्ही । बरबस ठेलि कुँआँ मँह दीन्ही[११] ॥४
परेउँ कुण्ड धरै मुँहिं आई[१२] । कछु हो आपु[१३] हम सिर आई[१४] ॥५
हौं जिउ देउँ लागि पिय कारन, जो भावइ[१५] सो होउ ।६
अब जरिहौं जिउ घट महँ, फुन सींचो जल कोउ[१६] ॥७

---

१. एकडला प्रति में पक्ति ३ नहीं है और पक्ति ४-५ क्रमशः ३-४ हैं । पाँचवीं पंक्ति के रूप में बीकानेर प्रति की पक्ति ४ है जो दिल्ली प्रति में नहीं है ।

२. बीकानेर प्रति में पंक्ति ५-७ सर्वथा नवीन प्रक्षिप्त पक्तियाँ है ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) इन्ह, (बी०) इन। २-(ए०) करिय; (बी०) कीजै। ३–(ए०, बी०) फिरत। ४–(बी०) रहै। ५–(ए०) मन। ६–(बी०) रहई। ७-(बी०) ए। ८–(बी०) दुवौ जग गने। ९–(बी०) माना; (ए०) पूरी पक्ति नही है। १०–(ए०) मति। ११–(बी०) तरुवर मीचु गिरही होई। जोगी सीस सँकलपो कोई ॥ १२–(ए०) परी कुँवा अब निकसि न जाई। १३–(ए०) अब। १४–(ए०) ता करि मंछ कीर रहि होई। जो कर सिर कर पी कोई। १५-(ए०) भावै। १६–(ए०) हौ जरिहौ घट माँह, जल सीचौ फुनि कोउ।

टिप्पणी—(१) **थिर**–स्थिर। **मिताइ**–मित्रता।

(२) **जोगतन्त्र**–योग-साधना।

(४) **बरबस**–जबर्दस्ती। **ठेलि**–ढकेलकर।

१६८

(दिल्ली; बीकानेर)

रैन[1] काल कै[2] भेस भरावा[3]। भैरो[4] काल रूप रवि आवा ॥१
दिनयर पै[5] संग अउर[6] न कोई। बात कहै जो मानुस[7] होई ॥२
घट मँह बिरह भयउ[8] जर छारा। ऊपर भानु अधिक यह[9] जारा ॥३
संग[10] जो आह[11] सुख कँह सँग लीजै। साथी दगध[12] सो का लै कीजै ॥४
काल क गहन[13] फुनि[14] आगै[15] आवा। कुँवर बैठि[16] सूरज मुँह नावा[17] ॥५
पन्थी सिरज लिहा[18] संग साथी, सोउ रहा संग[19] छाड़ि ॥६
हाथहिं हाथ मारग न[20] सूझै बन महँ, रह अँधियार जो[21] गाढ़[22] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–रैनि। २–कर। ३–फिरावा। ४-भोर। ५–×। ६–और। ७–मनसा। ८-भवा। ९–कै। १०–सगी। ११–आहि। १२–दगधि। १३–कर घर। १४–×। १५–आगे बन। १६–पैठि। १७–बहुरावा। १८–पंथी आहि सुरज। १९–सेउ रहा पंथ छाड़ि। २०–(दि० मार्जिन) मारग न। २१–अँधियारा। २२–गाडि।

टिप्पणी—(२) **दिनयर**–दिनकर; सूर्य।

(६) **सोउ**–वह भी।

१६९

(दिल्ली; बीकानेर[1])

पन्थ न सूझै किह खँ[1] जाई। फिरि फिरि बन लागेउ[2] बउराई ॥१
वाघ सिंघ हाथी बन रोझा। तिंह सेंउ[3] मारग पूछै सोझा ॥२

१. बीकानेर प्रति मे पक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित है।

कोउ न मारग देइ देखाई। औ कोउ न[४] हियार जो कहाई[५] ॥३
पेम भुअंगम है बिस भरा। करमहिं पै अँकुर नीसरा[६] ॥४
बाउर[७] पै अँगुरि[८] मुँह हेला[९]। सोइ सरेख[१०] जो[११] पेम न खेला ॥५
पेम कियें दुख पाइ[१२], पेम न करियउ[१३] कोइ। ६
जै सुख चाहहि[१४] पेम कै[१५], मूरख[१६] कहहिं[१७] सोइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–केहि दिसि। २–लागा। ३–तेन्हसे। ४–न कोई। ५–फर तोरि कै खाइ। ६–अँगुरिन सरा। ७-बावर। ८–अगुरी। ९–मेला। १०–सयान। ११–×। १२–पाइयै। १३–करियो। १४–चाहै। १५–कर। १६–मूरिख। १७–कहिये।

टिप्पणी—(१) खैं–ओर।

(२) रोझा–(स० ऋश्य>प्रा० रोज्झ)–नील गाय। सोझा–सीधा, भोला।

(३) हियार–हृदय की बात।

(५) हेला–ठूँसा, डाला। सरेख–चतुर।

१७०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अब जो दई[१] करै सो होई। चला जाँउँ पूछैं नहिं[२] कोई ॥१
पेग[३] न बन मँह हेठे[४] जाई। घन अँधियार रहै[५] बहु[६] छाई ॥२
निसि बासर कछु चीन्हें नाँही[७]। चाँद सुरुज जो देखै ताही[८] ॥३
बन मँह तीस देवस दुख किये[९]। ई[१०] दुख जग मँह काहु[११] न भये ॥४
नल हूँ अइसी परी न[१२] अवस्था। औ न सुनी सो[१३] भरथरि कस्था ॥५
रचन सबै अयान बैन, बिरंचै सो लाहु। ६
करम पुसैं सैं निकसै, अँगुरि संप गयाहु[१५] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) दैअ, (बी०) दइय। २–(ए०) नहि पूछौ। ३–ए० ×; (बी०) पैग। ४–(ए०) हीठे, (बी०) हाढ़े। ५–(ए०) रह; (बी०) रहा। ६–(ए०) बन, (बी०) तहँ। ७–(ए०) निसि बासर तँह चीन्हिय नाही; (बी०) निसि बासर किछु चीन्ह न जाई। ८–(बी०) चन्द सुर्ज सौं देखि न जाई। ९–(ए०) भए; (बी०) गये। १०–(ए०) अस; (बी०) ए। ११–(ए०, बी०) काहु। १२–(ए०) [न]लहि अैस न परी; (बी०) नलहु न ऐसी परी। १३–(ए०, बी०) ×। १४–(ए०) कासथा; (बी०) कथा। १५–(ए०) दोनों पंक्तियाँ रिक्त; (बी०) रचना सबै अयनपन, बिरंच न सो लही। करम बिस सैनिक सै, अँगुरी साँप क एहि ॥

टिप्पणी—(२) पेग–पग। हेठे–नीचे।

(३) नाँही–नही।

(५) कस्था—कष्ट ।
(७) पुसें—पुष्ट । गयाहु—गया हुआ ।

१७१

(दिल्ली; बीकानेर)

चलत चलत बन गये[1] ओरानाँ[2] । भा उजियार देस जस जानाँ[3] ॥१
मेढ़ा छाँगर देखिसि आगैं । कहिसि कोउ[4] होइहि इँह लागे ॥२
आगे आइ जो देखी[5] काहा । एक गड़रिया है[6] चरवाहा ॥३
मन मँह कहि[7] भल भयउ[8] गुसाँई । रहौं[9] दिन एक[10] माँनुस[11] ठाँई ॥४
पहिले सुख पाछैं दुख होई । दुख किये सुख पाछे सोई[12] ॥५
देखिसि फिरि कै जो गड़रिया[13], मानुस कोउ[14] एक आउ[15] ।६
दौरि आउ[16] आगैं कै[17] कपटी, पाहुन कह र[18] बुलाउ[19] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर—

१—गै । २—ऐ᾿᾿ ना । ३—जग बना । ४—कोई । ५—देखिसि । ६—आहै । ७—कहिसि । ८—भवा । ९—रहिहौ । १०—दोइ । ११—मनसे । १२—पूछि कंचनपुर मारग लेऊँ । जेहि रे दीप तेही पगु देऊँ । १३—बहुरि जो देख गड़रिया फिरि कै । १४—× । १५—आव । १६—आव । १७ कह । १८—कै । १९—बुलाव ।

टिप्पणी—(१) ओरानाँ—समाप्त ।
(२) मेढा—मेष । छाँगर—बकरी । लागे—पास, निकट ।
(७) पाहुन—अतिथि ।

१७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहसि आजु तुम्ह[1] पाहुन मोरें । भुगुति देउँ पाँ लागों तोरे ॥१
बहु दिन ऊपर जोगी आयउ[2] । करम मोर[3] आयसु मैं[4] पायउ ॥२
आजु बसे[5] घर आइ[6] हमारे । कालिह कहहु[7] जो जियैं[8] तुम्हारे[9] ॥३
जो पंथ चहहु दिहों दिखाई[10] । अगुवा देब तहाँ[11] लेजाई ॥४
पंथ क[12] नाँव कुँवर जो सुनाँ । भा अनन्द मन मँह दस गुना ॥५
चला लिवाइ[13] साथ[14] अपनैं, आगैं भा[15] वह जाइ[16] ।६
जिय[17] बिस्वास करै किंह[18] ताकर[19], बातहिं लेतस लाइ[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) तोहि; (बी०) तुम । २—(ए०) बहु दिन ऊपर पाहुन आवा, (बी०) बहुत दिना पर पाहुन आवा । ३—(ए०) हमार । ४—(ए०) जो आयस; (बी०) आइस पै । ५—(ए०) बसहु; (बी०) बसउ । ६—(ए०) आए; (बी०) आय ।

७–(ए०) कहेहु; (बी०) कहेउ। ८–(ए०) जीअ; (बी०) जीउ। ९–(ए०) तोह[रे]। १०(ए०) जो चहिहहु देहौ देखाई; (बी०) जेहि पथ जाहु सै देउँ दिखाई। ११–(ए०) नही। १२–(बी०) कर। १३–(ए०) लेवाए; (बी०) लेवाय। १४–(ए०) साथ लै, (बी०) साथकै। १५–(बी०) आगु भवा। १६–(ए०) जाए। (बी०) जाय। १७–(ए०) कीव; (बी०) जिव। १८–(ए०, बी०) कहँ। १९–(ए०, बी०) तकिसी। २०–(ए०) बातन्ह लीतीन्हि लाए; (बी०) बातन्ह लिहिस सग लाय।

टिप्पणी—(१) भुगुति–भोजन। पाँ–पैर। लागों–लगूँ।

(२) आयसु–आगन्तुक।

(४) अगुवा–पथप्रदर्शक। देब–दूँगा। लेजाई–ले जायेगा।

१७३

(दिल्ली, बीकानेर)

आगै जाइ दूत कै[1] कला। पाछैं निभरम जोगी[2] चला ॥१
लइकै[3] खोह एक मँह पइठा। देई पिहान[4] बाहर होइ बैठा ॥२
कुँवरहि अचकर का यह कीतसि[5]। काहे कहँ र चाक मुँह दीतसि[6] ॥३
लौटि देखि जों[7] मानुस[8] तहाँ। पूँछसि[10] कौन इहाँ तुम्ह कहाँ[11] ॥४
विपरित मोंट न रेगैं[12] जाई। काह[13] खाइ[14] तुम्ह[15] रहहु[16] मुँटाई ॥५
पूछहु काह मुँटाई हम कँह, लै आयउ बोराई। ६
औखद एक खियाइसि मूरी[17], तिंह रेगैं[18] न जाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–की। २–जोगी निर्भम। ३–लै कै। ४–मै। ५–पिहना। ६–कुँवरहिं अचंभो केहि किहा। ७–काहे कहँ पिहना मुँह दिहा। ८–जो देखै। ९–मानुस है। १०–पूछिसि कौन रहहु तुम कहाँ। ११–बिपरीत। १२–रेगा। १३–कहा। १४–खाइकै। १५–×। १६–रहेहु। १७–मूरि। १८–तेहिसे रेग।

टिप्पणी—(१) दूत–(धूत) धूर्त। कला–कुशल। निभरम–निभ्रम; निःशाक।

(२) खोह–गुफा। पिहान–ढक्कन; अवरोध।

(३) अचकर–आश्चर्य चकित। का–क्या। कीतसि–किया।

(४) चाक–ढक्कन।

(५) विपरित–असाधारण। मोंट–मोटा। रेगैं–चल। काह–क्या।

(७) मूरी–जडी।

१७४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनतहि[1] रुधिर[2] कुँवर क[3] सूखा। सुख कँह आए[4] पड़ा बड़ दूखा ॥१
भल पहुनाई कँह लै आवा। भुगुति न देतसि[5] चाहै[6] खावा ॥२

अस पहुनाई नित नित जाई। गाँठी कर[9] जीउ उहो[8] गँवाई ॥३
जिह[9] कँह साध होइ[10] पहुनाई। सो रे[11] गडरिया के घर जाई ॥४
खाइ न देइ[12] चाहि[13] तिह[14] खावा। सरग जाइ[15] कँह पन्थ दिखावा ॥५
अस[16] यह कै जिय अरकहुँ[17] आगैं[18], आवइ[19] यहि[20] बिस्वास[21] ।६
जस यह पन्थिह[22] पन्थ दिखावइ[23], तस यह[24] जाइ[25] अकास ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) सुनतेहि। २–(ए०, बी०) रुहिर। ३–(ए०) कै; (बी०) का। ४–(बी०) आयेउ। ५–(ए) दीतसि; (बी०) दीहिसि। ६–(बी०) चाहिसि; ७–(ए०) गाँठी कै; (बी०) गाँठिहु करे। ८–(ए०) सोउ, (बी०) ×। ९–(ए०) जा; (बी०) जेहि। १०–(ए०) होए; (बी०) होय। ११–(ए०, बी०) रे। १२–(ए०) देए, (बी०) देय। १३–(ए०) चाह; (बी०) चहै। १४–(ए०) तेहि; (बी०) पै। १५–(ए०) जाए; (बी०) जायँ। १६–(बी०) यह। १७–(ए०, बी०) ×। १८–(ए०, बी०) आगे आवो। १९-२०–(बी०) ×। २१–(ए०) जस से किय बिस्वास। २२–(ए०) ×। २३–(ए०) देखाइसि, (बी०) देखावै। २४–(बी०) या। २५–(ए०, बी०) जाव।

टिप्पणी—(२) पहुनाई–आतिथ्य।
(३) गाँठी–गाँठका, पासका। उहो–वह भी।
(४) साध–इच्छा, अभिलाषा।
(५) अरकहुँ–रोक लगाऊँ।
(७) अकास–आकाश; स्वर्ग।

१७५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

कहि के यह[1] झुरवइ[2] मन[3] लागा। एको मन्त्र न[4] चित मँह जागा ॥१
सँमुद लहर[5] सेंउ[6] दई[7] उबारा। साँप मोख दीन्हेउँ करतारा ॥२
दई[8] दिही सिधि राकस मारेउँ[9]। राजपाट छाड़[10] सब जारेउँ[11] ॥३
फुनि अँधियारी[12] बन मँह आयउँ[13]। मानुस देखि कहेउँ[14] जिय[15] पायउँ[16] ॥४
तैं मानुस अस किय बिसवासू[17]। मूँदसि[20] तहाँ न आवइ साँसू[21] ॥५
ते[22] जिउ[23] लियेउ[24] आइ[25] सो[26] बेरा[27], उबरै कै नहिं आस ।६
जम सौं भेंट भई अब, यहि[28] ठाँ, कहा न मानै कास[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) तौ यह। २–(ए०,बी) झुरवै। ३–(बी०) ×। ४–(बी०) नहि। ५–(ए०, बी०) लहरि। ६–(ए०, बी०) सौ। ७–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ८–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। ९–(बी०) मारा। १०–(ए०) छोडव; (बी०) छोडैव। ११–(बी०) जारा। १२–(१२) अँधियारे; (बी०) कदली। १३–(ए०) आवा,

---

१–इस प्रति में यह कड़वक १७६ के बाद है।

(बी०) आयेउ। १४–(ए०,बी०) कहेव। १५–(ए०) जिउ; (बी०) जिव। १६–(ए०) पावा; (बी०) पायेव। १७–(ए०) ते; (बी०) अब तेइ। १८–(ए०) कै; (बी०) कियेउ। १९–(ए०,बी०) बिसवासा। २०–(ए०, बी०) मूदिसि। २१–(ए०, बी०) सॉसा। २२–(ए०) अे; (बी०) हौ। २३–(बी०) जिव। २४–(ए०) लिअेव; (बी०) लियेव। २५–(ए०) आय; (बी०) ×। २६–(बी०) ×। २७–(बी०) एह बार। २८–(बी०) एहि; (ए०) तेहि। २९–(ए०. बी०) कस।

टिप्पणी—(१) **मन्त्र**–उपाय।

(३) **जारेउँ**–जलाया।

(५) **बिसवासू**–(अरबी बसवास, बिसवास) विश्वासघात; छल। (यह सस्कृत के 'विश्वास' शब्द का अपभ्रश रूप नही है।

(६) **बेरा**–बेला; घडी। **उबरैकै**–निकलनेका। **आस**–आशा।

(७) **जम**–यम, काल; मृत्यु।

१७६

(दिल्ली, बीकानेर[1])

दुख कै गाँग तैरि हौं[1] आवा। मैं जानेंउ[2] अब तीर[3] जो[4] पावा ॥१
परेउँ कुण्ड गहरे मँह आई। भँवर बहुत[5] अब[6] निकसि न जाई ॥२
यह बड़ मँगर न छाड़ै[7] मोही। मूँदि दुआर बैठि है रोही[8] ॥३
बाट न आहे कै खैं[9] जाऊँ। राम लखन जस सीता ठाऊँ[10] ॥४
सिय रावन जो[11] [लइगा][12] हरी। वहइ अवस्था यह[13] हम[14] परी ॥५
वैं जमकातर काढ़ी मार क[15], इन दीन्हों[16] बड़ चाक ।६
वै हनिवन्त छुड़ाए कर पर[17], हम्ह आपु सो भाग[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–गंग पैरिकै। २–जानो। ३–तीर अब। ४–×। ५–बहुत भॅवर। ६–तहॅ। ७–छोड़हि। ८–अवरोही। ९–किधै। १०–राम लखन कहॅ जैसे ठाऊॅ। ११–×। १२–लैगा, (दि०) लंका। १३–×। १४–हम कहॅ। १५–वोहि जमकत गडरिया। १६–इन्ह दीन्हा। १७–बार कै। १८–हम नहिं सेवक एक।

टिप्पणी—(१) **गांग**–गगा।

(३) **रोही**–(स० रोध) रोककर।

(४) **कै खैं**–किस रास्ते।

(५) **लइगा**–ले गया। **वहइ**–वही।

(६) **जमकातर**–यमकी कटारी या तलवार।

(७) **हनिवन्त**–हनुमान।

१–इस प्रति में यह कड़वक १७५ के पहले है।

१७७

(दिल्ली; बीकानेर)

कौरा[१] दानौ पण्डो[२] हरी[३] । उनकहँ[४] जाइ भींउँ उपकरी[५] ॥१
सेवक द[ा*]स[६] बन्धु नहिं मोरें । सँतुरो[७] जिह[८] आवहिं[९] कर जोरें ॥२
हौ र[१०] बिनती दइ सेंउ करउँ[११] । दई छाड़ि[१२] न अउरहिं[१३] सँवरउँ[१४] ॥३
दइयहि[१५] सँवरत[१६] होइ स होई[१७] । और न सँवरों[१८] का कारि कोई[१९] ॥४
कै सँवरों मिरगावति नेहाँ । जिह[२०] दुख[२१] लग सहेउ सिर मेहाँ ॥५
जिय महँ सदन[२२] समाधि कै, लागेउ अहा जो[२३] चित्त ।६
जो जिउ दीजै मिन्त[२४] लगि, सेउ[२५] जिउ[२६] आह[२७] पवित्त ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कबीर । २–पाण्डो । ३–हरेउ । ४–उन्ह । ५–उपकारेउ । ६–अस । ७–सुमिरो । ८–तोहि । ९–दुवो । १०–× । ११–दइव से करऊँ । १२–दइव छोड़ि । १३–और न । १४–सँभरऊँ । १५–दइवहि । १६–सुमिरत । १७–होउ क जोऊ । १८–सुमिरो । १९–कह कोऊ । २०–जेहि । २१–दगाध । २२–सुदिन । २३–जो अस । २४–मीन । २५–से । २६–जीअ । २७–हो ।

टिप्पणी—(१) कौरा–कौरव । पण्डो–पाण्डव । भींउ–भीम । उपकरी–उद्धार किया ।
(५) नेहाँ–स्नेह ।
(७) मिन्त–मित्र । पवित्त–पवित्र ।

१७८

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

मरै क डर[१] महँ कछु[२] न लागै । नेह[३] पन्थ मुँए पाप सब भागै ॥१
यहि[४] पंथ[५] लाग[६] जो र जिउ देई । दुहुँ[७] जग धरम मोल सों[८] लेई ॥२
वहि[९] सब कँह रखे[१०] सुर देवा । जो जिउ भीत लागि बरछेवा[११] ॥३
जो पै सत है तो सिधि होई । दुरजन[१२] दूत[१३] काह[१४] करि[१५] कोई ॥४
संग[१६] सँगाधि[१७] साथ हो[१८] जाही । सत संघाति[१९] साथी[२०] [बड़ आही[२१]]॥५
सतकै[२२] संग[२३] साथ जो[२४] आयउँ[२५], सत सेंउ[२६] लिह[२७] छुड़ाइ[२८] यदि ठाउँ ।६
सो[२९] सत आह साथ बड़ मोरे, जपो[३०] ताहि कर नाँउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) मेरे किये । २–(ए०,बी०) मोहि कुछु । ३–(ए०) ओहिं; (बी०) येहि । ४–(ए०, बी०) नेह लागि । ५–(ए०, बी०) × । ६–(ए०, बी०) लागि । ७–(बी०) दुवौ । ८–(बी०) से । ९–(ए०) उहि । १०–(ए०) राखे; (बी०) देखहि । ११–(ए०, बी) परछेवा । १२–(बी०) दुरिजन । १३–(ए०) दवन; (बी०) दुवा । १४–(ए०) कह (बी०) कहा । १५–(बी०) करै । १६–(ए०) ...

१७–(ए०) संघती; (बी०) सघाती । १८–(ए०) होए; (बी०) होय । १९–(ए०) संघती; (बी०) सघाती । २०–(ए०, बी०) साथ । २१–(दि०) भल होई । २२–(ए०) क; (बी०) के । २३–(ए०, बी) × । २४–(ए०, बी०) हौ । २५–(ए०) आऍव; (बी०) आयेव । २६–(ए०) × , (बी०) सतौ । २७–(ए०) लेहु, (बी०) लीन्ह । २८–(ए०) छोडए , (बी०) छोडाय । २९–(बी०) अबहु सो । ३०–(बी०) जपत ।

टिप्पणी—(३) **बरछेवा**–परित्याग कर दिया; अर्पण कर दिया ।

(४) **दूत**–(धूत) धूर्त ।

(५) **सँगाधि**–साथी ।

१७९

(दिल्ली, बीकानेर)

मानुस बैठ जो भीतर आहे[1] । राजकुँवर कहँ देखत रहे[2] ॥१
कहँहि[3] एक बुधि सुनहु हमारी । जियें[4] यह कैसे[5] जाइ न मारी ॥२
जौ लहि नाहिं खियायसि मूरी । जोगी सीख गहउ बुधि मोरी[6] ॥३
आइ[7] कै अबहिं एक कँह लेइह[8] । खाई भूँज न काहू[9] देइह ॥४
खाइ अघाइ फिर[10] परि सोवा[11] । बिधि[12] सेउ[13] जाइ वह कै[14] जिउ खोवा[15] ॥५
सोवत जो वहि[16] पावसु[17] देखसि, लै सँडसी[18] दगधाउ ।६
हरुवैं हरुवैं जाइ कै, वहँ आखिन महँ लाउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–मानुस भीतर जो बैठा अहा । २–रहा । ३–कहिनि । ४–जो । ५–कैसेहु । ६–जोगी सिखहु कहौ बुधि पूरी । ७–आइहि । ८–लेई । ९–(बी०; दि० मार्जिन) हाड़ो । १०–बहुरि । ११–सोवै । १२–बुधि । १३–× । १४–वोहिकर । १५–खोवै । १६–वोहि । १७–× । १९–सॅडसी लै । १९–दुहूँ ।

टिप्पणी—(२) **जियें**–जीवित ।

(४) **भूँज**–भूनकर ।

(५) **अघाइ**–तृप्त होकर । **परि**–पड़कर । **विधि**–तरकीब ।

(६) **दगधाउ**–गर्म करो ।

(७) **हरुवैं हरुवैं**–(सं० लघुक> लहुअ> लहुव> हलुव> हरुव) धीरे धीरे ।

१८०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यह[1] बुधि कुँवर कै[2] मन मँह[3] छाई[4] । बात कहत हा[5] वह[6] गा[7] आई ॥१
एक जनहिं[8] धरि पटकसि[9] पुहुमीं । कुँवर देखि यह बैठउ[10] सहमी ॥२
आगि लाइ[11] जारसि[12] वहि[13] काँठी[14] । माँस भोंजि[15] औ चाबैं काँठी ॥३

हाड़ गोड़ औ खायसु माँसू। कुँवर देखि भरि आये आँसू ॥४
दिन एक हमहूँ खाइहि भूँजी। जो आगें कै निघटिह पूँजी ॥५
खाइ अघाइ पेट भरि डकरै[17], फुनि सोए[18] परि लाग।६
ताहि[19] आगि मँह सँडसी दगधी[20], कुँवर बैठ तिंह[21] जाग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(बी०) यह रे। २–(ए०) क, (बी०) के। ३–(बी०) जिय। ४–(ए०, बी०) भाई। ५–(ए०, बी०) खुटानी। ६–(ए०) वह रे। ७–(बी०) रेगा। ८–(ए०) जबेहि; (बी०) जना। ९–(ए०) पटकिसि; (बी०) पटिकिसि। १०–(ए०) जीउ आहे। ११–(ए०) लाए; (बी०) जारि। १२–(ए०) औ जारिसि, (बी०) औ जोरसि। १३–×। १४–(बी०) काठा। १५–(ए०) भूजि; (बी०) खाइ। १६–(ए०) चापिसि, (बी०) चाबिसि। १७–(ए०) ×; (बी०) डिकरा। १८–(ए०, बी०) सोवै। १९–(बी०) वाहि। २०–×। २१–(ए०) तब; (बी०) तहँ।

टिप्पणी—(१) गा–गया।
(२) जनहि–व्यक्तिको। पुहुमी–पृथ्वी।
(३) काँठी–शरीर।
(४) हाड–हड्डी। गोड़–पैर।
(५) निघटिह–समाप्त।

१८१

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

सँडसी[1] दगधि आग जस[2] भई। लइकै[3] दुहूँ आँखि[4] मँह दई ॥१
लोयन[5] फूट टपक[6] दइ[7] सुनाँ[8]। जानु आगि मँह[9] पतिरा[10] भुनाँ[11] ॥२
उठा कोप कर[12] चाहिसि धरा। तौलहि कुँवर भागि कै परा ॥३
ढूँढ़ै[13] फिरि फिरि धापैं[14] देई। कुँवर क नाउँ न पाथर[15] लेई ॥४
फिरि फिरि चारेउ[16] कोन ढँढोरा। अति कै रिस[17] दाँत[18] कर तोरा ॥५
जो जस करै सो तइसै पावइ[19], बुरहा बुरही बात[20]।६
जस बिसवास किये[21] मनुसैं कर[22], तस कै होउ[23] निरजात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) चँडसी। २–(बी०) अस। ३–(ए०, बी०) लैके। ४–(बी०) आँखिन्ह। ५–(ए०, बी०) लौतहि। ६–(ए०, बी०) पटक। ७–(ए०, बी०) दै। ८–(बी०) सूनाँ। ९–(बी०) आगी मँह जानौ; (ए०) जनु आगी मँह। १०–(बी०) वद्दुरा। ११–(ए०, बी०) भूना। १२–(ए०, बी०) कै। १३–(ए०) चढ़ै। १४–(ए०) ठापा, (बी०) ढापा। १५–(ए०) आगि नहि; (बी०) पथर नै। १६–(ए०; बी०) चारों। १६–(ए०) रोस। १८–(ए०) दाँतेन्ह; (बी०) दसन। १९–(ए०,

बी०) तस पावै। २०–(ए०) बुरहे बुरही बाट, (बी०) बुरहि बुराही बाट। २१–(बी०) किये बिसुवास। २२–(ए०, बी०) कहँ। २३–(ए०) तै होहि।

टिप्पणी—(२) लोयन–लोचन; आँख।

(४) ढँढोरा–टटोला। रिस–क्रोध।

(७) बिसवास–(अरबी—बसवास) छल, कपट।

१८२

(दिल्ली, बीकानेर)

चारेउ[1] कोन ढूँढ़ि कै आवा। बौरी[2] जानु[3] धतूरा खावा॥१
कै बाउर जस बिच्छी[4] मारा। चढ़े देहि[5] बिस जैं[6] कोउ झारा॥२
कुँवर कहा कछु[7] खायहु[8] मिन्ता[9]। पहुनै कै[10] कस करहु न चिन्ता॥३
भलि[11] कै भूखहिं[12] पाहुन मारा। अब तुम्हरे कोउ आउ न[13] बारा॥४
पाहुन आन देहु झुटकाई[14]। पहुनहिं कियत तोर[15] पहुनाई॥५
पहिलें जो पाहुन आनहु[16], पै राखहु मोंटाइ[17]।६
हमहिं आनि के भूखेहिं मारेहु[18], कछूँ[19] न दीनहु[20] खाइ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–चारिउ। २–बाउर। ३–जनौ। ४–जानौ बीछू। ५–देहु। ६–जनि। ७–किछु। ८–खोइहु। ९–मीता १०–पाहुनै की। ११–भल। १२–भूखन। १३–अब न कोइ तुम्हरे आवै। १४–आन दीन्ह छिटकाइ। १५–पाहुने की तोरी। १६–पहिले पाहुन जे आनेहु धरिके। १७–ते राखेहु मुटाइ। १८–मारेहु। १९–किछुवै। २०–दीन्हेउ।

टिप्पणी—(१) बौरी–बावला; पागल।

(२) बाउर–बावला। बिच्छी–बिच्छू।

(३) मिन्ता–मित्र।

(४) बारा–घर।

१८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बोलि क[1] सबद कुँवर तन धावा[2]। कुँवर भागि उहि पाछैं आवा[3]॥१
धरै न पाइसि[4] हाथ मरोरा। का अब करौं करम जो तोरा॥२
लै दुआरि आपु बैठेउ[5] जाई। जइहइ[6] कउने[7] बाट पराई॥३
भितरहिं सारि[8] जो[9] मारौं[10] तोही। लै दुआर अब बैठौं रोही॥४
जाइ दुआर सजग होइ[11] बइठा[12]। अस कै मूँदसि[13] चाँट[14] न पइठा॥५
जाहु पुरुख जो आहहु जोधा[15], कँवन[16] बाट तैं[17] जाब।६
छाड़ों तोहि न जियत[18] निगलौं[19], काँचे[20] मैं तिह[21] खाब॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) कै। २–(बी) धावै। ३–(बी०) आवै। ४–(बी०) पावै। ५–(ए०) अब वैठेव; (बी०) बैठो। ६–(ए०) जैहहु। ७–(ए०, बी०) कौने। ८–(ए०) सही। ९–(बी०, ए०) ×। १०–(बी०) मारो मैं। ११–(ए०) मै। १२–(ए०, बी०) बैठा। १३–(ए०, बी०) मूँदिसि। १४–(बी०) चाँटि। १५–(ए०, बी०) ×। १६–(ए०, बी०) कौन। १७–(बी०) तुम; (ए०) दहुँ। १८–(ए०) जियतै। १९–(बी०) धरै पाउँ नहि छाड़ौ। २०–(बी०) काँचा। २१–(ए०, बी०) तोही।

टिप्पणी—(३) दुआरि–द्वार। जइहइ–जायेगा। कउने–किस। बाट–रास्ता। पराई–भाग।

(४) भितरहिं–भीतर ही।

(५) चाँट–चीटा।

(६) जोधा–योद्धा, वीर।

(७) काँचै–कच्चा ही।

१८४

(दिल्ली, बीकानेर)

नाँउ हमारे आग[१] न खाई[२]। अब अस मारों जियैं न जाइ[३] ॥१
पुरुख सेउ[४] तिह[५] काज न परा। महरी संउ[६] तैं खेलै खरा[७] ॥२
अब पुरुख सेंउ[८] परेउ[९] जो काजू। मारो तोहि न छाड़ों आजू ॥३
मारें हौं तो[१०] मरों न तोरे। कपट किहे[११] अनजानत मोरे ॥४
छाड़ों तोंही न जियत[१२] खावो[१३]। तब लग कितहु[१४] न आओं जाओं[१५] ॥५
कुँवर कहा फिर इहै[१६] जिय[१७] मँह[१८], कवन बाट हम जाब ।६
धरै पाउ न छाड़ै जियत, अलख निकर न जाब[१९] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–पथर। २–(बी०; दि० मार्जिन) खाहू। ३–जी पै जाहू। ४–पुरिखन्ह सै। ५–तौहि। ६–मिहरिन्ह से। ७–से कीन्हे खिड़करा। ८–पुरिखन्ह सौं। ९–परा। ते हो। ११–किहेसि। १२–जियत धै। १३–खाऊँ। १४–कतहु। १५–आऊँ जाऊँ। १६–यह फुर। १७-१८ ×। १९–धरै पावै नहिं छाडिहि, जियतिहिं हम धरि खाब।

टिप्पणी—(२) मेहरीं–स्त्री।

(४) अनजानत–अनजान मे।

(७) अलख–(अलक्ष्य); बिना देखे। निकर–निकला।

१८५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

देवस[१] तीनि[२] एक बइठै[३] रहा[४]। फुनि अपुनैं[५] जिय महँ अस कहा ॥१

छागरि[6] काढ़ि देउँ[7] चरि आवँहिं। हम सेंउ[8] जाइ[9] कहाँ यहि[10] पावँहि ॥२
चाक उसास[11] जाँघ[12] दइ बइठा[13]। एक एक छागरि काढ़ै पइठा[14] ॥३
कुँवर कहा यह आहै दाऊँ। अइस[15] दाउ न पइहौ[16] काऊ ॥४
छागरि[17] मारि चाम बड़ काढ़ा। ऐंचसि[18] बहुत जो बानन्ह[19] बाढ़ा ॥५
पहिरि चाम मिलि छेरिंहि आवा[20], कहिसि निकसि अब जाँउँ ।६
दइ[21] करिह[22] सो होइह[23] निहचो[24], अबका जियहिं डराउँ[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) देवस। २–(बी०) तीन। ३–(ए०) बैठ; (बी०) बैठा। ४–(बी०) अहा। ५–(ए०, बी०) अपने। (बी०) छेगरि। ७–(ए०, बो०) देव। ८–(ए०) मोहि सो, (बी०) हम से। ९–(ए०, बी०) जाय। १०–(ए०, बी०) ये। ११–(ए०) उसासि; (बी०) उठाइ। १२–(ए०) जवा। १३–(ए०, बी०) दै बैठा। १४–(ए०) ऐठा, (बी०) बैठा। १५–(ए०) अैस; (बी०) पुनि अस। १६–(ए०) नहिं पैहौं; (बी०) न पैहै। १७–(बी०) छेरी। १८–(ए० बी०) ईंचिसि। १९–(ए०) पालहि, (बी०) पॉव लहु। २०–(ए०, बी०) ×। २१–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। २२–(बी०) करिहि। २३–(बी०) होइहि। २४–(ए०, बी०) ×। २५–(बी०) डेराउँ।

टिप्पणी—(२) छागरि–बकरी।
(३) उसास–खोलकर।
(५) एंचसि–खीचा।
(७) निहचों–निश्चय ही।

१८६

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

दई[1] गुसाँई[2] सिरजनहारा। येहि सेउँ मोख देहु करतारा ॥१
मिलि कै छोरिंहि[4] वहि[5] ठाँ आवा। निकसै चाह हाथ वैं[6] लावा ॥२
टोइसि कहिसि छेरि[7] न[8] होई। चाहिसि धरै निकसि गा[9] सोई ॥३
कहिसि जाहु भल[10] भाग तुम्हारी[11]। पउतेउ तैं धरै तो खातेउ सारी[12] ॥४
घर सेंउ[13] सगुनहि आहहु[14] चला। कोड किन्हि[15] भल लागै[16] कला ॥५
कुँवर कहा अब बैसहु[17] थाकिह[18], जस र बुयउ[19] तस खाहु ।६
जस र कीह[20] तस पायहु[21], कलजुग[22] घर घर भीख मँगाहु ॥७

पाठान्तर—एकडला ओर बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) दैअ, (बी०) दइव। २–(ए०, बी०) गोसाईं। ३–(ए०) ओहिसो; (बी०) एहिसौं। ४–(ए०) छेरिअन्ह; (बी०) छेरिह। ५–(ए०, बी०) उहि। ६–(ए०) उए; (बी०) उह। ७–(बी०) छेगरि। ८–(ए०, बी) नहिं। ९–(बी०) गवा। १०–(बी०) बड़। ११–(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारा। १२–(बी०) पौतेंव धरै न छड़तेंव बारा; (ए०) पौतेव धरै तो जीअतेव बारे। १३–(बी०) सौं।

१४-(ए०) आहै; (बी०) सगुन अहा तैं। १५-(बी०) किहेसि; (ए०) कुसल भअेव। १६-(बी०) भलि लागी; (ए०) भल लागेव। १७-(ए०) बैठहु; (बी०) बैठे। १८-(ए०) ×; (बी०) थाकहु। १९-(ए०,बी०) जस बोयेहु। २०-(ए०,बी) रे किअेहु। २१-(ए०, बी०) पायेहु। २२-(ए०) ×।

टिप्पणी—(२) **छेरिंह**—बकरी।

(३) **टोइसि**—टटोला। **छेरि**—बकरी।

(४ **पउतेउ**—पाता। **तैं**—तुझको।

(६) **बुयउ**—बोआ।

१८७

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर[१])

इहै[१] बोल कुँवर कहि चला। मगु अमगु न पूछै भला॥१
मानुस देखत[२] नियर न[३] जाई। ओहट ओहट[४] लागि[५] पराई॥२
मही न पीयइ[६] खीर जो जरा। फूँकै पाछहिं[७] अधरहिं[८] धरा॥३
जस यह मोख दयी[९] करतारा। तस अब मिरवउ[१०] पेम पियारा॥४
यह[११] बड़ कुसल दई[१२] हम[१३] किही[१४]। नौ कै आउ दई हम[१५] दिही[१६]॥५
बिबि कर बन्दों[१७] जोरि कै[१८], हौं[१९] बिधि मंगों[२०] तोहि[२१]।६
जिह[२२] कारन यह दुख सहे, सो सेइ[२३] मिरवहु[२४] मोहि॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अेहइ; (बी०) यहइ। २-(बी०) देख। ३-(बी०) नहिं। ४-(ए०) उहरेहि उहर; (बी०) ओहरे ओहरे। ५-(ए०,बी०) लाग। ६-(ए०) पीअै; (बी०) पीवै। ७-(ए०) बाछु; (बी०) बाझ। ८-(ए०,बी०) अधर नहि। ९-(ए०) दिहे; (बी०) दियेहु। १०-(ए०) मेरवहु; (बी०) मिरवहु। ११-(ए०) येह। १२-(ए०) दैअ; बी० दइव। १३-(ए०) मोहि; (बी०) जो। १४-ए० किहे। १५-(ए०) आजु मोहि, (बी०) बहुरि हम। १६-(ए०) दिहे। १७(बी०) ×। १८-(बी०) ×। १९-(बी०)×। २०-(ए०) मागो बिधि, (बी०) मॉगों मै। २१-(बी०) तोही। २२-(ए०,बी०) जेहि। २३-(बी०) सहा। २३-(ए०,बी०) ×। २४-(ए०) मेरवहु अब; (बी०) रे मिलावहु।

टिप्पणी—(१) **मगु अमगु**—मार्ग कुमार्ग।

(२) **नियर**—निकट। **ओहट ओहट**—बच बचकर, दूर-दूर रहकर। **पराई**—भागना।

(३) **मही**—छाछ; दही।

(४) **मिरवहु**—मिलाओ; मिलाप कराओ।

(५) **नौ**—नया। **आउ**—आयु।

१ एकडला प्रति में यह कड़वक दो बार अंकित है। एकडला और बीकानेर प्रतियों में पंक्तिय ४-५ क्रमश· ५ और ४ हैं।

१८८

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

करसायल[१] जनु[२] केसरि[३] पेखा। आगों[४] भाग[५] पाछों[६] फिरि देखा ॥१
कै र[७] कुरंगिन संग सेउँ[८] चौंकी[९]। कै र[१०] फँद[११] पारध[१२] कर[१३] मोंकी[१४] ॥२
सजग भयउ[१५] खिन[१६] थिर न रहाई। मानुस देखत[१७] नियर न[१८] जाई ॥३
चला जाइ[१९] सँवग्त[२०] मन भावा। आगों भवन[२१] दि्स्टि एक आवा ॥४
दिनियर सघन अस्त फुनि[२२] कीन्हा। चाँद[२३] परेउ[२४] उदवै[२५] मन दीन्हा[२६] ॥५
देखिसि रात सुहावन[२७] सीतल[२८], कहिसि[२९] रहौं ईंह[३०] ठाँउ ।६
चारि पहर दुख सुख निसिकै[३१], ओखों[३२] पंथ चलाउँ[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) करसकेल; (बी०) करसाऐल। २–(ए०) जनि; (बी०) जनौ। ३–(बी०) केहरि। ४–(ए०) अगे; (बी०) आगू। ५–(बी०) जाइ। ६–(ए०,बी०) पाछु। ७–(ए०,बी०)रे। ८–(ए०,बी०)सै। ९–(ए०,बी०)चूकी। १०–(ए०,बी०) रे। ११–(ए०, बी०) फॉद। १२–(बी०) पारधी। १३–(बी०) ×; (ए०) कै। १४–(ए०,बी०) मूँकी। १५–(ए०) भहेव; (बी०) भा। १६–(ए०, बी०) खन। १७–(बी०) देख। १८–(बी०) न। १९–(ए०) चलत है। २०–(बी०) सुमिरत। २१–(ए) आगु भौन, (बी०) आगे भुअन। २२–(बी०) अस्थ बन, (ए०) दीठि फुनि। २३–(ए०) चारि। २४–(बी०) परगास; (ए०) परेवा। २५–(ए०) उदै। २६–(ए०) कीन्हा। २७–(बी०) सोहावनि; (ए०) अँधेरी। २८–(ए०) ×। २९–(बी०) कहेसि। ३०–(ए०) येह; (बी०) यहि। ३१–(बी०) रात बिरम पवरी परतु। ३२–(ए०) उख; (बी०) खसख। ३३–(ए०,बी०) मिलाव।

टिप्पणी–(१) **करसायल**–मृग। **केसरि**–सिंह। **पेखा**–देखा। **आगों**–आगे। **पाछों**–पीछे। **फिरि**–घूमकर।

(२) **कुरंगिन**–हिरणी। **फँद**–जाल। **पारध**–शिकारी। **मोंकी**–खोली।

(४) **दिस्टि**–दृष्टि।

(५) **दिनियर**–दिनकर, सूर्य।

१८९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

ईंहवा[१] आइ[२] जो देखी[३] काहा। मानुस पंखि[४] न एको[५] आहा ॥१
कहिसि अचम्भो यह[६] कछु[७] आही। बइठों[८] छुपि[९] कै देखउँ[१०] ताही ॥२
काकर घर आहै ईंह[११] कोई[१२]। बैठि[१३] लुकाइ[१३] रहौं फुन[१४] सोई ॥३

चरचै लाग खोज यह[15] पाये[16]। चार परेवा अपुरुब आये[17] ॥४
चहूँ लोटि[18] कै भेस फिरावा। रूप इस्तिरी[19] धरहिं[20] सुहावा[21] ॥५
फुनि र[22] मन्त्र[23] बोल[24] दोइ[25] बोला, सेज सौंर भल आइ[26] ।६
अइस न[27] जानी[28] को[29] लइ[30] आवा, दहुँ को[31] गयउ बिछाइ[32] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) भौन; (बी०) भुअन। २–(ए०) आअे; (बी०) आय। ३–(ए०,बी०) देखै। ४–(ए०बी०) पंखी। ५–(बी०) कोई। ६–(बी०)×। ७–(ए०.बी०) कुछु। ८–(ए०) बैठो; (बी०) देखों। ९–(ए०,बी०) छपि। १०–(ए०,बी०) देखौं। ११–(ए०) अेह; (बी०) इह है। १२–(ए०) कोऊ। १३–(ए०) लुकाए; (बी०) लुकाय। १४–(ए०) सुनि; (बी०) पुनि। १५–(ए०) अेह; (बी०) नहिं। १६–(ए०) पाई; (बी०) पावा। १७–(बी०) आवा। १८–(ए०,बी०) लौटि। १९–(ए०, बी०) असतिरी। २०–(ए०,बी०) धरिन्हि। २१–(ए०,बी०) सुभावा। २२–(ए०) भर; (बी०) बहुरि। २३–(ए०) मता २४–(बी०) बोलिन्ह। २५–(ए०, बी०) दुइ। २६–(ए०) आए; (बी०) आय। २७–(ए०) अैसन; (बी०) आस न। २८–(बी०) जान। २९–(ए०, बी०) को रे। ३०–(ए०, बी०) लै। ३१–(ए०) को दहुँ। ३२–(बी०) गयेव बिछाय।

टिप्पणी—(१) **इँहवा**–यहाँ। **काहा**–क्या। **मानुस**–मनुष्य। **पंखि**–पक्षी। **एको**–एक भी।

(३) **काकर**–किसका।

(४) **परेवा**–कबूतर। **अपुरुब**–अपूर्व।

(५) **लोटि**–भूमिपर लेट इधर उधर घूमकर। **फिरावा**–बदला। **इस्तिरी**–स्त्री।

(६) **सेज-सौंर**–गद्देदार शय्या। **भल**–सुन्दर।

(७) **अइस**–ऐसा। **जानी**–जान पड़ा। **लइ**–ले।

१९०

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

मन्त्र बोल सुनकारि[1] बोलाये। चारि मोर नाचत भल[2] आये ॥१
चारौं लोटि भये मनसेरू। सेज बैठि अधरन[3] गिंय[4] मेरू ॥२
उर[5] कुच लाइ भुअन सेउ[6] गहहीं। आलिंगन अलवँहन[7] रहहीं ॥३
खेलहिं[8] कुरलहिं हँसहिं हँसावँहि। चारि पहर सुख रैनि[9] बिहावँहि[10] ॥४
खेलत[11] हँसत रैनि वँह[12] गई। कुँवरहि सब निसि डर मँह गई[13] ॥५
भोर भये उँह धावन आवा[14], कहिसि[15] बैठि तुम[16] काह ।६
वह[17] जो[18] गड़रिया छेरि[19] चरवाहा, आँधर किये केहुँह[20] आह ॥७

पाठान्तर—

१–(ए०) सिंगा जो; (दि० मार्जिन) हकार। २–(ए०) फुनि; (बी०) पुनि नाचत। ३–(ए०) अध्रन; (बी०) अधरन्ह। ४–(ए०) कै। ५–(ए०) औ। ६–(बी०) से; (ए०) भुव दुहुँ सौं। ७–(ए०) दै आलिगन बीरी खँडही; (बी०) आलिंगन अलौ दलमलही। ८–(ए०) फूदहिं; (बी०) खाडहि। ९–(बी०) निसि रंग। १०–(बी०) पोहावहिं। ११–(बी०) बोल्त; (ए०) तलत (?)। १२–(ए०) उन्हि; (बी०) उन्ह। १३–(बी०; दि० मार्जिन) भई। १४–(ए०, बी०) आए। १५–(ए०) कह; (बी०) कहेन्हि। १६–(ए०) बैठे तोह; (बी०) तुम बैठे। १७–(ए०) उवह। १८–(बी०) रे। १९–(ए०) है; (बी०) होत छेरी। २०–(ए०) कै कहै; (बी०) कियेहु काहू।

टिप्पणी—

(१) सुनकारि–सकेत द्वारा।

(२) मनसेरू–पुरुष। गिंय–कण्ठ।

(४) कुरलहिं–मनोविनोद करते है।

(६) धावन–दूत।

(७) आँधर–अन्धा। केहुँह–कोई। आह–है।

१९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सुनिकै यहि र[1] उड़िह[2] वै जाहीं[3]। राजकुँवर यहि[4] सुनत डराहीं[5] ॥१
वहि ठाँउ सेउँ कियउ पयाना[6]। राजकुँवर जिउ लै र[7] परानाँ[8] ॥२
फुनि वैसहिं वह[9] भागै लागा। जस र[10] गड़रिया कैं डर भागा ॥३
आगों[11] पाछैं देखत जाई। बहुरि न आवहिं[12] लाग पराई ॥४
बहुत दूरि जो आयउ[13] भागा[14]। सूरज[15] तपा[16] घाम बहु लागा[17] ॥५
तरुवर[18] एक सुहावन[19] देखिसि, बैठउँ[20] खिन[21] एक[22] छाँह।६
छाँह बैठि तरुवर कैं[23], पवन झरकि[24] फुनि[25] ताँह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) अेहरे। २–(ए०) उड़हिं। ३–(बी०) देखि उत से कीजै खाई। ४–(ए०) अेह। ५–(बी०) कुँवरहिं अधिक बात मन भाई। ६–(ए०) उहि ठाँ सौ उन्ह किअेव पयानों; (बी०) निमख एक महँ किछु न जाना। ७–(ए०) रे। ८–(बी०) मर्म ठाउँ वह छोडि पराना। ९–(बी०) वैसे ही। १०–(ए०, बी०) रे। ११–(ए०, बी०) आगे। १२–(बी०) आवै। १३–(ए०) आअेव; (बी०) आवा। १४–(बी०) भागी। १५–(बी०) सूर्ज। १६–(बी०) ताप। १७–(ए०) तापक हाथ यहि लागा; (बि०) लागी। १८-(ए०,बी०) तरवर। १९–(ए०,बी०) सोहावन।

२०–(ए०) कह बैठों। २१–(ए०) खन। २२–(ए०) ×। २३–(ए०) तरवर के, (बी०) तरवर की। २४–ए० पौन झरक; (बी०) पौन झुरकै। २५–बी० ×।

टिप्पणी—(२) **पयानाँ**–प्रयाण। **परानाँ**–भागा।

(५) **घाम**–धूप।

(६) **तरुवर**–वृक्ष।

(७) **ताँह**–वहाँ।

१९२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मिरगावति[1] जो उहाँ[2] सेउ[3] आई। सखी सहेली पूछैं[4] धाई॥१
पूछत[5] सखी कवन[6] वहि[7] आही। जैं र[8] चीर[9] तुम्ह[10] लेंउ[11] जाही[12]॥२
किह[13] कारन कहुँ[14] लेतसि[15] चीरू। बिनु संबन्ध[16] कोइ गहै न खीरू॥३
किहैं[17] खोज[18] हम सेउँ तुम रहेउ[19]। सपत आह[20] जो फुर न[21] कहेउ[22]॥४
हँसि कै[23] कहिसि सुनहु यह[24] बाता। अब न छुपाओं[25] कहउँ[26] निराता॥५
जिह[27] दिन तुम्हरे[28] साथ होइ[29], सरवर गइउँ[30] नहाय[31]।६
तिह[32] अगुमन[33] घर आयँहु[34] महि[35] तज[36], हौं उँहि[37] परेउ[38] भुलाय[39]॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) मिरगावती। २–(ए०) इहाँ। ३–(ए०) सौं; (बी०) तै। ४–(ए०) पूछहिं। ५–(ए०) पूछहि; (बी०) पूछै। ६–(ए०, बी०) कौन। ७–(ए०) उवह; (बी०) वह। ८–(ए०) रे; (बी०) जेइ रे। ९–(बी०) खीरू। १०–(ए०, बी०) तोह। ११–(ए०) लीन्हेव; (बी०) लिहेसि। १२–(ए०, बी०) चाही। १३–(ए०, बी०) केहि। १४–(ए०, बी) कह। १५–(ए०, बी०) लीतिसि। १६–(ए०, बी) सनमंध। १७–(ए०) किहि। १८–(ए०) कोंछ; (बी०) ओझ। १९–(ए०) तोह हम सौ रहहु; (बी०) हमसे तुम रहहु। २०–(बी०) आहि। २१–(ए०, बी०) नहिं। २२–(ए०, बी०) कहहु। २३–बी ×। २४–(ए०) अेह; (बी०) हम। २५–(ए०, बी०) छपावो। २६–(ए०, बी०) कहौ। २७–(ए०, बी०) जेहिं। २८–(ए०, बी०) तोहरे। २९–(ए०, बी०) हौं। ३०–(ए०) खोरैं गइउँ। ३१–(बी०) अन्हाइ। ६२–(ए०, बी०) तोह। ३३–ए० अगमनि; (बी०) अगमनहिं। ३४–(ए०) आइहुँ; (बी०) आयेहु। ३५-३६–(ए०, बी०) ×। ३७–(ए०, बी०) उँह। ३८–(ए०, बी०) परिउँ। ३९–(ए०) भुलाए; (बी०) भुलाइ।

टिप्पणी—(५) **निराता**–सविस्तार।

(७) **अगुमन**–पहले। **हौं**–मैं। **उँहि**–वहाँ।

१९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आवत उहँउ[1] कुँवर एक देखा। जिउ वहि[2] लाग चित्र चित रेखा[3] ॥१
मिरिग छया धरि देखै लागेउ[4]। वहि[5] देखाइ[6] आगैं होइ[7] भागेउ[8] ॥२
वैं[9] मुहि[10] देखि[11] कियउ[12] गुहनारा[13]। धरै न दियेउँ[14] बियोग सँचारा[15] ॥३
वहि र[16] मान हौं गयउँ[17] बिलाई। जिंह[18] सरवर तुम्ह[19] गँइह[20] नहाई[21] ॥४
जिउ न रहै लुबधी हौं[22] भई। कै मिस[23] तुम्ह[24] साथ लइ[25] गई ॥५
खोरत तुम्ह[26] जो कहा मुहि[27] आगै, मँदिर आह यह काह[28] ।६
उहै[29] मँदिर उन्ह साजा[30], निसि दिन बैठ पन्थ हम[31] चाह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) अहिउँ; (बी०) ही। २-(ए०) उहि; (बी०) ही। ३-(ए०) चित चितरेखा; (बी०) चित चिन्ता राखा। ४-(ए०) लागेव, (बी०) लागिव। ५-(ए०, बी०) अहि। ६-(ए०) देखाए; (बी०) देखाय। ७-(ए०, बी०) भै। ८-(ए०, बी०) भागिंव। ९-(ए०) उए; (बी०) वहि। १०-(ए०, बी०) मोहि। ११-(बी०) देख। १२-(ए०) कीन्ह; (बी०) कीहि। १३-(ए०) गोहनारा; (बी०) गोहारी। १४-(ए०) देउ। १५-(बी०) संचारी। १६-(ए०, बी०) उहि रे। १७-(ए०) गइउँ; (बी०) गई। १८-(ए०, बी०) जेहि। १९-(ए०, बी०) तोह। २०-(ए०) गइहु; (बी०) गई। २१-(बी०) अन्हाई। २२-(ए०, बी०) लुबुधी। २३-(ए०) मिसि; (बी०) मिसु। २४-(ए०) तोहहि; (बी०) तुम्हहि। २५-(ए०, बी०) लै। २६-(ए०) तोहि; (बी०) तो तुम। २७-(ए०) मोहि; (बी०) हम। २८-(बी०) मँदिर जो वह आह। २९-(बी०) वहरे। ३०-(बी०) रचाया। ३१-(ए०) मम।

टिप्पणी—(१) उहँउ—वहीं।
(२) छया—छद्मवेश। धरि—धारण कर।
(३) गुहनारा—साथ। धरै—पकड़ने। सँचारा—संचार किया।
(४) बिलाई—लुप्त। गँइह—गयी थी। नहाई—स्नानार्थ।
(५) मिस—बहाना।

१९४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हम नहाइ[1] [उठि घर[2]] कहँ आई। वहि[3] कहँ मन्त्र दीन्हि[4] यह[5] धाई ॥१
जो र[6] गगन चढ़ि सातौं[7] धावहु[8]। चीर लिहैं बिनु[10] वहँ नाहिं[11] पावहु ॥२
वहि कैं मन्त्र गहसि[12] हम चीरू[13]। आपुन[14] आनि दिहसि[15] हम[16] खीरू[17] ॥३
लइके[18] चीर छुपायसि[19] तहाँ। ठाँव न देखौं[20] पावौं[21] जहाँ ॥४

पुनि रस बात किहिसि[23] रंग[24] कीजै। नारंग[25] बेल[26] बास[27] रस लीजै ॥५
मैं[28] वहि[29] सों अस बोला[30] यह[31] कहँ[32], जीह[33] खाँडि मरि जाउँ[34] ।६
जो यह[35] बात सँचारहु[36] परसेउ[37], तो हों खिन न जिआउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) अन्हाइ। २-(दि०) घर उठि। ३-(ए०) वोहि, (बी०) उह। ४-(बी०) कहुँ। ५-(ए०) दीन; (बी०) दीन्हेउ। ६-(ए०) अेक, (बी०) ×। ७-(ए०, बी०) रे। ८-(बी०) धावा। ९-(बी०) धावसि। १०-(बी०) बाजु। ११-(ए०) उनहि न; (बी०) वहि न। १२-(बी०) लिहिसि। १३-(बी०) चीरा। १४-(ए०, बी०) आपन। १५-(ए०) दिहिसि। १६-(ए०) एक। १७-(बी०) आनि दिहिसि मोहि आपन खीरा। १८-(ए०, बी०) लैके। १९-(ए०, बी०) छ्पाइस। २०-(बी०) देखै। २१-(बी०) जाई। २२-(ए०) बिन। २३-(ए०) कहेसि। २४-(बी०) रस। २५-(बी०) नार। २६-(ए०) बेइल; (बी०) बेलि। २७-(बी०) बासु। २८-(ए०) मइ। २९-(ए०) वोहि; (बी०) उन्ह। ३०-(ए०) बोल; (बी०) बोली। ३१-(ए०) ×, (बी०) एहि। ३२-(ए०) ×, (बी०) खन। ३३-(ए०) जीभ; (बी०) जीभि। ३४-(बी०) जाँव। ३५-(ए०) असि। ३६-(ए०, बी०) सँचारसि। ३७-(ए०) ×; (बी०) बरसै। ३८-(बी०) जियाँव।

टिप्पणी—(१) मन्त्र—सलाह।

१९५

(दिल्ली; बीकानेर)

फुनि मैं एक[2] बात[3] वहि[4] कही। तैं अबहीं बिरसेउँ हौं[5] वही ॥१
[जो] पर[7] करसु[8] तो र[9] जीउ दिवाऊँ[10]। रस पिय मिलौं[11] हौं र[12] तुम्ह[13] सेऊँ॥२
कहिसि कहा न मेटों[14] तोरा। यह र कहसि[15] ओं हाथ सँकोरा ॥३
तो मैं कहा सुनहु एक[16] बाता। आवइ[17] देहु हमार सँघाता ॥४
उन्ह सेउ[18] माँग लेहु तो पावहु। तो[19] हम सेज रवन[20] रस रावहु ॥५
जो मैं कहा सो मानसि[21] हरका[22], फिर[23] न माँगसि[24] सेज ।६
माँस पाँच एक ठाँइँ अहै[25], जस सूरज दर पेज[26] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पुनि। २-×। ३-बात तो। ४-वोहि से। ५-तौ। ६-हौ बर सेउ। ७-बर। ८-करहु। ९-रे। १०-देऊँ। ११-रस पेमी लो। १२-×। १३-तुम। १४-मेटो नहि। १५-यहै कहिसि। १६-यह। १७-आवै। १८-उन। १९-तोरे। २०-रवनि। २१-मानिसि। २२-×। २३-बहुरि। २४-माँगिसि। २५-ठाउँ आये हैं। २६-जस मन दिया तेल।

टिप्पणी—(३) मेटौं–मिटाऊँ। सँकोरा–संकुचित कर लिया; खींच लिया।
(४) सँघाता–साथी।
(५) रवन–रमण।
(६) हरका–पीछे हटा।

१९६
(दिल्ली)

फुनि बैठि कहँ बतैं बढ़ावा। गयउ छाड़ि छिन एक पावा ॥१
धाइ एक हम राखसि राँधा। मैं उहिं सों बातहिं जिउ बाँधा ॥२
बातहिं लाइ मैं र बोराई। काज करै कै अन्त पठाई ॥३
तौलहि चीर ढूँढ़ मैं लिया। पहिर चीर धारेउ नौ तिया ॥४
नाउँ धाइ सों पिता क लीन्हों। अउर चिन्ह कंचनपुर दीन्हों ॥५
औ अस कहेउँ जो कुँवर सेंउ, जो लुबधी हम पेम।६
कंचनपुर आवइ हम लग, उहै औधि इह नेम ॥७

टिप्पणी—(१) बतैं–बातैं।
(२) राँधा–पहरेदार।
(३) अन्त–अन्यत्र। पठाई–भेजा।
(४) तौलहि–तबतक।
(७) नेम–सकल्प।

१९७
(दिल्ली)

जो कुछ अहा मरम सो कहा। लुबुधा जिउ अब जाइ न रहा ॥१
जेहि का मरम कहेउँ तुम्ह आगे। आइहि इहाँ हमरेउ लागे ॥२
कहा सहेलिंह जो अस आहा। तबही काह न हम सेउ कहा ॥३
उन्ह मँह एक जो अही सयानाँ। खेलसि पेम कहै भल जानाँ ॥४
कहिसि पेम का जानसि भोली। हौं तिह कहौं पेम रस घोली ॥५
घिरत खाँड सेउ करहु मेरावा, अमिय महारस लेहि।६
पेम भुअंगम कसि हिय कह, गई छाड़ न देहि ॥७

टिप्पणि—(२) हमरेउ–मेरे। लागे–निकट।

१९८
(दिल्ली)

जो तुम्ह आह पेम कै साधा। आपु खाँड करहु दोइ आधा ॥१
पेम सवाद सोइ लै बूझा। आपु मींत अहै ये सूझा ॥२

वहैं हरख वस पेम न होई। जिउ जो देइ पावइ सोई ॥३
पेम उतंग ऊँच कर आहा। बाउर सोइ जो बिनु दुख चाहा ॥४
पेम खेल जो चाहै खेला। सर सेंउ खेल जिउ पर हेला ॥५
कुतुबन कंगूरा पेम का, ऊँचा अति र उतंग ।६
सीस न दीजै पाउ तर, कर न पहुँचै खंग ॥७

टिप्पणी—(१) साधा—इच्छा ।
(३) उतंग—उत्तुंग, ऊँचा ।

१९९

(दिल्ली; बीकानेर)

पिरिति[1] किही तिंह[2] करै न जानी। पेम लाइ कस भयसि[3] अयानी ॥१
औ र मिरग[4] बाउर[5] पर[6] फाँदै। छाड़ि बहेलिया[7] बिनु वह बाँधै[8] ॥२
बाउर सोइ जो हाथ[9] से छाड़ा[10]। पेम भँवर[11] थिर रहै न गाढ़ा[12] ॥३
पेम जो आह बहुत दुख पाई। दुख कै मिलै सो संपत उड़ाई[13] ॥४
अबहूँ खोज परहुँ[14] वह केरें[15] । जिय न[16] जाइ सो[17] मिलै[18] सोबेरें[19] ॥५
ऐसहिं आगि जरत हैं[20] उर मँह,[21], मैं मेलेउ घिउ तेल[22] ।६
पेम गहँन[23] सब खेल सेंउ, जो र सँभालै[24] खेल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१—प्रीति। २—तुम। ३—भइहु। ४—म्रिगा। ५—बाव। ६—परै। ७—बहेली। ८—तेहि बिनु छाँडे। ९—हाथै। १०—छाँडै। ११—भाव १२—गाडे। १३—पूरी पक्ति नहीं है।[1] १४—करहु। १५—वोहि केरा। १६—जीवन। १७—फुनि। १८—मेलै। १९—सबैरॉ। २०—अही। २१—महि। २२—तुम्ह मेलेउ दिया तेल। २३—कठिन। २४—सँभारै।

टिप्पणी—(१) अयानी—अज्ञानी ।

२००

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

पेम आइ किंह[1] रहै सँभारा[2]। गहे नेह आपु नाँहि सँहारा[3] ॥१
कै[4] उपकार करहु[5] जो पारहु। प्रान पयान करत र[6] संभारहु ॥२
भई[7] असाध जो र[8] उपचारा[9]। रुगिया तिह र[10] बैद का करा[11] ॥३
मिरगावत सेउँ[12] कहहिं सहेलीं। देवस चार एक रहहु दुहेलीं ॥४
भूखें अम्ब[13] न पाकै बारा। दिन दस बूझि[14] करहु सहारा[15] ॥५

१—सम्मेलन सस्करणमें इस पक्तिके लुप्त होने की बात कही गयी है। किन्तु माताप्रसाद गुप्त-का कहना है कि बीकानेर प्रति में यह पक्ति है। (भारतीय साहित्य, वर्ष ८ अक ३, पृ० ९०)

दिन दस तुम र[16] सहारहु[17] हम उटवहिं उपकार ॥६
हँस दमावति सेउँ नल[18] मिरवहि,[19] करकर होइ[20] उजियार[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) प्रेम आय कहँ। २–(बी०) पेम आय मन परेउ खभारा। ३–(ए०) किहे नेह अब नाहि सहारा; (बी०) यह जिउ मैं अब तुम्हहि उभारा। ४–(ए०, बी०) कुछु। ५–(बी०) करै। ६–(ए०) जो; (बी०) ×। ७–(ए०) भैअ; (बी०) मुये। ८–(ए०,बी०) रे। ९–(ए०, बी०) उपचारा। १०–(ए०) रोगिया तेहि रे; (बी०) सो रोगिया। ११–(बी०) करई। १२–(ए०,बी०) मिरगावती सौं। १३–(ए०) आँव; (बी०) अब। १४–(ए०) बूझहु। १५–(ए०) सभाँरा; (बी०) अहारा। १६–(ए०, बी०) तोह रे। १७–(बी०) सहरहु। १८–(ए०) सौ नल; (बी०) नल जेउँ। १९–(ए०,बी०) मेरवहि। २०–(ए०) होए; (बी०) होय। २१–(ए०,बी०, दि० मार्जिन) अधार।

टिप्पणी—(३) असाध–असाध्य।

(३) दुहेलीं–दुःखी।

(५) अम्ब–आम। पाकै–पके। बारा–बाग। बूझि–समझकर।

२०१

(दिल्ली; बीकानेर)

रूप मुरारि[1] भइ पुरि[2] आसा। कीत[3] पयान गये कबिलासा ॥१
वै तो सुरपति सभा सिधारे। मंती[4] लोग मतैं बैठारे[5] ॥२
पूत नाहिं[6] जिह[7] राज उभारी। कहहु काह[8] किह[9] तिलक सँवारी[10] ॥३
मंती[11] लोग मतैं[12] अम्म आवा। मिरगावतिह[13] राज बैठावा[14] ॥४
तिलक सारि[15] कै कियउ जुहारू[16]। मिरगावतिह[17] राज दइ भारू[18] ॥५
आन[19] भई सब देस नगर[20] मँह, मिरगावति कर[21] राज।६
महतैं नेगी आइ[22] जहवाँ लहि[23], लागि सँवारै[24] काज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति–

१–रूपमुररिंह। २–परि। ३–किता। ४–महते। ५–बैसारे। ६–न आहि। ७–जेहि। ८–केहि। ९–कँह। १०–सारी। ११–महतै। १२–मता। १३–मिरगावती कह। १४–बैसावा। १५–साजि। १६–कियेउ जुहारा। १७–मिरगावती। १८–दिय भारा। १९–आनि। २० ×। २१–मिरगावती का। २२–अहे। २३–जहाँ लहु। २४–लगे चलावै।

टिप्पणी—(१) भइ–हुई। पुरि–पूरि। कीत–किया। पयान-प्रयाण। कबिलासा–स्वर्ग।

(२) वै–वे। सुरपति–इन्द्र। मंती–मन्त्री।

(३) उभारी—ऊपर उठायेगा।
(५) सारि—सजाकर। जुहारू—अभिवादन।
(६) आन—ख्याति, प्रसिद्धि।
(७) महतँ—(महत्) बड़ा, श्रेष्ठ। माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमे इसको महामात्य (महँत > महँता > महामात्य) बताया है और शिवगोपाल मिश्रने इसका अर्थ प्रधान मत्री किया है। किन्तु इसका तात्पर्य किसी पद विशेषसे न होकर राज्यके उच्च कर्मचारियोसे है। नेगी—साधारण कर्मचारी। जहवाँ लहि—जहाँ तक।

२०२

ल्ली; बीकानेर)

पुन धरम सब देस चलावा। धरमसार[1] बहु नगर[2] उचावा ॥१
अग्या पौ भोजन कै[3] भई। जोगी जंगम जो आवई ॥२
पन्थी जो इँह पँथ चल आई[4]। हम कहँ गुदर[5] देह तो जाई[6] ॥३
जती सन्यासी जो कोउ[7] आवइ। बात सुने कहँ पास[8] बुलावइ ॥४
पहिलैं पूछहि अउर कछु[9] बाता। पुनि[10] चन्दरागिरि[11] कुसल नवाता[12] ॥५
दुनि[13] कै चाह लेत दिन कंह[14], पूछे[15] कोइ[16] आइ को जाइ। ६
आसा[17] लुबुधी पूछइ सो वहँ,[18] मकुँह मिलै वह आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—
१—धर्मसार। २—एक नीक। ३—अन भोजन पौ की। ४—जती सन्यासी जोगी जो आवइ। ५—गूदर। ६—जावइ। ७—जोगी जो। ८—कहुं राध। ९—और किछु। १०—पुनि। ११—चदागिरि। १२—कुसलाता। १३—दिन। १४—रहई। १५—×। १६—को। १७—अस। १८—पूछै पथ कहुँ। १९—मकहुँ।

टिप्पणी(१) पुन—(पुन्न) पुण्य। धरमसार—धर्मशाला। उचावा—निर्माण कराया।
(२) अग्या—आज्ञा। पौ—पय, पानी। भई—हुई।
(३) गुदर—सूचना।
(६) दुनि—दुनिया। चाह—जानकारी।
(७) मकुँह—कदाचित्।

२०३

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

कुँवर जो छाँह बिरिख तर[1] आहा। कहसि जाँउँ[2] बैठों अब[3] कहाँ ॥१
उठत दीठि[4] ऊपर कहँ गई[5]। डालिंह पंखि दोइ बोलई[6] ॥२
पेम कथा उन्ह सुरस[7] सँचारी। कुँवर कान दइ[8] बात उन्हारी ॥३
दोउ[9] आपु मँह बकतहिं बाता। कुँवर एक मिरगावति राता ॥४

अबलहिं वैं र[१०] बहुत दुख देखी[११] । गागर[१२] मसि न जाहिं लेखी[१३] ॥५
अब र[१४] अलप दिन आहहि[१५] दुखकै[१६], सुख देखिह[१७] बहु भाँत[१८] ।६
बहुरे बिबि घर[१९] चलि गये[२०], अब होइहि मन साँत[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

२-(बी०) की । २-(ए०, बी०) चलौ । ३-(ए०, बी०) अब बैठो । ४-डीठि । ५-(बी०) चलै जो ऊपर परि गई डीठी । ६-(ए०) डारी पखी दुइ बोलै लई; (बी०) डारि पखि दुइ बोले बैठी । ७-(ए०) उन्हि सुरस; (बी०) रसारस । ८-(ए०,बी०) दै । ९-(ए०, बी०) दुवौ । १०-(ए०) उए रे; (बी०) उइँ रे । ११-(ए०) देखे; (बी०) देखा । १२-(बी०) कागर । १३-(बी०) जाइ नहिं लेखा, (ए०) पैहे पेम प्रान सरेखे । १४-(ए०, बी०) रे । १५-(बी०) अहहिं । १६-(ए०) × । १७-(बी०) देखी । १८-(ए०, बी०) भाँति । १९-(बी०) बहुत बिब खर; २०-(ए०) बहुत दुख उन्ह देखे । २१-(ए०,बी०) साँति ।

टिप्पणी—(१) बिरिख–वृक्ष । तर–नीचे ।

(२) दीठि–दृष्टि । डालिंह–डालीपर । बोलई–बोलते हुए ।

(५) गागर–घड़ा । मसि–स्याही ।

(६) अलप–(अल्प) थोड़ा ।

२०४

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कुँवर बात यह सुनी सुहाई[१] । भा अनन्द अस कही[२] न जाई ॥१
मरत पियास पानि जनु[३] आवा[४] । पेम घाइ[५] उन्ह औखद[६] पावा[७] ॥२
जनु[८] दालदि[९] लछ[१०] बहु पाई । खिन खिन[११] रहसै अंग न समाई ॥३
फुनि[१२] तरुवर सेउँ पंखि[१३] उड़ानी । कुँवर कहा अपनैं मन जानी ॥४
अब[१४] जिह[१५] दिसि ये[१६] जाहिं उड़ाई । हमहु पाछु[१७] उन्ह लागहु[१८] धाई ॥५
चला पाछु[१९] उन्ह[२०] केरे धावत[२१], सरग नैन दोइ[२२] लाइ ।६
काम दगध[२३] साँचे[२४] जन भौ[२५], तिह[२६] गये[२७] सो पन्थ दिखाइ[२८] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०) सोहाई । २-(ए०, बी०) कहा । ३-(ए०) जनि; (बी०) जनौ । ४-(ए०, बी०) पाव । ५-(ए०) घाव । ६-(ए०) उन्हि औखद; (बी०) औखद जनौ । ७-(ए०, बी०) लावा । ८-(बी०) जानहु । ९-(ए०) दारिद्री; (बी०) दलिद्री । १०-(बी०) लंछ । ११-(ए०, बी०) खन खन । १२-(ए०) अभी; (बी०) पुनि । १३-(ए०,बी०) सौ पंखी । १४-(ए०) जोव ओ । १५-(ए०, बी०) जेहि । १६-(ए०) × । १७-(बी०) पाछू । १८-(ए०) लागहि । १९-(बी०) पाछू । २०-(बी०) उन्हि । २१-(ए०, बी) × । २२-(ए०, बी०) दुई । २३-

(ए०, बी०) दगधि । २४–(ए०) साचहिं; (ब्री०) जरि । २५–(ए०) जन गये; (बी०) फूटहिं । २६–(ए०, बी०) × । २७–(बी०) गई । २८–(ए०, बी०) देखाय ।

टिप्पणी—(३) दालदि–दरिद्र । लछ–लक्ष, लाख ।

(५) हमहु–मै भी । पाछु–पीछे ।

(६) धावत–दौडते हुए । सरग–स्वर्ग; यहाँ तात्पर्य है—ऊपर ।

२०५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला जाइ मारग इक[1] पावा । कहिसि जाँउ यँहि मारग धावा ॥१
आगों[2] दिस्टि परी लखराऊँ । कहिसि गाँउ[3] होइहि यहि ठाँउँ ॥२
गहगहाइ खिन खिन जिउ रहई[4] । कहसि कंचनपुर इहवै अहई ॥३
चैठि देखि लखराउँ सुहाई[5] । पाँत[6] बराबर चहुँ दिसि लाई ॥४
पात घास[7] कै चिन्ह[8] न पाई[9] । भात बखीर[10] जानु तिह[11] खाई[12] ॥५
रूपा[13] ढारि जानु[14] भुइ राखी, ऊँच न कितहू[15] खाल ।६
एक एक रूख सँवारहि बैठे[16] चँर-चँर[17] पँच-पँच माल ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) एक । २–(ए०) आगू; (बी०) आगे । ३–(बी०) गाँऊँ । ४–(ए०, बी०) उठई । ५–(ए०, बी०) सोहाई । ६–(ए०, बी०) पाँति । ७–(ए०, बी०) घास पात । ८–(ए०, बी०) चिन्ह । ९–(ए०) पाइय । १०–(ए०, बी०) बखेरि । ११–(बी०) तहाँ जनो । १२–(ए०) खाइय । १३–(ए०, बी०) रूप । १४–(ए०) जनु; (बी०) जनो । १५–(ए०, बी०) कतहू । १६–(बी०) × । १७–(ए०) चरि चरि; (बी०) चारि चारि ।

टिप्पणी—(२) लखराऊँ–लक्षाराम; ऐसा बगीचा जिसमे लाख वृक्ष हो ।

(३) गहगहाइ–गद्‌गद् । खिन खिन–क्षण-क्षण । इहवै–यही । अहई–है ।

(५) भात–चावल । बखीर–खीर ।

(६) रूपा–चाँदी । ढारि–ढालकर । खाल–नीचा ।

(७) रूख–वृक्ष । चँर-चँर–चार-चार । पँच पँच–पाँच-पाँच । माल–माली ।

२०६

(दिल्ली; बीकानेर[1])

जँह लग बिरिख[1] जगत मँह आहे[2] । देखी सभै जाइ न[3] कहे ॥१
जो हम सवन[4] सुने न[5] काऊ । नाँउ कहाँ लहि[6] कहाँ सुभाऊ ॥२

१. इस प्रतिमें आरम्भकी तीन पंक्तियोंके साथ चार सर्वथा भिन्न पंक्तियाँ हैं जो हमारी दृष्टिमें प्रक्षिप्त हैं । इस प्रतिका पाठ दिल्ली प्रतिके मार्जिनमें भी है ।

फुनि[८] माली[८] फुलवारि सँवारी। बहुत फूल फूलीं[९] फुलवारी ॥३
भँवर कुसुभँ पर केलि कराही। मालति बेलि नेवारिन जाई[१०] ॥४
कुन्द सेवती जूही रावइ। बाला चम्पा बारि मनावइ[१०] ॥५
सिरखँड सरबत बनो पकारू, मो इत **दौनहि लाउ[१०]** ।६
मारो **झरै हँसाइ हिय, नाँहुत मनहि सराउ[१०]**॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–ब्रिख। २–अहे। ३–नहिं। ४–स्रवन। ५–नहिं। ६–लहु। ७–पुनि। ८–मालिहु। ९–फूले। १०–परिशिष्ट १ मे देखिये।

टिप्पणी—(१) **बिरिख**–वृक्ष। **सभै**–सभी।

(२) **सवन**–श्रवण। **काऊ**–कोई। **नाँउ**–नाम। **सुभाऊ**–स्वभाव।

(४) **कुसुभँ**–कुसुम। मालती–सफेद रगका फूल। **बेलि**–(बेइल–बेला) सफेद रगका सुगन्धियुक्त फूल जो गरमीमे फूलता है। इसकी अनेक किस्म होती है—मोतिया, मोगरा, रामबेल। मोतियाको माधवी भी कहते है। इसकी बाला लोगोको विशेष प्रिय है। बेलिका तात्पर्य बेलीसे भी हो सकता है जो लाल फूलोवाली एक लताका नाम है। **नेवारिन**–(नेवारी) श्वेत फूल जो चैतमें फूलता है। सम्भवतः यह बेलाका एक किस्म है।

(५) **कुन्द**–सफेद रगका छोटा सुगन्धियुक्त फूल जो अगहन-पूसमे फूलता है। कवियोने प्रायः दांतोके उपमानके रूपमे इसका उल्लेख किया है। इसका झाड़ होता है। **सेवती**–(स० सेमन्ती अथवा शतपत्रिका>सयवत्तिया>सइउत्तिया>सेउत्तिया>सेवती) सफेद गुलाब। अबुलफज्लने इसे रायबेलसे मिलता-जुलता एक पत्तेका फूल बताया है। इसके पौधेमे एक साथ इतने फूल आते है कि वह ढॅक जाता है। **जूही**—(स० यूथिका; यूथी) यह भी सफेद रंगका फूल है। अबुलफज्लका कहना है कि यह तीन सालपर फूलती है। यह पेड़से लिपटकर बढ़नेवाली लता है। **चम्पा**—सुनहले रगका तेज सुगन्धवाला फूल जो चैत्रमे फूलता है। इसका १०-१२ फुट ऊँचा वृक्ष होता है। कवियोने नारी शरीरके रगके उपमानके रूपमे प्रायः इसका उल्लेख किया है। कवि प्रसिद्धि है कि भौंरा इस फूलपर नहीं बैठता। यह भी कवि प्रसिद्धि है कि यह स्त्रियोके हाथसे पुष्पित होता है।

(७) **दौनहि**—(दौना) तुलसीकी जातिका पौधा जिसकी पत्तियोमे सुगन्धि होती है।

(७) **नाहुँत**—नहीं तो; अन्यथा। **मनहि**–मनमें।

२०७

(दिल्ली; बीकानेर)

चुनहिं[1] केतकी पाँडर[2] करनाँ[3]। केवइ हेत[4] बाजहिं[5] जनु बरनाँ[6] ॥१
कहै चँबेली भँवरहिं पाऊँ[7]। नागेसर पर फूल चढ़ाऊँ ॥२
भुइँचम्पा[8] भुँइ रहा लजाई। जो गुलाल को जाकी[9] आई ॥३
पाँच बान कामथ कर तहाँ[10]। कनकबेल[11] फूली है जहाँ[12] ॥४
कुसुम[13] फूल कहँ[14] कोइ न मानै[15]। भसल कीर सोर तिंह सानै[16] ॥५
कौतुक देखि भुलानेउ कुँवरा[17], नित बहार[18] फुलवारि ।६
घनि जिउ मधुकर कै[19], बिरसै बास माँत बिकरार[20] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–जहाँ। २–पंडर। ३-कर्ता। ४–केवहिं हेतु। ५–बाजु। ६–जेहमर्ना। ७–राऊ। ८–चम्पक। ९–कुंजल। १०–चम्प नगर मधुकर है जहाँ। ११–कनिक पियरि। १२–तहाँ। १३–कुसुमी। १४–कर। १५–जाना। १६–भसल कीरत रहा जो माना। १७–कुँवर। १८–अस्तल भइ। १९–कर। २०–बासु माल्ती करारि।

टिप्पणी—(१) केतकी–सफेद रंगका भीनी सुगन्धि वाला फूल जो आश्विनमे फूलता है। यह तलवारकी आकृतिका मोटा और नुकीला होता है। भ्रमरका केतकीके कॉटेमे फॅसना कवि-समय रहा है। पाँडर–(पॉडल) यह कोई अप्रसिद्ध फूल है। यद्यपि इसका उल्लेख सूरसागरमे मिल्ता है (३५२१)। अबुलफजल-के कथनानुसार यह पॉच-छ लम्बी पंखुड़ियोवाला फूल है जिससे जलको सुगन्धित करते है। यह हर मौसममे फूलता है। करनाँ–हिन्दी शब्दसागरके अनुसार सफेद फूलोवाला पौधा जिसके पत्ते केवड़ेकी तरह लम्बे किन्तु बिना कॉटोंके होते है, सुदर्शन। आइने अकबरीमे इसे बसन्तमे फूलनेवाला सफेद फूल बताया गया है।

(२) चँबेली–चमेली। सफेद रगका फूल। इसे सस्कृत मे जाती अथवा मालती कहते है। नागेसर–(सं० नागकेसर) बसन्तमे फूलनेवाला लाल फूल जिनमे पॉच पखुड़ियॉ होती है।

(३) गुलाल–अबुलफजलके कथनानुसार बसन्तमे फूलनेवाला फूल।

(४) पाँचबान–पचबाण; कामदेवका अस्त्र। कामथ–कामदेव।

(७) मधुकर–भ्रमर। बिकरार–(फा० बेकरार) विकल।

२०८

(दिल्ली, बीकानेर)

ऐसी[1] फुलवारी आह[2] सुहाई। देखत रहा[3] कहै[4] न[5] जाई ॥१
सबै फूल परिमल[6] कै कहैं[7]। औ परिमल बिनु ते सब अहैं[8] ॥२

सदल[1] सरूप फूल[10] बहु[11] फूले। भँसल बास रस जिंह कँह[12] भूले ॥३
बहुत पुहुप को जानै नाऊँ। देखत रहा अपूरब ठाऊँ ॥४
जे र[13] फूल देखे औ सुने। कवि जो सुहानी[14] ते सब कहे ॥५
जे[15] कवि आइ समानी जाती[16], सरबस कहेउँ बिरवान[17] ।६
और फूल बहु आहहिं[18] जग महँ; तिंह क[19] नाँउ को जान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–अस। २–अही। ३–रहै। ४–कहै। ५–ना। ६–अमिय। ७–कर अहै। ८–कहे। ९–सुदल। १०–फूल सरूप। ११–सब। १२–जेही। १३–जोरे। १४–समाने। १५–जो। १६–समाने जाने। १७–(दि० मार्जिन) सरबस बरन के ते बिरवान, (बी०) सो सराहे परवान। १८–अहे। १९–तिन्ह कर।

टिप्पणी—(२) परिमल–सुगन्ध।
(३) भँसल–बसा हुआ। बास–गन्ध।
(६) सरबस–सभी। बिरवाँन–पौधे।

२०९

(दिल्ली; बीकानेर)

आगों[1] आइ जो देखीं[2] बाईं। रहँट चलहिं सींचहि अँबराईं ॥१
कूँआ पानि गुन बाच[3] न देहीं। जिंह कर गुन ते भरि भरि लेहीं ॥२
सरब सुनै कर देखिसि कोटा। कहिसि कंचनपुर इहवै[4] खोंटा ॥३
चित कै[5] चोर आहँहिं[6] यहिं[7] गाँऊ। पायेंउ खोज सोइ[8] यहिं[9] ठाऊँ ॥४
पूछउँ लोगहिं दइ पहुँनाई[10]। धरौं जाइ जैसहिं नियराई[11] ॥५
कहिसि पूछि कै[12] लोगहिं देखउँ[13], नगर कउन इह आह[14] ।६
जो हो यह कंचनपुर को कोटा, फिरउँ लेउँ वह चाह[15] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–आगे। २–देखै। ३–बाजु। ४–यहवै। ५–का। ६–अहै। ७–इहि। ८–सो रे। ९–×। १०–देस पताई। ११–जैसे न पराई। १२–×। १३–देखउँ लोगन्ह कहँ। १४–कवन नाउँ एहि गाँउ। १५–जो इह होइहि कंचनपुर साँचेहु, खोज लेउँ उहि जाइ।

टिप्पणी—(१) आगों–आगे। बाईं–वापी; कुआँ। रहँट–पानी निकालनेका यन्त्र। अँबराईं–आम्राराम; आमका बगीचा।
(३) सरब–सर्व; सभी। सुनै–सोना। कर–का। कोटा–कोट। खोंटा–दुर्गुणी।

२१०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँआ तीर आहीं[1] पनिहारी। पूछों नगर को र पतिभारी ॥१
कुँआ तीर आयउ र[2] सुजाना। पनिहारिंह[3] कँह देखि भुलाना[4] ॥२

जिह र गाँउ मँह[1] अइस[2] पनिहारीं। राजकुँवरि कस[1] होहिंह[7] बारीं[8] ॥३
सिंघल दीप इहँहि जनु[9] आवा[10]। पदुमिनि रूप बिसेखहिं[11] भावा ॥४
पूँछिसि कवन नगर इह[12] आही। राजपति[13] यहि[14] बोलहिं काही ॥५
कहहिं[15] राज मिरगावति कर[16], औ[17] कंचनपुर जग भान।६
जोगी जती संन्यासी[18] आवइँ[19], तिहि क[20] इहाँ बड़ मान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) अही। २-(ए०) आयेव रे; (बी०) आयेव। ३-(ए०) पनिहारिन्ह। ४-(ए०) लोभाना। ५-(ए०) जेहि रे गॉव हहि अस; (बी०) जेहि रे गॉव महि ऐसी। ६-(बी०) कसि। ७-(ए०) होइ; (बी०) होइहि। ८-कुआरी। ९-जनु इहँवै। १०-(ए०, बी०) छावा। ११-(ए०) बिसेखी; (बी०) बिसेखैं। १२-(ए०) कौन नगर यह; (बी०) नगरु कौन वह। १३-(बी०) राजापति। १४-यह। १५-(ए०, बी०) कहिन्हि। १६-(ए०) केर; (बी०) केरा। १७-×। १८-(बी०) सन्यासी जो। १९-(ए०) आवै, (बी०) आवहिं। २०-(ए०) तेहि क; (बी०) तिन्ह कर।

टिप्पणी—(१) पति-स्वामी।

(२) बारीं-बाला।

(४) सिंघल दीप-सिंहल द्वीप। पदुमिनी-पद्मिनी जाति की स्त्री। बिसेखहिं-विशेष; अधिक।

(५) राजपति-राजा।

(६) भान-प्रकाशमान।

२११

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावँति सुनि जिउ[1] रहसाई। काँमा जनु[2] माधोनल[3] आई[4] ॥१
बिहसा[5] नाउँ[6] सुनत मिरगावति[7]। नल[8] जानो[9] भेंटी र[10] दमावति[11] ॥२
कहिसि[12] जाउँ अब नगर मझारीं। मकुहि[13] चाह कोउ[14] कहै हमारी[15] ॥३
चलिके कुँवर पँवरि नाँघि[16] जो आवा। कनकपात[17] सब रतन[18] जड़ावा[19] ॥४
फुनि जो आयउ[20] नगर मँझारी। बैठि[21] नरिन्द महाजन भारी[22] ॥५
छतीस कुरी बनजार खुदाई, औ छाई बैपारि[23]।६
मण्डप[24] देखि धौराहर देउर[25], पाप झरैं सब छारि[26] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(का०) जिअ। २-(बी०) जनौ। ३-(का०) माधवानल। ४-(का०, बी०) पाई। ५-(का०) बिहँसि। ६-(का०) नाम। ७-(बी०, का०) सुनि मिरगावती। ८-(का०, बी०) नलु। ९-(का०) जनु। १०-(का०, बी०) ×। ११-(का०, बी०) दमावती। १२-(का०, बी०) कहेसि। १३-(बी०) मकहु। १४-(बी०)

कोई। १५-(का०) बैसे नरिंद महाजन भारी। १६-(का०, बी०) ×। १७-(बी०) कनिक ईट; (का०) कनक पत्र। १८-(का०) जनु। १९-(बी०, का०) जरावा। २०-(बी०) आवै। २१-(बी०) बैठे। २२-(का०) पूरी पंक्ति का अभाव। २३-(बी०) बहु बनिजारे खाँधइ छाये, छत्तीसौ कुरी व्यौपारि, (का०) छत्तिस कुलि बनिजारा, बैसे करहिं बैपार। २४-(का०,बी०) मदिर। २५-(बी०) देव; (का०)×। २६-(बी०) देखत पाप झरि जाइ; (का०) पाप हरइ सब झार।

टिप्पणी—(१) काँमा—कामकन्दला। माधोनल—माधवानल। कामकन्दला—माधवानल एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा है। यह कथा इस प्रकार है—पुष्पावती नगरमे कामसेन (गोपीचन्द)के राज्यकालमे माधव नामक एक सुन्दर ब्राह्मण रहता था। उनके रूप सौन्दर्यपर वहाँकी सभी नारियाँ मुग्ध थी। इस कारण राजाने उसे अपने राज्यसे निकाल दिया। वह घूमता-घामता अमरावती (कामावती) पहुँचा। वहाँ वह प्रवेश द्वारपर ही रोक दिया गया। द्वारपर ही खड़ा-खड़ा भीतर बजनेवाले मृदंगमे दोष निकालने लगा। तब राजा उसके गुणोंके प्रति आकृष्ट हुआ और उसे अपने दरबारमें रख लिया। एक दिन सुप्रसिद्ध वेश्या कामकन्दला राज-दरबारमे नृत्य करने आयी। कामकन्दलाके नृत्यपर मुग्ध होकर माधवानलने उसे राजासे प्राप्त पानका बीडा दे दिया। कामकन्दला माधवके प्रति आकृष्ट हुई और दोनो एक-दूसरेपर अनुरक्त हो गये। राजाने इससे अपमानित अनुभव किया और उसे अपने राजदरबारसे निकाल दिया। माधव वहाँसे निकाले जाने-के बाद उज्जैन पहुँचा और अपनी प्रेम-कहानी एक मन्दिरके दीवालपर लिख दिया। राजा विक्रमने उसे देखा और पढ़ा और उसके लेखकको ढूँढ़ निकाला। माधव-कामकन्दलाके प्रेमकी बात जानकर विक्रमने कामसेन (गोपीचन्द) को कामकन्दलाको माधवको दे देनेके लिए लिखा। जब उसने देनेसे इनकार किया तो उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया। पश्चात् उन्होने दोनोके प्रेमकी परीक्षा ली। कामकन्दलासे कहा कि माधव मर गया और इसी प्रकार माधवसे कामकन्दला-के मृत्युकी बात कही। दोनो अपने प्रेमीकी मृत्यु सुनकर चेतनाहीन हो गये। बैतालने आकर उन्हे जिलाया और उन दोनोका विवाह करा दिया।

इस कथाके आधारपर १३०० ई० मे आनन्दधरने कामकन्दला नाटक लिखा। पश्चात् १५२८ ई० में गुजरातीमें माधवानलदोग्धक प्रबन्ध लिखा गया। तदनन्तर कुशलाभने माधवकामकन्दला-रास और शालिकविने माधवानल नामसे काव्यकी रचना की। १६६० ई० मे आलम कविने इस कथाके आधारपर हिन्दीमे एक काव्य लिखा। इस कथापर आश्रित हरनारायण और बोधा नामक कवियोने भी काव्य रचे है।

(२) नल—निषध देशका राजा। दमावती—दमयन्ती; विदर्भ नगरकी राजकुमारी। नल-दमयन्तीकी कथा नलोपाख्यान नामसे महाभारतके वनपर्वमे पायी जाती

है। कथा इस प्रकार है–प्राचीन समयमे निषध देशका राजा नल था। एक दिन जब वह सरोवरमे स्नान कर रहा था तो उसे एक हंस दिखायी पड़ा जिसे उसने पकड लिया। हंसने नलसे विदर्भ नगरके राजा भीमसेनकी पुत्री दमयन्तीके सौन्दर्यकी प्रशंसा की। सौन्दर्य सुनकर नल दमयन्तीके प्रति आकृष्ट हुआ। हसने जाकर दमयन्तीसे नलकी प्रशंसा कर उसके प्रति अनुराग उत्पन्न कर दिया। इस प्रकार दोनों एक दूसरेको प्रेम करने लगे। भीमने जब दमयन्तीके स्वयंवरका आयोजन किया तो नल उसमे सम्मिलित हुआ। मार्गमें नलको इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम मिले और उन्होने उसे (नलको) दमयन्तीके पास दूत बनाकर भेजा कि वह उनमेसे ही किसीका वरण करे। नल दूतके रूपमे दमयन्तीसे मिला और उनका सन्देश उससे कहा। किन्तु स्वयंवरके अवसर पर दमयन्तीने नलका रूप धारण किये हुए उन चारो देवोंको छोड़कर वास्तविक नलका ही वरण किया। पश्चात् नल दमयन्तीका विधिवत विवाद सम्पन्न हुआ और वह बारह वर्ष तक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते रहे।

तदन्तर नलके हृदयमे कलिने प्रवेश किया और उसकी मति भ्रष्ट हो गयी। वह अपने भाईके साथ जुआ खेलते हुए अपना सारा सर्वस्व खो बैठा। इस दयनीय अवस्थाको देखकर दमयन्ती ने अपने बचों को नानिहाल भेज दिया। नल और दमयन्ती घर छोड़कर जगलकी ओर चल पड़े। रास्तेमे नलने चिडियोंको पकड़ने के लिए अपना एकमात्र वस्त्र फेका। उसे लेकर चिड़ियाँ उड़ गयी। तब छद्मवेशमे एक दिन नल दमयन्तीको जगलमे सोता हुआ छोडकर भाग गया और जाकर राजा ऋतुपर्णके यहाँ रसोइयेके रूपमें नौकरी करने लगा।

दमयन्ती जब जगी तो नलको न पाकर वह रोती बिलखती किसी प्रकार पिताके घर विदर्भ पहुँची। उसके पिताको जब सारी दुखस्था ज्ञात हुई तो उसने नलका पता लगानेके लिए गुप्तचर भेजे। उन्होने आकर नलके राजा ऋतुपर्णके यहाँ होनेकी सूचना दी। तब दमयन्तीके पिताने कुछ सोच-समझकर ऋतुपर्णको अगले ही दिन दमयन्तीके पुनर्स्वयंवरमे आनेके लिए निमन्त्रण भेजा। इतने शीघ्र विदर्भनगर पहूँचा देनेकी क्षमता नलके अतिरिक्त किसीमें न थी। अतः ऋतुपर्णका सारथी बनकर नल विदर्भ आया।

वहाँ नल और दमयन्ती पुनः मिले। कुछ दिनों तक विदर्भ रहकर नल सपत्नीक अपने देशको लौटा और भाईके साथ पुनः जुआ खेलकर अपना राज्य वापस ले लिया।

(३) **मझारी**–मध्य। **मकुहि**–कदाचित्।

(४) **पँवर**–ड्योढी; प्रवेशद्वार। **कनकपात**–कनकपत्र, सोनेकी पत्ती।

(६) **कुरी**–कुल । **बनजार**–(स० वाणिज्यकारक>वाणिज्यारक>बनिजारक >बनजार)–प्राचीन सार्थवाहके लिए यह मध्यकालीन पारिभाषिक शब्द था; व्यापारी समूह, जो व्यापारके निमित्त अपने नगरसे बाहर जाते थे, बनजार कहे जाते थे ।

(७) **देउर**–देवल; मन्दिर । **छारि**–छार; क्षार; भस्म ।

२१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर, काशी)

फुनि[1] जो राजदुआरिन्ह[2] जाई । कुँवरहिं[3] के भल[4] पन्थ[5] अथाई ॥१
सुरपति सभा सौन[6] जो[7] सुनी[8] । सोइ[9] बिसेख[10] बैठे[11] बहु गुनी ॥२
पण्डित औ बुधवन्त सरूपा । फूलि रही फुलवारि अनूपा ॥३
पण्डुर[12] पान अदा[13] कर[14] खाहहिं[15] । खानि[16] सुगन्ध सबै[17] मँहकाहहिं[18] ॥४
भोग बात[19] पै[20] सभा चलाई[21] । दुख कै[22] बात न सँचराई[23] ॥५
एक एक देस कै[24] ठाकुर [बैसे[25]], आयसु[26] जोवहि बार[27] ।६
प्रतिहारि सों[28] गुजरहिं[29], तिल एक[30] छाड़[31] करहुँ जुहार[32] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०, बी०) पुनि । २–(ए०, बी०) दुवारेहि; (का०) दुआरे । ३–(बी०, का०) कुवरन्ह; (ए०) कुवरन्हि । ४–(ए०, बी०) भलि; (का०) जहँ । (ए०, बी०) बैठ; (का०) बैसु । ६–(बी०, का०) स्रवन । ७–(ए०, बी०) हम; (का०) पे । ८–(का०) सुने । ९–(का०, ए०) सो; (बी०) तेहु । १०–(ए०, बी०) सरेख; (का०) सेइ । ११–(बी०) बिसेखे । १२–(ए०, बी०) पंडर । १३–(ए०, बी०) आड; (का०) सबै । १४–(का०) कोइ । १५–(ए०, बी०, का०) खाही । १६–(ए०, का०) घानि । १७–(का०) सभै । १८–(ए०, का०) महकाही; (बी०) अंग बास बहु महकाही । १९–(ए०) भोग पान; (बी०, का०) भोग कै बात । २०–(बी०, का०) × । २१–(बी०, का०) चलई । २२–(ए०, बी०, का०) की । २३–(ए०, बी०) सँचरे आई; (का०) नहीं सँचरई । २४–(ए०) दीप क । २५–(दि०, का०) × । २६–(ए०) आएस; (बी०) आयेस । २७–(का०) आइह जोहारेहिं पार । २८–(बी०) कहँ । २९–(ए०, बी०, का०) गोचरहिं । ३०–(ए०) × । ३१–(बी०) छाडहु तिलक एक । ३२–(ए०, बी०, का०) जोहार ।

टिप्पणी—(१) **राज दुआरिन्ह**—राज द्वारपर । **भल**-अच्छा । **अथाई**—समाप्त हुआ; अन्त हुआ ।

(२) **सुरपति**—इन्द्र । **सौन**–श्रवण । **बिसेख**–विशेष ।

(४) **पण्डुर**—पीला ।

(७) **प्रतिहारि**—द्वारपाल । **गुजरहिं**–निवेदन करते हैं । **तिल एक छाड़**–तनिक देरके लिए जाने दो । **जुहार**–अभिवादन ।

२१३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

कुँवर देखि यह[1] चिन्ता गहई[2]। मोरि चाह कैसें पहुँचई[3] ॥१
राजा राइ[4] जुहार[5] न[6] पावहिं। हमरि गिनति[7] केहिके[8] मन[9] आवहिं ॥२
बहुरि बियोग भयउ[10] सिर सेतीं। कही[11] जो[12] बातें[13] अही जो ऐतीं[14] ॥३
किंगरी लिहिसि[15] बियोग बजावा[16]। सबैं[16] सुनाँ देखे[17] तिंह[18] आवा[19] ॥४
सुनत[20] बियोग सब रहे[21] अबोला[22]। इहैं[23] राग आसन हर[24] डोला ॥५
जैं र[25] सुना सो[26] भूलेउ[27], देखत[28] चिंता रही[29] न काहि ।६
बज्र करेज[30] हिया[31] जिह केरा[32], भया[33] बियोग उर[34] ताहि[35] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०) कै। २–(ए०, का०) भई, (बी०) मन भई। ३–(का०) पहुँचै जाई। ४–(ए०) राय; (का०) राउ। ५–(ए०, बी०, का०) जोहारि। ६–(बी०) नहीं। ७–(बी०, का०) गनती; (ए०) गनत। ८–(का०) केकरे; (ए०) केहि लेखे। १०–(ए०, बी०, का०) भयो। ११–(का०) कहेसि। १२ (ए०) × । १२–१३ (बी०) बात जो; (का०) नहि आवै। १४–(ए०, बी०, का०) जेती। १५–(का०) तिहे। १६–(का०) बजावइ। १६–(ए०, बी०, का०) जेरे। १७–(ए०, बी०, का०) सो देखै। १८–(ए०, बी०, का०)×। १९–(का०, बी०) धावा। २०–(ए०, बी०, का०) सुनि। २१–(का०) हिये न। २२–(का०) बोला। २३–(ए०) यही; (बी०) इहइ; (का०) भाइहु। २४–(ए०) हरि आसन, (का०) हरि; (बी०) अस हरिना। २५–(ए०, बी०) जो रे; (का०) जेइ रे। २६–(का०) से। २७– (ए०) भूला। २८–(ए०, का०)×; (बी०) रहेउ। २९. (बी०) रहेउ। ३०–(बी०, ए०, का०) करेजा। ३१–(बी०) आह; (का०) × । ३२–(ए०) जेहि केरा; (बी०) जिन कर; (का०) जाहि कर। ३३–(ए०, का०) भा, (बी०) भयेउ। ३४–(बी०, का०) सुनि। ३५–(बी०) ताहु।

टिप्पणी—(१) मोरि–मेरी।
(२) केहिके–किसके।
(५) अबोल–अवाक्।
(७) केरा–का।

२१४

(दिल्ली, बीकानेर; काशी)

नगरी सबै[1] बियोग सताई[2]। घर घर यहि[3] बात चल[4] आई[5] ॥१
जोगी एक कितहुँत[6] आवा। बिरह बियोग सँताप बजावा ॥२
यही[7] बात मिरगावति सुनी। आयसु[8] एक आउ[9] बहु गुनी ॥३

अग्या भई बुलावहु[१०] ताही। पूछौं[११] कवन देस कर आही ॥४
जनैं तीस[१२] एक आगैं धायें[१३]। आयसु[१४] बार बुलावइ आयें[१५] ॥५
अग्या भई राज[१६] कै आयसु[१७], चलहु बुलायहि[१८] धाइ ।६
एत[१९] बोल सुन रहसा मन महँ[२०], कन्था मँह न समाइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(का०) सगरी। २–(का०) सतावइ। ३–(का०, बी०) यहइ। ४–(बी०, का०) फिरि। ५–(का०) जनावइ। ६–(बी०) कतहु से; (का०) कतहुते। ७–(का०, बी०) यहरे। ८–(बी०) आइसु; (का०) आयेसु। ९–(का०, बी०) आव। १०–(का०, बी०) बोलावहु। ११–(का०) पूछहु, (बी०) पूछउ। १२–(का०) चेरी तीस, (बी०) जनी बीस। १३–(का०, बी०) उठि धाई। १४–(बी०) आइस; (का०) आयेसु। १५–(बी०) बोलावै आई; (का०) बोलवन आई। १६–(का०, बी०) राजा। १७–(बी०) आइसु; (का०) आयेसु। १८–(का०, बी०) बोलाये। १७–(का०) एतनी। २०–(बी०) जिय महाँ; (का०) जोगी रहसा, (दि० मार्जिन) रहसा जोगी।

टिप्पणी—(२) **कितहुँत**–कही से।

(३) **आयसु**–आगन्तुक।

(४) **अग्या**–आज्ञा।

२१५

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर; काशी)

करम आजु[१] मकु आह[२] हमारेउ[३]। सिध होइ कँह[४] गुरु हँकारेउ[५] ॥१
ससि र सरद मुख देखै पायों। जरे नैन वहि अमिय सिरायों[७] ॥२
सातों पवँरि[८] नाँघि[९] जो[१०] आवा। बेकर बेकर सातउ[११] भावा ॥३
आगों[१२] आइ[१३] जो देखी[१४] ताही। चाँद बैठि तारे सब आही[१५] ॥४
कै जनु[१६] सरग [कचपची[१७]] उई। ताल माँझ फूलसि जनु[१८] कुई ॥५
सोन सिघासन ऊपर[१९] आछत[२०], तिहा[२१] बैठि ओं[२२] देखि ।६
झार लाग[२३] जइस कहँ, एको भरिसि[२४] न पेखि ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(बी०) आज; (ए०) आह, (का०) अहइ। २–(ए०) आज। ३–(ए०) हमारेव; (का०, बी०) हमारा। ४–(ए०, का०) कै; (बी०) कहुँ। ५–(ए०) हंकारेव; (का०, बी०) हँकारा। ६–(ए०) दुइ। ७–(बी०) जरे नैन वोहि दरस बुझावों; (का०) जरे पेम वोहि आरि सिराऊँ। ८–(बी०, का०) पँवरी; (ए०) पौरी। ९–(का०) लाँघि। १०–(बी०) कै। ११–(बी०) सातौ; (ए०) सातहुँ। १२–(का०, बी०, ए०) आगू। १३–(का०) जाइ। १४–(बी०) देखिसि; (ए०,

का०) देखै। १५-(का०) तारन माँझ चाँद जनु आही। १६-(ए०) जनि; (बी०) जनौ; (का०) रे। १७-(दि०) कचकची; (का०, ए०, बी०) कचपचि। १८-(ए०) फूली जनि; (बी०) फूली जनौ; (का०) फूली जस। १९-(बी०) पर। २०-(ए०, बी०, का०) ×। २१-(का०, ए०, बी०) भान। २२-(बी०) उन्हि; (का०) मै; (ए०) उइ। २३-(ए०) भा आसेस। २४-(का०) परग; (बी०) पैग भरि।

टिप्पणी—(१) हँकारेउ—बुलाया।

(५) कचपची—कृतिका नक्षत्र। उईं—उगीं। माँझ—मध्य। कुईं—कुमुदिनी।

(६) आछत—होते हुए। ओं—उसे।

(७) आर—अग्निकी लपट।

२१६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरछा देखत[1] अइस[2] कहँ आई। मिरगावति[3] मन माँझ[4] सँकाई[5] ॥१
कहसि[6] जोगि[7] यह जनम[8] न होई। राजकुँवर यह आहै सोई ॥२
देखत मुरछा वहि[9] पै आवइ[10]। बिरह बियोग लाग हम गावइ[11] ॥३
तारहिं[12] कहसि[13] उचावहु[14] जोगी। मुरझि परेउ[15] कह आहँहि[16] रोगी ॥४
तारहिं[17] आयसु[18] धाइ[19] उचावा। सींचि[20] नीर[21] जीउ घट मह[22] आवा ॥५
साँप डसा जस समुझि[23] न समुझै, लहर[24] आउ[25] बिकरार ।६
खिन[26] अचेत खिन चेत[27], बिसँभर गौ[28] न सँभार ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१-(ए०, बी०, का०) गति। २-(बी०) आइस; (ए०,का०) आयेसु। ३-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। ४-(का०) माँह; (ए०) मँह; (बी०) माँहि। ५-(ए०, बी०, का०) सुगाई। ६-(ए०, बी०) कहिसि; (का०) कहेसि। ७-(ए०,का०, बी०) जोगी। ८-(का०) जन्म; (ए०,बी०) जरम। ९-(ए०, बी०, का०) वोहि। १०-(ए०, बी०, का०) आवै। ११-(ए०, बी०,का०) गावै। १२-(बी०, का०) तारेन्हि; (ए०) तारिनि। १३-(ए०, का०) कहिसि, (बी०) कहा। १४-(का०) उठावहु। १५-(ए०,का०,बी०) परा। १६-(बी०) कस आहै, (ए०) कस भाइ न; (का०) कस अहइ निरोगी। १७-(ए०) तारिनि; (बी०,का०) तारेन्हि। १८-ए० आयेसु; (बी०, का०) आइस। १९-(बी०) धाय, (का०) जाइ। २०-(ए०) सीचेन; (बी०) सीचा; (का०) सीचिन्हि। २१-(ए०) अमिय। २२-(ए०, बी०, का०) ×। २३-(बी०) समुझाये। २४-(ए०, बी०) लहरि। २५-(ए०, बी०) आव; (का०) ऑवइ लहरि। २६-(ए०, बी०, का०) खन। २७-(दी०, मार्जिन) चेत कछु; (ए०) खन अचेत खन चेत न चेते; (बी०) खन चेतौ खन अचेतै; (का०) खन अचेत खन चेतै। २८-(ए०, बी०, का०) कुछु।

टिप्पणी—(१) सॅकाई—शंकित हुई।
(२) लाग—के लिए; निमित्त।

२१७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

भा [सनिपात*][1] कै मिरगी यहि[2] आई। तिरदोखा[3] ऊदक[4] बौराई ॥१
के र[5] देउ दानो[6] यहि[7] छरा[8]। कै र[9] चक्र जोगिन्ह[10] मँह[11] परा[12]॥२
कै[13] यहि[14] राकस भूत सतावा। भरम न जाइ साथ जनु[15] आवा[16] ॥३
कै[17] देवी कालिका[18] तपाई[19]। सुरा पान बिनु चेत न जाई ॥४
मरम[20] जानि कै औखद[21] कहही[22]। बैद सयान जहाँ लह[23] अहही[24] ॥५
पूँछहि नारी आयसु[25] कँह, कस मुरछा तुम्ह[26] आइ।६
कै[27] जर जाड़[28] कै र[29] झँई[30] आई, तिंह र[31] परहु[32] मुरुझाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(दि०, बी०) भा सन, (ए०) रा सन; (का०) भा सन्यपात। २–(ए०) ओहि मिरिगी; (बी०, का०) यहि मिरिगी। ३–(बी०,का०) तिरदोषा। ४–(बी०) ओद कै। ५–(बी०, का०) के रे; (ए०) म ?। ६–(ए०) देवो; (बी०, का०) देव। ७–(ए०, बी०, का०) एहि। ८–(का०) लागा। ९–(ए०, बी०, का०) रे। १०–(ए०) जोगिनी, (बी०, का०) जोगिनि। ११–(बी०, का०) कै। १२–(का०) भागा। १३–(ए०) ×। १४–(ए०) ओहि; (का०) रे। १५–(बी०) जनौ; १६–(का०) भर्म न जाइ साप जनु खावा। १७–(ए०) ×; (बी०) कै एहि; (का०) कै इन। १८–(का०) कालिका देवी। १९–(बी०) सताई। २०–(ए०) कर। २१–(बी०, का०) औखद। २२–(बी०) देही। २३–(ए०, बी, का०) गुनी बहु। २४–(बी०) अही। २५–(ए०, का०) पूछहु तारे आऐस; (बी०) पूछहि तू रे आइस। २६–(ए०) तो; (का०) तोर; (बी०) तोहि। २७–(ए०) ×, (का०) की। २८–(का०) जूडी। २९–(ए०) रे; (बी०, का०) री। ३०–(ए०) झैं; (बी०, का०) झइ। ३१–(ए०) तेहि रे; (बी०, का०) तिहि रे। ३२–(ए०, बी०, का०) परेहु।

टिप्पणी—(१) सनिपात (सन्निपात) शीत प्रधान एक रोग। मिरगी—मूर्च्छाके प्रकारका रोग। तिरदोखा—(त्रिदोष) बात, पित्त और कफका विकार।
(२) देउ-दानो—देव-दानव। छरा—छला। जोगिन्ह—जोगियोके।
(३) राकस—राक्षस।
(५) सयान—झाड़ फूँक करनेवाले; ओझा।
(६) आयसु—आगन्तुक।
(७) जर—(ज्वर) बुखार। जाड—जाडा। कै—का। झँई—सिरमे चक्कर आना। परहु—पडे।

२१८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

मुरुछ क[१] बात कहै नहिं पारौं[२]। सो देखो जिह[३] कहत[४] न सँभारौं[५] ॥१
भौंह धनुख[६] नैन सर साँधी[७]। लागी[७] बिखम हियैं[८] बिस[९] बाँधी[१०] ॥२
गुन बिनु धनुक[११] कहाँ ईंह[१२] साधा। हों मिरगा जस हनेउ[१३] बियाधा ॥३
जहिया[१४] हनिवँत[१५] लंक[१६] गढ़ दहा[१७]। यहै[१८] धनुक राघो[१९] पँह[२०] [अहा[२१]] ॥४
जो पण्डो कौंरो दर[२२] जीता। यहै धनुक अरजुन कर लीता ॥५
सोइ जावस[२३] परसुराम कर[२४], सोइ[२५] पारुध[२६] सोइ बान ।६
यह[२७] रे कहत महि[२८] दूभर लागै[२९], तुम्ह[३०] पति हनी[३१] परान ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(बी०, का०) की । २–(का०) जाई । ३–(ए०, बी०, का०) जो । ४–(ए०, बी०, का०) घट । ५–(का०) समाई । ६–(ए०) धनुक, (बी०, का०) धनुष । ७–(बी०, ए०, का०) साँधे । ७–(बी०, ए०, का०) लागे । ८–(का०) हिये विषम । ९–(बी०, का०) विष । १०–(ए०, बी०, का०) बाँधे । ११–(बी०, का०) धनुष । १२–(ए०) अे; (का०) यह । १३–(ए०, बी०) हनेव; (का०) हना । १४–(ए०) कहिया । १५–(बी०) हनेउ । १६–(बी०, का०) लंका । १७–(ए०, बी०, का०) डहा । १८–(ए०) अेहै; (बी०, का०) एहे । १९–(बी०, का०) राघव । २०–(का०) कर । २१–(दि०) आहा । २२–(बी०, का०, दि० मार्जिन) दल । २३–(ए०) चाउस । २४–(बी० का०) यहै धनुक परसुराम कै । २५–(का०) सो । २६–(बी०, का०) पारधी । २७–(का०) इहइ । २८–(ए०, बी०, का०) मोहि । २९–(बी०) लाग; (ए०, का०) ×। ३०–(बी०) तुम । ३१–(ए०, का०) हनेव, (बी०) हने ।

टिप्पणी—(१) पारौं—(क्रि० पारना) जीतूँ ।

(२) सर—(शर) बाण ।

(३) गुन—रस्सी; प्रत्यंचा । हनेउ–हत्या की । बियाधा-व्याध; शिकारी ।

(४) जहिया–जब । हनिवँत–हनुमान । राघो–राघव, राम । पँह–पास ।

(५) पण्डो–पाण्डव । कौंरो–कौरव । दर–दल ।

(७) दूभर–कठिन । हनी–हनन किया । परान–प्राण ।

२१९

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

तारहिं[१] कहा जोगि[२] मति हीनी[३]। अइस बोल तिह सोह न कहनी[४] ॥१
गन गन्धरप सुर नर औ[५] नागा। बार बैठि सब अहि निसि आगा[६] ॥२

जिहकै[७] भाग औ करम लिलारा। तिनकँह[८] होइ निमिख इक[९] बारा[१०] ॥३
तूँ र[११] नीच जो बोलइसि[१२] पासा[१३]। काहँहि[१४] बिगनसि[१५] ऊँच अकासा ॥४
तूँ भुँइ सरग कै[१६] बातें कहही[१७]। जरत आग करपालों[१८] गहही[१९] ॥५
मान बिहूनै हेतु बिन, रोवइ जिय राजन्त[२०]।६
मूरख दिया पतंग जेउँ[२१], फिरि फिरि ने [दगधन्त*] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) तारेहु; (का०) तारेन्ह। २–(बी०, का०) जोगी। ३–(का०, बी०) हीना। ४–(बी०) अस बोलत तोहि सोभा न दीना, (का०) ऐसी बोल तोहि केउ न चीन्हा। ५–(का०) औ सुर नर; (बी०) सुर औ। ६–(बी०) बार बैठ अहनिसि सब जागा; (का०) बार बैस बैठ सभ द्रिज जागा; (दि० मार्जिन) बार बैठ सब आयसु चाहा। ७–(बी०, का०) जेहि कर। ८–(बी०) तेहि कर। ९–(बी०) एक। १०–(का०) यह पक्ति नही है। ११–(बी०) रे। १२–(बी०) बोलायेसि। १३–यह पक्ति नहीं है। १४–(बी०, का०) कहेन। १५–(बी०, का०) बकनसि। १६–(बी०, का०) की। १७–(बी०) कहसि। १८–(बी०, का०) पल्लौ। १९–(बी०) गहसि। २०–(बी०) रूपहि जे रचति; (बी०) रूपहि जो रचति। २१–(बी०) जेव; (का०) जिमि। २२–(दि०) दधन्त; (बी०, का०) दगधंति।

टिप्पणी—(१) सोह–शोभा देती है।

(२) **गन गन्धरप**–गन्धर्व गण। **नागा**–नाग। **बार**–द्वार।

(३) **बोलइसि**–बुलाया। **पासा**–पास; निकट। **बिगनसि**–(क्रि० बीगना–फेंकना) फेंकते हो; यहाँ तात्पर्य आसमान पर चढ़नेसे है।

(५) **भुँइ**–भूमि; पृथ्वी। **करपालों**–(कर-पल्लव) हथेली।

(६) **बिहूनै**–परित्याग करे। **हेतु**–उद्देश्य।

२२०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हँसा कहिसि[१] तुम्ह[२] पेम न खेला। जुआ पैंत तुम्ह[३] बूझि न[४] मेला ॥१
जो[५] वह[६] जोति[७] नाहिं[८] देखि[९] भुलाई। ताकर माँस[१०] काग नहिं खाई ॥२
दाधा[११] होइ[१२] सो जानै पीरा। दिया जान[१३] कै[१४] दगध सरीरा ॥३
जरि जरि[१५] मरे[१६] सो[१७] मरि मरि जीयै[१८]। सोइ[१९] पेम सुरा रस पीयै[२०] ॥४
बिरला[२१] यह रस पावइ[२२] कोई। जो यह राउ[२३] अमर होइ सोई ॥५
समुँद तरत[२४] [चढ़त*][२५] गिरि, झम्प[२६] हुतासन लिहन्त[२७]।६
पेम सुरा[२८] जिंह[२९] अचयेउ[३०], सो[३१] किय किय न[३२] करन्त[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) हँसा कहेसि; (का०) बिहँसि कहेसि; (ए०) दे उभरी। २–(ए०) तोह,

(बी०) तुम, (का०) तैं। ३–(बी०, का०) तै; (ए०) ×। ४–(ए०) नाहिं। ५–(ए०) ×। ६–(ए०) उवह; (बी०) वोहि; (का०) रे एह। ७–(का०) जोतिहि। ८–(ए०) न; (का०) ×। ९–(बी०) देखिन। १०–(ए०, बी०, का०) मासु। ११–(ए०, बी०) दाध, (का०) देखा। १२–(बी०, का०) होय। १३–(बी०, का०) जानै १४–(ए०, बी०, का०) जेहि। १५–(ए०) पापी। १६–(बी०) मरइ; (का०) ×। १७–(ए०) जो। १८–(ए०) जीअइ; (बी०) जियई; (का०) जाई। १९–(ए०, का०, बी०) सो पै। २०–(ए०, बी०, का०) पीयई। (२१)–ए०(– –) ला; (बी०, का०,बिरुला। २२–(ए०, बी०, का०) पावै। २३–(ए०, बी०, का०) पाव। २४–(बी०) तरंगित; (ए०) तरथि, (का०) तीर। २५–(दि०) परॅत; (ए०) चढ़ीय; (बी०) चढति; (का०) चहुत। २६–(ए०) अरु झम्प। २७–(ए०, बी०) लीथि; (का०) लेत। २८–(का०) सुरग। २९–(बी०) जिनि; (ए०, का०) जिन्हि। ३०–(ए०, का०) अँचयो; (बी०) मुचिया। ३१–(ए०, का०) ते। ३२–(बी०, ए०, का०) ×। ३३–(ए०, बी०, का०) करथि।

टिप्पणी—(३) दाधा–दग्ध।

(५) हुतासन–अग्नि।

(७) अचयेउ–आचमन किया; पिया। किय किय—क्या क्या।

२२१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

सुध[1] धातैं उन सेतैं[2] कहीं। ये र खाइ[3] ठग लाडू[4] रहीं ॥१
फुनि आपुन[5] मँह कहहिं[6] बिचारी। जोगिह भोगिह काह[7] दोवारी[8] ॥२
जाकर[9] बात कहत दिन रानी। मकु वह कुँवर आह[10] यँहि[11] बानी[12] ॥३
आइ[13] कहहिं[14] अस बकत भिखारी[15]। हम बत[16] पूछँहि[17] कहहि[18] हियारी ॥४
अँम्रित कुण्ड छुबुकि[19] भर राखी[20]। सो र[21] काग चाहसि[22] रस चाखी[23] ॥५
सिखर ऊँच बड़ तरुवर, औ फर[24] लाग अकास।६
करह[25] करील न पहुँचै मनसा[26], वै[27] फर[28] चाह बेरास[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(ए०) सीधी; (दि० मार्जिन) सबही। २–(ए०) अैस वहि, (का०) बात उइ सभ; (बी०) वै निजु। ३–(ए०, बी०, का०) ८इ रे खाय। ४–(ए०) ढक लाडू, (का०) ढक मूरी। ५–(का०) आपुस। ६–(बी०) करहि, (का०) कहेन्हि। ७–(बी०) कहा; (ए०) कौन। ८–(बी०) दवारी; (ए०) कवारी, (का०) इस उत्तरार्धके स्थान पर पंक्ति ४ का उत्तरार्ध है। ९–(ए०) जेकरी; (बी०) जाकरि। १०–(बी०) ×; (ए०) आव। ११–(बी०) येहि, (ए०) अेहि। १२–(का०) पूरी पक्ति नहीं है। १३–(ए०) आए; (बी०) आय। १४–(बी०) कहन्हि। १५–

(का०) पूरी पंक्ति नहीं है। १६-(बी०) पति, (ए०) बाति। १७-(ए०, बी०) बूझहु; (का०) पूछहिं। १८-(ए०, बी०) कहत; (का०) कहा। १९-(ए०) चुभुकि; (बी०) चमक, (का०) भरि। २०-(ए०, बी०, का०) राखा। २१-(ए०) सो रे; (बी०, का०) से। २२-(ए०, बी०, का०) चहै। २३-(ए०, बी०, का०) चाखा। २४-(का०) फल। २५-(ए०) क[- -]। २६-(ए०, बी०) ×। २७-(बी०, का०) से, (ए०) उइ। २८-(का०) फल। २९-(ए०, बी०) चहै बिरास; (का०) चहै बेलास।

टिप्पणी—(१) सुध-शुद्ध; स्पष्ट। सेतँ-से। ठग लाडू-आश्चर्य चकित।

(२) आपुन मँह—आपसमे। काह-क्या।

(३) जाकर—जिसकी। बानी—वेश।

(४) अस-ऐसा। बत-बात। हियारी-पहेली।

(५) लुबुकि—लब्बालब्ब

(७) बेरास—विलास; भोग।

२२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर, काशी)

मिरगावति निहचौं[1] कै जानाँ। वहै[2] कुँवर जा मन[3] कर मानाँ[4] ॥१
मन रहसी[5] आपु[6] आयउ[7] सोई। भुगुति देउँ जइसैं[8] सिधि होई ॥२
फुनि मिरगावति[9] नियर[10] बुलावा[11]। पूँछिसि कउन[12] देस सेंउ[13] आवा ॥३
आपुनि[14] बात कहसु[15] दहुँ[16] मोही। जोगी रूप न देखौं तोही ॥४
कहसि जीउ हम[17] काँहु चुरावा[18]। तिह[19] ढूँढे कँह भेस भरावा[20] ॥५
खोज करत हौं आयउँ, ढूँढत[21] सो र[22] चोर इँह[23] गाँउ।६
औ[24] बहुतहि[25] कह[26] चुराइसि[27] पायसु[28], लेंउ तिंह क[29] हौं[30] नाँउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(बी०, का०) निस्चै। २-(ए०) उहइ, (बी०) यहइ। ३-(ए०) मुनि; (बी०) राजमनि। ४-(ए०) माना। ५-(बी०) रहस। ६-(ए०, बी०, का०) अब। ७-(ए०, का०) आयेव, (बी०) आवा। ८-(ए०, का०) जैसे; (बी०) जो पै। ९-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। १०-(बी०, का०) नियरे। ११-(ए०, बी०, का०) बोलावा। १२-(ए०, बी०, का०) कौन। १३-(ए०, बी०) सो; (का०) ते। १४-(ए०, बी०, का०) आपन। १५-(ए०, बी०, का०) कहसि। १६-(बी०) नहिं; (का०) जै। १७-(का०) हमार। १८-(ए०, बी०, का०) चोरावा। १९-(का०) तेहि; (बी०) ताहि। २०-(बी०, का०) फिरावा; (ए०) पूरी पंक्ति नहीं है। २१-(बी०) आयेंव एहि ठाँव; (ए०, का०) ×। २२-(का०, ए०, बी०) रे। २३-(ए०, बी०, का०) येहि। २४-(बी०, का०) और; (ए०) रे।

२४–(ए०) बहुनन्ह; (बी०, का०) बहुतन्ह। २५–(ए०) क; (बी०, का०) केर। २६–(ए०, बी०, का०) चोराइसि। २७–(ए०, बी०, का०)×। २८–(ए०) तिन्ह; (का०) ताकर; (बी०) तिन्हकर। २९–(बी०)×; (का०) अब।

टिप्पणी—(१) निहचौं–निश्चित रूपसे। भानाँ–(भानु) सूर्य।

(५) भेस भरावा–रूप धारण किया। छद्मवेश धारण करनेके सम्बन्धमें यह प्रसिद्ध मुहावरा है।

२२३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

नैन[1] कुरंगिनि केर चुराई[2]। औ फुनि पंचम बैन गँवाई[3] ॥१
लंक सिंघ कै[4] लिहिसि[5] चुराई[6]। उहो[7] खोज इँह[8] नगर बुझाई[9] ॥२
चाल गयन्द मराल[10] कै[11] लीन्ही। खोजत आइ[12] नगर मँह[13] चीन्ही ॥३
उहै[14] चोर हम जीउ चुरावा[15]। जैं एतहिं[16] कर[17] लीन्हि सुभावा[18] ॥४
खोज[19] आइ इँह[20] नगर बुझानेउ[21]। देखेउँ[22] चोर तबहि[23] पहिचानेउ[24] ॥५
चोर बरै[25] अति आहै दारुन,[26] लिहिसि जो चाह न देइ[27] ।६
एक हाथै[28] उबारहु[29] हरहा, जो र[30] गहे सो लेइ ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(ए०) ×; (का०) रैन। २–(ए०, बी०) चोराए; (का०) चोरावा। ३–(ए०, बी०) गँवाये; (का०) गंवावा। ४–(ए०, बी०) कर। ५–(ए०, का०) लीन्ह। ६–(ए०, का०, बी०) चोराई। ७–(ए०, बी०) वहइ, (का०) उहइ। ८–(ए०) येहि; (बी०) यहि। ९–(का०) बताई। १०–(बी०, का०) मलार। ११–(ए०, बी०, का०) क। १२–(ए०, बी०, का०) आय। १३–(बी०) हम। १४–(ए०) उही; (बी०) वोही; (का०) वहिरे। २१–(ए०, का०) बुझानेव; (बी०) बुझाना। २२–(ए०, का०) देखैव; (बी०) दारुन। २३–(ए०, बी०, का०) तबहि। २४–(ए०) पछिआनेव। (बी०, का०) पहिचानेव। २५–(ए०) बरिअ; (का०) बरी, (बी०) बरिय। २६–(ए०, बी०, का०) ×। २७–(ए०) लैके चाह न देय; (बी०) लिहिए चहै न देय; (का०) लिहिस जाइ नहि देय। २८–(ए०, बी०, का०) हाथी। २९–(ए०, बी०, का०) औ। ३०–(ए०, बी०, का०) रे।

टिप्पणी—(१) कुरंगिनि–हिरणी। केर–का। पंचम–कोयल। बैन–वाणी।

(२) लंक–कमर; कटि। सिंघ–सिंह।

(३) गयन्द–हाथी। मराल–मयूर।

(४) एतहिं–इतनोका। सुभावा–स्वभाव।

(६) बरै–किन्तु।

२२४

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर, काशी)

सरजन[1] सूर आइ[2] परगासा। मिरगावति[3] मन कँवल बिगासा ॥१
मुसुकुराइ[4] सहेलिहिं[5] कहा[6]। देखहु इहै[7] कुँवर वहि[8] आहा[9] ॥२
हौं जो कहति तुम्ह सेंउ[10] दिन बाता। इहै[11] कुँवर हमरै मदमाता ॥३
इहैं[12] चीर हम लीन्हेउ आहा[13]। हम लग[14] यै[15] अगिनित[16] दुख सहा ॥४
जिह लग[17] परसेंउ[18] गँधरप[19] देवा। सो[20] अब आइ[21] करौं बड़ सेवा ॥५
कहा सहेलिहिं[22] सो[23] यह, जोगि मया[24] तुम्ह[25] लाग।६
हम तो कहा सोइ[26] आपुन मँह, दिप[27] लिलार[7] बहु[28] भाग ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(ए०, बी०, का०) सुरजन। २-(ए०, बी०, का०) आय। ३-(ए०, बी०, का०) मिरगावती। ४-(का०) मुसुकिआय। ५-(ए०, का०) सहेलिन्ह। ६-(का०) कहई; (बी०) अधरन्ह अलप हँसी अस कहा। ७-(ए०) अहै; (बी०,का०) एहै। ८-(ए०) उवह, (बी०, का०) वह। ९-(बी०, का०) अहई। १०-(ए०, बी०, का०) तोह सैं। ११-(ए०) एहै, (बी०, का०) एहै। १२-(ए०) अेही, (बी०, का०) यहे। १३-(दि०) आहा। १४-(ए०, का०) लगि; (बी०) निति। १५-(ए०, का०) अेरे; (बी०) एइ। १६-(ए०) अंगन; (बी०) अगनिति; (का०) बड़ा। १७-(ए०, बी०, का०) जेहि लगि। १८-(ए०, बी०, का०) परसेव। १९-(ए०, बी०, का०) गध्रप। २०-(बी०) से। २१-(ए०) आए, (बी०, का०) आय। २२-(ए०, बी०, का०) सहेलिन्ह। २३-(ए०, का०) सोइ। २४-(ए०, बी०, का०) जोगी भयेव। २५-(ए०, बी०) तोह; (का०) हम। २६-ए० ×; (बी०) तबही; (का०) सो। २७-(ए०, बी०, का०) दिपै। २८- (ए०) लिलारहि, (बी०) लिलारहु।

टिप्पणी—(१) बिगासा–विकसित हुआ, विकसित किया।
(२) परसेंउ–स्पर्श किया।
(७) लिलार–ललाट।

२२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी)

हम आपुन[1] मँह तबही[2] कहा। जो[3] उठाइ[4] बैठारेउ[5] आहा[6] ॥१
कुँवर आह यह जोगि[7] न होई। लखन बतीसो उत्तिम[8] कोई ॥२
कहहि[9] सहेली[10] मरम यहि[11] लेहू। कै निरास असरो फुनि[12] देहू ॥३
काह कहै कस ऊतर देई[13]। कहा सहेलिह[14] बोली[15] सेई[16] ॥४
मिरगावती बचन मुँह[17] खोला। कहिसि जोगि[18] तैं समुझि न बोला ॥५

जस आपुन तस बात न बोलै[19], धाय चढ़स र[20] अकास ।६
हत्या क[21] डर आहै चित मँह,[22] नाँही[23] करतेंऊँ[24] नास ॥७

पाठान्तर–एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(का०) आपुस । २–(बी०) तहिया; (का०) तहियै । ३–(बी०, का०) जब रे । ४–(ए०) उठाए; (बी०) उचाय; (का०) उऐउ । ५–(ए०, का०) बैसारेव । ६–(दि०) आहा । ७–(ए०, बी०, का०) जोगी । ८–(ए०) उत्तम । ९–(ए०) कहा; (का०) कहइ । १०–(बी०) सहेलिहु । ११–(ए०) अेह; (बी०) येहि, (का०) अब । १२–(ए०) फुनि आसरो, (बी०, ए०) आस पुनि । १३–(बी०) देऊ । १४–(ए०) सहेलिन्ह; (बी०) सहेलिहु; (का०) सहेली । १५–(ए०, बी०) बोलै; (का०) बोलावह । १६–(बी०, का०) सोई । १७–(ए०, बी०) मुख । १८–(ए०, बी०, का०) जागी । १९–(बी०) बोलिसि, (का०) जस आपुन तस बोल । २०–(ए०) चढेहु, (बी०) चढ़िसि; (का०) चाहेसि । २१–(ए०, बी०, का०) कै । २२–(ए०, का०) × । २३–(ए०) नाहीं तौ; (का०) नाहि त; (बी०) नतरुक । २४–(बी०) करतिंउ; (का०) करति जिव कर ।

टिप्पणी—(३) असरो–आशा ।

(७) नाहीं–नही तो । करतेंउँ–करती ।

२२६

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर; काशी)

नास क[1] डर जो पै चित होई । आरन[2] बनखँड आउ[3] न कोई ॥१
जो को[4] मार[5] तो मोंख[6] पावों । पेम पिरीति[7] लै सरि[8] पहुँचाओं ॥२
मुहि[9] अपने जिय कर[10] आइ न[11] छोहू । जो जीवइ तो करै[12] मरोहू[13] ॥३
मैं आपुन[14] जिउ तबहीं[15] काढ़ा । पिरित पेम[16] रस[17] जिंह[18] दिन बाढ़ा ॥४
पेम लागि मैं जिउ बरछेवा[19] । भँवर[20] मरे पै छाड़[21] न केवा[22] ॥५
कै[23] वह काँटैं जीउ[24] गँवावइ, कै र[25] बास रस लेइ[26] ।६
केवइ[27] [भँवर][28] न[29] परिहरै, [बास][30] लुबुधि जिउ देइ[31] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(का०) की । २–(बी०) अरन; (का०) दारुन । ३–(का०) आवै । ४–(ए०, बी०, का०) कोई । ५–(बी०, का०) मारै । ६–(ए०, बी०, का०) मोखै । ७–(ए०,बी०,का०) प्रीति । ८–(ए०,बी०) सिर; (का०) सिरह । ९–(ए०,बी०,का०) मोहि । १०–(ए०) केर । ११–(बी०, का०) नहिं । १२–(ए०) जो जिउ होए तो करौ । १३–(ए०) मुरोहू; (का०) मरोहा; (बी०) अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं । १४–(ए०, बी०, का०) आपन । १५–(ए०) तैहइ; (बी०) तइहइ; (का०) तेहि दिन । १६–(ए०) प्रीति पेम, (बी०, का०) प्रेम प्रीति । १७–(का०) × ।

१८–(ए०, बी०, का०) जेहि । १९–(ए०, बी०,का०) परछेवा । २०–(ए०,बी०) भौंर । २१–(बी०) छाडै नहि । २२–(का०) भॅवरा मरइ छाड़ै नहिं सेवा । २३–(ए०,का०) उहि; (बी०) वहि । २४–(बी०, का०) जिव । २५–(ए०) रे । २६–(ए०,बी०,का०) लेय । २७–(ए०) केव (बी०, का०) कवहि । २८–(दि०) कॅवल, (ए०, बी०, का०) भौर । २९–(का०) भॅवरा कॅवल; (ए०, बी०) नहि । ३०–(दि०) कहाँ; (ए०) घानि । ३१–(ए०, बी०, का०) देय ।

टिप्पणी—(१) आरन–अरण्य, जंगल ।

(२) **मोंख**–मोक्ष । **सरि**–चिता ।

(३) **मरोहू**–ममता, मोह ।

२२७

(दिल्ली; बीकानेर; काशी)

मिरगावति[1] कहि[2] देखहु रीती । दीपक[3] पतंगहिं[4] कवन[5] परीती[6] ॥१
नीच जो[7] ऊँचै सेउ[8] संग करई[9] । सूर क[10] पेम कँवल जेंउ[11] मरई[12] ॥२
तोहि मरै कै लागी[13] साधा । पंखि[14] दिया जेउँ[15] आपुहि दाधा[16] ॥३
यह[17] हमसेउ[18] कस नेह क दाई[19] । तिह[20] अस जोगी लाख दस छाई[21] ॥४
भीख माँग कछु [भुगति][22] दिवावों[23] । पुन होइ परतर कहुँ पावों[24] ॥५
तू[25] सो बात कहत[26] हँसि[27] मूरख, जिंहि रिस लागे मोहि ।६
पाप किहैं[28] पुन[29] जाइहि हँम क[30], तिंह न[31] मारों[32] तोहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(बी०, का०) मिरगावती । २–(का०) कहा; (बी०) कहै । ३–(का०) दीवा । ४–(बी०) पाँखिहि । ५–(बी०) कौन, (का०) कवनी । ६–(का०) प्रीती । ७–(बी०, का०) से । ८–(बी०) करै । ९–(का०) ऊँच जाइ नीच सग करई । १०–(बी०, का०) के । ११–(बी०, का०) ज्यो । १२–(बी०) मरै । १३–(का०) तुह भैअ मखे कै । १४–(बी०) पंखी । १५–(बी०) जिमि । १६–(का०) तोहि हमहिं कस सनेह कै हाथा । १७–(बी०) तोह । १८–(बी०) हम सन । १९–(बी०) कहाये, (का०) तोहि अस जोगी लाख दुइ छावा । २०–(बी०) तोहि । २१–(बी०) आये; (का०) भीखि माँगु किछु भुगति दियावा । २२–(दि०) जुगत; (बी०) किछु भुगुति । २३–(बी०) दियाऊँ; (का०) कानि होइ परतर के पावउँ । २४–(बी०) पावो, (का०) जस लाइक तस बात कहावउ । २५–(बी०) तैं; (का०) तुम । २६–(बी०) कहसि; (का०) का । २७–(बी०) × । २८–(बी०, का०) होइ । २९–(का०) कन्या । ३०–(बी०, का०) × । ३१–(बी०) तेहि न, (का०) नाहि त । ३२–(बी०) मारउँ; (का०) मरवती ।

टिप्पणी—(४) **दाई**—भागीदार ।

(७) **पुन**–पुन्न, पुण्य । **तिंह**–इस कारण ।

२२८

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर, काशी)

राजा मुयहिं[१] न मारै[२] काऊ[३]। मुयें के[४] मारैं कछु न पाऊ[५] ॥१
तिहि[६] दिन मुयउँ[७] पेम जिह[८] खेलेउँ[९]। साँप के[१०] मुँह जो अँगुरी[११] मेलेउँ ॥२
जो जिउ[१२] होइ[१३] तो मरै[१४] डराऊँ। साँस जीह[१५] लहि[१६] कुहुक[१७] भराऊँ[१८] ॥३
नैन रहे जिह कर[१९] उपकारा[२०]। अधर साँस तिल रहेउ[२१] अधारा[२२] ॥४
उठा मरोहु[२३] हँसत[२४] यें[२५] बोला। मिरिगावतीं बचन रस घोला[२६] ॥५
पूछसि को र[२७] कउन तूँ देस क[२८], नाँउ तोर का आह[२९] ।६
भुगुति देउँ बहु[३०] भीखा[३१] भोजन[३२], ले र अब जाह[३३] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(ए०, बी०, का०) मुयेहि। २-(बी०, ए०) मारिय। ३-(का०) कोई। ४-(ए०) क। ५-(ए०) न नसाऊ, (बी०) नहिं साऊ; (का०) नहिं होई। ६-(बी०, ए०, का०) तेहि। ७-(ए०, बी०, का०) मुयेव। ८-(ए०, बी०) जो। ९-(बी०, ए०, का०) खेलेव। १०-(ए०) क। ११-(ए०) अगुरी जब, (बी०) अँगुरी जो। १२-(बी०, का०) जिय। १३-(ए०) होए; (बी०) होय। १४-(बी०, का०) मरैहिं। १५-(ए०) जीभि, (बी०, का०) जीभ। १६-(ए०, का०) लगि; (बी०) लै। १७-(ए०) खनक; (बी०) खिनक; (का०) खन एक। १८-(बी०) रहाऊँ, (का०) मारूँ। १९-(ए०) जेहि कै, (बी०) जेहि किय, (का०) जे करै। २०-(का०) अपकारू। २१-(ए०) रहेव; (बी०) रही। २२-(का०) आधर सासाटे केर अघटोला। २३-(ए०) मुरोहु; (बी०) मरोह। २४-(बी०) इन्हहि नति, (का०) ×। २५-(का०) यह, (बी० ए०) ×। २६-(ए०) मुँह खोला; (बी०) मुख खोला; (का०) पूरी अर्धाली नही है। २७-(ए०) पूछिसि को रे; (बी०) पूछिसि के तू। २८-(ए०) कौन तै; (बी०) कवन देस कर। २९-(बी०) आहि। ३०-(का०) तोहि। ३१-(ए०) भिखेया; (बी०) भिछया; (का०) भिछूया। ३२-(ए०, का०) ×। ३३-(ए०) लै रे इहाँ सौ जाह; (बी०) लै रे इहहुँ ते जाहु।

२२९

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर; काशी)

जो[१] पै[२] भुगुति भीख[३] तुम्ह[४] देहू। जरमहुँ[५] और न माँगौं केहू[६] ॥१
इहै[७] भीख कहँ इँह ठाँ[८] आयउँ[९]। बहुतँहि[१०] दिही भुगुति[११] न[१२] खायउँ[१३] ॥२
भँवर[१४] करीलहिं[१५] जरम[१६] न खाई। अधिक बास[१७] रस[१८] मालति जाई[१९] ॥३
चातक[२०] अउर[२१] पानि न[२२] पीया[२३]। बूँद सवाती[२४] पाउ त[२५] जीआ[२६] ॥४
केहरि भूँखें तिन[२७] न[२८] चराई[२९]। पाउ[३०] गयन्द[३१] तबहि पै[३२] खाई[३३] ॥५

हम बाचा वहँ आइ पुरी[३४], औंधि किये तिंह देस[३५] ।६
हम आपुन पतिपारी[३६], दुख सुख[३७] आइ आन कै भेस[३८] ॥७

पाठान्तर—एकडला; बीकानेर और काशी प्रतियाँ ।

१–(ए०) × । २–(बी०, का०) रे । ३–(का०) भिछा भुगुति । ४–(का०) मोहि; (ए०) तोह । ५–(बी०) जरमहि । ६–(का०) जन्म न माँगउँ अवरउ केहू । ७–(ए०) ही । ८–(ए०) अेही मॅ । (ए०, बी०, का०) आयेव । १०–(बी०, ए०) बहुतन्ह । ११–(बी०) भुगुति दिहि न । १२–(ए०, बी०) नहि । १३–(ए०, बी०) खायेव; (का०) बहुत दिन भा भुगुति न पायेउ । १४–(ए०, बी०, का०) भौर । १५–(का०) कली । १६–(का०) जन्म । १७–(बी०) बासु । १८–(बी०) मन । १९–(ए०, बी०) मालती भाई । २०–(ए०) चातिक; (बी०) चात्रिग । २१–(ए०,बी०,का०) और । २२–(ए०,बी०, का०) पानी नहिं । २३–(बी०) पियई । २४–(ए०) सेवाती । २५–(बी०) पाव जा; (ए०) पाव तो । २६–(बी०) जिअई; (का०) पूरी पक्ति नही है । २७–(ए०, बी०) तिनु । २८–(बी०) ना । २९–(ए०) राई; (बी०, का०) चरई । ३०–(ए०) पाव; (बी०) पावै । ३१–(बी०) गयदम । ३२–(बी०) लै । ३३–(का०) भरई । ३४–(ए०) हमही बाचा उह आइ परी; (बी०) हमरे बाचा पुरई; (का०) हम बाचा उन्ह कीन्ही । ३५–(ए०) औंधि देहि देस; (बी०) अवधि किही जेहि देस; (का०) जेहि रे देस । ३६–(ए०) अपनो पति पारी, (बी०) हम आपनि प्रति पाली । ३७–(ए०, का०, बी०) × । ३८–(ए०) आए आनि किय भे ; (बी०, का०) आये आन के भेस ।

टिप्पणी—(१) जरमहुँ–आजन्म । केहू–किसीसे ।

(२) ठाँ–जगह ।

(३) करील–रेतीली भूमिमे उत्पन्न होनेवाली झाड़ी; टेटी ।

(४) चातक–पपीहा । सवाती–स्वाती नक्षत्र ।

(५) केहरि–सिंह । तिन–तृण; घास ।

(७) पतिपारी–प्रतिपालन किया ।

२३०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर, काशी)

अबहूँ ढीठ बात[१] तूं[२] कहई[३] । अवँक[२] होइ[४] न चुप कै[५] रहई[६] ॥१
अस मैं ढीठ न देखि[७] भिखारी । मारि नै जाइ[८] न दीनहिं[९] गारी ॥२
जोगी न होइ मनचल[१०] है कोई । हत्या दइ[११] बइठा[१२] जिउ खोई ॥३
रोखँ मोर जो इहाँ बुलायउ[१३] । उठि कै[१४] जाहु बहुत सँझायउ[१५] ॥४
कहिसि जाउँ जो तन जिउ होई । माटी[१६] लै र[१७] आडारो[१८] कोई ॥५
मिरगावती कहा अपनैं जिय[१९] महँ[२०], बहुतै कियउ[२१] निरास ।६
जो फुरहिं[२२] मरि जाइ[२३] निरासा[२४], तोर दिहेउँ यहि आस[२५] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०, का०) बातैं। २–(ए०, बी०, का०) तैं। ३–(ए०) कहही; (का०) कहसी। ४–(ए०) उबंग होए; (बी०) अबंग होय। ५–(बी०) कै चुप नहि। ६–(ए० बी०) रहही; (का०) औगुन होसि चुप मै रहसी। ८–(ए०, बी०, का०) देख। ८–(ए०) मारि न जाय; (बी०) मारे जाहि। ९–(ए०, बी०, का०) दीन्हे। १०–(ए०) होए मचल; (बी०) भा मचला। ११–(ए०, बी०, का०) दै। १२–(ए०, बी०) बैठा; (का०) बैसा। १३–(ए०) बोलाएँव; (बी०) बोलावा। १४–(बी०) तै। १५–(ए०) समुझायेव; (बी०) समुझावा। १६–(का०) माटा। १७–(ए०, बी०, का०) रे। १८–(का०) लँडावहु; (बी०, ए०) अडारो। १९–(बी०) जिय अपने; (का०) अपने जीव। २०–(ए०, बी०, का०) ×। २१–(ए०, बी०, का०) कियौ। २२–(बी०, का०) जो फुरहुँ। २३–(ए०) जाइह; (बी०) जाही निस्चै, (का०) जाई। २४–(ए०, बी०, का०) ×। २५–(ए०) तौ का दिहे एहि आस, (बी०) तौ देहौ एहि आस; (का०) तब को देबेउ आस।

टिप्पणी—(१) अवँक—अवाक्; मूक।
(२) नै—न, नही। गारी—गाली।
(३) मनचल—मनचला।
(४) दोखन—दोष। जाहु—जाओ।
(७) तोर—तोड। आस—आशा।

२३१

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर; काशी)

कहिसि कुँवर मैं तबही जाना। परेसि मुरझि जो[1] उठेसि[2] भुलाना ॥१
मरम लेइ[3] कँह[4] कियेउँ[5] निरासा। जोग उतारु[6] पुजै[7] मन[8] आसा ॥२
चेरिहिं[9] आयेसु[10] रानि[11] जो दीन्हा। जोगी क भेस[12] उतारी[13] लीन्हा ॥३
कहिसि नहाइ[14] पहिरावहु[15] बागा। साथ[16] लाइ कै[17] चली सुभागा[18] ॥४
जोग उतारि नहावहिं[19] चेरी। मिरगावती कही[20] जिय केरी[21] ॥५
बलम[22] बिरंच[23] परखहिं[24], आतम[25] जनाँ[26] जे हन्त[27] ।६
तेता[28] राजें[29] नाँ करहिं, जेता[30] बिरंचि[31] करन्त[32] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(बी०) औ; (का०) जब। २–(का०) उयेसि। ३–(ए०, का०, बी०) लेय। ४–(का०) कै। ५–(बी०, ए०) किएव; (का०) कियेहु। ६–(बी०) उतारहु। ७–(ए०) पूज, (बी०, का०) पूजि। ८–(का०) तोरि। ९–(ए०, बी०, का०) चेरिन्हि। १०–(ए०) आएस; (बी०) आयेस; (का०) आइसु। ११–(ए०, बी०, का०) रानी। १२–(ए०) जोग क साज। १३–(ए०, बी०, का०) उतारै। १४–(ए०) नहाहु; (का०) नहाइ; (बी०) अन्हाय। १५–(ए०, का०, बी०) फिरावहु। १६–(का०) खथा। १७–(ए०, बी०, का०) लाय। १८–(ए०, बी०,

का०) सभागा। १९-(बी०, का०) अन्हवावहि। २०-(ए०, बी०, का०) कहा। २१-(बी०) म्रिगावती मनभावते केरी। २२-(बी०, का०) बालम। २३-(ए०, बी०, का०) बिरच। २४-(ए०) परिखिअहिं; (बी०) परखिये। २५-(ए०, बी०, का०) उत्तिम। २६-(ए०, बी०, का०) जन। २७-(ए०, बी०) जो हुंथि, (का०) जे होन। २८-(ए०) जेता। २९-(ए०, बी०) राचे, (का०) राये। ३०-(ए०) तेता; ३१-(ए०, बी०, का०) विरथि। ३२-(ए०) करन्थि; (बी०) करन्ति।

टिप्पणी—(४) **नहाइ**—नहलाकर। **बागा**—वस्त्र।

२३२

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर; काशी)

सुनके सूर मढ़ी तब जाई[1]। पारबती ससि रति कँह आई[2] ॥१
मिरगावती सिंगार जो भयई[3]। बारह अभरन पहिरिसि तिहई[4] ॥२
धौराहर बहु भाँत सँवारा[5]। रतन मनि[6] दीपक[7] उजियारा[8] ॥३
अगर चन्दन बेना कस्तूरी। मलयागिरि[9] कचोरन्ह[10] भरी ॥४
कुँकू[11] मेद[12] अरगजा किया[13]। ठाँव ठाँव लौ[14] बरै[15] तेलिया[16] ॥५
चोवा मेद[17] सिलार[18] रस[19], फुलेल[20] भीवसेनी[21] बहु तूल।६
सबै बास[22] बहु[23] बिरसै[24], परिमल फूल[25] तँबोल ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१-(बी०) सकर सूर मढपती जाई; (ए०) पतियर अपने मँदिर सँचारा; (का०) दिनियर अपने मदिर सिधारा। २-(बी०) राति कराई; (ए०) रैन सेत आइ पहँचारा (का०) सुरज साथ जाइ उघारे। ३-(बी०) भई; (ए०) जो ठये; (का०) जे ठयेउ। ४-(ए०) नये; (का०) सोल्ह आभरन पहिरै लयेऊ; (बी०) बारह आभरन कहियहि सोई। ५-(बी०) सँवारे। ६-(का०) महि। ७-(ए०, का०) दीप। ८-(बी०) उजियारे। ९-(ए०) मलयागिरि जो। १०-(ए०) कचोरिन्ह। ११-(ए०, बी०) कुकुह; (का०) कुकुम। १२-(बी०) मेलि। १३-(का०) करीबा। १४-(ए०, बी०, का०) × । १५-(बी०) बरै खर; १६-(दि० मार्जिन) बरै बहु दिया; (का०) बरै बहुतै दीवा। १७-(का०) अगर। १८-(बी०) सील। १९-(का०) सिर भरि। २०-(ए०, का०) × । २१-(ए०, बी०, का०) भीमसेनि। २२-(बी०) बासु। २३-(ए०, बी०, का०) × । २४-(बी०) बिलसहि; (का०) बेल्सइ। २५-(ए०) बहुल।

टिप्पणी—(४) **बेना**—(स० वीरण) खस। **कचोरन्ह**—कटोरोमे।

(५) **कुंकु**—कुंकुम, केसर। **मेद**—आइने-अकबरीके अनुसार एक प्रकारकी सुगन्धि जो किसी पशुके नाभिसे बनायी जाती है। **अरगजा**—केसर, चन्दन, कपूर आदिके मिश्रणसे बनी सुगन्धि। **लौ**—दीपक। **बरै**—जरै।

(६) चोवा—एक प्रकारकी सुगन्धि। इसके तैयार करनेकी विधिका आइने-अकबरीमे उल्लेख है। सिलार—शिलाजीत। भींवसेनी–भीमसेनी कपूर।

२३३

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर; काशी)

चन्दन दिया जारहिं बहु[1] चेरी[2]। बाती मैन[3] जरैं बहुतेरी ॥१
बासर निसि न जाइ[4] बराई[5]। देवस कहै[6] को[7] राति कहाई ॥२
तिह ठाँ[8] पलँग[9] सेज सँवारी[10]। मिरगावती बैठी[11] धनवारी ॥३
सखी[12] सहेलिन्ह[13] कहिम्नि बुलाई[14]। कुँवर हँकारु[15] दइ र[16] बड़ाई ॥४
सब उठि धाइ[17] कुँवर पँह गई[18]। जाइ ठाढ़ि आगों वै[19] भई ॥५
मया करहु[20] पग[21] धारहु[22] राजा[23], पदुमिनि तुम्ह र बुलाउ[24] ।६
उठा तँबोल[25] हाथ लै रहँसत[26], हँसत[27] मँदिर मँह[28] आउ[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(ए०) सब, (का०) चहुँ। २–(का०) फेरी। ३–(बी०) मैन। ४–(ए०) नहिं जाय; (बी०) जाइ न। ५–(ए०) बिराई, (बी०) बेराई; (का०) पराई। ६–(का०) कोइ देवस। ७–(ए०) कोउ; (बी०) कोइ। ८–(बी०) ठाँव। ९–(ए०) पालक। १०–(बी०) बिछाई; (का०) तेहि भीतर लेइ पलघ बिछाई। ११–(ए०) बैठ; (का०) बैसी। १२–(बी०) सखिन्ह। १३–(का०) सहेली। १४–(ए०, बी०, का०) बोलाई। १५–(ए०, बी०, का०) हँकारहु। १६–(ए० बी०) रे; (का०) देहु। १७–(ए०) कै। १८–(का०) जे ठाढी आगे भई जाई। १९–(ए०) आगु होए; (बी०) वोहि आये; (का०) सेवा करत साथ भई आई। २०–(बी०) करिये। २१–(ए०, बी०, का०) पगु। २२–(ए०) ढारहु; (का०) धारिये; (बी०) ढ़ारि। २३–(ए०, का०) ×। २४–(ए०) तोहरे बोलाए; (बी०, का०) तुम्हहिं बोलाव। २५–(का०) तँबोर। २६–(ए०, का०) ×। २७–(बी०) ×। २८–(बी०) कहँ। २९–(ए०) जाए, (बी०) आव।

टिप्पणी—(१) जारहिं—जलाती है। बाती—बत्ती।

(२) बासर—दिन। बराई—बिलग; अलग। देवस—दिवस।

(४) हँकारु—बुलाओ। बड़ाई—सम्मान।

२३४

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर; काशी)

रानी देखि[1] कुँवर गा आई। उतरी सेज सौं ठाढ़ सोहाई[2] ॥१
पेग[3] चारि चलि किहिसि[4] जुहारू[5]। आवहु[6] सामी[7] करहु अहारू ॥२
तहिया भुगुति न दीन्हेउँ[8] तोही। सेज बइठि[9] बिरसहु[10] अब मोही ॥३

हम लगि गजन मरन[११] तुम्ह[१२] सहा। हौं कस मानों तोर न[१३] कहा ॥४
जो कोउ[१४] काहु लागि दुख देखै। मिलै सोइ[१५] अगिनत[१६] सुख पेखै[१७] ॥५
राज पाट जहवाँ लहि[१८] सामी, औ[१९] हौं[२०] दासि[२१] तुम्हारि[२२] ।६
चलहु [सेज] पसवहुँ बैठहु[२३], तूँ र[२४] पुरुख हौं[२५] नारि[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ।

१–(का०) देखु। २–(का०) सइ परु सोहराई। ३–(ए०) पग। ४–(का०) किहेसि; (बी०) कियेउ। ५–(ए०, बी०, का०) जोहारू। ६–(ए०, बी०) आव। ७–(बी०) सामि अब; (ए०) सामी अब। ८–(ए०) दीनेव। ९–(ए०, बी०, का०) बैठि। १०–(ए०) अब बिरसहु; (बी०) अब बिलसहु; (का०) अब भुगुतहु। ११–(ए०, बी०) मरन गंजन; (का०) ×। १२–(बी०) तुम; (ए०) जो; (का०) जग। १३–(ए०) तोर न मानों। १४–(ए०, बी०, का०) कोइ। १५–(ए०, बी०, का०) सोव। २६–(ए०) अगत, (बी०, का०) अगनित। १७–(ए०) ऐखै। १८–(बी०) लगि है; (का०) लगि। १९–(ए०, का०) ×। २०–(का०) अरु २१–(ए०, बी०, का०) दासी। २२–(ए०) तोहारि। २३–(बी०, का०) चलहु सेज पर बैसहु; (ए०) कुबरहु सेज पर बैठहु। २४–(ए०, बी०) रे; (का०) तुम्ह। २५–(का०) मैं। २६–(बी०) नारि तुम्हारि।

टिप्पणी—(२) सामी—स्वामी।
(३) तहिया—उस दिन। बिरसहु—बिलास करो।
(४) कस—कैसे।
(६) जहँवा लहि—जहाँ तक।
(७) पसवहुँ—लेटो।

२३५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर; काशी

दुवउ[१] सेज पर बइठे[२] जाई। मिरगावति[३] फुनि[४] बात चलाई ॥१
आपन बिरित[५] कहौं तिह आगे[६]। आयेउ तो चित कै रिस लागे ॥२
आवत आयउ[७] भा[८] पछतावा। कैसहुँ रहै न जिउ[९] बउरावा[१०] ॥३
निसि बासर तिह[११] सँवरत[१२] रहेउँ[१३]। खिन[१४] न बिसारों अब सत[१५] हौं[१६] कहेउँ[१७] ॥४
तो[१८] गुन हियैं[१९] [अइस[२०]] कै छाई[२१]। चित्र लिखी[२३] पुनि उतर[२४] न जाई[२५] ॥५
मजा न बिसरी तो गुन, कीन्हि गूथिम माला[२६] ।६
तो नाम मो भजैं, बासर रैनि [होइ उजाला[२७]] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर और काशी प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०, का०) दुऔ। २–(ए०) बैठे, (बी०, का०) बैसे। ३–(ए०, बी० का०) मिरगावती। ४–(बी०) फिरि। ५–(ए०, बी०, का०) निरति। ६–(ए०)

हौं ताके; (बी०) तुम आगे; (का०) कहु मोहि आगे। ७–(का०) आयेहु। ८–भवा। ९–(ए०, बी०, का०) जीउ न रहै। १०–(ए०, बी० का०) बौरावा। ११–(ए०, बी०, का०) तोहि। १२–(ए०, का०) सौरत; (बी०) सुमिरत। १३–(ए०, का०) रहऊँ; (बी०) रहौ। १४–(ए०) खन। १५–(का०) फुर। १६–(ए०, बी०, का०) ×। १७–(ए०) कहउ, (बी०) कहौं। १८–(ए०, बी०) तुव; (का०) तोर। १९–(ए०) हम हिय; (बी०) हम कहँ; (का०) हम। २०–(दि०) आइस; (बी०, ए०, का०) अस। २१–(ए०, बी०) छाऐ; (का०) छावा। २२–(ए०) लिही; (बी०, का०) लिखे। २३–(ए०, बी०, का०) फुनि। २४–(ए०) मेट। २५–(ए०, बी०, का०) जाये। २७–(ए०) मजा नहु बिसरी औ तुव गुन, गुन गथिम माला; (बी०) मम जनि बिसरिय आह तुव गुन, गनि गूथी जिय माला; (का०) मझन यह बिसरिय केव गुन, गाथिम पुहुप कै माल। २६–(ए०) तुव नाम मनि जवौ, जपन बासुर रैनि हो बाला; (बी०) तुव नाम निज मंत्र किय, जपत रैनि बासुराय; (का०) तुम नाम निजु मत्रेन, जपत नयन बिसाल।

टिप्पणी—(१) दुवउ—दोनों।

(२) आपन—अपना। बिरित—(वृत्त) समाचार। रिस–क्रोध।

(३) भा–हुआ।

२३६

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर कहा अब हम दुख सुनहू। हौं रे कहौं तुम्ह[1] चित मँह[2] गुनहू ॥१
तू र[3] छाँड़ि जिह[4] दिन मुँहि[5] आई। तिह[6] दिन सेउ[7] मैं भुगुति न खाई ॥२
जोग[8] पन्थ होइ भेस भरायेउ[9]। आरन[10] बनखँड माँझ[11] धसायेउँ[12] ॥३
फुन र[13] समुँद मँह परेउ[14] जो आई। लहरि उठै कछु[15] कही[16] न जाई ॥३
माँस देवस वँह डर[17] मँह[18] रहा। फुनि[19] लहरहिं[20] सेउ जो तिर बहा[21] ॥५
आइ परेउ तिह ठाँई[22] औघट[23], जहाँ न आहै घाट ।६
सिखर ऊँच न मारग पेखैं[24], चाँटहि चढ़ै न पाँत[25] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–तुम। २–महि। ३–रे। ४–जेहि। ५–सै। ६–तेहि। ७–छिनसे। ८–जोगी। ९–फिरायेउ। १०–ऑरन। ११–महँ। १२–धस खायेउँ। १३–पुनि। १४–परा। १५–किछु। १६–कहै। १७–वोहि। १८–महि। १९–पुनि। २०–लहरि। २१–दइव निरबहा। २२–तेहि ठाउँ। २३–×। २४–नहिं मार्ग जाइ कहँ। २५–चढ़ी चढ़ै नहिं बाट।

टिप्पणी—(३) धसायेउँ—घुसा।

(५) तिर—तीर, किनारे।

(६) औघट—बेराह, बिना रास्ता।

(७) चाँटहि—चीटा।

२३७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

फुनि रे[1] साँप एक बिपरित[2] आवा। जिय मँह[3] कहेउ[4] ये र[5] हौं[6] खावा ॥१
एक और सठ[7] आयउ[8] भारी। दुहूँ आपु[9] मँह जूझ[10] पसारी ॥२
दुँहु सायर[11] मँह खाँइ पछाड़ा। तो हम कहँ दइ[12] जीउ उबारा ॥३
उन्हिकैं परैं[13] तरंग जो आई[14]। सिखर नाँघि बोहित बहिराई[15] ॥४
भागेंउ उतर सुबुध्या आयेउँ। अचरज[16] सुनेउ[17] सो देखै धायेउँ ॥५
सुवन[18] अचम्भो सुनि के अचरज[19], धायों देखी सेइ[20] ।६
कुँवरि सेज एक[21] बैठी[22] अपछरि[23], राकस आयउ लेइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) पुनि। २–(ए०, बी०) बिपरीत। ३–(बी०) मै। ४–(ए०) कहेव। ५– ए०) ये रे; (बी०) ×। ६–(बी०) हौ एहि। ७–(ए०) सुठि। ८–(बी०) आयउ सुठि। ९–(बी०) आपुस। १०–(ए०, बी०) जूझि। ११–(बी०) दुवउ आपु। १२–(बी०) बिधि हम कहँ, (ए०) सिउ हम कहँ। १३–(ए०) परत, १४–(ए०, बी०) लहरि बड़ि आई। १५–(ए०) बोहिअ बिहराई; (बी०) बोहिथ वहराई। १६–(बी०) अचरिज। १७–(ए०, बी०) सुना। १८–(ए०) सोन; (बी०) स्रवन। १९–(ए०, बी०) ×। २०–(ए०) देखै धायेउँ सोए; (बी०) धायेउँ देखै सोय। २१–(ए०, बी०) ×। २२–(ए०) बैठे, (बी०) बैठ। २३–(बी०) अपछरा। २४–(बी०) लेय।

टिप्पणी—(१) बिपरित—असाधारण।

(२) जूझ—युद्ध। पसारी—फैलाया।

(३) सायर—सागर।

(४) तरंग—लहर। सिखर—शिखर। बोहित—नाव।

२३८

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

राकस अधिक[1] अहा बरिवण्डा। मारेउँ[2] चक्र किहेउँ[3] नौखण्डा[4] ॥१
राजा सुनि बिधि[5] देखै आवा। नगर मोख राकस सेंउ[6] पावा ॥२
राजा कही[7] बियाहिय[8] सेई[9]। आधा राजपाट हम देई ॥३
[बरज][10] करों तो नीक[11] न होई। कर कर निकसेउँ[12] छाड़ेउ सोई ॥४
आइ परेउँ कजलीबन[13] महाँ[14]। सिंघ सिंदूर छिकारहँ[15] तहाँ ॥५

बन अँधियार न सूझे मारग[१६], भूलेउँ कँ खँ[१७] जाउँ।६
बैसहुँ महँ न बिसारेउँ[१८] कैसहुँ[१९], जपत[२०] तुम्हारेउ[२१] नाँउ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) अति रे। २-(ए०, बी०) मारेव। ३-(ए०, बी०) किहेव। ४-(ए०, बी०) दस खण्डा। ५-(ए०) एह; (बी०) वह। ६-(ए०) सै; (बी०) सौ। ७-(ए०) कहै; (बी०) कहा। ८-(बी०) बियाहौ। ९-(ए०, बी०) सोई। १०-(बी०, ए०) जो बर, (दि० मार्जिन) बरजो। ११-(बी०) नर्क। १२-(बी०) निसरेउँ। १३-(बी०) कदलीबन। १४-(ए०, बी०) माँहाँ। १५-(ए०) झिकरहिं, (बी०) चिघारहिं। १६-(ए०) ×। १७-(ए०) किधी; (बी०) केहि दिसि। १८-(ए०) उइ सो हम्ह न बिसरेउ। १९-(ए०, बी०) ×। २०-(ए०) हिय; (बी०) चिहि। २१-(ए०) तोहारहि; (बी०) तुम्हारा।

टिप्पणी—(१) बरिवण्डा—बलवान।
(२) बियाहिय—ब्याहूँ। सेई—उसे।
(५) छिंकारहँ—चिग्घाड करते हैं।
(६) कँ खँ—किस ओर।

२३९

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

नाँउँ लेत एक मारग पावा। बन ओरान[१] हौं बाहर आवा॥१
बाहर[२] मिलेउ[३] जो[४] छेरि[५] चरवाहा। बहु अलाप कीतसि बहु चाहा॥२
पाहुन कँह[६] ले गयउ बुलाई[७]। भुगति न देतसि[८] चाहिम्हि खाई॥३
चरि[९] भारी[१०] एक तिह[११] लै पैठा[१२]। पाट दिहिसि[१३] बाहर होइ[१४] बैठा[१५]॥४
चरि[१६] भीतर मानुस बहु आहे[१७]। वै[१८] हमकँह सिख बुधि दइ[१९] रहे॥५
पुनि वहि भीतर आयेउ[२०] चढ़ी[२१], उन्ह मँह मारिसि एक।६
तोरि कै भूँजसि[२२] खाइसि, बार न लागेउ[२३] नेक॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

१-(ए०) उरान। २-(बी०) बहुरि। ३-(ए०, बी०) मिलेव। ४-(ए०, बी०) ×। १५-(ए०, बी०) छेरी। ६-(बी०) कै। ७-(ए०, बी०) गयेव बोलाई। ८-(बी०) देतिसि, (ए०) दीतिसि। ९-(ए०, बी०) चूर। १०-(बी०) ×। ११-(ए०) तँह; (बी०) तहाँ। १२-(ए०) बैठा। १३-(बी०) दिहेसि। १४-(ए०) भै। १५—(बी०) बैसा। १६-(बी०) तेहि। १७-(दि०) आहे। १८-(ए०) उए। १९-(ए०, बी०) दै। २०-(ए०, बी०) आएव। २१-(ए०) चरपट (?); (बी०) चोरटा। २२-(ए०, बी०) ×। २३-(ए०, बी०) लागी।

टिप्पणी—(१) ओरान—समाप्त हुआ।

(२) छेरि—बकरी।

(४) चरि—गुफा। पैठा—घुसा। पाट—पट्ट; दरवाजा।

(७) बार—देरी। नेक—तनिक भी।

२४०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मानुस खाइ बहिरि[1] परि सोवा। यह र[2] देखि मैं जिय[3] मँह रोवा ॥१
औ जिय के मैं[4] डर न[5] रोवा। जिय मँह सँवरेउँ[6] तोर बिछोवा ॥२
फुनि उन्हि कैं[7] बुधि जिय[8] मँह आई। सँडसी दगधि[9] आँख मँह[10] लाई ॥३
फोरेउँ आँख निकसि के भागेउँ। बहिरि[11] परेउ[12] दुख सब निसि जागेउँ ॥४
तिह[13] ठाँ[14] कैर सुनहु दुख भारी। बैसहुँ मँह मै तो[15] न बिसारी ॥५
पँदमपत्र[16] बिसालाछी[17], गजकुम्भ पयोहरी[18]।६
हिरदैं बससि मों तिह, साखा[19] बीलोचन[20] जथा ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) बहुरि। २–(ए०) अेह रे; (बी०) वह रे। ३–(ए०) जिउ, (बी०) चित। ४–(ए०) औ मै जिअ, (बी०) औ मै जिउ। ५–(बी०) के डर नहि। ६–(ए०, बी०) सुमरेव। ७–(ए०, बी०) की। (ए०) जिअ; (बी० जिउ। ८–(बी०) सँडसी दगाध। १०–(बी०) आँखिहु; (ए०) आगी। ११–(ए०) बहुरि; (बी०) पुनि रे। १२–(ए०) बरा। १३–(ए०, बी०) तेहि। १४–(बी०) ठाँव। १५–(ए०, बी०) तू। १६–(ए०) पदुम पुत्रि; (बी०) कँवल पत्र। १७–(ए०, बी०) बिसाल किये। १८–(ए०) पयोहरे; (बी०) पयोहरि भरि। १९–(ए०) हिरदै बास काँती साखा: (बी०) ह्रदै बास कन्या साख; (दि० मर्जिन) हिरदै बसति कामनी साखा। २० (ए०, दि० मर्जिन) वैलोचन, (बी०) सबै लोचन।

टिप्पणी—(१) परि–पड़कर।

(२) बिछोवा–बिछोह, वियोग।

(६) बिशालाछी–(विशालाक्षी) बड़े नेत्रोवाली। गजकुम्भ–हाथीका गण्डस्थल, स्तनकी उपमाके निमित्त कवि प्रायः इस शब्दका प्रयोग करते रहे है। पयोहरी—पयोधरी; स्तनवाली।

(७) मों–मेरे। तिह–तुम। साखा–डाल। बीलोचन–देखिये पीछे १२१।७।

२४१

(दिल्ली; बीकानेर)

इत[1] दुख सुनि जिउ[2] घबरावा[3]। मिरगावतीं गिय भरि कै लावा[4] ॥१
हम् लग[5] अति[6] दुख देखिहु[7] नाहाँ। बिरसु सिरफल राखेउँ[8] छाँहाँ ॥२

पवन न लागि[9] सूर पँह राखी[10]। बास नाँउ भँवर न चाखी[11] ॥३
दारिंउँ दाख असक जँभीरी[12]। बिरसहुँ तुम्ह आगें हम[13] नेरीं[14] ॥४
आलिंगन आलो[15] कुच धरई। कर कुच गहे सहत[16] रस बढ़ई[17] ॥५
उरहिं लागि[18] कै दलमलै, अधर घूँट रस लेइ[19] ।६
कन्दै हँसै मान कर बाला[20], अधर अलिंगन देइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–एत। २–जिव। ३–गहबरि आवा। ४–भरि गीव लगावा। ५–लागि। ६–एत। ७–सहेहु। ८–बिरहसहु सो फल राखे। ९–लागेउ। १०–राखेउ। ११–बासु न अवर भँवर चाखेउ। १२–दारिव नारग दाख जँभीरा। १३–×। १४–नीरा। १५–अलौ। १६–सुरति। १७–करै। १८–लाइ। १९–दलि कै रैनि सेज रस लेइ। २०–हँसइ मान करै बालम।

टिप्पणी—(१) इत–इतना। गिंय–गले। नाहाँ–पति।

(२) सिरफल–श्रीफल; बेल।

(४) दारिंउ–दाड़िम, अनार। दाख–अगूर। जँभीरी–नीबू। बिरसउ–बिलास करो। नेरी–निकट।

२४२

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

भँवर[1] बास परिमल सब[2] लिया[3]। औ सब अमिय महारस पिया[4] ॥१
तिस्नाँ काम सान्त मन भई। दुख बेदन[5] उर कै[6] सब गई ॥२
पाँचभूत[7] कया जो आहीं[8]। ते र[9] सिरान[10] अवँक[11] होइ रहीं[12] ॥३
कँवल किहाँ[13] भँवर[14] निसि रहा। जाग्र न जाइ[15] पेम रस गहा ॥४
चित चिहटेव[16] निकसि[17] न जाई। पंकहि जिमि[18] गयन्द मिलाई ॥५
हिया सरोवर[19] मन कँवल, सज्जन बहुल[20] बईठ ।६
बास लुबुधेउ पेम को[21], भीतर न आवइ दीठ[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) भौरा; (बी०) भौर। २–(ए०) रस। ३–(बी०) लेई। ४–(बी०) पिवई। ५–(बी०) बेदना। ६–(ए०, बी०) की। ७–(ए०, बी०) पाँचो भूत। ८–(ए०, बी०) अहे। ९–(ए०) तेरे, (बी०) ते। १०–(ए०) सेरान। ११–(ए०) उवंग; (बी०) अवाग। १२–(ए०, बी०) होय रहे। १३–(ए०, बी०) थानि। १४–(ए०, बी०) भौंरा। १५–(ए०, बी०) जाय। १६–(बी०) उलझा। १७–(बी०) निकेसि। १८–(ए०) जिमि रे; (बी०) जेउँ। १९–(बी०) सरवर। २०–(ए०) भेसल। २१–(ए०बी०) के। २२–(ए०, बी०) बहुत उडंत न दीठ।

२४३

(दिल्ली, बीकानेर)

रैन सबै [बिगरह[1]] मँह[2] गई। धरहर[3] करै सूर उवई[4] ॥१
धरहर करै[5] सूर दुहुँ मानै। मोर भयउ [बिगरह[6]] बिहराने ॥२
(जामिनि [बिगरह[7]] भयउ अपारा। कुंजर साजे[10] और तुखारा ॥३
तातर[11] कुरिल करायउ[12] केसा। कंचूकी पहिरि सनाह[13] के भेसा ॥४
पहिन जो बिरिया[14] कंगन कलाई। सारी कसिसि रकावल ठाँई[15] ॥५
रिपु सत बान जो लोइनहि[16], भौह धनुक बैठाँह।६
चक्र पयोधर कीन्ह गिंथ[17], तिह[18] बर जीतेउ[19] नाँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–(बी०) बिग्रह; (दि०) परिगह। २–मैं। ३–धरहरि। ४–गा उगई। ५–धरहर किही। ६–मानी। ७–भयेउ। ८–(दि०) परिगह; (बी०) बिग्रह। ९–(दि०) परिगह; (बी०) बिग्रह। १०–साजेउ। ११–टाटर। १२–कराये। १३–सनेह। १४–बॉह जो बरया। १५–सारी कस रगावली थाई। १६–रविसुत बाहन जो लोइनहु। १७–कान्ह कै। १८–तेहि। १९–जेतेउ।

टिप्पणी—(१) बिगरह—(विग्रह) युद्ध। धरहर–रोक-थाम। उवई–उगा।

(२) दुहुँ–दोनो। बिहरनि–समाप्त।

(३) जामिनि–(यामिनी) रात्रि। कुंजर–हाथी। तुखारा–घोडा।

(४) तातर–तातारी तलवार। कुरिल–कुटिल; टेढा। सनाह–कवच।

२४४

(दिल्ली; बीकानेर)

तिलक [खड्ग*][1] तातर तिंह माँगा[2]। कुरिल [बार][3] उधियानेउ[4] माँगा ॥१
नह सत साँग सनाह कै[5] लागी। कँचुकी तार तार[6] होइ भागी ॥२
बिरी[7] फूटि कर गही जो नाहाँ। पहुँचो[8] जो टूटि उपरि[9] गइ बाहाँ ॥३
कसी रकावल[10] अही[11] जो सारी। मैंमन्त भिरे[12] उहो धरि फारी ॥४
दूनों उनै[13] माँझ रन रहे। [दिनियर आइ बीच होइ गहे[14]] ॥५
जो न[15] आवत सूरज[16] धरहर[17] को, को जानै कस होत।६
दुहु[18] मैंमत कर [बिग्रह][19] दलमलि, निकसेउ धरहुत सोत[20] ॥७

पाठान्तर—बीकनेर प्रति।

१–(बि०) कुहका। २–तिलक जो लिलाट टाटर मॅह लागा। ३–(दि०) हर। ४–उघसी। ५–नहसुती संगी सनाहु। ६–तर तर। ७–बरया। ८–बाँह। ९–उबरि। १०–रँगावली। ११–हुती। १२–मैंमत भिरेउ। १३–दुवौ आइ। ४१–

(दि०) दिनियर आइ बीच होई। १५–नहि। १६–सूर्ज। १७–घरहरि। १८–दुवौ। १९–(दि०) बरकर। २०–निकसे धार हुतै सोत।

टिप्पणी—(२) नह–नख। सत–शत। साँग–लोहेका छोटा भाला। सनाह–कवच।

(३) बिरी–चूडी। पहुँचो–पहुँची, एक आभूषण। उपरि–उखड।

२४५

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर[1])

भोर भयउ[1] दिनकर[2] उजियारा। चेरी पानि[3] लै आयउ[4] बारा॥१
बदन पखारहिं पान चबाही। हँसहिं[5] सेज पर केलि कराहीं॥२
महतै[6] [नेगी[7]] सुनी यह बाता। वह आयउ[8] ज[9] सुना हुत[10] राता॥३
जैं[11] को नेहा[12] राखी[13] अही[14]। आयउ[15] सोइ कुँवरि जैं[16] चही॥४
उत्तम[17] उतंग राजपुत आही[18]। सूरुजबंसी[19] ऊँच इन्ह चाही[20]॥५
मिरगावती राज उन्ह[21] दीन्हो[22], औ आपुन सब[23] जीउ।६
चलहु जोहारै जाहि भेंट लै[24], मिरगावती कर[25] पीउ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) भयेव। २–(बी०) दिनियर। ३–(ए०) चेरि पानी, (बी०) चेरी पानी। ४–(बी०) आई; (ए०) आयेव। ५–(बी०) हँसि हँसि। ६–(ए०) महथे। ७–(दि०) नगर। ८–(ए०, बी०) आयेव। ९–(ए०, बी०) जो। १०–(बी०) होत। ११–(बी०) जेइ, (ए०) जे। १२–(ए०, बी०) गहि तहिया। १३–(ए०, बी०) राखेव। १४–(दि०) आही। १५–(ए०, बी०) आयेव। १६–(ए०) जो; (बी०) वोहि। १७–(बी०) अति। १८–(ए०, बी०) आही। १९–(ए०) सुरुज बस; (बी०) सूर्य बस। २०–(बी०) इन्हि चही। २१–(बी०) उन, (ए०) सब। २२–(ए०, बी०) दीन्हेव। २३–(ए०) आपन उन्ह। २४–(बी०) जाहि भेटेल। २५–(बी०) ×।

टिप्पणी—(१) दिनकर–सूर्य। चेरी–दासी।

(२) बदन–मुँह। पखारहि–(स० प्रच्छालन) धोते है। केलि–क्रीड़ा।

(३) महतै–श्रेष्ठ जन; उच्च कर्मचारी। माताप्रसाद गुप्तने मधुमालतीमे इसे महामात्य बताया है। नेगी–सामान्य कर्मचारी।

(४) जैं–जिसका। नेहा–स्नेह; प्रेम।

(५) उतंग–(स० उत्तुग) अत्यन्त ऊँचा।

---

[1] इस प्रतिमें यह कडवक दो कडवकोंमें बँटा है। पहले कडवकमें प्रथम दो पक्तियोंके साथ पाँच अन्य पक्तियाँ हैं। दूसरे कडवकमे मध्यकी तीन पंक्तियाँ और उनके बाद दो पंक्तिरिक्त और तब अन्तकी दो पक्तियाँ हैं।

२४६

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

मिरगावती कहा[1] सुनु राया। नगर लोग कँह[2] बोलहु माया ॥१
सभा बैठि परधान हँकारहु। कापर[3] दइके[4] देस अभारहु[5] ॥२
नेगी अउर[6] अहहिं बहुनेरे। सभै[7] बुलावहु[8] पठवहु चेरे ॥३
आन होइ[9] सब देश मझारी। तुम्ह[10] राजा हौं नारि तुम्हारी ॥४
सभा जाइके[11] बैठेउ[12] सयाना[13]। भा उजियार नगर[14] सब जानाँ ॥५
महता[15] तुरिय भेंट लै आवा[16], औ[17] नेगी सब आय।६
दण्डवत[18] भेंट कीनिह जो[19] कुँवर कँह[20], धाइ[21] लागि[22] फुनि[23] पाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कहै। २–(बी०) कहुँ। ३–(बी०) कपरा। ४–(ए०, बी०) दैके। ५–(बी०) उभारहु। ६–(ए०, बी०) और। ६–(ए०) सबही; (बी०) सबै। ८–(ए०, बी०) बोलावहु। ७– (ए०) होहि, (बी०) होय। १०–(ए०) तोह। ११–(बी०) जाय कै। १२–(बी०) बैठ; (दि०) बैठउ। १३–(बी०) सुजाना; (ए०) भाना। १४–(बी०) राजनीति चरचै। १५–(बी०) महथे; (ए०) महथ। १६–(बी०) आये। १७–(ए०) औव; (दि०) ×। १८–(ए०, बी०) डण्डवत १९–(ए०) जो कीन; (बी०) जो कोन्ह। २०–(ए०) से; (बी०) कै २१–(बी०) धाय। २२–(ए०) लागहु; (बी०) लगो। २३–(ए०) सुनि।

टिप्पणी—(१) राया–राजा। माया–मया; प्रेम।

(२) परधान–प्रधान। हँकारहु–बुलाओ। कापर–कपड़ा, वस्त्र। दइके–देकर। अभारहु–आभारी बनाओ।

(३) सभै–सभीको। चेरे–दास।

(४) आन–ख्याति। मझारी–मध्य।

(५) सयाना–चतुर।

(७) दण्डवत–अभिवादन। पाय–पैर।

२४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

मया बोलि कै कुँवर उचाये। नेगी कै[1] कापर[2] नेगिहँ[3] पाये ॥१
औ परसाद बहुत कै दीन्हाँ। सीस चढ़ाइ[4] सो रानहिं[5] लीन्हाँ ॥२
राइ राउ उरगान[6] जो अहे[7]। आयसु भयउ बुलावइ कहै[8] ॥३
प्रतिहार कहँ अज्ञा भई। देउ जोहारी[9] जो आवई ॥४
नींचहिं[10] कोउ[11] न छेड़ै[12] आजू। देखइ देहु हमारेउ साजू ॥५

कुंडर[१५] कान मुकुट[१६] सिर सोहै, कर कटार सोन सन[१७] मूँठि ।६
प्रीति [इ]नहिं साँची कै जानहु[१८], अउर[१९] प्रीति सब झूठि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०, बी०) क । २–(बी०) कपरा । ३–(ए०) नेगिन्ह, (बी०) नेगिहु । ४–(ए०) चढाए; (बी०) चढाय । ५–(बी०) सो रे उन्ह ; (ए०) जो रानन्हि । ६–(ए०) राए रान उरगान; (बी०) राय रान ओरगान । ७–(दि०) आहे । ८–(ए०) आऐस भई बोलावै कहे; (बी०) आये सबै जो बोलावन कहे । ९–(ए०, बी०) जोहारे । १०–(बी०) नीचेहु; (ए०) काहू । ११–(ए०, बी०) कोइ । १२–(ए०) छेरै; (बी०) छेकै । १३–(ए०, बी०) देखै । १४–(ए०, बी०) हमारेव । १५–(ए०) कोडर; (बी०) कुण्डल । १६–(ए०) मटुक । १७–(ए०, बी०) × । १८–(ए०) प्रीति इन्हहि की साची; (बी०) प्रीति इन्ह की गनियै साँची । १९–(ए०, बी०) और ।

टिप्पणी—(२) परसाद–(प्रसाद) अनुग्रह; कृपा ।

(३) राइ राउ–राजा लोग । उरगान–जायसीके पदमावतमे यह शब्द ओरगानके रूपमे प्रयुक्त हुआ है (९९।९; १२८।२) । वासुदेवशरण अग्रवालने इन स्थलोपर अरबी शब्द रुक्न (=खम्भ)के बहुवचन अरकानको मूलमे मानकर अमीर-उमरा, प्रधान, सामन्त, माण्डलिक (पृ० १४५), मुख्य, प्रधान व्यक्ति (पृ० ११३) आदि अर्थ किये है । किन्तु इसके मूलमे न तो अरबी शब्द है और न इसका वह अर्थ है जो अग्रवालजीने अनुमान किया है । सम्भवतः यह सस्कृतका उरुगाय है । वेदोमे सूर्यकी गतिशीलताके लिए अनेक स्थलोपर इस शब्दका प्रयोग हुआ है । उरगानके मूलमे उरुगाय होनेका सम्भावना नरपतिके बीसलदेव-रासमे प्रयुक्त उलिगण, उलिगणा, उलगाणा शब्दोसे प्रकट होता है—

हस-वाहन मिग लोचन नारि ।
सीस समारइ दिन गिणइ ॥
जिन सिरजइ उलिगण घर नारि ।
जाइ दिहाडाउ झूरित ॥

(हंस जैसी चालवाली मृगलोचनी नारि बाल सँवारते हुए वियोगके दिन गिनते हुए कहती है—भगवान् किसीको उलगानेकी पत्नी न बनाये जिसका जीवन ही बिसूरते बीतता है ।

इणी भव उलिगाणौ हुवौ ।
आवतइ भव होइ कालो हो साँप ॥

इस जन्ममे उलगाना हुआ, अगले जन्ममे वह काला सर्प (अर्थात् घरबार हीन प्रवासी) होगा । इनसे ऐसा जान पडता है कि उरगानका प्रयोग ऐसे

व्यक्ति या समाजके लिए होता था जो जीविकोपार्जनकी दृष्टिसे स्थिर नहीं रहते थे। इसी अर्थमे उरगिया शब्द आज भी बुन्देलखण्डीमे प्रचलित है—

सबरे उरगिया उरग जात है।
हमहूँ उरग खो जाएँ।
भैया मोरी लागी है उरगकी चाकरी।

गुजरातीमे आज भी ओलग शब्द सेवाके अर्थमे प्रयोग होता है और वहाँ कुछ जगहोपर भगीको ओलगाणा कहते है। इनके प्रकाशमे देखनेपर उरगान या ओरगानका तात्पर्य या तो सार्थवाह (बनजारो) से है जो व्यापारके निमित्त सदैव घरसे बाहर रहते थे; या फिर उन लोगोसे है जो अन्यत्रसे आकर सेना आदिमे चाकरी करते थे। प्राचीन कालमे शासन-व्यवस्थामे वणिक् समाजका काफी हाथ रहता था और वे राज-दरबारमे प्रतिष्ठित होते थे। सम्भवतः उन्होकी ओर यहाँ सकेत है। किन्तु पदमावतमे इस शब्दका उपयोग सैनिकोके प्रसगमे हुआ है।

(५) **नींचहिं**—निम्न वर्गके व्यक्ति। **साजू**—ठाटबाट।

(६) **कुंडर**—कुण्डल, कानमे पहननेका आभूषण। **सन**—समान।

२४८

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर[1])

राने राइ[1] कुँवर जो बुलाये[2]। बनि बनि सबै जोहारे आये ॥१
माँडखण्डी[3] जगती[4] के नाँऊँ। बैठी सभा अपूरब ठाँऊँ ॥२
कुँवर थवैतहिं[5] दीन्हें[6] सानाँ। आइ थवाइत आफुहिं पानाँ[7] ॥३
तिस तिस[8] पान कह आफुहिं[9] बीरा[10]। पान[11] कपूर गुना मँह नीरा ॥४
खैर[12] माँझ[13] कस्तुरी[14] मेराई। मोति क चून सभा सब खाई ॥५
राइ[15] नरिन्द नर[16] नरवई[17], सेवा सभै[18] कराँहि।६
आयसु[19] जोवँहि खिन खिन[20], अज्ञा होइ त जाँहि[21] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१—(ए०) राए; (बी०) राय। २—(ए०, बी०) बोलाये। ३—(ए०) मानखण्डी; (बी०) तरमंडर। ४—(बी०) भुअन। ५—(ए०) थवैतन्ह; (बी०) थवतन्ह। ६—(ए०) दीन्हेव; (बी०) दीन्ही। ७—(ए०) आऐ थवादेर आछहिं पानी; (बी०) आइ थवई तब दीन्हा पाना। ८—(बी०) सठि सठि। ९—(बी०) आफैं। १०—(ए०) सब कहँ आफुहि पान क बीरा। ११—(ए०, बी०) पानी। १२—(ए०)

१. इस प्रतिमें यह कड़वक दो कड़वकोंमें बँटा है। आरम्भकी तीन पक्तियोंके साथ चार अन्य है। दूसरे कड़वकमें तीसरी-चौथी पक्तियाँ प्रथम दो पक्तियोंके रूपमें और अन्ति- अन्तमें हैं। बीचमें तीन नयी पक्तियाँ हैं। ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त स्वीकार कर अन्यत्र

खीर। १३–(बी०) माँह। १४–(ए०) कसतुरी; (बी०) कसतूरी। १५–(ए०) रास। १६–(ए०) कुवर नभ (?)। १७–(ए०) नखै; (बी०) राउ राना राउत। १८–(ए०, बी०) सबै। १९–(ए०) आअेस; (बी०) आयेस। २०–(ए०, बी०) खन खन। २१–(ए०, बी०) बिनु अग्या नहिं जाहिं।

टिप्पणी—बनि बनि–बन ठनकर; साज-सँवर कर।

(३) **थवैतहि, थवाइत**–पनवाड़ी; बरई; पान लगानेवाले। **साँना**–संकेत। **आकुहिं**–तैयार करते हैं। **पानाँ**–पान।

(४) **तिस तिस**–तीस तीस। **गुवा**–सुपारी।

(५) **मेराई**–मिलाई। **मोंति क चून**–सीपीका बना चूना।

(७) **जोवँहि**–जोहते हैं; प्रतीक्षा करते हैं।

२४९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सभा जानु[1] फूली फुलवारी। कुँवर बैठि[2] खाँडै रन[3] भारी॥१
सुन्दर खतरी[4] बीर अपारा। गजपति बैठे भौंह निहारा॥२
हेंवरपति बैठे बहु भारी[5]। नरपति गिनत न[6] आउ[7] उन्हारी॥३
औ भूपति[8] बहु बैठे[9] ताहीं[10]। आपु आपु मँह बाद कराहीं[11]॥४
झगराहि नरपति[12] पाँयहि लागे[13]। कहहिं न काहू भागहिं[14] आगे[15]॥५
कुँवर चक्कवइ खतरी[16] जोधा[17], सूरन[18] मँह बड़ सूर।६
पँवरि बारि[19] तिंह[20] बाजै अहिनिसि[21], दान जूझ कर तूर॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) जनु; (बी०) जानहु। २–(ए०, बी०) बैठ। ३–(ए०) पति। ४–(ए०, बी०) खत्री। ५–(दि०) भाँती। ६–(बी०) गनत न; (ए०) गनपति। ७–(ए०, बी०) आव। ८–(ए०, बी०) भुवपति। ९–(बी०) बैठे हैं। १०–(बी०) तहाँ। ११–(बी०) आपु आपु कहुँ वादै कहा। १२–(ए०, बी०) नै पति। १३–(ए०) पतन्ह लागे; (बी०) बानैत बान लागी। १४–(बी०) भाजहिं। १५–(ए०, बी०) आगी। १६–(ए०, बी०) खत्री। १७–(ए०, बी०) ×। १८–(ए०, बी०) सूरन्ह। १९–(ए०, बी०) पँवरी बार। २०–(ए०) उठि; (बी०)। उन्ह। २१–(ए०) ×।

टिप्पणी—(२) **गजपति**–मध्यकालीन, राजाओंकी एक उपाधि (देखिये नीचे ३)।

(३) **हेंवरपति**–अश्वपति। अश्वपति, गजपति, नरपति, इन उपाधियोंका उल्लेख प्रायः मध्यकालीन शिलालेखों और ताम्रपत्रोंमें मिलता है। यथा—परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर परममाहेश्वर-त्रिकलिंगाधिपति निजभुजो-पार्जिताश्वपति गजपति नरपति राजत्रयाधिपति कर्णदेव (चेदिनरेश कर्णका

१०४७ ई० का गुहरवा लेख)। इन उपाधियोका प्रयोग चन्देल, गहड़वाल, हैहय और सेनवशी राजाओके लेखोमे भी मिलता है। किन्तु इनका मूल तात्पर्य क्या था इसपर किसीने अबतक प्रकाश डालनेका प्रयास नही किया है।

(४) वाद–विवाद, बहस।

(५) झगरहि–लडते है। पाँयहि लागे–पैर छूनेके लिए।

(६) चक्कवइ–चक्रवर्ती। खतरी–क्षत्रिय। जोधा–योद्धा। सूरन मँह–शूरोमें।

(७) पँवरि बारि–प्रवेश द्वार। अहि-निसि–दिनरात। तूर–एक प्रकार का उद्घोषक वाद्य; तुरही।

२५०

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कुँवर पान दै सभा बहोरी। चुनि चुनि राखिसि आपन जोरी ॥१
कँहहि[1] नाच तुम्ह[2] देखहु आजू। माँगिसि[3] सब नटसार का[4] साजू ॥२
नटुवा पतुरीं[5] नायक[6] आय। आय[7] पखाउजि[8] सबद सुहाये[9] ॥३
आय[10] उपागी नाद जो दहीं। ताल गंभीर नाँउ[11] सा[12] लहीं ॥४
जन्त्रकार[13] गर सुर[14] जो गावँहि। ब्रह्मबीन[15] सुरबीन[16] बजावँहि ॥५
सबदसुरा सुरमण्डल[17] ओधूती[18], रुद्रबीन[19] लै आइ[20] ।६
बाँस पिनाक[21] सारंगी[22], माँदर[23] काहल सबद सुहाइ[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कहिसि। २–(ए०) तोह। ३–(बी०) माँगहि ४–(ए०) क; (बी०) के। ५–(ए०) पतरै; (बी०) पत्रै। ६–(बी०) कछिके। ७–(बी०) आय। ८–(ए०) पखाउज; (बी०) पखाउजी ९–(ए०, बी०) सोहाये। १०–(बी०) आय। ११–(बी०) ताउ। १२–(बी०) सेउ, (ए०) सिउ। १३–(ए०) जत्रकाल। १४–(ए०) कर सुसर; (बी०) औ सुसर। १५–(ए०, बी०) बर्मवेनु। १६–(बी०) सर बैनु; (ए०) सर बीनु। १७–(ए०) सरासर मण्डल, (बी०) सरिसर मन्द्र। १८–(ए०) अधूती, (बी०) अधौटी। १९–(ए०) रुद्रबेनु, (बी०) रुद्रबैन। २०–(ए०) आए; (बी०) टंकारि। २१–(ए०) उपाग। २२–(ए०) सरंगी। २३–(ए०) ×; गहुली बाँस पिनकि सरगी। २४–(ए०) काह लगा सोहाय, (बी०) औ सब बाजन झारि।

टिप्पणी—(१) बहोरी–विसर्जित किया। जोरी–जोड़ी; साथी।

(२) मांगिसि–माँगा। नटसार–नाट्यशाला। साजू–सज्जा।

(३) नटुवा–नट; अभिनेता। पतुरीं–वेश्या। नायक–नाट्य-नृत्यके प्रधान। पखाउजि–पखावज बजानेवाले। पखावज मृदंगका एक रूप है जो आकृतिमे उससे कुछ लम्बा होता है। इसका चलन उत्तर भारतमे है। मृदगका प्रचार दक्षिणमें है।

(४) **उपांगी**–उपाग बजानेवाले। उपाग नभतरंगका नाम है। यह तुरहीके आकारका होता था और गलेपर लगा कर नसोंको फुलाकर बजाया जाता था। मथुरा-वृन्दावनकी ओर इसका विशेष प्रचार था। (टी० ए० मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चरर्स आव इण्डिया, पृ० ९५)।

(५) **जन्त्रकार**–जन्त्र नामक वाद्य बजानेवाले। जन्त्र नामक वाद्यमें गज भर लम्बी लकडीकी खोखली नलीके दोनों सिरोंपर तूँबेके अधकटे भाग लगे होते हैं और गर्दनपर सोलह खूँटियाँ होती है जिनमे लोहेके पाँच तार लगे होते हैं। खूँटियो द्वारा स्वरोका उतार-चढ़ाव किया जाता है। **गर**–गला। **ब्रह्मबीन**–वीणाका एक प्रकार। **सुरबीन**–वीणाका प्रकार।

(६) **सबदसुरा**–कोई वाद्य। **सुरमण्डल**–(स० स्वरमण्डल) यह प्राचीन कात्यायनी वीणा या शततन्त्री वीणाका रूप है। कल्लिनाथके कथनानुसार स्वरमण्डल मत्तकोकिला वीणाका नाम है। संगीत-रत्नाकरमे २१ तारोवाली वीणाको मत्तकोकिला कहा गया है। पोपलीकी धारणा है कि कानून नामक ईरानी वाद्य, जिसमे ३७ तार होते है, स्वरमण्डलका ही रूप है। वे अंगरेजी पियानोको भी स्वरमण्डलका ही विकसित रुप मानते हैं। (म्यूजिक आव इण्डिया, पृ० ११६)। चित्रावलीमे सुरमण्डलमे बत्तीस तार कहे गये है (सुरमण्डल तहँ अपुरुब दीसा। एक सरासन पहुँच बतीसा॥ ७२।५)। यह मिजराब द्वारा बजाया जाता है। **औधूती**-कोई वाद्य। **रुद्रबीन**–प्राचीन रुद्रबीनका आधुनिक नाम रबाब है। (मुखर्जी, आर्ट मैन्यूफैक्चर्स आव इण्डिया, पृ० ८२) जो स्पेनमे रेबेक कहलाता है। वायलिनका विकास भी इसीसे हुआ है। रुद्रवीणामे सात तार तथा बाइस पर्दे होते हैं, यह दो तूँबीवाली वीणा है। इसमे किनारेकी ओर मयूरकी आकृति होती है।

(७) **बाँप**–बाँसुरी। **पिनाँक**–यह अत्यन्त प्राचीन वाद्य है। कहा जाता है कि इसका आविष्कार शिवने किया था। यह तारोंवाला बाजा है जो चाप या धनुहीसे बजाया जाता है। **सारंगी**–लोक-प्रसिद्ध वाद्य जो धनुष द्वारा बजाया जाता है। **माँदर**–एक प्रकारका मृदग। **काहल**–वाद्य विशेष।

२५१

(दिल्ली, बीकानेर)

बाजे साज़[1] सबद सब[2] थापे। छवौ सपूरन राग अलापे ॥१
औ [जो तीसो][3] भारजा अहीं[4]। एक एक रागहिं[5] पँच पँच[6] गहीं ॥२
प्रथम[7] नाद एक उन्ह[8] किया। भैरों बहुरि अलापैं लिया ॥३
मधुमाधो[9] मँधुरा[10] अलापी। बंगला बैराटिक[11] थापी ॥४
औ गुनकरी सँपूरन गाई[12]। यहि[13] भारजा भैरों आई[14] ॥५

भैरो पंच बरंका[१५], गायहिं[१६] सबै सपूर[१७] ।६
फिर[१८] मालकोस क अलापहिं, जिह क नाँव[२०] [बड़ि दूर[२१]] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–× । २–जहाँ लहु । ३–(दि०) छत्तीस । ४–(दि०) आही । ५–राग । ६–पाँच पाँच । ७–प्रथमहि । ८–उन । ९–मधुमाधवी । १०–ऐसोधरी, ११–बंगाल वर त्रोटक । १२–भई । १३–यहै । १४–अई । १५–भैरौ पाँच बार गन । १६–गाइन्हि । १७–सपूरी । १८–बहुरि । १९–अलापिन्ही सुधिसै । २०–जिन्ह कान है । २१–(दि०) बड़वार ।

टिप्पणी—(१) **साज**—वाद्य । **सबद**—नाद । **थापे**—चोट किया । **सपूरन**—सम्पूर्ण । **छवो राग**—छ राग । भारतीय सगीत शास्त्रमे रागोंका सर्वप्रथम उल्लेख मातगमुनि कृत वृहद्देशीमे मिलता है। इसकी रचना कालके सम्बन्धमे निश्चित रूपसे कुछ कहा नही जा सकता । कुछ विद्वानोका अनुमान है कि यह चौथी और सातवी शताब्दीके बीच किसी समय लिखा गया, पर कुछ लोग उसे नवी शताब्दीसे पूर्वकी रचना नही मानते । इस ग्रन्थमे सात प्रकारके गीतोका उल्लेख है और उनमे एक प्रकारके गीतका नाम राग-गीत बताया गया है । बारहवी शताब्दीमे मानसोल्लासके सुविख्यात रचयिता सोमेश्वरने सगीत-रत्नावली नामसे एक सगीत-ग्रन्थ लिखा था । उसमे आठ रागोका उल्लेख है । इनमे इन रागोके अतिरिक्त सगीतके अन्य बहुतसे रूपोकी चर्चा है जो आगे चलकर रागिनियो अथवा रागोके भार्यायोके नामसे पुकारी गयी । राग-रागिनियो सरीखा भेद सर्वप्रथम सगीत-मकरन्दमे प्रकट होता है । इसे नारद रचित कहा जाता है । अनुमान है कि यह सातवी और ग्यारहवी शतीके बीच किसी समयकी रचना है । इस ग्रन्थमे रागोके तीन भेद कहे गये है–पुलिंग-राग, स्त्री-राग और नपुसक-राग । बताया गया है कि रौद्र, अद्‌भुत और वीर रसके उद्‌बोधनके लिए पुलिग-राग, शृगार, हास्य और करूण रसके उद्‌बोधनके लिए स्त्री-रागका और भयानक, वीभत्स तथा शान्त रसके उद्‌बोधनके लिए नपुसक-रागका उपयोग किया जाना चाहिए । इस भेदके साथ इस ग्रन्थमे २० पुलिंग, २४ स्त्री और १३ नपुंसक रागोकी सूची दी गयी है । इनके अतिरिक्त, सगीत-मकरन्दमें राग-रागिनियोकी उस परिपाटीकी भी चर्चा है जिसमे छ राग माने गये है । इनके सम्बन्धमे कहा गया है कि इनकी उत्पत्ति शिव और शक्तिसे हुई है । शिवके पाँच मुखोसे श्रीराग, बसन्तराग, भैरवराग, पंचमराग, और मेघरागकी तथा पार्वतीके मुखसे नटनारायण-रागकी उत्पत्ति हुई । रागोकी यह नामावली सोमेश्वर देवके राग-दर्पण (बारहवीं शताब्दी) मे भी उपलब्ध है । किन्तु इसके बादके सगीत-ग्रन्थोमे रागोकी नामावलियोमे काफी भेद पाया जाता है । उदाहरणतः चौदहवी शतीमे रचित रागार्णवमें छ रागोंके नाम हैं–भैरव, पचम, नट,

मलार, गौड़मालव और देशाख। पन्द्रहवीं शतीके पूर्वार्द्धमे रचित नारद कृत पंचम-संहितामे इनके नाम मालव, मल्लार, श्रीराग, बसन्त, हिंडोल, और कर्णाट बताये गये हैं। उसी शतीके उत्तरार्धमे हुए संगीत-शास्त्री कल्लीनाथ-के अनुसार रागोके नाम है—श्रीराग, पचम, भैरव, मेघ, नटनारायण और बसन्त। सोलहवीं शतीके आरम्भकी रचना मेषकर्ण कृत रागमालामे रागोकी नामावली इस प्रकार है-भैरव, मालकौशिक, हिंडोल, दीपक, श्रीराग और मेघराग। कुतुबनने रागोके नामके लिए मेषकर्ण की सूची अपनायी है और उसीके क्रमसे रागोकी इस तथा आगेके कडवकोंमे उल्लेख किया है।

(२) **तीस भारजा** (भार्या)—उपर्युक्त प्रत्येक रागकी पॉच-पॉच भार्याओ, इस प्रकार तीस रागिनियोका भी उल्लेख कुतबनने किया है। उन्हींकी तरह अधिकाश संगीत-ग्रन्थोंमे तीस रागिनियोका उल्लेख मिलता है पर कहीं-कही छत्तीस रागिनियोंकी भी चर्चा पायी जाती है। सगीत ग्रन्थोमे रागोंकी तरह ही रागोके साथ रागिनियोके भार्या-सम्बन्धमे भी काफी मतभेद पाया जाता है। एक ही रागिनीको लोगोने एक दूसरेसे भिन्न राग की भार्या बताया है। कुतबनने संगीत-शास्त्रकी किस परम्पराके अनुसार अपनी भार्या-सूची प्रस्तुतकी की है, नही कहा जा सकता। उनकी सूची सगीत-शास्त्रोंकी किसी ज्ञात सूचीसे मेल नही खाती। यही नही, उनके कहे भार्या सम्बन्धमेसे अनेकका किसी सूत्रसे समर्थन भी नही होता। इस प्रकार उन्होने किसी अज्ञात परम्पराकी नयी सूची प्रस्तुत की है।

(३) **भैरों** (भैरव)—इस रागका सम्बन्ध शैव सम्प्रदायसे माना जाता है। ऐसा अनुमान किया जाता है कि यह मूलतः आश्विन मासमे शैव सम्प्रदायके किसी विशेष उत्सवके अवसरपर गाया जानेवाला संगीत था। संगीतज्ञ अब इसे शरद ऋतुका सगीत मानते है। रागोका सम्बन्ध ऋतुके साथ तो माना ही जाता है; साथ ही उनका सम्बन्ध समयके साथ भी जोडा गया है। तदनुसार भैरव राग ब्राह्म मुहूर्त (सूर्योदयसे पूर्व) का राग है। किन्तु कुतुबनके उल्लेखसे इस प्रकारकी कोई बात प्रकट नही होती।

(४) **मधुमाधो** (मधु माधवी)—भैरवकी भार्याके रूपमे मधुमाधवीका उल्लेख अन्यत्र हमे सर्वप्रथम राधाकृष्ण कवि रचित रागकूतूहल (१८५३ वि०—१७.१ ई०) मे प्राप्त होता है। इससे पूर्व किसीने इसे भैरवकी भार्या बताया है, हमे ज्ञात नही। यो इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पण (११३१ ई० के लगभग) मे मिलता है। वहॉ इसे श्रीरागकी भार्या कहा गया है। यह रागिनी सूर्योदयके उपरान्त प्रारम्भिक तीन पहरो-मे गेय कही गयी है। **मॅधुरा** (मधुरा)—इस नामकी रागिनीका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमे हमे कही प्राप्त न हो सका। मधुराका उल्लेख कल्ली-

नाथ (१४६० ई०) ने मेघरागकी भार्याके रूपमें किया है। यह रागिनी किस समय गायी जाती है, इसका उल्लेख भी हमे कही नहीं मिला। **बंगला**—अधिकाश सगीतशास्त्रियोने इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमे किया है, और इस आशयका प्राचीनतम उल्लेख सोमेश्वरदेवके रागदर्पण-मे है। किन्तु कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। **बैराटिक**–इसका उल्लेख बराटी अथवा बैराटीके रूपमे संगीत-शास्त्रमे मिलता है। भैरवकी भार्याके रूपमे बैराटीका उल्लेख हनुमान–सम्प्रदायके सगीतकारोने किया है। हनुमानके समयके सम्बन्धमे कुछ कहा नही जा सकता। आजनेय (हनुमान) नामक सगीत-शास्त्रीका उल्लेख अभिनवगुप्त (१०३० ई०), सारगदेव (११४७ ई०), शारदा-तनय (१२५० ई०) और कल्लीनाथ (१४६० ई०) ने किया है; किन्तु इनका कोई ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। सम्भव है कुतुबनने इसी सम्प्रदायका अनुकरण करते हुए इसे भैरवकी भार्या कहा हो। अन्यथा बैराटीका उल्लेख आचार्य मम्मट (सम्भवतः ग्यारहवी शतीके प्रख्यात काव्यमर्मज्ञ काव्य-प्रकाशके रचयिता) के सगीतरत्नमालामे देशाखकी, सोमोश्वरदेवके राग–दर्पणमे बसन्तरागकी, रागार्णवके साक्ष्यसे शारगधर-पद्धति (१३६३ ई०) मे पंचमकी और मेषकर्ण कृत रागमाला (१७६१ ई०) मे श्रीरागकी भार्याके रूपमे मिलता है। पुण्डरीक विट्ठलने अपनी रागमालामे इसे सदा गेय बताया है।

(५) **गुनकरी**–भैरवकी भार्याके रूपमे इसका उल्लेख गीतशास्त्रोमे बारहवीं शताब्दीसे ही पाया जाता है। किन्तु सर्वत्र इसका उल्लेख भैरवकी भार्याके रूपमे ही हो, ऐसा नहीं है। पुण्डरीक विट्ठलने इसको श्रीरागकी भार्या कहा है। यह प्रातःकालीन (प्रथम पहर) की रागिनी है।

(७) **मालकोस**–यह राग है और इसका प्राचीन नाम मालव-कौशिक है। इसका सम्बन्ध मालव देशसे समझा जाता है। यह किस ऋतु अथवा किस समय-का राग है इसका स्पष्ट उल्लेख किसी सगीत ग्रन्थमे मुझे प्राप्त न हो सका। मातंग (५-७ शताब्दी ई०) ने वृहद्देशीमें इसका उल्लेख मालव-कौशिक नामसे भाषा गीतके रूपमे किया है। मालव रागका उल्लेख मम्मटने संगीत रत्नमाला, नारद और दत्तिलने राग-सागर, नारदने पंचमसंहितामे और कौशिक नामक रागका उल्लेख नारदने चत्वारिंशत्रागनिरूपणम्मे किया है। सम्भवतः इन सबका तात्पर्य मालकोससे ही है। मालकौशिक नामसे इस रागका उल्लेख सर्वप्रथम मेषकर्णकी रागमालामे है जो सोलहवी शतीके आरम्भकी रचना है। इनके अनन्तर परवर्ती सगीत शास्त्रोंमे इसकी प्रायः चर्चा है पर कुछ ही ने इसकी गणना छ रागोंमे की है।

२५२

(दिल्ली; बीकानेर)

[वहि*[1]] अलाप भारजा अलापी[2]। वइ[3] पाँचो[4] सुद्ध सेउँ[5] थापी[6] ॥१
गौरी देवकली[7] औ टोड़ी। कँकुभ[8] खंभावती[9] न[10] छोड़ी ॥२
फिर[11] हिंडोल क[12] आयउ बारा[13]। पाँच भारजा साथ उभारा[14] ॥३
बैरारी विचित्र अलापी। औ देसाख नाँटाँ वै[15] थापी ॥४
सहजकथा औ देसी[16] जो गाई। पाँचहु साथ हिंडोल[17] कराई ॥५
एक न दीपक[18] गायहिं[19] जानत[20], जिह[21] गाये है दोख ।६
गायहिं[22] पँच[23] बरंका[24] जिह कहँ आहे[25] मोंख ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–वाहि । २–अलापिन्हि । ३–औ । ४–पाँचो ऊ । ५–सुधि सै । ६–थापिन्हि । ७–गुन करी । ८–गुनकह । ९–(दि०) कंभावती । १०–नहिं । ११–बहुरि । १२–कर । १३–आयेउ पारा । १४–उचारा । १५–नटी क । १६–साजक तार नट । १७–हिदोल । १८–दीपग । १९–गाइन्हि । २०–जन तेहि । २१–जेहि । २२–गाइन्ह । २३–पाँच । २४–भारजा । २५–जेहि गाये है ।

टिप्पणी—(२) गौरी–सम्भवतः यह गौडीका रूप है और इसका सम्बन्ध गौडे देशसे है । आरम्भकालिक प्रायः सभी सगीत शास्त्रियोंने इसे श्रीरागकी भार्या बताया है । मालकोशकी भार्याके रूपमे गौरीका सर्वप्रथम उल्लेख भावभट्ट (१९७४ वि— १७०१ ई०) के अनूपसगीत ाकुशमे मिलता है । परवर्ती सगीत ग्रन्थोमे प्रायः मालकोशके भार्याके रूपमे ही इसका उल्लेख हुआ है । किन्तु पुरुषोत्तम मिश्र (१७३० ई०) ने सगीतनारायणमे इसे मेघरागकी भार्या बताया है । यह सन्ध्याकालीन रागिनी कही गयी है । देवकली–सगीतशास्त्रोंमे सम्भवतः इसके ही देवगिरि, देवक्रिया, देवश्री रूप पाये जाते हैं । भैरव, मेघ, बसन्त, हिण्डोल, अथवा शुद्धनाटकी भार्याके रूपमे इसका उल्लेख विभिन्न सगीत शास्त्रोमे पाया जाता है । इसे कही भी मालकोसकी भार्या नहीं कहा गया है । अतः इसके अपपाठ होनेका अनुमान किया जा सकता है । बीकानेर प्रतिमे इसके स्थानपर गुनकरीका नाम दिया हुआ है और कुछ परवर्ती ग्रन्थामे गुनकलीका नाम मालकोशकी भार्याके रूपमे आया है । इससे इस धारणाकी पुष्टि भी होती है । किन्तु गुनकरीका नाम कुतुबनने भैरवकी भार्याके रूपमे पहले ही किया है । अतः इस पाठान्तरको स्वीकार करना कठिन है । ऐसी अवस्थामे यही मानना होगा कि देवकली ही कुतुबनका मूल पाठ है । वे देवकलीको मालकोशकी भार्या कहनेवाले एकाकी है । टोड़ी–इसके टुण्डी, टुडिका, टोड़िका, टुडी आदि अनेक नाम देखनेमे

आते है । मालकोशकी भार्याके रूपमे इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत चत्वारिंच्छत्रागनिरूपणम् (१५२५-१५५० ई०) मे मिलता है। इससे पूर्वके सगीतग्रन्थोमे यह विविध रागो, यथा—पटमजरी, नाट, बसन्त, दीपक, हिडोलकी भार्या बतायी गयी है। इसकी गणना प्रातः कालीन रागिनियोमे की जाती है। **कँकुभ** (ककुभ)–ओ० सी० गागुली का अनुमान है कि इस रागिनीके नामके मूलमे ककुभ नामक वह ग्राम है, जो देवरिया (उत्तरप्रदेश) मे सलेमपुर-मझौलीके निकट स्थित था और आज कल कहॉव कहलाता है। वहॉसे सम्राट् स्कन्दगुप्तका एक स्तम्भ-लेख प्राप्त हुआ है जिसमे इस ग्रामको "ख्यातेस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैः साधु ससर्ग पूते" कहा गया है। इससे अनुमान होता है कि गुप्त-काल मे यह ग्राम अवश्य ही महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक केन्द्र रहा होगा। यदि उस कालमे वहॉ इस रागिनीका विकास हुआ हो तो कोई आश्चर्यकी बात न होगी। यो भी, यह रागिनी काफी प्राचीन है, यह मातंग (५-७ शती ई० के बीच) कृत वृहद्देशीसे सिद्ध है। उसमे ककुभका उल्लेख साधारण गीतिके रूपमे किया गया है। तदनन्तर ककुभा नामसे इसका उल्लेख सन्धिरागके रूपमे नाट्यलोचन (८५०-१००० ई०) मे हुआ है। सारगदेव (१२१०-१२४७ ई०) ने सगीत-रत्नाकरमे इसकी गणना साधारित रागोमे की है और इसका सम्बन्ध षडज और मध्यम दोनो ग्रामोसे बताया है। राग-भार्याके रूपमे इसका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लिनाथ (१४६० ई०) ने किया है। उन्होने इसे पंचम रागकी भार्या बताया है। इसे माल्कोसकी भार्या माननेवाले सगीत-शास्त्री एक-आध ही हैं। इस रूपमे इसका प्राचीनतम उल्लेख भावभट्ट (१६७४-१७०१ ई०) के अनूपसगीताकुशमे जान प्रडता है। **खम्भावती**–इस नामके मूलमे सम्भवतः गुजरातका खम्भात नामक नगर है जो अपनी समृद्धि और व्यवसायके लिए चिरकालसे प्रसिद्ध रहा है। इस रागिनीका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमे, सन्धिरागके रूपमे हुआ है। तदनन्तर पार्श्वदेव (१२५० ई०) कृत समयसारमे उपागोकी सूचीमे षाडवके अन्तर्गत इसका नाम आया है। लोचन-कवि (१३७५ ई०) ने अपने रागतरगिणीमे १२ मेलो (मूल रागो) की जो चर्चा की है, उसमे केदारके अन्तर्गत जन्यरागके रूपमे खम्भावतीका उल्लेख किया है। राग-भार्या के रूपमे इसका सर्वप्रथम उल्लेख चतुर्विंशच्छत्-रागनिरूपणम् मे मिलता है। वहॉ उसे पंचमरागकी भार्या कहा गया है। मालकौशिककी भार्याके रूपमे पहला उल्लेख भावभट्टके अनूपसगीताकुशमे है।

(३) **हिंडोल**—राग-गीतिके रूपमे हिंडोलककी चर्चा सर्वप्रथम मातग कृत वृहद्देशी-मे, जो ४थी-७वी शताब्दीके बीचकी रचना है, प्राप्त है। तदनन्तर सोमेश्वर कृत मानसोल्लासमे रागोकी जो सूची है, उसमे आठ रागोमे हिंडोलका भी

उल्लेख है। इस प्रकार यह प्राचीन रागोमे है; फिर भी छ रागोंकी जो सूची विभिन्न संगीत-ग्रन्थोमे मिलती है, उसमेसे कुछमे ही इसका उल्लेख है। इसके सम्बन्धमे धारणा है कि आरम्भमे यह आदिम अनार्योंके झूलेसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी आनन्दोत्सवका सगीत रहा होगा। पीछे चलकर लोगोने इसका सम्बन्ध दोलोत्सव अथवा डोल-यात्रा तथा राधा-कृष्ण सम्बन्धी झूलेके उत्सवसे, जो श्रावणके महीनेमे होता है और उत्तर भारतमें अति प्रच-लित है, जोड़ लिया।

(४) **बैरारी**–(बैराटी) सम्भवतः इसका सम्बन्ध बरार अथवा प्राचीन विराट्-राज्य से है, जिसका उल्लेख महाभारतमे हुआ है। बराटी नामसे इसका सर्व प्रथम उल्लेख मम्मट कृत सगीत-रत्नमालामे है। वहाँ इसे देशाखकी भार्या कहा गया है। सोमेश्वरदेवने रागदर्पणमे बराटीको बसन्त रागकी भार्या बताया है। तेरहवी शती रचित रागार्णवके आधारपर उससे कुछ पीछेकी रचना शारगधर-पद्धतिमे बराटीको पचमकी भार्या कहा गया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमे सर्वप्रथम उल्लेख बराडी नाम से नारद कृत पंचमसहिता (१४४० ई०) मे हुआ है। बैरारी नामका सर्वप्रथम उल्लेख कल्लीनाथने पचमकी भार्याके रूपमे किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमे इसका उल्लेख अन्यत्र कही देखनेमे नही आया। **देसाख**–सगीत ग्रन्थोमे इसका देसाख्य रूप भी देखनेमें आता है। इसके मूलके सम्बन्धमे किसी प्रकारका अनुमान सम्भव नही है। देसाग नामसे एक सालक रागका उल्लेख नाट्यलोचनमे हुआ है। यदि देसाग और देसाख एक ही है तो यह इसका प्राचीनतम उल्लेख है। राजा नान्यदेव कृत सरस्वती-हृदयालंकार (१०९७-११५४ ई०) मे देशाख्यकी चर्चा मुख्य भाषा-गीतोमे है। राग-भार्याके रूपमे सर्वप्रथम कल्लीनाथने इसका उल्लेख देवसाग (देवशाख) नामसे किया है और इसे बसन्त रागकी भार्या कहा है। पुण्डरीक विट्ठलकी रागमालामे यह देसाक्षी नामसे शुद्धनाटकी भार्या कही गयी है। चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणम्मे इसका उल्लेख कौशिककी भार्याके रूपमे है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमे देशाक्षीका उल्लेख सर्वप्रथम भावभट्टने अनूप-संगीतालंकारमे किया है। इसके अनन्तर ही इस रूपमे इसका उल्लेख कुछ संगीत-ग्रन्थोमे मिलता है। **नाँटा**–बीकानेर प्रतिमे पाठ नटी है। नट, नाट, नाटनारायण नामके राग और नट तथा नाटिका नामकी रागिनीका उल्लेख सगीत ग्रन्थोमे मिलता है। रागिनी रूपमे सम्भवतः यहाँ नट अथवा नाटिकासे ही तात्पर्य है। किन्तु राग-रागिनियोकी किसी भी सूचीमे इन दोनोकी चर्चा हिण्डोलकी भार्याके रूपमे नही है। उसे सर्वत्र नटनारायण, दीपक अथवा भैरवकी ही भार्या कहा गया है।

(५) **सहजकथा**–इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख किसी संगीतग्रन्थमे उपलब्ध

नही है। अतः कहना कठिन है कि इस नामकी कोई रागिनी रही है। **देसी**–यह नाम किसी स्थानिक संगीतके लिए प्रयुक्त होकर ही प्रचलित हुआ होगा; किन्तु इसका अभिप्राय किस स्थानसे है, अनुमान करना कठिन है। इतना ही कहा जा सकता है कि राग-रागिनियोके प्रसंगमे इस नामका प्रचलन काफी पुराना है। नारद कृत संगीतमकरन्द (७-९ शती ई०) मे सर्वप्रथम इसका उल्लेख पडमजरीके उपरागके रूपमे हुआ है। मम्मटने इसे मलारकी भार्या कहा है। सोमेश्वरदेव इसे बसन्तकी भार्या मानते है। रागार्णवके अनुसार यह पंचमकी भार्या है। हिण्डोलकी भार्याके रूपमे देसी-का उल्लेख केवल चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणमूमे है। यह मध्याह्नकी रागिनी है।

(६) **दीपक**–दीपक-रागका सर्वप्रथम उल्लेख पार्श्वदेव कृत संगीत समय-सार (लगभग १२५० ई०)मे रागागोंके रूपमे हुआ है। तदनन्तर नारद कृत पचम सहिता (१४४० ई०) मे हिडोलकी भार्याके रूपमे दीपिका नामक रागिनीका उल्लेख मिलता है। राग-परिवारमे रागके रूपमे दीपकका उलेख सर्वप्रथम मेषकर्णने रागमाला (१५०९ ई०) में किया है। किन्तु सभी राग-सूचीमे इसका नाम नही मिलता। कुतुबनने इसके गानेमे दोष माना है। इससे जान पडता है कि इस कालतक यह निषिद्ध राग था। पीछे सम्भवतः यह बात नहीं रही। तानसेन द्वारा इसके गाये जानेका उल्लेख मिलता है।

२५३

(दिल्ली; बीकानेर)

परसिचन्द[1] **कामोदक[2] देसी। पटमंजरी** कराकेसी[3] ॥१
यै[4] दीपक भारजा बखानी। मेघराग से चौकर[5] आनी ॥२
मालसिरी सारंग बरारी[6]**। धनासिरी औ कही गंधारी[7]** ॥३
मेघराग उन्ह[8] पाँचहि माँथा[9]। कीन्ह अलाप[10] एकहि साथा ॥४
खस्टम स्रीराग उन्ह किया। ऊँच अैलापहिं सुध सेउ[11] लिया ॥५
हेमकली[12] मलार गूँजरी, भीउपलासी[13] कीन्ह ।६
स्रीराग कै यै भारजा, कहौं राग कै[14] चीन्ह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–नीरस चीद। २–कमोदकर। ३–को रे कहेसी। ४–ए। ५–से एकरि। ६–बैरारी। ७–(दि०) आउ यहै अँधियारी। ८–उनि। ९–पचम थापा। १०–गहि अलापिन्हि। ११–अलापै उनि सुधि सै। १२–हेमकरी। १३–भीमपाली। १४–जो कहि तू गहि।

टिप्पणी—(१) **परसिचन्द**–इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख सगीतग्रन्थोंमे उपलब्ध नहीं है। सम्भव है यह अपपाठ हो। **कामोदक**–इस रागिनीका

नामकरण कुमुद नामक पुष्पपर हुआ जान पडता है। इसकी गणना प्रात.कालीन रागिनियोमे की जाती है। नाट्यलोचनमे इसे सन्धि राग कहा गया है। भार्या-परम्परामे इसका उल्लेख सर्वप्रथम नारद कृत सगीत-मकरन्दमे है। वहाँ इसे पचम रागकी भार्या कहा गया है। रागदर्पणमे सोमेश्वरदेवने नटनारायणको, रागार्णवमे देसाखकी, नारदने पच सहितामे कर्णाटकी, कल्लिनाथने मेघकी भार्या कहा है। दीपककी भार्याके रूपमे सर्वप्रथम उल्लेख मेषकर्णकी रागमालामे प्राप्त है। किन्तु छ रागोके अन्तर्गत दीपककी गणना करनेवाले सगीतग्रन्थोमेसे अधिकाशमे कामोदकका उल्लेख उसकी भार्याके रूपमे नही मिलता। देसी— इसका उल्लख पूर्ववर्ती कडवकमे हिण्डालकी भार्याके रूपम हा चुका है। यहाँ दीपकरागकी भार्याके रूपम पुनः उल्लख सन्दह उत्पन्न करता है। कुतुबनने कदापि एक ही रागिनीका दो रागोकी भार्याक रूपमे उल्लेख न किया होगा। किन्तु उन्होने इसका उल्लेख वस्तुत. किस रागके साथ किया है ओर कौन-सा पाठ दोषजानत उल्लेख है, कहना सुगम नही है। दीपककी भायाके रूपमे देसाका उल्लेख हनुमानके अनुयायी सगातज्ञोने किया है। हिण्डोलकी भार्याके रूपम बीकानेर प्रातम दसीके स्थानपर नट पाठ है। ओर नटाका भी वहाँ पूर्व पात्त.म उल्लेख है। इस कारण नट पाठ यहाँ ग्राह्य न होगा। इस बातकी सम्भावना हो सकती है कि वहाँ कोई भिन्न नाम रहा हो। कराकेसाके साथ देसी का ही तुक होनेसे यहाँ किसी अन्य नामकी कल्पना भी नही की जा सकती। किन्तु कराकेसी पाठ भी सदिग्ध है। **पटमंजरी**—इस नामके सम्बन्धमे धारणा है कि इसका मूल नाम प्रथम-मजरी था और बसन्त ऋतुके साथ इसका सम्बन्ध था। यह किसी भी समय गेय है। मातगके बृहद्देशीमे इसकी गणना भाषा गीतोमे की गयी है और इसका सम्बन्ध हिण्डोलक रागसे बताया गया है। नारदने सगीतमकरन्दमे पदमजरी नामसे रागके रूपमे इसका उल्लेख किया है। रागिनीके रूपमें पटमञ्जरी नामसे सर्वप्रथम उल्लेख मम्मटने सगीतरत्नमाला मे किया है। उसका सम्बन्ध उन्होने मलारसे माना है। सोमेश्वरने इसे पंचमकी, पचमसंहितामे नारदने बसन्तकी, पुण्डरीक विट्ठलने हिण्डोलकी भार्या माना है। ब्रिटिश संग्रहालय, लन्दनकी रागमाला चित्रावलीमे इसका अंकन भैरवकी भार्याके रूपमे हुआ है। केवल मेषकर्ण कृत रागमालामें इसकी चर्चा दीपककी भार्याके रूपमे प्राप्त है। **कराकेसी**—इस नामकी किसी रागिनीका उल्लेख कहीं प्राप्त नहीं है। सम्भवतः यह भ्रष्ट पाठ है।

(२) **मेघराग**—जैसा कि यह नामसे ही स्पष्ट है यह वर्षाऋतु का राग है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख सोमेश्वरदेव कृत रागदर्पणमे है।

(३) **मालसिरी** (मालश्री)—सम्भवतः इसका मूलरूप मालवश्री है। इस रूपमे

यह मम्मट कृत सगीतरत्नमालामे कर्णाटकी रागिनी कही गयी है। सोमेश्वरदेवने मालश्रीका उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमे किया है। नारद (पंचमसहिता) ने इसको मालवकी, मेषकर्णने मालकोशकी, पुण्डरीक विट्ठलने शुद्धनाटकी और चत्वारिंशच्छत्-राग-निरूपणम्ने हसककी भार्या बताया है। ब्रिटिश सग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमे इसका भैरवकी भार्याके रूपमे अकन है। इस प्रकार किसी भी संगीत ग्रन्थमे इसका सम्बन्ध मेघरागसे नही जोडा गया है। पुरुषोत्तम मिश्रने, जो गजपति वंशीय नारायणदेव (१७३० ई०) के राजकवि थे, सगीतनारायण नामक ग्रन्थ लिखा है। इसकी जो उपलब्ध प्रति बगालके एशियाटिक सोसाइटीमे है, वह काफी भ्रष्ट और अपाठ्य है। इसमे मालवश्री और मालसी नामक दो रागिनियोका उल्लेख है। उसमे मालवश्रीको श्रीरागकी और मालशीको मेघरागकी भार्या बताया गया है। यदि मालशी मालश्रीका अपपाठ हो तो यही मेघरागकी भार्याका एकमात्र उल्लेख है। पर यह काफी पीछेकी रचना है। सर्वप्रथम कुतुबनने ही इसे मेघरागकी भार्या कहा है। यह सर्व समयमे गेय रागिनी है। **सारंग**–अनेक राग-रागिनियोका नाम पशु-पक्षियोपर हुआ है। सम्भवतः उन्हीमेसे यह भी एक है। यह एक प्राचीन रागिनी है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख नारद कृत सगीतमकरन्दमे नाटकी रागिनीके रूपमे हुआ है। ओर इसी रूपमे इसका उल्लेख अधिकाश ग्रन्थोमे मिलता है: मेषकर्णको रागमालामे दीपककी भार्याके रूपमे सारगी (कहेली) का उल्लेख है। उसका तात्पर्य इसी रागिनीसे है अथवा किसी अन्यसे है, कहना कठिन है। मेघरागकी भार्याके रूपमे सारंगका उल्लेख राधामोहन सेन ने अपने सगीत-तरग (१८१८ ई०) मे भरत के उल्लेखसे किया है। यह भरत निस्सन्देह नाट्यशास्त्रके रचयिता भरत नही हैं; क्योकि उनके समयमे रागोके इस रूपका विकास नही हुआ था। अतः कहना कठिन है कि इस परम्पराकी प्राचीनता कितनी है। जो भी हो, जहाँतक सारगका सम्बन्ध है, कुतुबन उस परम्परासे परिचित थे जिसमे यह मेघरागकी भार्या मानी जाती थी। **बरारी**—बैरारी नामसे इसका उल्लेख हिण्डोलकी भार्याके रूपमे पहले हो चुका है। साथ ही यह भी द्रष्टव्य है कि किसी भी परम्परामे बैरारी या बरारी मेघरागकी भार्या नहीं कही गयी है। अतः निस्सन्देह यहाँ इसका उल्लेख भ्रष्ट-पाठ मात्र है। सम्भवतः मूल पाठ मलारी रहा होगा। मल्लारी का उल्लेख अधिकाश सगीत-शास्त्रियो ने मेघरागकी भार्याके रूपमे किया है। यह प्रातःकालीन रागिनी है। **धनासिरी** (धनाश्री)—इसका उल्लेख धन्नासिका रूपमे भी पाया जाता है। अनुमान किया जाता है कि इस नामके मूलमे कोई विदेशी नाम है जिसका निरर्थक परिष्करण कर लिया गया है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख

मम्मट कृत संगीत-रत्नमालामे देशाखकी रागिनियोमे धानसी नामसे हुआ है। इसे रागार्णवमे भैरवकी, नारद कृत पंचम सहितामें मालव-की, मेषकर्ण कृत रागमालामे मालकौशिककी, चत्वारिंशच्छत्रागनिरूपणम्-मे बसन्तकी, भावभट्ट कृत अनूप-सगीताकुशमे श्रीरागकी, ब्रिटिश संग्र-हालयकी रागमाला चित्रावलीमे दीपककी भार्या कहा गया है। अकेले कल्लीनाथने इसे मेघरागकी भार्या बताया है। यह प्रातःकालीन रागिनी मानी जाती है। **गन्धारी**–गन्धार देशके नामपर इसका नामकरण हुआ जान पड़ता है। यह प्राचीन रागिनी है। इसका उल्लेख मातग कृत बृहद्देशीमे भाषा गीतोके अन्तर्गत सौवीरक रागकी रागिनीके रूपमे हुआ है। नारद कृत सगीत-मकरन्दमे इसे बगाल रागकी, उसी ग्रन्थमे अन्यत्र देवगान्धारी नामसे श्रीरागको, मेषकर्ण कृत रागमालामे मालकौशिकको, ब्रिटिश म्यूजियम-की रागमाला चित्रावलीमे हिण्डोलकी भार्या कहा है। किन्तु मेघरागकी भार्या माननेवाली परम्परा काफी प्राचीन जान पड़ती है। इस रूपमे उसका उल्लेख सोमेश्वरदेवने किया है। यह सम्भवतः प्रातःकालीन रागिनी है।

(५) **स्रीराग** (श्रीराग)—श्रीके लक्ष्मी, सौन्दर्य, समृद्धि आदि अर्थके आधारपर अनुमान किया जाता है कि इसका सम्बन्ध अन्नोत्पत्ति सम्बन्धित किसी उत्सवसे है। उत्तर भारतमे श्री (लक्ष्मी) की पूजा जाड़मे हुआ करती है जब कि खेतोसे कट, दॉ-ओसा कर अन्न घरमे आ जाता है। इस प्रकार इसका सम्बन्ध जाड़ेसे है और ऋतुओ पर आश्रित प्राचीन मूल रागोमे से यह एक है। कुतुबनने सब रागोकी पॉचो भार्याओका उल्लेख किया है, किन्तु इसकी केवल चार भार्याओका ही नाम उन्होने दिया है; एक नाम छोड गये हैं।

(६) **हेमकली** (हेमकरी<हेमक्री<हेमक्रिया)—कतिपय प्राचीन संगीत शास्त्रोमे रागोंके वर्गीकरणमे क्रियाग रागोकी चर्चा है। अतः समझा जाता है कि क्रिया, क्री, करी, कली नामान्त रागिनियॉ, तत्कालीन रागरूपोके क्रममे हैं। हेमकली भी उसमेसे एक है। सन्धिरागोके रूपमे इसका सर्वप्रथम उल्लेख नाट्यलोचनमे प्राप्त होता है। राग-भार्याके रूपमे इसका उल्लेख अठारहवी शतीसे पूर्वके किसी संगीतग्रन्थमे नही मिलता। महाराज सवाई प्रतापसिंह देवने संगीत-सार नामसे जो ग्रन्थ प्रस्तुत किया है, उसमे उन्होने हेमकलीका उल्लेख दीपककी भार्याके रूपमे किया है। श्रीरागकी भार्याके रूपमे हेमकलीका उल्लेख कुतुबनके प्रस्तुत उल्लेखके अतिरिक्त कही अन्यत्र उपलब्ध नही है। **मलार**—मलार नामक रागका उल्लेख प्रायः संगीत ग्रन्थोमे मिलता है और लोग प्रायः मेघमलारके नामसे उल्लेख किया करते है। पर मलार नामक रागिनीका उल्लेख नही कही मिलता। मल्लारी नामक एक रागिनी अवश्य है, जिसके पंक्ति ३ के मूल पाठमे होनेकी सम्भावना हमने

प्रकट की है। यदि उसीका उल्लेख यहाँ हो तो पक्ति ३ के मूल पाठके रूपमे किसी अन्य रागिनीको ढूँढना होगा। कुतुबनके पूर्ववर्ती अथवा समकालिक किसी सगीत ग्रन्थमे मलार अथवा मलारीका नाम श्रीरागकी भार्याके रूपमे प्राप्त नही। ब्रिटिश सग्रहालयकी रागमाला चित्रावलीमे सेतमलार नामकी रागिनी श्रीरागकी भार्याके रूपमे अकित है। अतः हो सकता है कि मलारको श्रीरागकी भार्या माननेवाली कोई परम्परा रही हो और उसका अनुसरण कुतुबनने किया हो। पर पक्ति ३ को ध्यानमे रखते हुए यह पाठ सन्दिग्ध ही जान पड़ता है। **गूँजरी**(गुर्जरी)—यह गुजरात प्रदेशके नामपर आधारित काफी प्राचीन रागिनी है। मातग कृत बृहद्देशी-मे इसका उल्लेख टक्क और पचम रागोके अन्तर्गत भाषा गीतोके रूपमे हुआ है। सगीत रत्नमालामे मम्मटने इसकी गणना सालंक रागोमे की है। राग-परिवारमे गूँजरीका उल्लेख सोमेश्वरदेवने भैरवकी, नारद-दत्तिलने राग-सागरमे धुर्जरी नामसे मालवकी, रागार्णवने पंचमकी, नारदने पचमसहितामे बसन्तकी, मेषकर्णने दीपककी, पुण्डरीक विट्ठल-ने देशकारकी, भावभट्टने मेघरागकी और पुरषोत्तम मिश्रने संगीत-नारायणमे नटनारायणकी भार्याके रूपमे किया है। किसी भी संगीत ग्रन्थ मे गूँजरी का उल्लेख श्रीरागकी भार्याके रूपमे उपलब्ध नही है। **भीऊँपलासी** (भीमपलासी)—आधुनिक संगीतशास्त्री भातखण्डेने भीम-पलासीको काफीका जन्यराग कहा है। इनसे पूर्व केवल लोचन कविने अपनी रागतरगिणी (१३७५ ई०) मे और हृदयनारायण देव (१६६४ ई०) ने अपने हृदय-कौतूहलमे इसकी चर्चा की थी। दोनो ही सगीत-शास्त्रियोने इसे केदारका जन्य राग कहा है। राग-परिवारमे इसका उल्लेख एकमात्र राधामोहन सेन कृत सगीत तरंग (१८१८ ई०) में उपलब्ध है। उन्होने भरत नामक किसी परवर्ती संगीतशास्त्रीके प्रमाणसे इसे हिण्डोलकी भार्या कहा है। अतः कुतुबनका यह उल्लेख रागपरिवारमें सबसे प्राचीन है और किसी अज्ञात परम्परापर आधारित है।

(७) **कै**—को। **चीन्ह**—पहचान कर।

२५४

(दिल्ली; बीकानेर)

खस्टम राग भारजा[1] थापी। तीसों[2] रागिनी साथ अलापीं ॥१
बाजै सबद जहाँ लहिं आहै[3]। भा झंकार मोहि सब रहै ॥२
फुनि[4] पतुरीं कछनी कै[5] आई। मान बहुत लावहिं[6] बहु भाई[7] ॥३
केवल बदन[8] म्रिगनैनि[9] सुहाई। बरें[9] लंक जानु[10] उन्ह[11] लाई ॥४
हिया[12] सुभर जनु[13] कुन्द सँवारी। कदलि[14] खम्भ पेड़ न सँभारी[15] ॥५

चम्पा बरन सुहानी[16] तरुनी, जो[17] देखत[18] सो मोह ।६
बेगर बेगर भाँ[19] तिंह कै[20], कै आई छोह[21] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–भाजी । २–छतीस । ३–लहकहे । ४–पुनि । ५–जो पतरा एक कछि । ६–लावै । ७–बदनी । ८–म्रिगनैनी । ९–बरलै । १०–जनौ । ११–उनि । १२–हिय । १३–जनौ । १४–कदली । १५–सुभरारी । १६–सोहावनि । १७–सुन्दरि जो । १८–देखा । १९–भाव । २०–तिन्हिकर । २१–बहु जोह ।

टिप्पणी—(२) सबद–वाद्य ।

(३) पतुरीं–नर्तकी । कछनी–घुटनोतक कसा हुआ अधोवस्त्र । भाईं–भाव ।

(५) कुन्द–खराद ।

२५५

(दिल्ली; बीकानेर)

कछनी दखिन क चीर कै गहीं[1] । चँदर चोलि उर लेइ रहीं[2] ॥१
अभरन सभै[3] कपूर क कीन्हा । घाँघरि[4] बाँधि आइ पग[5] दीन्हा ॥२
चीहुर गूँद बेनी उरबाई[6] । चन्दन रूख पर[7] बिसहर छाई[8] ॥३
देखत मोहि सभा सब रही । काम चेष्टा तन मन गही[9] ॥४
कै जुहार उन्ह आयसु[10] लीन्हा । कुँवर नाँच कँह आयसु[11] दीन्हा ॥५
गायन[12] गावहिं काढ़ि[13] सुधांग[14], नाच होइ[15] तिह[16] लाग ।६
माँथा धौरा झूमरा परिबन्ध[17], यइ र गीत[18] वै राग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–कछनी दखिन कर चीर लै कीना । २–चन्दन चोलि उर लेपन दीन्हा । ३–सबै । ४–घाँघर । ५–पगु । ६–उरवाई । ७–पर जनौ । ८–जाई । ९–काम चेष्टन सब कछु जिय गही । १०–इन्ह आइस । ११–आइस । १२–गाइन । १३–गाढ़े । १४–सुध । १५–होन । १६–तहँ । १७–मठधुव झूमर परिबन्ध गीत । १८–एइ रागिनी ।

टिप्पणी—(१) कछनी–साडी अथवा धोतीको काछ लगाकर पहननेकी विधि, इसमे घुटनोतक ही वस्त्र होता है और दोनो लॉग पीछे खोस ली जाती है । दखिन क चीर–दक्षिणी वस्त्र । चन्दर चोलि–(चन्दन चोली) चॅदनके रंगकी बनी हुई कंचुकी ।

(२) घाँघरि–घुँघुरू ।

(३) चीकुर–चिकुर, केश । रूख–वृक्ष । बिसहर–सर्प ।

(६) सुधांग–शुद्ध अंग ।

(७) माथा, धौरा, भूमरा, परिबन्ध–ये नृत्यके विभिन्न प्रकार जान पडते है जो कदाचित् अब प्रचलित नही है ।

२५६

(दिल्ली, बीकानेर)

सरब नील रूपक चन्द औ चाली[१] । देसी जित पँवर[२] इकताली ॥१
अठतालो पटतालो नाचीं[३] । ताल देन्हि[४] जानहु धर ताचीं[५] ॥२
फुनि[६] नाचइ[७] धर पला[८] सँचारा । नाचहिं गीत होइ झनकारा ॥३
सीस नियर[९] कूदहि[१०] मँह[११] मोती । दहा दिहिंह चक्र भँवहि उरधूती[१२] ॥४
सरो अकॉच खरगै धारा[१३] । मान लेहिं[१४] पर ताल निपारा[१५] ॥५
नाचै ताल सबै उन्ह, कँठमारग[१६] जहाँ लहि राग ।६
सुरपति सुरहिं[१७] साथ लै, [कौतुक][१८] अवसर[१९] देखै लाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—सर्वन नील रूपक औ चाली । २—देसी जाति तेवरी । ३—अठतल पटतल ऊ नाची । ४—देहि । ५—ठॉची । ६—पुनि । ७—नाचै । ८—धुरपद । ९—नीर । १०—गूदहि । ११—मुँह । १२—हाथहि चक्र भँवहि अधौती । १३—संख चक्र खरग कै धारा । १४—देइ । १५—निबारा । १६—मार्ग गीत । १७—सुरन्ह । १८—(दि०) कौकत । १९—अखर ।

टिप्पणी—(१) **सरब नील, रूपक, चन्द, चाली, देसी, नित पँवर (?), इकताली**—ये नृत्यो के विभिन्न रूप जान पडते है । चेष्टा करनेपर भी इनके सम्बन्धमे कोई जानकारी उपलब्ध न हो सकी ।

(२) **अठताल, पटताल**—पखावज और मृदग बजानेके अनेक तालोमे मुख्य ताल है । इन तालोपर गायन-वादन तो होते ही हैं, विशुद्ध नृत्य भी इन तालोपर होते हैं ।[१] **धर**—धड़ । **ताँची**—खीचा ।

(३) **धर पला**—धड़ और पल्लव (हथेली) (अनुमान मात्र) ।

(४) **दहा**—दस । **दिहिंह**—दिशाओमे । **भँवहि**—घूमती है ।

(४) **खरगै धारा**—खड्ग अथवा तलवारकी धारपर नाचनेका संकेत यहॉ जान पड़ता है । इस प्रकारका नाच काफी प्राचीन है और आज भी कथक-शैली-मे प्रचलित है ।

२५७

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

उत्तिम नाच कुँवर मन भावा । नीक महन्दरी[१] नाच दिखावा[२] ॥१
परसन भये[३] मया मन आयी । बहु[४] परसाद महन्दरी[५] पाई ॥२
तुरिय सहस कर[६] पायँड़[७] पावा । मुँदरी[८] टोडर गिनति[९] न आवा ॥३
पाट पटोर चीर बहु पाई[१०] । टाँका कोरि एक[११] रोक देवाई[१२] ॥४
कर नौकड़ी[१३] दीन्हि[१४] उतारी । सीस[१५] मुकुट[१६] औ[१७] गिय कँठहारी[१८] ॥५

---

१. यह सूचना हमें श्री रामचन्द्र वर्मासे प्राप्त हुई है ।

अलंकरन दई[19] कुँवर आपुन[20], पहिरे आहे[21] जो आँग[22] ।६
पतुरिंह[23] अभरन पायउ[24], पा लहि नेउर लग सर माँग[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला, बीकानेर ।

१–(ए०, बी०) महेदरे । २–(ए०, बी०) नचावा । ३–(बी०) भवा । ४–(बी०) बहुर । ५–(ए०, बी०) महेदरे । ६–(ए०) कै, (बी०) का । ७–(ए०) पायड; (बी०) पायेड । ८–(बी०) मुंदर । ९–(बी०) गनती । १०–(ए०, बी०) पाए । ११–(ए०) कोरिक । १२–(ए०, बी०) देवाए । १३–(ए०) कर तौ करही; (बी०) कर नौ ग्रिह । १४–(बी०) दिहिस । १५–(ए०) सीस क; (बी०) सीसकर । १६–(ए०) मटुक; (बी०) मुकट । १७–(ए०, बी०) × । १८–(ए०, बी०) कँठ-मारी । १९–(ए०) आलंकरन दै, (बी०) ते सब दीन्ह । २०–(ए०, बी०) आपन । २१–(ए०) अहा; (बी०) अहे । २२–(ए०, बी०) अग । २३–(ए०, बी०) पतरन्ह । २४–(ए०) पाएव; (बी०) पायेन्हि । २५–(ए०) मंग; (बी०) पाँव लहि सिर मग ।

टिप्पणी—(१) **नीक**—अच्छा; सुन्दर ।

(२) **परसन**–प्रसन्न ।

(३) **पायँड़**–मार्ग की सुविधा । **मुँदरी**–अँगूठी ।

(४) **पाट-पटोर**–सूती-रेशमी वस्त्र । **चीर**–वस्त्र । **टाँका**–टंक, चाँदीका सिक्का दिल्ली सुल्तानोके समयमे उत्तर भारतमे प्रचलित था । उसका वजन १६७-१७० ग्रेन था और मूल्यमे रुपये के बराबर था । **रोक**–पारिश्रमिक ।

(५) **नौकड़ी**–सम्भवतः हाथका कोई आभूषण । **गिय**–कण्ठ । **कँठहार**–कण्ठा; गलेका हार ।

(६) **अलंकरन**–अलंकरण । **आँग**–अंग; शरीर ।

(७) **अभरन**–आभरण; आभूषण । **पा**–पैर । **लहि**–तक । **नेउर**–नूपुर । **माँग**–सिरपर केशोके बीच पहना जानेवाला आभूषण ।

२५८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

कुँवर तो र[1] सभा कहँ जाई । मिरगावती एक चेरि बुलाई[2] ॥१
कहिसि बुलावहु जाइ[3] सहेली । मिरगावति[4] हँहि[5] मंदिर अकेली ॥२
चेरीं जाइ[6] सखिन सेउ[7] कहा । चलहु तुमहिं[8] मिरगावति चहा ॥३
सुना सहेलिंह[9] सब उठि चलीं । इन्द्र अपछरन सेउँ[9] वै[10] भलीं ॥४
पान खात आई सब सखीं । मिरगावती हँसत वै[11] लखीं ॥५

---

१. इस प्रतिमें यह दो कड़वकोमें बँटा है। पहिले कड़वकमे प्रथम चार पंक्तियाँ अन्य तीन पक्तियोंके साथ हैं । इसके बाद एक सर्वथा नवीन कड़वक है । तदन्तर शेष तीन पंक्तिया एक तीसरे कड़वक की पंक्ति २, ६, ७, के रूप में हैं ।

बैठीं[१२] आइ सहेलीं[१३] सब, मिलि[१४] पूछहिं निसि कै[१५] बात ।६
कहहु कौन बिधि रावइँ[१६] साइँ,[१७] मान किहहु र[१८] मिलात[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०)तोरे; (बी०)बहुरि । २–(ए०,बी०) चेरी बोलाई । ३–(ए०,बी०)बोलावहु जाय । ४–(ए०,बी०) मिरगावती । ५–(ए०,बी०) जाय ६–(ए०,बी०) सखिन्ह सौं । ७–(ए०,बी०) तुम्हहि । ८–(ए०,बी०) सहेलिन्हि । ९–(ए०,बी०) अपछरन्ह सौं)१०–(ए०) उए; (बी०) उइ । ११–(ए०) उए, (बी०) हँसतै वै । १२–(बी०) बैसी । १३–(बी०) × । १४–(ए०) × । १५–(ए०) की । १६ (ए०) रावै, (बी०) रायेहु । १७–(बी०) ×। १८–(ए०) कीन्ह रे । १९–(बी०) पूछेहि सबै सघात ।

टिप्पणी—(२) हँहि–है ।

(३) रावइँ–रमण करता है । साइँ–स्वामी । किहहु–किया । मिलात–मिलने-के समय ।

२५९

(दिल्ली, बीकानेर[१])

हँस मिरगावति[१] चुपकै रही । कही[२] न जाइ लाज मँह[३] गही ॥१
पूछहिं फिर[४] सपत दई[५] बाता । फुर न कहहु तिह[६] सपत सै साता ॥२
आपुन मँह कछु[७] आहि न लाजा । हम जो कहहिं तुम्ह सेउ[८] सब काजा ॥३
कहहु कवन[९] बिधि भुखवइ खाई[१०] । सपत आहि जो फुर न कहाई[११] ॥४
छैल[१२] आहि वह की र[१३] गँवारू । [सेज कर][१४] भाउ[१५] बूझहिं कै खारू[१६] ॥५
हँसि र कहा मिरगावति[१७] उँहि[१८] सों,[१९] सुघर आहि नहिं खार[२०] ।६
चतुर सुजान छैल हिय[२१] ताकर,[२२] बूझे भाउ[२३] अपार ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–हँसो म्रिगावती । २–कहै । ३–मन । ४–सबै । ५–दै । ६–× । ७–किछु । ८–तुमसे । ९–न कवन । १०–भोगयेहु । ११–कहहू । १२–छैल । १३–दहु कैरे । १४–(दि०) सजग; (बी०) सेजकर । १५–भाव । १६–बूझै दहु घारू । १७–रे कहिसी मिरगावती । १८-१९–× । २०–घारू । २१–२२ है रसिया । २३–भाव ।

टिप्पणी—४–भुखवइ–भूखा ।

(५) खारू–मूर्ख; अज्ञान् ।

(७) हिय–हृदय । ताकर–उसका ।

२६०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर,)

कोकसास्त्र[१] केर[२] जो भावा । वइ[३] सब जान[४] अउर[५] बहु आवा[६] ॥१

१. इस प्रति में पक्ति १ और २ परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

हमहि॰ कोक बाँचे फुनि आवै। उह॰ र॰ भाउ हम सेउँ॰ बहु लावै ॥२
मीन काँम[11] जिह ठाउ[12] सो जानै। एक एक आखर कोक बखानै ॥३
नागर छैल सुभागैं[13] भरा। बहु गुनवन्त भोज कै[14] करा ॥४
जस चाहेउँ [15] तस दयी[16] मिरावा[17]। अँबरित[18] कुण्ड सपूरन पावा[19] ॥५
मन मनसा चित पूजी मोरे,[20] मिलेउ[21] सुघर हम जोग।६
जोगहिं जोग मिरायउ बिधि,[22] अब माँनौं[23] रस भोग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) कोक सासतर। २–(बी०) रे। ३–(ए०) उऐ, (बी०) वै। ४–(बी०) जानै, ५–(ए०, बी०) और। ६–(बी) भावा। ७–(ए०) हमहु;(बी०) हम कहँ। ८–(ए०) उवह। ९–(ए०, बी०) रे। १०–(ए०) हमसौं;(बी०) हमसैं। ११–(बी०) मनक मन। १२–(ए०, बी०) जेहि ठाँ। १३–(ए०) सभागै; (बी०) सुभागहिं। १४–(बी०) कर। १५–(ए०) चाहेव। १६–(ए०) दैअ। १७–(ए०) मेरावा। १८–(ए०) अब्रीत। १९–(बी०) पूरी पक्ति लुप्त[1]। २०–(ए०) ×, (बी०) मोरी। २१–(ए०, बी०) मिलेव। २२–(ए०) मेराऐव विधनैः, (बी०) मिलायेउ बिधनै। २२–(बी०) नौ।

टिप्पणी—(४) भोज कै करा—भोग की कला।

२६१

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

सुनिके सखी[1] बात यह भाई। घर घर सेउँ[2] निछावरि[3] आई ॥१
मिरगावती निछावरि लिही[4]। बहु पहिराउ[5] सखिह[6] कर[7] दिही ॥२
फुनि नहाइ[8] कै चीर पहिरावा[9]। सब अभरन[10] [पहिरैं][11] कह आवा ॥३
अभरन पहिरि बैठि फुनि बारी। चतुर सुजान बिचाखन[12] नारी ॥४
अउसा नाच कुँवर[13] घर आवा। मिरगावति अमिय रस[14] पावा ॥५
सखी बहुरि[15] कै आई घर कहँ[16], वे[17] रस केलि कराँहि।६
भोग करहिं पँचाँब्रित[18] पियहिं[19], मधुर[20] [खजहजा][21] खाँहि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) सखिन्ह; (बी०) सखिहु। २–(ए०) सौ रे; (बी०) सौ। ३–(बी०) न्योछावरि। ४–(ए०) लीही। ५–(ए०) पहिरौन; (बी०) पहिरावनि। ६–(ए०,बी०) सखिन्ह। ७–(ए०, बी०) कहँ। ८–(ए०) नहाए; (बी०) नहाय। ९–(बी०) फिरावा। १०–(ए०, बी०) अभरन उत्तिम। ११–(ए०) पहिरन;

१—सम्मेलन सस्करण में यह पक्ति नहीं दी गयी है। अत ऐसा अनुमान होता है कि एकडला और बीकानेर दोनों प्रतियों में यह नहीं है। पर यह वस्तुतः छूट है। एकडला प्रति हमें उपलब्ध है इससे उसके पठान्तर दिये गये हैं। बीकानेर प्रति में भी यह पक्ति है, यह माता प्रसाद गुप्त के कथन से ज्ञात होता है (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अङ्क ३, पृ० ९०)।

(दि०) × । १२–(बी०) चत्रु सयान बिचछिन; (ए०) बिजखन । १३ (ए०) अरसा कुवर; (बी०) उठा सो नॉच कुँवर। १४–(ए०, बी०) जस; (दि०) जस रस १५–(ए०) पहिरि। १६–(ए०,बी०) घर घर आई। १७–(ए०) उइ। १८–(ए०) पंच अग्रीत। १९–(ए०, बी०) ×। २०–(बी०) मधुकर। २१–(ए०) खजहॅजो; (दि०) खाजा; (बी०) व्याजहिं।

टिप्पणी—(४) बिचाखन—विलक्षण।
(५) अउसा—(अवसान) समाप्त हुआ।
(७) खजहजा—उत्तम फल; मेवा।

२६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

सखी एक घर कछु र[१] बधाई। उह चलि मिरगावति पँह आई ॥१
कहिसि हमरें घर मंगलचारा[२]। तुम[३] आवहु तो जाइ[४] सँवारा ॥२
को आदर दिया जिन्ह तुम देइ[५]। को र[६] सँवारि बाति हम लेई ॥३
पगु ढारियहु[७] हम होइ बड़ाई। सासु ननद मँह पत[८] जो रहाई[९] ॥४
मिरगावति[१०] कहि[११] सुनहु सहेली। मों तू तो हो[१२] एक अकेली ॥५
हम तुम्ह[१३] नाही बिच[१४] सखी[१५] कछु[१६], जिउ एक[१७] दुन्हु गात[१८]।६
राजकुँवर कँह पूँछउँ[१९] पहिलें,[२०] फुन र[२१] चलउँ तुम्ह[२२] साथ ॥७

पाठान्तर— एकडला ओर बीकानेर प्रतियॉ।

१–(ए०,बी०) कुछु रे। २–(बी०) मगरचारा। ३–(ए०,बी०) तोह। ४–(ए०,बी०) जाए। ५–(ए०) को आदरो बाझ तोह देई; (बी०) को आदर बाज तोह देई। ६–(ए०,बी०) रे। ७–(ए०) ढारिय; (बी०) ढारहु। ८–(ए०) पति। ९–(बी०) जो पति पाई। १०–(ए०,बी०) मिरगावती। ११–(बी०) कहै। १२–(ए०) हौ तॅू तू हौ, (बी०) तुम हम है एक। १३–(ए०) तोह। १४–(ए०, बी०) बीच। १५–(ए०,बी०) ×। १६(–ए०,बी०) कुछु। १७–(ए०,बी०) एकै। १८–(ए०) दुई गात; (बी०) दुहुँ गाथ। १९–(ए०,बी०) पूछौ। २०–(ए०,बी०) ×। २१–(ए०) तोरे, (बो०) अज्ञा जाउॅ। २२–(ए०) चलौ तोह; (बी०) चलौ तुम्हरे।

टिप्पणी—(४) ढारियहु–डालोगी। पत–इज्जत।

२६३

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

मिरगावति कुँवर पँह आई। आइ[१] ठाढ़ि[२] भई[३] लाग कहाई ॥१
कहिसि बात्र एक सुनहु न राजा। सखी एक कछु[४] उटयेउ[५] काजा ॥२
सो हम कँह र[६] बुलावइ[७] आई। आयसु[८] होई[९] जाइ[१०] तो[११] जाई ॥३
कुँवर कहा अस[१२] पेम[१३] पियारी। मो जिय बिनु जियत परान अधारी[१४] ॥४

बरजों तो अपमंगल[15] होई। गवन[16] कहउँ[17] तो प्रीति न होई[18] ॥५
मन भावन्ता सो करहु[19], यह मुहि[20] कही[21] न जाय।६
बिरत[22] पेम न सहि सकौं मैं, मानों कहेउ[23] सत भाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) आए; (बी०) आय। २–(बी०) ठाढ़। ३–(ए०) मै; (बी०) होइ। ४–(ए०) कुछ, (बी०) घर। ५–(बी०) उटयेहु, (ए०) उटयेव। ६–(ए०, बी०) रे। ७–(ए०, बी०) बोलावै। ८–(ए०) आएस, (बी०) आइस। ९–(ए०) होय; (बी०) होइतो। १०–(ए०, बी०) जाय। ११–(बी०) ×। १२–(ए०) सुनु; (बी०) सुन। १३–(बी०) प्रान। १४-(ए०) मो जिउ जिउ पति प्रान अधारी। १५–(बी०) अपमंर। १६–(ए०, बी०) गौन। १७–(ए०,बी०) रहौ। १८–(बी०) नहि सोई। १९–(बी०) करु। २०–(ए०, बी०) मोहि। २१ (ए०,बी) कहै। २२–(ए०,बी०) बिहरत। २३–(ए०) ×, (बी०) जो कहा; (ए०) कमि कहौं।

टिप्पणी—(१) ठाढ़–खड़ी।
(२) उटयेउ–आयोजित किया।
(३) जाइ–जाओ। जाई–जाऊँ।
(६) भावन्ता–अच्छा लगे।
(७) बिरत–विरह।

२६४

(दिल्ली; बीकानेर)

॥४
मिरगावति कहि[1] सुनहु बिनाती[2]। बरजा करै न[3] पुरुख कै ज[?] भाई ॥५
हौं तुम्ह कहँ अस बरजों नाँहाँ। ओबरी यह जो अहै घर[?]। ६
पुरुखा[4] सात गये न[5] डोली। तुमहू यह जनि[6] देखहु [?]ह ॥७
यहि कर[7] मरम[8] न जानै कोई। कै भल मन्द कछु तिंह [?]
बरिज बहुत[10] कै चली सोनारी[11]। चढ़ी जाइ हुत[12] डाँडि[13]
खात तँबोल अदाकर[14] पण्डुर, कोड़ करत वै —सही। ७–बोही
खेलत हँसत आपु मँह मिलीं,[15] जिउ[16] अंग अंग न स[?]री। १२–सब

पाठान्तर—बीकानेर प्रति। १७–कर। १८–

१–मिरगावती कहै। २–बिनती। ३–न करै। ४–पुरिखा। ५–न। २३–लई बँ६ यहि। ७–जेहिका। ८–मर्म। ९–भला मन्द एहि मँह किछु होई। दोह; (दि०मार्जिन ११–सुनारी। १२–होति। १३–डॉडी। १४–आड़ करि। ?

टिप्पणी—(१) पुरुख–पुरुष। बन्दी।
(२) बरजों–बर्जित करूँ; मना करती हूँ। नाँहाँ–पा
एकान्त कमरा।

(३) पुरुखा–पूर्व पुरुष । जनि–मत ।
(५) डाँडि–डण्डी; एक प्रकारकी पालकी ।
(६) पण्डुर-पीला । कोड़–क्रीडा ।

२६५

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

हँसत सखी घर पैठी आई । जानु चाँद चौदस आई[1] ॥१
उदिनल चाँद नखत कै जोती । मोंति माँझ जानहु गज मोती[2] ॥२
सोरह करा जो सुरुज बखानी । यह त सँहस इँदरासन मानी[3] ॥३
तेहि ऊपर कछु[4] बचन सुहाई[5] । खेलत हँसत रैन[6] दिन जाई ॥४
यह तो उहाँ[7] कोड़ लपटानी । उँहा कुँवर बरजा[8] किय[9] जानी ॥५
जिय भरम मन[10] अस कहि[11], इह[12] मँह[13] आहे[14] काह ।६
जाइ[15] उघारौ उबरी[16], भीतर[17] देखों वँह[18] का आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।
१–(ए०) आइ सखी घर कीत उँजोरा । चाँद चहु दिसि भयउ न भोरा ॥ (बी०) आय सखी घर कियेउ अँजोरा ॥ चाँद चौदस भयेव न मोरा । २–(ए०, बी०) घर आँगन भरि रही अँजोरी । दिन कै (कर) काज करहि निसि भोरी ॥ ३–(ए०) ससि रे बरन कै उजोर पावै । जो रे परगट मिरगावति आवै ॥ (बी०) ससि तरइनु के जोर न पावै । जोरे परगट मिरगावती आवै ॥ ४–(ए०) मुख, (बी०) जो मुख । ५–(ए०, बी०) सोहाई । ६–(ए०, बी०) रैनि । ७–(ए०) ऐतो इहाँ । ८–(बी०) अनबरन । ९–(ए०, बी०) कै । १०–(ए०) ...ा; (बी०) चित । ११–१२–(ए०) दहु एहि; (बी०) एहि । १३–(ए०) मन । ...०) का । १५–(ए०, बी०) जाय । १६–(ए०, बी०) ओबरी । १७– ... । १८–(ए०) दहुँ का, (बी०) का दहुँ ।

६–(... जो पति ... तूँ तू हौ; (... १५–(ए०,ब ... गात; (बी०, ... (ए०) तोरे; (... टिप्पणी—(४) ढ ...

२६६

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

... उघारे काहा[3] । एक खटहरा[4] उहि मँह[5] आहा ॥१
...ेउ[6] करै गुहारी[7] । को पुनवन्त[8] देइ[9] निस्तारी[10] ॥२
मिरगावति कुँवर ... देइ[12] बँद[13] मोरी । सेउँ[14] कुटुँब सेंउ[15] कर जोरी ॥३
कहिसि बात एक सुन ...[17] कर[18] मोरी[19] । चेर[20] हौं[21] सेवों[22] कर जोरी ॥४
सो हम कँह र[1] बुल... मि[23] कै काजा । वस हौं[24] करौं छाँड़ मुहि[25] राजा ॥५
कुँवर कहा अस[12] पेम ... बिक्रम कै, जिय सेंअु किय बैताल[26] ।६
... न करिहौं ताकर[27], जो र[28] मोख दइ[29] घाल ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) ओबरी। २–(ए०) जाए; (बी०) जाय। ३–(दि०) कहा। ४–(ए०) कटहरा; (बी०) कठेरा। ५–(बी०) तेहि भीतर। ६–(ए०) भागै। ७–(ए०,बी०) गोहारी। ८–(बी०) पुनिवन्त। ९–(ए०) देए; (बी०) देय। १०–(ए०,बी०) निसतारी। ११–(ए०,बी०) रे। १२–(ए०) देय खोलि; (बी०) खोल देय। १३–(ए०,बी) बन्दी। १४–(ए०) सेवो।१५–(ए०) सेव, (बी०) सेवा करौ कटभ सै। १६–(ए०, बी०) कोरे पीठि। १७–(बी०) मीडे। १८–(ए०, बी०) गुरु। १९–(ए०) मोरे। २०–(बी०) चेरा। २१–(ए०) होउ, (बी०) होइ। २२–(ए०) सौंरो; (बी०) सेऊँ। २३–(बी०) राम। २४–(ए०) तस मैं। २५–(ए०) छाड़ मोहि। २६–(ए०) जैसे सेव बिक्रम कै जिअ सै कै अगिआ पतिपाल, (बी०) जस सेवक विक्रम जिय सेउँ अगिया बैताल। २७–(ए०) उइसी सेव हौ करिहौं; (बी०) वस सेवा हौं करिहौ। २८–(ए०, बी०) रे। २९–(ए०) दै; (बी०) मोंहि।

टिप्पणी—(१) खटहरा-कटघरा। उहि–उस।

(२) गुहारी–पुकारा। पुनवन्त–पुण्यवान्। निस्तारी–छुटकारा।

२६७

(दिल्ली; बीकानेर)

पूछइ[१] कुँवर को र[२] तू आही[३]। किह[४] ओगुन तिह राखिन[५] साही[६] ॥१
फुर कहु तिह र छुड़ावउ[७] बेगी। कहिसि इन्हकै हौं[८] पिता कह[९] नेगी ॥२
देस [कोस][१०] औ अरथ भंडारू[११]। सबै हैतो[१२] मोरे[१३] सर भारू[१४] ॥३
सामि[१५] काज दुरजन[१६] सब केरा। काहू केर[१७] न मैं मुँह[१८] हेरा ॥४
ठाकुर जाकहँ मया कराहीं[१९]। ताकर सत्रु मीत[२०] औ[२१] भाई ॥५
रूपमरारि मरत सतुरहि[२२], लाइ बँधायेउ मोहि[२३]। ६
काज सामि कै सँवारों[२४], कहौं साच यह दोह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–पूछै। २–रे।३–अही। ४–केहि। ५–तोहि राखिनि। ६–सही। ७–तोही छाडो। ८–×। ९–कर। १०–(दि०) लोग। ११–बर्थ भंडारा। १२–सब होत। १३–मोरेहिं। १४–मारा। १५–सामी। १६–दुरिजन। १७–कर। १८–मैं मुँह नहिं। १९–करई। २०–मित्र। २१–×। २२–सत्रन। २३–लई बँध इन्हि मोहि। २४–सँवारेउँ। २५–(बी०) कियेव न काहू द्रोह, (दि०मार्जिन) न काहू सन दोह।

टिप्पणी—(१) औगुन–अपराध। राखिन–रक्खा। साहि–बन्दी।

(३) कोस–कोष। हैतो–था। मोरे–मेरे।

(४) केर–का। हेरा–देखा; जोहा।

(५) ठाकुर–स्वामी। मया–स्नेह। मीत–मित्र।

(७) दोह–द्रोह; अपराध।

२६८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

अउर बात बहुत कहिसि[1] सुहाई[2]। कुँवरहि मोह मया मन आई ॥१
कहसि उघारि देउँ[3] यह मोखू। काज सामि[4] कछु[5] लाग न[6] दोखू ॥२
कुँअर कटहरा[7] दीन्हि[8] उघारी। निकसि ठाढ़ भौ[9] बिपरित[10] भारी ॥३
पाउ रहा धरती उहि[11] केरा। सीस जाइ भयउ[12] सरग अभेरा ॥४
बिपरित[13] रूप सराहौं काहा[14]। किसन[15] बरन रीछ जनु आहा[16] ॥५
दाँत[17] बड़े बड़[18] सुठि भारी,[19] कहँ दुख कहौं मँडाइ[20] ।६
ले र[21] कुँवर कहँ काँधे ऊपर,[22] लइ गै सरग चढ़ाइ[23] ॥७

पाठान्तर–एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) कही। २–(बी०) सोहाई, (ए०) सुनाई। ३–(ए०, बी०) देव। ४–(म०) सामि काज; (बी०, ए०) सामी काज। ५–(ए०) कुछु, (बी०) ×। ६–(बी०) न लागै; (म०) हरख न। ७–(म०) कोटँहरा; (ए०) केठहरा; (बी०) कठहरा। ८–(बी०) दिहेउ। ९–(ए०, बी०) भा। १०–(ए०,बी०) बिपरीति। ११–(बी०) वोहि। १२–(ए०, बी०) भाउ; (म०) भिर। १३–(म०) इत; (बी०) अति बिटार। १४–(ए०) साहस बढा भो पर मारा। १५–(बी०) केस। १६–(ए०) रकत बीज कलकी सघारा। १७–(बी०) दसन; (म०) दन्त। १८–(ए०, बी०, म०) ×। १९–(ए०) भयावन; (बी०) भुअन। २०–(ए०) कहँ लगि कहौं मँझाय; (म०) कहँ धरि कहौं मन लाय, (बी०) कहँ लगि कहौ बड़ाइ। २१–(म०,बी०) रे। २२–(बी०) धरि, (ए०) वोहि कुँवर के काँधे। २३–(म०) सरग लग लाइ; (ए०,बी०) लागा सरग चढ़ाइ।

टिप्पणी—(२) उघारि–खोलकर।

(३) ठाढ़–खड़ा। भो–हुआ।

(४) किसन–कृष्ण। बरन–वर्ण; रंग।

२६९

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवर कहा यह परी[1] बलाई। बरजन किहेउँ[2] लागि पछताई ॥१
जस र जलमदेव[3] बरज न कीन्हा। वस[4] पछताव दई मँह[5] दीन्हा ॥२
सुवा मारि राजा पछताना[6]। तस भा[7] पछताव निदाना ॥३
जस[8] भोज बिक्रम पछताना[9]। औ भैरोंनन्द हुत[10] सयाना ॥४
वइस[11] पछताव भयउ यह[12] आई। जिउ[13] पछताव एक[14] संग जाई ॥५

[कन्तैं[१५]] बचन साल[१६] उर मोरें, जिमि सालै कर रुख ।६
एक[१७] सालै अरु[१८] पलुहै, यह रे घनेरा दुख ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०) बडेउ । २–(म०) किहो; (ए०,बी०) किया । ३–(म०) जगमदेव; ४–(म०, ए०, बी०) तस । ५–(ए०) देअ हम; (म०) दई हम; (बी०) दैव हम । ६–(बी०) पछिताव; (म०) पछताई । ७–(म०) इह भा; (बी०) यह भवा; (ए०) अहे हम । ८–(म०) जस र; (ए०, बी०) जस रे । ९–(बी०) पछिताना । १०–(ए०) हुते जो; (बी०) जो होत । ११–(म०, बी०) बस; (ए०) तस । १२–(म०)भई मोहि; (ए०) भअेव अेहि; (बी०) भवा हम । १३–(बी०) जिव । १४–(म०) यक । १५–(ए०) कन्ति; (बी) कन्त; (दि०) कीन । १६–(बी०)सालहि । १७–(म०) यक, (बी०) इक । १८–(ए०,बी०) और ।

टिप्पणी—(१) बलाई-बला । बरजन–वर्जित कार्य ।
(२) जलमदेव-जनमेजय ।
(३) सुवा–तोता ।
(६) साल–कचोटता है; टीसता है ।
(७) पलुहै–(क्रि० पलुहना) पल्लवित होता है । घनेरा–घना; अत्यन्त ।

२७०

(दिल्ली; एकडला; मनेर, बीकानेर)

कहिसि[१] दयी[२] बिधि[३] सिरजनहारा । बहुतै कठिन तैं र[४] निस्तारा ॥१
यह तो घण्ट[५] पड़ा[६] बड़ मोही । हाथ जोरि के सँवरों[७] तोही ॥२
तोहि छाड़ किह करउँ[८] पुकारा । माँगों बिधि यहि सो[९] निस्तारा
जोजन सौं[१०] ले गयउ[११] उड़ाई । तहाँ कुँवर सों[१२] यह र[१३] क होई ॥२
प्रीतम मोर तुम रे[१४] सुखरावहु[१५] । भोग करहु नित[१६] मोहे[१७] [सता[१८] जोती ॥३
मोर जीउ वहि[१९] लुबुधा[२०], वह[२१] गइ लुबुधी[२२] त कोइ ॥४
अब रे पुहुमि तोहि[२३] पटकों[२४] धरि कै,[२५] रहै[२६] पछताव न मो हम चीन्हा॥५
ं तोहि ।६
मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) कहेसि । २–(ए०) दैय; (बी०) दइव । ३–(बी०
(म०, ए०) तैं रे; (बी०) तेहि । ५–(म०, ए०, बी०) कठिन ।) बसै । ४–(म०)
परी । ७–(म०) विनवँऊँ; (ए०, बी०) बिनवौं । ८–(ए० ३–(ए०) रे; (म०) ×।
९–(म०, बी०) सेउ । १०–(बी०) सेउ । ११–(ए०, बी०) ही; (बी०) वहै । ११–
से । १३–(ए०) अेह रे; (बी०) लाग । १४–(म०, बी०) ३–(ए०,बी०) होय । १४–
(म०) सुखलावहु । १६– बी० × । १७–(बी०) मोहि रे अदीपर; (बी०) उदयवर;
(दि०) तयावहु । १९–(ए०) जीउहि; (बी०) जीउ वों हम कहूँ; (ए०) मोहि कॅह

होत। २१-(ए०, बी०) उहि। २२-(बी०) गै लुबुधि; (ए०) लुबुधि गै; (म०) लुबुध गइ। २३-(म०) दइ; (ए०) दे। २४-२५-(बी०) कहौं कह धरि पटकौ। २५-(म०, ए०) × । २६-(म०) रहँहि, (ए०) रह।

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा-सृष्टिकर्ता; ईश्वर। निस्तारा-छुटकारा। (५) सुखरावहु-आनन्द मनाओ।

(७) पुहुमि-पृथ्वी।

२७१

(दिल्ली; एकडला, मनेर; बीकानेर)

पण्डों तू र[1] महन्दरी[2] रावसि। अब न जियत वहि[3] देखे पावसि ॥१
माधोनल[4] तों[5] रावसि कामाँ। जस पिंगला भरथरि[6] कह[7] रामाँ ॥२
अंगबास बहु[8] कहाँ[9] गँधाई[10]। भँवरा लुबधि कितहु[11] न[12] जाई ॥३
पवन लागि जिह[13] दिसि कँह[14] जाई। कोस बीस परिमल रहि[15] छाई ॥४
तूँ[16] रावसि हो[17] कर मलऊँ। उठे आग[18] सिर पा [लहि][19] जरऊँ ॥५
बरिस गये वहि[20] कारन[21], अमिय न आयउ[22] हाथ।६
सो र[23] सेंत[24] तुम्ह[25] पायउ[26] अरकत, सुख भोंजहु[27] संग साथ[28] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०, ए०) न; (बी०) नहि। २-(म०, बी०) महन्दरिहि, (ए०) मेहदरहि। ३-(ए०,बी०)उहि। ४-(म०,ए०,बी०) माधौ नाहिं। ५-(ए०) तु, (बी०) तू; (म०) जो। ६-(ए०, बी०) भरथरी। ७-(म०, ए०) ×। ८-(म०) यह। ९-(ए०, बी०) घानि।१०-(ए०) गँधाही; (म०) देखाई। ११-(ए०,बी०) लुबधै कतहुँ। १२-(बी०) तजि नहिं। १३-(ए०) चहुँ, (बी०) जेहि। १४-(बी०) उडि। १५-(बी०) रहै परिमल। १६-(ए०) तू रे। १७-(ए०) हौ उहि। १८-(म०, बी०) (ए०,बी०)जर। १९-(बी०) सहि पा लहि; (दि०) किह। २०-(ए०) उहि। २१-कारण जरतेहि। २२-(ए०, बी०) आयेव। २३-(ए०, बी०) रे। २४-तेती। २५-(ए०) तोह। २६-(म०) पाई; (ए०) पाअेव। २७-(ए०) (बी०) २८-(बी०) सो रासै तिअ तुम पाइ, सुखसेज सग साथ।

टिप्पणी—(२) (३) (४) पैंत-मुफ्त।

२७२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवर कहा यह काहि[1] न बोलसि। मरै कै बार[3] बकत नहिं खोलसि ॥१
जस र जलमदेव[2] बर राकस भूता। औ जस वहै गड़रिया दूता ॥२
सुवा मारि राजा इउ आसा। बोलहु कछु जब लग[10] तन[11] साँसा ॥३
जस[8] भोज बिक्रम यह तोहँ सेंती। मोंकह लेइ कीन्हें[14] बुधि जेती[15] ॥४
वइस[11] पछताव भयउ

मैं तोंको[१६] कछु[१] कियइ[१७] न[१८] मँदाई। नीक कहेउ[१९] यह तोर[२०] बड़ाई ॥५
जो र[२१] करै भल हम कहँ परिके[२२], ताकर[२३] करहुँ[२४] मँदाइ ।६
टेव आह पुरखन[२५] कर[२६] जो कछु[२७], हमकै मैंटि [न][२८] जाइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियॉ।

१-(ए०) कहे; २-(ए०) काहे, (बी०) कहे। ३-(ए०) क बेरि। ४-(बी०) मैं। ५-(म०, बी०) हौ। ६-(ए०) उवह। ७-(म०) वह र; (ए०) उवह रे, (बी०) वह रे ८- (म०) धोहि; (ए०) धोए; (बी०) धोय। ९-(ए०, बी०) कुछु। १०-(ए०, बी०) लगि। ११-(ए०) है; (बी०) है तन। १२-(म०) बोलेउँ, (ए०,बी०) बोलौ। १२-(म०) तुम्ह। १३-(बी०) मोहके लिएउ किएउ; (ए०) मोह की लिए किये; (म०) मुहि कॅह गिनती कीने। १४-(बी०) ऐती। १५-(म०) तो कॅह; (ए०) तोहि कहॅ; (बी०) तोकहुँ। १६-(म०) कही, (ए०) कै; (बी०) कै जै किहु १७-(बी०) न की। १८-(म०) कहों, (ए०) किहेव, (बी०) कियेउ। १९-(ए०, बी०) तोहि। २०-(ए०, बी०) रे। २१-(ए०, बी०, म०) ×। २२-(ए०, बी०) ताकरि। २३-(म०) करेहु, (ए०) करहि, (बी०) करहि हम। २४-(ए०, बी०, म०) पुरखन्ह। २५-(म०) कै। २६- (बी०) जे किछु, (ए०, म०) ×। २७-(म०) हम सो, (ए०) हम कॅह, (बी०) हम पहिं। २८-(दि०) ×।

टिप्पणी—(१) बार-समय, वक्त।
(७) टेव-टेक; आन। मैंटि-मिटा।

२७३

(दिल्ली, एकडला; मनेर; बीकानेर)

तैं[१] न सुनाँ जो बरिस सेवाती। एक एक बूँद अमिय कै जाती ॥१
जइसैं[२] संग रहै[३] गुन सोई[४]। साँप क[५] मुँह[६] र[७] परत[८] बिख[९] होई ॥२
उहै[१०] बूँद सीपी[११] गजमोती। निरमल[१२] होई[१३] अधिक वह[१४] जोती ॥३
उहै कपूर उदैगिरि[१५] होई। अधिक बास बिरसै सब कोइ ॥४
फुरहिं[१६] नीक हमकहँ तुम्ह[१७] कीन्हा। भल कर[१८] मन्द अगरिंह[१९] हम चीन्हा॥५
अब र[२०] कहो[२१] मँह सेउँ[२२] फिरि के[२३], किहँ[२४] धरि मारौं तोहि ।६
कै र[२५] सिखर कै सायर पुहुमी[२६], मन रूचत[२७] कहु मोहि ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर, प्रतियाँ।

१-(बी०) त। २-(ए०,बी०) जैसे। ३-(ए०,बी०) रे होय; (म०) बसै। ४-(म०) है कोई। ५-(म०,बी०) के। ६-(ए०) मुहे, (बी०) मुख। ७-(ए०) रे; (म०) ×। ८-(बी०) अंम्रित। ९- (बी०) विष। १०-(ए०) उही; (बी०) वहै। ११-(ए०, म०) सीप. (बी०) सिपिहॅ। १२-(म०) अधिक। १३-(ए०,बी०) होय। १४-(ए०) सो; (बी०) तेहि; (म०) तिह। १५-(ए०) अदीपर; (बी०) उदयवर; (म०) चोआदेइ। १६-(बी०) फुरहु। १७-(बी०) तैं हम कहँ; (ए०) मोहि कॅह

तोह । १८–(बी०) फुरकै । १९–(म०) करतहि; (बी०) करहि, २०–(म०,बी०) रे। २१–(ए०,बी०) कहहु; (म०) कहु । २२–(म०) दहुँ मोसेउ, (ए०,बी०) दहुँ मोहि सौ । २३–(ए०,बी०,म०) × । २४–(ए०) केहि: (बी०) कह । २५–(म०,ए०) रे; (बी०) × । २६–(ए०) × । (बी०) तुम्है । २७–(ए०) रुचित; (बी०) रुच ।

टिप्पणी—(१) सेवाती—स्वाती नक्षत्र ।

(५) अगरिंह—आगे ही; पहले ही । चीन्हा-पहचाना ।

(६) धरि—पकड कर ।

(७) सिखर—सिखर; पहाडीकी चोटी । सायर—सागर । पुहुमी—पृथ्वी; धरती । रुचत—पसन्द ।

२७४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कुँवर बूझि अपने मन देखा । उलटा कहहुँ[1] इहसों[2] सो सरेखा[3] ॥१
पाथर मार बेग जिह मरों[4] । पानी मँहि दुख मरबहि डरों[5] ॥२
हँसा कहिसि इन[6] काहे[7] न मीता[8] । पाथर हनौं[9] होइ तोर[10] चीता[11] ॥३
अब तोहि पानीं माँझ अडारों । दुख कर[12] मरहु[13] यें र[14] बिधि मारों ॥४
जहाँ मन्छ मँगर घरियारा । तोर[15] खाँहि[16] दुख होहि[17] अपारा ॥५
लिहिसि उतारि काँध सौं[18] बरके,[19] धरि र[20] फिराइसि पाँउ[21] ।६
दिहिसि उतार सँमुद खारी मँह, जो भावइ[22] सो खाउ[23] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०, म०) कहौं । २–(म०) × । ३–(म०) सोइ सरेखा; (बी०) र हिस सुसरेखा । ४– (बी०) जिन्ह मारउँ, (म०) मराओ । ५– (बी०) मरिबेहि डारउँ (म०) पान माँहि देखि डराओ । ६–(बी०) अनु । ७–(बी० म०) काहा । ८–(म०) मन्ता । ९–(म०) हनेउँ, (बी०) हन्यो । १०–(म०) तुर; (बी०) तरा ।११–(बी०) चिन्ता । १२–(म०, बी०) कै । १३–(बी०) मरहि । १४–(म०) यहि; (बी०) इहि रे । १५–(बी०) तोहि रे । १६–(म०) खाहहि । १७–(म०) होइ, (बी०) होय । १८–(म०) सेउ; (बी०) स्यो । १९–(म०) × । २०–(बी०, ए०) × । २१–(बी०) पॉव । २२–(म०) जो र भाउ; (बी०) जो भावै । २३– (बी०) खाव ।

टिप्पणी—(१) सरेखा– श्रेष्ठ; उचित ।

(३) चीता–मन चाहा ।

(४) अडारो–(क्रि० अडारना) फेकना; गिराना । हेमचन्द्र (पासद्द० ४।३१) के अनुसार सस्कृत क्षिपका एक धात्वादेश अड्डुक है । अतः वासुदेवशरण अग्रवालका अनुमान है कि यह उसीसे निकला है (अडार> अडार) ।

(५) मन्छ–मछली । घरियारा-घड़ियाल ।

(६) फिराइसि–घुमाया ।

२७५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चला अडाइ[1] लौटि न हेरा। यें र[2] नाँव सँवर[3] बिधि केरा ॥१
एकंकार[4] अलख करतारा[5]। जस तैं बिकरम राउ[6] उबारा[7] ॥२
जस र जलन्धर[8] कुएँ[9] उडारा। अँतर न रखा[10] तूँ[11] अधारा[12] ॥३
हौं सकबन्धहि[13] पौन अधारी। बिनु[14] अधार बिधि लेहु उबारी ॥४
कहत मया बिधि आइ तुलानी[15]। तिह[16] ठाँ परेउ[17] अलप[18] हुत पानी ॥५
जैं उबर[19] सिरपाल[20] कर[21], मँह[22] यह[23] बड़ भयउ[24] बिछोह ।६
बहु पछताव कियै[25] कर[26] बरजा,[27] औ मिरगावति छोह[28] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) लडाई। २–(म०) कुँवर; (बी०) एहि रे। ३–(म०) सँवरा; (बी०) सौंरा। ४– (म०) एक उँकार; (बी०) एककर। ५–(म०) करतारू। ६– (म०) बिकरम राय। ७–(म०) उबारू। ८–(बी०, म०) जलमधर। ९–(बी०, म०) कुवाँ। १०–(ए०) नहिं राखेव। ११–(ए०, म०) तै। १२–(बी०) अँतरहि गा पवन अधारा। १३–(म०) सकबन्धौ; (बी०) सकबंधौ न। १४–(ए०) बिनहिं; (बी०) मोहि; (म०) मुहि। १५–(बी०) तोलानी। १६–(बी०) तेहि। १७–(बी०) परयो; (म०) परेउँ। १८–(बी०) अलत। १९–(म०) उबरा; (बी०) उबरे। २०–(म०) सिरपालहिं; रस पालहि। २१-२२–(म०, बी०) ×। २३–(बी०, म०) दुख। २४–(बी०) भयो। २५–(बी०, म०) ×। २६–(म०) करै। २७–(बी०) बरजा कर। २८–(म०) और मिरगावति कर मोह; (बी०) और मिरगावती मोह।

टिप्पणी—(१) अडाइ–गिराकर।
(२) एककार–एक ओंकार।
(३) अलप अल्प; थोडा; हुत–था।

२७६

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पानी पानी चहुँ दिसि सूझा। मग अमग[1] न जाई[2] बूझा ॥१
सूरज[3] गिरिबन[4] होइ[5] थल[6] जाई। सवति[7] कै[8] रूप रैन होइ[9] आई ॥२
रैन डरावन[10] चहुँ दिसि पानी। लहर[11] आउ[12] डर[13] जियहिं[14] सुखानी ॥३
बहु दुख भार परेउ[15] सिर आई। जीउ र[16] कठिन अब[17] निकसि न जाई ॥४
बिधि कर[18] लिखा न जानै कोई। कै वह सुख कै यह दुख होई ॥५
रहतहिं[19] एक सथ[20], बोलत बोल बिछोही[21] ।६
अब सपनैं[22] भेंट, दई दिखाउ त[23] देखी[24] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(ए०) मगु अमगु। २-(म०)जाइ नहि; (बी०,ए०) जाय नहि। ३-(ए०,बी०, म०) सूर। ४-(ए०) कुरुव; (बी०) कर तपत। ५-(म०) ×; (ए०) मै रे, (बी०) होय। ६-(म०) अस्थल। ७-(ए०, बी०) सुस। ८-(म०) क। ९-(ए०) रैनि होय। १०-(ए०,बी०) डरावनि। ११-(ए०,बी०) लहरि। १२-(ए०,बी०) आव। १३-(ए०) बड। १४-(ए०,बी०)जीभ। १५-(ए०,बी०)परेव। १६-(ए०,बी०) रे। १७-(बी०) अति। १८-(ए०) कै। १९-(ए०) रहतेहि, (बी०) रहत अहे। २०-(म०, बी०) साथ; (ए०) समीप। २१-(ए०) बिछोहियें; (बी०) बिछोह दिया। २२-(बी०) सपनै बर; (ए०) अब जौ भेट, (म०) सपने मै। २३-(ए०) देअ देखाव तो, (बी०) देइव देखाव तो। २४-(बी०) देखिये।

टिप्पणी—(२) सवति–सौत।

२७७

(दिल्ली, एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुँवरहिं इहाँ[१] परेउ[२] दुख भारी। उहाँ[३] आगि उर उठी[४] जो नारी[५] ॥१
कहिसि[६] सखी[७] सेंउ[८] सुनहु न बाता। सुख महँ दुख र[९] उठेउ[१०] कछु[११] गाता ॥२
जो तुम्ह[१२] कहहु तो र[१३] घर जाऊँ। भरम उठै[१४] जिउ आह न ठाऊँ ॥३
पुरुख जात बरजा न कराई[१५]। ओबरी[१६] जनि[१७] र[१८] उघारै जाई ॥४
जाइ देहु मोर जिउ भरमाँनाँ। अन्त रहै[१९] पछताउ निदाना ॥५
जाइ देहु र[२०] सहेलिंह[२१] घर कँह,[२२] मोर जीउ घसि घसि जाइ ॥६
ततखन[२३] चेरि[२४] पुकारति[२५] रोवति,[२६] धाई[२७] बिकली[२८] आइ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(म०) उहाँ; (बी०)उहाँ रे। २-(ए०) परेव। ३-(ए०,बी०,म०) इहाँ ४-(ए०) उठै। ५-(बी०) उटी उर नारी। ६-(बी०) कही। ७-(बी०) सखिन। ८-(म०) सो, (ए०, बी०) सौं। ९-(ए०, बी०) ×। १०-(ए०, बी०) उठेव, (म०) उठी। ११-(म०)×, (ए०, बी०) हम। १२-(ए०) तोह। १३-(ए०) रे; (बी०) ×। १४-(ए०, बी०) उठा। १५-(बी०) नहि करै। १६-(म०, ए०) उबरी। १७-(ए०) जनु। १८-(ए०) रे; (बी०) ×। १९-(म०,बी०) रहहिं। २०-(ए०,बी०) ×। २१-(ए०,बी०) सखि। २२-(म०) ×। २३-(बी०) तेहि खन; (ए०) बिच खन। २४-(बी०) चेरी; (ए०) चीर। २५-(ए०) बिकारत। २६-(ए०) × । २७-(म०) ×। २८-(बी०) बिलखी।

टिप्पणी—(३) भरम–भ्रम; सन्देह।
(५) भरमाना–उद्विग्न। पछताप–पश्चाताप।
(६) घसि-घसि–बैठा।
(८) ततखन–तत्काल। धाई–दासी। बिकली–परेशान।

२७८

(दिल्ली, एकडला; मनेर; बीकानेर)

कहसि रानि[1] तुम्ह बैठहु[2] काहा। सूरहि[3] लै[4] र[5] उड़ायउ[6] राहा[7] ॥१
सुनतहि[8] यह[9] वै[10] चकित भूली[11]। देखत रही आउ[12] न[13] बोली ॥२
घरी एक ऊपर[14] समुझाई। कहसि चेरि तैं का कहि[15] आई ॥३
चेरी कहा दुदिस्टिल हरा। कबिरा दानौं कै अपकरा[16] ॥४
सुनतहि जइस[17] रे[18] पिंगलहि[19] कीन्हा। भयउ[20] चाह ततखन जिउ दीन्हा ॥५
हँस रहा किह[21] कारन घट मँह[22], पिउ बिहरेउ[23] सर सुक्ख[24] ।६
हा कुठिल[25] बिरहानल कै[26] छल[27], जानहु[28] पतंग[29] झरुक्ख[30] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) रानी। २–(ए०) बैठेउ; (म०) बैठि। ३–(ए०, बी०) सुरही। ४–(ए०) लेअ। ५–(ए०,बी०,म०) रे। ६–(ए०,बी०) उड़ानेव। ७–(ए०) काहा। ८–(ए०) सुनत। ९–(ए०) बात; (म०) फिरी (अथवा बहुरी)। १०–(ए०) वोह; (म०) ×। ११–(बी०) सुन तेहि रही जनौ चक्रित भूली। १२–(ए०) आव; (बी०) और। १३–(बी०) नहिं। १४–(बी०) पर। १५–(ए०) का कहै। १६–(ए०) उपकरा, (बी०) गै पकरा। १७–(ए०, बी०) सुनतेहि जस। १८–(म०, ए०, बी०) ×। १९–(ए०) पिंगलै, (बी०) पिंगला। २०–(म०) उहो; (ए०,बी०) एहौ। २१–(ए०, बी०) केहि। २२–(ए०) मा। २३–(ए०, बी०) बिहरा। २४–(ए०, बी०) सरसक्क। २५–(ए०, बी०) हाकल, (म०)×। २६–(म०) कठिन; (बी०) ×। (ए०) खेलन। २७–(ए०, बी०, म०) ×। २८–(म०) भानु। २९–(म०) पवन; (ए०) पंक; (बी०) पंख।

टिप्पणी—(३) समुझाई–समुझ आई। का–क्या।
(४) अपकरा–अपकार।

२७९

(दिल्ली; एकडला, मनेर, बीकानेर)

गहि गहि हँस[1] काढ़ि न जाई। पाँख जरै[2] नहिं जाइ[3] उड़ाई[4] ॥१
रोवइ[5] कहै काह सुख[6] करौं[7]। आनि देहु बिस खात[8] जो मरौं ॥२
तोरि तोरि केस पलेटै[9] हाथा। किह[10] अवगुन[11] हम बिछरेउ[12] साथा ॥३
ऊभै[13] होइ धरि[14] लेइ[15] पछारा। मरै चाह वहि[16] दई[17] उबारा ॥४
सखी सहेलीं धरहिं कर हाथा। रानि[18] समुझि बिधि मिरियहिं[19] साथा ॥५
जस र[20] सिय[21] कहँ[22] दिन दस[दुखपरा][23], राँम क[24] भयउ[25] बियोग ।६
वस[26] र[27] भयउ[28] तुम्ह[29] कलजुग, सो[30] मिरियहिं फुनि जोग[31] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

२–(बी०) निकसि। २–(ए०, म०) जरी। ३–(म०) उचाई; (ए०, बी०)

जाय। ४–(ए०) अगाई। ५–(ए०) रोवै; (बी०) रोइ रोइ। ६–(ए०) सुखि; (बी०) सखि। ७–(ए०,बी०) करउँ। ८–(म०, ए०) खाय। ९–(ए० बी०,म०) पलटै। १०–(ए०, बी०) केहि। ११–(ए० बी०) औगुन। १२–(ए०, बी०) बिहरा। १३–(म०) ऊभो; (ए०) ऊभी; (बी०) ऊभि। १४–(म०) होइधन; (बी०) होइधर; (ए०) खरभरि। १५–(बी०) खाइ; (ए०) लेए। १६– (ए०) उहि। १७–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १८–(ए०, बी०) रानी। १९–(बी०) मेरई; (म०) मरिबहि; (ए०) मरबै। २०–(म०,ए०,बी०) रे। २१–(ए०) सीय; (बी०) अर्जुन। २२–(बी०) कै। २३–(दि०, ए०) द्वापर; (म०) × । २४–(बी०) रामहि; (ए०) × । २५–(ए०, बी०) भयेव। २६–(ए०) उस। २७–(ए०, बी०, म०) रे। २८–(ए०) भयेव; (बी०) भयो। २९–(ए०) आह तोह। ३०–(म०) सेउ; (बी०) सिव। ३१–(बी०) मेरवहिं सँजोग; (ए०) मेरइहि जोग।

टिप्पणी—(१) पाँख–पख ।

(३) पलेटे–फेकै। अवगुन–अवगुण; अपराध।

(४) ऊभै–(क्री० ऊभना) उछलै।

(५) मिरियहिं–मिलावेंगे।

२८०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर;)

रोवइ[१] कर मलि मलि पछताई[२]। आवइँ[३] नैन पूरि झरि लाई ॥१
घन बरसहिं बहु[४] कहीं[५] न जाई। परलो जइस[६] रहा जग छाई ॥२
गंग तरंग भये[७] ईहं[८] पानीं। और सलिला[९] र[१०] अलप बड़वानी ॥३
पावस उघरि उघरि बरसाई। नैन न[११] उघरहिं झरि न घटाई[१२] ॥४
सूर क[१३] तपैं घटैं जग पानीं। लोयन भरे सुभर अतिवानीं ॥५
कुतुबन तूं लो गँभीरा[१५], अति रस के अतिवन्त[१६] ।६
सुअर नैन न सूखैं[१७] जल भरि भरि आवन्त[१८] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) रोवै। २–(ए०, बी०) पछिताई। ३–(ए०, बी०) उनये। ४–(बी०) अति। ५–(ए०, बी०) कहै। ६–(ए०) जैस; (बी०) जस। ७–(ए०) भई। ८–(ए०,बी०) एहि। ९–(ए०) सलिलो से; (बी०) सलोल। १०–(ए०,बी०) ×। ११–बी०) नैननि। १२–(ए०) झरहिं घनाई; (बी०) झर न घुटाई। १३–(ए०,बी०) के। (ए०,बी०) तैंव ते गम्भीर। १६–(बी०) सर सूखेउ अनिवन्त (ए०) सर सुकेउ नवन्त। १७–(ए०) सूखहिं नहिं एक खिन; (बी०) सूखहिं। १८–(बी०) उनंत।

टिप्पणी(१) झरि–झड़ी।
(२) परलो–प्रलय।
(३) अलप–अल्प; थोड़ी। बड़वानी–विशाल।
(४) उघरि उघरि–रुक रुककर।

२८१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यह र[1] बात घर घर[2] बहिराई[3]। उठा अकूत[4] नगर अकुलाई[5] ॥१
आपुहि आपु न कोउ[6] सँभारा[7]। घर घर नगरी परा खभारा ॥२
नगर काहु अन पानि न भावा[8]। मिरगावति[9] निसि रोइ[10] बिहावा[11] ॥३
दिन भा रैनि गई अँधियारी। रोवत पचत मरत[12] दुख भारी ॥४
कहिसि कहाँ सुधि पावौं[13] नाहाँ। को र[14] करै[15] हम ऊपर छाहाँ ॥५
पेय[16] वियोग भौ[17] सकती बान, जो लागेउ[18] मुहि[19] र[20] अपूर ।६
को आनै हनिवंत[21] जिउँ[22], सजन[23] सजीवन[24] मूर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।
१–(ए०, बी०) रे। २–(ए०) खर। ३–(ए०) भरि आई, (बी०) फिरि आई। ४–(ए०) अकोत; (बी०) अकुताइ। ५–(बी०) कुललाई। ६–(ए०) कोई। ७–(बी०) बाप पूत धिय मन सँभारा। ८– (ए०, बी०) खावा। ९–(ए०, बी०) मिरगावती। १०–(ए०, बी०) राय। ११–(ए०) पोहावा। १२–(ए०) मरना। १३–(बी०) पाऊँ। १४–(ए०, बी०) रे। १५–(बी०) करहि। १६–(बी०) जस। १७–(ए०, बी०) भा। १८–(ए०) लागेव; (बी०) लेइउ। १९–२०–(ए०, बी०)×। २१–(ए०, बी०) हनिवंत वीर। २२–(ए०, बी०) जेव। २३–(ए०) साजन; (बी०) सजनी। २४–(ए०) साँचेव; (बी०) जीवन।

टिप्पणी—(१) बहिराई–फैली। अकूत–अपार।
(२) खभारा–खलबली।
(३) अन्न पानी–अन्नपानी; खाना-पीना। बिहावा–बिताया।
(६) भौ–हुआ। सकती बान–शक्ति बाण; वह बाण जिसके लगनेसे लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये थे। अपूर–गहरा।
(७) हनिवंत–हनुमान। सजन–स्वजन; प्रिय। सजीवन मूर–सजीवनी बूटी जिससे लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हुई थी।

२८२

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

रोवत नैनहि दिस्टि[1] घटानी[2]। को र राम मिरवइ[3] सिय[4] आनी ॥१

को नल आनि दमावति[५] पासा। मरौं वियोग उरध[६] हम साँसा ॥२
को मिरवइ[७] सारस[८] संग जोरी। कै सराप दै लीन्ह[९] अजोरी ॥३
सखीं[१०] कहा रानी का रोवहु। मांगि[११] पानि बैसि[१२] मुख धोवहु ॥४
चलउ चहूँ दिसि ढूँढहि[१३] जाई। दानौं कँह लै जाइ[१४] पराई ॥५
यह र कहत मिरगावति[१५] सुनिके[१६], बैठी[१७] समुझि सँभार[१८]।६
साहन[१९] बोलि कीन्हि[२०] अस[२१] अज्ञा, चहुँ दिसि लागु गुहार[२२] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) द्रिस्टि। २-(ए०, बी०) खुटानी। ३-(ए०, बी०) मेरवै। ४-(बी०) सियहिं। ५-(बी०) आनै दमावती; (ए०) को तोलान दमावती। ६-(ए०) आध; (बी०) रामबीग अधिक। ७-(ए०, बी०) मिरवै। ८-(ए०) सारद; (बी०) सारंग। ९-(बी०) लिहा। १०-(ए०, बी०) सखिन्ह। ११-(ए०) मागहु; (बी०) माँगहि। १२-(बी०) बैठि। १३-(ए०) ढूंढ़त। १४-(ए०, बी०) जाय। १५-(ए०, बी०) मिरगावती। १६-(ए०) × । १७-(ए०) बैठेव। १८-(ए०, बी०) सँभारि। १९-(बी०) सानन्ह। २०-(ए०) कीन्हे; (बी०) कहिसि। २१-(ए०) उस; (बी०) यह। २२-(ए०, बी०) लाग गोहार।

टिप्पणी—(२) दमावति—दमयन्ती; राजा नलकी पत्नी। उरध—उर्ध्व; उल्टी साँस।
(३) सराप—शाप।
(५) दानौं—दानव।
(७) साहन—दूत। गुहार—खोज।

२८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कँह ढूँढै धाई[१]। रानी ढूँढहि करै उँफाई[२] ॥१
ढूँढहि[३] परबत अउर[४] पहारा। जल थल मइहर[५] बन[६] जो[७] अभारा ॥२
डंडाकारन[८] बीछ बनाहाँ[९]। जोगी[१०] भेस ढूँढ व[हि*][११] नाहाँ ॥३
जस र बिहंगम पूछत डोलै। पिउ कित[१२] गेला[१३] अउर[१४] न[१५] बोलै ॥४
मन दोमन[१६] झुरवइ[१७] बिकरारा। मुख पण्डुर[१८] कर पा न सँभारा ॥५
बिधि ये[१९] दिन कित[२०] निमये[२१], जिंह[२२] हम पिउ बिहरान ।६
इ बिधि आखर मेटेंहु[२३], नाँहुत[२४] जाहिं[२५] परान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) जाई। २-(ए०) अभाई; (बी०) अपनाई। ३-(ए०, बी०) ढूंढइ। ४-(बी०) और, (ए०) अरुन। ५-(बी०) महि। ६-(बी०) बनखंड। ७-(बी०) × । ८-(बी०) डडकरन। ९-(ए०) बीझु बनाहा; (बी०) बिंझ बनाहू।

१०–(ए०, बी०) जोगिनि। ११–(ए०) उइ; (बी०) तेहि। १२–(ए०, बी०) कतै। १३–(ए०, बी०) गा। १४–(ए०,बी०) और। १५–(बी०) नहिं। १६–(ए०, बी०) दुमन। १७ (ए०) चेहुरा; (बी०) चिहुर। १८–(ए०, बी०) पण्डर। १९–(ए०) ओहि; (बी०) यह। २०–(ए०, बी०) कत। २१–(ए०) निमयेव; (बी०) निरमयेव। २२–(बी०) जेहि; (ए०) नेही। २३–(बी०) अबहूँ बिवधर मेटियो; (ए०) अबहूँ बेखर भीत दै। २४–(ए०, बी०) नहि तौ। २५–(बी०) तजौं।

टिप्पणी—(१) उँफाई—उपाय।

(२) पहारा—पहाड।

(३) डंडकारन—दण्डकारण्य। बीछ—बीच।

(४) जस—की तरह। बिहंगम—पक्षी। डोलै—फिरै। पिउ—पी। कित—किधर। गेला—गया।

(५) कर पा—हाथ-पैर।

(६) निमये—निर्माण किया। बिहरान—बिछुड़ गया।

(७) नाँहुत—नहीं तो।

२८४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चलै परान टेकि नहिं जाई। को बिलँबाउ खिनक[2] बौराई ॥१
गयेउ[3] सुहाग भयउँ[4] अब राँडा। जीँह[5] दसन सेंउ[6] चाहसि[7] खाँडा ॥२
ततखन धाइ[8] जनाँ इक[9] आवा। राकस कहिसि धरै वह पावा ॥३
जीँह[10] जो खांडे चाहति अही। हाथ सँकोरि समुँझ कै रहीं ॥४
कहिसि काह[11] बिन पूछें[12] मराऊँ[13]। जो कछु[14] भयउ[15] तौं[16] चिय[17] रचि[18] जराऊँ[19] ॥५
देवहि लागि जनाँ सौ दोइ एक[20], लै आयहिं[21] घिसियाइ ।६
जस र[22] चाँट[23] बड़ भुनगा[24], भार उचाइ न जाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(म०) को बिलँवावइ; (बी०) कोइल नावै; (ए०) कोइल बाउ। २–(बी०) ज्यौं खिन। ३–(बी०) गयो ; ४–(बी०) भयो। ५–(बी०) जीभ। ६–(बी०) से। ७–(बी०) चाहै। ८–(बी०) धाय। ९–(म०, बी०) यह। १०–(बी०) जीभ। ११-(बी०) का। १२–(म०, बी०) पूछै बिनु। १३–(म०, बी०) मरौं। १४–(बी०) किछु। १५–(म०) होइ; (बी०) भवा। १६–(म०, बी०) ×। १७–(म०) चीव। १८–(बी०) रची। १९–(म०, बी०) जरौं। २०–(म०, बी०) ×। २१–(म०) आयउ; (बी०) आयो। २२–(बी०) रे। २३–(म०) चाँटहि; (बी०) चाँदी। २४–(बी०) फॅनिगा ऐचत।

टिप्पणी—(१) टेकि—रोक। बिलँबाउ—भुलाने की चेष्टा करें। खिसक—क्षणमें।
(२) राँडा—राँड; विधवा। जींह—जीभ। दसन—दाँत। खाँडा—काटना।
(३) ततखन—तत्क्षण। धाइ—दौड़कर। जनाँ—व्यक्ति। धरै—पकड़ा।
(४) सँकोर—सकोच; रोक।
(५) चिंय—चिता।
(६) घिसियाइ—घसीटकर।
(७) चाँट—चीटा। भुनगा—कीडा। भार—वजन। उचाइ—उठा।

२८५

(दिल्ली; एकडला, मनेर; बीकानेर)

पूछैं लाग न बकतै बाता। तेल अवटि[१] कै छिरकहिं[२] गाता ॥१
पौन बाँधि मुँह चुप कै रहा[३]। जस बनमानुस बकत न कहा[४] ॥२
जस गूँगा बाउर[५] बउराई[६]। बकत न जाइ[७] जीह[८] लपटाई ॥३
जो कछु बकत तो कहै [कुभासा*][९]। नाँहुत[१०] मूँद रहै मुँह[११] साँसा ॥४
बहुत कहहिं यहि मार पबारी[१२]। बहुतै कहहिं चियँ रचिकै[१३] जारी[१४]॥५
अउरहिं[१५] कहा न मारै[१६] यहकहँ[१७], भरिये[१८] चरी[१९] तिरकूट ।६
अबहुत[२०] बजर जो हो[२१] इक ठाँ[२२], तो न यह[२३] बँदि[२४] छूट ॥७

पाठान्तर–एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।
१–(ए०, बी०) औटि। २–(म०) छिरकै; (बी०) छिरकावहिं। ३–(म०) पौन बाँधि मुनि होइ के रहा, (ए०) मौन बाँधि मुनि होए के रही; (बी०) मौन बाँधि कै मुनि होइ रहा। ४–(ए०) चही। ५–(बी०) बौरा। ६–(ए०, बी०) बौराई। ७–(म०) आउ; (ए०, बी०) जाय। ८–(ए०, बी०) जीभ। ९–(दि०) कुबासा; (ए०, बी०) कबासा। १०–(ए०) नाही तो; (बी०) नाहिं न। ११–(ए०,म०,बी०) मन। १२–(ए०, बी०) पवारी। १३–(ए०) ×। १४–(म०) पूर्वांश की पुनरुक्ति; (बी०) बहुतै कहैं चीरि चीरि जारियै। १५–(ए०, बी०) औरन्ह। १६–(ए०, बी०) भारी। १७–(ए०, बी०, म०) ×। १८–(ए०, बी०) बहुरि। १९–(ए०, बी०) चढै। २०–(बी०) अहुट अहुट जउ होइ एक ठाई; (ए०) अहुट वज्र जो होहिं एकठाँ। २२–(म०) तोउ न; (ए०, बी०) तौहु न यहि। २४–(ए०, बी०) बन्दी।

टिप्पणी—(१) अवटि—खौलाकर। छिरकहिं—छिड़कते है। गाता—शरीर।
(२) पौन—पवन।
(५) पबारी—(क्रि० पवारना) नष्ट कर दो। चियँ–चिता।
(६) भरिये—बन्द कीजिये। चरी–गुफा। तिरकूट—त्रिकूट।

२८६

(दिल्ली, एकडला; मनेर;[1] बीकानेर)

जब चलि बावन बाँधि अडारा। कैसहु छूट[1] न[2] रहे पतारा ॥१
मिरगावती कहा[3] यहि[4] जारों। यहि कै[5] जात जहाँ लग[6] पारौं[7] ॥२
जस र[8] जलमदेउ साँप[9] पबारी[10]। सबै आन[11] हुतासन जारी ॥३
बाप क[12] बैर[13] जस[14] र[15] वै[16] लीन्हाँ[17]। तस हौं[18] करौं होइ[19] हम चीन्हा ॥४
बहुरि कहिसि इँह[20] अइसहिं[21] जारों। तुरत न[22] मरै बहु[23] दुख सेंउ मारौं[24] ॥५
बाँधन जस चाहहु काठ[25], सँकती [जरहु][26] कर पाउ[27] ।६
बजर[28] काँठ[30] अस[31] घालहु, इँह[32] जग[33] जैसैं[34] उघर[35] न काउ ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(दि०) झीन (ते के स्थान पर स्पष्ट नून है) । २–(बी०) नहि छूटै । ३–(ए०, बी०) कहै ; (म०) कहि । ४–(म०) यहि ऐसैं । ५–(ए०, बी०, म०) की । ६–(म०, ए०) लहि ; (बी०) तहाँ लौं । ७–(म०, बी०) मारौ । ८–(बी०) रे ; (म०, ए०) ×। ९–(ए०, बी०) जलमदेव । १०–(ए०, बी०) विभारी । ११–(म०) चिंउ रचि सबै; (ए०) जग रचि सबै, (बी०) जगत जहु रचि सबै । १२–(ए०) पारख; (बी०) परीखस। १३–(बी०) राजैं । १४–(ए०) जैस। १५–(म०) रैं; (ए०, बी०) ×। १६–(ए०)उए, (बी०) वोहि। १७–(म०, ए०, बी०)कीन्हा। १७–(ए०) मैं । १९–(ए०, बी०) होय । २०–(ए०) ओहि; (बी०) एहि । २१–(ब०) अइसै, (ए०) औ सय; (बी०) ऐसन । २२–(म०, ए०) ×। २३–(म०) ओहि । २४–(ए०) से । २५–(बी०) तुरित न मरौ दुख कै इहि मारौं। २६–(म०) बाँधहु जस र कहा तुम्ह; (ए०) बाँधहु जसरे जानहु करहु तोह; (बी०) बाँधहु जाइ जसरे तुम्ह जानहु ।२७–(दि०) जस, (ए०) सुगढ़ जरे । २८–(ए०, बी०) पाँव । २९–(बी०) वज्र । ३०–(ए०, बी०) गाँठि । ३१–(बी०) तस । ३२–(बी०) एहि; (म०)×। ३३–(म०)×। ३४–(ए०) जी ओ। ३५–(बी०) छूट; (ए०) उघरै ।

टिप्पणी—(१) पतारा—पाताल ।

(२) जारौं –जलाऊँ। जात–जाति। पारौं–पाऊँ।

(३) जलमदेउ–जनमेजय । पबारी–विनाश किया । आन–लाकर। हुतासन–अग्नि ।

(७) घालहु–डालो । उघर–निकल ।

१—इस प्रति में पंक्ति ३ और ४ परस्पर स्थानान्तरित हैं ।

२८७

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कर पाछेउँ[1] कर[2] हथकरि[3] बाही। सँकती[4] लाग किह[5] अब जाही[6] ॥१
सिंकरी[7] गेरि[8] पाॅव उन्ह[9] बांधे। पाउँ[10] बाँधि मेलहि[11] वह[12] काँधे ॥२
भैंसहि[13] केर चाम जो आनाँ। लाग[14] पलेटै तो अकुताना ॥३
कहिसि कहों जो छाड़हु मोही। कहहिं कहसि तौ छाड़हु तोही ॥४
उन्ह मँह एक[16] कहा कित[17] जाई। छाड़ि देहु मकुहिं[18] कहाई ॥५
पाव छोर बैसावहिं[19], देवहि[20] फुसलावइ बोराइ।६
जो र[21] साँच फुर बोलसि[22] हमसेउँ, छाड़ देहि बहिराइ[23] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।
१–(म०) पाछो; (ए०, बी०) पाछू। २–(म०) लै; (ए०) कै। ३–(म०, ए०) हथकरी; (बी०) हथकर। ४–(ए०) सीखै। ५–(बी०) कहै। ६–(बी०) चाही। ७–(बी०) सकरी। ८–(ए०, बी०) लै रे। ९–(म०) पावँहि। १०–(ए०, बी०) पाव। ११–(म०, ए०) मेले; (बी०) मेलिन्ह। १२–(ए०, बी०, म०) उहिं। १३–(ए०, बी०) भैसन्ह। १४–(बी०) लागे। १५–(ए०, बी०) छाॅडहि। १६–(बी०) ×। १७–(ए०, बी०) कत। १८–(म०) मकु करै; (ए०) मकुरे; (बी०) मकु कुरहिं। १९–(ए०, बी०) बैसारिन्हि। २०–(ए०) ×। २१–(म०) तूँ; (बी०) तैं। २२–(ए०) जो तौ साज भो रै निसि। २३–(म०, ए०, बी०) ×। २४–(ए०) बिहराय; (बी०) बिगराय।

टिप्पणी—(१) पाछेउँ–पीछे। हथकरि–हथकडी। बाही–डाली। सँकती–सख्ती; कठोर व्यवहार।
(२) सिंकरी–जजीर। गेरि–डालकर।
(३) केर–का। चाम–चमडा। लाग–लागे। अकुताना–व्याकुल हुआ।

२८८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कहसि कुँवर[1] मैं इँहवहि[2] छाड़ा। हौं रे भागि परेउँ इक[3] गाड़ा[4] ॥१
कुँवर कछु[5] र[6] नहि कीन्हि[7] मँदाई। हौं कस उन्ह[8] लै जाॅउ बोराई[9] ॥२
बहु फुसलावहि ना र[9] पसोजा। पाथर[10] कठिन पानि[11] न भीजा[12] ॥३
कैसो[13] बरसो[14] हरा न जामाँ[15]। बहु बौराइ रही वह रामाँ[16] ॥४
बाँधै[17] जो र[18] कहै कँह[19] कहई[20]। छाड़े[21] तो र[21] अवाँक[23] होइ रहई ॥५
ताकर हिरदो [वज्रकै][24], कैसहुँ छाड़[25] न रोस।६
हिरद करेज[26] न जाइ मुँहि[27], तिह अवगुन न दोस[28] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(म०) ईहो; (बी०) उँहइ। २–(म०) यक; (बी०) एक। ३–(बी०) खाँडा। ४–(म०) कछू; (बी०) दहु किछु। ५–(म०) ×। ६–(बी०) किई। ७–(बी०) उन्हहि। ८–(म०, बी०) उड़ाई। ९–(म०) नाहिं; (बी०) नाहिं रे। १० (बी०) पथरहु। ११–(बी०) बान। १२–(बी०) बेझा। १३–(ए०) गयो। १४–(म०) बरसै। १५–(बी०) कैसे बरीस हरन जाई। १६–(बी०) बहु फुसलाइ रहै बौराई। १७–(म०, बी०) बाँधहि। १८–(म०, बी०) रे। १९–(म०) को; (बी०) मकु। २०–(म०) हई (?)। २१–(बी०) छाडि देहि। २२–(म०, बी०) ×। २३–(बी०) अवाग। २४–(बी०) दोइसै (?) (बी०) तीखर दई हिंदै रोइ यह। २५–(बी०) छाँड़ै। २६–(म०) करेस। २७–(म०) जामै; (बी०) हरेउ जो कुलीसन भय मोही। २८–(ए०) पिय कहँ अवगुन दोस; (बी०) की औगुन दोस।

टिप्पणी—(१) इँहवहि–यहीं। गाढ़ा–गड्ढा।

(२) ना–नहीं। पाथर–पत्थर। भीजा–भीगा।

(३) कैसो–किसी भी प्रकार। बरसो–बरसै। जामाँ–जमै। रामाँ–रमणी।

(४) अवँक–अवाक्; मूक।

२८९

(दिल्ली; एकडला; मनेर,[१] बीकानेर)

चौदह विद्या भोज निदानाँ। बररुचि एक अधिक यह[१] जाना[२] ॥१
राजैं हार धरै कहँ दीन्हा। लै र[३] छुपायसि[४] दइ न[५] चीन्हा ॥२
धरसि तहाँ[६] जो र[७] बखाना। राइ[८] कोप बूझि नहिं मानाँ[९] ॥३
तस ई[१०] धरी[११] न[१२] मानै काऊ। अँगइसि सबै जिय कन[१४] चाऊ[१५] ॥४
बाँधि बहुरि उन्ह[१६] चाम लपेटा। करै[१७] गुहार[१८] जस[१९] सुवरि क घेंटा ॥५
घाल अस कै खलरी[२०] भीतर[२१], मूद[२२] बजर कै [दीन्ह[२३]] ॥६
दई[२४] पुहुमि जो सैंतहि[२५] आपुन[२६], तौ लोगहि[२७] उन्ह[२८] कीन्ह ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(म०) नहिं; (बी०) ×। २–(बी०) सयाना। ३–(ए०, बी०, म०) रे। (बी०, ए०) छपाइसि। ५–(ए०, बी०) नहिं। ६–(ए०) न चहे (?)। ७–(बी०) लै जीव। ८–(दि०) नाँइ (?)। ९–(ए०) न वै एको पूछै भैए माना; (बी०) नैन रूप पूछै नहि माना। १०–(ए०) अे; (बी०) यह। ११–(ए०, बी०, म०) धरा। १२–(बी०) नहिं। १३–(म०) कै; (बी०) कीनि। १४–(बी०) ×। १५–(ए०, बी०) जाऊ। १६–(ए०) उठ। १७–(बी०, म०) कर; (ए०) करा। १८–(ए०, बी०) गोहारि। १९–(म०) जैस। २०–(ए०, बी०, म०) कोठी। २१–(ए०, म०) ×। २२–(बी०) मूँदिसि। २३–(दि०) लीन्ह। २४–(म०, बी०) देव;

---

१. इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४ और ५ क्रमशः ४, ५, ३ हैं।

(ए०) दैय । २५-(म०) होहिंह । २६-(बी०) पुन; (ए०, म०) × । २७-(म०, ए०, बी०) तौलहिं । २८-(बी०) × ।

टिप्पणी—(१) निदानाँ—निपुण ।

(२) चीन्हा—चिन्ह ।

(५) चाम—चमड़ा । गुहार—पुकार । जस—जैसे । सुवरि क बेंटा—सूअर का बच्चा ।

(६) घाल—डालकर । खलरी—चमड़ा ।

(७) सैंतहिं—सुपुर्द करते हैं ।

२९०

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

वहि तो बाँधि पठायउ[1] काँऊँ[2] । ढूँढउ[3] इहाँ तिह[4] आनों[5] ठाऊँ ॥१
मिरगावती[6] कहै[7] का[8] करऊँ । सग्ग चाह कोउ[9] कहै[10] त[11] चढ़ऊँ[12] ॥२
जो कोउ[13] कहै कि[14] आहि पतारा । हनिवँत जैस करों उपकारा ॥३
लंक[15] टेक कर[16] रोवइ[17] ठाढ़ी । काह करों जिउ जाइ[18] न काढ़ी ॥४
[सोंक सूख*] सिर धुन रोवइ[19] । साँरंगि-नैनि[20] रुधिर[21] मुँह[22] धोवइ॥५
पिव बियोग धनि[23] भूली, इँह[24] बर[25] चीर सीस न[26] सँभार ।६
बेनी जानु[27] उरगहि[28], कष्ट न[29] कहैं[30] मँजूर पुकार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०) पठावइ, (ए०, बी०) पठाइन्ह । २-(ए०, बी०) गाऊँ । ३-(ए०, बी०) ढूँढहि । ४-(ए०) तो; (बी०) एहि । ५-(ए०, बी०) अनवन । ६-(म०) मिरगावति । ७-(म०) कहहि । ८-(बी०) सखि । ९-(ए०, बी०, म०) कोइ । १०-(म०) × । ११-(म०) तिंह; (ए०, बी०) तो । १२-(म०) चढो । १३-(म०) को । १४-(म०) किंह; (ए०, बी०) की । १५-(ए०,म०,बी०) डार । १६-(ए०) कै, (बी०) कर टेकि । १७-(म०) रोये; (ए०,बी०) रोवै । १८-(ए०,बी०) जाय । १९-(बी०) सुसर कठ सु (?) सर रोवै । २०-(ए०, बी०) सारग नैन । २१-(ए०) रुहिर; (बी०) रोइ; (म०) रोहि । २२-(ए०) मुख । २३-(ए०,बी०) धन । २४-(ए०, बी०, म०) × । २५-(म०) न सीस; (ए०) सीस चीर न । २७-(ए०, बी०) जानो । २८-(बी०) उरगिहिं । २९-(बी०) कीन्ह; (ए०, म०) × । ३०-(बी०) अहि; (म०) कहतैं ।

टिप्पणी—(३) पतारा—पाताल ।

(५) सारंगि-नैनि—मृगनयनी ।

(६) धनि—स्त्री ।

(७) उरग—सर्प । मँजूर—मयूर; मोर ।

२९१

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

कुहुक उठी जनु[1] पंचम बोली । सुनत[2] सबद पावस रितु[3] डोली ॥१
बिहरत अधर भँवर[4] गँध पाई । कँवल किहाँ[5] लागेउ[6] रस आई[7] ॥२
घुमकर डसि[8] बिरहिन अकुलानी[9] । ई[10] र[11] अवस्था[12] तुरत[13] भुलानी ॥३
आइ[14] अखार[15] अम्मर गहिराना[16] । पवन[17] आहा[18] उन्ह[19] आवत[20] जानाँ ॥४
पवन सँदेसा लेहि ले चल[21] भँवर गुन । मालत यह र[22] अवस्था कहियहु[23] तुम बिन[24] ॥५
जप माला कै नाँउँ[25], जिह[26] जिउ रहे ।६
निसि बासर बिब तस[27], पिउ गुन हिय[28] दहै[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) जनि; (बी०) जनौ । २–(ए०) सप । ३–(बी०) रित; (ए०) रवि । ४–(ए०) भौर । ५–(ए०) घानि । ६–(ए०) लागेव । ७–(बी०) लागी । ८–(बी०) दसन; (म०) दस, (ए०) डस । ९–(बी०) अकुलानी । १०–(ए०) ऐहि; (म०, बी०) यहि । ११–(ए०, बी०, म०) × । १२–(ए०) अवसर । १३–(ए०, बी०) तरुनि । १४–(बी०) उये; (ए०) उनै । १५–(ए०) अखर; (बी०) अकर । १६–(बी० ए०) घहराना । १७–(ए०, बी०) पौन । १८–(बी०) आइ; (ए०) आह; (म०) उठा । १९–(बी०, ए०) उन; (म०) तिंह । २०–(ए०, बी०) और न । २१–(ए०, म०) लै रे चला; (बी०) सुनसि न मोरा । २२–(ए०) ऐहरे । २३–(ए०) कहे न । २४–(म०) यह अर्धाली नहीं है; (बी०) बन मालती बिरहे मोहि तोरा । २५–(ए०, बी०) नाव; (म०) नॉव तुम । २६–(म०) जपथहिं; (बी०) जपतेहि; (ए०) जावथिर । २७–(म०) तैसहि; (ए०) बिन तिसि; (बी०) तीसहु । २८–(बी०) छिदै । २९–(ए०, बी०) डहै ।

टिप्पणी—(२) किहाँ—के पास ।
(३) डसि—दंश ।
(४) अखार—आषाढ़ । अम्मर—अम्बर ।

२९२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

पवन सँदेसा लै र[1] उड़ाई । ढूँढि भँवर कहँ[2] लीनसि[3] जाई ॥१
देखत भँवर बिपत बड़ परी । बाँधेउ[4] भँवर कँवल कै करी ॥२
भँवर लुबुध तो[5] कँवलहिं[6] आवइ[7] । यह र[8] अवस्था करम बँधावइ[9] ॥३
पवन भँवर सेंउ[10] कहेउ[11] सँदेसा । जो र[12] अहा[13] मालति कर भैसा ॥४
मालति[14] नाँउ[15] सुनत[16] जिउ[17] पावा । रोइ दिहिसि मन घबरावा[18] ॥५

बिबिरेता केउ न जानै[१९], दुहुँ चित एकै रत ।६
मालति मन मधुकर बसै, मधुकर मन मालत ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१-(म०, बी०) रे। २-(बी०) कहु। ३-(बी०) लीतिसि। ४-(म०, बी०) बाँधिसि। ५-(बी०) × । ७-(म०) कँवल कहँ। ७-(बी०) आवै। ८-(बी०, म०) रे। ९-(बी०) बँधावै। १०-(म०, बी०) सों। ११-(बी०) कह्यो। १२-(बी०) रे। १३-(म०) इहाँ; (दि०) आहा। १४-(बी०) मालती। १५-(बी०) नाव। १६-(बी०) सुनी। १७-(बी०) जिव। १८-(बी०) जिउ गहबरि आवा। १९-(म०) बिबि र उचाता किमि जानै; (बी०) बिबि राते किमि जानि नहि।

टिप्पणी—(१) लीनसि-लिया।
(२) करी-कली।
(६) केउ-कोई।

२९३

(दिल्ली, बीकानेर)

तुम्ह बिन जियैं चैन न[१] लेखा। सिन्दुर[२] सेत माँग मैं देखा ॥१
काजल[३] रात चन्दन भौ[४] ताता। सबै अवस्था कहिसि वहि[५] गाता ॥२
अति बियोग बिकली[६] बहु दूखी[७]। भँवर पाछ मालति पुनि सूखी[८] ॥३
तों[९] चाह वहि कोउ न कहई[१०]। ऊभि साँस[११] लै मरि मरि रहई[१२] ॥४
कहिसि देउ[१३] हौं तहाँ अडारा। कै सायर कै आह[१४] अकारा ॥५
किह सँदेस कहि पठवउ, को र बिपत कहि जाय[१५] ।६
सायर[१६] अगम अगोचर, तिह[१७] [ठाँउ पंखी][१८] न आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१-बिनु जिउ जीवन नहिं। २-सेंदुर। ३-काजर। ४-भव। ५-कियै वोहि। ६-बरकुली। ७-दुखी। ८-भँवर वाजु मालती बन सूखी। ९-तेहि। १०-केउ न कहाई। ११-ऊभि ऊभि। १२-जाई। १३-देव। १४-अही। १५-कहै संदेसा किहि पठऊँ पास न कोई, बिपति कहै को जाइ। १६-साइर। १६-तेहि। १८-(दि०) ठिक नाँउँ।

टिप्पणी—(१) सेत-श्वेत।
(२) रात-रक्त; लाल। भौ-हुआ। ताता-गर्म। गाता-शरीर।
(३) पाछ-पीछे।
(५) अकारा-आकार।

२९४

(दिल्ली; एकडला, मनेर; बीकानेर)

आज[1] सुदिन यह[2] आइ तुलाना। करम हमार दई[3] तिह[4] आनाँ ॥१
नाँहुत[5] को र कहत सुधि जाई। यहै[6] कहहु[7] जस देखहु आई ॥२
काह सँदेस देउँ वहि[8] भारी। बरजा कियेउँ[9] न रहेउँ[10] सँभारी ॥३
जाइ कहेहु[11] जस दई[12] कहावा[13]। काह कहौं कछु कहे न आवा[14] ॥४
सुनि र[15] पवन[16] यह[17] चलेउ[18] सँदेसा। गयउ[19] जहाँ मालति वह[20] भेसा ॥५
अति र[21] बियोग बियापी रामाँ, बिसभँर कछू[22] न सँभार[23] ।६
लाइ नैन दुइ मारग[24] राखिसि[25], भूली पन्थ निहार ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०) आजु। २–(बी०) मोर। ३–(ए०) दैअ। ४–(ए०, बी०) तोहि। ५–(ए०) नाहिं तौ; (बी०) नाहिन। ६–(बी०) यहइ। ७–(ए०, बी०) कहेहु। ८–(ए०, बी०) उहि। ९–(ए०) किएव; (बी०) कियो। १०–(ए०, बी०) रहेव। ११–(बी०) किहिसि। १२–(ए०) दैअ; (बी०) दइव। १३–(बी०) कहावै। १४–(बी०) आवै। १५–(ए०, बी०) रे। १६–(ए०, बी०) पौन। १७–(बी०) लै। १८–(बी०) चला। १९–(ए०, बी०) गएव। २०–(ए०) उहि; (बी०) कर। २१– (म०, बी०, ए०) रे। २२–(ए०) कुछु। २३–(बी०) अति रे वियोग व्याकुली पीरम भूली, चीर न सीस सँभार। २४–(ए०) ×। २५–(म०) राखी, (बी०) राखिसि मारग।

टिप्पणी—(१) तुलानाँ–निकट आया। करम–कर्म, भाग्य। हमार–मेरा।
(२) नाँहुत–नही तो।
(३) बरजा–वर्जित कार्य।
(६) रामाँ–रमणी।

२९५

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

पौन आइ[1] मालति सों कहा। भँवरहिं[2] बिपति कँवल मँह गहा[3] ॥१
सुरजन[4] सूर उदैगिरि[5] आई। दुरजन रैनि भँवर[7] दुख जाई ॥२
सुनतहिं[8] चाह बिपति गै भागी। सम्पति आइ[9] गात सुख[10] लागी ॥३
कहिसि[11] बेगि[12] चलु[13] पवन[14] सुहाई[15]। देखौं नैनहिं[16] जाहिं सिराई[17] ॥४
(सिरवै[18]) अमिय सान्त होइ गाता। सेंदुर सेत भयउ[19] सुनि[20] राता[21] ॥५
आनि[22] सजीवनमूर तुम्ह[23], महि[24] दीन्हों[25] अहिवात ।६
परान घटहिं घट राखहु[26], नाँहुत[27] अब न रहात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) आए। २–(ए०, बी०) मालती। ३–(ए०) भौरहिं; (म०) भौंर। ४–(म०) आहा; (बी०) भँवरा कली कँवल की गहा। ५–(ए०, बी०) सुरिजन। ६–(ए०, बी०) उदैकर। ७–(ए०) भौंर; (बी०) भौरे। ८–(ए०, बी०) सुनतेहि। ९–(ए० बी०) आए। १०–(बी०) सख। ११–(ए०) ×। १२–(ए०) खन एक। १३–(ए०) चली; (बी०) चल। १४–(ए०) पौन। १५–(ए०, बी०) सोहाई। १६–(म०, ए०, बी०) लोचन। १७–(ए०, बी०) सेराई। १८–(दि०) सनवै। १९–(ए०) भयेव; (बी०) भयो। २०–(ए०) तब। २१–(म०) निराता। २२–(बी०) आनिसि। २३–(बी०) तुम; (ए०) अमिय सीचेव मोहि तोह। २४–(ए०) तोंह; (म०) ×; (बी०) मोहि। २५–(ए०) दीन्हेव; (बी०) दियेहु। २६–(म०) परान घट न राखे; (ए०) परान घटत घट जाई; (बी०) प्रान घट घट राखेहु निसरता। २७–(ए०) नहीं तौ; (बी०) नाँहि तौ।

टिप्पणी—(३) गै–गया।

(४) सिराई–तृप्त।

(५) सिरवै–सराबोर हो। सेंदुर–सिन्दूर। सेत–श्वेत। राता–रक्त, लाल।

(६) सजीवन मूर–संजीवन मूल। (यहाँ रामायण-वर्णित हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाने की ओर संकेत है।) महि–मुझे। अहिवात–सुहाग; पति का अस्तित्व।

(१) रहात–रहत।

२९६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चला पौन मालति सँग लाई। भँवर आहा[1] जिह तिह[2] लै जाई ॥१
मालति[3] सूर कियेउ[4] परगासा। भँवर[5] छूट भयउ[6] कँवल[7] बिगासा ॥२
लोचन चार होत मिलि जाहीं। जस पानी मँह बूँद समाँहीं ॥३
दोइ[8] न[9] रहे एक[10] भो[11] गाता। वहि वह[12] रात[13] वह र वहि[14] राता ॥४
घरी एक ऊपर[15] बिहराने। तब[16] लगि काहुँ न[17] दोइ कर[18] जाने ॥५
जिउ जिउ एक परान घट[19], देखों बूछि समत्त[20]।
पसरीं पुरई[21] पिरित कै[22], छाइ रहे दुहुँ गत्त[23] ॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) अहा। २–(ए०) जेहि ठाँ; (बी०) तेहि ठाँ;। ३–(ए०, बी०) मालती। ४–(ए०, बी०) कियेव। ५–(ए०, बी०) भौर। ६–(ए०, बी०) भौ। ७–(बी०) कमल। ८–(ए०, बी०) दुइ। ९–(बी०) ना। १०–(ए०) एकै। ११–(बी०) मै। १२–(ए०) उहि उवह; (बी०) वह वोहि। १३–(बी०) राता। १४–(ए०)

उहि; (बी०) वोह वहि । १५–(बी०) घरी चारि पर । १६–(ए०) तौ । १७–(बी०) नहिं । १८–(ए०, बी०) रे दुइ । १९–(ए०) घट रहै; (बी०) एकै प्रान गति एकै । २०–(ए०) समथ; (बी०) समॉत । २१–(ए०) पुरइनि; (बी०) पुरइन । २२–(ए०) पिरीति की; (बी०) प्रीति की । २३–(ए०) गाथ; (बी०) गाल ।

टिप्पणी—(२) बिगासा–विकास ।
(३) लोयन–लोचन ।
(४) भो–हुआ ।
(५) घरी–घड़ी ।

२९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बहुरि[1] बिपति कै[2] बकतहिं बाता । जो र[3] अवस्था परी हुत[4] गाता ॥१
सुनत नीर लोचन भरि आये । सरिल[5] चुवहिं जम मोंति[6] सुहाये ॥२
बिहरन[7] आखर लिहै[8] न चलहीं[9] । तीनि लोक जो र[10] सब मिलहीं ॥३
जो कोउ झाँखि[11] अवटि[12] पचि मरई । बिध रूचत[13] आपन[14] पै करई ॥४
कहहिं[15] चलहु आपु घर कँह[16] जाही । बहुरि जाइ[17] रस केलि कराहीं ॥५
चले दोउ[18] जन रहसत[19] घर[20] कँह, नौ र भयउ[21] औतार ।६
नगर रहा हुत[22] निसि होइ[23] कारी, बहुरि[24] भयउ[25] उंजियार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ –

१–(ए०) बउरी । २–(ए०, बी०) की । ३–(ए०, बी०) रे । ४–(ए०, बी०) हुती । ५–(ए०) सलिल । ६–(ए०, बी०) मोती । ७–(बी०) फिरना । ८–(बी०) लिख न । ९–(बी०) चहहि । १०–(ए०, बी०) रे । ११–(ए०, बी०) झॉखि । १२–(ए०, बी०) औटि । १३–(बी०) रूचता । १४-(ए०) आपन रूचता । १५–(ए०, बी०) कहिन्हि । १६–(बी०) कहुँ । १७–(ए०) जाए; (बी०) जाय । १८–(ए०, बी०) दुऔ । १९–(बी०) रहसत चले दुवौ जन । २०–(ए०) × । २१–(ए०) रे भयव; (बी०) रे भयेव । २१–(बी०) जो होत रहा । २२–(बी०) जो होत रहा । २३–(ए०, बी०) भै । २४–(बी०) फुनि रे । २५–(ए०, बी०) भएव ।

टिप्पणी—(४) झाँखि–संताप करके । अवटि–अभिलाषा करके; इच्छा करके । पचि–पश्चात्ताप करके । बिध–ब्रह्मा; सृष्टि कर्ता । रुचत–अच्छा लगता है । आपन–अपने को । पै–किन्तु; लेकिन ।
(६) नौ–नया ।

२९८

(दिल्ली; एकडला; मनेर; बीकानेर)

नगर लोग सब आगे[1] आए[2]। बाजन बाजे लाग सोहाए[3] ॥१
बाजत आइ[4] नगर मँह पैठे[5]। नौ कै पाट[6] सिंघासन बैठे[7] ॥२
बैठि[8] सिंघासन दरब लुटावा। राँकहिं[9] न दारिद बहुरि[10] सतावा ॥३
दइके[11] कुँवर गयउ[12] बतसारा[13]। मिरगावति गै करी[14] सिंगारा ॥४
कय[15] जो[16] सिंगार कुँवर पहँ[17] आई। देखि बिमोहेउ[18] कछु[19] न कहाई[20] ॥५
संझा बन्दन निस भरन[21] पियहि पलटेउ[22] दाउ[23] ।६
रविसुत सारथि मन बसेउ[24], तब[25] बढेउ[26] अनुराउ[27] ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, म०) आगे सब। २–(बी०) नगर लोग मिल आग धावा। ३–(बी०) बधावा। ४–(ए०) आए। ५–(बी०) पैठा। ६–(बी०) राज। ७–(बी०) बैठा। ८–(बी०) बैठ। ९–(ए०) रॉक, (बी०) राकन्ह। १०–(ए०,बी०) दारिद बहुरि न। ११–(ए०) अैके; (बी०)दै कै। १२–(ए०) गएउ; (बी०) गयो। १३–(ए०, बी०) पटसारा। १४–(बी०) कियेव; (म०) कियेउ; (ए०) करै। १५–(ए०, बी०) कै। १६–(बी०) जु। १७–(म०) गै। १८–(ए०) बिमोही; (बी०) बिमोह। १९–(ए०, बी०) कुछ। २०–(बी०) कहइ न जाई। २१–(बी०) अभरन। २२–(ए०, बी०) पलटेव। २३–(बी०) दॉव। २४–(म०) बसे; (ए०, बी०) बसेव। २५–(ए०) तुरत; (बी०) त। २६–(ए०) बढे; (बी०) बढ़ेव। २७–(बी०) अनुराव।

टिप्पणी—(३) दरब–द्रव्य, धन। राँकहिं–रंकों को; दरिद्रो को। दारिद–दरिद्रता।
(४) बतसारा–बैठक।
(५) कय–करके।
(६) संझा–सन्ध्या। पलटेउ–पलट दिया। दाउ–बाजी।

२९९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अनग **कवन गुन आई पिउ आसा[1]। रावन कनक लंका हम बासा ॥१**
लंक सहल[2] बन्धो हम सेती[3]। औ[4] साँभर आहहिं जग जेती[5] ॥२
(पण्डो पति) सुत देहि न मोही। ऊभि रहौं कहि[6] जाँउ न छोही[7] ॥३
मंदिर बेंदन सुनहि नहि बाता। बीरा तिंह[10] सुत लेहि निराता ॥४
रविसुत सारथि उर न समाई। जिंह[11]औगुन पिय रहेउ[12]लुकाई[13] ॥५
रावन कनक आह तुम्ह पासहिं, औ साँभर[14] नख साँस ।६
लंक सहल[15] बन्धो फुनि, आहि[16] पाप देखि तुम्ह पास ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) विवासा । २–(बी०) सो लाइ, (ए०) सैल । ३–(बी०) बन्ध (ए०) बन्धु । ४–(बी०) तेती; (ए०) सुने । ५–(बी०) और । ६–(बी०) जेतने । ७–(बी०) की । ८–(बी०) बिछोही । ९–(बी०) मनु बॅंदन । १०–(बी०) बैरट ही; (म०) बीरापति । ११–(बी०) तेहि । १२–(बी०) रहेउ, (म०) रहँहि । १३–(म०, बी०) रिसाई । १४–(म०) मॅंभर, (बी०) सॅंभरि । १५–(म०, बी०) सैल । १६–(म०, बी०) आहहि ।

३००

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कूप[1] नीर जिह[2] काढ़ी[3] नारी[4] । ते तुम्ह सेंउ बहुतै असँभारो ॥१
सरबस दइ तुम्ह[5] परेउ भुलाई । पिय पति लेहि[6] बैठि[7] समुझाई ॥२
मोहन बान काम कर लागा[8] । औखद मूरि होहि[9] तो जागा[10] ॥३
सुर मोहहिं नर आहहिं काहा[11] । बसीकरन सिर पालहिं आहा[12] ॥४
हनू[वन्त] मूर सकती कँह आनी[13] । तुम्ह र[14] मूर मोहन निज[15] जानी ॥५
तुम्ह गन्धरवहि[16] चक्कवइ, तु र भौं मुदिरा सार[17] । ६
लोचन जिह[18] दुव दिष्टि होइ[19], तुम्ह सेउ बरक पुहुमि बिकरार[20] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(बी०) कुआँ । २–(बी०) जेहि । ३–(बी०) काढियै । ४–(बी०) बारी । ५–(बी०) बरबस देखि तुम्हैं । ६–(म०) लिह; (बी०) लेहु । ७–(बी०) पियहिं । ८–(बी०) कै लागै । ९–(म०) होइ; (बी०) होय । १०–(बी०) जागै । ११–(बी०) कहा । १२–(म०) यह अर्धाली पक्ति ५ की पहली अर्धाली के रूप मे है । १३–(म०) यह अर्धाली पक्ति ४ की दूसरी अर्धाली के रूप मे है । १४–(बी०) रे । १५–(म०) शब्द अस्पष्ट । १६–(म०) गन गन्धरप । १७–(बी०) तुम्ह गंध पहुँच हुक वैसी, भुअन मुंडसार । १८–(म०) जासो । १९–(बी०) लोयन चहूँ, दुदिस्टिल । २०–(बी०) औ सुर नर फुनि बिकरार, (म०) सुर नर फुनि बिकरार ।

टिप्पणी—(२) सरबस–सर्वस्व ।

३०१

(दिल्ली; मनेर, बीकनेर)

हँसी कहिसि दीपक[1] सुनु[2] बाता । गयउ[3] उचाइ जाइ[4] जिय माँता[5] ॥१
रामाँ किंह बिधि[6] पियहि उचावइ[7] । मान भाव कर भाव न[8] पावइ ॥२
साखि[9] होहि[10] इँह[11] जूझ[12] उचावउँ[13] । आप अगरग[14] सरसती बुलावउँ[15] ॥३
आइ सुनवाइ[16] दीपक[17] गाई । दीया[18] अगिन[19] बिनु सर[20] जो[21] जराई ॥४

यह र[22] काम मुरझागति आई । मन्त्र जपसि अगरख[23] जो बुलाई ॥५
आइ जो दीपक गायसि बिध सेंउ,[24] सुनत देह अँगरान[25] ।६
दिया पठावइ[26] अस्तुति वहि,[27] धन धन मद्ध[28] सुजान ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१– (बी०) दीपग । २–(बी०) सुन । ३–(बी०) क्यो रे । ४–(बी०) जाय । ५–मैमाता । ६–(बी०) केहि भाँति । ७–(बी०) उचाऊ । ८–(बी०) सावन । ९–(म०) साखी; (बी०) सखी । १०–(बी०) होइ । ११–(म०) आवहि; (बी०) इहि । १२–(म०) जूज (जीम, वाव, जीम); (बी०) चोज । १३–(बी०) उचाऊँ । १४–(बी०) अंक रखि । १५–(बी०) बुलाऊँ । १६–(म०) सुनाइ जो; (बी०) सुनाइसि । १७–(बी०) दीपग । १८–(बी०) दीप । १९–(बी०) आगि । २०–(बी०) बिन जो; (म०) बत (बे, ते) सत (सीन, ते) । २१–(बी०) जोरे । २२–(बी०) फिरे, (म०) यह रे । २३–(म०) अगरग । २४–(बी०) सुधि सै । २५–(म०) फिरी सुनत ऍगरान; (बी०) सुनत इह रे ऍगरान । २६–(बी०) पठावै । २७–(म०) अस्त अस्त । २८–(बी०) मुध ।

३०२

(दिल्ली, एकडला[1]; मनेर; बीकानेर)

ॲगरानेउँ चिन्ता[1] मन[2] आई । उठा कुँवर यह चलेउ[3] कुहाई ॥१
मान भाव सेउँ[4] चली सुनारी[5] । दौरि कुँवर कर गही पियारी[6] ॥२
कहिसि बिरचि[7] कस चलहु[8] कुहाई । सुनतहि[9] निरति मुरछा जिं[10] आई ॥३
तो देखि जियँ रही न पारा[11] । जीउ तो पँह गा हो[12] बिसँभारा[13] ॥४
परेउँ जाइ दँहु कठिन मँझारी । अपै र[14] पयोहर अति[15] बल[16] नारी[17] ॥५
बहुत चरित[18] कै छूटेउ छँद कै[19], तो आयउ[20] मुहि गात ।६
कहेउँ[21] निरत फिर आपुन[22], यह अवगुन[23] यह बात ॥७

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(म०) चिन्त, (बी०) चेतना । २–(बी०) ×; (म०) मन मँह । ३ (ए०, बी०) चलो । ४–(बी०) के; (ए०) से । ५–(म०, ए०, बी०) सोनारी । ६–(बी०) सुप्यारा । ७–(बी०) विरंचि । ८–(ए०,बी०) चलिहु । ९–(म०,ए०,बी०) सुनहु । १०–(ए०) मन, (बी०,म०) मोहि । ११–(बी०) तोहि देखि मैं रहै न पारौं; (ए०) तोहि देखि जिउ रहै न पारा; (म०) जोहि देलि जिउ गा बिसँभारी । १२–(बी०) हौंगा । १३–(म०, बी०) बिसँभारी; (ए०) काहू न सँभारी । १४–(ए०) × । १५–(ए०) × । १६–(ए०) बलदै; (म०) भल । १७–(बी०) आप आप जो हारि अति लुनाई । १८–(बी०) चरित्र । १९–(म०,ए०,बी०) × । २०–(म०,ए०) हम ।

१—इस प्रतिका फोटो हमें उपलब्ध न हो सका । सम्मेलन संस्करणपर आश्रित ।

२१–(ए०,म०) कहौं । २२–(म०) सब आपुन; (ए०) तोहसौं; (बी०) सुनहु निरत सब मोरी । २३–(ए०, बी०) औगुन ।

टिप्पणी—(१) कुहाई–रूठकर ।

३०३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर गहे वहि[1] चाहि[2] छुड़ावा । मान करै नहि नैन मिरावा[3] ॥१
तो यहि बुधि[4] कै कुँवर डराई[5] । कहसि राहु ससि[6] कँ घर आई[7] ॥२
तो र बेगि चलि मँदिर छपाहा[8] । ससि[9] कलंक[10] तू निरमर[11] आही ॥३
तिह[12] जो देखि तो[13] वहि[14] न कहाई[15] । वहि र[16] छाँड़ि तिह[17] छाड़ि न जाई ॥४
हँसि[18] कहिसि हम सेंउ[19] चतुराई । कुँवर बूझि मन[20] उर न[21] समाई ॥५
मिरगावति[22] मन ही मन[23] रहसी[24], मिलेउ जो जरम[25] न होइहि भंग ।६
यह मन गाढ़[26] उँहरेउ[27], जो[28] चढ़े न दूसर[29] रंग ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) उवह । २–(बी०) चहै । ३–(बी०, ए०) मिलावा । ४–(ए०) बिधु । ५–(ए०, बी०) डेराई । ६–(ए०) सन । ७–(ए०, बी०) जाई । ८–(ए०) तोरे वेगि जनु मदन छपाई; (बी०) तू रे बेगि चलु मदिर पाही । ९–(बी०) ससि रे । १०–(ए०) तो । ११–(बी०) निर्मल । १२–(ए०) उह । १३–(ए०) तु । १४–(ए०) उह । १५–(ए०) वहई; (बी०) तोहि देखे तो वहि न गहई । १६–(ए०) उहरे; (बी०) वोहिरे । १७–(ए०) तु, (बी०) तोहि । १८–(ए०, बी०) हँसी । १९–(ए०, बी०) हम से । २०–(ए०) मान । २१–(ए०) उरै; (बी०) उरहिं । २२–(ए०, बी०) मिरगावती । २३–(ए०, बी०, दि०) मन मन ही । २४–(ए०, बी०, दि०) × । २५–(बी०) जरमहिं । २६–(बी०) कलही । २७–(ए०) उन्ह हरेव; (बी०) उन्हरउ । २८–(ए०, बी०) × । २९–(ए०) दोसर ।

३०४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यह रंग जरम कुरंग न होई । सात समुँद जो धोवे[1] कोई ॥१
वैसहिं[2] मिली[3] सेज पर आई । ततखन कुँवर गिय लै लाई[4] ॥२
पेम सुरा रस[5] दुउ[6] जन राते । पेम सुरा जुग चार न माते[7] ॥३
इहउ[8] जरम क[9] कवन[10] सँदेहू[11] । रचेउ नेह[12] दुहुँ जग कँह एहू[13] ॥४
बिहर[14] मिले रस केलि कराहीं । अमिय सुफल[15] बिरसहिं वई[16] खाँहीं ॥५

अमिय पयोहर दलमले[१७], अधर घूँट रस लेइ[१८]।६
नौ सता[१९] ससिबदनी अबला[२०], अस[२१] धन भोग करेइ[२२]॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) धोवै। २–(बी०) वैसेहि। ३–(बी०) मिलि। ४–(म०) सतखन कनक गिये पहिराई, (बी०) टक न कनक के रे बिहराई। ५–(म०) सँमुद सरित; (बी०) सुमन सरित। ६–(बी०) दुवौ। ७–(बी०) पेम सुरा दुओ जन माते। ८–(म०) यहे। ९–(बी०, म०) कर। १०–(बी०) कौन। ११–(बी०) सँदेहा। १२–(म०) तिह; (बी०) इनहि। १३–(म०) नेहू; (बी०) कर नेहा। १४–(दि०, बी०) सेज। १५–(बी०) फल। १६–(म०, बी०) सब। १७–(बी०) दलिके। १८–(बी०) सेज रस लेई। १९–(बी०) नौ। २०–(म०) × । २१–(म०) अइस। २२–(म०) कराइ; (बी०) कराय।

टिप्पणी—(५) बिहर–बिछुड़।
(६) **पयोहर**–पयोधर; स्तन।
(७) **नौ सता**–(नो सात) सोलह; तात्पर्य सोलह कलाओं वाली। **ससिबदनी**–चन्द्रवदनी। **अबला**–स्त्री।

३०५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

यइ[१] र[२] इँहाँ रस भोग कराही। रुपमनि[३] कँह दुख महँ दिन जाहीं[४]॥१
बरिसा सै बरु निमिख गँवावई[५]। बासर निसि क[६] अन्त किमि पावइ[७]॥२
अहि निसि पन्थ निहारै बारी। मकुहि[८] चाह कोउ कहै उन्हारी॥३
करपालो[९] नित असुवइ[१०] काढ़ै। बिरह सँताप कया तन डाढ़ै॥४
काक उड़ावइ[११] पन्थि[१२] जो आई। तिभुवन[१३] कहँ सँदेस लै जाई॥५
सँदेसा गुन बिस्तरों[१४], जो कोउ कहँहि[१५] समत्थ।६
कर कौन गढ़ेउ जो मुदरा,[१६] बिबि र समानै हत्थ[१७]॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(म०, बी०) ये। २–(बी०) रे। ३–(बी०) रुकमिनि। ४–(म०) रूपमनि कह दिन दुख बड जाही। ५–(बी०) बरिसा सै पर नीमख…। ६–(म०) कँह; (बी०) कर। ७–(म०) न जाई, (बी०) न पावै। ८–(बी०) मकहुँ। ९–(म०) करपलो; (बी०) करपल्लो। १०–(बी०) दिन आँसुइ; (म०) असुवइ दिन। ११–(बी०) उड़ावै। १२–(बी०) पन्थ। १३–(बी०) पन्थी। १४–(म०) बिस्तरेउँ; (बी०) बिस्तर्‌यो। १५–(म०, बी०) कहै। १६–(बी०) अँगुरी कहँ मुदरी गढी; (म०) करबारी कहँ तरक महँ। १७–(म०) बिबि समानी हत्थ, (बी०) सब समानेउ हत्थ।

टिप्पणी—(२) बरिस सै–सौ बरस । किमि–किस प्रकार ।
(३) उन्हारी–उनका ।
(४) असुवइ–आँसू । कया–शरीर । डाढ़ै–जलावै ।

३०६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सूखि सुपारि[1] भयउ[2] बिनु नाहाँ । रंग पिय दिपौ और धनि[3] काहाँ ॥१
हौं पिय बिन डोलौं जस पानूँ[4] । चून न भयउ चित भाउ न आनू[5] ॥२
बिरिया[6] पहिरि दिखाँओं[7] काही । चोली गहसि जो खोलहि आहीं[8] ॥३
साउ न[9] पायउँ[10] बीरि[11] जो खाई । पिय पखरोटा[12] गै[13] जो उड़ाई ॥४
बिरह सरौता खाँडै किया[14] । माँस[15] न रहा सबै लै गया ॥५
गरह नीक दिन रासिह आवहिं,[16] जाड़ धूप बहु सीउ ।६
जिय न जाइ[17] अकेलै,[18] करहँज काढ़ौं[19] जीउ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ ।
१–(बी०, म०) सुपारी । २–(बी०) भई । ३–(बी०) धन । ४–(बी०) पान ।) चित मानहिं आना । ६–(बी०) बरया । ७–(बी०) दिखॅऊँ । ८– चोली कसन जो खोलै नाही; (बी०) चोली कसन खोल न जो अहा । ९– जो तरु बी०) सावन । १०–(बी०) पाय । ११–(म०) बीरी । १२–(बी०) पखरोत । सुनिकै (बी०) गयेउ । १४–(बी०) कवा । १५–(म०) पास; (बी०) बास । १५– बाँके) X ।; (बी०) गरह बाँके दिन दरसहिं । १६–(बी०) जाय । १७–(बी०) गायउ लै अबला । १८–(बी०) काढ़ै ।

टिप्पणी—(३) बिरिया–चूडी ।
(४) पखरौटा–पक्षी ।
(५) गरह–ग्रह । नीक–अच्छा । सीउ–शीत ।

३०७

(दिल्ली; मनेर, बीकानेर)

पेडहि छाड़ि कन्त हम गया । बेल हरी सतवाँरि[1] भइ[2] कया ॥१
काँम केयूर[3] कन्त बिनु जरई । भोजों[4] नाँह जाइ न मरइ ॥२
नोती[5] ढार कियउ[6] हम नाहाँ । मारों[7] तन काढों[8] हिय माहाँ ॥३
का करिहों जिय बिनु[9] लै कया । जिउ लै कन्त बिसारसि मया ॥४
मया बहुत महिं[10] बोलत आहा[11] । जानेउ[12] मैं कि[13] पेम हम गहा ॥५
मैं जानेउ पिय[14] डुब्बि रहेउ,[15] नेहाँ ढव[16] दरक्क ।६
लिहेउ तरेंडा कै,[17] तिह चढि गयेउ तरक्क ॥७

पाठान्तर—१–(बी०) सुतर; (म०) सरौता। २–(बी०) भई हम। ३–(बी०, म०) कपूर; (बी०) भुजिउ। ५–(म०) टूटी; (बी०) सूती। ६–(बी०) गयेउ। ७–(म०) काढो; (बी०) गाडेउ। ८–(म०, बी०) मारो। ९–(बी०) बिनु पिय। १०–(बी०) मुँह। ११–(बी०) अहा। १२–(बी०) जान्यो। १३– (बी०) मकु रे, (म०) मै रे। १४–(दि०)×। १५–(बी०) दुवि रह। १६–(बी०) नेह दहल। १७–(बी०) लहेउ तरेड कुबैन, (म०) लह्यो तरेडा को बैन।

३०८

(दिल्ली; एकडला, मनेर; बीकानेर)

कया बिरिख बिरहैं दौं जारा। छाँह[1] गये जर भयहु अँगारा[2] ॥१
तिह[3] लग[4] पंखि बिरिख जो आहे। छाड़ि परान[5] कोउ न[6] रहे ॥२
गयउ[7] अनन्द पुछारि[8] के भेसा। सुआ हरख जिंह[9] हरियर केसा ॥३
चाउ चित[10] चतुरोख[11] उड़ाना। रहम्नि परेवा छाड़ि पराना ॥४
कुरला[12] कोड वहौं[13] नहिं रहा। बिरह आगि[14] तन तरुवर दहा[15] ॥५
गयेउ[16] अनन्द हरख आहा[17] जो,[18] चाउ[19] रहस औ को
रहेउ सँताप सेज दुख भारी,[20] बिरह बियोग न जो(

पाठान्तर—एकडला, मनेर और बीकानेर प्रति।
१–(ए०, म०) जहाँ। २–(ए०, बी०, म०) सो कारा। ३–(ए०) जाहीं[4] ॥१
(बी०) थल कर। ५–(ए०) छाडेव। ६–(बी०) न एकौ; (ए०) क वइ[7] ॥२
७–(ए०) कियेव; (बी०) गयेव। ८–(ए०) बुझार। ९–(म०) जो। १ ारी ॥३
चित्र। ११–(बी०) चितरोख; (ए०) मोरपखी। १२–(बी०) कील; (ए०) ...
१३–(म०) उहो; (ए०) ओहो। १४–(बी०) अगिन। १५–(ए०) डहा। १६–(ए०, बी०) गयेव। १७–(ए०, म०, बी०) चित। १८–(म०, बी०)×। १९–(ए०, बी०) चाव। २०–(बी०) भरि; (ए०, म०)×। २१–(ए०) मोड़, (बी०) छोर।

टिप्पणी—(१) दौं–अग्नि।
(३) पुछारि–मयूर।
(४) परेवा–कबूतर।

३०९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

दुख भुजइल[1] होइ[2] रहे न[3] जाई[4]। कोयल होइ सँताप जिउ खाई[5] ॥१
काकरूद बिरहा होइ रहा। होइ भिंगराज[6] बियोग[7] जो दहा ॥२

ये[8] कितघ्न जरत[9] उड़ाने। वै र[10] करत[11] सुधि[12] रहै सयाने ॥३
पंखिम छाड़[13] बहीर हमारी। मया करहु[14] फुनि रूपमरारी ॥४
दिन एक आउ बहहि[15] जो कोई। तरुवर[16] छाँह बहुरि घन होई ॥५
जो तरुवर दौ र[17] दहेउ,[18] पंखिम छाड़[19] बहीर।६
बहहि जो कोई पवन बिधि, होइहि छाँह गँभीर ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) भुलै लहि। २–(बी०) ×। ३–(बी०) ना। ४–(म०) पेडहिं छाड़ कन्ता हम गया (कडवक ३०७ की पक्ति १ की पुनरुक्ति)। (म०) बेलहरी सो आना भइ लिया। ६–(म०) भुजग; (बी०) भगराज। ७–(बी०) बीग। ८–(म०, ए०) वैरे; (बी०) वै। ९–(बी) दौ जरत। १०–(म०, ए०) ऐ। ११–(बी०) क्रित। १२–(बी०) सुध जो। १३–(म०) छाडहि; (बी०) छाडहु। १४–(बी०) करिहि। १५–(बी०) बाव वहिहि; (म०) बहि। १६–(बी०) तरुवन। १७–(म०, बी०) ×। १८–(बी०) दधिये। ८९–(बी०, म०) छाड़हु।

टिप्पणी—(१) भुजइल-सर्प।

३१०

(दिल्ली,[1] मनेर; बीकानेर)

जो तरुवर फुनि होइहि[1] छाहीं। लाख करहु जो बहुरि फल आहीं[2] ॥१
सुनिकै फरा[3] जो आयहि[4] चाही। किमिकै मुख दसराइह[5] ताही ॥२
बाँके देवस जो छाड़ पराई। सो फुनि मुख दरसाइह[6] आई ॥३
गयउ निकर[7] फर खायहि वहि केरा। छायहि तिह[8] फुनि[9] करहि[10] बसेरा ॥४
लाज न आवइ पंखि[11] उन्हाहीं[12]। बैठि[13] छाँह बहुरि फर खाँहीं ॥५
दवाँ ददेरी जियकै,[14] बहलिया[15] सुनि आवन्त।६
ते पंखी तिह[16] तरुवरहिं[17], किमि कर मुख जोवन्त[18] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(बी०) फिरि। २-(बी०) लागिहि करह बहुरि फर ताही। ३–(बी०, म०) फर। ४–(बी०) आवहि। ५–(बी०) दरिसावहि। ६–(बी०) दरिसावै। ७–(म०) कर, (बी०) किमिकर। ८–(बी०) डार बैठि। ९–(म०) फिर। १०–

१—इस प्रतिके मार्जिनमें निम्नलिखित चार पंक्तियाँ हैं जो पक्ति ६–७ के क्रममें कुण्डलियाँका रूप धारण करती हैं। स्पष्टतः ये प्रक्षिप्त हैं।

किमि कर मुख जोवन्त, किमि क भर लोचन देखहिं।
जो मुक्ती राजन्त बरु जिह, सुनिके ते भजहिं ॥
विपति छाड़ेउ नहीं मैमन्त, सम्पत के बेरीं।
बेगि नहिं फटेउ हिय, कै जिय दवाँ दरेरीं ॥

(बी०) करै। ११-(बी०) पॉखिन्ह। १२-(म०) उन्हॉई; (बी०) काही। १३-(बी०) बैठहि। १४-(बी०) दवना डरप रे जिय गये। १५-(बी०) फर। १६-(म०) तस। १७-(बी०) ते तरवर ते पखी। १८-(म०) दरसावन्त।

टिप्पणी—(३) बाँके-अच्छे।

३११

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

चाउ तो जाइ हमँहि सिराई[1]। निसि बासर[2] दुख खिनक न जाई॥१
बाँभन पण्डित पूछइ[3] बारी। निसि कनसुई पठावइ[4] नारी॥२
नैन बरुनि दिन मारग बाढ़ै। एक एक साँस सौ सौ दुख काढ़ै॥३
हियँ समुझि समुझावै जीऊ। कया[5] न समुझै चाहै पीऊ॥४
मारग पन्थ निहारै ठाढ़ी। बिरह सँताप हियँ दौं डाढ़ी॥५
ऊभै[6] होइ[7] मग जोवइ[8] बाला, खिनखिन बारम्बार[9]।६
जिमि जल कूपहिं बिछुरे, रोवइ धारहिं धार[10]॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) जाव जु जाई हम सिर आई। २-(बी०) बासुर। ३-(बी०) पूछै। ४-(बी०) पठावै। ५-(बी०) गुन। ६-(बी०) ऊभि। ७-(म०) ×। ८-(बी०) जोवै। ९-(बी०) बॉह पसार। १०(बी०) धरनी धार।

टिप्पणी—(५) डाढ़ी-जली।

३१२

(दिल्ली; एकडला)

अमरबेल चित भयउ बियोगू। सूख गयउ तरुवर बड़ भोगू[1]॥१
माली चीत मूँगे अँबराई[2]। दिन दिन अमरबेल[3] अधिकाई॥२
पसरी बेल रूख कुँबलानाँ। गयेउ सूख[4] रहेउ न पानां॥३
बिपति परी जो भयउ बिछोहू। जिंह दिन पिय छाड़ेउ मन मोहू॥४
सम्पति अहै[5] जो कन्त मिलाई। कै को[6] चाह कहै पिय[7] आई॥५
सुखिये[8] सम्पति पिय मिलन, बिपत बिछुड़न[9] बियोग।६
सम्पति बिपति जो हम कहै[10], अउर कहउ कछु लोग॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति-

१-सोगू। २-चीत मगु अमराई। ३-अमर। ४-तोरि। ५-यहि। ६-कोइ। ७-लै। ८-सखी अे। ९-बिचल। १०-कही।

३१३

(दिल्ली)

सम्पति बिपति उहौ फिर आही । और कहूँ एक बूझहि ताही ॥१
पूछहि सखी कहहु सो काही । यह सेउ अधिक आह र कछु नाही ॥२
यह सेउ अधिक गँहन औ आऊ । आउ वहै जो बिछुर नहिं पाऊ ॥३
कठिन बियोग जिह र दिन होई । हम यह कहा अउर कहो कछु कोई ॥४
हम चित भये गियान घटाई । अउर खोज काकहि कछु जाई ॥५
कठिन जीवन पै मिलन, कठिन न चद न बियोग ।६
हम चित मै गियान है, अउर कहो कछु लोग ॥७

३१४

(दिल्ली)

यह सेंउ अउर न आह जो कहई । कहै जाई तो अवँक न रहई ॥१
तुम्ह पिय बात दुबउ फिर कहही । इन्ह बियोग अधिक अउर न अहही ॥२
तेवरी फिरी न जिउ आही । सो गयउ जिय बास न जाई ॥ ३
धार अकार गा तुम्ह पीऊ । पाउ न बैस तिरी यह सेऊ ॥४
सखी र सगुन ना होइ पिउ आही । रहेउ छाइ पिउ बगतो र काही ॥५
सारे अंग समाइ न मारे, पंचबान सर लाग ।६
जग जोबन दोइ पंत्र बियापहि, दोइ लै अहै जो भाग ॥७

टिप्पणी—(१) अवँक–अवाक् ।

३१५

(दिल्ली)

जोग जाउ हम पै किंह कीन्हा । सरपसात हिय पिंजर लीन्हा ॥१
घर कै दिपक उजारेउ नाहाँ । ऊ र बसायसि पिंजर माहाँ ॥२
पागेउ हिया दोउ दिसि काँची । दोइ पै रहैं जो बेदन साँची ॥३
सूरज तवै कँवल दिन जरै । पति बिनु सुरुज रैन जस करै ॥४
बदन सूख साँवर होइ रहा । दिनयर सब कँवल कर गहा ॥५
सूर न कँवल निकराई, होइह कुल कर हानि ।६
जोबन कया तिह जान दइ, तूँ जनि छाढ़हु कानि ॥७

टिप्पणी—(५) साँवर—साँवला; काला । दिनयर–दिनकर, सूर्य ।

३१६

(दिल्ली)

साई बसत आउ हम पासा। सर दही अब निकसै साँसा ॥१
जीउ अब आइ अधर होइ रहा। सर निकन्दी दिन र हम दहा ॥२
करब काह लै मुएँ जो आवइ। जियतैं बिलँबहि गिय लै लावइ ॥३
बरिस नाँह पुरइन कुँबलानी। जियइ न जबलग बरसै पानी ॥४
गहरें मेघ होइ बरसहु आई। गमाँ अधिक बियोग सताई ॥५
साँस आइ अधरहिं होइ रही, अबहूँ न आवहि साँई।६
पुरइन कुण्ड निकुण्ड कै, फुनि बरसेउ तो काँई ॥७

टिप्पणी—(१) साई—स्वामी।
(३) करब—करूँगी। बिलँवहि—विलास करे।
(५) रामाँ—रमणी।

३१७

रूपमति १५५६

(दिल्ली; मनेर)

ऊँच उतंग भवन एक आहा। रुपमनि तिंह चढ़ि मारग चाहा ॥१
ऊभै पन्थ निहारत अही। मान अहा एक देखत रही ॥२
वह मँह कँवल मुकुन्द बहु आही। ऊँ सख्या जनु देखत रही ॥३
कहँहु बचा हम जो केउ अही। रैन आइ ससि थिर होइ रही ॥४
बिछुरे मिले जो आउत आहे। जीउ भरमानेउ[२] चिन्ता गहे[३] ॥५
कहहिं एक ससि अथयै[४] पिय[५] हिय[६], दूसर कित[७] हूँ आइ।६
जो पिय ससि बाहिर होइहि, होइहि नखत सुहाइ[८] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
१—चाहुत अहा। २—भरमान। ३—जो देखत रहा। ४—अथयेउ। ५—६ ×।
७—हुत। ८—(दि०) दुहो गह जननि।

टिप्पणी—(१) उतंग—उत्तुंग; ऊँचा।
(२) ऊभै—उचक-उचककर।

३१८

(दिल्ली; मनेर)

देखत वह[१] जो निरख निहारी। उरहिं हार तारे हँहि[२] भारी।१
[जिय] मँह कहहि बिहरहि ससि आही। बिहरे बहुरि मिलत हिय[३] जाही ॥२

कँवल देखि वह संपुट रहा। लइ बिकास जो चाहुत रहा[४] ॥३
कुन्दन[५] सम्पुट जो[६] बाँधे चही। देख चाँद किह भूली रही ॥४
अस रूप हम सुनेउ न काऊ[७]। आछर सम किमि होइ न ताहू ॥५
अस[८] रामाँ पिय मग कै[९], कियेउ चाह औराँह ।६
यह पिय पन्थ निहारे ठाढ़ी[१०], ऊभै कर कर बाँह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति।
१–जो वह। २–तारि तिह। ३–मिलिहै किह। ४–अहा। ५–मुकुन्द। ६–×।
७–काहू। ८–अस सरूप। ९– पेमै किये। १०–×।

टिप्पणी—(६) औराँह–दूसरेका।
(७) ठाढ़ी–खडी होकर।

३१९

(दिल्ली, मनेर)

देखत एक आउ बनजारा। कहा दुकन्त नहिं आउ उबारा ॥१
उतरेउ आइ सरोदक तीरा। देख सुझर औ निरमर[१] नीरा ॥२
रुपमनि मानुस पठयो जाई[२]। पूछसि[३] कवन देस कर आही ॥३
मानुस आयउ नायक ठाऊँ। पूछसि नायक का तुम्ह[४] नाऊँ ॥४
देस कवन[५] सेंउ लादेउ टाँडा। कवन देस[६] कँह मारग खाँडा ॥५
चन्द्रगिरि[७] सेंउ लादेउ टाँडा, जइहों कंचन देस ।६
गनपत देउ क बाँभन[८] पुरोहित, लादेउ तिन्ह क सँदेस ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति।
१–निरमरु। २–जाही। ३–पूछो। ४–तिह। ५–कवन देस। ६– दीप।
७–चन्दरा गिरि। ८–×।

टिप्पणी—(२) सरोदक–सरोवर; तालाब।
(५) टाँड़ा–व्यापार सामग्रीसे लदा बैलोंका समूह; कारवाँ।

३२०

(दिल्ली, मनेर)

कंचनपुर का सुनसि जो नाँऊ। कहिसि चलहु रुपमनि कर[१] ठाँऊ ॥१
रुपमनि राजा कै धिय आही। उहाँ[२] सँदेस कहै कुछ चाही ॥२
बाँभन भेंट कुँवरि कै लिही। आइ जुहार अस कहा वही ॥३
रुपमनि नेगिहिं पूछसि बाता। नाऊँ काह किंह[३] बोलहि माँता ॥४
मानुस कहा आइ हम आगे। जइहहुँ कंचन नगर सुभागे ॥५

रानी हम कहँ दूलँभ नाँऊँ, लादेउँ बनिज सँदेस ।६
राजकुँवर जिह देस भुलानाँ, हौं जइहौं तिंह देस ॥७

तर—मनेर प्रति ।

'—के । २—वहो । ३—के ।

३२१

(दिल्ली; मनेर;)

'कुँवर नाँउ सुनि रोवइ नारी । जस गजमोति टूँटि गिंयमारी ॥१
कुवाँ सनाँ जस बिछुरै पानीं । आँसु[1] बहु ढारहि रोवहि[2] रानी ॥२
नायक बैठि सुनहु दुख मोरा । दुख दइ गयउ कुँवर मँहि तोरा ॥३
पितैं बियाहि[3] बारी हौं वही । छाड़ि गयेउ चित मोह न गही ॥४
दूसर समो आइ अब लागा । हमहि छाड़ि के गयउ सुभागा ॥५
पावस उर[4] घन गजेउ, हम तन काम सँदेह ।६
दूँलभ कहियहु कन्त[5] सेंउ, किमि न मुंकै[6] नेह ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१—तस । २—रोए । ३—बियाही । ४—उरद । ५—पिय । ६—मुकेउ ।

टिप्पणी—(१)-गिंयमारी-गले की माला ।
(२) सनाँ-से ।
(४) बारि-बाला; युवती ।
(५) समो-समय, वर्ष ।
(७) मुँके-(मोकै) मेरा ।

३२२

(दिल्ली; मनेर)

फुनि सावन आयउ हरियारा[1] । पुहुमि हरे बिरहा हम जारा ॥१
धरती हरख चीर जनु पहिरा । बिरहा सेज हम दुख गहिरा ॥२
निसि दूभर मुहि[2] पिय बिनु लागै । नारी नैन फुनि[3] जिउ भागै ॥३
जिउ हिंडोल भयउ तरुनिह केरा । बिरह झुलाइ देइ सै बेरा[4] ॥४
जलहर जगत रहा भर पूरी । दूँलभ मरों आस लै झूरी ॥५
पावस काल बिदेस पिउ, हौ तरुनी कुल सुद्ध ।६
सरंग सिंघ कै[5] सबद सुनि कहँ, जिउ मरत[6] हिय मद्ध ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।

१—हरीरा । २—मोहि । ३—नाहँ पिय नैन बहै । ४—महि घेरा । ५—सिघद ।
६—मर ।

टिप्पणी—(३) दूभर–कठिन ।
(४) हिंडोल–झूला । तरुनिह–तरुणीका । सै–सौ । बेरा–बार ।
(५) झूरी–कोरा; छूछा, झूठा ।

३२३

(दिल्ली; मनेर)

भादौं सघन धार बरसाई । बीजु लवइ आधर[1] होइ जाई ॥ १
निसि अँधियारी भरम डर भारी । हिय दरकै हौं कन्त बिसारी ॥२
पीउ न आह जिह सरन लुकाऊँ । सेज भुअंगम फुरे डराऊँ ॥३
दादुर ररै[2] औ मोर पुकारा । जिउ निकसै अब खिन न सँभारा ॥४
जीऊ पपीहा चख मघा सरेखा । दूलभ कहहु जो र तुम्ह देखा ॥५
लोयन गंग तरंग भइ,[3] सेज भई खर नाउ ।६
करिया गुन बिन डूबो[4], कन्त पहिलै आउ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति ।
१–अन्ध फिर । २–ररं । ३–भयउ । ४ डूभो ।

टिप्पणी—(१) बीजु–बिजली । लवइ–चमकती है । आधर–अन्धा ।
(२) दरकै–कसक उठै ।
(४) दादुर–मेढक ।
(५) मघा–मघा नक्षत्र । सरेखा–श्रेष्ठ ।
(६) करिया–नाविक । गुन–रस्सी ।

३२४

(दिल्ली, मनेर; बीकानेर)

आसिन दरस काँस बन फूले । खिंडरिज[1] आये सारस बोले ॥१
उवै अगस्त घटा[2] जग नीरू[3] । हौं भरि गाँग[4] न पायउँ[5] तीरू ॥२
तिह ऊपर बिरहा भौ[6] हाथी । करज[7] झकोर कहाँ पिउ[8] साथी ॥३
गरजत घन पिउ उरहिं छिपायउँ[9] । सेज सून हौ भरम डरायउँ[10] ॥४
जो डर डरेउ[11] भयेउ[12] निरजासी । ममँता बिन कया बिधाँसी ॥५
कुंजर बिरह सरीर बन, दलै बिधासै[13] खाइ ।६
पिय गलगजेउ सिंह होइ, कुंजर बिरह पराइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।
१–(बी०) खँडरिच । २–(बी०) घटै । ३–(म०) पानी, (बी०) नीरा । ४–(बी०) गगा । ५–(बी०) न पाऊँ, (दि०) नेउ नेउ । ६–(बी०) भया । ७–(बी०) गरज ।

८–(बी०) पाऊँ । ९–(म०) छिपावहि; (बी०) छिपाऊँ । १०–(बी०) डराऊँ; (म०) सेज भवन किमि फिरी डराऊँ । ११–(बी०) डरी । १२–(म०) होइ; (बी०) ऊभि । १३–(बी०) बिधसै । १४–(बी०,म०) गलगजहु ।

टिप्पणी––(१) आसिन–अश्विन, कुँआर । दरस–देखकर ।

(२) गंग–गगा ।

भौ–हुआ ।

भरम–भ्रम ।

निरजासी–निराश ।

कुजर–हाथी ।

३२५

(दिल्ली; मनेर, बीकानेर)

कातिक सरद रैन[1] उजियारी । ससि सीतल हौ बिरहै मारी[2] ॥१
सेत सुपेती सेज न भावइ । अमिय तेज[3] ससि बिख[4] बरसा[5]इ ॥२
पल दुइ दौ अनन्द[5] मकु बरसा[6] । सो हम कँह[7] दुरजन होइ[8] दरसा ॥३
सीतल सेत रैन जग भावइ[9] । हम्ह[10] अँधियार पाछु[11] पिउ[12] आवइ ॥४
दुइज पिरिति मुँहि[13] हियैं समानी । ससि पूनेउ पिय[14] पिरिति गवानी[15] ॥५
मै जानेउ पिउ दुइज[16] ससि, बढ़हि[17] पिरीति निमग्ग ।६
दूलभ कहहु[18] कन्त सेंउ[19], पूनेउ[20] भै हम लग्ग ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) रैनि सरद । २–(म०, बी०) जारी । ३–(म०) तज । ४–(बी०) विष । ५–(म०) अन्ध । ६–(बी०) बलि दै दुवन इन्द मकु रसी । ७–(म०) तिह हम लग, (बी०) तेहि लगि हम । ८–(बी०) भै । ९–(बी०) भावै । १०–(बी०, म०) हम । ११–(बी०) बाज़ु । १२–(बी०) पिव । १३–(बी०) द्वैज प्रीति मोहि । १४–(बी०) प्रिय । १५–(म०) घटानी । १६–(बी०) द्वैज । १७–(बी०) बाढ़हि प्रीति । १८–(बी०) कहियहु । १९–(बी०) सो । २०–(बी०) पून्यो ।

टिप्पणी—(२) सेत–श्वेत । सुपेती–बिस्तरा । सेज–शय्या ।

(६) निमग्ग–निमग्न ।

(७) भै–हो । लग्ग–निकट; पास ।

३२६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अगहन कहँ जग सीउ जनावा । हेंव आइ[1] पै कन्त न आवा ॥१

दुख बाढ़ेउँ निसि सँग किह[2] पाई । सुख र[3] खीन[4] हम दिन बरजाई ॥२
जोबन छाँह निमिख मँह जाइहिं[5] । गये बार फुनि बहुरि न आइहिं[6] ॥३
बिरहैं तन पण्डुर[7] जो हाई । जेगीं[8] भसम करत है सोई ॥४
आहर[9] जरम[10] जात है नाँहाँ । बिरसु आइ भर जोबन माहाँ[11] ॥५
दूलभ जिमि जल अँजुली, तिमि जोबन कर नेम[12] ।६
खिन खिन गहै जाइ दिन, गहहु नेम क पेम[13] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।
१-(बी०) हेवत आये । २-(बी०) सगत; (म०) सगन । ३-(म०,बी०) रे । ४-(म०,बी०) खिन । ५-(बी०) जाई । ६-(बी०) आई । ७-(बी०) पडेरेउ । ८-(बी०) जोगिनि । ९-(म०) बिहर; (बी०) आइर । १०-(बी०) जनम । ११-(बी०) बरसु आय भर जोबर माहाँ । १२-(म०) जेम, (बी०) जेमु । १३-(दि०) गहियइ मुकै नेम कै पेम, (बी०) खन खन खन जाइहि दिन, न कहु न मुकै पेमु ।

टिप्पणी—(१) सीउ-शीत । हेंव-हेमन्त ऋतु ।
(४) पण्डुर-पीला ।
(५) आहर-व्यर्थ । जरम-जन्म । जात है-जा रहा है । बिरसु-बिलास करो । जोबन-यौवन । माहाँ-मेरा ।
(६) जिमि-जिस प्रकार । तिमि-तिस प्रकार । नेम-नियम ।

३२७

(दिल्ली; मनेर, बीकानेर)

दूलभ पूस तुलानेउ आई । पिय बियोग आवस[1] र सताँई ॥१
परै तुसार खीर जस जामाँ । सेज हीउ अरकत है रामाँ[2] ॥२
सेज अकेल कहाँ पिउ पावऊँ[3] । उर कुच भवो पुरुख किह लावऊँ[4] ॥३
जाड़ सौर भौ बिरह सुपेती । दुहुँ दुरजन बिच भयउँ अचेती ॥४
जीउ अचेत कछु कही न जाई । यहि कहहु[5] दूँलभ समुझाई ॥५
हारहिं बीचहिं[6] सँचरत, अँतर कपट न दिय[7] ।६
कर पिय सायर [गहै][8], ते पिय अन्तर किय ॥७

पाठान्तर—१-(म०) अैसस; (बी०) असस । २-(बी०) सेज केवत कर रिहौ रामा । ३-पाऊँ । ४-(बी०) उर कुच भुव बर गहि गहि लाऊँ । ५-(बी०) मुखहिं कहेहु; (म०) इँह कहँ कहहु । ६-(बी०, म०) हार बीच । ७-(बी०) दीय । ८-(दि०) गहन; (बी०) गिरि परबत सायर बन घने ।

टिप्पणी—(२) अरकत-कसकता है ।

३२८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

अब र माँह[1] आयउ[2] दुख भारी। काह करौं[3] नहिं[4] जाइ सँभारी ॥१
झरकै पवन मरौं धुधुआई[5]। तपौं अकेल[6] जाड़ न जाई ॥२
कपँहि दसन सीउ घन लागै। सूर होइ पिय तपै[7] त[8] भागै ॥३
तपहु आइ मँहि[9] ऊपर नाहाँ। सात पतार जाइ दुख छाँहा[10] ॥४
रितु[11] बहुरी[12] पिय फेरि[13] न कीन्हाँ। बिरह सँताप सेज भरि[14] दीन्हाँ ॥५
बिरह तुम्हारें सुख हरा, जिमि रावन हर सिय।६
निसियर पति हनु[15] आइ के[16], जस[17] रघुनन्दन किय ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) माघ। २-(बी०) आयो। ३-(बी०)कहौं। ४-(बी०) दुख नहिं। ५-(दि०) धँवाई। ६-(बी०) अकेली; (म०) अकेलै। ७-(बी०) ताप। ८-(म०) तबहि; (बी०) तो। ९-(बी०) मोहि। १०-(म०) जहाँ। ११-(म०) पिरित। १२-(बी०) फिरी। १३-(बी०) फेर। १४-(म०) दुख। १५-(बी०) निसि हरि हनुपति। १६-(म०) ×। १७-(म०) जस कै।

टिप्पणी—(१) काह—क्या।
(७) निसिअर पति—निशिचर पति; रावण। हनु—हनन करो। रघुनन्दन—राम।

३२९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

फागुन फाग[1] जगत सब खेला। होरी माँझ मैं र[2] जिउ[3] मेला ॥१
जरि कै भसम हौं यहि[4] आसा। मकुँहि उड़ाइ[5] जाँउ पिय[6] पासा ॥२
बिरह आइके[7] चाँचरि पारै[8]। रकत रोवइ[9] सेदुर रतनारै[10] ॥३
तिह ऊपर मुहि औधि सँतावइ[11]। आँगन[12] सेज मँदिर न भावइ ॥४
अहर गयेउ[14] बसन्त सुहावा। रहेउ छाइ पिउ बिगोतिह काहा[15] ॥५
फाग[16] बसन्त सुहावनाँ, यह जोबन मैंमन्त।६
तरुवर पात जो झरि परै, अबहु[17] न आयउ[18] कन्त ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) फागु। २-(बी०, म०) रे। ३-(बी०) जिव। ४-(म०) नहिं; (बी०) होउँ उहि। ५-(बी०) मकहु उड़ाय। ६-(म०) पिउ। ७-(म०, बी०) अस। ८-(बी०) पारी। ९-(म०, बी०) रोई। १०-(बी०) रतनारी। ११-(म०) तिह पर और दहि पवन सँताई; (बी०) तेहि ऊपर दहि पौन सतावै। १२-(बी०)

अंगन। १३-(म०) भाई, (बी०) भावै। १४-(बी०) आइ रंग गयो। १५-(म०) रहेउ छाइ पिउ सॅवर नहिं आवा; (बी०) रह्यो छाइ पिउ भयो परावा। १६-(बी०) फगुवा। १७-(बी०) अजहूँ। १८-(बी०) आयो।

टिप्पणी—(३) औधि—बचन, प्रतिज्ञा।

(५) बिगोतिह—सौत।

३३०

(दिल्ली; मनेर,[१] बीकानेर[१])

चैत चहूँ दिसि करहि सँहारा[१]। बिरहा हम तन खोइ खोइ[२] जारा ॥१
मौली बनस्पति[३] जग फूला। पिउ मकरन्द और कँह भूला ॥२
काकल[४] फिरि कै[५] पंचम बोला[६]। जोबन कली बिगस मुँह खोला[७] ॥३
यहौ[८] जरम बिरथहिं[९] जाई। आरन[१०] जेउँ मालती[११] कुँबलाई ॥४
इरसत परिमल पियै[१२] बिसारी। सदल[१३] सरूप फूली फुलवारी ॥५
भँवर बिसार[१४] न मालती, औगुन आह न[१५] कीन। ६
पिय पीरी[१६] कै बोल रे[१७], सोन[१८] सुनइ[१९] धरि चीत[२०] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) करइ सॅभारा। २-(बी०) खै खै; (म०) खोर खोर। ३-(बी०) बनसपती। ४-(म०, बी०) कानन। ५-(बी०) पिक। ६-(बी०) बोली। ७-(बी०) मुख खोली। ८-(म०) एउ। ९-(बी०) निरतहिं। १०-(बी०) अरॅन, (म०) अर। ११-(बी०) जेव मालती। १२-(बी०) पियहिं। १३-(बी०) सुदल। १४-(बी०) बिहार। १५-(बी०) क। १६-(म०) बौरी; (बी०) बैरी। १७-(बी०) री। १८-(बी०) सुवन। १९-(म०) सुनेउ; (बी०) सुन्यो। २०-(म०, बी०) चीत।

टिप्पणी—(२) मौली—मुकुलित हुई।

(३) काकल—कोयल। बिगस—विकसित होकर।

(४) आरन—अरण्य, जंगल।

(५) कीत— किया।

३३१

(दिल्ली; बीकानेर)

बैसाखैं[१] फर तरुवर लागे। बिरसु आइ कन्त सुभागे[२] ॥१
अमिय सुफल[३] राखेउ[४] तुम जोगू[५]। वेग आइ[६] रस मानहु भोगू[७] ॥२

---

१. इन प्रतियोंमें पंक्ति ४, ५ क्रमशः ५ और ४ हैं।

अबलँहि मैं राखी अँबराई। अब दुरजन[८] पँह राखि न जाई ॥३
बिरह सुवा फर चाहै खावा। अब बूतैं नहिं जाइ उड़ावा ॥४
कब लग[९] बिरह उड़ावों[१०] नाहाँ। अलप बयस सत रहै नहिं बाहाँ[११] ॥५
रीस परे वहि नारि लगि, देखि हाथ औरॉहि[१२] ।६
हम पिय[१३] हरख बिसारेउ[१४] दीतसि बिरह गराहँ[१५] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।
१–बैसाख। २–सभागे। ३–सुफर। ४–राखे। ५–जोगा। ६–आउ। ७–भोगा।
८–दुरिजन। ९–लगि। १०–उडाऊँ। ११–अलप बयसि सुत रहेउ न बाहाँ।
१२–देखिसि बॉह ओरहाइ। १३–पिउ। १४–बिसारी। १५–हँकराइ।

टिप्पणी—(४) सुवा–शुक, तोता। बूतैं–शक्ति।

३३२

(दिल्ली; बीकानेर)

जेठ माँस सूरज[१] दो लाई[२]। लोवैं लवँहि जनु आग जराई[३] ।१
तपै पचास[४] बरहिं[५] अंगारा। तिह[६] पर मदन[७] तवै बिकरारा ॥२
सुरज सनां[८] [कंचु][९] औ चीरू[१०]। काम दगध अति[११] बिकल सरीरू[१२] ॥३
प्रिय सीतल आवहु हम पासा। तपत[१३] जाइ खँडवानि पियासा ॥४
गिरि मलया होइ[१४] आवहु नाहाँ। गिरखम[१५] जरत करहु मुहि[१६] छाहाँ ॥५
दूलभ कहियहु कन्त सेउ, उनै आउ घनथट्ट[१७] ।६
नाहुत[१८] सूर बिरह मुहे[१९], दुरजन[२०] जारि करहि दहिघट्ट[२१] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।
१–सुरिज। २–लावै। लोइन लावहि जो आगि जरावै। ४–बज्रसिनि। ५–परै।
६–तेहि। ७–मन्दिर। ८–सनेहा। ९–(दि०) कचू; (बी०) कुचु। १०–चीर।
११–दगधि औ। १२–सरीर। १३–पियत। १४–होइ मलयागिरि। १५–
ग्रीषम। १६–हम। १७–गजघट्ट। १८ नातरु। १९–मोहि जारिहि। २०–×।
२१–दहवट्ट।

टिप्पणी—(५) गिरिमलया–मलयागिरि; चन्दन। गिरखम–ग्रीष्म।
(६) उनै–घिर। थट्ट–समूह।
(७) नाहुत–नहीं तो।

३३३

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

[गरजत][१] गगन असाढ़ जनावा। कुँजर जूह मेघ होइ आवा ॥१
चहुँ जग[२] उनै बीज चमकाई। पिय[३] सँवरहुँ पावस रितु आई ॥२

ऊखम रितु बन जारेउ आई[४] । हम पिउ फुनि[५] परदेसहिं छाई ॥३
मारग रहा पन्थ न चलाई[६] । अब जीउ घरी न धीर बँधाई[७] ॥४
मारग चलत न आयउ[८] नाहाँ । अब जलहर छायउ[९] जग माहाँ ॥५
दूलभ सावन लाग फिर[१०], औ[११] जग जलहर भर बाँह[१२] ।६
सुरपति-बाहन भानु[१३]-सुत[१४], मिल कियेउ रौराँह[१५] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(दि०) गजत; (म०) गजम; (बी०) जगमहँ । २–(बी०) दिसि । ३–(बी०) पिउ । ४–(बी०) औ खमुरचु बनिजारे आये । ५–(बी०) पुनि पिउ । ६–(म०) नहिं पंथ; (बी०) न पंथ । ७–(बी०) धराई । ८–(बी०) आयो । ९–(बी०) छायेउ । १०–(म०) फिर लाग; (बी०) फिर लगा । ११–(म०) अरु । १२–(म०) आह । १३–(बी०) भान । १४–(म०) पति । १५–(म०) मिलि कपोल अरु बाँह; (बी०) मिलि कपोल रु बाँह ।

टिप्पणी—(१) कुंजर जूह–कुँजर जूथ; हाथियों का समूह ।

३३४

(दिल्ली;[१] मनेर; बीकानेर)

मैं तुम्ह आगें सब दुख टेरा । भरि गंग बूड़ेउ[१] लाउ को तीरा[२] ॥१
पिय[३] गुनवन्ती[४] गुन दै तोरी[५] । परी नाउ भरि[६] गंग[७] मँह मोरी ॥२
तीर न लागै बिन गुनधारा[८] । करिया[९] कहाँ जो टेकि सँभारा ॥३
अब रै कुण्ड गहिरे मँह परी । बेग आउ[१०] सब जलहर भरी ॥४
नेह क सायर अति अवगाहा[११] । बोहित बूड़ न पावहि[१२] थाहा ॥५
यह दुख पेमहिं[१३] संग रहौं[१४], खिन खिन सुख कै[१५] हानि ।६
सायर नेह अमोघ जल, बड़ पन्थिह तुमहिं जानि[१६] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) बूड़ि । २–(बी०) को लावै तीरा; (म०) न लागेउ तीरा । ३–(बी०) जिय । ४–(बी०) गुनवन्तै । ५–(बी०) टोरी । ६–(बी०) गहिरे । ७–(बी०) × । ८–(बी०) कंडहारा । ९–(बी०) करिय । १०–(बी०) आव । ११–(बी०) औगाह । १२–(बी०) बूडै न पावै । १३–(बी०) हम नहि । १४–(बी०) रह्यो । १५–(बी०) की । १६–(म०) औ बड़ पथिह मान; (बी०) बिधि मुयेहि पै जानि ।

टिप्पणी—गुनवन्ती–रस्सी धारण करनेवाला नाविक । गुन–रस्सी ।

(३) गुनधारा–रस्सी पकड़नेवाला मल्लाह । करिया–पतवार सम्हालनेवाला नाविक ।

(६) अवगाहा–अगाध । बोहित–नाव ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ३-४ क्रमशः ४ और ३ है ।

३३५

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

देख नायक बनिज चलावा । दन्द उदेक उचाट लदावा ॥१
बिरह बिऊग सँताप[१] जो लीन्हा[२] । दुख रुपमनि[३] खाँड़ो भर दीन्हा[४] ॥२
औ मिरगावति कँह[५] अस कहा । ताहि[६] बा सरन[७] छाड़ पिउ गहा ॥३
देखि बूझहु[८] तुम्ह[९] हिय[१०] सामाँ[११] । पीउ न सेज कस बेदन रामाँ[१२] ॥४
बेदन दीह[१३] जाइ नहिं सही । काँम दगध चूनाँ[१४] होइ रही[१५] ॥५
करवट सीस दइ कोउ[१६] सहे,[१७] यह दुख बहुत हमाँह[१८] । ६
तिरिया यह नहिं[१९] सहि सकै, पिय निरखैं[२०] औराँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) संताप बियोग । २–(बी०) दीन्हा । ३–(बी०) रुकमिनि । ४–(बी०) लीन्हा । ५–(बी०) सौं । ६–(म०) तो । ७–(बी०) परसन । ८-(बी०) बूझि । ९–(बी०) तुम । १०–(बी०) अहौ । ११–(बी०) समाना; (म०) समान । १२–(बी०) पिउ नहिं सेज जीवै न तिमि रामा । १३–(म०) दीस; (बी०) दिहेहु । १४–(म०) चून । १५–(बी०) दही । १६–(म०) देइ जो कोई; (बी०) देइ कोई । १७–(बी०) सहिये; (म०)–×। १८–(बी०) हमाँहि; (म०) यह सह ज़ाइ हमाँह । १९–(म०, बी०) नहिं यह । २०–(म०) पिउ देखै; (बी०) न कहै ।

टिप्पणी—(१) दन्द–द्वन्द । उदेक–उद्रेक । उचाट–खिन्नता ।
(३) बा–है ।
(६) करवट–करपात्र; आरा ।
(७) निरखै–देखै । औराँह–दूसरे को ।

३३६

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

सँखा जिंह दूभर निसि होई[१] । सेज गवेझ नींद न सोई[२] ॥१
औ चकोर कँह जिउ निकराई[३] । निमिख निमिख जुगजुग बर जाई[४] ॥२
यह दुख बरसि क आइ[५] तुलानाँ । अब न रहहिं घट जाहिं पराना ॥३
नव तिय देखहिं आदरस[७] खाई[८] । मरिहौं तिह परहत्यै लगाई[९] ॥४
दई[१०] क डर चित करहु बिचारी । हत्या निबहें किये[११] हुत भारी[१२] ॥५
हिया न समुझै बाउरेउ[१३], जिंह[१४] समुझावउँ[१५] चित्त ।६
देखन चाहौं[१६] पिय[१७] कहँ. लोइ रोवौं[१८] नित्त ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(म०) सँखा जन जिह बिछुरे होई; (बी०) सखा जन जौ दूभर होई। २-(बी०) सेज के ओछे नींद नहि खोई; (म०) होई। ३-(म०) जोन कराई; (बी०) जोन्ह कराई। ४-(बी०) निमिख निमिख मँह जुग जुग जाई। ५-(बी०) आय। ६-(बी०) तरुनी देखि। ७-(म०) अदारसि। ८-(बी०) कहई। ९-(बी०) मरिहौं तोहि परहत्या लाई। १०-(बी०) दइव। ११-(म०) बिरह किये। १२-(बी०) हत्या चढिहि गऊ छुत भारी। १३-(बी०) बाउर। १४-(म०, बी०) जो। १५-(बी०) समझाऊँ। १६-(म०) चाही; (बी०)। चाहै। १७-(बी०) पिउ। १८-(म०) रोवइ; (बी०) रोवैं।

३३७

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बरद[1] सहस एक[2] भयउ[3] सँदेसा। नायक लादि चलेउ[4] वँह[5] देसा ॥१
राजकुँवर जिह[6] देस लुभाना[7]। तिंह र[8] देस कर किहसि[9] पयाना ॥२
मारग पूँछि लिहिसि वह जाई। कुँवर बाट जिह गयेउ[10] सो पाई ॥३
वह र[11] बाट सब हाँकिसि टाँडा। रुपमनि[12] बिरह अगिनि[13] कर खाँडा ॥४
आगै भा वह बिरह चलाई। पाछैं टाँड[14] चला सब जाई ॥५
कटक बहुत बिरहैं संग, बाट न छेड़ै कोइ[15]। ६
दानीं दान जो माँगें [आवइ],[16] जर भँसमन्त सो होइ[17] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१-(म०) बरध। २-(म०, बी०) दस। ३-(बी०) भयो। ४-(म०) चला; (बी०) चलेव। ५-(म०) वहि; (बी०) तेहि। ६-(बी०) जेहि। ७-(बी०) लोभाना। ८-(बी०) तेहिरे। ९-(बी०) किहेसि। १०-(बी०) गयेव। ११-(म०, बी०) रे। १२-(बी०) रुकुमनि। १३-(म०, बी०) आग। १४-(बी०) टाँडा। १५-(बी०) छेकै कोय। १६-(दि०) ×। १७ (बी०) होय।

टिप्पणी—(१) बरद—बैल।

(२) पयाना—प्रयाण, गमन, यात्रा।

(७) दानीं—दान माँगनेवाले; भिखारी।

३३८

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

घर[1] तन बन सब जारत चला[2]। आगैं परे सोइ[3] सब जला ॥१
समुँद एक आयउ बन तीरा[4]। बिरह आग वह जनत सरीरा[5] ॥२

फुनि[१] कजली[७] बन आगैं आवा । काँम आग[८] सेउँ उहौ जलावा[९] ॥३
वहै गड़रिया हुत वहि[१०] ठाँऊँ[११] । पूछा उन्ह रे[१२] कहा[१३] तिह[१४] नाऊँ ॥४
गाँव ठाँव आहै[१५] इँह[१६] कोई । कहाँ रहहु तूँ पूछहुँ कहु सोई[१७] ॥५
कंचनपुर[१८] कै बाट जिंह र[१९] दिसि,[२०] तिंह[२१] मारग हम लाउ[२२] ।६
कै जोजन आहै[२३] इहवाँ हुत, पूछौं कहु सु भाउ[२४] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(म०) गिरि । २-(बी०) घर बन तीर जरत सब चला । ३-(म०, बी०) सो रे । ४-(बी०) आये बडवानी । ५-(म०) बिरह लग दहहि जरत सरीरा; (बी०) बिरह कि आगि सुखानेउ पानी । ६-(बी०) पुनि । ७-(बी०) कदली । ८-(बी०) अगिनि । ९-(म०, बी०) वहौ जरावा । १०-(बी०) वोहि । ११-(दि०) ठॉई । १२-(बी०) इनहि । १३-(म०, बी०) काह । १४-(बी०) तुम्ह । १५-(बी०) × । १६-(बी०) इँहवा नहिं; (म०) इँह न । १७-(म०, बी०) कहॉ रहहु तूँ इकसर होई । १८-(दि०) कंचपुर । १९-बी० जेहि । २०-(बी०) मारग; (म०) कचनपुर गै जिह दिसि । २१-(बी०) तेहि । २२-(बी०) तेहि हम कहँ लाउ । २३-(म०) है । २४-(म०) सत भाउ; (बी०) कै जो अहइ जन इहाँ हुतै, तेहि तो पूछौ सति भाउ ।

टिप्पणी—(७) इहवाँ हुत-यहाँ से ।

३३९

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जोजन सौ आही । जोगीउ एक गयेउ वह जाही[१] ॥१
दिन दुइ तीन आहा[२] घर मोरीं[३] । पहुनाई कीनों कर जोरीं[४] ॥२
भेंट[५] भुगुति मैं वह कहँ[६] कीनी[७] । जोगी केरि यहै[८] मँद रीती ॥३
एक दिवस हौं सुवत आहा[९] । साँठ लिहिसि औ आँखिउ दहा[१०] ॥४
साँठ वस्तु[११] भल जो कछु पाइसि[१२] । लइके[१३] भाग न फेरि[१४] दिखाइसि[१५] ॥५
जोगी जात क्रितघ्नि आहे[१६], जो बोरे घिउ[१७] खाँड ।६
आपुन होय न कैसहुँ[१८], ताकर[१९] मारै बिसहैं काँड ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०) जोगियो एक गयो वहि चाही । २-(म०, बी०) रहा । ३-(बी०) मोरे । ४-(म०) बहु पहुनाइ कियेउ कर जोरे; (बी०) पहुनाई कियो दुवौ कर जोरे । ५-(बी०) जेति । ६-(म०) कै । ७-(बी०) वोहि की कीतिसि । ८-(म०) जोगी जात आह । ९-(बी०) मैं सोवत अहा । १०-(म०) दाहा । ११-(बी०) लीन । १२-(बी०) पाइस; (म०) पास । १३-(बी०) लैके । १४-(बी०) बहुर ।

१५–(म०) देखास; (बी०) देखाइस। १६–(बी०) अहै। १७–(बी०) बोरिये घी। १८–(बी०) कैसेहु। १९– (म०) ताखर; (बी०) × ।

टिप्पणी—(१) आही–जगह।

(४) सुवत–सोता। आहा–था।

(६) बोरे–डुबोये। घिउ–घी। खाँड–चीनी।

(७) ताकर–उसका।

३४०

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

बात कहिसि फुनि पन्थ देखावा। मारग यहै लोग सब[1] आवा ॥१
वहै बाट बरदै हँकवाई[2]। जो र गड़रियें बाट दिखाई[3] ॥२
माँस यक दूसरें मग[4] घटाना[5]। नगर कंचनपुर आइ[6] तुलाना ॥३
उतरेउ[7] आइ एक अंबराई। अपुरुब नारा[8] पोंखर बाई[9] ॥४
नगर सुहावन देखत भावा। लोग उत्तिउँ[10] मुख बचन सुहावा[11] ॥५
लोगहि[12] पूछसि बात नगर कै, राजा इहाँ[13] को आह ।६
राजकुँवर अहै[14] ईंह[15] राजा, मिरगावति[16] धनि ताँह ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति।

१–(म०) सभ। २–(बी०) वोहि बाट सब बरदी हँकरावा। ३–(बी०) देखाये। ४– (म०, बी०) बाट। ५–(म०) घटाई; (बी०) खुटाना। ६–(बी०) आय। ७–(बी०) उतरेव। ८–(बी०) तारा। ९–(बी०) पाई। १०–(बी०) उत्तिम। ११-(म०, बी०) सुनावा। १२–(बी०) लोगन। १३–(बी०) इहँ राजा। १४–(म०) है; (बी०) इहाँ। १५–(म०) ×; (बी०) आहें। १६–(बी०) मिरगावती।

टिप्पणी—(४) नारा–नाला। पोखर–तालाब। बाई–वापी, कुँआ।

(५) उत्तिउँ–उत्तम।

(७) धनि–पत्नी। ताँह–उसकी।

३४१

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

राजकुँवर कर सुनसि जो नाँऊँ। औ मिरगावती है वहि[1] ठाँउँ ॥१
कहिसि दयी[2] भल भयउ गुसाँई[3]। दोउ सुनेउँ बारे[4] एक ठाँई ॥२
जिह लगि आयउ पायउ[5] सोई। मोर जनाउ[6] किंह[7] र[8] विधि होई ॥३
मारग कुसल जैं[9] बिधि कीन्हीं[10]। सो र[11] मिराईहि[12] होइहि चीन्हीं[13] ॥४

भागवन्त अब लाग सन्देहू[१५] । जिह घर खाँड सो पाउँ[१५] मछेहू ॥५
उँहहि[१६] राजपूत आह सुलाखन,[१७] इन्ह पँह[१८] दइ दइ[१९] राज ॥६
सिरीवन्त कहँ कोदो[२०] अबला[२१], दिन दस भलहि[२२] बिराज ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(बी०) वोहि । २–(बी०) दइव । ३–(बी०) भयेव गोसाई । ४–(बी०) इनौ बर आहै । ५–(बी०) जेहि लगि आयो पायेव । ६–(म०) जनावन; (बी०) चिन्हावन । ७–(बी०) केहि । ८–(बी०) रे, (म०) × । ९–(म०) जिह र, (बी०) जेहि रे । १०–(बी०) कीन्हा । ११–(म०, बी०) सोइ । १२–(बी०) मिराय । १३–(बी०) चीन्हा । १४–(बी०) भागवन्त कह अपदस देहू । १५–(बी०) पाव । १६–(म०) इँहवहि; (बी०) वहौ । १७–(बी०)–सुलखन । १८–(म०) ईहँहि । १९–(बी०) यह फुनि दइव दीन्ह । (म०) करो । २१–(बी०) मिरगावति कहँ कत अपदस । २२–(बी०) भयेव ।

टिप्पणी—(२) जनाउ–सूचना ।

३४२

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर)

कंचनपुर जो[१] आहे बैपारी[२] । सुनतहि टाँड एक आयउ[३] भारी ॥१
कहहिं जाके[४] बनिज बिसाही[५] । लइके[६] चलहु जो र[७] कछु चाहीं[८] ॥२
मिलिके[९] सब आये बैपारी[१०] । भेंट घाँट कै बैठि[११] जुहारी[१२] ॥३
फुनि[१३] कछु[१४] लइ दइ कै चाली । कहहिं तो कोउ[१५] करै बिस्थाली[१६] ॥४
एकहि ठाइँ[१७] बनिज हम देहू । माझी कहै[१८] सो हम सेउ[१९] लेहू ॥५
हँस बोला अस नायक उन्ह[२०] सेउ[२०], तुम्ह कँह दई[२१] न जाइ ।६
यह र[२२] बनिज तो पै[२३] बनिजां, जो आपुहि[२४] आवइ[२५] राइ ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१–(म०) × । २–(बी०) अहे व्यौपारी । ३–(बी०) सुनिन्ह टाँडा आयेव एक । ४–(म०) जाइके । ५–(बी०) चलहु लेय जो रे किछु चहियै । ६–(म०) लेइ । ७–(म०) रे । ८–(बी०) कहिन्हि जायकै बनिज बिसहियै । ९–(बी०) मिलकै । १०–(बी०) व्यौपारी । ११–(बी०) बैठ । १२–(म०, बी०) जोहारी । १३–(बी०) पुनि । १४–(म०, बी०) उन्ह । १५–(म०) कोई । १६–(बी०) कहिन्हि कोरे करै बिसठाली । १७–(बी०, म०) ठाँउ । १८–(बी०) चाहि १९–(बी०) हमसे । २०–(बी०; म०) × । २१–(बी०) देइ; (म०) देउ । २२–(बी०, म०) रे । २३–(म०, बी०) हौं । २४–(म०, बी) ईह । २५–(बी०) आवै ।

टिप्पणी—(२) बनिज–व्यापारकी वस्तु । बिसाही–खरीद करे ।

(३) भेंट-घाट—(भोजपुरी मुहावरा) मिलना-जुलना।
(४) लइदइ—लेन-देन की बात। कै—का। चाली—बात आरम्भ की।
(५) माँझी—मूल्य निर्धारित करनेवाला मध्यस्थ।
(७) पै—लेकिन।

३४३

(दिल्ली, मनेर; एकडला; बीकानेर)

बैपारिहँ[1] रे सुनी यह बाता। नायक बाउर कै मतमाता ॥१
बाउर नायक राइ[2] बुलावा[3]। ठाकुर तुरिय लै आगे[4] आवा ॥२
बनजारे सेंउ[5] काह दुवारी[6]। राजा जिह लग आवइ[7] भारी ॥३
यह कहि सब बहुरे[8] बैपारी। आपुन आपुन लागि दुँवारी[9] ॥४
चलत बात[10] राजा पहँ गई। बनजार[11] एक अइस[12] बोलई ॥५
ठकुरहिं[13] कै अस अहै[14] कस्था,[15] अचरज[16] सुनहु हँकार[17] ।६
वँह रे बनिज का आहे[18] अपुरुब, जिह[19] लग हमहिं दवार[20] ॥७

पाठान्तर—मनेर, एकडला और बीकानेर प्रति।
१–(ए०) [बै] पारिह। २–(ए०) राव; (बी०) राय। ३–(ए०, म०, बी०) बोलावा। ४–(म०) लै, (ए०, बी०) लेए पै। ५–(ए०, बी०) सौ। ६–(म०) दॅवारी; (ए०, बी०) डॅवारी। ७–(ए०) जेहि लगि आऐव; (बी०) जेहि लगि आवै। ८–(ए०) बहुरे सब। ९–(ए०) आपन आपन लाग डॅवारी; (बी०) आपन आपन कहु लगे डॅवारी। १०–(ए०) चलत। ११–(म०) बनजारा। १२–(म०) आउ अस है; (बी०, ए०) अैस। १३–(ए०, बी०) ठकुरन्ह। १४–(म०) आहै। १५–(ए०) कथा। १६–(ए०) अचर; (बी०) अचरज कसथा। १७–(ए०) हॅकारि। १८–(म०) अहै। १९–(ए०, बी०) जेहि। २०–(म०) दँवार, (ए०) डवारि; (बी०) डॅवारि।

टिप्पणी—(१) बाउर–बावला।

३४४

(दिल्ली; मनेर; बीकानेर;)

धावन[1] एक जनाँ सो धाये[2]। चलु[3] नायक तुम्ह राय बुलाये[4] ॥१
कहिसि ठाढ़ तूँ खिन एक होई[5]। भेंट लेवँ[6] संग आवौं तोही ॥२
जौ लग ई र[7] बार हुत ठाढ़ीं[8]। तौलहि तिलक दुआदस काढ़ी ॥३
धोती पहिरि जंनेउ जो देई[9]। पतरी पौ काँख पौथी लै सेई[10] ॥४
जिह मँह बारह मास क बाता। छाड़सि अउर भेस[11] सै साता ॥५

दन्द उदेक उचाट बिरह दुख, बहुत थाल भरि लीन्ह ।६
जिह ठाँ राउ बैठ हुत,[१२] इकसर भेंट जाइ कै कीह[१३] ॥७

पाठान्तर—मनेर और बीकानेर प्रति ।

१-(बी०, म०) धावत । २-(म०, बी०) धावा । ३-(बी०) चल । ४-(बी०) तोहि राय बोलावा । ५-(म०, बी०) होही । ६-(म०) लेउँ; (बी०) लेंव । ७-(बी०) तौ लहि यह रे । ८-(बी०) ठाढा । ९-(बी०) धोती पहिरि पुनि काँध जनेऊ । १०-(म०) पटली गॉग पोथि लै सेई; (बी०) पहुली कॉख पोथी लिहे सेउ । ११-(म०) सहस । १२-(बी०) जेहि ठॉव राव बैठे हुत । १३-(बी०) भै इकसर भेट तहँ जाइ कीन्ह ।

टिप्पणी—(१) धावन-दूत । जनाँ-व्यक्ति ।

(२) ठाढ़-खड़ा ।

(३) तिलक दुआदस-वैष्णव सम्प्रदायके कतिपय लोग बारह तिलक-मस्तक, नासिका, दोनों कपोल, वक्षस्थल, दोनों भुजा, नाभि, दोनों जाँघ और पीठके त्रिकूटस्थानपर लगते हैं। इस प्रकारके तिलक लगानेका उल्लेख चन्दायन (४२०।२), पदमावत (४०६।३) और बीसलदेव रासो (छन्द १०२) मे भी हुआ है।

(४) पतरी-पादत्राण । पौ-पॉव । काँख-बगल ।

(५) इकसर-अकेले ।

३४५

(दिल्ली;[१] बीकानेर)

फुन आसिखा[१] लाग[२] वह देई । जो कछु बँहभन[३] बूझी सेई ।१
देत आसिख्या[४] कुँवर जो चीन्हा । घर क पुरोहित चरचै लीन्हा ॥२
कुँवर जो[५] निरख[६] नीक कै देखा । दूलभ पण्डित जानु[७] बिसेखा ॥३
फुनि पूछसि पण्डित कर[८] नाँऊ । नाँव कहउ[९] औ आपन ठाऊँ ॥४
कहिसि राइ[१०] हम दूलभँ नाऊँ । चन्द्रागिर जो हमारेउ[११] ठाँऊ ॥५
गनपत देव क[१२] पुरोहित बाँभन,[१३] पठयें तुम्हरे पास[१४] ।६
बहु दुख देखत आयउ[१५] मारग, मकु[१६] पूजी मन आस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१-असीस । २-लागा । ३-बॅभनहुँ । ४-असीस । ५-× । ६-नायक । ७-जनौ । ८-कै । ९-कहौ । १०-राउ । ११-हमारा । १२-कर । १३-× । १४-पटयउ । १५-बहुत देखि दुख आयेंउ । १६-मिलेहु ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ४ और ५ की अर्धालियोंका क्रम १, ४, २, ३ है।

टिप्पणी—(१) आसिका—आशीर्वचन।

(२) आसिख्या—आशीर्वचन।

(३) निरख नीक कै देखा—ध्यानपूर्वक देखा।

३४६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पिता नाँउ सुनि जिउ घबरावा[1]। फुर कहु दूलँभ[2] पितैं[3] पठवा ॥१
अउर[4] इहाँ मुहि काउ न काजा[5]। बिनु पठये आँवउँ जिह[6] राजा ॥२
कुसल पिता कै पूछउ[7] तोही। माता कुसल[8] कहहु सब[9] मोही ॥३
अउर[10] कुटुँब कै पूछउ[11] बाता। सब कै कुसल कहहु निरबाता[12] ॥४
खेम कुसल सबकै है राया[13]। बहुत भेंट तुम्ह कँह मन माया[14] ॥५
यहि सँदेस लिखि पठयें,[15] कहहु तो सो सब देउँ।६
जो र कहा उन्ह सो कहु मोसंउ[16], माथ परिछि कै लेउँ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

(१) (बी०) गहबरि आवा, (ए०) सीव सुनी गहबरी आवा। २–(ए०) सम। ३–(बी०) तोहिं पिता। ४–(ए०) औरो; (बी०) और। ५–(ए०, बी०) इहाँ दहु का मोहि काजा। ६–(बी०) जेहि आवों। ७–(ए०, बी०) पूछौं। ८–(बी०) कुसर। ९–(ए०) दहुँ। १०–(ए०, बी०) और। ११–(ए०, बी०) पूछौं। १२–(बी०, ए०) निराता। १३–(ए०) राजा। १४–(ए०) बहुतन्ह बैठि बोलहु मन माया; (बी०) बहुत तपहिं तुम्ह कहुँ दिन माया। १५–(ए०) अेह संदेस लिखि पठइन्हि; (बी०) बहु सदेस कहि पठइन्हि। १६–(बी०, ए०) ×।

टिप्पणी—(७) माथ परिछि कै लेउँ—स्नेह की अभिव्यक्तिके निमित्त स्नेहीके सिरपर विशेष रीतिसे हाथोंकी परिक्रमा।

३४७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

पहिले पिता क[1] सुनहु सँदेसा। जिह[2] दिन संउ र[3] चलहु [4]परदेसा ॥१
तिह[5] दिन संउ[6] उन्ह[7] छाड़उ राजू। नेगी सबै चलावहिं[8] काजू ॥२
रोवत नैनहि दिस्टि[9] घटानी[10]। अन न खाहि पियहिं नहिं पानी ॥३
औ अस[11] कहँहि कि कहियहु[12] जाई। नदी तीर कर बिरिख गिराई[13] ॥४
खसैं[14] जो आहु[15] करिहहु काहा। बिरध भयेउँ[16] जर छाड़ँउ आहा[17] ॥५
तुम्ह[18] बिनु कहहिं[19] अस यह आहै[20], जस दिन सूर बिहून।६
चाँद तराइन[21] बिनु निसि[22] गहन[23], जगत चहूँ[24] दिसि सून ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति।

१-(बी०) कर। २-(ए०, बी०) जेहि। ३-(ए०, बी०) सो रे। ४-(ए०, बी०) चलेहु। ५-(ए०, बी०) तेहि। ६-(ए०, बी०) सौं। ७-(ए०) उन। ८-(ए०, बी०) चलावै। ९-(ए०) आखिनि दीठि; (बी०) आँखिन्ह डीठि। १०-(ए०, बी०) खुटानी। ११-(दि०) आस। १२-(ए०) कहिअवहु; (बी०) कहियौ। १३-(ए०) नदी तीर कै बरगुन आई। १४-(ए०) गये। १५-(ए०) अैहौहु; (बी०) आवहु। १६-(ए०, बी०) भये। १७-(बी०) छाडै चाहा; (ए०) छवौ चाहा। १८-(ए०) तोह; (बी०) तुम। १९-(ए०) कहहि; (बी०) कहेहु। २०-(ए०) अैस मोहि अहौ; (बी०) अस अहै मोहि। २१-(ए०, बी०) तरैयन। २२-(ए०) निसु; (बी०) कुल। २३-(ए०, बी०) ×। २४-(ए०) चौंह।

टिप्पणी—(५) खसैं—गिरनेपर। आहु—आओ। करिहहु—करोगे। बिरध—वृद्ध। जर—जड।

(६) बिहुन—बिना।

३४८

(दिल्ली; एकडला)

जस[1] र[1] मँदिर चाहै भहराईं[2]। वस हौं भयउँ[3] देखु मोहि आई ॥१
टेकहु मँदिर खाँभ दइ[4] आई। नाँहुत[5] अबहिं परिह भहराई ॥२
चाँद सतायस हौ होइ[6] रहा। चाहै खिनक अमावस गहा ॥३
अँजुरि पानि जस[7] जिउँ मोरा। बेग आउ मुख देखउँ[8] तोरा ॥४
जियतैं मुख[9] दिखरावहु आई। मुएँ रहहि[10] पछताउ[11] न जाई ॥५
यह सँदेस तुम्ह दीतन्हि[12], सौंत मन सुन, लेहु[13]।६
चित उचाइ[14] यहि ठाँउँ सँउ[15], सुदिन पयाना देहु[16] ॥७

पाठान्तर—एकडला प्रति।

१-जो रे। २-(दि०) बहराई। ३-मै भएव। ४-दै। ५-नाहीं तौ। ६-होए मैं। ७-जैस। ८-देखौ। ९-जियत मोहि। १०-रहे। ११-पछताव। १२-तोह दीतीन्हि। १३-सौन सुनिअ कै लेहु। १४-उचाव। १५-सौं। १६-पयानेव देहु।

टिप्पणी—(१) भहराई—गिरना। वस—वैसी। हौं—मैं।

(२) देवहु—सहारा दो। खाँभ—खम्भा। परिह—पड़ेगा।

(३) चाँद सतायत—कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीका चाँद।

(४) अँजुरि—अँजली।

(६) सौंत—स्थिर।

३४९

(दिल्ली)

मतैं यह सन्देस पठावा । एकहि ठाँउ दुहौं गिर आवा ॥१
अउर सँदेस सुनहु एक भारी । राजकुँअरि जिह बिहयहु बारी ॥२
वहिक सँदेस लेत हिय फाटा । जानु करज कटारिंह काटा ॥३
नगर सुबुध्याँ उतरउँ आई । माँस एक लै गयउ बिलाई ॥४
पूछसि नायक किंह हुत आवा । मैं आपुन बोलेउँ सब भावा ॥५
धाइ पाउ दोइ मोरे धरि क, आइ परी सहराय ।६
कहै हियों संग आवो तोहे, मोहि ऊपर बिस खाइ ॥७

टिप्पणी—(७) हियो–यहाँ भी ।

३५०

(दिल्ली)

गिर परि के राखेउ बोराई । रहहु देवस दस आनों जाई ॥१
तो यह हम कहँ कहिसि सँदेसा । अइहों कार जोगिन कर भेसा ॥२
बिरह बियोग संताप बखानी । पान फूल कछु साथ न मानी ॥३
दन्द उदेग उचाट सँताई । रोवइ झुरवइ कछु न सुहाई ॥४
सीस रूख वैं तेल बिसारा । निसि बासर जोवइ तुम्ह बारा ॥५
जो कोउ पंथी आउ बिदेसी, आस लुबुध तिंह पूछ ।६
माँसा नास रकत न राती, पिंजर रहउ जो छूछ ॥७

टिप्पणी—(५) जोवइ–जोहती है । बारा–रास्ता ।

३५१

(दिल्ली)

सखी सहेलिंह बैठहिं आई । बोरावहिं बोराइ न जाई ॥१
बात कहत तो उतर न देई । खिन खिन मर मर साँसैं लेई ॥२
नाच कोउ कछु नगर जो होई । सखी मँदिर चढ़ि देखैं सोई ॥३
उवहु बुलावहिं देखहु आई । कहियो देखै तहाँ न जाई ॥४
पिय बिन अउर न देखौं काहू । देखैं बोलैं जासेंउ लाहू ॥५
फूटहिं नैन तरक कै, जो देखौं औराँह ।६
रसना थकेउ है सखी, बिनु पिउ बोलाहँ ॥७

टिप्पणी—(४) कहियो–किसी भी दिन ।

३५२

(दिल्ली)

निस बासर यहि भाँत गँवावइ । औ बहु दुख मुँहि कहत न आवइ ॥१
दिया मँदिर न जारै काऊ । उजियारें पिय बिन का पाऊ ॥२
उजियार कै काह करंऊी । पिय बिन जीवन कछु न गुंऊी ॥३
पिय बिन सेज जगत अँधियारा । दिया कै जारे न होइ उजियारा ॥४
सखी कोउ समुझावइ गई । उतर तिहै सहलिह दयी ॥५
पिय बिन दिया न जारहौ, बरु अँधियारहिं सुक्ख ।६
कै उजियार राहै सखी, काकर देखौ मुक्ख ॥७

टिप्पणी—(७) काकर—किसका ।

३५३

(दिल्ली; बीकानेर[1])

औ बहु दुख कैसहिं न घटाही[1] । देखहु आइ बूझ मन माहीं[2] ॥१
दौ[3] क मरम पतिह[4] एक जानी । एकहिं देखै[5] सबहिं[6] बखानी ॥२
जो चित होइ सो करै[7] बिचारी । तिह[8] सेउ और कोउ[9] बुधि भारी ॥३
कुँवर कहा दुल्लभ सुनु बाता । चलिहौं देवस पाँच कै साता[10] ॥४
इहाँ क[11] समाँधान[12] कछु कीजै । तो[13] पयान वह देस कहँ[14] दीजै ॥५
महतै लोग बुलाइ[15] कै, करौं इहाँ क समाधान[16] ।६
उवइ अग त घटै जग पानी, तुरियहिं[17] देउँ पलान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१—औ बहुत दुख मोहि कहै न जाई । २—देखहु बूझि अपने जिय माहीं । ३—दहु । ४—सुनहु । ५-देखि । ६—सबै । ७—करहु । ८—तुम्ह । ९—को रे । १०—इस पक्ति का पाठ उपलब्ध नही है । १०—इहँका । ११—समधान । १३—तौ रे । १४—वहि दिसि दीजै । १५—बोलाइ । १६—समधान । १७—तुरियन ।

टिप्पणी—(५) समाँधान—व्यवस्था ।

(६) तुरियहिं—घोड़ोको । पलान—जीन ।

३५४

(दिल्ली; बीकानेर)

परी चपटी कछु[1] न सुहाई[2] । बाँभन[3] कहेउ सँदेस जो आई ॥१

१—सम्मेलन संस्करणमें पक्ति ४ नहीं है । उसमें बीकानेर प्रतिमें केवल ६ पक्ति होनेकी बात कही गयी है ; किन्तु माताप्रसाद गुप्तका कहना है कि इस प्रतिमें यह पक्ति है । (भारतीय साहित्य, वर्ष ८, अक ३, पृ० ९०) ।

बहु[१] मरोह मन[२] पिता कर[३] आवइ[४] । सुनि[५] सँदेस रुपमनि[६] सत भावइ[७] ॥२
गयेउ[८] मँदिर मँह पैठेउ जाई[९] । मिरगावति[१०] सेंउ बात चलाई ॥३
आजु पिता कर मानुस[११] आवा । कुसल खेम पिताकर[१२] पावा ॥४
मातैं पितैं[१३] बहुत कै कहा । मींचु नियर अब आयउ अहा[१४] ॥५
बिरध भयहुँ अब आवहु कूसर[१५], पँडुर[१६] भये ते केस ।६
लोयन दिस्टि घटी न सूझै,[१७] देखु आइ[१८] हम भेस ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–किछु । २–सोहाई । ३–दूलभ । ४–हिये । ५–×। ६–कर । ७–आवै ।
८–पुनि । ९–रुकुमिनि । १०–क सतावै । ११–कुँवर । १२–बैठेउ जाई ।
१४–मिरगावती । १४–बाँभन । १५–कुठाव कै। १६–माता पिता । १७–(दि०)
आहा । १८–ब्रिध भयेउ आवहु । १९–पडर । २०–खुटानी सूझै न । २१–
आइ देखु ।

टिप्पणी—(२) मरोह–मया, ममता ।
(५) मींचु–मृत्यु ।
(६) पंडुर–श्वेत; सफेद ।

३५५

(दिल्ली;[१] बीकानेर)

इह[१] कहि मातैं पितैं बुलावा[२] । जो तुम्ह कहहु सोइ हम भावा ॥१
मिरगावतीं कहा[३] सुनु[४] सामीं । तू[५] प्रभुता हा र[६] तुम्ह[७] कामीं ॥२
जो चित मन रूचत[८] तुम्ह[९] होई । जो पिय[१०] कहहु सर ऊपर सोई ॥३
राइभान कँह[११] दीजै[१२] राजू । बिलँब न लाइ कीजै आजू[१३] ॥४
सब नगिह कँह कहइ[१४] बुलाई । जब लगि आउँ इँह[१५] पितहिं मिलाई॥५
काज राज कै सँवारहु[१६], जब लग राइभान है[१७] बार ।६
अलप दिनँह[१८] मँह[१९] आउब मिलि कै[२०], छाड़ि देह जिय धार[२१] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–यह । २–माता पिता बोलावा । ३–कहै । ४–सुनहु तुम । ५–तुम । ६–रे ।
७–तुम । ८–रुचिता । ९–तुम । १०–रे । ११–कहुँ । १२–दीजियै । १३–लाइयै
गवनियै आजू। १४–कहौ । १५–आवहिं । १६–कर सँवरहु । १७–हहि । १८–
दिवस । १९–महँ फिर । २०–× । २१–छाँडि जाहिं जीय अधार ।

टिप्पणी (२) प्रभुता–स्वामी । कामीं–कर्मी; सेवक; काम करनेवाला ।

१—इस प्रतिमें पंक्ति ३–४ क्रमशः ४–३ है ।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०, बी०) मिरगावती। २–(ए० बी०) बोलाई। ३–(बी०) रही। ४–(बी०) लहु। ५-(ए०) भेटै बेरि समद तेहि देई; (बी०) भेटे जो रे समद तेहि देई। ६–(ए०) सोई; (बी०) गीय लगाय बहु रोवै सोई। ७–(ए०) दैअ; (बी०) दइव जो। ८–(ए०) मेरावै; (बी०) मेरवै। ९–(ए०, बी०) तो। १०–(ए०) होअ। ११–(ए० बी०) मेरावा। १२–(ए० बी०) बिछुरत। १३–(ए०) आइ देवस दुहेला। १४–(ए०) उवह। १५–(ए० बी०) सोहागिनी होइहु। १६–(ए०) जोन; (बी०) जमुन। १७–(बी०)×। १८–(ए०) दैके; (बी०)×। १९–(बी०) बहुरि दुमनि भै जाहि; (ए०) है कै बहुरि दुमनि जाहि। २०–(ए०, बी०) मिरगावती। २१–(ए०) हमसे; (बी०)×। २२–(ए०, बी०) नाहि।

टिप्पणी—(१) भैंटै–मिलने।
(२) सेई–वह।
(३) मिराउ–मिलावे। मिरावा–मिलाप।
(५) गाँग–गंगा। जवन–यमुना।
(६) दोमन–उदास।
(७) नाइ–नहीं।

३५९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा[1] कछु[2] साँठो[3] लेई। बाट घाट कोउ माँग त[4] देई ॥१
बाँवन कोरि[5] भँडार लिवावहिं[6]। गाड़िहि[7] भरि कै साथ चलावहिं[8] ॥२
कंचनपुर सेंउ कियउ[9] पयाना। कोस पाँच एक भयउ[10] मिलाना ॥३
राइभान[11] पहुँचावइ[12] आये। दोउ जनहिं अंको[13] लै लाये ॥४
कुँवर नैन डबडब[14] भरि आये। परहिं[15] आँसु जस[16] मोंति सुहाये ॥५
मिरगावति[17] रोवइ[18] गिय लाई[19], कस कै[20] जीहों[21] माइ ॥६
राइभान[22] के बिछुरें खिन एक[23], मोकँह[24] जुग बर जाइ[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) कही। २–(ए०, बी०) कुछु। ३–(बी०) सॉठा। ४–(ए०) माँग तो; (बी०) मॉगै तेहि। ५–(ए०) कोटि। ६–(ए०) लेवावा; (बी०) लदावा। ७–(बी०) खाडहु। ८–(ए०) माल लेवावा; (बी०) साथ चलावा। ९–(ए०) सौं कीन्ह; (बी०) सौ कीय। १०–(ए०) भई; (बी०) भा। ११–(ए०, बी०) राय-भान। १२–(ए०, बी०) पहुँचावै। १३–(ए०, बी०) दुहू जनै आँको। १४–(ए०) डुबिडुबि; (बी०) डबडबाइ। १५–(बी०) चुँवहि। १६–(ए०) जनि। १७–(ए०,

बी०) मिरगावती। १८–(बी०) रोव; (ए०) दुवौ। १९–(ए०, बी०) लाइकै। २०–(ए०, बी०) कैसे। २१–(बी०) जीऊँ। २२–(ए०) कुँवरान। २३–(ए०) बिछुरी एक तिल। २४–(ए०, बी०) ×। २५–(ए०) पर जाय; (बी०) भरि जाय।

टिप्पणी—(१) साँठ–अर्थ, द्रव्य, धन। त–तो।
(२) कोटि–कोटि, करोड़।
(३) मिलाना–पड़त्व।

३६०

(दिल्ली; बीकानेर[१])

कुँवर कहा सब लोग बुलाई[१]। राइभान कै सेउ न चुकाई[२] ॥१
मोसेंउ अधिक इँह कै जानहु[३]। जो र[४] कहहि[५] सो[६] सब परवानहु[७] ॥२
महतैं लोग कँह[८] कहा गुसाई[९]। यह तो[१०] रूपमुरारि कै ठाँई ॥३
नेगी हमहिं चलावहिं काजू[११]। बावन साख[१२] इन्ह कर राजू[१३] ॥४
इनहि के साख पै करहि जुहारू[१४]। इन्ह सेउ[१५] को र और[१६] बड़वारू[१७] ॥५
इहवइ[१८] बात कै चिन्ता[१९] न कीजइ[२०], गवनइ आपुन[२१] देस।६
ई[२२] राजा हम नेगी जरम क[२३], ई सिर हम इँह केस[२४] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–बोलाई। २–रायभान कै सेवा न चुकई। ३–मोहि सेंउ अधिके जानेहु। ४–रे। ५–कहै। ६–से। ७–परिवानेहु। ८–महथै लोगन। ९–गोसाई। १०–एतौ। ११–काजा। १२–सखा। १३–राजा। १४–औ इन्ह हम करब जोहारा। १५–सै। १६–और कोरे। १७–बड़वारा। १८–एहि। १९–चिन्ता। २०–कीजै। २१–गवनियै आपने। २२–ए। २३–जनम कै। उन्ह सिर हम वेस।

टिप्पणी—(१) सेउ–सेवा। चुकाई–कमी।
(२) परवानहु–प्रमाणित करना; पूरा करना।
(६) इहवइ–इस। गवनइ–गमन कीजिये।
(७) केस–केश; बाल।

३६१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

यहिं[१] रे बात कहि वैं[२] बहुरे[३]। कुँवर पलान माँग[४] बहु घोरे ॥१
घोरहिं[५] बहुतै चेरि[६] चढ़ाई। औ बहुतहिं कहँ डाँडि फँदाई ॥२
मिरगावति[७] चौडोल चढ़ाई। फाँद सिंहासन[८] चढ़ी जो[९] धाई ॥३

१–इस प्रतिमें पंक्ति ४ की अर्धालियाँ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

करनराइ[१०] धाइहि[११] कै कोरी[१२]। दूध पियावत[१३] चली कचोरीं[१४] ॥४
नदी तीर एक[१५] मेलेउ[१६] जाई। जाँत पन्थ बहु साथ चलाई[१७] ॥५
एक देवस जो[१८] मेलान कर[१९] उहै[२०], और[२१] देवस र[२२] चलाहिं[२३] ।६
जिह दिन[२४] राजुकुँवर क[रै*] पयानाँ,[२५] गाँव सहस मिलि जाहिं[२६] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) येह; (बी०) यह। २–(ए०) ये। ३–(ए०, बी०) बहोरे। ४–(बी०) कहे। ५–(बी०) घोरेन्हि। ६–(ए०) चीरि। ७–(ए०, बी०) मिरगावती। ८–(ए०, बी०) सुखासन। ९–(बी०) सो। १०–(ए०, बी०) करनराय। ११–(बी०) धाई। १२–(बी०) कोरा। १३–(बी०) पियावति। १४–(बी०) कचोरा। १५–(बी०) गै। १६–(ए०, बी०) मेलेव। १७–(ए०) हाट पटन सब साथ चलाई; (बी०) हाट बाटन सब साथहिं नाई। १८–(ए०) रे; (बी) ×। १९–(बी०) करै। २०–(ए०, बी०) ×। २१–(ए०, बी०) दोसरे। २२–(ए०, बी०) ×। २३–(बी०) चल जाइ। २४–(ए०, बी०) जेहि दिन। २५–(बी०) कर मिलान; (ए०) कर पंथान। २६–(बी०) मिलै जाइ।

टिप्पणी—(१) बहुरे–लौटे।

(२) डाँडि (डॉडी)–डोली; एक आदमीको ढोनेवाली पालकी। **फँदाई**–व्यवस्था की।

(३) **चौडोल**–चार कहारो द्वारा ढोई जानेवाली पालकी। **सिघासन**–एक प्रकारकी पालकी। इसका सुखासन पाठ भी सम्भव है; पदमावत, मधुमालती आदि प्रेमाख्यानक काव्योकी नागरी-कैथी प्रतियोमे सुखासन पाठ ही मिलता है। तदनुसार माताप्रसाद गुप्तने स्व-सम्पादित ग्रन्थोमे सुखासन पाठ ही ग्रहण किया है। किन्तु अन्यत्र कहीं भी पालकीके अर्थमे सुखासन शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। वासुदेव शरण अग्रवालने स्वसम्पादित पदमावतमे इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि आइने-अकबरी (ब्लाखमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ २६४) मे अबुलफजलने पालकी, सिघासन, चौडोल और डोली, चार प्रकारके यानोंका उल्लेख किया है जिन्हे कहार (पालकी बरदार) कन्धेपर उठाकर चलते हैं। अतः आइने-अकबरीके अनुसार हमने यह पाठ चन्दायनमे स्वीकार किया है। यहाँ भी वही पाठ ग्रहण किया गया है।

(४) **कोरीं**–(स० क्रोड) गोद। **कचोंरी**–कटोरी।

(५) **मेलेउ**–ठहरा।

(६) **मेलान**–पड़ाव।

३६२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

एक मेलान[1] भयउ[2] वँह[3] आई। जहाँ गड़रियें[4] किय[5] पहुँनाई[6] ॥१
राजकुँवर वहि[7] चीन्हेउ[8] ठाउँ। कहिसि गड़रियहि[9] देखै जाऊँ ॥२
जाइ[10] गड़रियहि देखे काहा। आँधर भयउ[11] बैठि वह[12] आहा ॥३
दूबर भा[13] सठि[14] मरि कै रहा। कुँवर पूछि[15] वह[16] बातैं कहा[17] ॥४
जे बातैं नायक सेंउ[18] कही। कहिसि आँख हम जोगियेउ दही[19] ॥५
कुँवर कहा सब लोगहिं[20] आगे, औगुन केरी बात[21] ।६
बाट माँझ कै जादु[22] पसारिसि, पंथहि रहा लै खात[23] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(बी०) मिलान। २-(ए०) भएेव; (बी०) भवा। ३-(ए०, बी०) तहँ। ४-(बी०) गड़रिया। ५-(बी०) की; (ए०) बाट। ६-(ए०) देखाई। ७-(ए०) अेह; (बी०) वह। ८-(ए०) चीन्हेव; (बी०) चीन्हिसि। ९-बी०) गडरियै। १०-(ए०) जाए; (बी०) जाय। ११-(ए०) भएव; (बी०) भवा। १२-(ए०) अेह। १३-(बी०) ×; (ए०) भवा। १४-(ए०, बी०) सुठि। १५-(बी०) कहा। १६-(ए०) उवह। १७-(बी०) कहाॅ। १८-(ए०, बी०) सौं। १९-(ए०, बी०) जोगी डही। २०-(ए०, बी०) लोगन्ह। २१-(ए०) जो हुती उकरी बात; (बी०) जो होत ऊकरि बात। २२-(ए०, बी०) जाल। २३-(ए०) रोकि रहा लै घाट; (बी०) जो बाॅझत तेहि खात।

टिप्पणी—(४) दूबर-दुर्बल; दुबला। सठि-शठ, दुष्ट।

३६३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कुँवर कहा जो वहि कहँ[1] पावसि। काह करहु[2] वहि मार उड़ावसि ॥१
कहि[3] मानुस मानुस नहिं खाई। हौं वहि खावउँ[4] नहिं[5] हाडौ जाई[6] ॥२
कुँवर कहा तैं बहुतै खाये। मरै क मन्द दिन अब तिह आये[7] ॥३
छाड़उ वहि[8] बिसवास कै[9] बाता। खायउ[10] बहुतै[11] [कइकै][12] घाता ॥४
हमहु[13] परे हुत फाँद[14] तिहारे[15]। उबरे[16] तो[17] बिधि केर उबारे ॥५
हौं अहौं उहि[18] जोगी पाहुन,[19] जैं लीन्हों[20] सब[21] साँठ ।६
काह[22] चलै अब[23] तोरेउ[24] यहि ठा,[25] मारों खाँडै काँठ[26] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१-(बी०) का। २-(ए०, बी०) करसि। ३-(ए०, बी०) कह। ४-(ए०, बी०) उहि खाॅव। ५-(बी०) न। ६-(बी०) देऊॅ। ७-(ए०) मरहु भले ही अब मन्द

दिन आये; (बी०) मरबेहु भलेहि मद दिन आये। ८–(ए०) उए; (बी०) अब। ९–(ए०, बी०) की। १०–(ए०) खाये, (बी०) खायेव। ११–(बी०) बहुत। १२–(दि०) लइके; (बी०) जो लै लै; (ए०) किए नि··· १३–(बी०) हमहूँ। १४–(बी०) फन्द परे हुते। १५–(ए०) तोहारे; (बी०) तुम्हारे। १६–(बी०) उबरेउ। १७–(ए०) सो। १८–(ए०) उवह; (बी०) वह। १९–(ए०) ×। २०–(ए०) लीन्हेव; (बी०) जो तोरतेहेहु। २१–(बी०) ×; (ए०) तोर। २२–(बी०) कब। २३ (बी०) ×। २४–(बी०) तोर; (ए०) तोरा। २५–(ए०) ×; (बी०) एहि ठाँव। २६–(बी०) काढ़ि।

टिप्पणी—(४) बिसवास–विश्वासघात।

(५) फाँद–फन्दा। तिहारे–तुम्हारे। उबरे–निकले। केर–के।

३६४

(दिल्ली; बीकानेर)

अबहूँ झूठ न बोलब[१] छाड़सि। पिछली[२] बात कुदन्तहि काढसि[३] ॥१
चीन्हसि बोल फुरहि[४] वह जोगी। सूख गयेउ जनु[५] बरिस क रोगी ॥२
हिय महँ कहिसि मीचु अब आई। आँख नाँहि[६] किहँ[७] जाउ पराई ॥३
कुँवर कहा जनि[८] जिय कहँ डरही[९]। वै[१०] सब छाड़[११] जो राखी गिरही[१२] ॥४
कुँवर जो चर देखै जाई[१३]। साथ गड़रिया लीन्हि[१४] धराई ॥५
चले जो चर देखे कुँवर[१३], हाड़ रहै लै साँख[१६]।६
खाइसि एक न छाड़सि इँह[१७] महँ[१७] मानुस नाँहि न पाँख ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बोलिब ना। २—पाछिलि। ३—मडत महिं गाडसि। ४—फुरहु। ५—जस। ६—न आहि। ७—कहँ। ८—जिनि। ९—जियहि डरासी। १०—वेइ। ११—छाँडु। १२—रखे गरासी। १३—कुँवर रहा चूरि गै देखौ जाई। १४—लिहिसि। १५—जाइ चूरि देखै कहा। १६—पै सख। १७—×। १८—नाउँ न पंखि।

टिप्पणी—(१) बोलब—बोलना।

(४) गिरही—कैद।

(७) पाँख—पक्षी।

३६५

(दिल्ली; बीकानेर[१])

कुँवर कहा यह बड़ेउ[१] बलाई। मारी[२] बाट कै जाइ मँडाई ॥१

१–दोनों प्रतियोंमें पक्ति ३-४ परस्पर स्थानान्तरित जान पडती हैं। साथ ही दोनों पक्तियोंकी उत्तरवर्ती अर्धालियाँ प्रायः एक-सी हैं, जिनकी कोई सगति नहीं है। पक्ति ४ का मूल पाठ निश्चय ही भिन्न रहा होगा।

दूलँभ कहा दयी यह[2] मारा। आँख नाँहि[4] अब कइसेंउ[5] पारा ॥२
चरकैं[6] मानुस लै[7] उदराई। बहुरि आपु रे[8] मिलानहिं जाई ॥३
बोलि पथरिया चर उदराई। कुँवर हँसत मिलानहिं जाई ॥४
भिनुसारैं फुनि[10] कियेउ[11] पयाना। दिन दिन नगर[12] आइ नियराना ॥५
कोस तीस एक तिह ठाँ[13] सेंउ, नगर सुबुद्धया आहि।६
कुँवर[14] दूलँभ पठये अगुमन[15], तूँ[16] रुपमनि[17] ठाँ[18] जाहि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—बड़ी। २—मारै। ३—यहि दइवै। ४—न आहि। ५—कैसे। ६—चूरि पै। ७—लाई। ७—आप बहुरि। ९—चूरि। १०—पुनि। ११—किये। १२—मारग। १३—तेहि ठाऊँ। १४—कुँवर जो। १५—पठावा अगमन। १६—×। १७—रुकुमिनि। १८—पहुँ।

टिप्पणी—(१) भिनुसारैं—प्रातःकाल।
(५) अगुमन—आगे।

३६६

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

खरभर परेउ[1] सुबुध्या गढ़ा[2]। राजा एक नगर कहँ चढ़ा ॥१
साजहिं कोट सँवारहि खाईं। ठाँउ ठाँउ[3] सब मता कराहीं[4] ॥२
बहुतै लोग निकरि[5] कै भागे[6]। सूर जो आहे[7] सिंघ जिमि[8] गाजे ॥३
देवराइ[9] सब लोग हँकारे[10]। मन्त्री सबै[11] मतै बैसारे[12] ॥४
कीजै कहा[13] मन्त्र[14] सब देहू। भरमैं मन्त्र[14] न आवइ[15] केहू ॥५
भूपति आहे[16] जो खतरी[17] उन्ह[18] महँ[18], बोलहि[19] परे अपान[20]।६
राजा बैठ रहहु तुम्ह[21] गढ़[22] महँ, हम जानहिं वह[23] जान ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१—(बी०) परा। २-(ए०) सारि भरी परी सुबुधेया गढा। ३-(ए०, बी०) ठॉव-ठॉव। ४-(ए०) सब पौरि बँधाही। ५-(ए०, बी०) निकसि। ६-(ए०, बी०) भाजे। ७-(ए०, बी)० अहे। ८-(बी०) होइ। ९-(ए०, बी०) देवराय। १०-(बी०) हँकराये। ११-(ए०) बुधि। १२-(बी०) बैसाये। १३-(ए०) काह। १४-(ए०) मता। १५-(ए०, बी०) आवै। १६-(ए०, बी०) अहे। १७-(ए०, बी०) खत्री। १८-(ए०) ×। १९-(बी०) बोलैं। २०-(ए०) बरभे अपार; (बी०) बर रे अपान। २१-(बी०) तोह; (ए०) घर। २२-(ए०) ×। २३-(बी०) वै।

टिप्पणी—(१) खरभर—हलचल।
(२) ठाउँ ठाउँ—स्थान-स्थानपर। मता—परामर्श।

(३) निकरि—निकल। सूर (शूर)—वीर। जिमि—समान। गाजे—गरजे।
(४) हँकारे—बुलाया।

३६७

(दिल्ली; बीकानेर)

भयउ मन्ता[१] सब लोग बहोरा। खरभर गाँव[२] परा अँहडोरा[३] ॥१
नगर लोग अन पानि न भावइ[४]। रुपमनि[५] कर जीउ गहिगहि आवइ[६] ॥२
सखी सहेलीं बैठी आही[७]। कहहिं आजु[८] तुम्ह[९] का गहिगही[१०] ॥३
जिह दिन सेंउ तुम्ह[११] बिछरेउ साँई। कहियेउ[१२] न देखिहु[१३] आजुकै[१४] नाईं ॥४
कै र चाह कछु पिय के पाई[१५]। यह[१६] अनन्द जिय माँझ न जाई[१७] ॥५
सो दिन सखी होई का[१८], जिह[१९] पावउँ[२०] पिय चाह।६
तन मन जीवन बलि करौं, अउर वस्तु का आह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—भा मन्त। २—नगर। ३—अँदोरा। ४—खावा। ५—रुकुमिनि। ६—गहगहाइ आवा। ७—सखि पास उनि बैसी अही। ८—कहिसि। ९—तुम। १०—गहगही। ११—जेहि दिन हुतै तुम। १२—कहियो। देखेंउ। १४—आजकी। १५—कै किछु चाह पीय कै आई। १६—तेहि। १७—मँहि चहचहाई। १८—होइहिं कस। १९—जेहि। २०—पाऊँ। २१—और बस्त है काह।

टिप्पणी-(१) बहोरा—लौटे। अँहडोरा—हाहाकार।
(२) अन पानि—अन्न-पानी। गहिगहि—गद्गद।

३६८

(दिल्ली, बीकानेर)

बहुत देवस चिन्ता[१] मँह गयई[२]। इह दिन कछु अगुमन भयई[३] ॥१
सुख निंदरा दुँहुँ लोयन लागी[४]। सपनाँ देखै लागि सुभागी[५] ॥२
जानु चहूँ जग उनै जो आवा[६]। चचल चमक असाढ़ जनावा ॥३
बक पाँती[७] बादर मँह आई। सारंग मधुर बैन चलाईं[८] ॥४
दादुर बोलहिं सबद सुहावा[९]। पपीहैं[१०] चहु दिस पीउ बोलावा[११] ॥५
आईं बीरबहुटी बन फचुआ, राता चीर सँवारि[१२]।६
अस सपनाँ रितु बाहर[१३], सूत[१४] देखै लागि सुनारि[१५] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—चित। २—गयो। ३—किछु आगमन भयो। ४—सुख निद्रा लोइनहु

लागी। ५-सभागी। ६-चहु दिसि उनै मेघ जनौ आवा। ७-बग पाँति। ८—सारंग मजूर बजन चिल्लाई। ९—सोहावा। १०—पपिहा। ११-पिउपिउ लावा। १२—आई बीरबहूटी रतक (?) चुव × × सँवारि। १३—बहार। १४—× । १५—लाग सोनारि।

३६९

(दिल्ली; बीकानेर)

फुनि जनु[1] सघन धार[2] बरिसाई। धरती हरियरि भयउ[3] सुहाई ॥१
बोलहिं मोर कोलाहर[4] होई। रितु अनूप बिरसै सब कोई ॥२
बनखँड पलुहे सायर भरे। उखठे[5] रूख तेउ ऊभे[6] हरे ॥३
रहस उठा[7] जीउ बिहसति जागी। झँरकी[8] सेज दोमन भइ[9] लागी ॥४
पूछहिं सखी कुँवरि कहु[10] बाता। रहसति उठी दोमन कस[11] धाता ॥५
सखी हम इह सपनाँ[12] सोवत[13], देखेंउ[14] अस र[15] अनूप।६
सेज सूत[16] हौं झरकी[17] फिर[18] मैं[18], तिंह रे भरेउँ यह[19] रूप ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-जो। २-[धार*] सघन। ३-भई। ४-कोराहल। ५-उकठे। ६-सेउ भये। ७-रहसति उठि। ८-छरगी। ९-दुमनि मुख। १०-कह। ११-उठेउ दुमनि केह। १२-सखी हे हम सपना। १३-×। १४-देखा। १५-रे। १६-सूनी। १७-छरकी। १८-×। १९-तेहिरे फिरेउ हम।

टिप्पणी—(२) कोलाहर-कोलाहल।
(३) पलुहे-पल्लवित हुए। सायर-सागर। उखठे-सूखे। रूख-वृक्ष। तेउ-वे भी।

३७०

(दिल्ली; बीकानेर)

कहै बिचार सखी एक लागी। सपनाँ अस को पाउ सुभागी[1] ॥१
उनै जानु तुम्ह आयउ साई[2]। चन्दन माँग[3] बक पाँत[4] जो आई[5] ॥२
सारंग पपिहा दादुर मोरा। बाज[6] बधावा मन्दिर तोरा[7] ॥३
बीरबहूटि क[8] सपन अमोला। राता[9] चीर पहिरिहहु[10] चोला ॥४
[सघन देखेउ औ भुँइ हरी। सेज पिरम रस तुम कहँ धरी][11] ॥५
सूख पलुह[12] जस बनखँड बरखा[13], ऐस[14] सपन जो पाउ[15]।६
बीजु जो देखी[16] सपनैं, फेरि सौत साथ पिय आउ[17] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कोइ देख सभागी । २–उनै जो आइहि तुम्हार । ३–भग । ४–बग पाँति । ५–सोहाई । ६–बजै । ७–तूरा । ८–बीरबहूटी कर । ९–रत । १०–पहिरि हौ; (दि० इतर पाठ) पहिरि तन । ११–(दि०) पक्ति लुप्त । १२–पलुहा । १३–× । १४–अस । १५–सपना कोइ पावइ । १६–देखेहु । १७–सौरि साथ लै आवइ ।

३७१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

कहिसि दई[1] वह[2] देवसो कोई । पिउ आवइ[3] सपना फुर होई ॥१
वहै बात[4] कहत हुत[5] बागी । बाँभन[6] आयउ[7] पँवरि[8] दुवारी ॥२
प्रतिहार कहँ[9] कहिसि जो[10] जाई[11] । कुँवरिहिं जाइ[12] सँदेस कहाई[13] ॥३
अस[14] कहु जाइ कुँवर फुनि आवा । सुना[15] पँवरियँ उठि कैं धावा ॥४
ततखन[16] रुपमनि[17] काग उड़ावइ[18] । उड़हु काग जो साँई[19] आवइ[20] ॥५
दूध भात तिंह[21] देहौं[22] भोजन[23], औ सोने कै[24] पाग ।६
आजु साई[25] जो आवइ फुनि जैं[26], उड़ि[27] र जाहु तुम्ह[28] काग[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) अै दैअ ; (बी०) कहिसि दइव । २–(ए०) उवह । ३–(ए०, बी०) आवै । ४–(ए०) जो है, (बी०) वह रे । ५–(ए०) कहती है; (बी०) बहुत हुती । ६–(बी०) दूलभ । ७–(ए०, बी०) आअेव । ८–(बी०) पौरि । ९–(बी०) सैं । १०–(ए०) तु; (बी०) तू । ११–(ए०, बी०) जाही । १२–(ए०; बी०) जाए । १३–(ए०, बी०) कहाही । १४–(ए०) × । १५–(बी०) सुनि । १६–(ए०) लीखन । १७–(बी०) रुकुमिनि । १८–(ए०, बी०) उडावै । १९–(बी०) साईं जो । २०–(ए०, बी०) आवै । २१–(ए०, बी०) तोहि । २२–(ए०) दीहो । २३–ए० × ; (बी०) भोजन देहो । २४–(ए०) की । २५–(ए०) सामी । २६–(ए०, बी०) × । २७–(ए०) रे । २८–(ए०) तोह । २९–(बी०) उड़हु सभागे-काग ।

टिप्पणी—(१) देवसो–दिवस भी ।

३७२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

बाँह[1] उभै[2] कै काक उड़ानाँ । ततखन आइ[3] सँदेस तुलाना ॥१
सुना[4] सँदेस कुँवर गा आई । कंचुकी[5] तड़क तड़क[6] उड़[7] जाई ॥२
साँवर बरन भयउ[8] सुनि राता । दुख भगान[9] मुख आयउ[10] गाता ॥३

सूखि रही हुत जानु[११] बिचारी[१२]। सुनतहि हुती[१३] जइस हुत[१४] बारी ॥४
बरिया[१५] कछु रे काग गल गर्या। अउर[१६] तरकि चूना सब भई ॥५
काग उड़ावत[१७] धन[१८] घरी[१९], आइ[२०] सँदेस भरकि।६
आधी बरिया[२१] काग गल, आधी गई तरकि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जाह। १–(ए०) ऊभि। ३–(ए०) आए; (बी०) आय। ४–(बी०) सुनत। ५–(बी०) कंचुकि। ६–(बी०) तरकि तरकि; (ए०) तरकि। ७–(बा०) उर। ८–(ए०, बी०) भयेव।। ९–(ए०) त दुख भागा; (बी०) दुख भागेव। १०–(ए०, बी०) आयेव। ११–(बी०) जनौ। १२–(ए०, बी०) सुपारी। १३–(ए०, बी०) भई। १४–(ए०) जैसी हुती; (बी०) ×। १५–(ए०) बलया; (बी०) बरया। १६–(ए०) और; (बी०) औरु। १७–(ए०, बी०) उडावति। १८–(ए०, बी०) धनि। १९–(बी०) खरी। २०–(ए०) आए; (बी०) आयेउ। २१–(ए०) बलया, (बी०) बरया।

३७३

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर)

कुँवरि कहा[१] वह[२] दूलँभ आवा। दइ[३] बुलाइ[४] वहि परसों[५] पावा ॥१
पाउ खेह आँखिह लै आँजों। जीह[६] काढ़ि तरुआ वहि[७] माँजों[८] ॥२
धाइ[९] पँवरियें[१०] दीन्हि[११] बुलाई[१२]। पूछइ[१३] लाग सँदेस अघाई[१४] ॥३
कहिसि सँदेस[१५] जो र[१६] कछु[१७] आहा[१८]। मिरगावति[१९] साथ फुनि[२०] कहा ॥४
सखी कहा[२१] मैं सपन[२२] बिचारा। मोर कहा सपनें[२३] पतिपारा[२४] ॥५
रुपमनि[२५] कहा जाहु तुम्ह[२६] दूलभ, पितहि देहु इह[२७] चाह।६
नगर न कछु[२८] भौ मानै जिय महँ[२९], राजकुँवर वह[३०] आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कहे। २–(ए०) उवह। ३–(ए०, बी०) देहु। ४–(ए०, बी०) बोलाय। ५–(ए०, बी०) परसों वोहि। ६–(बी०) जीभ। ७–(बी०) तरुवा वोहि। ८–(ए०) पूरी पंक्ति नहीं है। ९–(ए०) धाय। १०–(ए०) पँवरिआ; (बी०) पौरिये। ११–(ए०) दीन्ह, (बी) दीन। १२–(ए०, बी०) बोलाई। १३–(ए०, बी०) पूछै। १४–(ए०, बी०) कहाई। १५–(ए०) सँदेसा। १६–(ए०, बी०) रे। १७–(ए०) कुछु; (बी०) किछु। १८–(ए०, बी०) अहा। १९–(ए०, बी०) मिरगावती। २०–(ए०) साथहु सुनि। २१–(बी०) कही काह। २२–(ए०, बी०) सपनु।

१—इस प्रतिमें दूसरी पंक्ति नहीं है। इसमें पंक्ति ३, ४, ५ क्रमशः २, ३, ४ के रूपमें हैं और पंक्ति ५ के रूपमें सर्वथा नयी पंक्ति है।

२३–(ए०, बी०) सपना । २४–(ए०) पाँचवीं पंक्तिके रूपमे—रुपमनि कहा कहत है कोई । आवत आह कुँवर वह सोई ॥ २५–(बी०) रुकुमिनि । २६–(बी०) तोह । २७–(ए०, बी०) यह । २८–(ए०, बी०) कुछु । २९–(ए०) × । ३०–(ए०) सो ।

टिप्पणी—(१) **परसों**—स्पर्श करूँ ।

(२) **पाउ**—पैर । **खेह**—धूलि । **आँजों**—अजनकी भाँति लगाऊँ । **जीह**—जीभ । **तरुआ**—तालू । **भाँजों**—साफ करूँ ।

(३) **पँवरिये**—द्वारपाल ।

३७४

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

दूँलँभ[1] जाइ[2] राइ[3] सौं कहा । सभा लोग सब बैठेउ[4] आहा ॥१
नगर जो परा हुतेउ[5] अहँदोग[6] । सान्त[7] भई मन का[8] वह[9] रोरा[10] ॥२
राइ कहा उन्ह आगे[11] जाई[12] । गारो दै कुँवर[13] लै आई[14] ॥३
इहाँ[15] बात बहु[16] कुँवर जो कही । मिरगावती सौं जो कछु[17] अही ॥४
कहसि बिहाहि[18] न छाड़ी जाई[19] । औ जो कछु[20] कहहु सो किये सिराई[21] ॥५
मिरगावती बूझि मन देखा[22], अब न चली[23] कछु[24] मोर ।६
कहिसि सोइ सिर ऊपर मोरें, जो रुचत हिय[25] तोर ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) सभ । २–(ए०) जाए; (बी०) जाय । ३–(ए०, बी०) राय । ४–(ए०) बैठेव; (बी०) बैठा । ५–(ए०) हुतेव; (बी०) परा जो होत । ६–(ए०) आहि डोरु; (बी०) अँदोरा । ७–(ए०, बी०) सान्ति । ८–(ए०, बी०) गा । ९–(ए०, बी०) वहि । १०–(ए०) रोरू । ११–(ए०) आगे उन्ह । १२–(बी०) जइयै । १३–(ए०, बी) कुँवरहि । १४–(बी०) अइयै । १५–(बी०) इहाँ रे । १६–(ए०, बी०) × । १७–(ए०, बी०) कुछ; (बी०) किछु जो । १८–(ए०, बी०) बियाही । १९–(ए०) न छाडै; (बी०) छाड़ि न । २०–(ए०, बी०) × । २१–(ए०) सेराई । २२–(ए०) देखी । २३–(ए०, बी०) चलै । २४–(ए०) कुछु; (बी०) किछु न चलै अब । २५–(बी०) है ।

टिप्पणी--(१) **रोरा**—परेशानी ।

(२) **गारो दै**—गले लगाकर ।

(६) **मोर**—मेरा ।

(७) **तोर**—तुम्हारे ।

३७५

(दिल्ली; बीकानेर)

राजा इहाँ भयउ असवारू[1]। दर परिगह संग भयउ अपारू[2] ॥१
कुँवर इहाँ सेउ कियउ[3] पयानाँ। राजो[4] आइ संगति[5] नियरानाँ ॥२
राजा देख कुँवर [ऊतरा*][6]। राजा[7] भयउ[8] उतरि कै[9] खरा ॥३
कुँवर पायहिं[10] कहँ बाँह पसारी। राइ उठाइ दीन्हि अँकवारी ॥४
भये असवार दोउ[11] जन चले। खेम कुसल[12] पूछहिं दोउ[13] भले ॥५
बातैं[14] करत नगर मँह पैठ[15], सब कोई देखै लाग।६
साह महाजन करहिं निछावर[16], धन धन कुँवरि[17] कै भाग ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—राय इहाँ सै भवा असवारू। २—लिहेहि अपारा। ३—सैं कीय। ४—राजा। ५—सगित। ६—(दि०) अतूरा; (बी०) उतरा। ७—राजा। ८—पुनि। ९—भा। १०—पाइ। ११—दुवौ। १२—कुसर। १३—दहुँ। १४—बात। १५—आये। १६—न्याछावरि। १७—धन रुकुमिन।

टिप्पणी—(२) राजो—राजा भी।
(३) खरा—खड़ा।

३७६

(दिल्ली; एकडला;[1] बीकानेर[1])

मारग नेत पटोर बिछाये[1]। पँवरहिं[2] गरगज बाँधि सुहाये[3] ॥१
चढ़ि[4] धौराहर देखहिं रानी। राजकुँवर आवहिं[5] किह[6] बानी ॥२
कर पसारि वहि वहि दिखरावइ[7]। राजकुँवर सुन्दर वह [आवइ*][8] ॥३
राजकुँवर पर चँवर[9] ढराही। छात[10] मेघडम्बर तिह[11] छाहीं ॥४
धनि रुपमनि[12] जैं यह[13] बर पावा। दई[14] गुसाईं[15] जोग मिरावा[16] ॥५
पैठेउ[17] आइ[18] मँदिर मँह गाजत[19], बाजै लाग बधाउ[20] ।६
रुपमनि[21] मनसा पूजी मनकी[22], राजकुँवर घर आउ[23] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१—(ए०) बिछाई। २—(ए०) पटोरन्हि। ३—(ए०, बी०) सोहाये। ४—(ए०) चहि। ५—(ए०, बी०) आवै। ६—(ए०, बी०) केहि। ७—(ए०) उहि उहि देखरावै; (बी०) वोहि वह देखरावै। ८—(ए०, बी०) आवै, (दि०) आहै। ९—(ए०, बी०) चौर। १०—(बी०) छत्र। ११—(बी०) बहु। १२—(बी०) रुकुमिनि। १३—(ए०) जे अस; (बी०) जो यह। १४—(ए०) दैअ; (बी०) दैव। १५—(ए०, बी०) गोसाईं।

१—इन दोनों प्रतियोंमें पक्ति ३-४ क्रमशः ४,३ हैं।

१६–(ए०, बी०) मेरावा। १७–(ए०, बी०) पैठे। १८–(ए०) आए। १९–(ए०, बी०) ×। २०–(ए०) बाधाए; (बी०) बधाव। २१–(बी०) रुकुमिनि। २२–(ए०, बी०) ×। २३–(ए०) आए, (बी०) आव।

३७७

(दिल्ली; बीकानेर)

बिरह सुरुज[1] कर आउ घटानी[2]। अस्त भयउ किंह जाइ[3] न जानी[4] ॥१
भोग चाँद आयउ[5] उजियारा। सैन[6] मँदिर बहु भाँति सँवारा ॥२
रुपमनि[7] कै सिंगार तहँ आई। ठाढ़ भई बहु मान कराई ॥३
कुँवर कहा कस नियर[8] न आवहु। कहिसि कुरंगिन धनिह बुलावहु[9] ॥४
बोलत लाज न आवइ[10] तोही। नैन सोंह कै बार्लाह मोही ॥५
बरया भंजन कर गहन, कुच मंडन भौ ढीठ ।६
तरल बीजु भौ सो बन्धो,[11] दै जे गयउ हम[12] पीठ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–सूर। २–आव खुटाना। ३–भयेउ केहु जात। ४–जाना। ५–चन्द आयेउ। ६–(दि०) सबै। ७–रुकुमिनि। ८–नियरि। ९–कहिसि त्रक्रित घन डाढ़ि मिरावहु। १०–आवै। ११–त्रिभुवन बीच बाँधि हौ। १२–गये मोहि।

टिप्पणी—(१) आउ–आयु।

३७८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

हँसि[1] कै कुँवर चीर[2] कर गहा। बाँह[3] मोरि कै[4] मुकै[5] चहा ॥१
पिता[6] सपत सो छाड़ न[7] चीरू[8]। जाइ[9] गहहु मिरगावति खीरू[10] ॥२
अब जिउ मोर तोहिं न[11] मिलाई। काह[12] करौं हौं सखिह[13] पठाई ॥३
राजकुँवर[14] चौदह बुधि[15] जानै। मान करै वह[16] हँसि हँसि मानै ॥४
तिरी[17] सुभाउ मान कर[18] भाऊ। नहिं नहिं[19] करै न मानै काऊ ॥५
नहिं नहिं[20] करत भौ[21] ऊपर[22] कुँवर[23], गहि आन सेज बैठाइ[24] ।६
तिइ[25] तिरी[26] पसँगै[27] कवन[28] गुन, मान भाव न कराइ[29] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) असि। २–(बी०) चीर कुँवर। ३–(ए०) पाव; (बी०) पुनि। ४–(ए०) कर। ५–(ए०) मोकै; (बी०) मूकै। ६–(ए०) बिना। ७–(बी०) तुम्ह छाड़हु। ८–(बी०) चीरा। ९–(ए०) जाए; (बी०) जाय। १०–(ए०) चीरू; (बी०) खीरा। ११–(बी०) न तोहि। १२–(बी०) कब। १३–(ए०, बी०) सखिन्ह। १४–(ए०, बी०) कुँवर चतुर। १५–(बी०) बिधि। १६–(ए०) जो। १७–(बी०)

त्रिया। १८-(ए०) कै; (बी०) गुन। १९-(बी०) ना ना। २०-(बी०) ना ना। २१-(ए०) कुँवर भौ बिरहाह; (बी०) कुँवर आनि। २२-(ए०) आनि सेज बैठाए; (बी०) भुजवर गहि बैसाइ। २३-(ए०, बी०) तेहि। २४-(बी०) त्रियहिं। २५-(ए०) अखते; (बी०) बिसमौं का। २६-(ए०) कौन। २७-(ए०) कराय।

३७९

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

जोबन[1] साँजैउ[2] गही[3] दुसारी। जीउ बहलाइ[4] कण्ठ सेंउ धारी[5] ॥१
खोलि चौक दोइ बात कहाई[6]। दुनिया रैन यह तर[7] हम आई ॥२
पतीं[8] बात सुनु[9] पिय[10] भोरी। बिनु जिय रही पिरित न तारा[11] ॥३
दसयें दाउ[12] [दई*][13] सत राखा। बाँउँ[14] चार होउ[15] हम साखा ॥४
बेदनो[16] बात छाड़[17] जिय केरी। अति[18] चतुराई निभायहि केरी[19] ॥५
जो र जिह जग जानै बात[20], दूतचार[21] तुम्ह[22] पास।६
बहुत चरित चतुराई सर[23] बास[24], सौ सौ एक एक साँस ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(ए०) चौपट। २-(ए०) साज; (बी०) साजि। ३-(ए०) गहै; (बी०) किही। ४-(ए०) जीव बर लाये; (बी०) जो पर लाइ। ५-(ए०) कन्त सौं ठारी; (बी०) कन्त सों ढ़ारी। ६-(बी०) कहाही। ७-(ए०) अहेरे; (बी०) बहुरि। ८-(ए०) बीती; (बी०) बीता। ९-(बी०) सुनहु। १०-(ए०) अेह। ११-(ए०) पचती अहिहि प्रीति नहिं तोरी; (बी०) बाचति रही प्रीति नहिं तोरी। १२-(ए०, बी०) दाँव। १३-(ए०) दैअ; (बी०) दइय। १४-(ए०) नाव; (बी०) बाँव। १५-(ए०, बी०) रहेव। १६-बेदु, (बी०) बेद। १७-(ए०) छाड़; (बी०) छाँडु। १८-(बी०) अब। १९-(ए०) पठाइन्ह केरी; (बी०) फबहि न तोरी। २०-(ए०) चौर जाह जग जानैं; (बी०) चौर चाहि जग जानियैं बातैं। २१-(बी०) चरित्र। २२-(ए०) तोह; (बी०) तुम। २३-(ए०) ×; (बी०) सोखेउँ।

टिप्पणी—(२) चौक—दन्त-पंक्ति। दुतिया—द्वितिया।
(६) दूतचार—धूर्ताचार।

३८०

(दिल्ली; बीकानेर)

अब तो मैं[1] निहचो[2] कै बूझा। येहि जग दूसर अउर[3] न सूझा।१
दू औ एक न छाड़सि[4] नाहाँ। तो गुन अब बूझेउँ मन[5] माँहाँ ॥२
तेवरी[6] जुआ सरि[7] जिह[8] आवइ। दून किये र तुम्ह नीकैं लावइ[9] ॥३

खेल कियहु तू मैं[10] न सँभारा। भयउँ अमोली टूटि हारा[11] ॥४
तौ[12] मैं मरम न जानेउँ तोरा। अब रे खेल दिन[13] घटवँहु[13] मोरा ॥५
अब रे चीर[14] चर करों, खेल पिय की नहिं गौं[15] ।६
बिबि भुज बंधन बाँधहु[16], कुचहि[17] बीच राखों[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–मैं तू। २–निहचै। ३–और। ४–दुनै किये न छोंड़ौ। ५–हिय। ६–तिउरी। ७–सारी। ८–जेहि। ९–दुनै किये इतौ तुव गुन पावै। १०–खेलि गयेहु पै मैं। ११–रहेउ अमूलि तौ बी तुम्हारा। १२–तब। १३–देखहु तुम। १४–चपरि। १५–खेलि गहि आपहि लेउँ। १६–बाँधि के। १७–फुनि कुच। १८–रखौंउ।

टिप्पणी—(१) निहचों–निश्चय।

३८१

(दिल्ली, बीकानेर)

कियेउँ चीर चर[1] कन्त जोहारा। छाड़ न देउँ बॉत को मारा[2] ॥१
दुहुँ भुववर[3] बीच परहु जो[4] आई। छाड़ो तोहि न[5] सपत हम खाई ॥२
छाड़ छैल कीनहु[6] छरि मोहि। चल[7] न देउँ सपत हम तोही ॥३
कुँवर कहा सुनु उतर हमारा। झागा[8] छोर गहु[9] हम[10] बारा ॥४
सेज पिरम रस मानै भोगू[11]। रस अहार अब दइ हम जोगू[12] ॥५
सूर उवहि[13] दिन होइहिं[14] रुपमिनि[15], जाइ रंग रस सार[16] ।६
कुँवर हाथ उर मेले, कर पल्लवँ[17] सों वारं ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–गयेउ चपरि। २–छाडहु नाट करहु अब सारा। ३–दुहु भुअ। ४–परेहु जु। ५–न तोहि। ६–गयेहु। ७–जाइ। ८–छग। ९–किहेहु। १० बड़ि। ११–मानहिं भोगा। १२–रस अहै हम देइब जोगा। १३–उयेहिं। १४–होइहै। १५–×। १६–रुकुमिनि चउदरु सारु। १७–(दि०) बारन। १७–सेउ मारू।

३८२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

अंनपट[1] खोंटै[2] उर मेलहि[3] हाथा। गहहु जाइ[4] आनहु जिन्ह[5] साथा ॥१
कुँवर माँग[6] वह[7] सेज न देई। चिहुर खेलि[8] अधरन्ह रस लेई ॥२
करपल्लौ नख सेंउ[9] कुच गहा[10]। उरध[11] साँस कै छाड़ै कहा[12] ॥३
सन्धि[13] गहे कुँभस्थल आई। आहै पुरुब कर मेंट[14] न जाई ॥४
सिंघ के भयँ हम उरहिं छुपानी[15]। इनहि बिखम लागहिं अँकुतानी[16] ॥५

गहे कुँभस्थल सिंह भै, कामिनि उरहिं आबद्ध[१६] ।६
लिहे पुरबकम न चलहि, बिलबैं निकरहिं कर हद्द[१७] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) आव; (बी०) अब न। २–(ए०) खोटि। ३–(बी०) मेलहु। ४–(ए०) जाय; (बी०) जाइ गहहु। ५–(ए०, बी०) जेहि आनेउ। ६–(बी०) माँगे। ७–(ए०) उवह। ८-(बी०) चिहुर गहे; (ए०) चीर गहसि। ९–(ए०) सैं; (बी०) सौं। १०–(बी०) गहे। ११–(ए०) ऊध, (बी०) आध। १२–(ए०) गहा; (बी०) छाडेउ अहा। १३–(बी०) सिंघ। १४–(बी०) लिखे पुब्बखर मेट; (ए०) अहे पखर मैमत। १५–(ए०) सिंघ के भौं रही छपानी छाती ; (बी०) सिंघन्ह कै भई आरहि छाती। १६–(ए०) हेठहि लाग तेहि बिखम काँती; (बी०) लगे बिखम तबहीं अकुतानी। १७–(ए०) कै कुँभस्थल सिंघकै, कमिनि उरही उवँ न। लिहे बीबवर नच लहि, बल भु नख कर मन ॥ (बी०) गहेउ कुमस्थल सिंह होइ, उरहि समानी मुध। लिखे पुब्बखर चलहीं, बाल्म न खर जुध ॥

३८३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूत[१] रवन[२] निसि रंग रस[३] रहा[३] । पीउ मकरन्द पेम कर गहा ॥१
मधुकर केवइ[४] कँवल[५] बिसारा । मालति[६] परिमल कियउ[७] अहारा ॥२
भँवँर[८] पुरुख अपनेउँ न[९] होई । चाँड़ि[१०] परै पै[११] मिलै न[१२] सोई ॥३
रुपमनि[१३] कर[१४] मन पूजी[१५] आसा । सौ सौ दुख काढ़ै एक साँसा ॥४
आसा लागि सहै दुख[१६] कोई । पूजइ[१७] आस[१८] बिरथ[१९] न होई ॥५
आसा सहन्त[२०] दुखौं[२१] गरु[२२], भाव बन्धन अरम्भो[२३] ।६
तो[२४] इन्ह[२४] उत्तिम संगेउ[२५], जा कारन सहन्त[२६] दुखो[२७] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कुच; (बी०) रैनि। २–(ए० बी०) रॉव। ३–(बी०) तरग निसि; (ए०) अस रग उर। ४–(ए०) केव; (बी०) केवहि। ५–(बी०) कमल। ६–(बी०) मालती। ७–(ए०) किएव, (बी०) कियेव। ८–(ए०, बी०) भौर। ९–(बी०) आपन नहि। १०–(दि०) चाड। ११–(ए०, बी०) बिनु। १२–(बी०) नहि। १३–(बी०) रुकुमिनि। १४–(ए०, बी०) कै। १५–(बी०) पूजी मन। १६–(बी०) दुख सहै जो। १७–(ए०, बी०) पूजै। १८–(ए०, बी०) आस। १९–(बी०) न अबिरथा। २०–(ए०) सहहि। २१–(बी०) दुख। २२–(ए०) ×; (बी०) गरुवा। २३–(ए०) भार बीधनारंभो; (बी०) मा बिधना अरु भोग। २४–(बी०) होई। २५–(ए०) उन्ह; (बी०) ×। २६–(बी०) संगत; (ए०) संगो २६–(ए०) सहिअै; (बी०) सहन्ति। २७–(बी०) दुख।

३८४

(दिल्ली, बीकानेर)

रैन सपूरन सगुनहि भई[१]। तरुवर छाँह बहिरि[२] घन भई ॥१
पंखि जो तरुवर छाड़ेउ आहा[३]। आई बहुरेउ नहिं किछु कहा[४] ॥२
उत्तिम सो जोन्ह मुँह पर आना[५]। बूझि रही मन बिलग न मानाँ ॥३
वै बंके दिन[६] चलि गये। जिह दियसहिं सुरजन[७] रिपु भये ॥४
एक निमिख वर[८] दोइ जग देवों[९]। सो कहे मोल एइ दिन लेवों[१०] ॥५
मोल नाँहि इह[११] दिन कर दोइ[१२] जग[१३], जिह[१४] दिन दुख[१५] तन तज्ज ।६
कुंजर बिरह परानेउ जीउ लै, पिउ केहरि हो[१६] गज्ज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–सुख मँह गई। २–बहुरि। ३–अहा। ४–आयेउ बहुरि किछू नहिं कहा। ५–उत्तिम सजन मुँह पर न आना। ६–वै जो बाँके दिन तबके। ७–जिन देवसन सुरिजन। ८–पर। ९–देऊँ। १०–सौधे मोल न ए दिन लेऊँ। ११–न आहि एहि। १२–१३–×। १४–जेहि। १५–बिरह। १६–मे।

३८५

(दिल्ली; बीकानेर)

दुन्द उदेग उचाट बियोगू[१]। इँह कै जींह परेउ बर सोगू[२] ॥१
करहिं मन्ता[३] अब कीजै काहा। सेउ किही तिह भयेउ न दाहा[४] ॥२
चलहु जहाँ मिरगावति[५] राँधा। सबई साँभर सकलहि बाँधा[६] ॥३
आई मिलि[७] मिरगावति[८] ठाँऊँ। आयसु[९] होइ बसहि[१०] तुम्ह गाँऊँ ॥४
मिरगावति[११] उन्ह आयसु[१२] दिया। गरहँहि कया गाँउ सब लिया[१३] ॥५
सुख अनन्द दोइ बहुमूली[१४], उनहि र निकासहि मारि[१५] ।६
गरहँहि कया गाँव सब ढूँढ़े[१६], खेलै लाग[१७] धमारि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–बियोगा। २–उन्ह कै जीय परा बड सोगा। ३–मता। ४–सेवा किही बहु भवा न लाहा। ५–मिरगावती। ६–सब लेहु बहु सँवर बाँधा। ७–मिले। ८–मिरगावती। ९–आइस। १०–बसियै। ११–मिरगावती। १२–आयस। १३–गरहिन्हि कया रज्ञ कुहलिया। १४–सुख आनन्द दुवौ रस बरसहिं। १५–जो उन्हहि निकारिन्हि मारि। १६–ढूँढहि। १७–लागि।

टिप्पणी—(१) जींह–जी। बर–बड़ा। सोगू–शोक।

३८६

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

सुख अनन्द दुऔ रस[1] चले[2]। करै पुकार कुँवर सेंउँ चले[3] ॥१
कुँवर सभा बैठ हुत[4] जहाँ। कीन्हि पुकार लूट[5] कै[6] तहाँ ॥२
कुँवर कहा कस करहु पुकारा। बिरह वियोग[7] परी हम बारा[8] ॥३
हम तुम्हरे[9] पुर[10] बसहि[11] जो[12] आये[13]। तुम्हरे इहाँ उन्ह अवसर[14] पाये[15] ॥४
कुँवर कहा सँग आवहु मोरें। मार निपारों[16] उन्ह कँह[17] भोरे ॥५
राति गयी[18] रुपमनि[19] संग, भोर भयउ[20] उजियार।६
भोग अनन्द रहस उन कहँ सँग[21], कुँवर भयेउ असवार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०) रिसि। २–(बी०) भले। ३–(बी०) पहँ चले, (ए०) सौं मिले। ४–(बी०) महँ बैठे। ५–(ए०, बी०) लौटि। ६–(बी०) गये। ७–(ए०) बिउग; (बी०) विवोग। ८–(ए०) बरिअ हम मारा; (बी०) परा हम नारा। ९–(ए०) तोहरे। १०–(बी०) बर। १०-११–(ए०) परोसहि। १२–(ए०) ×। १३–(बी०) आई। १४–(ए०, बी०) औसर। १५–(बी०) पाई। १६–(ए०, बी०) पवारौं। १७–(बी०) कहुँ। १८–(ए०) गए। १९–(बी०) रुकुमिनि। २०–(ए०) भएेउ; (बी०) भयेउ। २१–(ए०) रहस लै कै सग; (बी०) रहसि कै लिये।

३८७

(दिल्ली, बीकानेर) भामिनी

जहाँ बैठि मिरगावत आही[1]। कुँवर कयउ पीठि दइ[2] रही ॥१
मनमँह[3] बूझि कुँवर अस कहा। मिरगावती कुहानेउ आहा[4] ॥२
तिंह[5] रस यह सेउ[6] बकतों बाता। एको दुख न रहै[7] जिंह[8] गाता ॥३
कहसि पौन पाहुना जो मैंनी[9]। बदन[10] फिरेउ कस पंचम बैनी ॥४
हम देखत कस दीनहु[11] पीठी। चकित सोह न[12] लावहु दीठी ॥५
कया जीउ मन मानिक मोरैं, हौं तूँ तूँ[13] हौं सोइ।६
दूसर[14] को अस आहे यह[15] जग, जो र बराबर[16] होइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–अही। २–दै। ३–मनहिं। ४–कुहानी अहा। ५–तेहि। ६–इह सै। ७–रहै न। ८–एहि। ९–कहेसि पवन वाहन जो नैनी। १०– बर्न। ११–दीन्ही। कहे न चक्रित धन। १३–×। १४–दोसर। १५–येहि। १६–बराबरि।

टिप्पणी—(२) कुहानेव–रूठी।

३८८

(दिल्ली, बीकानेर)

इँह र[1] बात इह[2] कारन आवा। देस क ओरहन आइ मिटावा ॥१
उहो चेरि[3] एक सेउ कराहीं[4]। पाइ पखारी[5] पानि भराईं[6] ॥२
सुनी बात यह चकित[7] हँसी। बदन बिरचि बोली[8] ससी ॥३
कहिसि[9] कुँवर वह बारि[10] बियाही। तूँ तो[11] रहिसि[12] रीझ कै ताही ॥४
कुँवर कहा वह[13] साँच न कोहू[14]। नैन देखि बूझउ इह मोहू[15] ॥५
बदन बिरचै रामाँ मुह सों, जियें न बरजों नाँह[16] ।६
देखसि निरखि निहारि कै, जगत साखि[17] भराँह ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–यह रे। २–ऐहि। ३–एहउ चेरी। ४–सेवा करई। ५–पॉव पखारै। ६–पानी पियावई। ७–चक्रित। ८–बन्दन बिरचै बोलै। ९–कहेसि। १०–बरी। ११–तौं तूॅ। १२–रहेसि। १३–दहु। १४–सॉचहु कोही। १५–देखिके बूझहु मोही। १६–बदन बिरचेउ राम पिय, पिय जिय बिरचेउ नाहि। १७–चक्रित सखी भराहिं।

टिप्पणी—(१) ओरहन–उपालम्भ; शिकायत।
(२) पखारी–धोयेगी।

३८९

(दिल्ली; बीकानेर)

कुँवर बाँह गही कर बारी। ऊपर सेज आनि बैसारी ॥१
इह का[1] मन ऐसहिं यह[2] राखी[3]। अहो सेउ ऐसहि मुँह भाखी[4] ॥२
मिरगावति[5] जानैं हम चहा। रुपमनि[6] जान[7] कि[8] पेम हम[9] गहा ॥३
बेगर बेगर दुहों कर तोखू[10]। ऐसहि राखहि[11] न लागै दोखू[12] ॥४
एक देवस दूलभ हँकरावा। राजा सनाँ[13] कहाइ[14] पठावा ॥५
आयसु[15] होइ त गवनी,[16] कुसल जाउँ पिता कर[17] ठाँउ ।६
देवस बरस बर[18] जानों तबलग, जबलग उँहि[19] न मिलाँउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–एहिका। २–इनि। ३–राखा। ४–बोहि सै फुनि एहि मुख भाखा। ५–मिरगावती। ६–रुकमिनि। ७–जानै। ८–×। ९–कर। १०–तोखा। ११–अैसे रखे। १२–दोखा। १३–सैनि। १४–कहै। १५–आइस। १६–तो गवनौ। १७–कै। १८–दिन कै बारिस पर। १९–जब लग पितहि।

३९०

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूलँभ[1] जाइ राइ सेंउ[2] कहा। कुँवर बिनति[3] अस कीन्हेउ[4] आहा[5] ॥१
पितैं[6] बहुत कै पठै बुलाई[7]। तुम्हहुँ[8] कहउ त[9] बेगि चलाई ॥२
राइ[10] कहा हौं कहै न पारउँ। जो इ[11] कहहिं[12] सीस[13] पर धारउँ[14]॥३
पितैं बुलाइन्ह[15] बरजि[16] न जाई। राजकुँवर कहुँ चाल कराई[17] ॥४
जो कछु[18] दायज दीतसि[19] आहा[20]। दूगुन दीतसि[21] औ अस कहा ॥५
राजा गनपतदेउँ सेंउँ[22] दूँलँभ, अस[23] गुजरहु[24] हम लागि।६
एक यहाँ जस चेरी राजा,[25] करिहि रसोंई आगि ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जुलभ। २–(ए०, बी०) राय सो। ३–(ए०, बी०) बिनती। ४–(ए०, बी०) कीन्ही। ५–(ए०, बी०) अहा। ६–(बी०) पिता। ७–(ए०) पठए राई, (बी०) पठयेउ बुलाई। ८–(ए०) तोहउ। ९–(ए०, बी०) तो। १०–(ए०) राय। ११–(ए०) जो रे; (बी०) जो वै।१२–(ए०) कहहु सो,(बी०) कहहिं सो। १३–(ए०, बी०) सिर। १४–(ए०) बारो ; (बी०) ढारौ। १५–(ए०) बुलाएबि ; (बी०) पिता बोलाये। १६—(बी०) बिलम। १७–(ए०) राजा कुल का चार कराई ; (बी०) राजा गौने क चार कराई। १८–(ए०, बी०) कुछु। १९–(बी०) दीन्हेव ; (ए०) दीतिसि। २२–(ए०, बी०) सौं। २३–(दि०) औ। २४–(ए०) गोजरहु ; (बी०) गुचरयेहु। २५–(ए०) एहौ एक जस चेरी राजा कै ; (बी०) एहउ चेरी एक राजा कै।

टिप्पणी—(४) बरजि–मना।
(७) गुजरहु–निवेदन करना।

३९१

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

दूलँभ बोलि जननि[1] अस कहा[2]। मोरे जनम यहै धिय[3] आहा[4] ॥१
रानी सेंउ[5] अस करहु बिनाती[6]। हीन आहि यह[7] धिय कै जाती ॥२
दुखियार[8] होइ[9] न पावै मोरी। दुलभ कहिहु[10] चेरि हौं तोरी ॥३
औ जस जानहु कहिहु[11] सँवारी। एहिकै[12] बात मैं तुमहि[13] उभारी ॥४
जाति कै[14] दई[15] गोसाई मोरी। और किंह[16] पूजहिं[17] उन्ह कै[18] जोरी॥५
इहै कुलवन्ति सुलाखन सरूप,[19] और[20] किह[21] पूजै कोइ।६
बारि[22] बियाही उत्तिम[23] सुबंस, अरु वह किह[24] सरवरि होइ ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जतन। २–(ए०) कही। ३–(ए०) दुख। ४–(ए०) अही, (बी०)

अहा। ५–(ए०, बी०) सो। ६–(ए०, बी०) करेहु बीनती। ७–(ए०) बहु। ८–(ए०) दुखीअ। ९–(ए०, बी०) होय। १०–(बी०) कहेहु। ११–(बी०) जानहु तस कहेहु।१२–(ए०) येहि की; (बी०) यहिकै। १३–(बी०) तोहि; (ए०) तोहही। १४–(बी०) की; (ए०) क। १५–(ए०, बी०) धीय।१६–(ए०, बी०) कि। १७–(ए०) पूजिह, (बी०) पूजै। १८–(ए०) अेहिकी; (बी०) इन्हकी। १९–(बी०) ए कुलबन्ती सरूप सोलखिनि ; (ए०) अे कुलवन्ती सुलाखिनो। २०–(बी०) रूप। २१–(ए०) की ; (बी०) कि। २२–(ए०, बी०) बरी। २३–(ए०) उत्तिउं। २४–(ए०, बी०) अरुधीकी।

टिप्पणी—(२) बिनाती–विनती ; निवेदन।

३९२

(दिल्ली; बीकानेर[१])

दूलभ जो आइ बचन सुनावा। राइ बहु दइ भला मनावा ॥१
पुनि धिय कँह रोवइ गिय लाई[१]। बुधि बहु दइ के समुँद[२] चलाई ॥२
कुँवर ठाँउ दूलभ लै आवा। चली बजाई सगुन भल पावा ॥३
कुँवर कहा तिंह[३] मारग जाई। जिंह मारग कछु[४] अनों[५] न[६] पाई ॥४
दूँलभ अगुवा होइ[७] जो[८] चलाई। जिंह[९] मारग सुख सेउ लै जाई ॥५
दोउ चले जो दल सुहावन, सौ सौ लाग गुहार[१०] ।६
दिन बूड़इ जाइ मग खीन्हा, कुसल कहै करतार[१०] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–यह कहि रोवै गीय लाई। २–बहु विधि दैके समदि। ३–तेहि। ४–किछु। ५–अनवन। ६–×। ७–भै। ८–×। ९–जेहि। १०–ये पक्तियाँ नहीं हैं।

३९३

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

चन्द्रागिरि नियरानेउ[१] आई[२]। दूलँभ पठये अगुमन[३] जाई[४] ॥१
पठये[५] दूँलँभ राइ[६] के ठाऊँ। कुँवर इहाँ उतरे[७] एक गाँऊँ ॥२
राजा मारग देखत अहा[८]। दुलँभो[९] जाइ[१०] छाइ के रहा[११] ॥३
बँभनहिं[१२] कै कछु[१३] चाह न पाई। मिलेउ आह कै नाँ र[१४] मिलाई ॥४
राजा यहै बात कहि रहा। दूलँभ आयउ[१५] लोगहि[१६] कहा ॥५

---

१. इस प्रतिमें यह तीन कड़वकोंमें बँटा है। पहली पक्तिके साथ ६ नयी पक्तियाँ मिलाकर एक कड़वक ; दूसरी-तीसरी पक्तिके साथ ५ नयी पक्तियाँ मिलाकर दूसरा कड़वक और चौथी पाँचवीं पक्तिके साथ ५ नयी पक्तियाँ मिलाकर तीसरा कड़वक है। और इन तीन कड़वकोंके साथ २ सर्वथा नये कड़वक भी हैं। ये सभी प्रक्षिप्त हैं और परिशिष्ट में संकलित किये गये हैं।

राजकुँवर लइ आयउ बॉभन[१७], सौन[१८] परी यह[१९] बात ।६
दूँलभ आइ[२०] राइ[२१] के ठाँई, धाये[२२] जन[२३] सै सात ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०, बी०) नियरानेव। २–(ए०) जाई। ३–(ए०, बी०) अगमन। ४–(ए०) धाई। ५–(बी०) पठयेव। ६–(ए०, बी०) राय। ७–(ए०, बी०) उतरेव। ८–(ए०, बी०) अहा। ९–(ए०, बी०) दूलभ। १०–(ए०, बी०) जाय। ११–(ए०) जोहारे कहा। १२–(बी०) बॉभन; (ए०) कुँवर। १३–(ए०, बी०) कुछु। १४–(ए०, बी०) कै नाहिं। १५–(ए०) आएव; (बी०) आवा। १६–(ए०, बी०) लोगन्ह। १७–(बी०) राजकुँवर पुनि आयेउ। १८–(बी०) स्रवन; (ए०) सेव। १९–(बी०) यहु। २०–(ए०) आए; (बी०) आय। २१–(ए०) राए। २२–(बी०) धाइ। २३–(बी०) जने; (ए०) जना।

३९४

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

दूलँभ कहँ[१] लइ आइ[२] बोलाई। राजा कूसल पूछ सँकाई[३] ॥१
दूलँभ काह[४] बहुत दिन लाये। कुँवरहि कहाँ छाड़ि कै आये ॥ २
राजा कुँवर[५] संगति[६] नियराने[७]। जोजन[८] दस एक[९] आइ तुलाने ॥३
कियहि[१०] मेलान एक हुत[११] गाँऊँ। मोहि पठयहिं[१२] रउरे[१३] कर[१४] ठाऊँ ॥४
दर परिगह संग बहुत अपारा। दूरि[१५] बयान[१६] करै तो हारा ॥५
राउ पूछि दर परिगह[१७] साहन[१८], कित कर पायिसि[१९] एत ।६
कहिसि दई उन्ह दीन्हों[२०], करमहिं[२१] तुम्हरे[२२] आह[२३] न[२३] तेत[२४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) कहा। २–(ए०, बी०) लै आए। ३–(ए०) संगाई; (बी०) पूछेनि कै आई। ४–(बी०) कहाँ। ५–(ए०, बी०) राजकुँवर। ६–(ए०, बी०) संगित। ७–(बी०) नियराना। ८–(ए०) जोजन। ९–(बी०) है। १०–(ए०) कीहे; (बी०) आपु। ११–(ए०) है; (बी०) कीन्हेउ एक। १२–(ए०, बी०) पठइन्हि। १३–(ए०, बी०) रउरे। १४–(बी०) × ; (ए०) के। १५–(ए०) दूर। १६–(ए०, बी०) पयान। १७–(ए०) बिगरह। १८–(बी०) कहाँ से। १९–(बी०) करकर पायेस। २०–(ए०, बी०) दीन्हेव। २१–ए० × ; (बी०) पुनहि। २२–(ए०) तोहरेव; (बी०) तुम्हारे। २३–(बी०) ×।

टिप्पणी—(१) सँकाई–शंकित होकर।
(६) साहन–सैनिक। एत–इतना।
(७) तेत–जितना।

३९५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

फुनि[१] वह[२] बात[३] कहेउ[४] लागा। जिह[५] बिधि कुँवर कै[६] जागेउ[७] भागा ॥१
मारग देवराइ[८] इक[९] राजा। बार तूर[१०] राघो कर बाजा ॥२
तैं[११] सब राज दइ[१२] धिय दीन्हीं। बात जो आही[१३] कही[१४] सब लीन्हीं ॥३
औ मिरगावति[१५] कै[१६] सब कही। सुख दुख कै न कही किंह रही[१७] ॥४
सुनि के राजहि बहु सुख होई। लोयन जोति भयउ[१८] फुन सोई ॥५
रहा जो हींउ[१९] अमावस[२०], होइके[२१] पूनेउ[२२] भा तिंह[२३] बेग ।६
बहिरात मढ़ि मण्डप आउ, द्रुत आइ देइ वै नेग[२४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) जो। २–(ए०) उह; (बी०) वै। ३–(बी०) बातै। ४—(ए०, बी०) कहै सब। ५–(ए०,बी०) जेहि। ६–(ए०) क। ७–(बी०) जागे; (ए०) जागेव। ८–(ए०, बी०) देवराय। ९–(ए०, बी०) एक। १०–(ए०) तोर। ११–(बी०) तेइ। १२–(ए०) देए; (बी०) देइ। १३–(ए०) अही; (बी०) आहि। १४–(ए०, बी०) कहै। १५–(ए०, बी०) मिरगावती। १६–(बी०) की। १७–(ए०) सुख दुख की कहै नहि रही, (बी०) दुख सुख केरि कहै सब लिही। १८–(ए०, बी०) भई। १९–(ए०) होतेव; (बी०) होत। २०–(दि०) अमास। २१–(ए०) कह। २२–(ए०) पूनिव। २३–(ए०, बी०) तेहि। २४–(ए०) भरहरात मढि मण्डप, आए दिही उऐ टेक; (बी०) उदरत मंडप भरहरत, अएनि दीन्हि उन्ह थेग।

टिप्पणी—(२) बार-द्वार। तूर–(सं० तूर्य) तुरुही; वाद्य-विशेष।

३९६

(दिल्ली; बीकानेर)

फाँद सिघासन[१] राइ मँगावा। आगे[२] लइ[३] कुँव[र] कहँ आवा ॥१
कुँवर सुनाँ आवत है राजा। आयसु भयउ[४] बजावहु बाजा ॥२
बाजन बाजै लाग[५] निसाना। जानु[६] अमाढ़ दइउ[७] घहराना ॥३
कुंजर बहुत[८] आहे[९] सइ[१०] साता। चिंघरहिं[११] चलत जुरै[१२] मैंमाँता ॥४
कटक साज कै भयउ[१३] जो ठाढ़ा। बासुकि[१४] डरहिं सीस न काढ़ा ॥५
राउ देख मन[१५] रहसा, कहसि[१६] कि[१७] हम घर आहे पूत ।६
बायँ जाइ [अस*][१८] आवइ[१९], गाजत[२०] और कोउ[२१] जमजूत ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–सुखासन। २–आगू। ३–लेइ। ४–अइस भया। ५–लगे। ६–जानहु।

७–दैव । ८–हस्ति । ९–अहे । १०–सै । ११–चिंवरत । १२–आये । १३–भये । १४–बासुक । १५–कै । १६–X । १७–(दि०) आस । १८–पयज कै जो ऐसे आवइ । २०–X । २१–कवन ।

टिप्पणी—(३) निसाना–डंका । दइउ–मेघ ।

३९७

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

राइ सिघासन[1] नियर जो आवा । उतरा[2] कुँवर तुरिय पकरावा ॥१
पिता कै[3] पायहिं[4] परेउ[5] जो धाई । राइ[6] उठाइ रहा गिय लाई ॥२
करनराइ फुनि[7] पायन[8] लागे[9] । राइ[10] गोद लै उरहि चढ़ाये ॥३
कुँवरहि लिये सिघासन बैठे[11] । कुँवर साथ नगर महँ पैठे[12] ॥४
जनँ पुरँगन बैठे अहें[13] । तेउ आपुँ उठि[14] देखै[15] गहें[16] ॥५
राजकुँवर मिरगावति[17] रानी[18], बैठी रुपमनि[19] आइ ।६
बहुत सिघासन डाडी घोरहि, पलकिंह चढ़ी जो धाइ[20] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) वे गुजासन ; (बी०) राय सोखासन । २–(ए०, बी०) उतर । ३–(ए०) क । ४–(ए०, बी०) पॉव । ५–(ए०, बी०) परेव । ६–(ए०) राए ; (बी०) राय । ७–(बी०) फुनि , (ए०) X । ८–(ए०, बी०) पायेन्ह । ९–(ए०, बी०) लाये । १०–(ए०, बी०) राय । ११–(ए०) गोदहि लिहे सुखासन बैठे ; (बी०) कुँवर के कहे सोखासन बैठा । १२–पैठा । १३–(ए०) जनि वरागना बैठी अहीं ; (बी०) जननी बैरगिनी बैठी अहीं । १४–(ए०, बी०) आय उन्ह । १५–(बी०) देखत । १६–(ए०) गईं ; (बी०) रहीं । १७–(ए०) मिरगावती ; (बी०) मृगावती । १८–(ए०) X । १९–(बी०) रुकमिनि । २०–(बी०) बहु सुखासन डॉडी पलकिंह, चढी जो आईं धाइ ; (ए०) हँसत सुखासन डॉडी पलगन्ह, चढी जो धाय ।

३९८

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

झमकत आइ[1] दुवउ[2] चौडोला[3] । चेरि[4] सहस दोइ[5] साथ अमोला[6] ॥१
दुवउ[7] आनि कै मंदिर उतारी[8] । भेटै सब आयउ[9] परिवारी[10] ॥२
बहुतै[11] निछावरि भई[12] बधाई । अउर[13] बधाई ननद लै आई ॥३
कुटुँब जहाँ लहि[14] सब पहिरावा[15] । जाचक जन कहँ[16] बहुत[17] दिवावा ॥४
समुदि[18] सबै घरहि घर आये[19] । परबल अखर[20] लिहे ते पायें[21] ॥५

खेलैं हसैं दुहूँ सेंउ[२२], रवन रंग रसपान[२३] ।६
दुख बिसारि सुख भोजैं[२४] कुल[२५] महँ, दूसर[२६] घटा[२७] न जान[२८] ॥

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०, बी०) आये । २–(ए०) दुऔ ; (बी०) दुवौ । ३–(ए०) चौडोली । ४–(ए०,बी०) चेरी । ५–(ए०, बी०) दस । ६–(ए०) अमोली । ७–(ए०) दुऔ; (बी०) दुवौ । ८–(बी०) उतारा । ९–(ए०) सब आइ ; (बी०) आये सब । १०–(ए०) परिवारा । ११–(ए०) भेट । १२–(ए०) होए ; (बी०) होइ । १३–(ए०, बी०) और । १४–(बी०) लहु । १५–(बी०) बहुरावा । १७–(बी०) कहुँ । १७–(बी०) बहुतै । १८–(ए०, बी०) समदि । १९–(ए०, बी०) आईं । २०–(ए०) पुरुब क आँखर ; (बी०) नौ निधि अखर । २१–(बी०) धाई । २२–(ए०, बी०) सैं । २३–(ए०) फिरि रा रंग रस मान; (बी०) रैनि राग रस मान । २४–(ए०, बी०) भूजै । २५–(ए०, बी०) × । २६–(ए०) दोसर; (बी०) दोसरि । २७–(ए०) भय , (बी०) कथा । २८–(बी०) मान ।

३९९

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कुँवर[१] अहेरैं दिन एक जाई । मिरगावति[२] पँह ननद जो आई ॥१
कहिसि[३] काल्हि रुपमनि[४] कर[५] ठाँऊ[६] । बात चलत है[७] तुम्हरैं[८] नाऊँ[९] ॥२
मिरगावति[९] पूछसि[१०] कस बाता । भौजी कहत[११] चढ़िह रिस[१२] गाता ॥३
बैठी कहत संगि[१३] सो आही[१४] । मिरगावति[१५] हम पूजै नाहीं ॥४
हौं[१६] बियाही कुलवन्ति[१७] जो आही[१८] । वह[१९] रे उढ़रि[२०] हम सरवरि नाहीं[२१] ॥५

जो[२२] यह बात सुनी मिरगावति[२३], उठेउ कोह सिर पाउ ।६
वह रहे बरी[२४] हम ऊपर बर कै[२५], बात[२६] जात[२७] बिनुसाव ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) अरुधि । २–(ए०, बी०) मिरगावती । ३–(ए०) रहिसि । ४–(बी०) रुकुमिनि । ५–(ए०, बी०) के । ६–(ए०) गाँऊ । ७–(बी०) हुती । ८–(ए०) तोहरी ; (बी०) तोहरे । ९–(ए०, बी०) मिरगावती । १०–(ए०, बी०) पूछै । ११–(बी०) पूछहु काह । १२–(ए०, बी०) जरिह तोह । १२–(ए०, बी०) सखिन्ह । १०–(ए०, बी०) अही । १५–(ए०, बी०) मिरगावती । १५–(ए०) मैं ; (बी०) हम । १७–(ए०, बी०) कुलवन्ती । १८–(ए०, बी०) अही । १९–(ए०) अेह । २०–(बी०) उढरी ; (ए०) अरुधी । २१–(ए०, बी०) नहीं । २२–(ए०) अहै ; (बी०) × । २३–(ए०, बी०) मिरगावती । २४–(ए०, बी०) परी । २५–(बी०) जो यह । २६–(ए०, बी०) काट । २७–(बी०) जाव ।

टिप्पणी—(३) भौजी–भाभी , भाईकी पत्नी । चढ़िह–चढ़ेगा । रिस–क्रोध ।
(४) उढ़रि–अपहृता । सरबरि–बराबरी ।
(६) कोह–क्रोध ।

४००

(दिल्ली; बीकानेर)

वेरी सुनत रुपमनि[१] कै अही । कहिसि जाइ ऊहो[२] रिस दही[३] ॥१
रुपमनि[४] कहा कहति है साँचू । भेस भराइ[५] मुहि सै गहि[६] नाँचू ॥२
बारक[७] भोरवनि ओकर[८] नाउँ । भोरवसि[९] लइ गइ आपन[१०] गाऊँ ॥३
नारि छतीसी वहि मैं देखी । तिरिया[११]चरित न अउर बिसेखी ॥४
जाति नारि कै वह सेउ[१२] लाजै । देस देस औ खँड खँड बाजै ॥५
मोहि सरि होइ न पाई[१३], जो[१४] वहि[१४] सरग चढ़ै[१५] धस लेइ ।६
मिरगावति इँह सुन अनउतर, आइ ऊतर देइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।
१–सुनति रुकुमिनि । २–वहो । ३–डही । ४–रुकुमिनि । ५–फिराइ । ६–हमगै । ७ बालक । ८—वोकर । ९–भोरएसि । १०–लैकै अपने । ११–त्रिया । १२–से । १३–पावै । १४–× । १५–चढि । १६–मिरगावती यह सुनि कै ।

टिप्पणी—(१) अही–थी । उहो–वह भी । रिस–क्रोध । दही–दग्ध हुई ।
(३) बारुक–बालक । भोरवनि–भुलावा देनेवाली । ओकर–उसका । भोरवसि–भुलावा दिया ।
(४) छतीसी–मक्कार । बिसेखी–विशेष ।

४०१

(दिल्ली; बीकानेर)

कहिसि काह मैं सुनै न पावा[१] । यह रे कहत तिह[२] लाज न आवा[३] ॥१
कौन लाइ मुँह बोलसि नारी । बरबस पितैं तों[४] मेलि उडारी[५] ॥२
राकस कह जो दीजै आनीं । सो बोलै आपुन[६] कँह रानी ॥३
सोवत छाड़ि[७] बात न पूछीं[८] । अकलै बोलहिं[९] हम सेउ[१०] जूझी ॥४
तू जो किंह र सुहागिन[११] नाऊँ । मैंकैं ससुरें कितहुँ[१२] न ठाँऊँ ॥५
हौं मैंकैं सुठि मनयेउ[१३] आदर, औ[१४] ससुरे बहु चाउ ।६
तूँ बिलखै[१५] नहिं गारो दुहुँ ठाँ, मान कितहु न साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।
१–पाई । २–जिय । ३–आई । ४–बारि बैसि पिता । ५–अडारी । ६–से बोलवै

आपन । ७–छाँडिसि । ८–बूझी । ९–अबकै बोलसि । १०–सै । ११–तोहु कहाँ रे सोहागिनि । १२–कतहूँ । १३–मानियौ । १४–सौं । १५–बिलखी । १६–ठाऊँ । १७–कतहुँ नहि सॉउ ।

४०२

(दिल्ली; बीकानेर)

रुपमनि कहि[१] तोसेउ[२] को पारा[३] । जगमिलि आउ त[४] सो[५] सब हारा[६] ॥१
जिह[७] कँह वै सब आवहिं[८] काजा । जो वह करै सोइ वह[९] छाजा ॥२
काँदो कँह जो मेलेउ[१०] ईंटा । दोख न मोर बहिरेउ यों[११] छींटा ॥३
लाख टकै कर मण्डप[१२] जो[१३] आहै[१४] । काग बैठि तो फोरियहि[१५] ताहै ॥४
तैं जो अवखर[१६] मोकैं[१७] कहा[१८] । घाट भयउ मुहिं तिहसों[१९] बोला ॥५
राघोबंस सुद्ध कुल, परसहिं जे जगत सब पाँउ[२०] ।६
धूरि जो कोउ[२१] चाँद कहँ मेले, बहुरि आउ वहि[२२] ठाँउ ॥८

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कहा । २–तोसो । ३–पारै । ४–आवै । ५–से । ६–हारै । ७–जेहि । ८–आवहि वै सब । ९–सब । १०–मेली । ११–जो भरिये । १२–मण्डफ । १३–×। १४–आही । १५–फोरी । १६–ओखर । १७–मोहि कहँ । १७–बोला । १९–खाट भयेउ मुँह तोहि सै । २०–जपै जगत सब नॉउ । २१--कोइ। २१–आवै तेहि ।

टिप्पणी—(३) काँदो–कीचड । मेलेउ–डाला ।
(४) फोरियहि–फोडेगा ही ।
(३) अवखर–अनुचित बात । घाट–बुरा ।

४०३

(दिल्ली; बीकानेर[१])

और होइ तो रहै लजाई । रुपमनि[१] कहँ ढँग[२] करहु बड़ाई ॥१
पाउ परहु[३] महिं देइ[४] असीसा । पिता कै जो किरत दिन दिन बीसा[५] **॥२**
मोर कहत[६] लै आयउ[७] तोही । सोइ फर अब देहि तू[८] मोही ॥३
नीक कहौं[९] तो अवखर[१०] पाई[११] । लागिसि करै सौत कर दाई[१२] ॥४
मोहि[१३] लगि गा[१४] जोंजन सैसाता । तोहि छाड़िसि पूछसि नहिं बाता ॥५
खरभर सुना[१५] सासु गंगा,[१६] आई उन्ह ठाँ[१७] धाइ ।६
बहुवहिं[१८] जूँझ बिसरिगा,[१९] फेकरत[२०] सास जो पहुँचसि[२१] आइ ॥७

-न्तर—बीकानेर प्रति ।

१–रुकुमिनि । २–धरि । ३–परसि । ४–देहु । ५–पिता गृह दिन करति पीसा ।

---

१. इस प्रतिमें पक्ति ५ की अर्धालियाँ परस्पर हस्तान्तरित हैं

६–मोरे कहे । ७–आयेउ । ७–सेइ फल देविहसि । ९–कियेउँ । १०–औखर । ११–पाये । १२–कै दाये । १३–हम । १४–गये । १५–सुन । १६–बहुवन कै । १७–तेहि ठाँउ । १८–बहुवन । १९–बिसरि गई । २०–× । २१–पहुँची ।

टिप्पणी—(४) दाई–बराबरी ।
(७) फेकरत–गरजती ।

४०४

(दिल्ली; बीकानेर)

सासु जो आइ[1] दोउ[2] चुप रही । आपु आपु कहँ लाजहिं[3] गही ॥१
सास कहा तुम्ह किह अस बूझी[4] । आपुन[5] मँह अस जूझ जो[6] जूझी[6] ॥२
आस पास कर लोग जो सुनई । तुम्ह कँह सो कुलवन्ति न गुनई[7] ॥३
जात नीच अकुली[8] पै जूझा[9] । तुम्ह कुलवन्ति[10] जूझ न बूझा[11] ॥४
जूझ तुम्हार भौंह सेउ[12] जानी । नैन न मिलिहिं तबहिं[13] पहिचाँनी ॥५
सास दोउ बरजी हरकी,[14] घर घर रहीं कुहाइ ।६
कुँवर खेल अहेरा, ततखन घर मँह आइ समाइ[15] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–के आये । २–दुवौ । ३–लाजन । ४–तुम जुझन बूझिये । ५–आपुस । ६–न जूझियै । ७–गनई । ८–अकुलीन । ९–जूझै । १०–कुलवन्ती । ११–बूझै । १२–से । १३–तबही । १४–सासु दुवौ जनि बरजी । १५–कुँवर जो खेलत अहा अहेरा, ततखन आइ तुलाइ ।

४०५

(दिल्ली, बीकानेर)

लै खटवाट परी दुइ[1] रानी । चूल्ही आगि न गागर पानी[2] ॥१
कुँवर देखि यह मनहि सकाई[3] । इन्ह[4] आपुन[5] मँह कीन्ह[6] लराई ॥२
कहिसि कवन बिधि करउँ मनावा[7] । दुहुँ मँह कोउ जाइ न पावा ॥३
उतरि जननि घर पैठेउ[8] जाई । बहुवहिं[9] कस राखु रुठवाई[10] ॥४
जननि[11] कहा मैं रुठवाई[12] । दोउ लरतैं जाइ छुड़ाई[13] ॥५
कहिसि चलहु सब मिलि कै, रूठी दोउ मनावहु आइ[14] ।६
सास ननद मिलि कुटबाँ लइके,[15] दुहूँ मनावइ[16] आइ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति ।

१–वै । २–आगि न चूल्हे गगरी नही पानी । ३–सोगाई । ४–ए । ५–आपुस । ६–कहूँ । ७–करै मिरावा । ८–बैसेउ । ९–बहुअन्ह । १०–रखेहु रुठाई । ११–

जननी। १२–मैं कत रे रुठाई। १३–दुवौ ल्स्त मैं जाइ छुराई। १४–दुहुँ मिलाइ जाइ। १५–सासु ननद मिलि कुटुँब सब। १६–मिलावँ।

४०६

(दिल्ली, बीकानेर)

पहिलैं मिरगावति[१] घर आईं। जिहकैं[२] चाह करत है साईं ॥१
मिरगावति[३] जो देखेउ[४] सासू। ढारे लागि नैन भरि आँसू ॥२
सा[स][५] पोछेहि मुँख आँचर लीन्हें[६]। चोलि चीर आँसू मँह कीन्हे[७] ॥३
जनु[८] अभरन सेउँ[९] गाँग[१०] नहाईं[११]। कै र[१२] मेंह ऊपर बरसाईं ॥४
कहै मरौं मुहिं[१३] जिय[१४] न जाई। देखतेउँ[१५] बोल बराबर आईं[१६] ॥५
सासु कहा यह रोस न बूझेउ,[१७] गरूई भई[१८] रहाहु।६
तुम्ह साईं कै[१९] पियारीं, हियें[२०] छाजै जो र[२१] कराहु ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१-पहिलेहि मिरगावती कै। २–जेहि। ३–मिरगावती। ४–देखी। ५–(दि०) सा। ६–लीन्हा। ७–चोला भीर सँवारि कै दीन्हा। ८–जानौ। ९–सै। १०–गग। ११–अन्हाई। १२–रे। १३–मोहि। १४–जियै। १५–देखहु। १६–बार बरिआई। १७–बूझिये। १८–आपु गरुई भइ। १९–केरि। २०–×। २१–रे।

टिप्पणी—(३) आँचर—आँचल।
(६) गरुई—गम्भीर।

४०७

(दिल्ली; बीकानेर)

अबहीं तो वह साईं पियारी। सुनिउ नहीं यहै देत है गारी[१] ॥१
मैं ओकँह[२] का अवखर[३] कहा[४]। ननद साखि तू बैठी आहा[५] ॥२
ननद कहा इन्ह कछु[८] न बोला। पहिलहिं अवखर उन्ह मुँह खोला[९] ॥३
सास दई[१०] रुपमनि कर दोसू[११]। मिरगावती कह[१२] बुझायसि रोसू[१३] ॥४
सासु कहा ओहु[१४] समुझावौं[१५]। दुहौं[१६] सौति कहँ गियैं लगावौं[१७] ॥५
सास आइ रुपमनि[१८] घर पैठेउ,[१९] उहो मनावइ[२०] लागि।६
घालसि[२१] पानि बुझाइसि रिस, जरत अहै[२२] उर आगि ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–सौहैं भई दै गई है गारी। २–वोहि कहँ। ३–ओखर। ४–कही। ५-तो। ६–अही। ७–तुम। ८–किछुए। ९–पहिलेहि ओखर उह मुख खोला। १०–दियेउ। ११–रुकुमिनि कहँ दोसा। १२–जो। १३–बुझानेउ रोसा। १४–वोहि गै। १५–

समझाऊँ। १६–दुवौ। १७–आनि मिराऊँ। १८–रुकुमिनि। १९–बैठी। २०–दुहूँ मनावै। २१–घालि। २१–जरति होति।

टिप्पणी—(७) घालसि–डाला।

४०८

(दिल्ली; बीकानेर)

सास न होहु माइ तुम्ह[1] मोरी। यहु दोख ओकर[2] अगिनित कोरी ॥१
हिया फाटि इक दिन[3] मरि जइहौं। तोरैं जानों इहाँ[4] दुख पइहौं ॥२
सासु कहा रूठै न जाई[5]। रूठि कै कियें[6] साइँ न पाई[7] ॥३
साई[8] कै सेउ[9] करहु चित लाई। परसन होइ बहु[?] मया कराई ॥४
यह र[10] बुधि कै देखहु[11] मोरी। पिय सेवइ[12] बुधवन्ति जो[13] गोरी ॥५
अउर को र मोर कहा प्रतिपारै[14], सुनहु[15] एक बात ।६
चलहु मिलहु मिरगावति सेती[16], सान्त[17] होइ हम गात ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–तुम। २–बहु दुख उहिके। ३–दिन एक। ४–नैहर जाउँ बहुत। ५–नहिं जइयै। ६–रूठै गये। ७–नहिं पइये। ८–साई सेवा करहु। ९–तो। १०–×। ११–देख मुँह। १२–पिउ सेवै। १३–सो। १४–और कहा को प्रतिपालै। १५–मोरि सुनहु। १६–मिरगावती सौ। १६–साँति।

टिप्पणी—(१) ओकर—उसका। कोरी—करोड़ अथवा बीस।
(२) हिअ—हृदय।
(४) परसन—प्रसन्न। मया—स्नेह; दुलार।

४०९

(दिल्ली; बीकानेर)

कहा तुम्हार मेंट न[1] जाई। जो कछु कहहु[2] सो कियें सिराई ॥१
देउता जो बड आवत राऊ[3]। यहि[4] जग जरम[5] न मिलतेउ[6] काऊ ॥२
देवतहि सानाँ[7] सासु बड़[8] मानों। जो कछु कहै सो र[9] परवानों ॥३
कर गहि बाँह[10] सासु यह[11] लीन्हें[12]। दोउ भिराई भेंट कर कीन्हें[13] ॥४
मुँह तो हँसी बैरि[14] बिनसाऊ[15]। सौति साल उर जाइ न काऊ ॥५
खिन[16] एक बैठि रहीं इक ठाँइ[17], फुनि[18] उठि घर कहँ[19] जाहिं ।६
राजकुँअर मानै रस[20] रलियाँ[21], नित उन्ह[22] भोग कराहिं ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–न मेटै। २–किछु कहौ। ३–जो अउत बड़राऊ। ४–इहि। ५–जनम। ६–

मिलतिउ। ७–देउता सेउ। ८–बड़ि। ९–जो किछु कहेहु सोइ। १०–X। ११–यहि। १२–लीन्हीं। १३–दुऔ आनि भेट अंकम दीन्हीं। १४–मिली। १५–बिनुसाऊ। १६–खन। १७–बैठी रही एकठइ। १८–पुनि। १९–घर घर। २०–(दि०) रस मानै। २१–रली। २२–अहिनिसि।

४१०

(दिल्ली; एकडला[1]; बीकानेर[2])

कुँवरहिं बहुत अहेर जो भावइ[1]। अहेर खेलि निसि[2] नींद न आवइ[3]॥१
सपनहिं[4] भीतर खेल[5] अहेरा। जो जिंह[6] मँह रहै[7] सो तिह[8] केरा॥२
भोर[9] पारुधि एक आवा। प्रतिहार रुचि बात[10] जनावा॥३
कुँवर कहा वहि[11] देहु हँकारी। कहात[12] भई है आनि मारी[13]॥४
आइ पारुधी कही जो बाता। साउज[14] बनहिं किहाँ किय घाता[15]॥५
जिंह[16] डर गीर[17] बन तजहिं, औ सब जन्तु[18] [पराइ][19]।६
बाघ नहिं सरबर करि सकै, सो आयउ बन राइ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रति—

१–(ए०, बी०) अहेरा भावै। २–(ए०, बी०) अहिनिसि खेलै। ३–(ए०, बी०) आवै। ४–(ए०, बी०) सपनेहु। ५–(बी०) खेलै। ६–(बी०) जो जेहि; (ए) जूझै। ७–(ए०) X। ८–(ए०) तिन्ह; (बी०) तेहि। ९–(ए० बी०) भोर भवा। १०–(बी०) गै कही; (ए०) रजबार। ११–(ए०, बी०) वोहि। १२–(ए०, बी०) घात। १३–(ए०) अनिय मारी; (बी०) आहि हमारी। १४–(ए०, बी०) सावज। १५–(ए०) कहा है, (बी०) घनी कै। १६–(ए०,बी०) जेहि। १७–(ए०, बी०) गैयर। १८–(बी०) जात। १९–(दि०) पराहिं।

४११

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

सारदूल[1] जाकर[2] है नाऊँ। बन महँ आइ[3] रहा इक[4] ठाऊँ॥१
कल्ह[5] खेलै गयउ[6] अहेरैं। एक बन छाड़ि आन बन हेरैं[7]॥२
तहाँ अचम्भो अचरज[8] देखा[9]। गज मैमत परे नहिं लेखा[10]॥३
निकट जाइ जो[11] देखेउ[12] काहा[13]। मस्तक माझ गूद नहिं आहा[14]॥४
कुम्भ बिदार गूद सब खाइसि[15]। अउर गात नख एक न लाइसि[16]॥५
अउर[17] बहुत साउज[18] सब[19] बन महँ, मुये परे[20] बिनु साँस।६
जानहु गलगजैं[21] उहि केरैं, तरपैं[22] मुये तरास॥७

१–यह पृष्ठ हमें उपलब्ध न हो सका। अत. इसका पाठ सम्मेलन सस्करणपर आश्रित है।
२–इस प्रति में पक्ति २ की अर्धालियाँ परस्पर हस्तान्तरित हैं।

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-(बी०) सादूल; (ए०) अगल। २-(ए०) जाकरि। ३-(ए०, बी०) आय। ४-(बी०) कै; (ए०) एक। ५-(बी०) काल्हि हौं; (ए०) कालि हौं। ६-(ए०) गएव; (बी०) गयेंव। ७-(ए०) मेरे; (बी०) समेरे। ८-(बी०) अचिरिज। ९-(ए०) पेखा। १०-(बी०) परे बहु नहिं लेखा; (ए०) आहि परे न लेखा। ११-(ए०, बी०) कै। १२-(ए०, बी०) देखौ। १३-(बी०) कहा। १४-(ए०) अहा; (बी०) रहा। १५-(बी०) खायेसि। १६-(ए०) लेइसि। १७-(ए०, बी०) और। १८-(ए०, बी०) सावज। १९-(ए०) तेहिं; (बी०) × । २०-(ए०) अहे। २१-(बी०) गलिगज; (ए०) कलकजली। २२-(बी०) बहुतै।

टिप्पणी—(२) आन—अन्य।

(५) **बिदार**—विदीर्ण करके; चीर करके। **गूद**—गूदा।

(७) **तरास**—त्रास, भय।

४१२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर[1])

अइसा[1] चरित देखि जिउ मोरा[2]। तिमिर[3] भयानेउ[4] भा बन घोरा[5]।१
भरम पाउ[6] मोर सुध न परई[7]। जनु[8] पाछें[9] आवत है धरई॥२
कल[10] करतार मोहि लै आवा। बन छाड़ेउँ तिह कहेउ[11] जिउ पावा॥३
हँस कै कुँव[र] कोह रिस[12] बाजा। तरपा अमर बढ़ी फुनि[13] गाजा॥४
कै परबत परबत धर मारा। कै चलि आयेउ सँयसारा[14]॥५
राजा सपत[15] आजु वहि मारौं, जानौं परहि खेलाइ[16]।६
जीवन कहै घरी घिर हाई[17], अब मो पँह कित[18] जाइ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१-ए० × ; (बी०) अस। २-(ए०) उहि केरे। ३-(बी०) तब रे। ४-(बी०) भयावन। ५-(ए०) भये घोरा, (बी०) भवा बन छोरा। ६-पॉउ। ७-(ए०) बहुरि न पाव सुध मोर परई। ८-(बी०, ए०) जनौ। ९-(बी०) पाछू। १०-(ए०) कालि; (बी०) काल्हि। ११-(ए०) निकसेउँ; (बी०) तो हौं। १२-(बी०) सिर। १३-(ए०) तरप अमर परी जनु गाजा; (बी०) तरप जनौं अम्बर परि। १४-(ए०) संसारा, (बी०) सैंसारा। १५-(ए०) बिपत। १६-(ए०) जेंव घर घर थर अहे; (बी०) जौ खखर खरइ भागिहि। १८-(ए०) जियत कि मो पइ; जियत न मो पहँ।

१-इस प्रतिमें पक्ति २ और ३ क्रमशः ३ और २ हैं।

४१३

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

कुँवर मिरायउ हैंवर हीया[१]। औ मिराइ [असिवर][२] कर लिया[३] ॥१
बान सान दइ पानी धरी[४]। जावस[५] साथि लै उपकरी[६] ॥२
औ पारुधि आगैं कै लीन्हा[७]। चलु दिखाउ वह जिंह बन[८] चीन्हा[९] ॥३
रेंगि पारुधी आगे भया[१०]। सारदूर[११] जिंह[१२] बन लै[१३] गया[१४] ॥४
साचहिं[१५] साउज[१५] औ कुंजरा। मुयै बाघ जो नर आगें करा[१६] ॥५
फिरिकै[१७] सारदूर[१८] यह बन मँह आहै[१९], अब मो पँह कित[२०] जाय ।६
मारौं आजु संघारो[२१] भूपर[२२], सपत पिता कै खाय ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१-(बी०) कुँवर मिराइ हेवरहिं लिया ; (ए०) गज से वह सारे हिया। २-(दि०) आसव ; (ए०) असि। ३-(ए०) किया। ४-(ए०) दै पानी धरई ; (बी०) दै पानी धरावा। ५-(बी०) चवस ; (ए०) सावज। ६-(बी०) बेगर न आवा ; (ए०) से आय बिलब अेह करई। ७-(ए०) लीन्ही। ८-(ए०,बी०) जेहि बन है। ९-(ए०) चीन्ही। १०-(ए०, बी०) भयउ। ११-(बी०) सारदूल ; (ए०) सार डाले। १२-(बी०) जेहि। १३-(बी०) तहै लै। १४-(ए०, बी०) गएउ। १५-(बी०) सॉचेहु सारदूल। १६-(बी०) मुये बाज जोर केहि केरा ; (ए०) मुए बाघ जीउ रल कै करा। १७-(बी०) फुर कै। १८-(बी०) सरदूल; (ए०) सारडोल। १९-(ए०, बी०) ×। २०-(ए०, बी०) कत। २१-(बी०) विघाँसौं। २०-(ए०) भुववर ; (बी०) ×।

टिप्पणी—(१) हैंवर-घोडा।
(२) जावस-जितने भी।
(६) कित-कहाँ।

४१४

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कुँवर[१] पारुधी का मुख चहा। तों चढ़ रूख देख अस कहा ॥१
पारुधि[२] आई[३] रूख एक चढ़ा। कुँवर मार मन[४] भीतर कढ़ा ॥२
जावस[५] बान फोंक धरि[६] लीतसि[७]। फिरि फिरि ढूँढै बरबर[८] कीतसि ॥३
देखत[९] सूत[१०] हिय बिनु संका[११]। जैं[१२] सिरजा ताह्न सेउ बंका[१३] ॥४
कुँवर[१४] कहा जो सोवत मारौं। पुरुखन्ह मँह[१५] पुरुखारथ हारौं ॥५
अब जगाइ कै हनौं बिचारी[१६], करौं सात दुइ खण्ड ।६
नौ खँड[१८] नौ खँड पठावँउँ[१९], जीउ पठवौं[२०] ब्रभण्ड[२१] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ ।

१–(ए०) कह । २–(बी०) पारुधी ; (ए०) सुधी । ३–(ए०, बी०) जाय । ४–(बी०) मारि रिस । ५–(बी०) चवस । ६–(बी०) भरि । ७–(ए०, बी०) लीतिसि । ८–(ए०) तरुवर ; (बी०) बान तर ऊपर । ९–(बी०) देखै । १०–(बी०) सोवत । ११–(बी०) बन निःसंका (ए०) पत सेठ फिरे सिगारा । १२–(बी०) जेहि । १३–(ए०) तेहू से बाँका बली जेहि मारा । १४–(ए०) जो रे । १५–(ए०) सौं । १६–(बी०) अब जाइ कै हतौ पचारी ; (ए०) आनज देएह विचारहु । १७–(ए०) नौ ; (बी०) सै । १८–(बी०) खण्ड कै । १९–(ए०) पठवौ ; (बी०) पठावौं । २०–(बी०) पठाऊँ; (ए०) महि औ । २१–(बी०) ब्रम्भंड; (ए०) बरभंड ।

टिप्पणी—(२) रूख–वृक्ष ।

(३) जावस–जितने भी , फौंक–नुकीला ; तीक्ष्ण । धरि लीतसि–रख लिया । बरबर–बर्बर । कीतसि–कहाँ ।

(४) सूत–सोया ।

(५) पुरुखारथ–पुरुषार्थ ।

(७) ब्रभण्ड–ब्रह्माण्ड ।

४१५

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

कुँवर बान गुन[१] फौंक सँभारी[२] । कालहि सोवत हनौं बिडारी[३] ॥१
तुरिय मँदर[४] फुनि मेलसि भुइँ हाल[५] । नींद गयेउ[६] जागेउ जमकाल[७] ॥२
दुहुँ[८] जम सौं भौ दीठ[९] मेरावा । कालहिं काल गाल चँहि खावा[१०] ॥३
गरजा[११] पूँछि पुहुमि धरि मारिसि[१२] । पुहुमि मार सिर ऊपर तारिसि[१३] ॥४
गरज[१४] के सबद पूरि बन भरा[१५] । जनु[१६] अरराय अम्मर खसि परा[१७] ॥५
उठा[१८] अकूत[१९] अँदोर प्रिथमी, सात दीप नौ खण्ड ।६
[सरग[२०] पतार] सेस खरभरेउ[२१], इन्द्र, डरा[२२], ब्रहमण्ड[२३] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) कर , (बी०) × । २–(बी०) सँभारा । ३–(ए०) गालहि सोत हनौ तरुवारा ; (बी०) कालहिं सौ वह हनेउ पचारी । ४–(ए०) जीउ मडर ; (बी०) मडल । ५–(बी०) घालिह भुइँ हता । (ए०) मेलिसि भरी । ६–(बी०) गई ; (ए०) बन्द कियेव । ७–(बी०) जमकला; (ए०) जागेव संभरी । ८–(बी०) जस । ९–(ए०) डीढि ; (बी०) द्रिस्टि । १०–(ए०) चाह फुनि खावा ; (बी०) जो काल सतावा । ११–(बी०) गरज । १२–(बी०) मारी । १३–(बी०) सारी ; (ए०) आनिसि । १४–(ए०) गरजत ; (बी०) गरज कै । १५–(ए०) पौरे रह ।

१६–(ए०) जनि ; (बी०) जनौ । १७–(ए०) चहा । १८–(ए०) परा । १८–(बी०) अकुताइ ; (ए०) × । २०–(बी०) सपत । २१–(बी०) खरभरे ; कुँवर भरि परेव । २२–(बी०) डरिय ; (ए०) मही औ ।

टिप्पणी—(५) अरराय–टूटकर । अम्भर–अम्बर ; आकाश । खसि–गिर ।

४१६

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

[तमकि तरपि बिजुली बर[1] धावा] । [भौंह के मटकै[2] तुरिय सिर आवा][3] ॥१
तब[4] लगि कुँवर गहेउ कर खाँडा[5] । मारसि टूटि भयउ द्स[6] खाँडा[7] ॥२
सर गिंय[8] सेउ[9] गिर बेगर भये[10] । धर सेंउ[11] पाव टूटि कै गये[12] ॥३
कर सर[13] तरकि कुँवर उर लागा । हियै समान सुई जेंउ[14] तागा ॥४
आउ घटा[15] जस सुनत[16] कहानी[17] । कलिजुग भई[18] यहेउ तिह[19] बानी ॥५
सिंघिनि बन मँह लागि बियाये[20], सुनि गयन्द[21] न चाह ।६
कुंजर जूह जोरि कै आये[22], आयसु[23] दाउ[24] न आह ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) पर । २–(ए०) मटक । ३–(दि०) पूरी पंक्ति नही है । ४–(बी०) तौ । ५–(ए०) खण्डा । ५–(ए०, बी०) भयेव दुइ । ७–(ए०) खण्डा । ८–(दि०) गुन । ८–(ए०) सौ ; (बी०) सै । ९–(ए०, बी०) । १०–(बी०) होई । ११–(ए०, बी०) सै । १२–(बी०) गये सोई । १३–(ए०, बी०) सिर । १४–(ए०) जैव; (बी०) जनौ । १५–(बी०) आदि कथा ; (ए०) आध गहा । १६–(ए०) सपत । १७–(ए०) कीनी । १९–(बी०) भयेउ ; (ए०) भौ । १९–(बी०) एहि एहि ; (ए०) एहि । २०–(ए०) बे आपै ; (बी०) बियाँइ । २१–(ए०) गयन्दिन्ह; (बी०) गयन्द मँह । २२–(बी०) × । २३–(बी०) अब अस ; (ए०) आएस । २४–(ए०) दाव ।

टिप्पणी—(६) बियाये–प्रसव करने ।
(७) जूह–जूझ ; झुण्ड ।

४१७

(दिल्ली; बीकानेर)

आगे भा मींगल[1] मैमन्ता । सूँड़[2] उदारत आवइ[3] दन्ता ॥१
ततखन कर सों[4] सर[5] थर्राना[6] । हाथिउ[7] आइ संगित नियराना ॥२
सूँड़[8] पसार कहिसि पा[9] धरउँ । निकंटक तोर [.....][10] करउँ[11] ॥३
तरका कर सैंती सर टूटा[12] । नागा जानु उर अगिन छूटा[13] ॥४

गै कुँभस्थल मँह[14] अस[14] लागा। चिंघरत हस्ति[15] जिउ[16] तजि भागा ॥५
सिंघिनि[17] एकै पूत जनि[18], बन मण्डन[19] रन घत्थ[20] ।६
कुम्भ बिदारन सापुरुस[21], सुँठि[22] गरुव कलत्थ[22] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–मैंगल। २–सूडि। ३–आवै। ४–सै। ५–सिर। ६–बिहराना। ७–हस्ती। ८–सुंडि। ९–लै। १०–(दि०) सम्भवतः शब्द की छूट। ११–काट तोरि निकट का करो। १२–उर तरकी सिर सेती टूटा। १३–तरक जनो उरग नग छूटा। १४–अस होइ। १५–हस्ती। १६–जुझ। १७–सिघनी। १८–जनै। १९–मण्डल। २०–ढीठ। २१–सपरस। २२–सुठिहि। २३–गल अहीठ।

४१८

(दिल्ली, एकडला, बीकानेर)

दोउ सिंह दोउ[1] जम भारी[2]। दोउ काल कालहिं सेउँ[3] भारी ॥१
दुँहु धरि[4] ऊपर[5] खाइ[6] पछारा। दूनौं जिय काल सँतारा[7] ॥२
जो[8] सिरजा मरिवै कँह[9] आवा। सो किंह[10] नहिं[11] काल[12] सतावा ॥३
मुये पाछु[13] कोई न[14] रहई[15]। सो [झूठा][16] जिउ न जो[17] गहई[18]॥४
कहाँ सो बल[19] जिह[20] सायर मँथा[21]। कहाँ सो धुन्धमाल[22] कै कथा[23] ॥५
कहाँ सो हरिचन्द है सतवन्ती[24], कित[25] रावन कित[26] राम ।६
कित कौरो पँडवा[27] बली[28], नाँ थिर छाँह न[29] घाम ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) दुवौ सिघ दुवौ। २–(ए०) गरजा मघा सिंह जिमि भारी। ३–(ए०, बी०) काल सो। ४–(ए०) दुओ धरनि, (बी०) दुवौ धरा। ५–(ए०, बी०) पर। ६–(ए०, बी०) खाँय। ७–(बी०) दुऔ जिय मिलि गये अकारा; (ए०) दुऔ जिय मिलि किये अकारा। ८–(ए०) जेअ। ९–(बी०) कहुँ। १०–(ए०) को; (बी०) कहु। ११–(ए०) इन्हि। १२–(ए०) कलि न। १३–(ए०) बझ; (बी०) बाजु। १४–(बी०) ना, (ए०) नहि। १५–(ए०) रहे। १६–(ए०) झुग; (दि०) जूठा। १७–(बी०) जो जीवन। १८–(ए०) कहै; (बी०) कहई। १९–(बी०, ए०) बली। २०–(बी०) जिहि, (ए०) जे। २१–(ए०) मथा परमथा। २२–(ए०) मालधुध। २३–(बी०) गाथा। २४–(बी०) सतवति। २५–(बी०) कत। २६–(बी०) कत। २७–(ए०) ×; (बी०) कित पँडवा। २८–(ए०, बी०) अबला बली। २९–(बी०) रहइ।

४१९

(दिल्ली, बीकानेर)

कहाँ सूर[1] बिक्रम[2] सकबन्धी। कित अरजुन बाना उर सन्धी[3] ॥१
कहाँ सो तिरिया[4] सीता सती[5]। कहाँ दुरपदी पाँचहु रती[6] ॥२
कहाँ भोज दसचार[7] निदाना[8]। परकाया परवेस[9] जो जाना ॥३
सँकर बचा सिध[10] जो करता। कर पसार जिह कै[11] सिर धरता ॥४
चालिस[12] लाख बरिस सो जिया। ताहूँ आउ[13] अमर नहिं किया ॥५
सो बाउर दोख[14] चित बाँधै[15] हरिचन्द परहि[16] भुलाइ।६
जाकर भुवन पौन[17] पानी, बरु तिह का करत गराइ[18] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–सो। २–(दि०) बिकम। ३–अर्जुन जिन्हि बनवारी संधी। ४–असत्री। ५–सती सीता। ६–सरता। ७–चारि दस। ८–निधाना। ९–परवेसु। १०–बचा सूर। ११–जेहिका। १२–चारिस। १३–तेहुह आपुहि। १४–सो बावर धोखेहि। १५–बँधे। १६–पुरी। १७–पावन औ। १८–पर तेहि ककर कलाइ।

टिप्पणी—(१) **बिक्रम**—विक्रमादित्य; उज्जैनका एक प्रसिद्ध नरेश। **सकबन्धी**—वासुदेवशरण अग्रवालने पदमावत (४९१/४) मे इसका अर्थ साका बॉधने या चलनेवाला किया है। इस पर उनकी टीका है—'साका-का मूल अर्थ शक सवत था। पीछे केवल सवत्‌के लिए भी वह प्रयुक्त होने लगा।' 'विक्रम साका कीन्ह' में वही अर्थ और मुहावरा है। आगे चलकर किसी अलौकिक यश या कीर्तिके कामके लिए साका शब्दका प्रयोग होने लगा। सकबन्धी उस युगका पारिभाषिक शब्द ज्ञात होता है। जो स्त्रियोसे जौहर करवाकर युद्ध-मे लडते हुए प्राण देनेका व्रत लेता था वह सकबन्धी कहलाता था।' हमारी दृष्टिमे इसका सीधा-सादा अर्थ है—शकोको बॉधने-वाला और यह शकारिके पर्यायवाचीके रूपमे प्रयुक्त हुआ है। शकारि के रूपमें विक्रमादित्यकी जगत् ख्याति है। **सन्धी**—भेदने-वाला।

(२) **तिरिया**—त्रिया; स्त्री। **दुरपदी**—द्रौपदी; पाण्डवो की पत्नी। **रती**—अनुरक्त।

(३) **भोज**—परमार नरेश भोज, जिनकी ख्याति विद्वत्ताके लिए है। **दस-चार**—चौदह, यहॉ तात्पर्य चौदह विद्यासे है। **निदाना**—निष्णात। **परवेस**—प्रवेश।

४२०

(दिल्ली, बीकानेर)

कुँवरहिं परत पारुधी धावा। ततखन उतरि रूँख सेंउ[1] आवा ॥१
कुँवरहि जो देखी[2] टखटोरी[3]। पुरुब[4] लिखा बिधि लाउ[5] न खोरी ॥२
इकछत राज बहुत कै गये। बिधि क[6] चरित न एक पर[7] भये ॥३
ई[8] अकास भुई को न कहावा[8]। जो[9] उतरि पिरथमीं[10] मँह[11] आवा ॥४
हमहूँ कँह आहे यहि[12] पंथा। रावल[13] चलहि रहहि[14] पै कन्था ॥५
अवन्ता सभै भला[15], एक न आउ घटन्त ।६
धन जोबन सँग[16] साथ सैं[16], घरी माँझ[17] बिहरन्त ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–से। २–देखै। ३–टकटोरी। ४–पूर्व। ५–लगै। ६–कै। ७–चरित्र आन पै। ८–आपुहि अकसर दोसर न भावा। ९–जो रे। १०–प्रिथिमी। ११–×। १२–एह। १३–खल। १४–रहै। १५–आवत सब भल। १६–परिवार सेंउ। १७–घरी एक मैं।

टिप्पणी—(१) परत—गिरते ही। ततखन—तत्क्षण।
(२) टखटोरी—टटोल कर। पुरुब—पूर्व।
(३) इकछत—एकछत्र।

४२१

(दिल्ली, एकडला; बीकानेर)

कुँवर क जीउ इँदरासन गया। इहाँ रहै कस्ठा कै[1] कथा ॥१
मरबे कँह[2] का तरुन तरेसा[3]। काल फिरै कर गहे जो केसा ॥२
तरुनाई केर[4] पछतावा। मर तरेस[5] पछताउ[6] न आवा ॥३
कुँवर अकेला[7] बन[8] कँह[9] जाई। राजा सेंउ[10] काहु कह[11] आई ॥४
जो[12] कछु[13] बात इहाँ कै[14] अही। राजा सेंउ[15] एक एक[16] तैं[17] कही ॥५
सीस धुनत पाना कै[18], ततखन[19] राजा[20] लाग गुहार[21] ।६
दौर परे[22] घर बाहर, जानहु[23] सरग क[24] आयी धार[25] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) इह राही का साथ की, (बी०) रही कथा की। २–(ए०) मरावै क,(बी०) मरिबै कहुँ। ३–(बी०) तरुनाप तेरस; (ए०) तरुना नरेस। ४–(ए०) तरुने कर आवै; (बी०) तरुनापै कर। ५–(ए०) नरेस। ६–(बी०) पछिताव। ७–(ए०, बी०) अकेल। ८–(बी०) आपुन। ९–(ए०) मर। १०–(ए०) आवत। ११–(बी०) कहा कोइ, (ए०) केहु कह। १२–(ए०) जस। १३–(ए०, बी०)

कुछु। १४–(ए०,बी०) की। १५–(ए०)×; (बी०) सै। १६–(ए०) सो। १७–(ए०) लागै; (बी०) कै। १८–(बी०) पनगति, (ए०) वपकै। १९–(ए०)×। २०–(बी०) राना। २१–(ए०, बी०) गोहारि। २२–(बी०) रोर परा; (ए०) सोच करत। २३–(ए०)×; (बी०) जनौ। २६–(बी०) कै। २५ (ए०, बी०) धारि।

टिप्पणी—(१) इन्द्रासन—स्वर्ग। कस्ठा—काष्ठ; शरीर।
(२) मरबे कहँ—मरने का। का—क्या। तरेसा—वृद्ध।

४२२

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आपु आपु कहँ लाग गुहारी। हाथिन[1] ऊपर परी अँबारी ॥१
जो जिह सो तिह[2] धावा। बाग बूढ़ कोउ[3] रहा[4] न आवा[5] ॥२
घोरहिं[6] बाखर पाखर परे[7]। लइके धाइ[8] हाथिन्ह धरे[9] ॥३
सुनिके छल[10] उर उठी[11] जो[12] आगी[13]। भीतर जनु[14] बहिराइ[15] जो[16] लागी ॥४
धावत राजा पेग पचासा। उढकि परा निकसि गइ[17] साँसा ॥५
ततखन लै चौडोल तुलानी[18], राजा लीनहिं[19] बाँहि ।६
पुन जे कह[20] धरम संग साथी[21] सुरगहुँ राज कराहि[22] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ।

१–(ए०, बी०) हाथिन्ह। २–(बी०) जो जैसेहि तैसेहि उठि; (ए०) [जे] जैसे थी तैसे। ३–(ए०, बी०) कोइ। ४–(बी०) रहै। ५–(बी०) पावा। ६–(ए०) घोरन्ह; (बी०) घोरेहु। ७–(ए०, बी) परी। ८–(ए०) लैके धाए; (बी०) लैने आये। ९–(ए०) धरी; (बी०) हाथहिं धरी। १०–(बी०) राउ। ११–(बी०) उठी उर। १२–(बी०)×। १३–(ए०) कै अ ऐजन झी लगी। १४–(बी०) जारि; (बी०) जरि; (ए०) जनि। १५–(बी०) बहिर होइ, (ए०) भरए। १६–(बी०)×। १७–(बी०) गै। १८–(ए०, बी०) तुलाना। १९–(ए०) राजहिं लीतिन्हि; (बी०) लिहिसि। २०–(बी०)×। २१–(बी०) साथहिं। २१–(ए०) नबी सेख धरम सग, सरगहु रा.........।

टिप्पणी—(१) अँबारी—झूल।
(५) उढ़कि परा—ठोकर लगी।

४२३

(दिल्ली; एकडला, बीकानेर)

करनराइ तिहँ[1] आइ तुलाना[2]। राउत पाँयक बहु समानाँ[3] ॥१
पारुधि चाल कटक कै[4] पाई[5]। किहिसि गुहार तुलानेउ[6] आई ॥२

कुँवरहि तजि कै आगे धावा। देखत करनराइ नियरावा[७] ॥३
सीस फेकारि पुहुमि[८] गा लोटी। कुँवर गयेउ छाड़ि कलखूँटी[९] ॥४
कल[१०] का मरम न जानै कोई। आँख क मँटक काह[११] दहुँ होई ॥५
धरम करन्ते भोग कर[१२], मनहि परसु[१३] करतार[१४]।६
लछिमी[१५] होइ[१६] न आपुनी[१७], बिरसि लेहु[१८] सँयसार[१९] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) करनराय तँह; (ए०) जब राय फुनि। २–(ए०, बी०) आय तोलाना। ३–(बी०) बहुत सग माना; (ए०) बैठ सुजाना। ४–(बी०) की। ५–(ए०) पारहि झलक गग लै जाई। ६–(बी०) कहिसि गोहारि तोलानी आई; (ए०) कहै गोहारि तोलानी आई। ७–(ए०) फिरावा; (बी०) पुनि आवा। ८–(ए०, बी०) धरनि। ९–(बी०) कल खोटी। १०–(ए०, बी०) कलि। ११–(बी०) के मटकै का। १२–(ए०) कै। १३–(बी०) मन परसहु। १४–(ए०) पुसप तार का तार। १५–(बी०) लही। १६–(ए०, बी०) होय। १७–(बी०) आपनी; (ए०) आपन। १८–(बी०) बिलसि, (ए०) जोरे परस १९–(ए०, बी०) संसार।

टिप्पणी—(१) राउत—राजपुत्र; श्रेष्ठजन। पाँयक—(स० पदातिक>पाइक) पैदल सैनिक।

४२४

(दिल्ली; एकडला[१]; बीकानेर)

करनराइ[१] आपु[२] भुइँ भारा। उर सारै[३] कहँ काढ़ि[४] कटारा ॥१
लोगन्हि[५] करहुत लीन्ह कटारा। धरा पछैं चाहै भुँइ मारा[६] ॥२
राउत पाँयक रोवहिं परे। लोटहिं भुँइ महँ माटी भरे[७] ॥३
अइ[८] करतार काह यह भया। हमहूँ कहँ[९] न साथ लै गया ॥४
आन क मीचु उठ तिह मरई[१०]। जो बिधि लिखा सोइ[११] पै करई[१२] ॥५
रोवहि हस्ति घुर आगहि ठाढ़े[१३], रोवइ अमर पुकार[१४]।६
रोवइ[१५] इँद्र अपछरीं[१६] लीहें[१७], बासुकि रोउ[१८] पतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) करनराय, (ए०) लिए। २–(ए०, बी०) आपुहि। ३–(ए०, बी०) मारै। ४–(ए०, बी०) लीन्ह। ५–(बी०) लोगन; (ए०) आगन्ह। ६–(बी०) धरे पाछै सिर भुइ दै मारा; (ए०) धरा न रहै तोर कर बारा। ७–(ए०) लोटहि पुहुमी मानुस भरे। ८–(बी०) ऐ; (ए०) त। ९–(बी०) कहे; (ए०) कस।

१—इस प्रतिमे पक्ति ६-७ परस्पर स्थान्तरित है।

१०–(बी०) आन क मीचु आन न मरई। ११–(ए०) सो रे। १२–(ए०) होई। १३–(बी०) रोवहि हस्ती औ घोरा ठाढ़े; (ए०) रोवहिं हसती घोर। १४–(ए०) गहि ठाठ तुरी तुखार ; ठाढे रोवहिं अबर पुकार। १५–(ए०, बी०) रोवहि। १६–(ए०, बी०) अपछरा। १७–(ए०, बी०) ×। १८–(ए०) औ बासुकि; (बी०) रोवै।

४२५

(दिल्ली; एकडला; बीकानेर)

आदि अन्त सेउ[१] ईहै[२] बानी। इह महँ जे हुत[३] पुरुख[४] बिनानी ॥१
समुझि सँभार राइ पहँ आये[५]। फेकरे सीस पाय वह लाये[६] ॥२
राइ समुझि करु पिता [उधारो[७]]। कलखूँटी कर काठ बुहारो[८] ॥३
मरि के कोइ बहुरि न आवा[९]। सो करु राज न होइ पगावा ॥४
काकर बाप काहि[१०] कर बारा[११]। भया मोह आहै सँयसारा[१२] ॥५
मर्हि होइह सब बिरथैं, रहँहिं बरलो उर संघार[१३]।६
पाँच देवस मन बूझि कै, कछु उटवहु उपकार[१४] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) से आह; (ए०) से भई। २–(ए०) अेह, (बी०) यह। ३–(बी०) उन्ह मॅह जो होत; (ए०) उई से जीअ हुती। ४–(ए०) लोग ५–(ए०) गये। ६–(बी०) फिकरि सीस पाइ उन्ह लाये; (ए०) जाय ठाढ आगे होय भये। ७–(दि०) निवा उर धारो; (बी०) उभारू; (ए०) समुझि की महवार ठारू। ८–(बी०) मुकुती होइ कलि का तेहि भारू; (ए०) महथै कहै कहु कै पारू। ९–(ए०)...त कै बहुरि कोइ आवा। १०–(बी०) कहे। ११–(ए०) जब कोइ देखै चरित अपारा। १२–(ए०, बी०) संसारा। १३–(बी०) अब्रिथा होइहिं सब प्रिथिमी, रहै न कोई पार। १४–(ए०) पक्ति ६-७ नहीं है।

टिप्पणी—(१) **ईहै**—यही। बिनानी—विज्ञानी।
(२) बुहारो—एकत्र करो।
(५) काकर—किसका। काहि—किसका।

४२६

(दिल्ली, एकडला;[१] बीकानेर)

वहिं[१] समुझाइ कुँवर पँह आए। दोउ[२] सिंघ बरके बिगराए ॥१
कुँवरहि बाहि सिंघासन[३] लीतँहि[४]। चले बेग कै[५] बिलम्ब न कीतँहि[६] ॥२

१—इस प्रति में प्रथम पक्ति पूरी और पाँचवी, छठीं और सातवीं पंक्तिके पूर्वार्ध रिक्त है।

रोवत पीटत फेकरत चले[७]। पॉर्य[८] कमर सीस उर खुले[९] ॥३
ओलँहाँ[१०] नगर सुनी[११] यह बाता। काहू कँह[१२] न रही सुधि गाता ॥४
जब सेत्र कुँवर भयउ असवारू[१३]। ईंह[१४] दुहुँ[१५] कै जिय परेउ[१६] खभारू[१७] ॥५
मिरगावति[१८] औ रुपमनि[१९] दूनों[२०], बिनु[२१] जिय साँस अधार[२२]।६
फिरत अहैं[२३] मँदिरा अपनै, मुहिं[२४] का र[२५] करिहु करतार ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(बी०) वोहि। २–(ए०, बी०) दुवौ। ३–(ए०, बी०) सुखासन। ४–(ए०) लीतिन्हि; (बी०) लीन्हा। ५–(बी०)×। ६–(ए०) कीतिन्ह; (बी०) कीन्हा। ७–(ए०) फुकरत चाले; (बी०) फिकरत चले। ८–(ए०, बी०) बाँधे। ९–(बी०) उघेले। १०–(बी०) उथल। ११–(ए०)......नग मसी। १२–(बी०) काहु कहूँ। १३–(बी०) असवारा। १४–(ए०) उन्ह; (बी०) इन्हि। १५–(बी०) दूनौहू। १६–(ए०) परा। १७–(ए०, बी०) खभारा। १८–(बी०) म्रिगावती। १९–(बी०) रुकुमिनि। २०–(ए०)×; (बी०) दुवौ। २१–(ए०)×। २२–(ए०) औहार। २३–(बी०) रही। २४–(बी०)×। २५–(ए०, बी०) काह। २६–(बी०) करिय।

४२७

(दिल्ली; ; बीकानेर)

लूक बरीं[१] चेरी सब धाईं। पँवरि[२] बार पूछे कँह आईं ॥१
मिरगावति[३] मन माँझ सकानी[४]। करों सोइ रह[५] अकथ कहानी ॥२
वेगा परा सुनेउ हौं केऊँ[६]। जब लगि नाँहि सुनेउ[७] जिउ देऊँ ॥३
चेरीं सुनिके फिर बहुराईं[८]। इँदर के[९] सभा गयेउ तुम्ह साईं ॥४
का कहि हा कहि कहत[१०] जिउ दिया। कलजुग मँह अइसा किन[११] किया ॥५
सरि रॉच जरी पिय लै गवनी[१२], सो साका परवान[१३]।६
सती सोइ सत नागर[१४] गुनिये, हा कहि देइ परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–कूक परी। २–पवरी। ३–मिरगाव्रती। ४–मॉहि सुगानी। ५–करो सोइ जेहि रहै। ६–पूक परी सुनै है केऊ। ७–नहिं सुने। ८–पुनि फिरि आई। ९–इन्द्र की। १०–का कह का कह हा कहि। ११–ऐस किनि। १२–सरा रचि जरैं साईं लै। १३–अपने सीस के परवान। १४–कर।

टिप्पणी—(१) लूक–मशाल। बरीं–जली।
(४) बहुराईं–लौटी।
(६) सरि–चिता। साका–वासुदेव शरण अग्रवालके मतानुसार इसका

तात्पर्य विलक्षण पराक्रमसे है। उन्होंने मुहणोत नरसी (२।२८९) के प्रमाणसे इसका अर्थ बडा युद्ध भी दिया है। किन्तु साकाका यह भाव यहाँ घटित नही होता। परवान–प्रमाण।

(७) परान–प्राण।

४२८

(दिल्ली; बीकानेर; चौखम्भा)

रुपमनि[1] फुन[2] वैसहिं मरि गई। कुलवन्ती सत सेंउ[3] सती भई ॥१
बाहर वह[4] भीतर यह[5] रौरो[6]। घर बा[हर][7] मँह[8] उठा अँदोरो[9] ॥२
आजु सँघारत[10] पुहुमि[11] समेंटहिं[12]। जो[13] जो सिरजसि[14] सो सब मेंटहिं[15] ॥३
गाँग तीर लइके सरि रचा[16]। पूजी आवधि[17] किही हुत बचा[18] ॥४
राजा संग[19] रानी चौरासी। लइ सब गवनी वै निरासी[20] ॥५
मिरगावति[21] औ रुपमनि[22] लइके, जरीं कुँवर क साथ[23] ।६
भसम भई सब[24] जरि कै[25], चीन्ह रहा नै गात[26] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर और चौखम्भा प्रति—

१–(बी॰, चौ॰) रुकुमिनि। २–(बी॰, चौ॰) पुनि। ३–(बी॰) सै; (चौ॰) सौं। ४–(बी॰) × । ५–(चौ॰) वह; (बी॰) परिगा। ६–(बी॰) रोरा; (चौ॰) होई। (दि॰) बा। ८–(बी॰) × । ९–(बी॰) अँदोरा; (चौ॰) घर बाहर को रहै न जोई। १०–(बी॰) सघ रन। ११–(बी॰) पुहुमी।१२–(चौ॰) विधि वर चरत न जानै आनू। १३–(बी॰) × । १४–(बी॰) सिरजा। १५–(चौ॰) सो सिरजै सो जाहिं निरानू।१६–(बी॰) गग तीर लै सरा रचावा; (चौ॰) गग तीर लै सरा रचा। १७–(बी॰, चौ॰) अवधि। १८–(बी॰) किही होती बाचा, (चौ॰) कही जो बाचा। १९–(चौ॰) सग जरी। (बी॰) लै सब गौनी वे रनिरासी, (चौ॰) ते सब गये इन्द्र कविलासी। २१–(बी॰, चौ॰) म्रिगावती। २२–(बी॰, चौ॰) रुकुमिनि। २३-(बी॰) के सघात; (चौ॰) लैके जरी कुँअर के साथ। २४–(बी॰) वै। २५–कै ऐसेहु। २६–(बी॰) जिउ न हुत गात; (चौ॰) भसम भईं तिल एकमे, चिन्ह न रहा गात।

टिप्पणी—(२) रौरौ—कोलाहल।

४२९

(दिल्ली; बीकानेर)

छुट बड़ कोउ नहि रहहि अकेला[1]। करना केर[2] चरित इह[3] खेला ॥१
बेवर सरि[4] रचि बारी जरी[5]। औ नाउनिंहि सरि ऊपर परीं[6] ॥२

जरीं[७] भवायत[८] पान खियावत। औ ते जरीं[९] जो पानि[१०] पियावत ॥३
जरीं[११] जो कापर[१२] देत सँवारी। धोबी जरी[१३] छाड़ि बरि नारी ॥४
औ ते जरी[१४] करत जेवनारा[१५]। बाँभन पै न जरी सुनारा[१६] ॥५
आधा नगर अधिक कछु[१७] निखसा, जरि के भये[१८] मँसिवान[१९] ।६
बिनु जिय[२०] नगरी कै जस[२१] कथा, वाँह[२२] लगि सब क[२३] परान ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—छोटी विधि कोइ रहे न काला। २—करत केरे। ३—सब। ४—सरा। ५—सब जरे। ६—औ नाऊ ते सब जरे। ७—जरे। ८—तबारे। ९—जरे। १०—पानी। ११—जरे। १२—कपरा। १३—जरे। १४—जरे। १५—ज्योनारा। १६—एक न बाभन जरेउ भुआरा। १७—किछु। १८—भा। १९—मसियान। २०—जिउ। २१—कैसी। २२—वोहि। २३—सबका।

पाठान्तर—(१) करना—कर्ता; ईश्वर।
(२) बारी—घरेलू काम करनेवाली स्त्रियाँ। (२) नाउनिंहि—नाइन।
(६) निखसा—निकला। मँसिवान—राख।

४३०

(दिल्ली, बीकानेर[१])

महते नेगी जो हे[१] बुधारी[२]। तिंह[३] आपुन[४] मँह कहाँ[५] बिचारी ॥१
जो कछु होनी कँह सो भेंटा[६]। बिधि का लिखा जाइ न मेटा ॥२
सो र[७] करहु जिंह[८] राज रहाई। हमरे रोयें[९] जिउ[१०] न जियाई ॥३
वइ कँह चलहु तिरिया कै राजू। हम पर बीस बरस करु राजू[११] ॥४
करन[१२] राइ कँह घर लै आये। आन सिंघासन पर बैठाये[१३] ॥५
सब नेगिंह[१४] मिलि माथा नावा[१५], जुगजुग भोंजहु राज।६
तुम्ह हमरें सिर ऊपर राजा, चलै राज कर काज ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—अहे। २—बुधि भारी। ३—तेन्ह। ४—आपस। ५—कीन्ह। ६—जो किछु भवा जाइ न मेटा। ७—अब सो। ८—जेहि। ९—रोये हमरे। १०—मुवा। ११—पूरी पक्ति नही है। १२—कर्न। १३—बैसाये। १४—नेगिहु। १५—माथ जो नावा।

टिप्पणी—(१) बुधारी—बुद्धिमान।
(२) भेंटा—मिला; प्राप्त हुआ।

१—इस प्रतिमें पक्ति चार नहीं है। उसके स्थानपर पंक्ति ५ हैं। पाँचवीं पक्तिके स्थानपर नयी पक्ति है—बैठि सिंघासन करहिं जोहारा। हम सब नेगी मुनि बार तुम्हारा ॥

४३१

(दिल्ली[1]; एकडला, बीकानेर[1])

पहिलैं हिन्दुई कथा[1] अही। फुनि र काँहि तुरकी लै कही[2] ॥१
फुनि[3] हम खोलि अरथ[4] सब कहा। जोग सिंगार वीर रस अहा[5] ॥२
खट भाका जो ईहहिं बाचा[6]। पण्डित बिन बूँझत हो साँचा[7] ॥३
बहुल पाख भाँदों जिह आहीं[8]। सिंघ रासि संघ तँह निरव[।*]ही[9] ॥४
जहिया पन्द्रह सै हुत साठी[10]। तहिया ईह चौपाइँह[11] गाँठी[12] ॥५
बहुत[13] अरथ हहिं[14] इहँ[15] मँह कोलै[16], जौ सुधि सेउ कोउ बूझ[17] ।६
कहेंउ जहाँ लग पारेउँ[18], जो कछु[19] वहै[20] हियैं[21] मैं[22] सूझ[23] ॥७

पाठान्तर—एकडला और बीकानेर प्रतियाँ—

१–(ए०) प]हिले हिदुई कसथा; (बी०) पहिलेहि ये दुइ कथा। २–(ए०) फुँनि रे काटि करहिं सुनाही; (बी०) जोग सिगार बीर रस कही। ३–(बी०) पुनि। ४–(ए०) फुनि रे खोल उन्हहिं। ५–(ए०) जोग सिंगार बियोगी लहा; (बी०) लघु-दीरघ कौतुक नहि रहा। ६–(बी०) खट भाखा आइहि एहि मॉझ; (ए०) खट भाखा आहे एहि माझी। ७–(बी०) पडित बिन बूझत होइ सॉझ, (ए०) बेद बिनु बूझत होय सॉझी। ८–(बी०) पहिले पाख भादों छठि अही;(ए०) पंक्ति अस्पष्ट। ९–(बी०) सिंघ रासि सिंह नीरावही; (ए०) सिघ रासि सिह निरवहे। १०–(बी०) जहिया होते पन्द्र सै साठी; (ए०) छायाबन्ध सिर हुत साखा। ११–(बी०) तहिया ऐ रे चौपई। १२–(ए०) तहिया कवि सिरी ऊखा। १३–(बी०) बहुतै। १४–(बी०) अहहि। १५–(ए०, बी०) यहि। १६–(ए०, बी०) ×। १७–(बी०) जौ कोई सुधि से बूझ; (ए०) जो सुधि सौं कोई बूझि। १८–(बी०) लहु परेउ; (ए०) लगि परेव। १९–(बी०) किछु; (ए०) कुछु। २०–(ए०, बी०) ×। २१–(बी०) हिदै। २२–(ए०) मन। २३–(ए०) सूझि।

टिप्पणी—(१) **हिन्दुई**—भारतीय। **काँहि**—किसी ने। **तुरकी**—तुर्क भाषा; यहाँ तात्पर्य सम्भवतः अरबी से है।

(३) **खट भाका**—षट् भाषा (देखिये १५०।१ की टिप्पणी।)

(४) **बहुल पाख**—कृष्ण पक्ष।

४३२

(दिल्ली; बीकानेर)

वहै एक जब[1] लग तन साँसा। ऊ बिन घटै[2] भई वहि आसा ॥१

१—दिल्ली तथा बीकानेरकी प्रतियोंमें पक्ति ५ पंक्ति ३ के रूपमें है। किन्तु वहाँ वह असगत प्रतीत होता है। यह पक्ति मूलतः पाँचवीं पवित के रूप में ही रही होगी यह एकडला प्रतिके आधारपर अनुमान किया जा सकता है।

नित कर आह रहहि नित ओही[३] । नित परसेउ होउ वह मोही[४] ॥२
अहि निसि जपहु[५] छाड़ि सब काजा । अन्त रहहि ओकर[६] राजा ॥३
प्रथम अन्त[७] काज जिंह[८] सेती । सो रे जपहु छाड़ बुधि चेती[९] ॥४
मोंख न आह[१०] और बुधि कीते[११] । बुधि ओकर अस रहु लीते[१२] ॥५
अहै जो रे आयसु वहि केरें[१३], सो र दोउ जग पाउ[१४] ।६
जग दूनों का आहहि जग मँह[१५], और बहुत हहिं साउ ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१—है तब । २—औ फुनि घट मँह । ३—नितु क अहार नितु वोह वोही । ४—नितु परसहु सुमिरहु । ५—(दि०)×। ६—अनत रहहि वोहि करपै । ७—अन्य । ८—जेहि । ९—ऐती । १०—अहि । ११—किये । बुधि वोहि केर आसरहु लिये । १३—जोरे होइहि आइस वोहि केरे । १४—दुवौ जग सो पाउ । १६—दुवौ जग कै आहहि एहि मँह ।

टिप्पणी—(२) ओही—वही ।
(३) अहिनिसि—दिन-रात । ओकर—उसका ।

प्रक्षेप

यहाँ बीकानेर, दिल्ली और मनेर प्रतिके वे अंश संकलित हैं, जिन्हें हमने मूल पाठमे ग्रहण नहीं किया है और पृष्ठ ९२-९८ मे प्रक्षिप्त घोषित किया है।

१

(कड़वक ९८ की पंक्ति १ और २ के बीचमे)

(बीकानेर १९।१; दिल्ली मार्जिन)

उघटी काग[1] ररे दिग[2] बाँये। दहिने फेकरि सियार घटाये[3] ॥२
बिनु[4] रितु[5] बीजु चमक[6] घन गरजे[7]। कै कुसुगुन दहिनें घर बरजें[8] ॥३
बाँये[9] डवरू आइ बजावा। रात बहिर तरहीं[10] दिखावा ॥४
मारग रोदन रहै बौराई[11]। आगे एक अँवरी बन आई[12] ॥५
जोगी कापी जोडरी पारी, की सुगती कही न।६
इन्हहिं देखै बड़ कुसगुन, तेली चिकरा मीन ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति।

१–[...] क। २–दिसि। ३–दहिंन झिंकरि सियारि कहाये। ४–५—×। ६–चमकै। ७–गराजै। ८–बाजै। ९–×। १०–राति बीहर तरई। ११–पाक रोवै तन रहै बौरावा। १२–आगे कला दिगंब्रर आवा।

(बीकानेर १९।२)

म्रिगा नाँधि पुनि पंथ फिराई। दहिनै तै बाई दिसि जाई।१

२

(कडवक ११० और १११ के बीच)

(बीकानेर २१।३)

राजा रोवै बहुत दुख पाई। अरथ दरब बहु दिया लुटाई ॥१
पालि पोसि कै कियेउ सँजोगा। से हम कहँ दै गयेउ बिवोगा ॥२
वहि वियोग मोहि जिया न जाई। कहइ मरौं अबहीं बिसु खाई ॥३
बहुत अगिन हम उर दै खेला। जीउ न चेतै राज बर दुहेला ॥४
लोगहु राजा कहँ समुझाई। दिन एक जियत मिलिह तुह आई ॥५

होखी कोई दोहरा, कुँवर मिलिह तुह आइ ।६
तब लग बिरस भजहु, करहु दइय चित लाइ ॥७

३

(कड़वक १११ और ११२ के बीच)
(बीकानेर २१।५)

सत सै धर्मपन्थ पगु दीतसि । सत साथी आगै कै लीतसि ॥१
सत संबर सत भोजन लीन्हा । सत ओढ़न सर डासन कीन्हा ॥२
सत अधार सत जीउ पराना । सत किंगरी सत भाउ बखाना ॥३
सत सै जाइ असत न रूपा । पूजै तेहि जेहि कोइ न पूजा ॥४
सत से सिध सत मन लावा । सतै जपै मन कूर न भावा ॥५
वहै एक चित लाइसि, से और न मन मैं भाउ ।६
भोग अनन्द तेही दिना, जेहि दिन वहि कहँ पाउ ॥७

(बीकानेर; २१।६)

चला जाइ खिन थिर न रहाई । सँवरै तेहि जेहि के पथ जाई ॥१
वहि छाँड़ि और न मन महिं भावइ । तहाँ जाइ जहँ वोहि कहँ पावइ ॥२
जेहि बेधनि सर तेही चहई । जागी रूप ढूँढ़ि तेहि जाई ॥३
हाँडे गिरि साइर बन घना । सो प्रीतम भेंटै केहि बना ॥४
चला जाइ दिन रैनि का करई । रहा हियै धरि खिन न बिसारई ॥५
गिरि परबत बन हाढ़ैं सायर, संक न मानै चित्त ।६
पिरम भुलावा बिरह झर, भवै न बाँधै थित्त ॥७

४

(कड़वक ११३ की प्रथम दो पक्तियोंके बाद)
(बीकानेर २२।३)

केस कर गिंय मधु औ भुजा । ऐस बादि घन आहै कुँजा ॥३
अँगुरी पदुम नख रूँम कपोला । कन्धस्थल पहै अमोला ॥४
केस कुटिल औ नाँभि गँभीरा । नैन तरंग एहि भँवर कमीरा ॥५
पनि कन्द्रो सुख उदो रह, जानौ दन्त उदन्त ।६
नैन चरन कर जीभ तालुका, अधर बरुनी सोभन्त ॥७

(कड़वक ११३ की पंक्ति ३ के बाद)
(बीकानेर २२।२)

पा चीकन अस ओराई । जानहु असोग पल्ली लै लाई ॥

(कड़वक ११३ की पक्ति ४ के बाद)

बतीसो लखन सो परगट पूरे। झूठे भये न आहहिं फुरे ॥४

५

(कडवक १६७ की पंक्ति ५-७ के स्थानपर)
(बीकानेर ३१।३)

जो किछु करम लिखा सो भावा। उनहिं कोर छाड़सि मो माया ॥५
जेहि दिन बिधना निरमयेव, तेहि दिन लिखा कपार ।६
सात सरग चढ़ धावौ कोई, अंक न मिटै लिलार ॥७

६

(कडवक २०६ की पंक्ति ३ के बाद)
(बीकानेर; ३७।३ दिल्ली मार्जिन)

मालति[1] बेल[2] गुलाल सुहाई। सेवती औ चम्पा लै लाई[3] ॥४
चाँप नेवारी करना फूला[4]। बास[5] माँत[6] मधुकर रंग[7] भूला ॥५
सोनजरद[8] नागेसर[9] जुही[10], फूले आनों फूल[11] ।६
यह[12] सुहाइ देखसि[13] फुलवारी, देखत तिंह[14] जिउ भूल ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–मालती। २–बेलि। ३–सेवती आनि चबेली लाई। ४–जुही निवारी (औ) कर्न फूला। ५–बासु। ६– मालती। ७–×८।–सोनजरदा। ९–नगेसिरी।१०–जूही ११–फूली अनवनि फूलि। १२–बहु। १३–×। १४–देखतहिं रहा।

(बीकानेर ३७।४, दिल्ली मार्जिन)

बाला[1] दौनाँ[2] मरुवा लावा[3]। केवड़ औ केतकी सुहावा[4] ॥१
सरखण्ड फूलै औ छर बेनाँ[5]। पाडल[6] चम्पा बहुत[7] को गुनाँ[8] ॥२
मौलसिरी[9] कुन्द पँच परका[10]। औ चम्पा जूरी भुँइ तरका[11] ॥३
कूदमनाँ औ माधो सुहावा[12]। जिह क[13] बास मालति जिउ[14] लावा॥४
फूल मझोनाँ[15] सेंदुरबारी। बिनु परिमल कै गहीं[16] सँवारी ॥५
सिंगारहार[17] औ गुड़हल[18], बहुत बेकर पाँत[19] ।६
फूल माँझ परिमल के[20], कहै[21] सो भांतहिं भाँत[22] ॥७

पाठान्तर—बीकानेर प्रति—

१–×। २–दवना। ३–लाई। ४–केलिक करै जो फूल सोहाई। ५–सिरखेडी औ उर छुरेना। ६–पंडर। ७–बहु। ८–गना। ९–बौरसी [illegible]१–चम्पा बागा। ११–और जो चम्प उनै भुँइ लागा। १२–केर भसल मधुमन्त सोहावा। १४–

जेहि कर। १४–मालती मधु। १५–[.....]धनी औ। १६–गहेउ। १७–हर सिंगार। १८–वोडहुल। १९–नहसुती पाँतहि पाँत। २०–फूल परिमल चंपच, २१–कहेउ। २२–भाँति।

७

(कड़वक २४५ के पंक्ति २ के बाद)
(बीकानेर ४४।१)

सुनि मिरगावति हँसि कै कहा। एत दुख हम निति केहि गुन सहा ॥३
कुँवर कहा सुनु प्रान पियारी। षटरस कैसे जाइ सँभारी ॥४
जेहि महँ एक वह रे ना होई। रहै न जाई औटि मरै सोई ॥५
हरिन पतिंगा भौंर जिमि, नग जप कप रस लीखु।६
इनही से वै नहिं जरहिं, तेहि पर पेम बलि सीखु ॥७

८

(कड़वक २४८ की तीसरी पंक्तिके बाद)
(बीकानेर ४४।५)

जेन्ह पानन्ह तेरह गुन पूरे। कटुआ कट मधु औ गूरे ॥४
खरख खरब तस पुनि साना। किमि हरन दुरगन्ध बिनाना ॥५
मुख अभरन शोभा भल पावै, काम अगिनि उनमाद।६
सुध सरीर होइ जिहि खाई, सब जो सरूप सवाद ॥७

(कड़वक २४८ की पंक्ति ४ और ५ के बाद और ६-७ से पूर्व)
(बीकानेर ४४।६)

घोरि चत्रसम धरे कचोरा। ठाँउ ठाँउ धरि गये सो खोरा ॥३
करडी चारि चारि एक एक आगे। फूल माल गूँथे बिनु तागे ॥४
सुरपति सुरंग मुनि सुनि धाये। देखि सभा सब पाप गँवाये ॥५

९

(कड़वक २५० और २५१ के बीचमें)
(बीकानेर ४५।३)

पाँच सबद साज सब कहे। भीन भीन कै पाँचों रहे ॥१
एक सबद करहिं सै बाजहिं। औ एक कंठहि से साजहिं ॥२
एक मुख से जो बजावहिं। और एक वोहि डोरि जो लावहिं ॥३
औ एक नख बजे जो ताँती। सुनत सबदहिं यह रखे मन होइ सांती ॥४
पाँचो सबद कथा मँह कहे। जो ग्रन्थ हम सुने जे अहे ॥५

खर डाँडी मुख जोरि नख, ताँती जो र बजाव ।६
पाँचउ आने जोरि कै, अब जो सरसुती कहाव ॥७

१०

(कड़वक २५८ की प्रथम चार पक्तियोंके बाद)

(बीकानेर : ४६।५)

औ जो खस्ट नायका कहियहि । ते पइयै जे उन महँ चहियहि ॥५
आठौं कहौं सँभरि कै, एक एक देउँ बुझाइ ।६
आध लेउ नव सात कै, पण्डित लेखै नहिं जाइ ॥७

(बीकानेर ४६।६)

अखट एक ना कहौं बिसेखी । जो जस होइ कहौं तेहि जोरी ॥१
नारी खण्डित सो रे कहावइ । जाकर पिउ अनतहिं बसि आवइ ॥२
बिप्रलुबुध मिलै नहिं काऊ । गुपुत साथ नहिं कामिनि मिलाई ॥३
बसुकी सेज मिलै की आसा । सब निसि जागै पिउ की आसा ॥४
अभिसारी करै जामिनी । कलिहि रति तातें त मनी ॥५
उत खण्डिता पिउ औ बिदेसी, बिलग होइ रति नहिं पांव ।६
....॥७

(बीकानेर ४७।१)

अनवन भाँति सखी सब आई । रूप सरूप सोहाग सोहाई ।१

(कड़वक २५८ की पंक्ति ५ के बाद)

काहु हाथ चतुर सम घोरा । काहु हाथ पुहुप के जोरा ॥३
कोई कर नौलखी लियै । नौ जोवन औ अभरन किये ।।४
आपु आपु महँ करहिं धमारी । जहाँ बैठी म्रिगावती नारी ॥५

११

(कड़वक २९९ और ३०० के बीच)

(मनेर १६० अ)

दीपक मन मँह कहा बिचारी । इँह कहँ लाज मोर हिय भारी ।।१
हौं निघर किंह जाँउ बिछोही । लाज तज रे मनावइ रोही ।।२
यह कह दीपक घर कँह जाई । मिरगावति मन माँझ सँकाई ।।३
दीपक मुहि सेउ किय चतुराई । अन्तस स्याम दइ घर जाई ।।४
उन सो मन्त्र करौं मन माँही । बकतहिं मन्त्र दउर जिंह पाहीं ॥
अब सो मन्त्र करौं मन भीतर, जिंह दिवइ काज*मिराइ ।६
मन्त्र अहै पिय चितयों, पुन र अगिन सत दिया जराइ ।।७

१२

(कड़वक ३७८–३७९ के बीच)

(बीकानेर ६७।३)

वह तो माननि मान दिखरावै। अखिट भाव एहि मदन सतावै ॥१
सबै दाँव अवसथव भँवई। आइ तो पंचसर भंग कराई ॥२
बिपत बिबि असुर बियापा। परा रे सर मारै गहि चापा ॥३
बहुत जतन करै नहिं मानै। मान भंग मूरिख कै जानै ॥४
अखिट भाव कर सह बिकरारा। रस रस बिरसै बर न सँचारा ॥५
माननि न मानै कयफर, जो रे चरन परै कन्त।६
सहज भुअंगम जौ नवहिं, कि करियहि तेहि सनमन्त ॥७

१३

(कड़वक ३९२ की प्रथम पंक्तिके बाद)

(बीकानेर ६९।५)

बहुरि लागि धिय कहुँ सिख देई। कुल राखै कुलवन्ती सोई ॥२
सासु ननद कहुँ उतर दीजै। जो वै कहहिं सो सिर पर कीजै ॥३
बिनु पूछै बकत न मुँह खोली। मधुरे बचन परजन सैं बोली ॥४
पिउ चाहै सहज इन चलिये। नित नौत नौते सैंउ रहिये ॥५
केउ बच लाख जो बोलइ, आप गरुवै होइ रहिउ।६
रानी कहै इन आगे, यह कुलवन्ती टेउ ॥७

(बीकानेर ६९।६)

साँचेहु सौति करै तुम्ह जानेहु। करुवा बचन खाँड घिउ सानेहु ॥१
बोल एक कहुँ उतर न दीजै। वहइ लजाइ हिये मैं छीजै ॥२
लाज करेहु जनि करेहु ढिठाई। बाँह उठाइ जनि चलहु धँधाई ॥३
सौंहे न हेरेहु नैन पसारी। अँबरइ मुख रखिहहु बारी ॥४
कोह मारि मन करिहहु साँती। दुखित न कहै कोइ किहि भाँती ॥५
दूनौ कुल हौ निरमल, सत साका परवान।६
करतब सोई कीजियहु, जस सुनियै एहि कान ॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति २-३ के बाद)

(बीकानेर ७०।१)

कलस भरे कन्या कोइ आई। मछरी जो कोई लै जाई ॥२
आगी जरी जनौं सुख राती। लटकि चली जनौ पिय मदमाती ॥४
कुँसुम जो माली लै आवा। दरिपन आनि पुनि नरपित देखरावा ॥५

बाँभन ब्रिध बचन सुभ भाखत, महरि जो दही लै आइ ।६
संख भेरि पुनि बाजत, सरस सबद कराइ ॥७

(बीकानेर ७०।२)

भई अब टेर रावत जन भले । महते नेगी समदन चले ॥१
बाँभन भाट जो माँगन अहे । लगे संग अति जाहिं न कहे ॥२
जोजन दोइ करि जाइ तुलाना । तहाँ जाइ कै कीन्ह मिलाना ॥३
वोही नदी अमर जल नाऊँ । बाग बगीचा अपूरब ठाऊँ ॥४
खिन एक माँह भई जेवनारा । सब केहु कहँ भवा हँकारा ॥५
जेइ जूँठ करि उठे, और कर दीन्हेउ पान ।६
कंचन तुरिय दै बहोरे, राखिन्हि सब कर मान ॥७

(कड़वक ३९२ की पंक्ति ४-५ के बाद)
(बीकानेर ७०।३)

बहुत कटक आगे कै पाछे । मैगल ठाकुर आवहिं काछे ॥३
गँइर चलत भवाँ अँधियारा । सर सेत कहँ चले पहारा ॥४
उठै खेह दर सुझै न हाथा । एक एक बिहरे संग साथा ॥५
जानौ सरग धरती सै होइ लग, मिलवा मिलै न एकहि एक ।६
दरमर पंक होइ तहँ जाई, पानी होइँ अनेक ॥७

कड़वक—तुलनात्मक सारिणी

ग्रन्थके सम्पादनमें विभिन्न प्रतियोंके कड़वकोंका किस क्रमसे उपयोग हुआ है, यह इस सारिणीमें स्पष्ट किया गया है, इससे अनुसन्धित्सुओंको विभिन्न प्रतियोंके तुलनात्मक अध्ययनमे सरलता होगी।

दिल्ली प्रतिमे कड़वकोंको न तो अंकबद्ध किया गया है और न उसके प्रत्येक पृष्ठमें कड़वकोंकी समान पंक्तियाँ हैं। अतः हमने उन्हे अपनी ओरसे क्रमांकित किया है और वे ही क्रमाक उस प्रतिके कड़वकोंके लिए यहाँ प्रयुक्त हुए हैं।

एकडला प्रतिके पृष्ठोंपर जो अंक अंकित मिलते हैं, वे अंक कड़वकोंके क्रमका निश्चित बोध नहीं कराते। उसके अंकोंमें तारतम्य न होनेके कारण हमने इस प्रतिके कडवकोंके लिए भारत कला भवनकी पंजिकाकी संख्याका उल्लेख किया है। जो पृष्ठ भारत कला भवनमे नहीं हैं, उनके अस्तित्व बोधके लिए ताराकनका प्रयोग किया गया है।

बीकानेर प्रतिके लिए पृष्ठ-संख्याका उपयोग सुविधाजनक लगा। उसके प्रत्येक पृष्ठमें समान रूपसे ६ कडवक है। अतः प्रत्येक पृष्ठके कड़वकोंका बोध करानेके लिए कोष्ठकमे १ से ६ संख्याका प्रयोग किया गया है।

मनेर प्रतिके प्रत्येक पत्रमे दो कड़वक (प्रत्येक पृष्ठपर एक) हैं। अतः उनके लिए पत्र सख्याके साथ पृष्ठके लिए क और ख का प्रयोग किया गया है।

चौखम्भा और काशी प्रतियोंके कड़वक थोड़े हैं। मूल ग्रन्थमें उनका क्या क्रम था, ज्ञात न होनेसे उनके लिए किसी प्रकारका संख्या-संकेत सम्भव न हो सका। उनके अस्तित्व बोधके लिए हमने ताराकन का उपयोग किया है।

सम्मेलन संस्करणमे अनेक कड़वकोंका अभाव है और मुद्रित कड़वकोंमें भी अनेक स्थलोंपर व्यतिक्रम है। अतः उनका भी निर्देश इस सारिणीमें किया जा है। उसमें जो कड़वक पाद-टिप्पणीमे दिये गये हैं, उनके लिए तारांकनका प्रयोग किया गया है।

अन्य सूचनाएँ पाद-टिप्पणीके रूपमे दी गयी हैं।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रवि	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१ २		७९११			८

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४	४[1]				
५	५				
६	६	७८५९			१
७	७	*		*	२
८	८	*		*	३
९	९	*		*	४
१०	१०	७९०५			५
११	११				
१२	१२	७७४३			१२
१३	१३			*	*[2]
१४	१४				
१५	१५	७९३७			६
१६	१६	७९५०			१०
१७	१७	७८०३			७
१८	१८	७८३१			११
१९	१९	७९४०			१०८
२०	२०	७८१३			
२१	२१				
२२	२२				
२३	२३	७९६९			१३
२४	२४	७८४१			१४
२५	२५	७७६६			२८
२६	२६	७७८६			१५
२७	२७	७८००			९३
२८	२८	७९२२			१६
२९	२९	७८२४			१७
३०	३०				
३१	३१	७८२१	६ (१)		१८
३२	३२	७७६५	६ (२)		१९
३३	३३	७८५१	६ (३)		२०
३४	३४	७८१९	६ (४)		२१

१. केवल ढाई पंक्ति उपलब्ध ।

२. सम्मेलन संस्करण में पृ० २०३ में पाद-टिप्पणीके रूपमें अंकित ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेल संस्कर
३५	३५[1]		६ (५)		२२
३६			६ (६)		२३
३७	३६	७८५०			२४
३८	३७	७८५२			२५
३९	३८	७९४९			२६
४०	३९	७८६९			२७
४१	४०	७८७८			२९
४२	४१	७८७९			*[2]
४३	४२	७८३४			*[3]
४४	४३				
४५	४४				
४६	४५				
४७	४६				
४८	४७	७८४८			५५
४९	४८	७७९०			४१
५०	४९				
५१	५०	७७९६			३०
५२	५१	७८८१			३१
५३	५२	७९१३			३४
५४	५३				
५५	५४	७८४९			३२
५६	५५	७८२९			३३
५७	५६				
५८	५७				
५९	५८				
६०	५९				
६१	६०				
६२	६१				
६३	६२				
६४	६३	*			३५

१—इसमें कडवक ३५ की प्रथम चार और कडवक ३६ की अन्तिम २ पक्तियाँ हैं।

२—कडवक ३२२ (सं० स० २७९) के पाठान्तर रूपमें गृहीत।

३—कडवक ३२८ (सं० स० २८४) के पाठान्तर रूप में गृहीत।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
९६	९५	७९२५			५३
९७	९६	७७४९			५४
९८	९७		१९ (१)[1]		५६
			१९ (२)[2]		५७
९९	९८	७८९९	१९ (३)		५८
१००	९९		१९ (४)		५९
१०१	१००	७९४८	१९ (५)		६०
१०२	१०१	७८१६	१९ (६)		६१
१०३	१०२	७८६६			६२
१०४	१०३	७९११			६३
१०५	१०४	७८५४			६६
१०६	१०५	७९२८			६४
१०७	१०६	७९४३			६५
१०८	१०७	७८१८			६७
१०९	१०८	७८३६	२१ (१)		६८
११०	१०९		२१ (२)		६९
			२१ (३)		७०
१११	११०	७८६३	२१ (४)		७१
			२१ (५)[1]		७२
			२१ (६)[3]		७३
११२	१११	७९८७	२२ (१)		७४
११३	*		२२ (३)[4]		७६
			२२ (२)[5]		७५
११४	११२	७९४६	२२ (४)		७७
११५	११३	७७७६	२२ (५)		७८
११६	११४	७७५८	२२ (६)		७९
११७	११५	७७६३	२३ (१)		८०

१—केवल प्रथम पक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

२—प्रथम पंक्ति के अतिरिक्त शेष पंक्तियाँ ; प्रथम पक्ति प्रक्षिप्त ।

३—प्रक्षिप्त ।

४—प्रथम दो पक्ति ; शेष प्रक्षिप्त ।

५—पंक्ति २ और ४ के अतिरिक्त ; ये पंक्तियाँ प्रक्षिप्त ।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
११८	११६	७९११	२३ (२)		८१
११९	११७	७७९३	२३ (३)		८२
१२०	११८	७८९७	२३ (४)		८३
१२१	११९	७८१२	२३ (५)		८४
१२२	१२०		२३ (६)		८५
१२३	१२१	७९२०			८६
१२४	१२२	७८८३			८८
१२५	१२३	७७७२			८९
१२६	१२४	७८३२			९०
१२७	१२५	७८३७			९१
१२८	१२६	७९७९			९२
१२९	१२७				
१३०	१२८	७९५९			९४
१३१	१२९	७७६९			९५
१३२	१३०	७७९९			९९
१३३	१३१	७७५२			१००
१३४	१३२	७९१६			९८
१३५	१३३	७९१५			९६
१३६	१३४	७९२९			९७
१३७	१३५	७९८५			८७
१३८	१३६				
१३९	१३७	७७४७			१०१
१४०	१३८	७७८४			१०२
१४१	१३९	७७६०			१०३
१४२	१४०	७७७३			१०४
१४३	१४१	७९०१			१०५
१४४	१४२	७७८३			१०६
१४५	१४३				
१४६	१४४	७९६१			१०७
१४७	१४५	७९५८	२८ (१)		१०९
१४८	१४६		२८ (२)		११०
१४९	१४७		२८ (३)		१११

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
१५०	१४८	७७१७	२८ (४)		११२
१५१	१४९		२८ (५)		११३
१५२	१५०		२८ (६)		११४
१५३	१५१	७१३२	२९ (१)		११५
१५४	१५२	७१५३	२९ (२)		११६
१५५	१५३	७१५४	२९ (३)		११७
१५६	१५४	७७७१	२९ (४)		११८
१५७	१५५		२९ (५)		११९
१५८	१५६		२९ (६)		१२०
१५९	१५७	७१५२	३० (१)		१२१
१६०	१५८	७८३५	३० (२)		१२२
१६१	१५९	७८९८	३० (३)		१२३
१६२	१६०	७९००	३० (४)		१२४
१६३	१६१	७८२६	३० (५)		१२५
१६४	१६२	७८५३	३० (६)		१२६
१६५	१६३	७९०२	३१ (१)		१२७
१६६	१६४	७९०६	३१ (२)		१२८
१६७	१६५	७७७८	३१ (३)[१]		१२९
१६८	१६६		३१ (४)		१३०
१६९	१६७		३१ (५)		१३१
१७०	१६८		३१ (६)		१३२
१७१	१६९		३२ (१)		१३३
१७२	१७०	७८०२	३२ (२)		१३४
१७३	१७१		३२ (३)		१३५
१७४	१७२	७७६४	३२ (४)		१३६
१७५	१७३		३२ (५)		१३८
१७६	१७४	७९३५	३२ (६)		१३७
१७७	१७५		३३ (१)		१३९
१७८	१७६	७९०३	३३ (२)		१४०
१७९	१७७		३३ (३)		१४१
१८०	१७८	७८०९	३३ (४)		१४२

१—प्रथम चार पंक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त।

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२१०	२०८	७८०७	३८ (२)		१७०
२११	२०९		३८ (३)	*	१७१
२१२	२१०	७९३८	३८ (४)	*	१७२
२१३	२११	७८१४	३८ (५)	*	१७३
२१४	२१२		३८ (६)	*	१७४
२१५	२१३	७९४१	३९ (१)	*	१७५
२१६	२१४	७८७७	३९ (२)	*	१७६
२१७	२१५	७७४६	३९ (३)	*	१७७
२१८	२१६	७८७६	३९ (४)	*	१७८
२१९	२१७		३९ (५)	*	१७९
२२०	२१८	७९५४	३९ (६)	*	१८०
२२१	२१९	७९७५	४० (१)	*	१८१
२२२	२२०	७९४५	४० (२)	*	१८२
२२३	२२१	७८४२	४० (३)	*	१८३
२२४	२२२	७९८१	४० (४)	*	१८४
२२५	२२३	७८२३	४० (५)	*	१८५
२२६	२२४	७९७७	४० (६)	*	१८६
२२७	२२५		४१ (१)	*	१८७
२२८	२२६	७७७०	४१ (२)	*	१८८
२२९	२२७	७९१२	४१ (३)	*	१८९
२३०	२२८	७९४२	४१ (४)	*	१९०
२३१	२२९	७७७७	४१ (५)	*	१९१
२३२	२३०	७९०८	४१ (६)	*	१९२
२३३	२३१	७९४७	४२ (१)	*	१९३
२३४	२३२	७७७९	४२ (२)	*	१९४
२३५	२३३	७८१७	४२ (३)	*	१९५
२३६	२३४		४२ (४)		१९६
२३७	२३५	७९०९	४२ (५)		१९७
२३८	२३६	७९७३	४२ (६)		१९८
२३९	२३७	७७९१	४३ (१)		१९९
२४०	२३८	७७५०	४३ (२)		२००
२४१	२३९		४३ (३)		२०१

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	अन्य प्रति	सम्मेलन संस्करण
२४२	२४०	७८३८	४३ (४)		२०२
२४३	२४१		४३ (५)		२०३
२४४	२४२		४३ (६)		२०४
२४५	२४३	७९८२	४४ (१)[१]		२०५
			४४ (२)[२]		*
२४६	२४४	७९१८	४४ (३)		२०६
२४७	२४५	७८८४	४४ (४)		२०७
२४८	२४६	७९११	{ ४४ (५)[३] ४४ (६)[४] }		२०८
२४९	२४७	७९६०	४५ (१)		२०९
२५०	२४८	७९६२	४५ (२)		२१०
			४५ (३)		२११
२५१	२४९		४५ (४)		२१२
२५२	२५०		४५ (५)		२१३
२५३	२५१		४५ (६)		२१४
२५४	२५२		४६ (१)		२१५
२५५	२५३		४६ (२)		२१६
२५६	२५४		४६ (३)		२१७
२५७	२५५		४६ (४)		२१८
२५८	२५६	७९८३	{ ४६ (५)[५] ४६ (६)[६] ४७ (१)[७] }		२१९
२५९	२५७		४७ (२)		२२०
२६०	२५८	७७८९	४७ (३)		२२१
२६१	२५९	७९७६	४७ (४)		२२२

१–प्रथम दो पक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

२–दो पक्तियाँ रिक्त ।

३–प्रथम तीन पक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

४–प्रथम दो और अन्तिम दो पक्तियाँ, पक्ति ३-५ प्रक्षिप्त ।

५–प्रथम चार पक्तियाँ; शेष प्रक्षिप्त ।

६–प्रक्षिप्त ।

७–केवल पंक्ति २, ६, और ७; शेष प्रक्षिप्त

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
२६२	२६०	७८९५	४७ (५)		२२३
२६३	२६१	७९७६	४७ (६)		२२४
२६४	२६२		४८ (१)		२२५
२६५	२६३	७९२७	४८ (२)		२२६
२६६	२६४	७७४८	४८ (३)		२२७
२६७	२६५		४८ (४)		२२८
२६८	२६६	७९३४	४८ (५)	१४४ अ	२२९
२६९	२६७	७८४५	४८ (६)	१४४ ब	२३०
२७०	२६८	७८७१	४९ (१)	१४५ अ	२३१
२७१	२६९	७८९१	४९ (२)	१४५ ब	२३२
२७२	२७०	७८६०	४९ (३)	१४६ अ	२३३
२७३	२७१	७७८८	४९ (४)	१४६ ब	२३४
२७४	२७२		४९ (५)	१४७ अ	२३५
२७५	२७३		४९ (६)	१४७ ब	२३६
२७६	२७४	७९२६	५० (१)	१४८ अ	२३७
२७७	२७५	७८४०	५० (२)	१४८ ब	२३८
२७८	२७६	७९१०	५० (३)	१४९ अ	२३९
२७९	२७७	७७६८	५० (४)	१४९ ब	२४०
२८०	२७८	७९८९	५० (५)		२४१
२८१	२७९	७७५४	५० (६)		२४२
२८२	२८०	७७५१	५१ (१)		२४३
२८३	२८१	७९७७	५१ (२)		२४४
२८४	२८२		५१ (३)	१५२ अ	२४५
२८५	२८३	७८९०	५१ (४)	१५२ ब	२४६
२८६	२८४	७८६६	५१ (५)	१५३ अ	२४७
२८७	२८५	७८९३	५१ (६)	१५३ ब	२४८
२८८	२८६		५२ (१)	१५४ अ	२४९
२८९	२८७	७९१४	५२ (२)	१५४ ब	२५०
२९०	२८८	७९८४	५२ (३)	१५५ अ	२५१
२९१	२८९	७८५८	५२ (४)	१५५ ब	२५२
२९२	२९०		५२ (५)	१५६ अ	२५३
२९३	२९१		५२ (६)		२५४

प्रस्तुत संस्करण	दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	मनेर प्रति	सम्मेलन संस्करण
३२४	३२२		५८ (१)	१७१ ब	२८०
३२५	३२३		५८ (२)	१७२ अ	२८१
३२६	३२४		५८ (३)	१७२ ब	२८२
३२७	३२५		५८ (४)	१७३ अ	२८३
३२८	३२६		५८ (५)	१७३ ब	२८४
३२९	२२७		५८ (६)	१७४ अ	२८५
३३०	३२८		५९ (१)	१७४ ब	२८६
३३१	३२९		५९ (२)		२८७
३३२	३३०		५९ (३)		२८८
३३३	३३१		५९ (४)	१७६ अ	२८९
३३४	३३२		५९ (५)	१७६ ब	२९०
३३५	३३३		५९ (६)	१७७ अ	२९१
३३६	३३४		६० (१)	१७७ ब	२९२
३३७	३३५		६० (२)	१७८ अ	२९३
३३८	३३६		६० (३)	१७८ ब	२९४
३३९	३३७		६० (४)	१७९ अ	२९५
३४०	३३८		६० (५)	१७९ ब	२९६
३४१	३३९		६० (६)	१८० अ	२९७
३४२	३४०		६१ (१)	१८० ब	२९८
३४३	३४१	७९३९	६१ (२)	१८१ अ	२९९
३४४	३४२		६१ (३)	१८२ ब	३००
३४५	३४३		६१ (४)		३०१
३४६	३४४	७८६४	६१ (५)		३०२
३४७	३४५	७७५५	६१ (६)		३०३
३४८	३४६	७७५३			३०४
३४९	३४७				
३५०	३४८				
३५१	३४९				
३५२	३५०				
३५३	३५१		६३ (१)		३०६
३५४	३५२		६३ (२)		३०७
३५५	३५३		६३ (३)		३०८

दिल्ली प्रति	एकडला प्रति	बीकानेर प्रति	चौखम्भा प्रति	सम्मेलन संस्करण
४०८	७९८८	७३ (३)		३६८
४०९	७८४७	७३ (४)		३६९
४१०	७९३१	७३ (५)		३७०
४११	७९७०	७३ (६)		३७१
४१२	७७७५	७४ (१)		३७२
४१३	७८६७	७४ (२)		३७३
४१४	७९६५	७४ (३)		३७४
४१५		७४ (४)		३७५
४१६	७८९२	७४ (५)		३७६
४१७		७४ (६)		३७७
४१८		७५ (१)		३७८
४१९	७९६६	७५ (२)		३७९
४२०	७९६८	७५ (३)		३८०
४२१	७७७४	७५ (४)		३८१
४२२	७७८५	७५ (५)		३८२
४२३	७८९४	७५ (६)		३८३
४२४	७७४५	७६ (१)		३८४
४२५		७६ (२)		३८५
४२६		७६ (३)		३८६
४२७		७६ (४)		३८७
४२८		७६ (५)		३८८
४२९	७९४४	७६ (६)		३८९
४३०		७७ (१)		३९०

शब्द-सूची

भाषा-विज्ञान और व्याकरणकी दृष्टिसे उहापोह करनेवाले पाठकों और कोश-कारोंकी सुविधाकी दृष्टिसे यह शब्द-सूची प्रस्तुत की जा रही है। काव्यमे आये अति प्रचलित शब्दोंको छोडकर, प्रायः सभी शब्द यहाँ एकत्र किये गये हैं। जहाँ वे प्रयुक्त हुए हैं, उन सभी स्थलों का निर्देशन यथासाध्य किया गया है। यदि कहीं कोई शब्द या निर्देश छूटा प्रतीत हो तो उसे हमारी विवशता मानकर क्षमा करें। कुछ स्लिपोंके खो जानेके कारण हम उन्हे न दे सके है।

कोशोंमें प्रयुक्त क्रमसे शब्द सचित किये गये हैं किन्तु शब्दोंके विभिन्न रूपोको एक ही स्थानपर देनेकी पद्धति अपनायी गयी है। इससे जिज्ञासुओंको शब्दोके परीक्षणमे सुविधा होगी। अपनी सुविधाके कारण हमने शब्द-क्रममे पहले आने वाले रूपको मुख्य स्थान दिया है। यह क्रम वैज्ञानिक न होनेपर भी ढूँढ़ने-पहचाननेमे असुविधा न होगी, ऐसी आशा है।

अ

त

ध

पाइसि २४।६, १८३।२, ३३९।५, **पाई** ४००।६; ४०३।४, **पाउ** ७८।७, १५७।७; १६५।४, १८४।७; २२९।४,५, ३१४।४, ३४१।५, ३००।१,६, **पाऊँ** २०७।२

पाइक ९३।२

पाकै २००।५

पंखि १८९।१

पाख ४३१।४

पाँख २७९।१; ३९४।१

पाखर २०।४; ९४।७, ३५७।१, ४२२।३

पाग ३७१।६

पागेउ ३१५।३

पाछ २९३।२, **पाछहिं** १८७।३; **पाछु** ३०।३; ८५।४; १६३।६; २०४।५,६; ३२५।४, ४१८।४; **पाछे** २६।३, **पाछेउँ** २८७।१; **पाछैं** १०।२, ८४।३, ८८।१, १७१।५, १८३।१, ३३७।५, ४१२।२, **पाछों** ११०।५; १८८।१

पाट ७२।१

पात (पत्ता) २८।२; ३२९।७, **पाती** ९५।१

पाँत (पक्ति) ३९।७; ३७०।२, **पातहिं** ३९।७; ७७।५; **पाँति** ५३।२; **पतिंह** १५२।४ **पाँती** ७७।५; ३६८।४

पातर ६१।१, ६६।३; ७२।३; ७५।१

पाती (पत्र) ३७।५; ३८।१; ९२।१,३, ९३।१

पाथर २४।४; २८८।३

पाना ३१२।३; **पानाँ** १४९।२

पानि ३४८।४

पाय (पैर) ४२५।२; **पायन** ३९७।३; **पाँयहि** ११९।५; २४९।५, ३७५।४; ३९७।२;

पायउ १२६।६; १७२।२; २५७।७; २७१।७ ३४१।३; **पायउँ** ९२।६; १३७।३; १५६।३; १६४।२, १७५।४; ३२४।२, **पायेंउ** १४९।७; २०९।४; **पायसि** १६।५; **पायिसि** ३९४।६; **पायसु** २४।१; १३३।६; १३९।६; २२२।७ **पायँहि**१८।६; **पायहु** १८६।७

पाँयक ४२३।१, ४२४।३

पाँयङ ९३।३; २५७।३

पारइँ १५।४, **पारउँ** ३९०।३; **पारहु** २००।२;

पारा ९०।४, ३६५।२, ४०२।१; **पारेउँ** ४३१।७; **पारै** ३२९।३, **पारौं** २१८।१ **पारौं** ५७।२,३, ८६।६; २८६।२

पारसी ५०।४

पारुधि ५०।७; ५६।५,६, ४१०।३; ४१३।४, ४१४।२, ४२३।२, **पारुधी** ४१०।६; ४१३।४, ४१४।१, ४२०।१

पालहु १९।१

पालो ६७।१; ७३।३

पावइ ९०।७; १२५।२, १९८।३; २२०।५, **पावउँ** २४।२, ३६७।६; **पावसि** ६१।२, २७१।१; ३६३।१, **पावसु** १७९।६; **पावहिं** १८५।२, २१३।२, ३३४।५, **पावहु** १९४।२, १९५।५; **पावा** १९४।४, २८१।५; ३५४।४, ३९१।३; ३९२।३; ४०१।१, ४०५।३

पावा (पैर) ३७३।१

पासहिं २९९।६, **पासा** ५१।४; ३१६।१, ३२९।१

पाहन ६१।३

पाहुन ३६३।६, **पाहुना** ३८७।४

पिउ ३२५।४,६, ३२९।५, ३३५।३; ३५१।७ ३७१।१; ३८४।७, **पिय** ३२७।१; ३५१।५, ३५२।२,३; ३६७।५,६; ३७०।७; ३७९।३; ४०८।५; **पियै** ३३०।५, **पीउ** २४५।७; ३२३।३, ३३५।४; ३६८।५; ३८३।१, **पीऊ** ३११।४, ३१४।४

पिंजर ३१५।१,२, ३५०।७

पितहिं ३५५।५; ३७३।६; **पितैं** ८४।६, १६७।४; ३४६।१, ३५४।५; ३५५।१, ३९०।२,४; ४०१।२

पियत २७।१,२; **पियहिं** २६१।७; ३४७।३ **पियावत** ३६१।४; ४२९।३; **पियावहु** १५७।५; **पियावा** १९।२

पियर ६३।६

पियारी २६३।४; ४०७।१; **पियारी** ४०६।७,

पियास २०४।२; **पियासहि** १६।२

पिरम २४।३; १३८।४; ३७०।५; ३८१।५

पिरत (प्रीति) ८९।४; **पिरित** २२६।४; ३७९।३, **पिरिति** १९९।१; ३२५।५; **पिरीति** २२६।२; ३२५।६; **पिरीती** ९४।३,